

A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 338A Subject PHILOSOPHY

Name of MSS निर्णय सिंधु

Author कमलाकर भट्ट

Period _____ Folios 44

Script Sanskrit Source Prithi Pal Singh

Missing Folios 39-41

833

151

A. no. 338

No 22

Vinayachandran

338

Sans. Ms.

294.1c?

n 721

338-MS.

निर्णय सिन्धु
इष्ट पत्रक ॥ ल० भ० १५ पं० प्र० ५०

ह० ल०



A. no 338

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------|-------|---------|
| अञ्जलिद्विः | ३५८ | १० |
| कामोदकम् | ३५८ | ३० |
| प्रवेशनादिविधिः | ३५८ | ११ |
| आशौचनियमाः | ३५८ | ८ |
| पञ्चकर्तृवेरजो दर्शने | ३६१ | २३ |
| क्रियाकर्तृत्वाशौ | | |
| प्रेतपिण्डविधिः | ३६१ | ६ |
| युद्धमत्तादौविपर्यये | ३६१ | १३ |
| शिलादिविपर्यये | ३६१ | १८ |
| पिण्डद्रव्याणि | ३६१ | ३१ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------|-------|---------|
| प्रेतपिण्डनिविहानि | ३६१ | २० |
| प्रेता-वयवाः | ३६१ | २५ |
| आकाशोजलतीर स्थापनम् | ३६१ | ३२ |
| दशाहमध्यदर्शनाते | ३६२ | ७ |
| अस्थिसञ्चयनम् | ३६२ | १८ |
| संख्यनेनतत्राणि | ३६२ | १५ |
| तीर्थस्थितितेपविधिः | ३६२ | १४ |
| नवश्राद्धम् | ३६४ | १६ |
| नवश्राद्धेवर्ज्यानि | ३६५ | १३ |
| नवश्राद्धेविघ्नम् | ३६५ | २० |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------------|-------|---------|
| अन्तरोहणनवश्राद्धं | ३६५ | २३ |
| आशौचांतदिनकृत्यं | ३६५ | २४ |
| एकादशाहकृत्यम् | ३६६ | २१ |
| सद्यःशौचेएकादशाह | ३६७ | १८ |
| एकोद्दिष्टस्वरूपम् | ३६७ | २४ |
| एकादशाहेवैश्वदेवः | | |
| अथवयोत्सर्गः | ३६८ | ११ |
| स्त्रीषुष्टयोत्सर्गनिविधः | ३६८ | २ |
| पददानम् | ३६८ | ६ |
| शय्यादानम् | ३६८ | १८ |

A. no. 338

338A

1

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------------|-------|---------|---------------------|-------|---------|
| संको उपवासः | ३ | १८ | गुरुश्रुतयोर्विषेवा | १० | १४ |
| संक्रांतिश्राद्धं | ४ | ६ | ईकोचनिर्णयः | ११ | १५ |
| विष्णुपदादिस्वरूपं | ४ | १६ | मलमासव्रतम् | १२ | ६ |
| मंगलेशुसंक्रांतिविषयः | ४ | २५ | पक्षनिर्णयः | १२ | ७ |
| राशौत्तानादिनिषेधः | ५ | १ | निधिशिर्णयः | १२ | ८ |
| जन्मर्हसंक्रांतौशान्तिः | ५ | १५ | सिधौ सामान्य | १२ | २० |
| चंद्रमासस्वरूपम् | ५ | २१ | विशेषविषयः | १२ | २३ |
| सावनादिमासव्यवस्था | ६ | १ | कर्मकालव्याप्तिः | १३ | १० |
| अधिमासतयमासौ | ६ | १३ | युग्ममासम् | | |
| मलमासेकार्यकार्यौ | ७ | १० | खर्वोदयदिंसा | | |
| | | | दिस्वरूपम् | | |

२

| | | |
|--------------------------|------|---------|
| प्रकरणम् | पर्व | पंक्तिः |
| मुद्राकालाभेगौणः | १३ | १६ |
| एकभक्तम् | १३ | १८ |
| नक्तम् | १४ | ४ |
| हरिनक्तम् | १४ | २३ |
| ग्रयाचितम् | १५ | ४ |
| नक्षत्रव्रतकर्मकालः | १५ | ४ |
| व्रतपदिभाषानवाधिकारिणश्च | १५ | ७ |
| स्त्रीणां व्रतेऽधिकारः | १५ | १६ |
| स्त्रीणां कृतिकर्तव्यता | १५ | २२ |
| व्रतसंकल्पः | १५ | २६ |
| गतिवारयोगाश्च | १६ | २ |

| | | | |
|----------------------------|------|---------|---|
| प्रकरणम् | पर्व | पंक्तिः | २ |
| भडाविचारः | १६ | ८ | |
| खंडाखाण्डतिथिविचारः | १६ | १६ | |
| व्रतनियमाः | १६ | १७ | |
| प्रतिमास्वरूपम् | १७ | १२ | |
| उद्यापनाशक्तौ | १७ | २३ | |
| दैवेरजतनिषेधः | १८ | १ | |
| व्रतिनः परावृत्तिनिषेधः | १८ | २ | |
| व्रतिनां भक्ष्याभक्ष्ये | १८ | ४ | |
| गृहीतव्रतत्यागे | १८ | १५ | |
| उपवासानुकल्पाः | १८ | २१ | |
| स्त्रीव्रते गंधताम्रमूलादि | १९ | ४ | |

3

| पञ्च पंक्तिः | पञ्च पंक्तिः |
|--------------------------------|--------------|
| निर्णयः १५ २० | |
| रजपशोने २० ६५ | |
| स्य प्रतिबंधे प्रतिनिधिः २० १२ | |
| प्रदकर्तृकेवाहण २० २० | |
| नधिकारः २० २० | |
| काम्ये प्रतिनिध्यभावः २० २६ | |
| अनेकव्रतसन्निपाते २१ ३ | |
| प्रतिपदादितिथिनिर्णयः २१ २२ | |
| तिथिवर्ज्यानि २१ २७ | |
| एकादशी २३ २४ | |
| गुरुस्योपवासः २४ ७ | |
| उपवासनिषेधे भक्ष्यादि २४ ३० | |

| प्रकरणम् | पञ्च पंक्तिः |
|------------------------------|--------------|
| दशमीवेधस्वरूपं २५ ३ | |
| वेधांतरतस्याहो २६ ७ | |
| घातारतस्य २६ २२ | |
| वेधयोः स्मार्त्तैवे २६ २२ | |
| स्ववपरत्वं २६ १७ | |
| वैष्णवस्वरूपं २६ १७ | |
| प्राध्वमतेवेष्ण २७ ७ | |
| वैकादशीनि २७ ७ | |
| रूपः संगतः २७ ६ | |
| स्मार्त्तैकादशी २७ २७ | |
| हेमाद्रिमते एकादशी २७ २४ | |
| बहुवाक्यविरोधे निर्णयः २८ २४ | |
| दशम्यामेव भोजनं २ २८ | |

| प्रकरणम् | पञ्च पंक्तिः ३ |
|-------------------------------|----------------|
| एकादश्यामुप २५ २ | |
| वास्थाधिकारी २५ ६ | |
| उपवासासमर्प्य २५ १० | |
| व्रताकरणे प्रायश्चित्तं २५ ११ | |
| काम्यव्रतविधिः २५ १६ | |
| व्रतघ्नानि २५ १८ | |
| अशक्तौ जलपानं २५ २१ | |
| व्रतिनो नियमाः २५ २० | |
| नियमभंगे प्रायश्चित्तं २५ २५ | |
| एकादश्यां आरुद्रप्राप्तौ २५ ६ | |
| अव्रतघ्नानि ३० ६ | |
| शयनी कथिनी मध्ये ३० १४ | |
| फलादितिषेधः ३० २७ | |
| द्वादश्यां तुलसीप्रा ३० २८ | |
| द्वादश्यां वर्ज्यानि ३० २८ | |
| द्वादश्यां निषिद्धाचरणे ३१ २ | |

निर्णयसिंधोःसूचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|--------------------------------|-------|---------|----------------------------------|-------|---------|--------------------------|-------|---------|
| ग्रस्तालोसंथाहोमादि | ३५ | ४ | तीर्थसंभवेजलतारतम्यं | ४० | २२ | ग्रहणमिष्टशौचं | ४३ | २ |
| ५ मातृगदिभोजनमवधिर्वैध काले | ३५ | ८ | ग्रहोपण्यतीर्थस्मरणादि | ४१ | ४ | प्रतिमादानम् | ४३ | ४ |
| पक्षान्नत्यागः | ३५ | १२ | ग्रहोप्राध्वम् | ४१ | ७ | ग्रहणावलोकनम् | ४४ | १५ |
| इयविशेषेदोषाभावः | ३५ | १५ | आमानादिविचारः | ४१ | १० | संगलकस्यग्रहणवेधः | ४४ | २० |
| वेधकालेभोजनेप्रायश्चित्तं | ३५ | १५ | भोत्रुर्दोषोदातःश्रेयोधिकं | ४१ | १५ | ग्रहोर्मज्जादिशरश्वरत्नं | ४४ | २० |
| ग्रहोकास्योपवासः | ३५ | २४ | ग्रहोर्मज्जादिशरश्वरत्नं | ४१ | १८ | कुरुक्षेत्रेग्रहोप | ४५ | ६ |
| रवेर्ग्रस्तास्तेभोजननिषेधः | ३५ | २५ | अशौचेग्रहणप्राध्वदि | ४१ | १८ | तिग्रहेप्रायश्चित्तं | ४५ | ६ |
| ग्रहोयोगविशेषः | ४० | ६ | रजसत्वायाग्रहोस्नानं | ४१ | २६ | ग्रहणान्तमित्तद्वसंक | ४५ | ११ |
| स्नाननपहोमरानादिकालः | ४० | ८ | रात्रौवपिस्नानप्राध्वदि | ४१ | २५ | मित्तद्वयद्वैगुण्यम् | ४५ | १५ |
| तदकरणे | ४० | १३ | रात्रौसूर्यस्यदिवाचंद्रस्यग्रहणं | ४१ | ३ | ग्रहणज्ञाननिमित्त | ४५ | १५ |
| ग्रहोतीर्थविशेषः | ४० | १४ | ग्रहणदिनेवाधिकप्राध्वप्राप्तौ | ४१ | ५ | विचारः | ४७ | २० |
| ४ मासविशेषेकाश्विक्लेशः | ४० | १६ | ग्रहोन्नागममंत्रदीप्ताधारणं | ४२ | २० | समुद्रस्नानम् | ४७ | २० |
| | | | जन्मराश्यादौग्रहणम् | ४२ | २४ | तत्रविधिः | ४७ | २८ |
| | | | | | | इतिप्रथमपरिच्छेदसमाप्तिः | ४८ | ४८ |

5

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------------|-------|---------|
| आशौचे | ३१ | ३ |
| रजोदशीनाहोरात्र शीघ्रतम् | ३१ | ७ |
| अवराहादशी | ३१ | ८ |
| अष्टौ महाहादशयः | ३१ | १३ |
| अल्पहादशीकर्मपर्यः | ३१ | २० |
| संकटेपारणानुकल्पः | ३१ | २२ |
| हविर्वासरस्वरूपम् | ३१ | २५ |
| एकादश्यामुपवासातिक्रमे | ३२ | २ |
| हादशीतिथिनिर्णयः | ३२ | ५ |
| अमायायोगविशेषः | ३२ | ११ |
| इष्टिकालः | ३२ | १६ |
| चौर्णमासीष्टिकालः | ३२ | १७ |

निर्णयसिंधोः सूचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------------------|-------|---------|
| इष्टीदिनेचंद्रदशी | ३३ | ६ |
| नेत्रायश्चित्तम् | ३३ | १२ |
| शेषपर्वणियागारम्भः समाप्तिकालः | ३३ | १२ |
| इष्टिस्थालीपाकः मासादिविचारः | ३३ | १७ |
| प्रतिपद्विहृतीर्द्धप्रक्षेपः | ३३ | ३० |
| विकृतिकालः | ३३ | ३० |
| अन्तारंभनिर्णयशोसोमेध | ३४ | १० |
| आजकालः | ३४ | २२ |
| तन्मन्त्राणि | ३४ | २७ |
| सोमपूर्वकाधानकालः | ३४ | ३० |
| अमायांश्राद्धकालः | ३५ | १४ |
| पितृष्टितयज्ञकालः | ३५ | २७ |

| प्रकरणं | पत्रं | पंक्तिः |
|--------------------------------------|-------|---------|
| संस्कारदशीकर्मक्रमः | ३७ | १५ |
| पिंडपितृयज्ञाकर लेत्रायश्चित्तम् | ३७ | १८ |
| अजनिक्कामावस्थाया इकालः | ३७ | २० |
| कुतपस्वरूपम् | ३८ | ५ |
| दशीअनेकश्राद्धपाते | ३८ | ७ |
| अनुपनीतविधुरादी | ३८ | ११ |
| नामश्राद्धाधिकारः | ३८ | १५ |
| अमाश्राद्धातिक्रमे प्रायश्चित्तम् | ३८ | १५ |
| साग्निकनिराग्निकस्वरूपं | ३८ | १७ |
| ग्रहणं तत्रभोजनादि | ३८ | २१ |
| ग्रहोदयास्तेभोजन कालः | ३८ | २७ |

5A

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|------------------------|-------|---------|
| चैव्यारंभः श्रीनसंक्रमश्च | ४८ | १३ | मन्त्रादिश्राद्धाकरणे | ५० | ५ | हृदयोदमनोत्सवः | ५३ | १५ |
| संवत्सरप्रतिपत्तिर्लघुः | ४८ | १७ | षष्ठवतिश्राद्धानि | ५० | ७ | चैत्रशुक्लत्रयोद | ५५ | ३ |
| मनमासे संवत्सरप्रतिपत्तिः | ४८ | २३ | मन्त्राजयंती | ५० | ९ | श्यामनगवतम् | ५५ | ४ |
| नैलाभ्यङ्गः | ४८ | ३० | सर्वाजयंत्यः | ५० | १० | चैत्रशुद्धवतर्दशी | ५५ | ४ |
| वासंति कनकरात्रम् | ४९ | १ | कल्यादि तिथयः | ५० | ३१ | महाचैत्रीतत्रयतम् | | |
| प्रपादानम् | ४९ | ७ | लक्ष्म्युत्पत्तिः | ५१ | ३ | चैत्रपूर्णिमामन्त्रादि | | |
| उदकुम्भदानम् | ४९ | १० | भगान्युत्पत्तिः | ५१ | ३ | चैत्रशुक्लत्रयोद | ५५ | ११ |
| गौरीदोलोत्सवतृतीया | ४९ | १४ | अशोकाष्टमी | ५१ | ५ | श्यायोगविशेषः | | |
| सौभाग्यशयनव्रतम् | ४९ | १९ | चैत्रशुक्लाष्टमायोगवि | ५१ | ७ | कृष्णवतर्दशी | ५५ | २८ |
| मन्त्रादि तिथयः | ४९ | २१ | शेषः | ५१ | १० | इति चैत्रमासः | ५६ | ३ |
| जन्मश्राद्धमुक्तम् | ५० | १ | लौकिकस्नानं | ५१ | १२ | चैत्राचारंभसत्रमे | ५६ | ३ |
| मनमासे मन्त्रादि | ५० | २ | रामनवमीतत्सजातिधिः | ५१ | १२ | षष्ठकोतिः | ५६ | ४ |
| मन्त्रादिश्राद्धपिंडरहितं | ५० | ३ | चैत्रशुक्लैकार | ५३ | १० | धर्मपदादिदानं | ५६ | ४ |
| | | | श्यादोलोत्सवः | | | चैत्राष्टस्नानम् | ५६ | ५ |

६

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------|-------|---------|
| तुलसीसमर्पणम् | ५६ | १८ |
| अश्वत्थसेवनं | ५६ | २० |
| एकभक्तादिब्रतम् | ५६ | २४ |
| अशक्तौग्रहस्नानम् | ५७ | ३ |
| मलमासेस्नाननियमाः | ५७ | ५ |
| दानविशेषः | ५७ | ८ |
| मलमासोपवासौ | ५७ | १० |
| वैशाखदानविशेषः | ५७ | १४ |
| व्रतोद्यापनविधिः | ५७ | २० |
| जलमत्ततीया | ५७ | २१ |
| अश्वयुगादि | ५७ | २५ |
| पुष्यादिआरुद्र | ५८ | ८ |
| पुष्यादिस्नानदानादि | | |

निलपसिंधोः सविः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|------------------------------|-------|---------|
| उदकंभदानम् | ५८ | ५ |
| अत्ररात्रिभोजनेप्रायश्चित्तं | ५८ | १४ |
| अत्रोपनासेदानं | ५८ | १७ |
| मलमासेयुगादिप्रत्यादि | ५८ | १५ |
| आद्याकरणेप्रायश्चित्तं | ५८ | २४ |
| समुद्रस्नानम् | ५८ | २६ |
| परशुरामजयंती | ५८ | २८ |
| वैशाखसप्तम्यांगोत्पत्तिः | ६० | ६ |
| वैशाखदशम्यांगोत्पत्तिः | ६० | ११ |
| नृसिंहजयंतीनिलयः | ६० | १५ |
| व्रतविधिः | ६१ | १ |
| वैशाखीरुर्लीमाविधिः | ६१ | ४१ |
| अत्रारुद्राजिनदानं | ६१ | १५ |
| ॥ इति वैशाखः ॥ | ६१ | १७ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------------------------|-------|---------|
| ज्येष्ठमासकृत्यं वयः संक्रान्तिः | ६१ | १८ |
| रश्मात्ततीया | ६१ | २० |
| दशहरास्नानम् | ६१ | २३ |
| मलमासेदशहरास्नानं | ६२ | १ |
| दशम्यमेधेषुप्रायश्चित्तं | ६२ | ३ |
| अत्रगंगोत्पत्तिमाहृजः | ६२ | ११ |
| दशहरास्नानपाठः | ६२ | २३ |
| तेनबंधराभेधयवर्तिः | ६३ | ३ |
| ज्येष्ठमासश्रीविर्जला | ६३ | ६ |
| ज्येष्ठोत्पत्तिमाहृजः | ६३ | १५ |
| सावित्रीव्रतम् | | |

निलयसिंधोः सूचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|--------------------------|-------|---------|-------------------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|
| ७ प्रकरणम् | | | ननु द्रुतकरणफलम् | ६७ | १५ | नदीलक्षणम् | ७० | ८ |
| ७ आवाहमासकृत्यमिष्टु | ६४ | १३ | चातुर्मीस्य व्रतसमाप्तेर्दोषा | ६८ | ५ | महानदीरजोदोषः | ७० | ९ |
| नसंक्रांतिश्च | | | शमीसूचीदिनिषेधः | ६८ | १२ | महानद्यो नदाश्च | ७० | १४ |
| रथयात्रा | ६४ | १४ | धारणपारणव्रतम् | ६८ | १३ | तत्तीरवासिनां रजो | ७० | २१ |
| शुक्लदशमीमन्वादि | ६४ | १७ | तत्तुमुद्रधारणम् | ६८ | १८ | दोषः | | |
| शुक्लद्वादश्याम् | ६४ | २० | आवाहपौर्णिमास्यां को | ६५ | १० | गंगाजलसंपर्कदोषा | ७० | २३ |
| विष्णुशयनोत्सवः | ६४ | २३ | किलाव्रतं | | | भावः | | |
| मलेगनन्निषेधः | ६५ | ६ | अत्र शिवशयनोत्सवः | ६५ | १३ | नूतनरूपदोषः | ७० | २४ |
| अथ चातुर्मीस्य व्रतारंभः | ६५ | ११ | व्यासपूजा | ६५ | १४ | कुञ्चिद्व्रजोदोषाभावः | ७० | २५ |
| अस्तादौ चातुर्मीस्यः | ६५ | १३ | | | | शुक्लतृतीयामधुप्रवा | ७० | २८ |
| अशौचे व्रतादि | ६५ | १६ | श्रावणमासः कर्कसंक्रांति | ६५ | १५ | शुक्लचतुर्थ्या गणेश | ७१ | १ |
| चातुर्मीस्य ग्रहणविधिः | ६५ | २६ | केशकृत्तनादि | ६५ | २८ | पूजा | | |
| शाकादि निषेधः | ६६ | ६ | नदीरजोदोषः | ७० | २ | नागपंचमी | ७१ | २ |
| कर्मिष्याणि | ६७ | ४ | समुद्रगासुरजोदोषाभावः | ७० | ५ | द्वादश्यां दधिव्रतम् | ७१ | ५७ |
| ७ हविष्याणि | ६७ | ११ | | | | | | |

8

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------------|-------|---------|
| अथ पवित्राशेषाणि | ७१ | १० |
| चतुर्दश्याशिवपवित्रा | ७१ | १२ |
| अधिवासः | ७१ | १३ |
| पवित्राशेषाणि कालः | ७१ | १४ |
| पवित्रलक्षणम् | ७१ | १६ |
| शिवपवित्रम् | ७१ | २४ |
| पवित्रकरणोऽधिकारी | ७१ | २६ |
| पवित्राकरणोऽप्रायश्चित्तं | ७२ | २ |
| देवविशेषपवित्रकालः | ७२ | ३ |
| शुक्लचतुर्दशी | ७३ | ३ |
| उपाकर्म्मकालः | ७३ | ४ |
| ग्रहणसंक्रमादौ उपा | ७३ | २५ |
| कर्म्मकालः | | |

मिरीयसिंधोः सूचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------------|-------|---------|
| सिंहस्यार्कउपाकर्म्म | ७४ | २३ |
| शुक्रास्तादौ प्रथमोपाकर्म्म | ७५ | ३ |
| मलमासे उपाकर्म्मनकार्यम् | ७५ | १० |
| उत्सर्जनकालः | ७५ | १२ |
| अधिवृत्तादि रात्रमनध्यायः | ७८ | १ |
| नदी अवरजोदोषाभावः | ७८ | ३ |
| रक्षाबन्धनम् | ७८ | ४ |
| अथैवहयग्रीवोत्पत्तिः | ७८ | १३ |
| अवणाकर्म्म | ७८ | १५ |
| अशून्यशयनव्रतम् | ७९ | २० |
| अथ भाद्रमासकृत्यं | ७८ | २२ |
| सिंहसंक्रमश्च | | |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------|-------|---------|
| अत्र गोप्रसवशान्तिः | ७४ | २४ |
| कृष्णचतुर्थी | | |
| कृष्णतृतीया | ७५ | ६ |
| वहुला | ७५ | ७ |
| हलषष्ठी | ७५ | १२ |
| शीतलाव्रतम् | ७५ | १३ |
| जन्माष्टमी | ७५ | १४ |
| जन्माष्टमीया | ८४ | ३ |
| रणकालः | | |
| देवकादिप्रति | ८४ | २० |
| माशुजा | | |
| अमायांकुश | ८५ | १६ |
| ग्रहणम् | | |

9

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------------|-------|---------|
| शुक्लतृतीयाह्नि | ८५ | २१ |
| तालिकावतं | | |
| सिद्धविनायकचतु | ८५ | २५ |
| मीवतं | | |
| तत्रचंद्रदशीननिषेधः | ८६ | ६ |
| अष्टमिचमीवतं | | |
| भाद्रपक्षषष्ठीसर्वमष्टी | ८६ | १३ |
| कार्तिकेयरजनम् | ८६ | २१ |
| द्विष्टमी | ८६ | २३ |
| द्रुमगस्त्यादयेक | ८७ | १ |
| न्याकेनिषेधः | | |
| व्रतविधिः | ८७ | १० |
| अवनग्निपक्वभवयेत् | ८७ | १५ |

निर्णीयसिंधोःस्वविः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|------------------------|-------|---------|
| अवाधिमामेप्राप्ते | ८७ | १७ |
| ज्येष्ठाष्टमी | ८७ | १८ |
| भाद्रपक्षद्वादशी | ८८ | ६ |
| पारणाम् | | |
| पार्श्वपरिवर्तनोत्सवः | ८८ | १० |
| शक्रध्वजोत्थानम् | ८८ | १५ |
| अवणद्वादशी | ८८ | १७ |
| अत्रोपवासः | ८८ | १८ |
| पारणानिर्णीयः | ८८ | २८ |
| वामनजयंतीव्रतं | ८९ | १६ |
| दुग्धव्रतम् | ८९ | २० |
| अनेतचतुर्दशीव्रतं | ८९ | २३ |
| अगस्त्यार्घ्यतत्कालश्च | ८९ | २७ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | ल |
|----------------------|-------|---------|---|
| चोलीमास्याप्रयिताम | ८३ | ७ | |
| होस्तीरदिष्टप्राञ्चं | | | |
| इतिभाद्रमासः | ८३ | २० | |
| अथाश्विनमासःक | ८३ | २१ | |
| न्यासेकांतिश्च | | | |
| अथमहालयश्राद्धकालः | ८३ | २४ | |
| विधवायामहालयः | ८४ | २० | |
| सरुन्महालयेवर्ज्यति | ८४ | २५ | |
| य्यादि | | | |
| अस्याषवाद्दश | ८५ | ५ | |
| पक्षप्राञ्चैपिउविधिः | ८५ | ८ | |
| संभासिनामहालयः | ८५ | २६ | |
| महालयेगौणकालः | ८५ | २८ | |
| गौणकालासंभवे | ८६ | २ | ल |

| | | | निर्णयसिंधोः सूचिः | | | | | |
|----|----------------------|---------|--------------------|-------|---------|----------------------|-------|------------|
| १० | प्रकरणम् | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः १० |
| | महालयदेवताः | ५६ | दक्षिणा | ५७ | ५ | महालक्ष्मीव्रतम् | ५५ | ७ |
| | अनेकमातृकस्य | ५६ | पितृरधिकारः | ५७ | ११ | दोषचतुष्टयलक्षणं | ५५ | १४ |
| १० | जीवन्मातृकस्य | ५६ | महालयेतर्पणं | ५७ | १५ | त्रिचुस्रगवमलक्षणम् | ५५ | १७ |
| | मातामहीनां पार्थक्यं | ५६ | मलमासेन कार्यं | ५७ | २५ | अन्वष्टकाश्राद्धम् | ५५ | २४ |
| | पार्वण्यैकोद्विष्ट | ५६ | प्रथमावेमहालयः | ५७ | २८ | अत्राधिकारी | १०० | ३ |
| | व्यवस्था | ५६ | महालयस्यनित्य | ५८ | १ | अनुपनीता | १०० | १८ |
| | अशक्तौ ब्राह्मण | ५७ | काम्यत्वे | ५८ | ४ | अत्रसुवासिनीभोजनं | १०१ | ६ |
| | नियमः | ५७ | एतदतिक्रमे प्रायः | ५८ | ४ | अकरणे प्रायश्चित्तम् | १०१ | १४ |
| | एकोद्विष्टस्वरूपं | ५७ | भरणीश्राद्धम् | ५८ | ६ | महालये प्रत्यादिकम् | १०१ | १६ |
| | अत्रैकपाकादितंत्रं | ५७ | कपिलाषष्ठी | ५८ | १० | त्रयोदशीश्राद्धम् | १०१ | १७ |
| | पाणिहोमः | ५७ | अत्रस्नानरानादि | ५८ | १६ | अविभक्ताधिकारः | १०१ | २४ |
| | विश्वेदेवौधुरि | ५७ | चंद्रषष्ठी | ५८ | २८ | अत्रपिंडनिषेधः | १०२ | ५ |
| १० | लोचनौ | ५७ | माघावर्षश्राद्धं | ५५ | ५ | | | |

निर्णयसिंधोः सूचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|---------------------------|-------|---------|
| ११ एतन्मलमासेकार्यम् | १२ | १ | ११ राजाकालः | १७ | ७ | ११ एकोत्तरचङ्गादि | १७ | ११ |
| ॥ मघात्रयोदशीमहालय | १०२ | २० | ११ प्रतिपदिवैधत्या | १०८ | १ | ११ कौत्रपाठविधिः | १०८ | २३ |
| युगादिश्राद्धम् | | | ११ दियोगे | | | ११ दिनचङ्गादजादिविधिः | १२० | १ |
| महालयचतुर्दशी | १०२ | २१ | ११ मन्त्रप्रतिपत्तयः | | | ११ राजाः शक्तौ प्रतिविधिः | ११० | ५ |
| एतदेकोद्विष्टम् | १०३ | ३ | ११ रात्रौ कलशस्थापन | १०८ | १२ | ११ श्रुक्तेनिरूप्यः | ११० | ७ |
| पितामहादिशस्त्रघाते | १०३ | ७ | ११ निषेधः | | | ११ प्रतिपदादिषु पूजनं | ११० | १५ |
| मन्त्रश्राद्धकरणे गौतमकालः | १०३ | १८ | ११ कलशस्थापनविधिः | १०८ | १६ | ११ आशौचेन वरात्रं | १११ | ७ |
| ममायां विशेषः | १०४ | ५ | ११ देवीरुजाविधिः | १०८ | १७ | ११ स्त्रीणां गंधतांदूलादि | १११ | १६ |
| आश्विनशुक्लप्रतिपदिदौ | १०४ | १२ | ११ कुमारीरुजाविधिः | १०५ | ७ | ११ उपांगललिताव्रतम् | १११ | १५ |
| दित्रेणमातामहश्राद्धकार्यं | | | ११ कुमारीनमनः | १०५ | १२ | ११ सरस्वतीरुजा | १११ | २४ |
| शुक्लप्रतिपदिनवरात्रारंभः | १०४ | २२ | ११ कुमारीललनम् | १०५ | १७ | ११ षष्ठ्यां विल्वामंत्र | ११२ | ६ |
| ॥ उपवासदि | १०६ | २५ | ११ काम्ये कुमारीजातिः | १०५ | २५ | ११ एणादि | | |
| | | | ११ वेदपाद्यादि | १०५ | २० | | | |

नित्यपसिंधोः स्तुतिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------------------|-------|---------|
| पत्रिकादृष्टादि | ११२ | २५ |
| अतोपवासादौ | ११३ | ५ |
| सप्तम्यादुर्गाग्रहेस्तुतिप्रकारः | ११३ | १६ |
| देवीस्तुतिस्थापनम् | ११३ | २८ |
| सप्तमीप्रजाविधिः | ११४ | १० |
| दुर्गास्तुतिः | ११५ | ११ |
| महाष्टमीकालः | ११५ | २८ |
| अत्रपुत्रिलोतोपवासः | ११६ | ८ |
| महानवमीकालः | ११६ | २४ |
| लोहभिसारकविधिः | ११६ | २४ |
| प्रजामंत्रश्च | | |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------|-------|---------|
| चामरवृत्रमंत्रौ | ११५ | ७ |
| अश्वमंत्रः | ११८ | १५ |
| ध्वजमंत्रः | ११८ | १६ |
| पताकामंत्रः | ११८ | १५ |
| गजमंत्रः | ११८ | २८ |
| खड्गमंत्रः | ११५ | ६ |
| क्षुरिका | ११५ | १२ |
| कटारकमंत्रः | ११५ | १५ |
| धनुः | ११५ | २७ |
| कुन्त | ११५ | १५ |
| चर्मदिष्टाः | ११८ | २० |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------------------|-------|---------|
| कनकदंडमंत्रः | ११६ | २५ |
| दुंडुभिः | ११५ | २१ |
| शंखमंत्रः | ११५ | २४ |
| मिहसप्तमंत्रः | ११५ | २६ |
| अष्टम्यास्तानादिदेवीस्तुतिश्च | ११८ | ३ |
| अरुणोदयेवलिदाने | १३० | १० |
| महानवमीकालः | १३० | ३० |
| तत्रहोमादिविधिः | १३१ | ५ |
| होमद्रव्याणि | १३२ | ४ |
| वलिदानतयकारः | १३२ | २४ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------|-------|---------|
| कृष्णशिवविधिः | १२३ | २२ |
| शान्तचंडीविधिः | १२३ | १० |
| सहस्रचंडीविधिः | १२४ | १० |
| नवरात्रपारणविरुचिः | १२४ | ११ |
| पारणोत्सवकारिप्रतिः | १२४ | १३ |
| रजस्तलायाः पारणं | १२४ | २० |
| दशम्यां देवीविमर्जनं | १२५ | ४ |
| विजयादशमी | १२५ | १३ |
| अपराजिताष्टजा | १२६ | १४ |
| अत्रशमीष्टजा | १२७ | ३ |
| वलनीराजनम् | १२७ | १० |
| आश्विनशर्माकृत्यं | १२७ | १४ |

निर्णयसिंधोः सूचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------------------|-------|---------|
| आश्वयुजिकृत्यम् | १२७ | १५ |
| अत्राग्रयणम् | १२७ | २० |
| आश्वयुजासहतेजता | १२८ | ३ |
| आग्रयणाकरणे प्रायश्चित्ते | १२८ | ८ |
| कार्तिकमासस्तुला संक्रांतिश्च | १२८ | १६ |
| कार्तिकस्नानकालः | १२८ | १७ |
| देशविशेषफलं | १२८ | २६ |
| काशीस्यपंचनदेविशेषः | १२९ | २ |
| स्नानार्थमंत्रः | १२९ | ५ |
| कार्तिकेग्रहस्नानं | १२९ | १० |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------|-------|---------|
| अत्रतुलसीधात्रीमाला | १२९ | १२ |
| अगस्त्यादिप्रवृत्तिः | १२९ | २१ |
| तुलसीष्टजा | १२९ | २७ |
| धात्रीवनभोजनं | १२९ | २८ |
| हिंदलव्रतंतुलसी | १३० | ६ |
| अत्रतैलादिवर्जनं | १३० | ७ |
| अत्रविस्तृतीयपदानं | १३० | १६ |
| अत्रदीक्षायां फलं | १३० | १७ |
| कृष्णादिव्रतम् | १३० | १८ |
| व्रताकरणे निंदा | १३० | २४ |
| आकाशदीपविधिः | १३० | २६ |
| करकचतुर्थी | १३० | ७ |

१४

प्रकरणम्

पत्रं

पंक्तिः

गोवत्सदादशी

१३६

५

अनर्कचतुर्दशी

१३७

२५

हादश्यादिपंचसुदेवा
दिनीराजनम्

१३८

२२

यमदीपस्तनत्रयम्

१३९

२४

कल्पचतुर्दश्यामभ्यासः

१४०

३

अभ्यासस्तान्द्र्याणि

१४१

१२

अत्रप्रदोमेदीपकनं

१४२

१५

माषपत्रशाकभोजनं

१४३

१६

यमनर्पणम्

१४४

२२

१४ भीष्मनर्पणम्

निर्णयसिंधोः सूचिः

प्रकरणम्

पत्रं

पंक्तिः

जीवन्मृतकविधिः

१३२

२१

अमायां प्रातरभ्यासः

१३३

२४

अत्रदिवाभोजनाभावः

१३४

६

लक्ष्मीपूजा

१३४

७

दीपोत्सवगतादिसंस्कारः

१३४

१७

अलक्ष्मीनिस्सारणं

१३४

२५

शुक्लप्रतिपदिगोकीडा

१३४

२०

वलिपूजापूजनम्

१३४

२४

रात्रौगोपूजाकालः

१३५

२२

अत्रद्युतकीडा

१३५

२४

गोवर्द्धनपूजा

प्रकरणम्

पत्रं

पंक्तिः

मार्गपालिवंधनम्

१३६

१

तत्रनीराजनम्

१३६

६

यमद्वितीया

१३६

५

भ्रातृद्वितीया

१३६

२१

कार्तिकशुक्लनव

१३७

६

मीथुणादिस्तवक

नेमम्

शुक्लैकादश्यांभी

१३७

११

यमपंचकविधिः

१३८

१

तत्रपारणाम्

१३८

७

देवोत्थापनम्

१३८

७

चातुर्मास्यव्रतो

१३८

१५

द्यापनम्

१३८

२४

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | १५ |
|------------------------|-------|---------|------------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|----|
| १५ अकारादौ कर्तव्यता | १३५ | १ | स्वामिकर्तिकर्षणं | १४० | ७ | तत्कालनियमः | १४१ | २२ | |
| कार्तिकीद्वादशीपौर्ण | १३५ | २ | मार्गशीर्षमासः | १४० | १० | अत्रश्राद्धाकरणे | १४२ | ७ | |
| मासीचमन्वादि | | | वास्तिकसंक्रांतिश्च | | | प्रायश्चित्तं | | | |
| चैत्रं चतुर्दश्युपवासः | १३५ | ३ | कालाष्टमीतिथिः | १४० | ११ | मलमासेश्राद्धाभावः | १४२ | १० | |
| विश्वेश्वरप्रतिष्ठोप | १३५ | ४ | अत्रोपवासाधीदि | १४० | १७ | चैत्रमासधनुःसंक्रमश्च | १४२ | १७ | |
| वासश्च | | | कालभैरवदृष्टा | १४० | २० | एकादशीमन्वादि | १४२ | २१ | |
| कार्तिकव्रतोपापनं | १३५ | ११ | नागपंचमी | १४० | २४ | अमायामर्जुदयः | १४२ | २२ | |
| कार्तिकीपौर्णमासी | १३५ | १८ | चंपावल्लीयोगविशेषः | १४० | २८ | तत्रदानविशेषः | १४३ | ७ | |
| तत्रयोगविशेषः | | | पिशाचमोचनपात्रा | १४१ | ११ | माघमासस्तत्रस्नानं | १४३ | १६ | |
| मत्स्यावतारतिथिः | १४० | १ | पौर्णमास्यादत्रात्रेयो | १४१ | १५ | मासोपवासः | १४३ | १८ | |
| अत्रविप्ररोत्सवः | १४० | ३ | तन्निः | | | मूलकनिषेधः | १४३ | २७ | |
| १५ वृषात्सर्गः | १४० | ६ | अष्टम्यामष्टका | १४१ | १५ | स्नानाधिकारिणः | १४३ | २३ | १५ |

निर्णयसिंघोः सचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|------------------------------------|-------|---------|------------------|-------|---------|--------------------|-------|---------|
| मलमसिस्त्रानावृत्तिः | १४४ | १ | दानविशेषः | १४७ | १४ | दानमंत्रः | १४५ | २ |
| चंद्रायणादेर्मलमासे | १४४ | ३ | रुसवतुदप्रणं | १४५ | २१ | रथसप्तमीमंजरीदिश्र | १४५ | ५ |
| समाप्तिः | | | यमनर्थां | | | भीष्माष्टमी | १४५ | ८ |
| स्नानरंभमंत्रप्रत्यहः | १४४ | ६ | श्रुतानिलचतुर्थी | १४५ | २२ | तर्पणमंत्रः | १४५ | १३ |
| सूर्योद्यमंत्रः | १४४ | ८ | हुंठिराजप्रजाप | १४५ | २४ | काम्यश्राद्धम् | १४५ | १८ |
| स्नानकालः | १४४ | १२ | कुंदचतुर्थी | १४५ | २६ | भीष्महादशी | १४५ | २० |
| स्नानतीर्थविशेषः | १४४ | २२ | श्रीपंचमी | १४५ | २८ | महामाघीयोग | १४५ | २२ |
| प्रशक्तौग्रस्नानं | १४५ | २ | रथसप्तमी | १४८ | २ | विशेषश्र | | |
| स्नाननियमाः | १४५ | ५ | अत्रस्नानकालः | १४८ | ४ | अत्रदानविशेषः | १४५ | २५ |
| तिलस्नानदानादि | १४५ | १५ | जलदीपोत्सवविधिः | १४८ | १२ | अथाष्टका | १४५ | २६ |
| माघान्तेपय्योर्वस्त्रदानं | १४५ | २७ | अथस्नानम् | १४८ | १७ | फाल्गुणमासः कुंभ | १५० | २ |
| मकरसंक्रान्तिः कर्कीदिसंक्रांतिश्च | १४६ | ३ | अर्घ्यमंत्रः | १४८ | २४ | संक्रान्तिश्च | | |
| | | | अत्रदानविशेषः | १४८ | २८ | | | |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|--------------------------|-------|---------|
| कुस्माद्युज्ज्वलनकीर्तनः | १५१ | ३ |
| शिवरात्रिव्रतम् | १५१ | ५ |
| योगविशेषप्रशस्तौ | १५१ | १ |
| तत्रपारणानिष्क्रमः | १५२ | १३ |
| प्रतिमासिशिवरात्रिव्रतं | १५२ | १६ |
| श्रमावास्यायुगादि | १५३ | ३ |
| नक्षत्रयोगप्रशस्तम् | १५३ | ५ |
| होलिकाप्रतिमा | १५३ | ८ |
| महोलिकाभावः | | |
| मन्वादिरेपीयम् | १५४ | १४ |
| चैत्रकृतप्रतिप | १५४ | १७ |
| दिवसंज्ञोत्सवः | | |

निक्षेपसिंधोस्तुतिः
 प्रकरणम्
 स्रवणैर्मित्रकस्तानं
 होलिकनमस्कारमेवः
 रत्नकुसुमप्रशस्तमेवः
 चैत्रमावास्यामन्वादि
 ॥ इति द्वितीयपत्र
 ॥ दिक्खरः समाप्तः
 प्रकीर्णनित्यारम्भः
 गर्भोधानम्
 प्रथमतोऽष्टमासतिथ्यादि
 तत्रस्त्रीणां संगवर्जनम्
 तत्रशान्तिः
 प्रथमतोऽरजस्वलाविधिः

| पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणं | पत्रं | पंक्तिः | १७ |
|-------|---------|-----------------|-------|---------|----|
| १५४ | २१ | रजस्वलानियमाः | १५७ | ६ | |
| १५४ | २२ | रजोदर्शनाभर्तृ | १५७ | १२ | |
| १५४ | २७ | स्त्रीगमननिषेधः | | | |
| १५४ | २८ | अतकालेतिथ्यादि | १५७ | १८ | |
| १५५ | ७ | तत्रनक्षत्राणि | १५७ | २० | |
| १५५ | ८ | समविषमदिनेषु | १५७ | २५ | |
| १५५ | १० | चक्रन्यासतिः | | | |
| १५५ | ११ | योगश्रीयुग्मे | १५७ | २७ | |
| १५५ | २५ | फलम् | | | |
| १५६ | ५ | देवधर्ममणि | | | |
| १५७ | ३ | श्रौतकर्मणि चतु | | | |
| | | र्थदिवसेयधिकारः | | | १७ |

निरूपयसिंधोस्सचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|----------------------|-------|---------|
| १८ प्रकरणम् | | | प्रकरणम् | | | प्रकरणम् | | |
| १८ आद्यैकारणदोषी | | | रोगजेरजसि विशेषः | १५५ | ७ | तत्रवायाः | १५० | ११ |
| गमने | | | रजस्त्वानामनोन्यसर्ग | १५५ | ११ | सीमंतकालः | १५० | १२ |
| अनेकभाष्यस्य | १५८ | १७ | असवस्ती स्पर्श | १५५ | १२ | सीमंतेति धिया | १५० | २० |
| तुयोगपद्ये | | | चोशलादिस्पर्श | १५५ | १५ | रनक्षत्राणि | | |
| अतावगमनेदोषः | १५८ | २० | रजलायानैमित्तकस्थाने | १५५ | १५ | प्रतिगर्भभाव | १५० | २७ |
| कुचिदगमनेदोषाभावः | १५८ | २२ | उपरितस्तानेऽनुकलाः | १५५ | २१ | त्वनादतिः | | |
| होमाकरणे प्रायश्चित्तं | १५८ | २४ | रजोस्ताने गुरुस्पर्शः | १५५ | २६ | सीमंतान्नभोज | १५० | ३ |
| अत्रमलमासप्रकाशा | १५८ | २५ | भोजनावसरे रजोदर्शने | १५५ | २८ | ने प्रायश्चित्तं | | |
| दिष्यपि कार्यम् | | | अथपुंसवने तत्रकालः | १५० | १ | गर्भिलीधर्मीः | १५० | ६ |
| अतु गमने स्नानादिविचारः | १५८ | २७ | पुंसवने कर्तव्यविचारः | १५० | ७ | तत्पतिधर्मीः | १५० | ६ |
| स्त्रीणां स्नानाभावः | १५८ | २८ | पुंसवने कर्तव्यविचारः | १५० | ८ | स्त्रिका गुरुप्रवेशः | १५० | २४ |
| पूर्वोत्तरदिनकल्पना | १५५ | २ | तत्रतिथ्यादि | १५० | १० | स्त्रीस्थानम् | १५० | २८ |
| १८ पुनरजोदर्शनाकालस्ततः | १५५ | ५ | | | | अथजातकर्म | १५० | ३० |
| स्नाने कश्चिन्निरादि | | | | | | | | |

| 19 | | निरूपयसिंधोऽस्त्वितिः | | | | | |
|----------------------|---------------|-----------------------|---------------|------------------------|---------------|----------|---------------|
| प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः |
| गोवृद्धिशास्त्रम् | १६२ ८ | मूलस्य स्वर्गवस्थाने | १६३ २४ | वर्षाष्टका | १६५ २८ | | |
| आमहेमविचारः | १६२ २५ | कन्यावरविषये | १६३ २५ | दत्तकपुत्रप्रतिग्रह | १६६ २ | | |
| आशौचांतरे जातकर्म | १६२ १४ | उद्यान्यनतंत्रांतराणि | १६४ ६ | दानविधिः | १६६ १३ | | |
| अतीते जातकर्मणि कालः | | व्यतीपातादिउद्योगाः | १६४ ५ | स्त्रीश्रद्धाचधिकारः | १६६ १३ | | |
| अथ जन्मनि उद्युक्ता | १६३ २४ | कुस्माचतुर्दशी | १६४ ११ | श्रद्धाकर्तृकहोमः | १६६ १५ | | |
| लाः गेडातश्च | | एकनक्षत्रजननम् | १६४ १४ | दत्तकदासादिस्वरूपं | १६६ २२ | | |
| एकां दानानि | १६३ ४ | ग्रहणे जननम् | १६४ १६ | यमलोर्ज्यष्टकनिष्ठता | १६६ २३ | | |
| आद्याशेषाफलम् | १६३ ७ | ग्रहणे जननशान्तिः | १६४ १८ | सूक्तिकास्त्रानम् | १६६ २८ | | |
| ज्येष्ठाफलम् | १६३ ११ | नानाविद्धताकारजनने | १६४ २५ | नामकर्मत्रकालः | १६६ २८ | | |
| मूलफलम् | १६३ १२ | उपरिदंतोत्पत्तौ | १६४ २८ | वर्णक्रमेण शर्मवर्मादि | १६७ ८ | | |
| अभुक्तमूलफलम् | १६३ १३ | अकाले दंतोत्पत्तौ | १६५ १ | मासनामानि | १६७ ११ | | |
| मूलवृत्तः | १६३ २४ | अथ विकशान्तिः | १६५ १४ | महत्तनामानि | १६७ २५ | | |

| २० | पत्रं | पंक्तिः | वर्णपत्रिंशोऽस्त्वितिः | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः २० |
|----------------------|-------|---------|------------------------|-------|---------|--------------------|-------|------------|
| १० प्रकरणम् | १६७ | २७ | प्रकरणम् | १६८ | २७ | स्त्रीणां संस्कारः | ७२ | ६ |
| तद्वागोक्तं दलनं च | १६७ | २८ | उष्ट्वारे जन्मतिथ्यादि | १६८ | २ | समंत्रासंस्कृतम् | ७२ | ७ |
| उष्ट्वानम् | १६७ | २९ | जन्मतिथिर्दोषिकी | १६८ | ४ | विद्यारंभकालः | ७२ | १० |
| कर्त्तव्येधः | १६८ | ३० | कटिस्तम्भम् | १६८ | ७ | धनुर्विद्या | ७२ | १६ |
| कर्त्तव्यिद्वयमात्रं | १६८ | ३१ | चौलकधीनत्रकालः | १६८ | १३ | अनुपनीतधर्मीः | ७२ | १८ |
| तां रत्नभक्षणम् | १६८ | ३२ | मानदिगर्भितयाम् | १६८ | ६ | उपनयनं तत्रकालः | ७२ | २७ |
| निष्क्रमणम् | १६८ | ३३ | जरादौ मंगलनिषेधः | १६८ | ११ | विप्रादीनां वसंता | ७३ | ८ |
| जीविकापरीक्षा | १६८ | ३४ | मातरजोदोषः | १६८ | १२ | दिशतुः | ७३ | १० |
| उपवेशनम् | १६८ | ३५ | मुञ्जोत्तरं चोलेनिषेधः | १६८ | १३ | गुरोरतिष्ठसायिक | ७३ | १५ |
| जन्मप्राशनम् | १६८ | ३६ | एकमातृनयोरैकक्रिया | १६८ | १४ | क्रीदो | ७३ | २० |
| जन्मनक्षत्रसंज्ञा | १६८ | ३७ | आशौचसंकरे चोले | १६८ | १५ | गुरुवलं शुभत्वम् | ७३ | २३ |
| अष्टदशतिर्जन्मदिने | १६८ | ३८ | चूडासंख्यास्थानादि | १६८ | १६ | उपनयनेति प्रथमः | ७३ | २४ |
| कार्याकार्यनियमः | १६८ | ३९ | चौलभोजने प्रायश्चित्तं | १६८ | १७ | नैमित्तिकमनध्यायः | ७३ | २५ |

21

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | निसिगसिंधोस्तुतिः | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|------------------------|-------|---------|
| गलप्ररुशुक्तपदाप | ७३ | २५ | शाखाभेदेननक्षत्राणि | १७४ | २५ | संस्कारलोपे | १७६ | ६ |
| शङ्करंभुप्रत्यारंभादि | | | पुनर्वैसुनिषेधः | १७४ | २६ | अतीतसंस्काराः | १७६ | १ |
| विचारः | | | प्रशस्तवासरः | १७४ | २७ | उपनीतस्यमध्याह्नसंध्या | १७६ | १८ |
| अनध्यायतिग्रीनां | ७४ | ६ | श्रावित्नाप्राशस्त्यं | १७४ | २८ | व्रतयज्ञः | १७६ | ३३ |
| सोपपदाः | | | वेदभेदेनवासाः | १७५ | २ | व्रतवाशिधर्मीः | १७६ | २७ |
| प्रदोषस्वरूपम् | ७४ | ८ | वर्णभेदेनप्रशस्तवासाः | १७५ | २ | गुरुच्छिष्टभोजनं | १७६ | २५ |
| अनध्यायानंविधानं | ७४ | ९ | संध्यागर्जने | १७५ | ५ | मेखलादंजलिनय | १७७ | ३६।८।१३ |
| पुनरुपनयनादौ | ७४ | १५ | सायंगर्जनेतत्रशान्तिः | १७५ | १० | सोपवीतलक्षणं | | |
| प्रतिवेशोपनयनेका | ७४ | १६ | उपनयनाधिकारिणाः | १७५ | १५ | उपवीतसंख्या | १७७ | १५ |
| लानियमः | | | मृकादीनांविशेषः | १७५ | २० | व्रतवारिधर्मलोपे | १७७ | २५ |
| ग्रहणादौग्रहनिषेधः | ७४ | १८ | कुंडमोलकयोरुपनयनं | १७५ | २५ | संध्यालोपे | १७८ | १ |
| यज्ञपां प्रतिप्रसवः | ७४ | २० | व्रतवारिणांभिदा | १७६ | ४ | अग्निकार्यलोपे | १७८ | २ |
| प्रशस्तनक्षत्राणि | ७४ | २१ | | | | | | २१ |

| २२ | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | निर्णयसिंधोस्तुतिः | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | २२ |
|----|----------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|---------------------------|-------|---------|----|
| | स्त्रीसंगे | १७८ | ७ | सापिंड्यनिर्णयः | १८२ | २ | संगोत्राविवाहप्रयश्चित्तं | १७२ | १२ | |
| | उपवीतादिनाशे | १७८ | ८ | त्रिगोत्रात्ययेविशेषः | १८३ | ६ | कन्याविवाहकालः | १८२ | १७२ | |
| | अभिवादनप्रकारः | १७८ | ९ | मातुलकन्याविवाहः | १८४ | १५ | गुर्वर्कयोर्वीत्यम् | १८३ | ५ | |
| | अनुरूपनीतेनिमित्तानि | १७८ | ११ | जीवसिन्नादिकस्य | १८५ | ११ | गुरुश्रुतिः | १८३ | २६ | |
| | स्त्रीणासपनयनम् | १७९ | ६ | सापिंड्यम् | १८५ | १३ | कन्यादानारः | १८४ | ६ | |
| | अनध्यायः | १७९ | ७ | कन्यासापिंड्यम् | १८५ | १७ | आहूतसंस्कृता | १८४ | ८ | |
| | महानामादिव्रतम् | १७९ | २४ | सापत्न्यमातामरुकुले | १८५ | २१ | नामधिकारः | | | |
| | समावर्तनम् | १७ | २८ | दत्तकसापिंड्यम् | १८६ | २० | स्वयंवराजोदीक्षादे | १८४ | १२ | |
| | प्रवर्तनसपिंड्यशौचं | १८१ | १७ | गोत्रप्रकारनिर्णयः | १८८ | ३ | मातुदीर्घत्वेनोदीक्षादं | | | |
| | स्नातकव्रताचरणे | | | द्विगोत्रा | १८१ | ११ | परकीयकन्यादानेनो | १८४ | २३ | |
| | कुरिकाबंधः | १८१ | २४ | स्वगोत्रावज्ञाने | १८१ | २५ | दीक्षादं | | | |
| २२ | अथविवाहः | १८१ | १७ | मातृगोत्रनिर्णयः | १८२ | २ | गौर्थादिदानम् | १८४ | २७ | |
| | | | | | | | अथमासनिर्णयः | १८४ | २८ | २२ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------|-------|---------|
| ज्येष्ठमासनिमित्तः | १५५ | ५ |
| दशदोषाः | १५५ | १२ |
| पूर्वेतिचारेघातचंद्रे | १५५ | १४ |
| अकालदृष्ट्यादौ | १५५ | २३ |
| भर्तृकपादावपवादः | १५५ | २४ |
| कन्यावैधव्ययोजेऊंभ | १५६ | ३ |
| विवाहादि | | |
| विस्तृतनिदानम् | १५६ | १२ |
| प्रतिकूलादि | १५६ | २१ |
| पित्रादौमतेविवाहः | १५७ | ३ |
| तत्रविनायकसंज्ञातिः | १५७ | ६ |

निर्णयसिंधोस्तुतिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------|-------|---------|
| प्रतिकूलापवादः | १५७ | ८ |
| मातरजोदर्शने | १५७ | १२ |
| नोद्यनेतरंश्रीरजा | १५७ | २३ |
| एकक्रियानिर्णयः | १५७ | २३ |
| द्विशोभननिषेधः | १५७ | २५ |
| द्विशोभनापवादः | १५८ | १ |
| संकटेविशेषः | १५८ | ११ |
| विवाहमध्येआहुं | १५८ | १६ |
| मासिकापकथः | १५८ | २८ |
| यमयोर्विशेषः | १५८ | २४ |
| भिन्नमातृजयोः | १५९ | १ |
| प्रत्युद्वाहोनिषेधः | १५९ | ५ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------------|-------|---------|
| कन्यारजोदर्शने | १५९ | ७ |
| रजसिप्रायश्चित्तं | १५९ | १८ |
| तद्विवाहवरस्यप्रायश्चित्तं | १५९ | २४ |
| गंधर्वादिविवाहः | १५९ | २७ |
| बलादपहारेकन्यायाः | २०० | ६ |
| विवाहमध्येआशौचम् | २०० | १५ |
| आशौचेनांदीआहुम् | २०० | १७ |
| अन्वादौविशेषः | २०० | २३ |
| धर्मार्थविवाहकरणे | २०० | २८ |
| कन्यागृहेभोजननिषिद्धं | २०१ | ४ |
| विवाहनक्षत्राणि | २०१ | १३ |

| | | |
|---------------------------------|-------|---------|
| २४ प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| विरुद्धनक्षत्रेदानादि | २१ | १५ |
| २५ विवाहेमण्डपः | २१ | १७ |
| हरिद्रालेपनम् | २१ | २२ |
| विवाहेवेदी | २१ | २४ |
| अंकुशार्थगार्थम् | २१ | २५ |
| दाहरणम् | | |
| वरवरणम् | २२ | ८ |
| वाग्यानोत्तरंवरमत्तो | २२ | ९ |
| वरस्यदेशान्तरगमने | २२ | १५ |
| अल्कदाने | २२ | १८ |
| वाग्यानोत्तरंवरवरसत्वे | २२ | २१ |
| २४ द्वितीयादिविवाहेनोदीश्राद्धं | २२ | २८ |

निलयसिंधोस्तुचिः

| | | |
|----------------------|-------|---------|
| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| लग्नघटीस्थापनम् | २३ | १ |
| वरस्यमधुपर्कम् | २३ | ४ |
| कन्यादानम् | २३ | ११ |
| गृहप्रवेशहोमेविशेषः | २३ | २२ |
| जौपासनेविशेषः | २३ | २४ |
| अथदेवकोत्थानम् | २३ | २८ |
| विवाहमण्डपसिंहनियमाः | २३ | ३० |
| प्रथमादेकनाश्रनियमाः | २४ | ४ |
| चैत्रादौविशेषः | २४ | १० |
| वधुप्रवेशः | २४ | ११ |
| द्विगमनम् | २४ | २८ |
| पुनर्विवाहः | २५ | ३ |

| | | | |
|-------------------------|-------|---------|----|
| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | २४ |
| द्वितीयविवाहःमिनिर्लिपः | २५ | १४ | |
| वहुभार्य्यस्यसधर्मि | | | |
| एतद्वितीयविवाहे | २६ | ६ | |
| कालः | | | |
| तृतीयविवाहनिषेधः | २६ | ८ | |
| अर्कविवाहः | २६ | १० | |
| आधानम् | २६ | २४ | |
| ज्येष्ठेसाग्नौ | २६ | १७ | |
| गृहस्थस्याप्याभ्ययनं | २६ | १५ | |
| अरुताधानज्येष्ठा | | | |
| अनुमार्तिविनाक | २७ | २१ | |
| ताधानपरिवेत्ता | | | |

| | | | निर्लेपसिंधोस्तुतिः | | | | | | पर्व पंक्तिः २५ | | |
|----|--------------------------|------|---------------------|------------------------|------|---------|----------------------------|------|-----------------|----|----|
| २५ | प्रकरणम् | पर्व | पंक्तिः | प्रकरणम् | पर्व | पंक्तिः | प्रकरणम् | पर्व | पंक्तिः | २५ | |
| | स्त्रीवादीयेष्टेरोषाभावः | २०८ | १ | अधिकारिणः | २११ | ४ | अथपार्थिवहजा | २१३ | २६ | | |
| | मैरुताधानपिरसतेपाधानं | | | स्त्रीश्रद्धयोऽधिकारः | २११ | २० | रुद्राक्षधारणम् | २१४ | १४ | | |
| | अथश्रद्धासंस्कारः | २०८ | १५ | प्रतिमाभेदः | २११ | २८ | लिङ्गे महास्नानं | २१५ | १ | | |
| | अथसुद्रकालस्तत्र | २०५ | ५ | मूर्तौ स्नाननिषेधः | २१२ | ११ | विस्मौ महास्नानं | २१५ | ५ | | |
| | जलाशयस्यरूपनिर्णयः | २०५ | २१ | लिंगे विशेषः | २१२ | १२ | पञ्चायतनम् | २१५ | ८ | | |
| | उत्सर्गिकरणे | २०५ | २६ | लिंगपरिमाणम् | २१२ | १५ | पंचायतनेदिशा | २१५ | ११ | | |
| | वृत्तासेपः | २०५ | २५ | पंचस्त्री | २१२ | १५ | केशवादिमूर्तयः | २१५ | १५ | | |
| | अथमूर्तिप्रतिष्ठाकालः | २०५ | ३० | गृहेलिंगद्वयनिषेधः | २१२ | २५ | लिंगाच्चो प्रतिष्ठादिविधिः | २१५ | २३ | | |
| | दुर्गादेविशेषः | २१० | १४ | अविभक्तानां शयनरुद्रजा | २१३ | ६ | उपघातेऽनः प्रतिष्ठाविधिः | २२० | २५ | | |
| | लिंगस्यापनम् | २१० | १५ | स्त्रीश्रद्धयोऽधिकारः | २१३ | १३ | जीर्णोद्धारविधिः | २२१ | १५ | | |
| २५ | देवीस्यापनम् | २११ | १ | शालिग्रामप्रकृयादिना | २१३ | २४ | तुलसीग्रहणकालमंत्रौ | २२२ | १३ | | |
| | | | | मध्यमादिव्यवस्था | | | प्रव्यादिः पर्युचितत्वं | २२३ | १५ | | २५ |

| | | | निरूपयसिंधोस्तविः | | | | | | |
|----|---------------------|-------|-------------------|--------------|-------|---------|------------------------|-------|---------|
| | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| २६ | प्रकरणम् | | | प्रकरणम् | | | प्रकरणम् | | |
| | शिवनिर्मोलाध्यायः | २२३ | १ | रत्नदर्शनम् | २२५ | १ | नवान्नम् | २२६ | ८ |
| | वाणलिङ्गद्वैतमोत्यं | २२३ | १० | कर्मविक्रयौ | २२५ | ३ | स्तनफलादिभक्षणं | २२६ | ११ |
| २६ | अथ कोशिकालः | २२३ | २८ | सेतुः | २२५ | ६ | होमेश्राद्धतिपातः | २२६ | १३ |
| | धान्यग्रहणं | २२३ | ३० | अथ यज्ञकृतं | २२५ | ७ | शान्तिः | २२६ | १६ |
| | अथालंकारधारणं | २२४ | १३ | गजदंतखेदः | २२५ | ११ | ज्वरादौफलम् | २२६ | २० |
| | अथस्त्रीकर्म | २२४ | २० | निरूपः | २२५ | १२ | अथ भैषज्यम् | २२७ | ३ |
| | अथप्रायश्चित्तम् | २२४ | २२ | राजमुद्रा | २२५ | १६ | अथारोग्यस्तानम् | २२७ | ५ |
| | शस्त्रधारणम् | २२४ | २३ | अणुमोक्षः | २२५ | १८ | दंतकाष्ठनिषिद्धदिनम् | २२७ | ८ |
| | स्नानसेवा | २२४ | २६ | अथनौका | २२५ | १७ | आमलकस्तानम् | २२७ | १६ |
| | गजाश्रयः | २२४ | २५ | भोगः | २२५ | १८ | तैलनिषेधः | २२७ | २२ |
| | नृत्यम् | २२४ | ३० | शमश्रुकर्म | २२५ | २० | प्रतिप्रसवसौलाभ्यगोतिल | २२८ | १ |
| | | | | इंधनसंग्रहः | २२६ | ६ | स्ताननिषिद्धदिनं | २२८ | १ |
| | | | | नवभोजनपात्रं | २२६ | ८ | गृहारंभः | २२८ | २६ |

२७

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------|-------|---------|----------------------|-------|---------|--------------------------|-------|---------|
| ग्रहप्रवेशः | २३५ | ४ | आहुकालः | २३४ | १७ | अथवज्र्याब्राह्मणाः | २४६ | १५ |
| अथकलिवज्रीति | २३५ | २० | अधिकारिणः | २३६ | ५ | विप्रनिमंत्रणम् | २४६ | २२ |
| अथचतुर्थपरिच्छेदः | २३१ | २१ | आहुमन्त्रागोण | | | देवपितृभेदेनोपवीतं | २४६ | २५ |
| अथआहुतिर्लियः | २३१ | २१ | धिकारिणः | | | आहुभेदेनविप्रसंख्या | २४५ | २ |
| आहुत्वरूपम् | २३१ | २२ | तत्र प्रसंगेन धन | | | देवपितृभेदेनविप्रसंख्या | २४५ | ७ |
| अथआहुभेदाः | २३२ | १२ | भागिता निर्लियः | | | निमंत्रितामादरे प्राय | २५० | ७ |
| आहुदेशः | २३२ | १ | अथपितरः | २४३ | २३ | श्रितं आहुभोक्तुर्व | | |
| सप्तगोत्राः | २३३ | १७ | दर्शद्वौ सप्तवीकानां | २४४ | १५ | जीनिच | | |
| कुलानि | २३३ | १८ | मातुः प्रथक आहुं | २४४ | १५ | अथआहुवस्तुनितत्रा | २५२ | २ |
| अथनिषिद्धदेशाः | २३३ | २४ | अथविश्वेदेवाः | २४४ | २३ | द्वौ कुशाः | २५२ | २४ |
| परकीयभूमौ भस्वा | २३४ | २ | अथविप्रास्तत्रोत्तम | २४५ | १३/१४ | अथरुविः | २५२ | २४ |
| निषिद्धभोग्यभागदा | | | ब्राह्मणाः | | | हीरेविशेषं माहिष्यापवादः | २५५ | ११ |
| नविचारः | | | अथमध्यमब्राह्मणाः | २४६ | ३ | वज्र्याद्रव्याणि | २५५ | ३० २७ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|----------------------|-------|---------|
| अथवर्ज्यजलम् | २५८ | ७ | नामोच्चारणविशेषः | २६२ | १६ | माण्डलेगोमयादि | २६४ | २५ |
| कुतपाः | २५८ | १८ | वहूचानाविशेषः | २६२ | १७ | पाद्यपत्नीनिर्लेयः | २६४ | ५ |
| अथवर्ज्यनि | २५८ | २५ | विभक्तनिर्लेयः | २६२ | २४ | पाद्योत्तरमाचमनम् | २६४ | ८ |
| आहुतिनक्त्यं | २५९ | ५ | सव्यापसव्यनिर्लेयः | २६३ | ३ | विप्रोपवेशनदिशा | २६४ | १० |
| पाकानिः | २६० | ३ | आचमनकालः | २६३ | १० | वहूचादिविशेषः | २६४ | १४ |
| पाककर्तृः | २६१ | ३ | शिवविस्तृतोत्तरं | २६३ | १७ | अर्चितोरनुज्ञा | २६४ | १७ |
| वस्त्राणि | २६२ | ६ | विनियुक्तदत्तं त्यागः | २६३ | २३ | विप्रासनानि | २६४ | २० |
| आहुतकर्तृकृद् | २६२ | ७ | ऊरुनिर्लेयः माना महे | २६३ | २५ | नीवीबंधनम् | २६४ | ३० |
| पुंड्रादि | २६२ | ७ | युविशेषः | २६४ | १० | वैश्वदेवाञ्ची | २६६ | १३ |
| आहुपरिभाषाः | २६२ | २२८ | आहुसंकल्पादि | २६४ | १० | अर्घ्यनिर्लेयः | २६६ | २० |
| गोत्रनामोच्चारणं | २६२ | १ | पुनर्निमंत्रणम् | २६४ | १२ | अर्घ्यपात्राणि | २६६ | २३ |
| गोत्राज्ञाने | २६२ | २३ | पाद्यमाण्डलम् | २६४ | २० | अर्घ्यपात्रमानम् | २६६ | २ |
| | | | पाद्यगर्तः | २६४ | २६ | विश्वेदेवानामाज्ञाने | २६६ | १६ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------|-------|---------|-----------------------|-------|---------|--------------------|-------|---------|
| आह्वार्हगंधाः | २६८ | ४ | कार्पासादिवस्त्रादीनि | २६९ | २३ | अर्घ्यपात्ररजा | २७२ | १२ |
| त्रिपण्डुनिषेधः | २६८ | १० | स्त्रीशूद्रयोरुपवीतम् | २६९ | २६ | पितृरजा | २७२ | २६ |
| ऊर्ध्वपुण्ड्रविकल्पः | २६८ | १४ | जलपात्राणि | २६९ | २७ | भोजनदेशेमाज्जलम् | २७२ | ३३ |
| आह्वार्हपुष्पाणि | २६८ | १८ | उपानहौ | २६९ | २९ | भोजनपात्राणि | २७३ | ११ |
| निषिद्धपुष्पाणि | २६८ | २५ | वस्त्रचामरादिरानम् | २७० | २ | भोजनपात्रमानानि | २७३ | ६ |
| अथध्वजाः | २६९ | १० | अलंकारः | २७० | ३ | कांस्यादिनिषेधः | २७३ | १० |
| दीपाः | २६९ | १४ | आदर्शोदि | २७० | ५ | कदलीनिषेधः | २७३ | ११ |
| वस्त्राणि | २६९ | १५ | वंदीमोक्षः | २७० | ११ | भस्ममर्घ्यादा | २७३ | १४ |
| यज्ञोपवीतादीनि | २६९ | १६ | पितृरजनम् | २७० | १४ | हस्तशोधनम् | २७३ | १५ |
| वस्त्रादीनानिष्क्रयः | २६९ | १७ | पिवर्घ्यासादनम् | २७० | २३ | अग्नौकरणम् | २७३ | १६ |
| दीपकादिरानम् | २६९ | १८ | अर्घ्यपवित्राणि | २७० | २७ | यत्राग्निनिर्लेयः | २७४ | २ |
| कंडुकादिरानम् | २६९ | २० | पित्रावाहनम् | २७१ | ५ | अग्न्यभावेनिर्लेयः | २७४ | २ |
| २७ स्त्रीआहुतिंभरादि | २६९ | २२ | संश्रवप्रतिपत्तिः | २७१ | ३० | व्यतिषङ्कनिर्लेयः | २७४ | १४ |

३. प्रकरणम्

अनौकरणसंवापसं

पाणिहोमः

अपत्नीकस्यविधिः

अनुपनीतेरनौकरणं

सांतिर्विदेशादौ

पाणिहोमेपयुक्ताणादि

विप्राचमनादि

आपस्नवानामनौकरणं

नष्टाग्न्यादेर्विशेषः

महालयाद्यवनौकरणं

आदिमादावनौकरणं

२. जीवत्पित्रादेर्विधिः

पत्रं

पंक्तिः

२७४

२५

२७५

२६

२७५

२७

२७५

२८

२७५

२९

२७५

३०

२७६

३१

२७६

३२

२७६

३३

२७७

३४

२७७

३५

२७७

३६

निर्लेयसिंधोस्तुतिः

प्रकरणम्

मातृद्वित्वे

परिवेषणम्

परिवेषणपात्राणि

भोज्यपात्रेतिनिषेधः

स्नेहादीनां हस्तेनपमं

वेषणनिषेधः

घृतपात्रस्यापनं

पात्रालम्भनम्

पात्रेऽगुष्टनिवेशनं

अन्नसंकल्पः

ब्राह्मणोप्यणादि

आपोदानविधिः

चित्रादिवलिविधिः

पत्रं

पंक्तिः

२७७

३७

२७७

३८

२७७

३९

२७७

४०

२७७

४१

२७७

४२

२७७

४३

२७७

४४

२७८

४५

२७८

४६

२७८

४७

२७८

४८

२७८

४९

प्रकरणम्

अभिश्चवणादि

भोजनेनियमाः

विप्राणामन्योग्यस्पर्श

विप्रगुदस्थाने

विप्रवमने

आदिकेवमने

दशगदौवमने

पित्तमहवमने

सपिंडीकरणेवमने

महैकोदिस्येवमने

वृद्धिसंकल्पादौ

वमने

तीर्थमहालयादौ

वमने

पत्रं पंक्तिः ३.

२७४

३

२७५

१५

२७५

१७

२७५

२४

२७५

२५

२७५

२६

२८०

१०

२८०

११

२८०

१२

२८०

१३

२८०

१४

२८०

१५

२८०

१६

२८०

१७

२८०

१८

| | | | निसीयसिंधीसूचिः | | | | | | | | |
|-------------------------|---------|----------|----------------------|---------|----------|----------------------|---------|----------|-------|---------|----------|
| पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् |
| ३१ प्रकरणम् | २८१ | २ | प्रकरणम् | २८२ | २४ | सुधावाचनम् | २८४ | ३ | २८४ | ३ | |
| वृत्तिप्रस्तादि | २८१ | ४ | पिण्डप्रमाणानि | २८३ | ६ | पिण्डप्रवाहणम् | २८४ | ३ | २८४ | ३ | |
| ३१ आहविशेषवृत्तिप्रश्नं | २८१ | ७ | अत्रपित्रादिनामाशानि | २८३ | ७ | विप्रविसर्जनम् | २८४ | ४ | २८४ | ४ | |
| विकिरप्रतिपत्तिः | २८१ | १७ | मातामहादिपिंडदेशाः | २८३ | १८ | पिण्डप्रतिपत्तिः | २८४ | १४ | २८४ | १४ | |
| उत्तराचमनम् | २८१ | २४ | एकोद्विष्टार्कदेशाः | २८३ | १९ | पिण्डपथाति | २८६ | १ | २८६ | १ | |
| पवित्रविसर्जनं | २८१ | २७ | हर्भलेयाः | २८३ | २१ | पिण्डनिबिडुकालः | २८६ | २३ | २८६ | २३ | |
| गाण्डूपाचम | २८१ | २८ | लेपववादः | २८३ | ४ | महालयादौप्रति | २८६ | २१ | २८६ | २१ | |
| पिण्डसनविधिः | २८१ | ३० | नीवीविश्रंसनम् | २८४ | ५ | प्रसवः | २८६ | २१ | २८६ | २१ | |
| पिण्डकालः | २८१ | ३० | अज्ञानाभ्यजने | २८४ | ५ | उच्छिष्टोद्वासनकालः | २८६ | १ | २८६ | १ | |
| पिण्डदेशाः | २८२ | २ | पिण्डधजा | २८४ | २३ | वैश्वदेवकालः | २८७ | ८ | २८७ | ८ | |
| देवाकरणादि | २८२ | १३ | स्तुतिवाचनादि | २८४ | २४ | बहुचानांवैश्वदेवकालः | २८७ | २४ | २८७ | २४ | |
| पिण्डांशानि | २८२ | १३ | अंशव्योदकम् | २८४ | २४ | नित्यआहुति | २८७ | २१ | २८७ | २१ | |
| ३१ पिण्डमाघाः | २८२ | १६ | इतिणानिसीयः | २८४ | २७ | | | | | | |

39

निर्लीयप्रिभोस्सविः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------------|-------|---------|---------------------------|-------|---------|------------------------|-------|---------|
| प्रकरणदोःशाहम् | २८८ | १६ | हेमश्राद्धम् | २५१ | ५ | संन्यासिनश्चादिकश्चाहं | २५४ | १ |
| पञ्चोपर-केभोज | | | जातकर्मणिहेम | २५१ | १० | आदिकेसपत्नीकनिषेधः | २५४ | ५ |
| ननिषिद्धम् | | | नियमः | | | ज्येष्ठभ्रातृरादिके | २५४ | १४ |
| अथश्राद्धानुक्तः | २८९ | ५ | हेमश्राद्धेपिंडमदि | २५१ | ११ | पत्माःकर्त्तव्ये | २५४ | २६ |
| विप्राभावेदर्भवटुः | २८९ | ७ | हेमश्राद्धेनिषिक्तानि | २५२ | १३ | अपुत्राणांविशेषः | २५५ | १ |
| आमश्राद्धम् | २८९ | ८ | संकल्पश्राद्धम् | २५१ | २७ | गोविप्रहतादौ | २५५ | १० |
| आमापवाहः | | | संकल्पश्राद्धेवर्ज्य | २५२ | ३ | मातामहनिषेधः | २५५ | १४ |
| आमपरिमाणम् | २५० | ६ | अशक्तौपिंडमात्रं | २५२ | १० | पितृयादिश्राद्धे | २५५ | १७ |
| आमश्राद्धेपिंडः | २५० | ८ | अन्यशक्तौतर्पणादि | २५२ | १६ | पितामहादिश्राद्धे | २५५ | २२ |
| आमश्राद्धेऋतुः | २५० | १३ | श्राद्धभोजनेप्रायश्चित्तं | २५२ | २६ | क्षयाहहैविध्यो | २५५ | २४ |
| आमश्राद्धेविधिवानि | २५० | २३ | क्षयाहश्राद्धम् | २५३ | ११ | ग्रहणदिनेवार्षिकं | २५७ | १० |
| ३२ श्राद्धयामश्राद्धाधिकारः | २५० | २७ | पार्वणिकोद्विष्टविचारः | २५३ | २१ | मलमासेवार्षिकं | २५७ | १२ |

| | | |
|--------------------|-------|---------|
| ३३ दर्शनाधिकाराः | पत्रं | पंक्तिः |
| आदिकेदयोः | २५७ | २४ |
| अदिआदिम् | २५७ | २६ |
| वर्षातेसपिडने | २५७ | २७ |
| तयाहाज्ञाने | २५८ | ४ |
| अवमासाद्यज्ञाने | २५८ | ७ |
| आदिआशौचप्रामे | २५८ | २० |
| आशौचेआहुप्रामे | २५९ | १७ |
| आशौचेआहुप्रामे | २५९ | २५ |
| आशौचेनिरविष्टे | २५९ | ५ |
| आहेभार्यारजोदर्शने | २६० | १७ |
| रजस्वलायां आहु | २६० | २३ |
| आनागेहोआहु | २६१ | २३ |

| | | |
|------------------------|-------|---------|
| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| साधनमातरवायकं | ३०२ | ४ |
| अन्यकालागेहो | ३०३ | २० |
| आहुसम्पत्ते | | |
| विजोर्मनादेको | | |
| आहुसंपत्तिर्मागसिद्धिः | | |
| आहुद्वारत्रिविचारः | | |
| आहुगतर्यणं | ३०४ | २३ |
| आहुगतर्यणपवादः | ३०५ | ४ |
| आहुनित्यतर्यणं | ३०५ | ११७ |
| तर्यणविधिः | ३०६ | १ |
| तिलतर्यणनिषेधः | ३०६ | ९ |
| तदयवाहः | ३०६ | ८ |

| | | |
|------------------------|-------|---------|
| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| वृद्धिआहुतन्निमित्तानि | ३०६ | १२ |
| तत्रकालः | ३०६ | ३२ |
| आधानांगवृद्धिआहु | ३०७ | ११ |
| वृद्धिआहुदेवताः | ३०७ | १४ |
| दिआहुविश्वेदेवाः | | |
| वृद्धिआहुमातृपूजा | ३०८ | ४ |
| वृद्धिआहुमातृपूजा | ३०८ | १३ |
| मातृपूजायादि | ३०८ | १८ |
| मातरः | | |
| संस्कारयोगपद्ये | ३०८ | २७ |
| वृद्धिआहुनवता | ३०८ | २७ |
| कर्मवृद्धिआहु | ३०९ | २ |
| वृत्तिः | | ३३ |

| | | | |
|----|--------------------|-------|---------|
| ३४ | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| | यदिनिषेधः | ३०५ | ६ |
| | वदोऽधिकारः | ३०५ | १४ |
| | जीव | | |
| | साग्नेविशेषः | ३०५ | ११ |
| | जीवतितकस्य | ३१० | ११ |
| | विशेषश्च | | |
| | वद्विवितिकर्तव्यता | ३१० | २४ |
| | विप्रालाभे | ३१० | ३० |
| | अत्रदक्षिणा | | |
| ३४ | पिंडविधेर्विकल्पः | ३११ | १८ |

निर्णयसिंधोस्तुतिः

प्रकरणम् पत्रं पंक्तिः

मंत्रोहविचारः

पितृजीविते

मातामहजीवने

मातृजीवने

जीवतितुस्तीर्थ

विशेषः

तीर्थमातृश्राद्धम्

साग्नेविशेषः

जीवतितकश्राद्धे

पितामहजीवने

प्रपितामहजीवने

उभयजीवने

प्रकरणं पत्रं पंक्तिः ३४

श्रुतसमंतां

विशेषः

विभक्ताविभक्तानां ३१४ २८

कर्मानिविभक्ता

विभक्तानांपेचम ३१५ २

हायनावेश्वदेवा ३१५ १३

दिदेवश्रजा ३१५ १३

तेषांतीर्थश्राद्धा ३१५ २४

धिकारः ३१६ ४

तीर्थश्राद्धाविधिः ३१६ ११

घृतश्राद्धंकार्पटीवेद्यः ३१६ १६३४

35

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------------------|-------|---------|
| यात्रामंत्रेशोचं | ३१६ | २५ |
| मार्गतीर्थप्राप्तौ | ३१६ | ३० |
| नदीप्रतीयेषु विशेषः | ३१७ | २ |
| तीर्थप्राप्तदिनकृत्यं | ३१७ | ५ |
| तीर्थवपनं तीर्थोपवासम् | ३१७ | १३ |
| मुण्डनेकालः | | |
| मुण्डनविधिः | ३१७ | २१ |
| जीवस्मितकस्यतीर्थे | ३१७ | २६ |
| तीर्थपरार्थस्नानं मुंडनं च | ३१७ | ३० |
| तीर्थश्राद्धविधिः | ३१८ | १ |
| रात्रौ तीर्थप्राप्तौ श्राद्धं | ३१८ | ५ |

निर्णीयति न्योस्सृचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|---------------------------|-------|---------|
| श्राद्धोच्यतीर्थश्राद्धं | ३१८ | ८ |
| तीर्थश्राद्धे वज्रिनि | ३१८ | १६ |
| तीर्थश्राद्धपिंडव्यापि | ३१८ | २३ |
| विधवाया विशेषः | ३१८ | २५ |
| जीवस्मितकस्यतीर्थश्राद्धं | ३१८ | २८ |
| श्राद्धोच्यनिर्णीयः | ३१९ | ३ |
| आर्चशोचं | ३१९ | ६ |
| पाताशौचम् | ३१९ | ६ |
| पुत्रोत्पत्तौ पितृस्नानं | ३१९ | २० |
| स्नानिकायाः कर्माधिकारः | ३१९ | २७ |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------------------|-------|---------|
| जनने प्रथमादिदिने | ३२० | १० |
| मृताशौचम् | ३२० | २८ |
| नालच्छेदोक्तं | ३२० | २९ |
| मृतौ | | |
| नामोत्तरदंतो | ३२१ | ८ |
| तन्त्रेः पूर्व | | |
| अत्र दहनाव | ३२१ | १८ |
| नने विचारः | | |
| दंतोत्तरं त्रिव | ३२२ | ३ |
| वीत्याक | | |
| त्रिवर्षे सुपन | ३२२ | ४ |
| यनात् पूर्व | | |
| मृतौ | | |

३५

निर्मलसिन्धोस्तरविः

| | | | |
|----|-------------------------|-------|---------|
| ३६ | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| | कतहडमरणे | ३२२ | ८ |
| | शिष्टमृतौमातापित्रोः | ३२२ | १५ |
| | कन्यामृतौ | ३२२ | २२ |
| | श्रद्धस्यविवाहास्तर्व | ३२२ | २७ |
| | चौलोत्तरंवाग्दानास्तर्व | ३२२ | २५ |
| | अनृद्धश्रद्धस्यषोड | ३२२ | २८ |
| | शाब्दमध्येमरणे | | ३० |
| | वाग्दानोत्तरंकन्यामृतौ | ३२२ | ३३ |
| | अनुपनीतेखननादि | ३२२ | |
| | अनुपनीतेपिंडादि | | |
| | ग्रहाशौचेविशेषः | | |
| ३६ | बालमरणदोविशेषः | | |

| | | |
|-------------------------|-------|---------|
| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
| पंचवर्षोत्तरपिंडादौ | | |
| स्त्रीणांपिंडादिविकल्पः | | |
| जात्याशौचम् | ३२४ | ६ |
| स्त्रीश्रद्धयोविशेषः | ३२४ | २२ |
| आशौचसंकोचविचारः | ३२४ | ३१ |
| आशौचैःंगास्पर्शता | ३२४ | २४ |
| अनुपनीतादौविशेषः | ३२४ | २३ |
| दत्तकादिपुत्रमरणे | ३२४ | २५ |
| दत्तकमरणेजनकस्य | ३२६ | १४ |
| ऊहाकन्यामृतौपिवादेः | ३२६ | १८ |
| पतिगृहेकन्यायामर | ३२६ | २७ |
| लोप्रसवेच | | |

| | | | |
|----------------------|-------|---------|----|
| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | ३६ |
| पितृमृतौकन्याया | ३२७ | ४ | |
| आशौचं | | | |
| भगिनीमृतौभ्रातृणां | ३२७ | ७ | |
| मातामहादिमरणे | ३२७ | ६ | |
| दोहित्रादिमरणे | ३२७ | १० | |
| बंधुव्यमरणेवि | ३२७ | १२ | |
| शेषः | | | |
| ग्राममध्येशकशिष्टाने | ३२८ | २ | |
| शपालकादौजाग्रतः | ३२८ | २० | |
| क्रियाकर्तृविशेषः | ३२८ | २४ | |
| मात्यादिमरणे | | | |
| श्रद्धमृतौ | ३२५ | ३ | |
| शवस्पर्श | ३२५ | १४ | |
| निर्हरणादौ | ३२५ | १३ | |

निर्णयसिन्धोस्तुतिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-----------------------|-------|---------|----------------------|-------|---------|---------------------|-------|---------|
| ३७ प्रकरणम् | | | रात्रौजननेमरणेच | ३३१ | १५ | आशौचसन्निपातेका | ३३५ | २५ |
| निर्हरणदोषप्रतिग्रहणे | ३३५ | २३ | आहिताग्निमरणे | ३३१ | १८ | व्याकार्यविचारः | | |
| ७१ शवालङ्करणे | ३३५ | २६ | अतिक्ताशौचं | ३३१ | २५ | आशौचापवादः पंचधा | ३३६ | १ |
| अनाथहरणे | ३३५ | २८ | देशान्तरेविशेषः | ३३२ | ५ | कर्तृतोषवादश्च | | |
| हीनवर्णसंस्कारे | ३३५ | ३५ | देशान्तरलक्षणं | ३३२ | ८ | ब्रह्मचारिणोविशेषः | ३३६ | ४ |
| शवानुगमने | ३३५ | २ | पित्रोर्देशान्तरमरणे | ३३२ | ११ | समावर्तनोत्तरविशेषः | ३३६ | २५ |
| शयनेच | ३३५ | ११ | सापत्न्यमातुर्देशं | ३३२ | १६ | कर्मतोऽपवादः | ३३७ | २ |
| आशौचाद्यभक्षणं | ३३५ | २१ | तरमरणे | ३३२ | २० | जुलादानादौ | ३३७ | ५ |
| स्वामिमरणेदास्या | ३३७ | ३१ | आशौचसन्निपाते | ३३२ | २० | नित्यदेवश्रुतादौ | ३३७ | १६ |
| शौचम् | | | रात्रौयामशेषादौ | ३३३ | ३२ | दीक्षितस्यस्नानशाने | ३३७ | २६ |
| दास्यादौविशेषः | ३३१ | ४ | ह्याहविर्होत्रपवादः | ३३४ | ३२ | अतिजिविशेषः | ३३८ | ४ |
| दासभेदाः | ३३१ | ८ | मातुरन्तातोहणे | ३३५ | ५ | श्रौतकर्मसुविशेषः | ३३८ | १० |
| दासमतौ स्वामिनः | ३३१ | १३ | स्तुतकादयोविशेषः | | | | | |
| ३७ प्रतिलोमजानां | ३३१ | १५ | | | | | | ३७ |

निर्णयसिंधोः स्वरचिः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|------------------------|-------|---------|----------------------|-------|---------|----------------------|-------|---------|
| स्मार्तकर्मणि वैमदेवे | ३३८ | १३ | वैधमरलो | ३४१ | २६ | सर्पहते विशेषः | | |
| संध्यादिषु | ३३९ | २ | प्रयोगादिभरलो | ३४२ | १० | कुचिद्विधानादाशौ | ३४६ | २३ |
| ग्रहणो आशौचापवादः | ३३९ | १३ | काश्यामात्मघाते | ३४२ | २२ | चापवादः | ३४६ | २४ |
| संक्रांतोक्तयोद्धारोपि | ३३९ | १५ | आत्मघाते संव | ३४३ | २७ | सम्यासिमरलो | ३४७ | १६ |
| अथ द्रव्यतोपवादः | ३३९ | १५ | सरोर्द्धविशेषः | | | कृतप्रीवच्छादे | ३४७ | १६ |
| मृतदोषतोपवादः | ३३९ | ३० | आत्मघातप्रायश्चित्तं | ३४४ | ५ | विशेषः | | |
| आत्मघाते | ३४० | १ | चंगलादिहते प्राय | ३४४ | ११ | आदितांज्यौप्रो | ३४७ | २१ |
| आत्मघाते संस्कारक | ३४० | १५ | श्चित्तं | | | चित्तमरलो | ३४७ | २७ |
| तुः प्रायश्चित्तम् | ३४० | २६ | स्नेहीकृतानां विशेषः | ३४४ | २५ | पक्षिशरविधिः | ३४८ | ८ |
| आदिताग्निदुर्मरलो | ३४१ | २ | पतितोदकविधिः | ३४४ | ३० | प्रोषिते कालपरीता | ३४८ | २० |
| प्रमादमरलो | | | नाययणावलिप्रयोगः | ३४५ | २० | पक्षिशरेत्रिराशौचं | ३४८ | २० |
| | | | | | | प्रक्षिप्यमाणो यत्नी | | |
| | | | | | | उच्चयोराशौचं | | |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|----------------------|-------|---------|
| पर्वशरादौपत्नी | ३४८ | २२ |
| पुत्रयोः शोचं | | |
| अतीतप्रेतसंस्कारकालः | ३४८ | २८ |
| निषिद्धनक्षत्रादौमते | ३४८ | २ |
| दाहविधिः | | |
| कृतसंस्कारस्य पुनः | ३४८ | १३ |
| रागमनं | | |
| सर्पसंस्कारविधिः | ३४९ | १६ |
| अस्य कर्मनिर्णयः | ३४९ | ६ |
| धर्मपुत्रविधिः | ३४९ | २८ |
| आसन्नमरणोदाननि | ३४९ | १ |
| मोक्षधेनुः | ३४९ | ३ |

निर्णयविधौ स्मरविः

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|------------------------|-------|---------|
| अणधेनुः कर्तृक | ३४९ | २ |
| छत्रयम् | | |
| दुर्मरणे प्रायश्चित्तं | ३४९ | २५ |
| चोलादिस्पर्श | ३४९ | ३ |
| रक्षास्वलासर्प | | |
| खट्वाद्यैर्मरणे | ३४९ | १ |
| रात्रौ मरणे | ३४९ | ७ |
| रात्रौ मरणे निषेधः | ३४९ | १० |
| सर्वपण्युचिते | ३४९ | ११ |
| सान्निविशेषः | ३४९ | २१ |
| समाकृष्टारणे | ३४९ | ३ |
| विशेषः | | |

| प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|--------------------|-------|---------|
| विद्विन्नानिः | ३४९ | ३२ |
| प्रेताधानम् | ३४९ | ४ |
| अरण्ये व्रीशे | ३४९ | १५ |
| यान्यामिरणे विशेषः | ३४९ | ६ |
| देशान्तरमते | | |
| अनुपनीतदिः | | |
| कपालाग्न्यादिमृग | | |
| मरणे विशेषः | | |
| दाहविधिः | ३४९ | १ |
| उदकदानम् | ३४९ | ३१ |
| दंपत्येकदा मते | ३४९ | १७ |
| सहगमने पाकैकां | ३४९ | २ |

| | | | निर्णयसिन्धोस्सूचिः | | | | | |
|-----|--------------------|---------------|-----------------------|---------------|----------------------------|---------------|---------------|---------------|
| पृ० | प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं पंक्तिः | पत्रं पंक्तिः | पत्रं पंक्तिः |
| | अञ्जलिविधिः | ३५८ १० | प्रेतपिण्डविधानि | ३६१ २० | अन्तरोहरोनवश्राद्धं | ३६५ २३ | | |
| ५४ | कामोदकम् | ३५८ ३० | प्रेता-वयवाः | ३६१ २५ | आशौचांतदिनकृत्यं | ३६५ २४ | | |
| | प्रवेशनादिविधिः | ३५९ ११ | आकाशेजलक्षीर | ३६१ ३२ | एकादशाहकृत्यम् | ३६६ २० | | |
| | आशौचनियमाः | ३५९ ८ | स्थापनम् | ३६२ ७ | सद्यःशौचेएकादशाह | ३६७ १८ | | |
| | पत्न्यकर्तृत्वेरजो | ३६० २३ | दशाहमध्येदर्शनाते | ३६२ १८ | एकोद्दिष्टस्वरूपम् | ३६७ २४ | | |
| | दर्शने | | अस्थिसञ्चयनम् | ३६२ १८ | एकादशाहेवैश्वदेवः | | | |
| | क्रियाकर्तृत्वाशौ | | सञ्चयनेननवाणि | ३६२ १५ | अथवयोत्सर्गः | ३६८ ११ | | |
| | प्रेतपिण्डविधिः | ३६० ६ | तीर्थस्थितिक्षेपविधिः | ३६३ १४ | स्त्रीशुश्रूषोत्सर्गनिषेधः | ३६८ २ | | |
| | पुद्गमतादौविपर्यये | ३६० १३ | नवश्राद्धम् | ३६४ १६ | पददानम् | ३६८ ६ | | |
| | शिलादिविपर्यये | ३६० १८ | नवश्राद्धेवज्ज्योनि | ३६५ १३ | शय्यादानम् | ३६९ १८ | | |
| ४९ | पिण्डद्रव्याणि | ३६० ३० | नवश्राद्धेविघ्नम् | ३६५ २० | | | | ४९ |

43

॥ निरुपयसिन्धो स्तुतिः ॥

| पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः | प्रकरणम् | पत्रं | पंक्तिः |
|-------|---------|-------------------------------|-------|---------|-------------------|-------|---------|
| ४३ | | प्रकरणम् | | | प्रकरणम् | ४३ | |
| १ | १ | शय्याप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तं | ३०४ | २६ | ब्रह्मचारिसिपिंडे | ३०५ | २३ |
| | ४ | उदकुम्भदानम् | ३०५ | २१ | सिपिंडनप्रयोगः | ३०५ | ३१ |
| | ३१ | दीपदानम् | ३०६ | ४ | पाथेयप्रादुम्भ | ३०६ | १० |
| १ | २१ | ऊनेषुवज्जीनि | ३०७ | ८ | प्रथमादेनिषि | ३०७ | १३ |
| २ | १ | मासिकानि | ३०७ | १० | हनिविधानानिव | ३०७ | २ |
| | २४ | सिपिंडीकरणम् | ३०८ | ३ | पंचकर्मतेदाहादि | ३०७ | २ |
| | ५ | साग्निककर्तृकविशेषः | ३०८ | २६ | त्रिपुष्करशोतिः | ३०८ | ६ |
| | ७ | सामौप्रेतविशेषः | ३०८ | १० | ब्रह्मचारिमृतौ | ३०८ | १२ |
| | ८ | हयोऽसाग्निते | ३०८ | १५ | कुष्टिमृतौ | ३०८ | २० |
| | ३१ | गोणकालाः | ३०८ | १५ | स्तुतिकारज | ३०८ | ५ |
| ४३ | ११ | हयोरनग्निते | ३०८ | १७ | स्वतामृतौ | ३०८ | ४३ |
| | | | | | अकृतप्रायश्चित्ति | ३०८ | ४ |
| | | | | | तकुष्ठ्यादि | | |

४४ प्रकरणम्

५५

निर्मपतिभ्योस्तत्तचिः

प्रकरणम्

पत्र

पंक्ति प्रकरणम्

४४

गर्भिलीमरणे

३८४

३०

अन्तरोहणविधिः

३८४

२८

विधवाधम्मीः

३८७

३०

सन्मासविधिः

३८८

१

सन्मासप्रयोगः

३८९

२०

अष्टौ आद्यादीनि

३९०

२५

यतिधम्मीः

३९१

२२

यतिसंस्कारः

॥ समाप्तमिदं सूचीपत्रम् ॥

ॐ

४४

४४

338B

१
 ॐ स्वस्ति श्रीगणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री गुरुवे नमः कारुण्येक
 निकेतं रामं सीता लता युक्तं विश्वामित्रि च चाय व्रतति समालो वशा विनं वं
 दे १ लक्ष्मी सहायं कल्पद्रुत लंजितं गोकुलं बह्मपीडं घनस्यामं महः किं
 विदुषात्महे २ वेदाद्यधर्मरक्षाये मायामनुष्मरूपं पितामहं हरिं वंदे भद्रना
 रायणं कृत्यं ३ यत्पादसंस्मृतिः सर्वमंगलप्रतिभर्तृमता तान् भद्रराम क्त
 हमारव्यान् श्रीतात चरणान्भुजः ४ सर्वकल्याणसंदोहनिदानं नित्यतद्वयं छु
 नदीसोदरीमवा मुमारव्यां नौमिसाधरं ५ विंदुमाधवपार्द्वो लंबीकृतं
 विग्रहं ज्यायां संभ्रातरं भद्रादिवाकरमुपास्महे ६ हे माद्रिमाधवमते प्रवि
 चायै सम्यगालोच्य तत्त्वमथ तीर्थं कृतां यरेषा श्रीराम कृतमनयः कम
 लाकरारव्यः काले यथा मतिविनिर्णीयमातनोति ७ सानियथापि विद्वां
 सस्तं निबंधाश्रकौशः तथाप्यमुरव्यवेदगंधी केचित् विज्ञातुमीशते तत्र
 संक्षेपतः कालः योद्यच्छब्दोपनमस्तु मासः यक्षोदिवस इति तत्राद्यो
 माधवमते पंचधा सवनं सौराष्ट्राद्रौ नक्षत्रावाहं स्यत्य इति गुरोर्मध्य

1A

मराशिभोगेन वाहसत्यः सच ज्योतिः रास्ते प्रसिद्धः हेमाद्रिस्त्वं त्यग्नो धर्म
रास्तेन्ययौ गान्तिस्त्रयविधा आह तत्र वक्ष्यमाणैः सावनादिद्वादशमासेस्तत्र
द्वयं मलमासेषु सति यद्यिदिनात्मक एव हेमाद्रिमास इति द्वादशमासत्वम
विरुद्धं तस्याच व्यासः अख्यातुदिवसेनासः कश्चित्तो वादरायणो रिति तत्र चंद्रो
क्तः अष्टिभेदः तदाह गरीः नारदश्च प्रभवो विभक्तः प्रमोदो च प्रजापतिः म
गिरा श्रीमुखो भावो मुवाधाति सरस्तया बहुधा न्यः प्रमाथी च विक्रमो य व
वक्त्या चिजभानुः सुभानुश्च तारुणः पार्थिवो व्ययः सर्वजित्सर्वधारी च वि
रोधी विष्णुतः खरः नंदनो विजयश्चैव जयो मन्मथ उर्मरेव हेमलं वो विलो
वो य वि कारी रावेरी प्रवः शुभक्तश्चोभनः क्रोधी विश्वाचस्य पराभवो प्रवं
गः कीलकः सोम्यः साधारणो विरोधकत परिधावी प्रमाथी च ज्ञानंदो राक्ष
नलः पिंगलः कालपुक्तश्च सिद्धार्थो रौद्रदुर्मती दुंदुभीरु धिरोद्गारी रत्नाक्षः क्रो
धनः क्षय इति यद्यपि ज्योतिषे गुरोर्मध्यमराशिभोगेन प्रभवादीनां माघादौ प्र
वृत्तिरुक्ता तस्यापि प्रभवादीनां चांद्रत्वमप्यस्ति चांद्राणां प्रभवादीनां पंचकैपंचकै
षुगे इति माधवोक्तैः तेन चांद्रप्रभवादिः चैत्रसिते प्रवृत्तते बार्हस्पत्यस्तमाघा

को तपोर्विनियोगो ज्योतिर्निबंधे ब्रह्मसिद्धांते अवहारिकसंज्ञोयंकालः स
 त्यादिकर्मसु योज्यः सर्वत्र तत्रापि जेवोवा नर्मदोत्रे आर्द्धिषेणः स्मरेत्सर्वत्र
 कर्मो दोचांद्रसंवत्सरं सदा नान्ययस्मात्सरादौ प्रवृत्तिस्तस्य कीर्तितेति अय
 नंतु सौरर्तुत्रयात्मके सौरर्तुत्रितयंप्रदष्टमयनमिति दीपिकोक्तैः तत्तद्विविधम् य
 दक्षिणमुत्तरं चेति कर्कसंज्ञाति दक्षिणं मकरं तं अंत्यो विनियोगमाह मदना
 रत्ने सत्यज्ञतः देवतारामवाच्यादिप्रतिष्ठादष्टरवेरवौ दक्षिणमुखे कुर्वन्त
 त्फलमवाप्नुयात् वैरवमसः मातृभैरववाराहनरसिंहत्रिचक्रमाः महिषासुर
 हं गजस्थाय्या वै दक्षिणायने वैराक्ष्यै नतु दक्षिणायने एवेति नियमः प
 र्वे वचने दक्षिणायने निषिद्धाया देवप्रतिष्ठायाः देवविरोधे प्रतिप्रसवमात्रात्
 रत्नमालायां गुरुप्रवेशादिदराप्रतिष्ठाविताहचौलव्रतबंधसर्वे सोम्यायने कर्म
 शुभविधेयं यद्गृहितं तत्तत्सु दक्षिणे चेति अस्यायत्रादः कारीरवडे सदा कृत
 युगं चास्तु सदा चास्तु तरायणं सदा महोदयश्चास्तु कार्या नवसतां सता इत्यय
 नम् अतु माह द्यात्मा मलजासेतुमास द्यात्मक एकोमासस्तेन मासद्वया
 त्मके च मविरुद्धं स देधा चांद्रः सौरश्चैत्रारंभो वसंतादिश्चांद्रः मीनारंभो मे

धारंभोवासौरः मीनमेघयोर्मैयलषयोर्वावसंततिवौधायनोक्तैः अनयोर्वि
 न्दियोगमाह त्रिकांडमेंडलैः श्रौतस्मान्क्रियासर्वाः कर्त्याः चाद्रमसर्गेषु तदभा
 वेत्तसौरर्तः श्रुतिज्योतिर्विदामतं सद्धिविधोपि कोरावसंतोग्रीकोवर्षाः शरद्वेमे
 तः शिशिरश्चरति इति अतः मासश्चतुर्दशिवनः सौरश्चाद्रोनाक्षत्ररति त्रिशदि
 नः सावनः अर्कसंक्रान्तेः संक्रान्त्यवधिः सौरमासप्रसंगान्तं क्रान्तिनिर्णयस्तु च।
 ते तत्र पूर्वतोपि परतोपि संक्रमात् पुण्यकालघटिकास्तु बोडरोतिसामान्यतः
 पुण्यकालसर्वैस्तुः विशेषस्तु चने अत्र सामकाः संग्रहश्लोकाः प्राग्रध्वौद
 रापूर्वतः षड्वनित्तद्वयराः पूर्वतस्मिंशत्बोडरापूर्वतोप्यपरतः पूर्वोपराः।
 स्पुर्दरा पूर्वोपराचोत्तराक्रतुभवः पश्चात्तरववेदायुनः पूर्वोपराचोत्तरा
 पुनरथोपुण्यस्तु मेघादितः अस्मार्थः मेघे प्राग्रध्वं चदराघटिकां पुण्यकालः
 वधेपूर्वाः बोडराः मिथुनेपराः बोडराः कर्केपूर्वाः सिंहान्तिं हे पूर्वोपराः बोडराः
 कन्यायांपराः बोडराः तुलायांपराः प्राग्रध्वं दरा वृश्चिकेपूर्वाः बोडरा धनुषिपराः
 बोडरा मकरे चत्वारिंशत्पराः इदं च हेमाद्रिमतेनोक्तं माधवमतेत्यत्र परावि
 रातः पुण्याः कंतेपूर्वाः बोडरा मीनेपरा बोडरोति याव्युत्तरा पुण्यतमो मयो

* कंतेपूर्वा बोडरा मीनापरा बोडराः २५

मासायं भवेत्तसा यदि सापि यत्वा पूर्वोत्तयोः कायादि साविभाति साय्यु न्नरा रात्रि
 निषेधतः स्यात् अर्वाहः निशीयाद्यदिसंक्रमः स्यात् पूर्वोद्विपुण्यपरतः शरे द्वि
 र्मिमा सन्नपात इयमेव पुण्यनिशीयेष्वधेतु दिनद्वयं स्यात् कर्क ऊषेयेवमिति
 ह्युवाच हे मादित्तरि सन्नपात परार्कः ऊषः प्रदोषे यदि वा ऊराजे यरो द्विपुण्य
 त्वय कर्कटश्चेत् प्रभातका लो यदि वा निशीये पूर्वोद्विपुण्यत्विति माधवाचा
 र्यः अत्र मूलवचनामिमाधव परार्क हेमाद्रादिषु द्रव्यानि सर्वाः संक्रां
 तिषु दानविशेषो हेमाद्रौ दानकांडे उक्तः विष्णुमित्रः मेघसंक्रमणे भानोर्म
 वदानं महाफलं ह्यसंक्रमणे दानं नवां प्रोक्तं तथैव च वस्तुन्या च दानानि
 मिथुने विहितानि तु घृतधेनुप्रदानं च कर्कटे पिबिषिष्यते ससवर्णधजदानं
 सिंहपिबिहितं सदा कन्या प्रवेशे वस्त्राणां वेस्मानां दानमेव च तला प्रवेशे तैला
 नां गौरसानां मयीष्टदं अन्नकीचलिते भानो दीयदानं महाफलं अन्नकीचलिकः
 धनुः प्रवेशे वस्त्राणां यानां च महाफलं मृगप्रवेशे दारुणां दानमग्नेस्तथैव
 च कुंभप्रवेशे दानं तु गवां मंभुत्तृणां स्पृशमीनप्रवेशे स्थानां मात्मानां समपि चो
 त्तममिति अत्रोपवासात् हेमाद्रावोपस्तवः अथने विष्वक् चैव त्रिरात्रो यो धितो नरः

3A

स्नात्वा यस्त्वर्चयेभानुसर्वकामफलं लभेत् अशक्तौ तु वदुवशिष्टः अयने संक्र
मे चैव गुरुणे चंद्रसूर्ययोः अहोरात्रोद्यितः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते अत्रोपवा
सः संक्रांतदिने दानादि तृणपुण्यकालदिने इत्याचार्यचूडामणिः विधिलाघवात्
पुण्यकालदिने एवोभयमिति त्रिंशदाः इदं च पुत्रिगृहस्थातिरिक्तचिषये आदित्ये ह
निसंक्रांतौ गुरुणे चंद्रसूर्ययोः उपवासानकर्तव्यः पुत्रिणां गृहिणां तथेति जैमि
निवचनात् अत्र आहुतं हेमाद्रौ विष्णुधर्म आहुतं संक्रमणे भानोः प्रशस्तं दयिवी
पते अपराकैपि विष्णुः आदित्यसंक्रमणं विशेषेणायनद्वयं जन्ममभ्युदयश्च ए
तांस्तु आहुतकालान्ये काम्यानां पूजायतिरिति द्वादशादिदिने रवौ गयनां चाप्रत
नावपि पूर्णवक्तुमयनगुरुणां अन्यथा संक्रमणे सिद्धे रयनगुरुणां व्यर्थं स्यादि
त्यपराकैः हेमाद्रौ वपि गालवः अयनं राकतत्वेन कालेनैव स्फुटं भवेत् मगककै
दिगे सूर्ये याम्ये दगयने सति तदा संक्रांतिकाले स्युरुक्ता विष्णुपदादयः इति अय
नं राकतत्वे संक्रांतिकाले विष्णुपदादयः पूर्वज्ञे तेन तत्पुत्रं पुण्यकालादि तत्रा
पि ज्ञेयमिति सावव्यावर्यो तच्च मेघायनं च वायनमित्यादि सर्वत्र ज्ञेयं माधवीयेपि
जायालिः संक्रांतिषु यथा कालस्तदीयेष्वयने तथा अयने विंशतिः पूर्वकामकरे विं

रातिपदेति कर्कपने पूर्वविंशति घटिकाः पुण्याः मकरसंक्रांतौ तु यस्मात् विंशतिः
 पुण्याः अस्यासायनेन संक्रांतिर्नदित्यर्थः विष्णुपादादित्यरूपं च दीपिकायामुक्तं
 हयं धिर्षिष्टसिंद्धसिंद्धघटे द्वर्कस्थयः संक्रमः कन्यामीनधनुर्नृपुक्ष्ण उशीत्या
 स्यात्तुला मेघयोः प्रोक्तं विषुवन्तगोऽयनमुदक्कटिके दाक्षिणमिति हयं धिर्
 विष्णुघटे नृपुक्ष्मियुने अत्र च विंशतिं संक्रांतिं कुर्यात् तथा चोपरोक्तं सात्त्वं
 अयनद्वितीये आर्द्धं विषुवद्विजये तथा संक्रांतिषु च सर्वासु पिंडनिर्घषणादत
 इति आर्द्धमूलपाणीत्यस्य निर्मूलत्वात् समलंत्वे ततः प्रभृति संक्रांतावुपरागा
 दिपर्वसु त्रिपिंडमाचरेच्छादमेकोद्विष्टं मृतैरुनीति मात्स्यान्ते गृहणाग्नौ
 एव द्विकल्प एवेत्याह विंशतिस्तत्र तत्रे अस्य पार्वणानुवादत्वेन पिंडा वि
 धाय कत्वात् पिंडो व्यक्तिः अन्यथैकपदे पिंडानुवादे त्रित्वविधौ च वषट्कर्तुः प्र
 यमभस्यवद्वैरुप्यापनेः मंगलकृत्त्वेषु विशेषमाह ज्योतिर्निबंधे नारदः त्याज्या
 सूर्यस्य संक्रांतिः पूर्वतः परतस्तथा विवादादिषु कार्येषु नाश्रयः षोडशा षोडश
 एव तत्पुण्यकोलापलक्षणं भानोः संक्रांतिभोगश्च कुलकश्चार्चयामक इति
 ज्योतिः प्रकारेण ज्येषु परिगणनात् अयनव्यतिरिक्ता सदृशसु संक्रांतिषु

4A

रात्रौ स्नानप्राश्नादिनकार्ये अग्निसंक्रमणे पुण्यमहः कृतं प्रकीर्तितं रात्रौ संक्रम
णे भानोर्दिनाई स्नानदानयोः अर्घराजदधस्तस्मिन् मध्याह्नस्योपरिक्रिया उर्द्ध्वं
क्रमेण चोर्द्ध्वमुदयान् प्रहरद्वयं पूर्णं चेदर्घरात्रे तदयदा संक्रमते रविः प्राहुर्दिन
द्वयं पुण्यं मुक्तामकरकर्कटाविति तद्विवशिष्टादिवचनैरहः पुण्यत्वात्तयारात्रौ
संक्रमणे भानोर्दिना कुर्यात्तत्तत्तया पूर्वस्मात्परतो वापि प्रत्यासन्नस्य तत्फल
मिति विशिष्टवचनाच्चात्रात्रात्रौ स्नानादिनिषेधप्रतीतेः यानि च विवाहस्त
संक्रांतिप्रतिष्ठाकृतजन्मसु तथोपरागपातादोस्नाने दाने निराश्रमेति रा
हुर्दर्शनसंक्रांतिविवाद्यंत्यपहृष्टिष्ठस्नानदानादिकं कुर्यात्तु निशिकाम्यत्र ते
षु चेत्यादीनि विष्णुगोभिलादिवचनानि तानि मकरकर्कसंक्रांतिविषया
णि मुक्तामकरकर्कटाविति तयोर्दिवा नष्टानस्य षष्ठ्युदस्तत्वादिति हेमाद्रि
माधवादयः वस्तुतस्तत्प्रलुक्तवचनेन तयोर्दिनद्वयं पुण्यत्वादेरेव षष्ठ्युदासा
न्मकरकर्कटयोरास्नानदानपरेहनीत्यादिभिरहः पुण्यत्वोक्तेः अहः पुण्य
त्वानुपपत्त्या कल्परात्रिनिषेधस्य च प्रत्यक्षरात्रिविधिना बाधा सर्वसंक्रांतिषु
रात्रवतुष्टानविकल्पः सच देरात्राद्यवतिष्ठत इति युक्तः यथाः अनयोस्तु व

कृत्यो विशेषः प्रावणो माघे च वक्ष्यते ज्योतिर्निर्वधे गरीः यस्य जसमर्क्षमासाघर
 विसंक्रमणं भवेत् तन्मासाभ्यन्तरे तस्य वेरक्ते राधनक्षयाः तगरसुरोरुपयैरजनी
 सिद्धार्थलोधुसंयुक्तैः स्नानं जन्मर्क्षगतैरविसंक्रमणे नृणां शुभं हेमाद्रौ अक्रिचौ
 द्वात्रिंशुमंस्याद्रौ चेद्वा सरद्वयं संक्रांतिः यक्षिणी जेयादानाध्ययनकर्मसु यत्तु
 गः संक्रांत्या यक्षयोः ते द्वादश्यां प्रादुवासरे सायं संध्यं न कुर्वीते कुर्वेत्प्रयित्वा
 भवेद्वितिकर्मोपदेशान्या व्यासाक्तेः सायं पुण्यकाले संध्या निवेधमाहुस्तन्निर्मले ।
 अन्यत्र ब्रह्मवक्तव्यं विस्तरभीते नोच्यते इति संक्रांतिर्निर्णीयः पक्षयुगजश्राद्रौ मा
 सः स देधा मुक्तादिरमांतः कृष्णादिः पूर्वार्द्धमांतश्च तथा च त्रिवां डमंडनः चांद्रोपि
 मुक्तपक्षादिः कृष्णादिवेति चादिभ्यो मुक्तादेशाभेदेन तद्यवस्थामाह कृष्णपक्षादिकं
 मासं नो गी कुर्वीति केचन ये पीधंति न तेषां मपीदो विध्यस्य दक्षिणरति विध्यद
 क्षिणो कृष्णादिनिवेधा इन्नरो ह्ये राभ्यनुज्ञा गम्यते तत्रापि मुक्तादिर्मुख्यः कृष्णा
 दिर्गौलाः रास्त्रे चैत्रमुक्तप्रतिपद्येव चांद्रसंवत्सरारंभे भोक्तेः तदुक्तं दीपिका
 यां चांद्रोद्दोमधुमुक्तगप्रतिपदारंभ इति न हि ये कृष्णादिमन्यंते तेषां वत्सरारंभो
 भियते अतः मुक्तादिर्मुख्यः कृष्णादिना मलमासा संभवाच्च चंद्रस्य सर्वनक्ष

5A

ब्रभोगेननाक्षत्रो मासः सावनादीनां व्यवस्थोक्ता हेमाद्रौ ब्रह्मसिद्धांते अमावास्या
परिधिचो मासः स्याद्वा सप्तमस्य तत्संक्रांतिषोऽर्धमासीभ्यां तथैव नृपवेरमयोः अत्र
ब्राह्मणादीनां च तान्तरेण यत्र कर्मविशेषे वसंते ब्राह्मणो मिमादधीते त्यादिवन्मास
उक्तस्तत्र दर्शितत्वं मासे नियम्यते न तत्कर्म सर्वकर्म सुदर्शित एवेति सूच्यते अथ सौ
रभे रक्षोवादिनिधनानियमवद्दिधिलाघवतत्रैव लिङ्गानां सर्वकर्मसु मासवि
शेषविधेः सर्वनादीनां श्रुतान्तलोमादिपरत्वापत्तेरिति गुरुचरणः ज्योतिर्गर्गः
सौरमासो विवाहादौ यज्ञादौ सावनः स्मृतः अथ केचित् कार्ये च चांद्रो मासः प्र
शस्यते अथ अंगः विवाहजनयज्ञेषु सौरमानं प्रशस्यते पार्वणत्ववृक्षाश्राद्धे
चांद्रमिष्टं तथा वक्ते स्मृत्यं नरे एको दिष्टविवाहादौ जहणादौ सौरसावनौ
ज्योतिर्गर्गः प्रायश्चित्तविभागश्च प्रायश्चित्तक्रियान्यासावनेनैव कर्तव्या श्रु
तां वायुपासना विष्णुधर्म नक्षत्राण्ययनानि चंद्रो मासेन कर्माद्ग
णात्मकेनेति वृत्तिरिति च कर्मादिं नते श्रुतादिमेव च विवाहादौ च सौरा
दिमासे ह्येति निर्दिशेत् अथ मलमालः तत्रैकमात्रं संक्रांतिरहितः सितादिष्ठां
द्रो मलमासः एकसंक्रांतिरहित्यसंक्रांतित्वेन संक्रांतिद्वयवत्त्वेन च भव

त्रीति मलमासोद्देशाऽधिकमासः क्षयमासश्चेति तदुक्तं काठकगृह्ये यस्मिन्
 मासेन संक्रांति संक्रांतिद्वयमेव तामलमासः स चित्रयोमासः स्यात्तत्र योदश इति सत्यत्र तो
 यि राशिद्वये यत्र मासे संक्रमे तदिवाकरः नाधिरासो भवेदेव मलमासस्तु केवलमिति
 अधिकमासस्य कालनियममाह विशिष्टः द्वात्रिंशदि निर्गते मासे दिनेः षोडशभिस्त
 याष्टिकाणां चतुर्केण पतत्यधिकमासक इति एतच्च संभवाद्यर्थे न तु नियमार्थे अन्य
 या षोडशादिनाधिकद्वात्रिंशत्मासां मंतरं कथमप्यनियमेन शुक्लादित्यर्भगापत्तेः तेन स
 नाधिकद्वात्रिंशत्काले मलमासप्राप्तेऽपि न दोषः अतएव मासे त्रिंशत्तमे भवेदिति माध
 वीये प्रतिज्ञे क्षयस्यापि ज्यातिः सासु असंक्रांतमासोऽधिमासस्फुटस्यादिसंक्रांतमासः
 क्षयारव्यः कदाचित् क्षयः कर्त्तव्योऽपि त्रये नान्यतः स्यात्तदा वर्षमध्ये धिमासद्वये च
 एकः क्षयात्पूर्वपरतश्चैक इत्यादिमासद्वयं भवतीत्यर्थः अत्र विशेषमाह जावालिः
 मासद्वयेष्वप्येतत्संक्रांतिर्नेयदा भवेत् प्राक्तनस्तत्र पूर्वः स्यादधिमासस्तथा तत्र इति
 उत्तरावकालाधिक्यं तत्पूर्वस्मिन्नित्यर्थः यत्तत्र स्यात्सिद्धांते चैत्रादवाऽनाधिमासः
 परतस्तदधिको भवेदिति यच्च ज्यातिः सिद्धांते घटकन्यागते सूर्ये हस्त्रिके वा यधनि
 नि मकरे वा यकुंभे वा नाधिमासो विधीयते इति तत्र हस्त्रिकादिचतुष्टये मलमासे
 सति पूर्वतुला कन्यागते सूर्ये क्षयात् पूर्वभावाधिमासस्य कालाधिक्यं निवेधा

6A

र्थनत्वाधिकमात्रस्य दशानां फाल्गुनादीनां प्रायो माघस्य च क्वचित् न पुंसकत्वं
भवतीत्येषा सुविनिश्चय इति हेमाद्रौ विष्णुधर्मविरोधात् मलमासेष्वादि
नियेधानुयतेऽस्य मकरे वायुं भवेति दृष्टान्ताद्यं प्राप्ताभावात् क्षयस्यागमनका
लउक्तः सिद्धान्तसरो मणोः गतेऽप्यदिनं दैमित्तेराक कालेति यीशैर्भविष्यत्यर्थो
गाक्षस्यैः गजाऽग्निभूमिस्तथा प्रयशोयं कवे दुंदुब्यै क्वचिद्भोक्तुमिष्टेति
अथ यश्चत्वारः अद्वयः सप्ततन्दाः नव एषा प्रति लोभ्ये निपाते २७४ तैर्मितैर्वर्षैः
क्वचित् क्षयमासः पूर्वजात इत्यर्थः तिथयः पंचदश ईशाः एकादशाः १११५ ए
व ति ति पाते कश्चित् भाविष्यति इत्यर्थः अंग ६ अक्ष ५ सूर्याः १२ एकज १२५६।
गजाः ८ अद्वयः ७ अग्नि ३ भू १ एकज १२७८ क १ वेदाः ४ इंदुः १ एकत्र १४१ गा
वः ६ कु १ एकत्र १२ एतैर्मितैर्वर्षैर्जातं कश्चिद्भविष्यतीत्यर्थः अथ मलमा
से कार्यं कार्यं निरूप्यते तत्र जावालिः नित्यनेमित्तके कुर्यात् आर्द्रं कुर्यात्
लिसुचेति यिनक्षत्रवारोक्तं काम्यं तेव कदाचन अयंच काम्यानिषध आरंभस
माप्तिविषयः असूर्यानामये मासान्तेषु समसंमतः व्रतानां चैव यज्ञानामा

नि.सि.
७

7

रंनस्र समापनमितिनेनेवोक्ततत्वात् असर्थाश्रयिकमासाइत्यर्थः तत्रमंशंन
पतेरवेरितिबचनात् कारीयादेः काम्यस्यत्वारंभसमाप्तीभवतएवेत्यादिरन्यत्रचित्त
रः काठकगृहपि मलेनन्यगतिंकुर्यान्नित्यंनेमितिक्ती। क्रियामिति तानिनेमिति
कानिदीपिकायास्तत्तानि यन्नेमितिक्रमगिननव्यानुगताग्न्याधानमर्चासुवासत्का
दिविज्ञोपनेमतिपुनः प्रोक्तं प्रतिष्ठादिकमितिगत्यंतरयुतंतसोमादिहेयमेव तत्रक
र्त्तमानिउत्तानिकालदर्शेद्वादसाहसयिंशंतंकर्मग्रहणजन्मनोः सीमंतेषुसवेश्रा
दंडावेतो जालकर्मव रोगेशंतिरलभ्येचयोगेआदं ब्राह्मनिच प्रायश्चित्तंनिमित्त
स्यवशात्सर्वपरत्रच श्रद्धादकंभमत्वादिमहालययुगादिषु आदंदरीयहरदः
आदमृनादिमासकं मलिसुचान्यमासेषु मृतानांआदमादिकं आदंतुसर्वदृ
ष्टेषुतीर्थेष्वेवयुगादिषुमन्त्रादिषु यदानंदानंदेनंदिनंचयत तिलगोभ्राह्मण
नांसंश्रयोपासनयोः क्रियां पर्वहोमश्रागयणंसाग्नेरिष्टिस्रपर्वणि नित्याग्निहोत्रे
होमश्रुदेवतातिथियजने स्नानेचस्नानविधिनाय्यभक्ष्यायेष्वर्च्यंने तर्पणंचानि
मित्तस्यनित्यत्वाडुभयजुचेति एतौषुसवसीमंतौ एतच्चगर्भाधानाद्यत्रप्राशनं
नसंस्कारोपलक्षणं तडुक्तं दीपिकायां गर्भाधानमुखेचचौलविधिनः प्रागज्ञात
यागंविनाकृद्वागयणं गजेन्द्रपुरुतः प्रायामधानं गयोस्तीर्थेदुक्षाययोश्चपिचमधि

राम
७

7A

के मास्ये च माघाचरेदिति अलभ्ये वागे धौ दय यमकादौ काम्यान्यधिब्रजादीनि
कार्याणीत्यर्थः पूर्वपरत्रमलेषु कंचेत्पर्थः महालयराकानमघात्रयोदरयुच
तेरिति माधमः दरीश्राद्धं मलेपिकां धयते अथ अगः संवत्सरान्तिरेके एमासो
यः स्यात्तमलिपुचः तस्मिन् योदशे श्राद्धं न कुर्यादिदं संभयति तत्तु काम्यदरी
श्राद्धविशये काम्येनैव कदाचनेति वचनात्तदरी च काम्यश्राद्धं कन्यावेदिन
श्रेत्यादिना याज्ञवल्केनोक्तं नित्यं तमलेपि भवत्येव दरीप्यहरहः श्राद्धं दानं च प्र
तिवासरं गोभूतिलहिरण्यानां मासेषु स्यामलिपुच इति मात्स्योक्तेरिति हेमा
द्रिप्रदयः द्विजोदासीयेपि अग्निं दुर्गं दुर्गां च हरिवासे बुधाष्टमी नाधिमासेषु
रित्याज्याः सीमंताच्चाशने शिशोरिति अग्निं दुर्गः द्विचिधिमय्यमाश्राद्धं न का
र्यमिति त्वपरार्कः तत्र यदिदं कर्म उत्तरे मसि कारयेदित्युक्तेः यस्यात्तदिव
सेरिति शुद्धमासकरणेपि रात्र्यापयते दरीश्राद्धं मलेन कार्यामिति प्राचीनगो
शः श्रुत्यादिना संवत्सरप्रदीयेपि एकराशिस्मिन्ते स्वर्ये यदा दरीद्वयं भवेत्
दरीश्राद्धं तदादौ स्यात्तत्परजमलिपुचे अग्रायि प्राग्वत् व्यवस्था यद्यपि काला
दरी सर्वे वार्षिकं मासद्वये कार्यमित्युक्तं तथापि हेमाद्रिमाधवाचराकादि

४

मत्तान् प्रथमवार्षिकं मलमासे द्वितीयाद्यादिकं तस्य शुद्धमास एव कार्यं ।
 असंक्रांते पिकर्तव्यमादिकं प्रथमं द्विजैः तथैव मासिकं प्राक् संयोज्य करणं त
 येति हारीतोक्तैः आदिकं प्रथमं यस्यात्तत्कृत्वा मालिङ्गचे चतुर्दशसंक्रांते
 कर्त्तव्यं पुनरादिकमिति स्मृत्यन्तरोक्तेः पुनरादिकं द्वितीयादिवार्षिकं त्रयो
 दशमासे तृते चतुर्दशमदिने कर्त्तव्यमित्यर्थः यत्तस्य व्रतः वर्षे वर्षे तु यथा ।
 इमांता पित्रोर्मते हति मलमासेन तत्कार्यं व्याघ्रस्य वचनेन यथेति तत्तद्वितीया
 दिनादयः सप्तवार्षिकविषये आदिकं प्रथमं यस्यात्तत्कृत्वा मालिङ्गचे रतिप
 क्षेत्तवचनान् यत्र द्वादशमासिकं शुद्धमासे भवति तत्र त्रयोदशे अधिके एवाद्या
 दिकं कार्यं यत्र त्वधिकमध्ये द्वादशमासकं तत्र तस्य द्वादशतिं कृत्वा चतुर्दश
 शुद्धे एव प्रथमादिकमिति निष्कर्षः तेन द्वितीयादि शुद्धः मास एव पृथ्वी
 चंद्रोदये दिवोदासीये मदनपारजाते चैवं मलमास मत्तानां तयदा स एवा
 धिकः स्यात्तदा तत्रैव कार्यं यथाह ये हीनसिः मलमासे मत्तानां तत्र प्रसूयत् ।
 तिवत्सरं मलमासे पिकर्तव्यं नान्येषां तत्कथंचनेति यत्तत्तद्वत्सिद्धः प्रा
 णियाहानि संक्रांते अधिमासे भवेद्यादिमास द्वये पिकर्त्तव्यं तत्राह मेचनमुप

8A

ति यच्च मासः उत्तरे देवकार्यणि पितृकार्यणि चोभयोरिति तन्मासिकादि
 चिदायं योगादिकं मासिकं च श्राद्धं च सप्तद्वयेपि क्षिकं मन्वादिकं तैथिकं
 च कुर्यान्मासद्वयेपि चेति स्मृतिचंद्रोक्तेः तैथिकं तैथ्यश्राद्धं तच्च मासद्वयेपि
 कार्यमिति त्रिस्थली सेतौ भट्टाः कोचिनु प्रतिमासं मृतादेव श्राद्धं यत्प्रतिवत्स
 रं मन्वादी च युगादी च तन्मासो सुभयो रपीति मरीचिवचनात् तर्ध्वं तर्ध्वं नु यच्छ्राद्धं
 मातापित्रोर्भृते हनि मासद्वयो रपित कुर्यात् व्याघ्रस्य वचनं ययेति गालकी के
 शप्रत्यादिकं मासद्वये कार्यमित्याहुः तत्तुष्टं प्रातिमासं मृतादेः क्रियमाणं
 मासिकं प्रति संबत्सरं क्रियमाणं कल्पादि श्राद्धमिति मरीचिवचसो मद
 नरत्नेन मास्यानात् गालकी यस्य च मासद्वयात्मके क्षयमास इति माधवे
 न व्याख्यानात् यच्च के श्रिडं प्रथमादिकं मासद्वये कार्यं श्राद्धिकं प्रथमं
 यत्स्यात्तत्तुष्टं तन्मालि नुचे त्रयोदशो वसं प्राप्ते कवी तपुनरादिकमिति यमो
 क्तेरिति तदपि चिंत्या पुनरादिकं द्वितीयादि चार्थिकं त्रयोदशो नीते च तदंशो क
 र्यात् अन्यथा संबत्सरं न वर्धेत श्राद्धं तत्र मृते हनीति यो हीनसि विरोधः स्या

नि.सिं.

५

9

सि

अदि ति हेमाद्रौ दृष्टी चंद्रोदये च एतेन वर्धते न हि या शुद्धे पि कुर्यादेवेत्यने
त भट्टारक्या मानाभावात्परास्ता पूर्वोक्त व्याख्यायां न हारीते ये प्रथमग्रहा
मेव मानं यदपि निर्णयामते पूर्वोक्त कालादरी वचनात् मलमासे आह दिने
स्वबंधात्परास्ता पूर्वोक्त देशे न द्वा स एतान् भोजयित्वा शुद्धमासे सपिंडकं प्रा
हं कुर्यात्पिंडवर्जमसंक्रान्ते संक्रान्तौ पिंडसंयुतां प्रति संवत्सरं श्री आह मेवं
मासद्वयेपि चेति अदि पाराशरोक्तिरिति तदपि चिंत्य पूर्वोक्त वचनस्य भवत्येवं
भावाधिकमासविषयत्वात्तत्रैमासद्वये आह मुक्तं तदाह सत्यतयाः एक एव य
मासः संक्रान्तिद्वयसंयुतः स हि द्वयगतं आह मलमासे पिशास्यत इति मासद्व
यगतं यत्तौ संक्रान्तगतं क्षयगतं च मलमासे क्षयमासे अपि शब्दात्तत्पूर्वाधि
मासे चेति हेमाद्रिः दीविकापि तत्प्राक्संग्रहमासको यदि भवेत्तत्र तस्य सं
वत्सरं तस्मिन् शुद्धतया क्षये च वचनात् कुर्याद्वयोः कोविद इति कालदर्शये
तद्विषय एवेत्यलंबकृता मलमासवर्ज्या मुक्तानि कालदर्शे अनित्यमन
ति ते च दानं च महदादिकं अग्न्याधानाध्वरा पूर्वतीर्थयात्रा मरेक्षणं

राम

५

9A

देवारा मत्तगादिप्रतिष्ठासं जिघं धनं आश्रमस्वीकृतिः काम्यसद्योत्सर्ग
 अनिष्टमः राजाभिषेकः प्रथमसूजाकर्म्मसत्ता निच अन्नप्रदानमारंभोग
 हाणां च प्रवेशनं स्नानं विवाहो नामाभिषेकं देवमहोत्सवः चतारंभ समाप्तो
 काम्यकाम्यं च पापानां प्रायश्चित्तं तु सर्वस्य मलमासे विवर्जयेत् उपाकर्मो
 त्सर्जनं च यवित्रश्मनार्पणी अथोत्सर्गहेमंतः सर्वाणां बलिरष्टकाः शिवस्य
 बलिर्चिदयोः शयनं परिवर्त्तनं दुर्गं द्रव्यापनोत्थाने ध्वजोत्थाने च वज्रिणः
 पूर्वत्र प्रतिष्ठापरत्रान्यस्य देवकमिति अत्र मलवचना निहेमादिमाधवादि
 यो ज्ञेयातिदिनोदासीये च यात्रोत्सवं देवादिशयं दिव्यमेव च मलमा
 सेन कुर्वीत यासस्य वचनं यथेति अथ निर्णयः अथ मासेषि ज्ञेयः रति
 संक्रमदोनेयो वर्ज्यवर्ज्यविधिः स्मृतः स एव तद्विसंक्रांते मलमासेऽप्युदी
 रितरति काठकगृहोक्तैः अथ मासस्य तां प्रत्यादिके विशेषो हेमा
 दोतिथ्यर्थे प्रथमेऽर्धे द्वितीयेऽर्धे तथोत्तरः मासाविति बुधैः श्रित्योभ
 यमासस्य मध्यगो आदिकं बद्धधीयनेषि ज्ञेयं यन्मलमासे वर्ज्यमुक्तं

धे

निःसिं.

१०

५

10

शुक्रगर्वोस्तादिविज्ञेयं तदाहहस्यतिः बालेवायदिवाहदेमुकेवा
संगतेगुरौ बालमासुद्वैतानिवर्जयेद्देवदरीनमिति तथा अनादिदेवता
ब्रह्माशुचः स्युर्नष्टभार्गवे मलमासेष्यताहन्नतीर्थयात्रां विवर्जयेत् (
आहन्नतीर्थेदोषाभावमात्रं नतफलमिति वाचस्पतिमिश्राः तन्न असति।
बाधकेफलहेतुत्वात्तेः लस्योपि नीचस्येवजसंस्थेप्यतिचरणागतेवालावृ
क्षात्तगेवासंन्यासेदेवयात्राव्रतनियमविधिः कर्णवेधस्तदीक्षा मौजीवं
धोगनानां प्रतिगमनविधिर्वास्तुदेवप्रतिष्ठावर्ज्यासद्भिः ययत्नाविदराप
तिगुरौसिंदराशिस्थितेचेति दीक्षायागदीक्षानत्वागमदीक्षा तथा उद्या
नक्षत्राव्रतवेधदीक्षाविवाहयात्राचवधुप्रवेशः तद्वागकूपविदराप्रति
ष्ठाहहस्यतोसिंहगतिः न कुर्यात्तु दिवोदासीये गुरौदित्येगुरौ सिंदेनष्टे
शुक्रमालिह्वे गृहकर्म व्रतं यात्रां मनसापिनयितयेन अस्यापवादः
तत्रैवत्राह्यमंडनं चोपवासं च गौतम्यासिंहगेगुरौ कन्यागतेतत्कर्मोपा
नतनतीरवासनां तथा आद्यासागौतमीगंगादितीयाजाह्नवीसृता स

राम
१०

10A

वर्त्तनीर्षफलस्त्रानाद्गोतम्यासिंहगोगुरौ संहिताप्रतीये स्यात्सपराजंगुरुम्
 क्रयोश्चालत्वमङ्गदशकंचवार्धं ह्यधोसितेज्यावम्भौशिष्ठत्वे शसौयत्न
 सावृषयीयर्षनो वशिष्ठः प्रतीचारगतेजीवेवर्जयेत्तदनंतरं वृत्तोद्ग्रादिकार्ये
 शुः प्रष्टाविंशतिवासरात् वाज्यादिलक्षणमुक्तं त्रैलोक्ये रविणाराशक्ति
 रन्येषां ग्राहणमस्तु उच्यते ततोद्ग्राधार्धकं प्रोक्तमूर्ध्ववाल्पप्रकीर्तितमिति ।
 वाल्यादिपरिमाणं चक्षुःशते बालः शुक्लोदिवसदशकं पंचकंचैव ह्यङ्गः पञ्चा
 दङ्गात्रितयमुदितः पक्षमैङ्गाक्रमेण जीवो ह्यङ्गः शिष्टुरपितथापक्षमन्येः शिष्ट
 तौ ह्यधोप्रोक्तौदिवसदशकंचापरेः सपराजं पश्चिमत उदयेदशदिनादिबालः अस्ते
 पंचदिनानि ह्यङ्गः पूर्वतो दिनत्रयं बालः पक्षंच ह्यङ्गः इत्यर्थः जीवोगुरुः अन्यत्र
 त्वान्यतथोक्तं प्राक् पञ्चादुदितमुक्तः पंचसप्तदिने शिष्टः विपरीतेष्वि ह्यङ्ग ३
 त्वंतद्देवगुरोरपीति एषांचपक्षाणामवस्थामाहमिहः बहवोदर्शिता
 कालाद्येवात्येवार्धकेष्विवाग्रास्तात्राधिकाः शेषादेशभेदादुगतायदीति
 देशभेदस्मृमदनरत्ने गाग्यः शुक्रोगुरुः प्राक्चपराक्चवालोधिंध्योदशा

वंतिष्ठसप्ररात्रं चं ॥ मुहूर्तेषु च यद्वचदेरोत्रिदनवदतीति अस्मादेरयवाः कारी
 वंते नमस्तस्मात्सोऽयं कृतो दोषो विशेष्यरा लये त्रिस्थाली सेतो वायवीये गोदाव
 र्या गवायं च श्रीशैले गहण द्वये सुरासुरगुरुणां च मोक्षदोषो न विद्यते गहण
 द्वये तन्निमित्तक कुरुक्षेत्रयात्रादानां वित्यर्थः तदाह त्रिस्थाली सेतो लाक्षः उपपन्न
 वेणीतलभानुभान्चैरर्धोदये वै कायिलारव्यषष्ठ्यां सुरासुरेभ्यस्तमयोपि तीर्थयात्रा
 विधिः सक्रमणे च रास्तः इत्यलंब इना मलमासे च व्रतविशेष उक्ते हेमाद्रौ पाद्रे
 अधिमासे तु संप्राप्ते गुडसर्पिर्दुर्गानि च त्रयसिंहादयः पानिदानव्यानि दिने दिने सा
 ज्यानि गुडनिष्प्राणि अधिमासे न्ययेत्तम अधिमासे तु संप्राप्ते च त्रयसिंहासुदेव
 ताः उदिष्या ययदानेन पृथ्वीदानफलं लनेत् त्रयसिंहादयः पानं कांस्पयात्रे
 निधाय च सधृतं सहिराण्य च ब्राह्मणयनिवेदयेत् विष्णुरूपी सहस्रांशुः स
 र्वपापप्रणाशनः अयं यान्नप्रदानेन मम पापं व्यपोहतु नारायण जगद्बीजभा
 स्वरप्रतिरूपक व्रतेनानेन पुत्रांश्च संपदां चामि वदं य यस्य हस्ते गदा चक्रै ग रु
 ने यस्य बाह्वे शंखः करतले यस्य समे विष्णुः प्रसीदतु कलाकाद्यादिरूपेण

निमेषघटिकादिना यो वंचयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः कुरक्षेत्रमयं
 देशः कालः पर्वद्विजो हरिः पृथ्वीसममिदं दानं गृह्यसाणयुक्तोत्तम मज्जानां
 च चिमुध्यर्थं पापप्रशमनाय च पुत्रपौत्रादिसाध्यर्थं तव दास्यामि भास्कर मंत्रे
 एतन्नेन यो दद्याच्च यस्त्रिंशत्सूक्तान् प्राप्नोति विपुलं लक्ष्मीं पुत्रपौत्रादिसंख्यं
 इति इति श्रीकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिंधो मासमलमास निर्णयः १
 पक्ष निर्णयस्तु दैवैश्वर्यः शुक्लपक्षः कृष्णः पित्रे विशिष्यत इति मधवेनोक्तः
 अथ तिथि निर्णयः तत्र तिथिर्द्वेधा शुद्धा विशुद्धा च दिने तिथ्यंतरसंबंधरहिता
 शुद्धा तद्दिता विद्वातश्च शुद्धायामसंदेहाद्विद्वा निर्णयते तत्र सामान्यतो वेधमाह
 माधवीयेष्वेतेन सिः पक्षद्वयेपि तिथयः सिद्धिं पूर्वा तथोत्तरां त्रिभिर्महर्त्तैर्विध्यं
 ति सामान्योपविधिः स्मृत इति हेमाद्रिमदनरत्नादौ तु द्विमुहूर्त्तौ प्युक्तः उदत्ते
 देवतं भानोपि अंचत्तमिते रवौ द्विमुहूर्त्ता त्रिरुश्रसातिः हव्यकव्ययोरिति वि
 श्वधर्मोक्तेः द्विमुहूर्त्तत्वे चानुकल्पः द्विमुहूर्त्तौ पिकर्त्तव्या याति पितृद्विगामिनी
 ति दक्षिणायामोक्तेः अयं वेधः प्रातरेव सायंतत्रिमुहूर्त्तैर्वेधराजं याति थिस

मनु प्राय्यायास्तं पश्यनीयति सातिथिस्तदिने प्रोक्ता त्रिमुहूर्तैर्वया भवेदिति स्कंदो
 क्तः दीपिकापित्रिमुहूर्तगानुसक्तत्वासायेति यानुत व्रतोपवासस्तानादौ घ
 टिकैकापिया भवेत् उदये सातिथिर्ग्राह्या विपरीता तु पौनर्विके इत्यादीनि स्कंदो
 वचनानि तानि वैश्वानराधिकरणम्यायेना वयवस्तत्प्रात्रिमुहूर्तप्रशंसापराणि
 तिथिविशेषे वैधविशेषः स्कंदे नागा द्वादशनाडीभिर्दिकु पंचदशभिस्तथा ।
 भूतो द्वादशनाडीभिर्द्वयंतुत्तरं तिथिमिति अयंचोपवासातिरिक्तविषय
 रतिवैधः तत्र सर्वातिथिर्यदहः कर्मकालव्यापिनी सैव ग्राह्या कर्मयोग्य
 स्ययः कालस्तत्कालव्यापिनी तिथिः तया कर्माणि कुर्वीति द्वादशदीनका
 रणमिति विष्णुधर्मोक्तः किं न ह्येतद्वा प्रावव्याप्तावेकदेशव्याप्तौ वा युगमवा
 क्यान्तिर्लियः तस्य पूर्वावाधेनोपपत्तेः युगमवाक्यंतु निगमः युगमग्नि युग
 भूतानि यणमुन्योर्वसुरंध्रयोः रुद्रा द्वादशयुक्ता चतुर्दश्यां च पूर्णिमा प्रति
 पद्यमावास्या तिथ्यो युगमं महाफलं एतद्व्यस्तं महादोषं हंति पुण्यपुरा

× कर्मकालस्य प्रधानांगात्वाच्च ३×

12A

कृतमिति अत्ररंध्रात्ताः शब्दादितीयादिनवम्येत निधिवाचकाः सद्राका
 द्वितीयात्रितीयाद्युतासाचद्वितीयायुक्तेतिसप्तयुग्मानीत्यर्थः इदंचशुक्लपक्षे
 अमाप्रतिपद्युगमस्यपूर्णिमायाश्चतुर्दशैवसत्त्वान् इतिकेचित्तत्वेत्तमाप्रतिपद्युग्मा
 त्कृष्णपक्षेतिगात्पक्षद्वयपरमिदंतत्रदिशेषवाक्येः कृष्णेतिथिविशेषेयोयतइति
 दशमीतुक्तापुराणसमुच्चये संदर्भेदशमीकार्यामिच्छितापूर्वयाचवेतिसंदर्भे
 शुक्लपक्षेत्रयोदशीतुसुमंतनोक्ता जयोदशीतुकर्त्तव्याद्वादशीसहितामुने
 इति कृष्णपक्षेत्वापस्तंबः प्रतिपत्सद्वितीयास्याद्वितीयाप्रतिपद्युता चतुर्थीसं
 युतायाचसान्तीयाफलप्रदा पंचमीचप्रकर्त्तव्यामृष्यायुक्ताचनारदकृष्णपक्षेष्ट
 मीचैवकृष्णपक्षेचतुर्दशीसर्वविद्याप्रकर्त्तव्यापरविद्वानक्षत्रचित्तरदशमीच
 प्रकर्त्तव्यासाडर्गादिजसत्तमवक्ष्यमिअमावास्याकृष्णपक्षेत्रयोदशीराताः प
 र्युतांस्रज्याः परापूर्वेणसंयुताइति यत्तुआध्रः खर्वोदर्थ्यस्तथास्तिदिसागि
 धंतिथिलभणं खर्वदर्थ्योपरोपज्योहिंसास्यात्पूर्वकालिकीति खर्वः सा

४३

नि.सिं

१३

13

म्यंदर्कसिद्धिः तयोः पराहिंसाभयस्तत्र पूर्वैश्चार्थः एतच्चाद्यादिविषयं द्वितीया
दिशुपुग्मानां यज्यता नियमादिषु एकोदिष्टादि स्रष्टादोक्षासत्तद्वाद्योचोदनेति
व्यासोक्तैः नियमादिषु तदनादिदेवकर्मसु एकोदिष्टादिति चेत्तद्वाद्यावि
त्यर्थः कर्मकालव्याप्तभावेन कर्मोपक्रमकालमेवग्राह्यकर्मोपक्रमका
लगानुक्तानि निर्ग्राह्या न युग्मादर इति दीपिकोक्तैः यानि त्रयोतिथिं समनुप्राप्य
उदये याति भास्करः सान्तिथिः सकलान्नेपादानाध्ययनकर्मसिद्ध्यादीनि तानि
त्रिस्तूनादिस्तुतिरिति निर्णयशैली अथैकभक्तं तात्कालः पाप्मे मध्याह्न्या
पितीग्राह्या एकभक्तैः सदातिथिरिति मध्याह्न्यं च धामभक्तदिनत्तरीयांशः तेन
यद्यपि द्वादशदंडानंतरं प्राप्यते तथापि दिनाह्नं समये तीते युज्यते नियमेन यत्र
एकभक्तमिति प्रोक्तमतस्तस्यादिवैवहीति स्कांदोक्तैः षोडशसप्तदशादिदंडामुख्यः
कालः दीपिकायां तु मध्याह्नं त्यदले त्रिभागादिवसे स्यादेकभक्तमिति ततः
सूर्यास्तपर्यंतं गोणः दिवैवहीत्यस्य वैमर्श्यापत्ये तत्परत्वात् अत्र पूर्वैश्चुर्व्या
रुभयेषुर्व्यामिस्तदभावो रात्र्यामिस्तत्रापि साम्यं वैषम्यं वेति वद्व्यक्षाः तज्जा

राम
१३

यद्येवं संदेह एव तृतीये तु पूर्वोक्तिगोणमुरव्यव्याप्तेः सत्त्वात् पूर्वोक्तिमाधवः ।
 पुनश्च वाक्यान्निर्णयः इति हेमाद्रिः चतुर्थपक्षे पूर्वोक्तिगोणकालव्याप्तेः सत्त्वात् वैयर्थ्येण
 गोणराव्याप्तौ याधिकासाग्राह्यासाध्ये सर्वोऽग्र्यं च स्वतंत्रैकभक्तेर्निर्णयः । अ-
 न्योगे उपवासप्रतिनिधौ तदनुसारेण निर्णयः । अथ नक्तं तच्च दिनानशानपूर्वं
 रात्रिभोजने तत्र प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या प्रदोषव्यापिनी ग्राह्यातिथिर्नक्तं नक्तं सदेति च
 त्सोक्तेः प्रदोषस्तु त्रिमुहूर्तप्रदोषः स्याद्भानो वा संगते सति नक्तं तत्र तु कतव्यमिति ।
 तासु विनिश्चय इति मदनरत्ने व्यासोक्तेः तत्रापि त्रिदंडोत्तरं कार्यं सायं संध्यात्रि-
 घटिका अस्तादुपरभास्वत इति स्कांदोक्तेः संध्यात्वात् तत्र चत्वारि मानिकमार्गसं-
 ध्यायां परिवर्जयेत् । आहारं मैथुनं निद्रां स्नाध्यायं च चतुर्थकमिति मार्कंडेयेन भो-
 जननिषेधात् । मुहूर्तानंदनं नक्तं प्रवदंति मनीषिणः । नक्षत्रदर्शनात् नक्तं महं मन्त्रेण
 एवाधियेति माधवीये भविष्योक्तेः । गोमस्तु प्रदोषोऽसामयाद्द्वं घटिका द्वयमिष्य-
 ते इति वत्सोक्तप्रदोषः संध्यात् तजःपरिहानिवशाद्भानोरध्वोदयं यावदिति वराहो-
 क्तेरित्याहुः । तत्र अस्य संध्यावेदनानध्यायादिपरत्वात् । अत एव तत्र रवं इमस्य सं-

नि. सिं.

१४

14

ध्यात्वमुक्तं विज्ञाने श्रुतेन यच्च भदनरत्नेन नक्तवैधत्वादाग्राप्राप्त भोजनगोचरो
निषेधस्तुक्तं तत्र विधेर्निषेधाविरोधान् अन्यथा कपिंजलानि तत्र जिभ्यो
धिकानां हिंसनं स्यात् सायंकालेन कंतु दिनद्वये प्रदोषास्यरी ज्ञेयं अन्यथा त्वे
वरत्रस्यादस्तादृश्याय तौ हि सेति जवालि वचनात् प्रदोषव्यापिनी तस्यादिवा नक्तं
विधीयते आत्मनो हि गुणी छाया मंदा भवेति भास्करे तत्र कंतं नक्तमित्याहु नक्तं निशि
भोजनमिति स्कांदाच्च यत्पादौ नामयि सायाद्रे नक्तं नक्तं निशायां कुर्वीत गृहस्थो
विधिसंयुतः यतिश्च विधवा चैव कुर्यात्तत्सदिवा करमिति माधवीये च स्मृत्यं त
तत् इदमपुत्रविधिरोपलक्षणं पुत्रवत्तत्सरात्रावेव पुनाश्रमोप्याश्रमी स्यादप
तीकापि पुत्रवानिति संग्रहोक्तैः सौरनक्तं दिवैव त्रिहूर्तस्य गोवाहि निशि चैताव
तीति धिः तस्यासौरं भवेनक्तमहमेव तत्र भास्करे निति सुमंतुक्तैः हरिनक्तं विरोधः
कालादरी स्कांदे उदयस्यासदाप्यहो हरिनक्तं ज्ञेयं ति धिरिति अन्यनक्तं संक्रां
त्पादावधिरात्रावेवानिषेधस्परग्राप्राप्त भोजनगोचरत्वेन वैधावाधकत्वात्
दिनद्वयव्याप्तौ परा उभयोर्मदिवानिधयोः प्रदोषव्यापिनी ति धिः तत्रोत्तरत्रन

राम
१४

14A

तं स्यादुभयत्रापि सायत इति कालादर्शजावालिवचनात् अन्ययक्षेण एकम
 कृत्वन्निर्णयः अत्र विशेषो मदनरत्नेगारुडे हविष्यभोजनं स्नानं सत्यमाहारलाघ
 वं अग्निकार्यमधःशय्यां नक्तं भोजीयञ्चरेत् अग्निकार्यं व्याकृति होमः इति न
 तं अयाचिते तु विशेषवचनाभावादुपवासवन्निर्णयः अथ नक्षत्रजतकालः
 विष्णुधर्मोत्पद्यितव्यं नक्षत्रं यस्मिन् सप्तमयाद्रिः पुज्यते यत्र वातारा निरीये
 शशिना सहेति माधवीये स्कां दे तजोवोयवसे दक्षे यान्निरीयादधो भवेत् उ
 पवासे यदक्षं स्यात् तद्धिनं तैकमक्तयोः अथ व्रतापरिभाषा तज्जाधिकारणो मय
 नरत्ने भविष्ये अनग्नयस्तु ये विप्रस्तेषां श्रयो विधीयते व्रतोपवासनियमेर्ना
 नादानैस्तथान्यप्यनग्निरुह एम्यवासविषयं अतएव देवलः आदिताग्नि
 रनङ्गं अन्नसचारी च तेजयः अमृतं एतं सिध्यति नैवांसिद्धिरनङ्गता एकादश्या
 दौ तु वचनाद्भवतीति वक्ष्यामः अद्रस्यायधिकारः अद्रो वर्णः अतुर्थो वर्णत्वा
 दुर्ममर्द इति वेदमञ्जस्वाधास्वाहावयङ्कारादिभिर्विनेति आसौ तै प्राच्यास्तु वैश्ये
 अद्रयोदिराजाधिकोपवासनिषेधः वैश्या अद्रा प्राये मोहादुपवासं प्रकुर्वते त्रि

व

15

रात्रं पंचरात्रं वा तेष्वां ऋषिर्न विद्यते च तर्थात् भक्तभाषणं वैरेयम् देविधीयते
 त्रिरात्रं न धर्मसौ विहितं ब्रह्मवादिभिरिति हेमाद्रौ वचनात् यावदुक्तनिवे
 धस्त्येकेन मसातयो विषय इति युक्तं एवं स्त्रीणां मपि यत्तत्त्वादेनास्ति स्त्री
 णादय कपज्ञानव्रतं नायुषो वरां भर्तृशुश्रूषये वै कालो कानिष्ठान् ज्ञाति
 ति यदेवैभ्यो यज्ञ पित्रादिकेभ्यः कुर्याद्भूता भर्तृचनं सक्रियां च तस्यार्द्धवैसाफ
 लं नान्यर्चिज्ञानारीभुक्ते भर्तृशुश्रूषये च आदित्यपुराणे नारीरवत्वननुज्ञाता
 भर्तृवापि श्रुतेन वा विफलं तत्र भवेत्तस्या यत्करोत्योर्द्ध देहकमिति श्रौर्द्ध
 र्दिकं यारलोः केकेन इर्द्धननुज्ञाविषयं भार्यापत्युर्द्धतेनैव व्रतादीनाचरेत्स
 देति कात्यायनोक्ते अत्र विरोधो हारिवंशे स्नानं च कार्यं शिरसस्तनः फलमवा
 मुयात् स्नात्वा स्त्रीप्रातरुभ्या यपतिं विज्ञापयेत्सती तथा गृहीत्वौदं वरं पात्रं सकृ
 रं साधते तथा गेष्टगंदक्षिणं सिंघप्रगृहीयाच्च तज्जलं औदं वरं ताम्रमयं त
 तो भर्तुः सती दद्यात्स्नानं प्रयत्नं च आत्मन आभिषेकं च ततः शिरसि त
 ज्जलं उपवासेषु कर्तव्यमेतद्विज्ञातकेषु चेति सर्वत्र ब्रूतेषु संकल्पविधि

15A

भारते गृहीत्वोडवरं पात्रं कारिष्यन् सुदं सुरवः उपवासे तु गृहीयाच्च द्वासे
 कल्पयेदुधः हस्तेनैवेत्यर्थः अथ व्रतारंभकालः मदनरत्ने गार्ग्यः प्रस्तोत्रे च
 गुरौ ऋक् वैश्वदेवे मल्लिस्तुते उद्यापनमुपारंभं व्रतानां नैव करयेत् रत्नमाला
 यां सोमसौम्यगुरु ऋक् वासराः सर्वकर्म सुभवंति सिद्धदाः भानुभौमशानिवा
 सरेषु च प्रोक्तमेव रत्नकर्म सिध्यति विरुद्धसंज्ञा इहये च योगास्तेषामनिष्टः
 रत्नलयादप्रायः सर्वे धृतस्तु व्यतिथाननाम सर्वोपरिष्टः परिघस्य चाधैति ध
 स्तुक्तयोगो प्रथमे सवज्ञे व्याघातसंज्ञेन वपंचस्तुले गंडेति गंडे च षडेव नाजः ऋ
 भेष्टकार्येषु विवर्जनीयाः संग्रहे कथ्येति दशयोक्तुं सर्वसप्तमीभूतयोरधः ऋ
 के वेदे शयोक्तुं भद्रा प्राग्वत्सुपारीयोः श्रियतिः न सिद्धिमायाति कृतं च विद्वं
 विद्यारिघातादिकमत्र सिद्धं व्यवहारसमुच्चये दशम्यामष्टम्यां प्रथमघटिका
 पंचकपरद्विष्टुः सप्तम्यां द्वे दशघटिकां तृतीयां कायां स्वयमघटिकाभ्यः परम
 ये ऋभं विष्टुः पुष्टं शिवतिथिचतुर्थीस्तुतिरमे तत्रैव सर्पिणी तु सिते पक्षे क
 थ्ये चैव तु वृश्चिकी सर्पिणीस्तु सुखं त्यज्यं च श्रिकया पुष्टमेव च माघकीये

अथ भद्र
 नपाच

16

बृद्धिर्यदाहनितिघेरपरार्धजातापूर्वार्धजानिशितदाशुभदाचपुष्टे ब्रह्मयाम
 ले दिनभद्रायदारात्रौ रात्रिभद्रायदादेवानत्याज्याः शुभकार्येषु प्राक्कुरे
 वेपुरातनाः ब्रतारंभेचविशेषः मदनरत्नेसत्यहतेनोक्तः उदयस्यातिथिर्यादि
 नभवेदिनमध्यभाक् सारं व्रतान्नृत्तानां स्यादारंभश्च समापनमिति देवलः
 शुभकृत्प्रातराहारं स्नात्वाचम्यसमाहितः सृष्ट्यायदेवताभ्यश्च निवेद्य ब्रतमा
 चरेत् मदनरत्नेभविष्ये क्षमासत्यं दयादानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः देवपूजागि
 हवनं संतोषस्तेष्वर्जनं सर्वव्रतेष्वयं धर्मः सामान्योदराधास्पृशः पुण्यहोमस्त
 देवतयः व्याहृतिहोमोवेति वर्धमानः यस्तु तेनोक्तं सर्वमेतत्पुण्यं कृत्वा कृत
 व्रतपरं ब्रतं तरेत्तु विध्यंतरसत्त्वे होमो न्ययान्मृत एवैकादश्यां शिष्टानां होमा
 नाचरामिति तन्न जपो होमश्चेति वक्ष्यमाणो कवाक्यत्वेनास्य काम्यव्रतस्य
 मासिश्च परत्वात् तसंतु साष्टदशस्य यश्च मित्रविंदादा प्रकरणास्थेनेव तत्र दत्त
 विशेषहोतविधिभिरस्योपसंहरमिति विष्णुधर्मे तज्जय्यजयनध्यानं तत्क
 षाश्च व्राणादिकं तदर्थं च तत्रासकीर्त्तिनश्रावणदयः उपवासकृता मेते गुणाः

16A

प्रोक्ताः मनीषिभिः कौर्म बहिर्गामात्पजास्ततिपतिनंचरजस्वलांनस्परोना
 मिभावेतनेक्षेत्रतवासरे पश्चि चंद्रोदये अग्निपुराणे स्नात्वा व्रतवतासर्व
 व्रतेषु व्रतमर्त्तयः पूज्याः सुवर्णमय्याद्याः शक्त्या वैभूतिमिराधिना जपो होमश्च
 सामान्यं व्रतांते दानमेव च चतुर्विंशद्वादशपंचवात्रय एव वा विप्रा पूज्या यथा
 शक्तिनेभ्यो दद्याच्च दक्षिणां अत्र विप्रारतिपुल्लिङ्गानि देवास्तु मां स एव भोज्याः न
 तु स्त्रियः एवं सहस्रभोजनावपि विरूपैकरोषस्य प्रमाणं न रं विना युक्तत्वात्
 अत एव दयोर्यजमानयोः प्रतिपदं कुर्यात् बहुभ्यो यजमानेभ्योऽत्यादौ विरूपै
 करोषायोगात् यन्नाभिप्रापेदित्वं बहुत्वं वा न संभवतीत्युक्तं माचार्यैः पार्थसा
 रथिना च एतेनैकस्य ब्राह्मणस्यासत्या भोजनं परास्तां बहुत्वस्य एकपदस्य
 ब्राह्मणान्वितत्वेन भोजनान्वयभावावा दित्यन्यत्र विस्तरः अदस्य तु प्रतिष्ठादि
 बद्धिप्रदारा व्याहृति होमश्चि वईमानः व्रतमर्त्तयो व्रतदेवता प्रतिमाः पुति
 मास्वस्त्यं च मदनरत्ने भविष्ये अनुक्त इव्यत संख्या देवता प्रतिमान्यसौ वर्णा
 राजतीतामी च क्षजामार्त्तिके रतया चित्रा पृष्ठलेखे वाप्यानि जविता नुरुपतः ओ

नि.सिं.

१७

मायात्मलपय्येतं कर्त्तव्या राघवर्जितैः तत्रैवर्त्तसे आर्ज्यं द्रव्यमनदेरो जहो
निष्पुविधीयते मंत्रस्य देवतायाश्च प्रजापतिरिति स्थितिः मंत्रानुक्तैः समस्त
व्याहृतिरूपो मंत्रः प्रजापतिश्च देवतेति कल्प्यते नरः वर्धमानधत्तदेवी पुराणो
होमो ग्राह्यजायां शतमव्याधिकं भवेत् अथ विंशतिरव्योवायया प्राप्तिविधीय
ते मदनरत्ने अनुक्तं संख्यायत्र स्यात्तमव्योत्तरं वर्धमानधत्तदेवी पुराणो
यः उद्यवासां द्विजः कृत्वा ततोर्जसूतं भोजनं कुर्यात्तेनास्य स गुराण उद्यवासां भिजाय
ते ज्ञतो घ्रायनात्ततोर्जसूतं च द्रव्येन दिपुराणो कुर्यात्तु घ्रायनात्तस्य समाप्तौ
यदुदीरितं उद्यवापनं विनायत्तद्वत्तनिःफलं भवेत् यदि चो घ्रायनं नोक्तं ज्ञतानुग
ततश्चरेत् विज्ञानुसारतो दद्यात्तुक्तौ घ्रायने ज्ञते गाश्चैव कांचनं दद्यात्तज्ज्ञतस्य
परिपूजयेत् अथ तौ तु नारदीये सर्वे व्यामय्य लाभे न यथोक्तं करणं विना वि
प्रवाक्यं स्मृतं अथ ज्ञतस्य परिपूजयेत् तथा विप्रवचो यस्तु गृह्णाति मनुजः शुभं
अथ दद्याद्दक्षिणां पापः स यतिनरकं ध्रुवं भारते वेदोपनिषदे चैव सर्व
कर्म सुदक्षिणा सर्वज्ञानमयो द्विष्टा भूमिगीवो यकांचनं वैजवापः शिवे

राम

१७

नेत्रोद्भवं यस्माद्भजतां धित्व लभेत् प्रमंगलं तद्यत्नेन देवकार्येषु वर्जयेत् टो
 डरातं देदेवीपुराणे ज्ञते च तर्कं ध्यायने आक्षेपि च विशेषतः परान्नभोजनादौ वि
 यस्यान्नं तस्यानफलं एध्वी चंद्रोदये ग्निपुराणे नित्यस्त्राभ्योमिता हारिण्यु
 रुदेव द्विजार्चकः क्षारं क्षौद्रं बलवणं मधुमांसानि वर्जयेत् तारास्तुत
 त्रैवोक्ताः तिलमुद्रा च ते शिंछं सम्यगे धर्मकोद्रवौ धान्यकंदे वधान्यं
 च शमी धान्यं तथैव स्विन्नधान्यं तथा पाण्यं मूलं तारगणः स्मृतः गो
 धूमानां तु तत्रैव प्रतिप्रसवः ब्रीह्यष्टिकमुद्राश्च कलायः सतिलं पयः
 श्यामा काश्चैव नीवारा गोधूमाद्या ब्रूते हिताः कृष्णं डालो दुवती कं पालं
 कीज्याल्लिकात्यजेत् चरुर्भक्षं सक्तकणाः शाकंदधि घृतं मधु श्यामा
 काः शालिनी वारा मावर्कं मूलं तंदुलं हविष्यव्रतनक्ताशवग्निकार्या

दिकेहितं मधुना संविहायान्यद्रुते वाहितमग्निरेतमिति शमीधान्यमाद्यादिपा
 लंकीमध्यदेशेयोद्रुतिप्रसिद्धा ज्योतिष्काकोरातकी मितिभर्यांगौतमः
 चरुभक्षसक्तकणपाचकशाकपयोदधिधृतसलफलोदकानिदवीषुत्ररोत्र
 रप्रशस्तानिष्यदधिधृतं च गव्यमिति अन्येचविशेषः एकादशीचतुर्मा
 स्यादिप्रकरणेवक्ष्यते गृहीतव्रतस्यागोत्रमदनरत्नेछागलेषः पूर्वव्रतंगृही
 त्वाधोनाचरेत्काममोहितः जीवनंभवतिचांडालोमृतः स्वाचाभिजाय
 ते तत्रप्रायश्चित्तमुक्तं पृथ्वीचंद्रोदये अग्निगुरुपुराणयोः क्रोधात्प्रमा
 दात्क्रोधाद्वा व्रतभंगोभवति यदि दिनत्रयं न भुंजीत भुंजितं शिरस्योपवेति प्रयश्चि
 त्नामादतिक्रांतव्रतानुष्ठानं नास्तीति गम्यते अतिक्रांतमयि व्रतं कार्यमेवेति प्रल
 पाणिः तन्मध्ये लोपो व्रतशेषसत्येत्थं एतच्च शक्तिविषयं अशक्तोऽत्र कालदेमाद्रौ
 पुराणोत्तरे उपवासासमये श्रेदेकं विप्रं भोजयेत् तावद्वा नादिवादद्याद्रुस्यदि
 गुरांतया भुक्तः कृतभोजनं विनेति शेषः सहस्रसमितां देवीं जयेद्वा प्राणसयमान्
 कुर्याद्वा दशसंख्याकान् यथाशक्वात्तरो नर इति शुद्धितत्वे मत्स्येव उपवासं च
 शक्तानां नक्तं भोजनमिच्छाते मदनरत्ने वायवीये द्रव्यदातोपवासस्य फलं प्रा

प्रोक्तं संशयं तथापराकैर्देवलः ब्रह्मवर्षे तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनं व्रतेष्वेता
 निचत्वारिचरिष्यति इति निश्चयः मत्स्ये तस्मात्कृतोपवासेन स्नानमभ्यगपर्वकं च
 जेनीयं पुण्यत्वेन स्य यद्यंतत्परं न्य अनेच नियमास्तत्र नान्येषणीयाः अथ स्त्री ब्र
 तेषु विशिष्ट उच्यते तत्र हेमाद्रौ व्रतकोटिगारुडे गंधा संकारतां वलपुष्पमालानु
 लेपनं उपवासेन दुष्पति दंतधावनमंजनमिति इदं च भर्तृकोपवासविषयं अ
 जनं च सतां वलं कुंकुमं रक्तवाससीधारयेत् सोपवासोपि अवैधमकरं यतः वि
 धवायति मार्गं कृमासीवाय दृश्येति तत्रैव भविष्यते तेषां विष्णुधर्म सर्वेषु त
 पवासेषु पुमान् वायसवा सिनीधारयेद्वक्तवस्त्राणि गंधधूपानुलेपनं उपवासेन दु
 ष्यति दंतधावनमंजनं मदनरत्नेषां सः दंतधावनपुष्पादि व्रतेषु स्यान् दुष्पतीति
 यद्यपीदं सर्वोपवासविषयं प्रतीयते तथापि शिष्याचासो भाग्याद्यर्थं क्रियमाण
 नवारात्रिरात्राभ्युपवासविषयमेव न त्वेकादश्यादिविषयं अराक्तलज्जलपानं
 राक्ततां वलवर्णान् उपवासः प्राणस्य तादृवा स्वायाश्च मेधनादित्यपराकैर्देवलेन
 तन्निषेधात् नवा स्य पुं विषयत्वेन सावका रात्वा स्त्रीणां तां वलादि प्राप्नोती
 ति वाच्यं तां वलादि प्रायकस्यैवेकादशीत रविषयत्वेन वैपरीतस्यापि रउवचायात् ॥

पशुदरिवंशे अंजनं रोचनं चैव गंधात्सु मनसस्तथा व्रते चैवोपवासे च नित्यमेव विव
 र्जयेत् शिरसाभ्यजने सौम्येनैव मेतत्पशस्यते न पादयोर्न गात्रस्य स्नेहेनेति स्थितिः
 स्थितिर्न तत्र त्रेवोक्तप्रायकव्रतविषयेन तत्सर्वजपूर्वविरोधादिति मदनरत्ने उक्तं
 तत्रैव अमुपवासे तोरो यश्च कलहस्य कृतिस्तथा उपवासादुत्तादापिसयाभ्यंशय
 तिस्रिंशं त्रियमित्युपलक्षणं मदनरत्ने शिवधर्मे दानं ज्ञातानि नियमाज्ञानं ध्या
 नेन जपः यत्नेनापि कृतं सर्वं क्रोधितस्य ह्यथा भवेत् अथ स तत्कादौ निर्णयः त
 वशावस्तथा रोचयोः सर्वस्मात्तत्कर्म निवृत्तिर्निवंधेषु स्यैव गोशक्तक्षता रोचा
 द्वावपि तामाहुः जानुर्ध्वं क्षतजे जाते नित्यं कर्म न वाचरेत् नैमित्तिकं च तदधः १
 अवद्वक्तो न वाचरेत् प्रये केच समुत्पन्ने ज्वरकर्मणि मेयुने धूमो ज्वरे तथा वांतौ
 नित्यं कर्मणि संयजेत् इवैभुक्तैश्च जीर्णैश्च नैव भुक्तापि किञ्चिन् कर्म कुर्यात्त्रो
 नित्यं सततं केन केन येति कालिकापुराणात् वस्तुतस्तत् पूर्वदेवी प्रजोपक्र
 मात्तन्मात्रविषयत्वमस्येति युक्तं प्रतीमः तथा हेमाद्रौ पादौ गर्भिणीस्तनिका
 दिश्वकुमारी वा यशोहिणी यदा मुक्ता तदा न्येन कारयेत् प्रयत्नाच्च यमिति १

पुंसोप्येवविधिः स्निग्धस्थानिवक्षितस्थत्वात्तत्तेनयस्मिन्ब्रूते यत्पूजाद्युक्तं तद
 येनकारयेत् शरीरनिधत्तुं कुर्व्यादिति हेमाद्रिर्वाचरव्येन ब्रूतिनां ब्रूते इति
 विष्णुस्तेऽप्यारंभस्तनभवत्येव शुद्धितत्त्वो विष्णुः बहुकालिकसंकल्पो गृही
 तश्च पुरायादि स्तनके स्तनके चैव ब्रूतं तत्रैव दुष्यति एतत्तत्काम्यपरं नित्यत्वनार
 ध्यमाधिकार्यमिति गोडाः मदनरत्ने पूर्वसंकल्पितं यच्च ब्रूतं स नियतब्रूतैः तत्र
 कर्तव्यं नरैः शुद्धदानार्चनविबर्जितं साधवीये कोर्मैकाम्यापवासे प्रजांते त्वं तरा
 मृतस्तनके तत्र काम्यब्रूतं कुर्यादनार्चनविजितमिति एतेन सांगेधिकारादुक्ता
 नदेव पूजादिकार्यमिति वर्धमानोक्तिः परास्तप्रारब्धपूजादिकार्यमेव नवरात्रे
 तत्रैव विरोधवशमः एव रजस्वलापियत्तु सत्यव्रतः प्रारब्धदीर्घतपसां नारी
 एव यद्रूपो भवेत् न तत्रापि व्रतस्य स्यादुपरोधः कदाचनेति तत्प्रतिनिधिना
 कारयेदित्येतत्परं तदुक्तं मदनरत्ने मास्ये अंतरातरजोयोगे पूजामयेन कारये
 दिति प्रतिनिधयश्च निर्गियामृते पैठीनसि भार्यायत्पुत्रं कुर्व्याद्वाप्यायाश्च य
 निब्रूतं असामर्थ्यपरस्ताभ्यां ब्रूतं भगोन जायते स्कां देवि पुत्रं वा विनयोपेतं भगि
 नी भ्रातरं तथा एवामभाव एवान्नं ब्राह्मणं वा नियोजयेत् कात्यायनः पितृमा

नि.सिं.

२०

20

तन्मातृपतिगुर्वर्थेचनिरोधतः उपवासंप्रकृतीनाः पुण्यंरातगुणंलभेत् माता
महादीस्तदिरपराकादस्यासुखेण हानेतेतुफलेविप्राःसमांशसमवाप्नुयुः मय
वरत्वेप्रभासंघडे भर्तापुत्रःपुरोधसश्चभ्रातापत्नीसरवापिच यात्रायांधर्मकार्येषु
जायंतेप्रतिहस्तकाः एभिः कृतंमहादेविस्वयमेव कृतंभवेत् नत्रेनवायवीये
स्वयंकर्ममशक्तमेत्कारपीतपुरोधसा इदंचसर्ववर्णसाधारणंअविरोधात् य
त्रकश्चिदाहस्तस्यब्राह्मणादिरेवप्रतिनिधिर्युक्तो नष्टदः नपेस्तपसीर्थसेवाप्र
बुज्यामंत्रसाधनं विप्रैः सेयादितपस्यसंपन्नतस्यतत्फलमिति मरीचिवचना
दिति तन्नुद्यं प्रब्रज्यादीनांमूदेसंभवाद्विरोधेप्रापदरीनातिन्यायेनास्यब्रा
ह्मणादिगोचरत्वात् यदापिउपवासोव्रतं होमस्तीर्थस्नानजपादिकमितिपूर्वार्ध
पाठस्तदापिसएवदोषः स्त्रीमूदयतना निषिद्धिमानवीयेजयनिषेधात् वस्तु
तस्तु संस्मृतावाचनमात्रमात्रेत्यत इतिव्रतिनिषेधेकावर्तेत्यलं अत्रविरोध
माह त्रिकांउमंडनः काम्येप्रातनिधिनासितित्येनैमिति केचसः काम्येषु क
माहर्ध्वंकेचित्प्रतिनिधिविदुः नस्यात्प्रतिनिधिर्मत्रस्यामिदेवाग्निकर्मसु।

राम

२०

सदेशकालयोर्नास्ति नारणोरगिरेवसा नापि प्रतिनिधातव्यं निषिद्धं वस्तु कुत्र
 हिरण्यके शिस्तु जेपि न स्वाभित्वस्य भार्याय पुत्रस्य देशस्य कालस्याग्नेर्देवतायाः क
 मलाः राक्षस्य च प्रतिनिधिर्विद्यते अथ व्रतादिसन्निधाते निर्णयः तत्र तिथि द्वय
 सन्निधाते तत्रोक्तं दानदोमादि क्रमेणानुष्ठेयं अविरोधात् इदं पूर्ववत् स्थेव ए
 क मध्येन्य काम्य कर्मारंभस्तनभवत्येव गुणफलादतेः यस्य यदेन ततेन रायस्तस्मा
 यजेत यज्ञे निर्गतिर्गृह्णातीति राण क धृतश्रुतिः यज्ञः अनादिकर्ममात्रं अनंगे
 न व्यवधानदोषस्य सर्वत्र साम्यात् शिष्टास्तु माघ कार्तिक रतावादि मध्ये ल
 क्ष्मणमतुलाभारत प्रवणद्याचरंति तन्नित्यमध्येस्तु काम्य मध्ये लक्षित्यं यत्र
 तन्नैक भक्त्यदो विरोधस्तत्र प्राथम्यादेक भक्तं कार्यं नक्तं लभरेषु सन्निधौ
 गौण काले कार्यं समकालीन विरुद्ध व्रतादौ चैकं स्वयं कृत्वा न्यद्रायादिना का
 रयेदिति माधवः यत्र लशिवरात्रादौ तिथि मध्ये पारणया क्रिभोजनं प्राप्तं भुत्वा
 षष्ठ्यादि वा भुक्तारात्रोपक्राचयवैणि एकादश्यामहोरात्रं भुक्त्वा चाद्रायणं च
 रेदिति तन्निषेधश्च तत्र पारणया वैधत्वादि वैवभोजने निषेधस्तस्मात् प्राप्ता भोजन

विषयः एवमष्टम्यादिनक्तत्रने संक्रांत्यादौ रवौ संकष्टचातुर्य्याचरात्रो भोजनं यत्र
 त्वष्टम्यादौ दिवा भुजिनिषेधः संक्रमेचरात्राविति निषेधद्वयंतत्रौ पुवास एव कार्यः
 यद्यपि युधिष्ठिरः ३ पुवा सोपि निषिद्धः तथा युप वास निषेधेन भक्ष्य किंचित् प्रक
 स्य वेदिति वेचना किंचिद्भक्ष्यत्वापवासः कार्यः चांद्रायणमध्ये एकादश्यादौ तत्र भो
 जनं कार्यमेव चांद्रायणस्य काम्यत्वेन नित्यवाधकत्वात् अवाधेन गत्यसंभवा
 च एकादश्यामेकांतरोपवासो दिपारणायां जलधारणं कृत्वा पवसेत् प्रायो
 वा अशितमनरितं चेति श्रुतेः एवं द्वादश्यां मासोपवासश्चाह प्रदोषादिषु ज्ञेयं ए
 वं काम्यनैमित्तिकानित्यत्वाद्दोदिकृतं बलावलं स्वयमसह्यमिति दिक् इति श्रीक
 मलाकरभट्टकृते निर्णयसिंधोपरिभाषसमाप्ता अथ प्रतिपदादि निर्णयः
 श्रुतप्रतिपदपरादि व्यापित्वे सर्वग्राह्या युग्मवाक्यात् प्रतिपत्संमुखी कार्यया
 भवेदपरास्कीर्ति स्कांदोक्ते मुक्तास्यात्प्रतिपदितिथिः प्रथमतः श्रेत सपरास्के भवे
 दिति दीपिकोक्तेः अपरास्के अपंचधा भक्तेदिने चतुर्थ्या भागः तदभावे सायाह्ने
 व्यापिनी परिगृह्यतामिति माधवोक्तेः कृष्णतुपराह्णमाह्नरतोरिव लेति दी
 पिकोक्तेः कृष्णापि सर्वे वेत्यनं भट्टः सर्वातिथिषु वर्ज्या न्युक्तानि मुहूर्तदीपि

21A

कायां कृष्णान्दृष्टीफलानिलवर्णं नर्त्यं तिलांशुतैलं चामलकं दिवं प्रवसतां
 रीर्षं कपालांजकं निष्पावांश्च मसूरिकान् फलमथो वृत्ताकं संज्ञं मधुघृतं स्त्रीगम।
 नं कमात्पतिपादेषु वमाद्योऽप्याः रीर्षं नालिकेरं कपालं गुलाबः पुत्रं पटोलं भू
 पालः कृष्णान्दृष्टीभारं मूलकं पनसं फलं धात्री शिरः कपालां त्रनरवचमं
 तिलानि च क्षुरकं मांगनीनां सेवां प्रतिपदं प्रभृति न्यजेत् नरं वशिष्ठी चर्मम
 सूचिकाः द्वितीयात् कृष्णायाश्च शुक्लात्तरेति हेमाद्रिः कृष्णा द्वितीयादिसा य
 वाहेयदिसा सितानुपरतः सर्वेति दीपिकोक्तेः माधवानंतमदमते तु सर्वाधिदि
 तीयापरा तथा च माधवः सर्वं दुरसती प्रातः परे छस्त्रिमुहूर्तं गा सा द्वितीयापरा
 योऽप्या सर्वं विद्याततो न्ययेति तृतीयात् सर्वमते रंभा व्यतिरिक्ता परैव तेन
 युग्मवाक्यं रंभा व्रतविषयं रंभायां वज्रं धित्वा तृतीयाद्विजसत्तमं अन्येषु
 सर्वकार्येषु गणयुक्ता प्रशस्यत इति ब्रह्मवेत्तात् गौरी व्रते तु विरोधमाह मा
 धवः मुहूर्तमात्रं सचिपि दिने गौरी व्रतं परे शुद्धाधिकायामप्येवं गणयोगप्रश
 सनादिति चतुर्थ्यपि सर्वमते गौरी व्रतान्तिरिक्ता परैव युग्मवाक्यात् एकाद
 शी तथा च व्रीह्यावास्या चतुर्थिका उपोष्या परं युक्ताः पराः सर्वेण संयुक्ता

२२

इतिमाधवीये बृहद्वारिष्टोक्तेषु नागचतुर्थीतमध्याह्न्यापिनीयेचमीयुताचगा
 लेतिनिर्णयामतेमाधवीचोक्तं गणेशव्रतेतत्तृतीयायुतेव चतुर्थीतत्तृतीयांमहापु
 ण्यफलप्रदा कर्तव्याव्रतमिवेत्सगणनाथसुताधिलीतिहेमाद्रौब्रह्मवेवर्त्तान् माध
 वीयेतगणेशव्रतेमध्याह्न्यापिनीपुर्या चतुर्थीगणनाथस्यमातृवद्वाप्रशस्यते म
 ध्याह्न्यापिनीचेतस्यात्परतश्चेत्परेहनीतितदस्यतिवचनात् प्रातःशुक्लतिलैः
 स्नात्वा मध्याह्ने पूजयेत्त्येति तत्कल्पमभिधानाच्च तेनपरदिनेसत्वेपराश्रयासवेत्
 तं वस्तुतस्त यत्रभाद्रशुक्लचतुर्थीदौगणेशव्रतविशेषमध्यानयजोक्ततदि
 ययान्येवप्रातःशुक्लवचनानि तत्सर्वत्रिकाणि संकष्टचतुर्थ्यादौचरूनांकर्मका
 लानांवाधायतेः तेनसर्वत्रगणेशव्रतेपूर्वेवेतिसिद्धं संकष्टचतुर्थीतुचंद्रोदयवा
 यिनीरात्रादिनद्येसत्वेमातृयोगस्यसत्वात्पूर्वेति केचित् अन्येनदिनेतुमु
 क्तंजगदीशस्यस्यतृतीयायोगस्याभावात्परदिनेमाधवेक्तमध्याह्न्यापिस
 त्वात्संपूर्णत्वाच्चपरेत्याचक्षते दिनद्वयेतदभावेतपरैवगौरीव्रतेपूर्वेवगणेशगो
 रीशस्यस्यतिरिक्ताप्रकीर्तिताः चतुर्थीः पंचमीविद्वादेवतांतरयोगतइति म
 दनरत्नेब्रह्मवेवर्त्तान् पंचमीतुमाधवमतेसर्वापिपूर्वा चतुर्थीसंयुताकार्या
 पंचमीपरयान्तु देवेकर्मणिपिमेवशुक्लयज्ञेतर्यसितेरतिहारीतोक्तेः हेमा

द्विमतेतत्तुल्यमापूर्वासितापरा कृष्णार्चयुतासितापरयुतास्यात्यंचमीति
 दोषिकोक्तेः । तत्तत्तत्तु हारीतोक्तउपवासविषयाप्रतियत्यंचमीचैवसावि
 त्रीभूतदरुणमानवमीदरामीदृक्मीचैवनोयोष्यापरसंयुताइति ब्रह्मवेच
 तात् यत्तुपंचमीतु कर्तव्यावस्थापुक्तातु नारदेत्यायस्तंवीयेस्तत्रागपूजाविष
 यमिच्छिन्नतभदनिर्णयामृतादयः चमत्कारचिंतामणो पंचमीनागपूजा
 यांकायावष्टीसमन्विता तस्यातुत्तुचितानागाइतरासचतुर्थीकेति तेनना
 गपूजादौपरैव यत्तुमदनरत्नदेवोदासीययोः श्रावणपंचम्यतिरिक्तापूर्वमु
 क्तेः श्रावणपंचमीमुक्तासंग्रहोक्तानागपंचमी तांपरित्यज्यपंचम्यश्रुतधीसहि
 ता इतिसंग्रहोक्तेः गणेशस्कंदयोगाभ्यांक्रमानागः शुभाशुभः मित्रामित्रे
 तयोत्प्रेनागानामारुवर्हिणाचितिविषयविंशत्तानां श्रावणपंचम्यतिरिक्ता
 याः नागपंचम्याः चतुर्थीयुतत्वेयुक्तंतुपवासादिविषयं यत्रैवाहुने वष्टीसर्वम
 तोस्कंदव्रतातिरिक्तापरैवयुग्मवाक्यात् नागविद्वाजकर्तव्यावष्टीचैवकदचने
 तिस्कंदान्न निर्णयामृते वष्टीचसममीचैववारश्रद्धंस्तमालिनः योगोपयय

कोनामसर्पकोटग्रहेतमः सप्तमीपूर्वैवपुग्मवाक्यात् स्रष्ट्यायुतासप्तमीचक
 त्वेवमातातसर्वदेतिस्कांदाच्च अष्टमीतुसर्वमते कृष्णपूर्वासितापराव्रतमात्रेष्टमी
 कृष्णपूर्वाशुक्लाष्टमीपरेतिमाध्वोक्तेः परयुक्शुक्लाष्टमीपूर्वयुक्कृष्णेतिदीपि
 कोक्तेः शिवरात्रयुत्सवेतकृष्णायुतरा पक्षद्वयेयुत्तरैवशिवरात्रिमहोत्सवेतिमाध
 वोक्तेः दिवोदासीयेभविष्ये यदायदासिताष्टम्यावृधवारोभवेत्कचित् तदातदाहिसा
 र्गस्याएकभक्ताशनेनप संध्याकालतथात्रैप्रसप्तैचजनाईने बुधाष्टमीनक्तन्या
 हंतिपुरांयपुराकृतं नवमीतुसर्वमतेपूर्वा पुग्मवाक्यात् नकुर्धान्नवमीतातदशम्या
 उक्तदाचिनेतिस्कंदाच्च दशमीतु पूर्वापराचैतिहेमाद्रिः कृष्णपूर्वात्राशुक्लादशम्या
 वंशवस्थितेतिर्मधवः वस्तुतस्तु मुरव्यानवमीयुतेवग्राह्या दशमीतुप्रवर्तन्यासदुर्गाहि
 जसत्तमेत्यायस्तवोक्तेः यत्रसंस्मृतादशमीकार्यापूर्वपापरयाचवेत्यंगारसोक्तंनवमीयु
 तालाभेऽग्रेदधिकग्राह्येत्येवंनेयं अथैकादशी तत्रैकादशयुयवासोद्धेधानिवेधपरि
 पालनात्मकोव्रतरूपश्च तत्राद्येनशरेवनपिवेत्तोयंनखादेत्कूर्मस्तकरो एकादश्याव
 भुंजीतयक्षयोस्तभयोरपिशतिपीतिर्कोर्मदेवलायुक्तः अग्निपुराणे गृहस्थोव्रतस्य
 रीचश्चादितारिस्तथैवच एकादश्यांनभुंजीतयक्षयोस्तभयोरपिशति नचानययु
 दासेनव्रतविधिः तद्वैतुव्रतादिराकाभावात् व्रतरूपस्तुव्रतस्यैववर्त प्रप्रेहरिदिने

सम्यविधायनियमं निशि दशम्यामुपवासस्य प्रकुर्याद्देष्टव्यं व्रतं इति इदं च शि
 वभक्तादिभिरपि कार्यं वैष्णवो वा यशोवो वा कुर्याद्देकादशी व्रतमिति शिवधर्मा
 क्तेः वैष्णवो वा यशोवो वा सोरो येन तत्समाचरेदिति सौरपुराणञ्च सोऽपि द्वैधाः नित्यः
 काम्यश्च उपोष्याकादशी नित्यं पक्षयो रुभयोरपि इति गरुडोक्तेः पक्षे पक्षे च कर्त्त
 व्यमेकादश्यामुपोष्यां इति नारदोक्तेः अनित्यता यदीदं द्विष्टसायुज्यं प्रियं सततमात्म
 नः एकादश्यां न भुंजीत पक्षयो रुभयोरपि इति कौर्मादिषु फलश्रुतेः काम्यता उभयेकाद
 शी व्रतं च गृहस्थातिरिक्ततामेव नित्यं गृहस्थस्य तु श्रुत्यामेव व्रतं नित्यं न कृत्वा यं एका
 दश्यां न भुंजीत पक्षयो रुभयोरपि वनस्थयति धर्मे यं श्रुत्यामेव सदा गृहीति देवलोक्तेः
 न चानेन निषेधपालनमेव वनस्थयति विद्यते उपसंहरियते न तु व्रतमिति वाच्यं अस्य पृथु
 दासेन व्रतविधिपरत्वात् अन्यथा पूर्वोक्ताग्निपुराणवचने निषेधपालने गृहस्थस्याधिका
 रोक्त्या विरोधः स्यात् निषेधस्यानित्यतमात्रफलेत्वेन विरोधान्न येषां उच्यते संहारायोगा
 त् अभावस्य धर्मत्वाभावाच्च तस्मादनेन सर्वेषां मेकादशी व्रतविधायिनां सामान्य
 वाक्यानां वनस्थयति विषये उपसंहाराच्च गृहस्थस्य कृत्वा यं नित्यं व्रतप्राप्तिः क
 र्त्तव्यं संज्ञात्मा उपवासं च कृत्वा एकादशी वासरे चंद्रसूर्यग्रहे चैव न कुर्यात्पुत्रवान्
 गृहीति नारदादि वचने युक्त्या निषेधः प्रसभवा इति चेत् अयं रायनी बोध

24

नीमध्ये या कथ्येकादशी भवेत्. सेवो यो व्यागृहस्थे नान्या कथा कदाचनेति याद्ये
 गृहस्थस्य आवादीकार्त्तिकी मध्यस्या या कथा विहिता स पुत्रवतो निषिध्यते अन्यथा
 कथायां तु न विधिः सर्वविधीनां वनस्थस्यति एव संसारात् न निषेधः प्राप्तभावात् शयन्या
 दिवा काले पुत्रगृहगोचरमित्यनेन भट्टहेमाद्रादिगंध्याः दीपिकास्य अपि अस्ति तां तु श
 यनो बोधोत्तरस्याय्यो न्यसात्सात्मजिनोपीति मदनरत्ने भविष्येति यथाशुक्तात्।
 याहात्मा ददारी मे सदा प्रियामुक्ता गृहस्थैः कर्त्तव्या भोगसंतानवर्धिनी मुमुक्षुभित्त
 या हात्मा तेन तेनोपि दर्शितेति निषेधपालनं काम्यव्रतं कर्त्तव्यं वैष्णवमिति नारदोक्तैः
 एतच्च सर्वकालादरी उक्तं विधवा वा वनस्थस्यस्य ते श्वैकादशी द्वये उपवासो गृहस्थस्य
 शुक्तायामेव पुत्रिणाः भुजे निषेधः कथायां सिद्धिस्तस्य ततो व्रते इति प्राच्यास्तु वैष्णव
 गृहस्थानां कथायिन्या नित्यं भक्तिसमापुक्तैर्नरैर्विष्णुपरायणैः पक्षे पक्षे च कर्त्तव्य
 मेकादस्यामुपवासो स पुत्रप्रसन्नार्थो च स जनो भक्तिसंयुतः एकादस्यामुपवसेत्यभ
 योरुभयोरपि इति नारदोक्तैरित्याहुः पुत्रराजस्य प्रापत्य मात्रवचनं नारायणं ततो
 पुमां स एव मे पुत्रा जायेरनित्यं प्रापत्य मात्रवाचित्वा क्तैः जनयद्दुपुत्राणीति लिङ्गात् यो
 जीमाताम हस्तेनेति मन्त्रकैः पुत्रा अपत्यमित्यर्थे तु स्त्रीभ्यो हृक् योत्रेय इत्यायत्रैः पुमान्
 पुत्रो जायत इति च उपवासनिषेधे विशेषो वायवीये उक्तः उपवासनिषेधे तु भ

24A

संकिंचित्कल्पयेत् न दुष्कृत्य वा सेन उय वा सफलं लभेत् भयं च तत्रैवोक्तं न
 कंह विष्वात्रमयोदने वा फलं ति लाः क्षीरमयं बुचाज्यं पत्यं च गव्यं यदि वा पिपायुः
 रास्त्रमंजोत्रं चोत्पलं तत्र दशमी वेधो द्वेधा अरुणोदयवेधः सूर्योदयवेधश्चेति ?
 आद्यो गारुडो दशमी रोद्यसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः नैवोपोष्य वेदमनेन तद्दिने
 कादरी जतमिति अरुणोदयस्वरूपं च माधवीये स्कां देव उदयात् प्राकृ च तस्वरूप
 घटिका अरुणोदय इति यदपि उदया प्राग्यदा द्विप्रमुहूर्तं द्वयसंयुता संपूर्णा का
 दरी न भतं जेवोपवासेत् गृहीति गारुडसोरधर्मादिवचनं यच्च भविष्ये आदित्यो
 दयवेलायाः प्राः मुहूर्तं द्वयाचिता एकादशी तसं पूर्णा विद्यान्यापरिकीर्तिना
 तदप्युपसंहारन्यायनेन दंडचतुष्टयपरमेव हेमाद्रावप्येव यत्तु ब्रह्मवैवर्ते च तस्यै
 घटिका प्रातरुणोदयनिश्रयः चतुष्टयविभागोत्रवेधादीनां किलोदितः अरुणो
 दयवेधः स्यात्सार्द्धं घटिकात्रयं अतिवेधो द्विघटिकाः प्रभासंदरीनाद्वेः महावे
 धोपि तत्रैव दृश्यते कीन दृश्यते तुरीयस्तत्र विहितो योगः सूर्योदये बुधैरिति तदप्य
 दयवद्वारा रुणोदयवेधविशेषपरमेवेति माधवीये मदनरात्रे च अत्यस्तदयवेधः
 तथाप्येपि वेधाहेमाद्रौ माधवीये गारुडे च उदयात् प्राकृ त्रिघटिका व्याप्येकादशी य
 दा संदिग्धे कादरी नाम वज्रैयं धर्मकोभिभिः उदयात् प्राः मुहूर्तं न व्याप्येकादशी

नि.सि.
२५

25

यदा संयुक्तै कादशी नाम वज्रै यधर्मवद्धये हेमाद्रौ रात्रे रंत्योऽष्टमभागेऽप्यरुणो
दयुक्तः निराः प्रोते नृयामार्धदेववादित्रयादने सारस्वतानध्यायने चारुणोदय
उच्यते इति स्मृतैः अत्रैके रात्रां सर्वपक्षराणां मुरुर्त्तदयेन क्रोडी कारा निराः प्रोते इति
वचनाच्चरात्रिमानव रात्सार्द्धत्रिदंडादयो नेकेऽरुणोदयाः तदा ह हेमाद्रि सार्धघटि
कात्रयोक्तिरस्य विरति घटी मानरात्रि विषयामरुत्तेरास्तराजीरयेष्य चतस्राघटि
का इत्युक्तमिति त्याज्य तन्न अरुणोदयरात्र्यस्मानेकार्थत्वापत्तेः न च मुरुर्त्तदयमित्यर्थः
दंडद्वयैकमुरुर्त्तद्वेधानां तथाप्यनुपपत्तेः निहिते वां यामार्धत्वमरुणोदयत्वे
चास्ति मुरुर्त्तद्वयस्य यामार्धस्य चतस्राघटिका इत्यनेनोपसंहाराच्च न तदर्थः न च सा
र्धत्रघटिकात्रयमित्यनेनोपेतदापत्तिः रात्र्या तेन च तदंडवेधस्यैवोक्तेः चतुर्दंडार्ध
घटी दशमी रात्रे हि वेधस्तदर्थः द्विघटिकादौ तदयोगाच्च यत्तु मत्तं कियता रुणोदय
वेध इत्यपेक्षायां सार्धघटीत्रयनियमादरुणोदयैर्धघटिकातोऽन्यदशमी सत्येन दो
ष इति तत्तु द्विदंडादावपि तदापत्तेः दशमी शेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः नैवो
पौं व्यवेष्टवेन तद्धि नैकादशी न्न तमिति गारुडे भविष्ये च योगमात्रनिषेधात् नार
दीयेपि लववेधोपि विप्रैर्दशम्येकादशीत्यजेन सुराया विंदुना स्यष्टंगं गां भड
यनिर्मलं स्कां देपि कलाकाद्यादिगत्येव दृश्यते दशमी विभो एकादश्यां न कर्त्तव्यं तत्र राजने

राम
२५

कदाचनेति माधवोय्यासु सोयंकलादिवेधोऽरुणोदयवेधेचसमान इति निगमे
 पि सर्वप्रकारवेधोयमुपवासस्यइवकरति अतएवमाधवेनारुणोदयाद्यदंडेस्प
 दशमीस्यरीसंयुक्ता कृत्तघटीयोगे संस्तिदिग्धा मुरुर्त्तमासोसंयुक्ता उदयेसं
 वतीरेभ्युक्ता अरुणोदयवेलायांदशमीयदिसंगता संयुक्तैकादशीनांतुमोहिन्ये
 दत्तवान् प्रभुरितिगोभिलायुक्तेः पूर्वोक्तगारुडदेश्रसामान्यतोविशेषतश्चारुणोद
 यवेधः निविधः यत्त्वष्टमभागोऽरुणोदय इति हेमाद्रिलोक्तं यच्चमरुत्तरात्रीरिति ।
 तत्परमंतस्यवेधेवदूषितं अंतेयुक्तं वेधतारतम्यचदोषतारतम्यादुपपद्यतमिति दो
 षतारतम्यप्रत्यक्षितारतम्यदिवनम्यते तच्चोक्तं हेमाद्रौस्मृत्यंतरे अज्ञानाद्यदिवामो
 हात्कवेनेकादशीनरः दशमीरोषसंयुक्ताप्रायश्चित्तमिदं चरेत् कधपादनरश्रीर्त्वा
 गांचदद्यात्सवत्सकां सुवर्णस्यार्धकंदेयंतिलद्रोणसमन्वितं विंध्यंतरंतत्रैव ब्राह्म
 णान् नोजयेत्त्रिसंक्रांचदद्यात्सवत्सकां धरणास्यार्धकंदेयंतिलद्रोणमथापिवेति ।
 अत्रवेधतारतम्याद्यवस्थितिहेमाद्रिः निराः प्राते इत्यादिदोषाधिक्यार्थमेव तस्माच्च
 तुर्घटिकात्मकरावारुणोदय इति सिद्धं तेनवद्वयंचारादंडानंतरंदशमीप्रवेशोऽरुणोद
 यवेधउत्तोभवति अंत्योपितत्रैकरावेनोक्तः उदयोपरिविज्ञातुदशम्येकादशीयदि ।

26

दानवेभ्यः श्रीगणार्घ्यदत्तवान्पाकशसनइति स्मृत्यन्तरेपि दशम्याप्रांतमादाययदोदेति
 दिवाकरः तेनस्मृद्धं हरिदिनं दत्तं जंभासुरायविति तज्जगुरुणादयवेधोवेधमवविषयः त
 द्वाकोष्ठवेधमवग्रहणान्न तत्स्वरूपं तमाधवीवेत्कां दे परमायदमायत्रोहर्वेवासम्यार्यिते
 नैकादशीत्यज्येधस्तस्यदीक्षास्तिवेधमवी विद्यचार्यितारिवलाचारः सद्धिवेधमवउच्य
 ते यद्यपि यिज्ञादेरागमदीक्षायांतन्मात्रस्यवेधमवत्वनतुपुत्रादेः तथापिस्वयारयर्षप्रसि
 क्षमेववेधमवत्तस्मान्नत्वंचमन्यतेतद्वाः तच्चसागरेभविष्ये यथाशुक्लानथाक्तघ्नायथाक्त
 ज्ञातयेतरा तुल्येतेमन्यतेयस्तसवैवेधमवउच्यते केचिन्नु दशम्यानवमीवेधमपिन्यजति
 तज्जगुरुणादयवेधोवेधमवत्तस्मान्नत्वंचमन्यतेतद्वाः तच्चसागरेभविष्ये यथाशुक्लानथाक्तघ्नायथाक्त
 वेधः सूर्योदयेतथा उत्तौद्वेदशमीवेधोवेधमवत्तस्मान्नयोः क्रमात् देमादिस्तुकेषांचिदर्धरा
 जेपिदशमीवेधमाह अर्द्धरात्रेतुकेषांचित्तरदशम्यावेधइष्यते कपालवेधइत्यादुराचार्याये
 हरिप्रियाः नतन्मतेयस्माच्चियामारात्रिभष्यते इतिब्रह्मवेवर्त्तान् अस्याधीः अनद्यतनेल
 डिःत्यत्रातीतायाः रात्रेः पश्चिमंयामद्विपमागामिन्यारात्रेः पूर्वयामद्वयं दिवसश्च सकलरा
 त्र्योऽद्यतनः सकलइत्युक्तं महाभाष्ये स एववर्त्तमानः कालराकादश्यदोरात्रे उयोष्यः
 तन्माधोदशमीप्रवेशोविद्वा सात्याज्या अतएवहेमाद्रोदशम्याः संगदेवेष्टाऽर्द्धरात्रात्य
 रैरुत्तु वज्र्येच्चतुरोयामात्संकल्पार्थनयोः सदेति तज्जदोषउक्तः चतुरोयामाश्रदिवस

26A

स्येत्यर्थः स्वमतेन रात्रे स्त्रियामत्यात्प्रहरत्रयः पूर्वशेषः तेन चतुर्थप्रहर एव वेधो युक्तः सोऽप्यरु
 णोदमा एव सूर्योदये विना नैव स्नानदानादिक्रमः इति मार्कंडेयपुराणात् प्रत्यहो हर्म्यं
 कल्प इति कोरादरुणोऽयमारभ्यः सूर्यांशुप्रसेस्तत्रैव निवेधः तेन मतभेदाद्वा
 स्येति केचित् कैमुतिकन्यायेनारुणोदयवेधस्यैवेयं स्तुतिरिति तन्माधवः यस्तदिक्
 पंचदशभिस्तयेति वेधः स उयवासातिरिक्तविषय इति माधवः सर्वप्रकारवेधो यमप
 वासस्य दूषकः सार्धसप्तश्रुतीस्तुत्योगोऽयं वाधतेन्न तमिति निगमादित्यलं तत्र माधव
 मते वैष्णवैरुणोदयविद्यात्याज्या यदा त्वेकादशेयवश्रुता सती वर्धते द्वादशी चोभयं
 वातदा यरो योऽप्या एकादशी द्वादशी वाधिका चेत्पुनरादिनं पूर्वग्राह्यं तत्र रस्यादिति
 वैष्णवनिर्णय इति माधवोक्तेः स्तुतैस्तु सूर्योदयविद्यात्याज्या यदा त्वेकादशी श्रुता
 सती वर्धते द्वादशी च समान्यना वातदा गृहस्थैः पूर्वायतिभिरुत्तराकार्या प्रथमे ह
 निसंस्मरणव्याप्यहोरात्रसंयुता द्वादश्या च तथा तातृश्यते पुनरेव च पूर्वाकार्या गृ
 हस्थैश्च यतिभिश्चात्र रात्रिभ्योः इति स्कांदोक्तेर्वर्धमानोऽप्येवमाह उभयवद्भौतश्रु
 द्वादश्या वा सर्वे वा परैव संस्मरेणैकादशी यत्र प्रभाते पुनरेव सा सर्वैरेवात्र रात्र्या परतो
 द्वादशी यदि इति नारदोक्तेः द्वादशी मात्रा त्रैश्वश्रुत्यां सर्वे च न चेदेकादशी विधौ द्वाद
 दी परतः स्थिता उपोष्येकादशी तत्र यदीदृशेत्परमं पदं इति नारदोक्तेः द्वादशी मा

२७

जतदौ तमुदा विद्वे अवस्थिते मृदा पूर्वोत्तरा विद्या स्मार्त्त निर्णय ईदृश इति माध
 वोक्तेषु मदनरत्नेष्वेवं यत्तु विद्याये विद्या विज्ञेया परतो द्वादशी न चेत् अविद्या पि
 च विद्या स्यात्परतो द्वादशी यदीति हेमाद्रौ पा मवचने तदेकादश्या ह दौ तेयं तदुक्तं माध
 वीये एकादशी द्वादशी चेत्पुन्यं वर्धने यदा तदा पूर्वदिनेत्याज्यं स्मार्त्तं ग्राह्यं परदिनमि
 ति विद्वेकादश्या द्वादशी मात्र ह दौ च सर्वेषां परैव तत्रैवैकादशी मात्र ह दौ गृह्यं पर
 द्यायते रुतरा पूर्वोक्तपाथोक्ति एकादशी विषया चेच्छुक्ते कथं विरोधत उत्तरां त्रयतिः
 कथं तत्पदं न्यवसेहृतीति प्रचेतसेत्ते एतच्छुद्धा विद्या न्यमित्यमिति माधवः त्रयोद
 श्या न लभ्येत द्वादशी यदि किंचन उयोध्यैकादशी तत्र दशमी मिश्रता यिवेति स्वदात
 अविज्ञान निविष्टैश्च न लभ्येते दिनानि तु मुहूर्त्तैर्न च अभिर्विद्या ग्राह्ये वैकादशीति धिरिति
 अथ अंगोक्तेषु मुहूर्त्तैर्न च कमरुणोदयमारभ्य होयं अन्यथोत्तरे हि एकादश्यभावस
 भवात् यद्यपि हेमाद्रिणा मृदुसमा मृदुन्यनावाधिक द्वादशिका चेत्सर्वेषां परैवेत्यु
 क्तं तदपि वैमविषयं स्मार्त्तानां तु पूर्ववेत्यविरोधः हेमाद्रिमते तु च्यते तत्र मृदा वि
 द्वादीने दात्रे धान्यनसमाधिकैः बहु प्रकारा पुनस्त्रेधा द्वादश्यनसमाधिकै रित्यष्टा
 दशैकादशीभेदाः तत्र मृदा धिकान्यन द्वादशिका मृदा धिके सम द्वादशिका च सा
 कामैः पूर्वानिः कामैः रुष्यस्य द्यं कर्त्तुं तत्राकार्या प्रयेदनि संयत्तेति पूर्वोक्तं र्वं

केयौकादशीतिथिरिति ऋष्यशृङ्गेः माधवमतेन प्रजगद्दिनादुत्थायतेरुत्तरा विद्वाधि
 कम्पनवादरीकामोभयापक्षयविष्णुप्रीतिकामैः पराकार्याः गृहस्थेन तु नक्तं कार्यं एका
 दशीचरात्रिरोधे त्रयोदशी उपवासं न कर्तव्यं तदुत्र यो त्रसमश्चित इति कौर्म दिनक्षये उपवा
 सनिषेधात् दशमौकादशीविद्वाद्वादशीक्षयंगता क्षीणगसाद्वादशीज्ञेयानक्तं तु गृहिणः
 स्मृतमिति ब्रह्मराजातयोक्तेश्च गृहिणः पूर्वतो यवासः एकादश्याः शुद्धम्पनत्वे शुद्धसम
 त्वे वाद्वादश्याः न्यूनसमत्वे योरेकादश्यामुपवासः यानि तु दशम्यनुगताहंति द्वादशीफलं ध
 मापत्यधनादं वित्रयोदश्यान्तु पारणमिति कौर्मादीनदशम्यविधेयत्रयोदशीपारणयोर्नि
 षेधकानि तानि विहितमिन्नपराणि अजम्बलवचनानि तद्वा वस्थाचाकरेज्ञेया यत्तु
 कालदेमादौ ब्रह्मवाक्यविरोधेन संदेहो जायते यदा द्वादशीतुलदाग्राह्याजयोदश्यान्तु प
 रणमिति मार्कंडेयोक्तैः संदिग्धेषु च वाक्येषु द्वादशीसमुद्योषयेत् तथा विवादेषु च सर्वे
 बुद्वादश्यां समुद्योषणं पारणं च त्रिदश्यामातेयं मासुकीमुने इति पादोक्तेश्च वेधसंदे
 हे ज्योतिषिदो विप्रतिपत्तौ वा पराकार्यं तुक्तं तद्वैष्णवविषयमित्यलं वदुना अथात्रोप
 युक्तं किंचित् सिध्यते तत्र दशम्यामेकादशीयोगे दशमौ मध्ये रावभोजनं कार्यं एकादश्या
 नभुञ्जीतेति तस्या एव निमित्तत्वात् तानि वेधस्तु निहत्या त्माकालमात्रमपेक्षत इति
 देवलोक्तेश्च केचित् एकादशीव्रतोगत्वेन सर्वेषु रेकभक्तविधानाविधिस्थे च

निषेधानवकारान्नकाम्यव्रतांगेभोजनेनिषेधः प्रवर्ततेतेनेकादशीमध्येष्विपूर्वदि
 नेभोजनमित्याहुः अत्राधिकारीमाधवीयेकात्यायनेनोक्तः अष्टवर्षाधिकोमर्त्येष्ट
 शीतन्यनवत्तरः एकादश्यामुपवसेत्पक्षयोरुभयोरपि इतिभविष्ये ब्रह्मचारीचनारी
 चशुक्तामेवसदागृहीति यत्तुविष्णुः यत्नोजीवतियानारीउपोष्यतमाचरेत् आशु
 व्यंहरतेभर्तृर्नरकंचैवगच्छति इतितद्वर्त्तनमुक्ता विषयमितिप्रागुक्तं उपवासासा
 मर्थेनमाकंउपकोर्मयोः एकभक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच उपवासेनदाने
 नैननिर्दाशिकोभवेत् अत्रएकनक्तेनयोमर्त्य उपवासव्रतंचरेदित्येकभक्ता
 दिक्कयवासरादस्तद्धर्मातिदेशार्थः तेनतत्प्रयुक्ताः सर्वधर्माः संकल्पमंत्रेचैकभक्ता
 दिपदेनोक्तः कार्यः इतिमदनरत्ने तथासामध्येप्रतिविधिनाकारयेदितिप्रागुक्तं
 व्रताकरणेप्रायश्चित्तमाह माधवीयेकात्यायनः अर्केपर्वद्वयेरात्रौचतुर्दशपञ्चमी
 दिवा एकादश्यामहोरात्रंभुक्ता चांद्रायणंचरेदिति अथकाम्यव्रतविधिः लघुना
 रदीये दशम्यादिमहीपालादिदिनेपरिवर्जयेत् गंधतांवलपुष्पादिस्रीसंभोगंम
 हायशाः तत्रदशम्याविनिःकोर्म्य कास्यंमांसंममूरांश्चक्षुकांनकोरद्वयका
 न् साकंमधुपराभवंचत्यजेउपवासिनस्त्रियं तथा साकंमांसंममूरांश्चपुनर्भोजन
 मेषुने ह्यतमत्तुपानेचदशम्यायेभ्यस्त्यजेत् सदनरत्ननारदीये अक्षरलचरणस

नि.सिं.

२५

२९

वैद्विद्यान्ननिवेविणः अवनीतस्य रायनाः प्रियासंगमवर्जिता जनघान्याहहेमाद्रौ
देवलः असक्तजलकानाद्यसक्ततां कुलचर्वणत् उपवासः प्रणस्येत दिवास्वायाच्चमै
धुनात् अशक्तौतमदनरत्ने देवलः अपत्येचोवुपानेननोयवासः प्रणस्यति अपत्यजे
कथे विष्मुरहस्ये गात्राभ्यंगं शिरोभ्यंगं तां कुलं चानुलेपनं जनस्थो वर्जयेत् सर्वेयश्चाम
अनिराक्तं प्रायश्चित्तमक्तं निर्णयाम्ते संग्रहे स्तेनसिंसकयोः सरव्यं कृत्यास्तेन्यचहिं
सनं प्रायश्चित्तं व्रती कुर्याज्जापेनामरातत्रयं मिथ्यावादी वैदेस्यापेव कुर्याद्वुनिवेवणे
अष्टाक्षरं व्रती जहारातमध्ये त्रंशुचिः 'ॐ नमो नारायणायेत्यष्टाक्षरः तत्रैवोपैठे
निसिः तां कुलचर्वणे स्त्रीसंभोगे मांसनिवेवणे व्रतलोपो न चेत् कुर्यात्कृष्णावद्भुजिवर्ज
नमिति संभोगोऽस्तु कालादन्यत्र रेतः सेकात्मसंभोगमतेन्यत्र क्षयः स्मृतः
इति तत्रैव कात्यायनोक्तेः हेमाद्रौ वशिष्ठः उपवासे तथा प्राद्वे तथा प्राद्वे न कुर्या
दंतधावनं दंतानां काष्ठसंयोगो दहत्यासप्रमं कुलं काष्ठग्रहणान्मृत्सोष्टाद्य
निवेधति हेमाद्रि विष्मुरहस्ये आद्वेयवासदिवसे रवादिवा दंतधावनं गायत्र्या
शान्तं संयत्तमं वप्राय विमुध्यति निर्णयाम्ते व्यासः वर्जयेत्पारणे मांसं व्रताहे
व्यासधंसदेति एकादश्यां प्राद्वे प्राप्ते माधवीये कात्यायनमाह उपवासे यदा नि
त्यः प्राद्वे नैमिति कं भवेत् उपवासं तदा कुर्यादाप्रायश्चित्तं सेवितं मातापित्रोः स

राम
२५

जंवारिपुर्णामुदङ्गरकः उपवासं तु गृहीयाद्यद्वाचार्थे वधारयेदिति माधवीये व
 राहोक्तेः मंत्रस्तु विष्णुः एकादश्या निराहारः स्थित्वा हरेर्हृदि भोक्तव्यं भिक्षुं उरीका
 क्षरारं मे भूवाच्यतेति शैवादीनां तु हेमाद्रौ सौरपुराणे सावित्र्या यथवानाम्ना
 संकल्प्य तु समाचरेत् शिवादि गायत्र्यो यजुर्वेदे प्रसिद्धाः वाराहे इत्युचार्य ततो विद्वा
 न्पुण्यां जालिमथार्थयेत् ततस्तज्जालेपिवेत् अष्टाक्षरेण मंत्रेण त्रिजंसेनाभिमंत्रितं
 उपवासफलं प्रेक्षः पिवेत्याजगत्तं जलमिति कात्यायनोक्ते मध्यरात्रे उदये वा द
 रात्री वैधेरात्रौ संकल्प्य इति माधवः दशम्या संगदोषेण अर्धरात्रौ त्वरेण तु वर्जयेच्च
 तरेण या मासं संकल्पार्चनयोस्तदा विद्वायवासेन श्रुतं दिनं त्यक्त्वा समाहितः रात्रौ सं
 सृजयेद्विष्णुं संकल्प्य च तदाचरेदिति नारदीयोक्तेः तत्रैव पूजामभिधाय देवस्य पुरु
 तः कुर्याज्जागरंति यतो व्रती द्वादश्यां निवेदनमंत्र उक्तः कात्यायनेन अतानतिमरा
 धस्य ततेनानेन केराव प्रसीदस्व मुरेवा नाथ ज्ञान दक्षिण दो भवेति नारदीये ब्राह्म
 णान् भोजयेच्छतया दद्याद्देवदशराततः स्कां दे कृत्वा चैवोपवासं तु योऽश्नाति द्वा
 र्तिदिने नैवेद्यं तु लसीमिच्छं हृत्या कोटि विनाशनं द्वादश्यां च व्रज्याभ्यां हृत्य हस्त्यानिः
 दिवानि द्वापरात्रं च पुनर्भोजनमैष्युनं दौ द्वं कां स्यामिच्छं नैलं द्वादश्यं मष्टवर्जयेत्
 हेमाद्रौ द्वासां उपुराणे पुनर्भोजनमध्याये भारप्रायासमैष्युने उपवासफलं हस्त्य

म२

 राम
३०

30A

दिवा निशचपंचमी स्कां दे परान्नं कां स्य तं बले लोभं विनाय भाषणं वज्जीयो दिनि शेषः
विष्णुधर्मं असंभाष्या न हि संभाष्य तलस्य तसि वादने आमलक्याः फले वापि पारे प्राप्य
रथश्रुध्यति हस्तचारदीये रजस्वलां च चंडालं महापाति किं न तथा स्तुति कां पति तं चै
व उचिष्टं राजिकादिकं व्रतादि मध्ये प्रणुपाद्य ये वा धनि मुत्तमः श्रद्धोत्तर सहस्रं तु
जये द्वे दमातरं एतद्भूतं स्तुतिके पिकायं स्तुतके मृतके वापि न त्याज्यं द्वादशी व्र
तं इति विष्णुक्ते तत्र त्वत्तं दानादि स्तुतकांते कार्यं स्तुतकांते नरः स्नात्वा यजित्वा
जनार्दनं दानं दत्त्वा विधानेन व्रतस्य फलमस्तु त इति मात्स्योक्तेः रजोदरीने पिका
यं एकादस्यां न भुंजीत नारी ह्ये रजस्वपीति पुलस्त्योक्तेः यदा द्वादश्यां श्रावणं दंत
दाशु द्वादश्यां न भुंजीत नारी ह्ये रजस्वपीति पुलस्त्योक्तेः यदा द्वादश्यां श्रावणं दंत
एतान्विता तयोरेवोपवासः सत्रयोदश्यां च पारणमिति दीपोक्तेः एते च नियमः का
म्यव्रते नियतां नित्यव्रते सति संभवे कार्याः शक्तिमांस्तपुनः कार्या न्नियमं सविशेष
णमिति कात्यायनोक्तेः अशक्तो न माधवीये व्रतं वैवर्ते इति विज्ञाय कर्त्तव्यता वश्यमे
कादशी व्रतं विशेषानियमाशक्तो होरात्रं भुजवर्जित इति श्रुत्या द्वादश्यां द्वादश्याः
तत्र श्रद्धाधिके कादशीयुता द्वादशी उन्मीलनी संज्ञा द्वादश्यां वश्रद्धाधिका वर्द्धते चेत्सा
वैजुली वा सरजयस्य रिनी त्रिस्युषा अग्रे पर्वणः संसर्गाधिकत्वे यक्ष वाहिनी पु

माः

31

व्यसंयुता जया भवणायुता विजया पुनर्वसुयुता जयंती रोहिणीयुता यापनारिनी
 एताया यक्षय मुक्तिकाम उपवसेत् अत्र मूलदेमा द्वौ त्रैयं एकादशी द्वादशी रेवत्ये न
 त्रैयं यथासः पार्थिवे तु राक्षस्यो यथासद्वयं एकादशी मुषोव्ये वद्वादशी समुषो वयेदि
 ति विष्णुरहस्यात् अत्र तौ तद्वादश्यामेव एवमेकादशी त्यक्त्वा द्वादशी समुषो वयेत्
 पूर्ववासरां पुण्यसर्वं प्राप्नोत्यसंशयमिति तत्रैवोक्तेः यदा ह्यस्या द्वादशी तदोक्तं सात्से ।
 यदा भवति अल्पो हि द्वादशी पारणादिने स्नानार्चनक्रिया कार्यादानदो मादिसंयुता इति
 संकटे तु माधवीये देवतः संकटे विषमे प्राप्ते द्वादश्या पारयेत्कथं अद्भिस्तपारणं कु
 र्यात्पुनर्भक्तं न दोषक इति संकटे त्रयोदशी प्राद्वप्रदोषादौ अत्र केचिदाहुः अपेक्ष
 वाक्यान्पनादिताग्नि विषयार्णि अग्निहोत्रादीनां श्रोतत्वेन पक्षार्थयोगादिति द्वाद
 श्यां च प्रथमपादमग्नि क्रम्य पारणं कार्यं द्वादश्याः प्रथमः पादो हरि वासरसंज्ञकः त
 मग्नि क्रम्य कुर्वीत पारणं विष्णु तत्पर इति इति निर्णयाम् तन्मदनरत्ने च विष्णु धर्मीकैः
 अत्र केचित्संगिरन्ते यदा भूयसी द्वादशी तदा यि प्राप्नुमर्हन्ते त्रयो पारणं कार्यं सर्वेषां
 मुपवासानां प्रातरे वा हि पारणे निवचनादिति अस्मद्गुरुवक्तु वक्तुनां कर्मकालानां वि
 ना कारणं बाधाय तैः प्रागुक्तं वचने आत्य द्वादश्यामेवाय कर्षविधानादपराह एव
 कार्यं प्रातः शब्दस्तु सायं प्रातर्दितातीनामराने श्रुति चोदितमिति वदपराह वाचि

युपयत्रः नचवाक्यार्थवैयर्थ्यमुनर्भोजनसायेपारणनिवृत्त्यर्थत्वात्तस्येत्याहुः ।
 प्रमादेन एकादशयुपवासातिक्रमेपराकैवाराहे एकादशीविश्रुताचेत्तद्वादशीपरतः
 स्थिताः उपोष्यद्वादशीं नत्रयदिष्ठेत्परमंपदमिति कैश्चित्तुविष्मनाचेदित्यिष्यते ।
 अत्राविरोधिनो नियमाः सर्वव्रतेष्वुपध्याः अन्येचनवरात्रेवक्ष्यन्त इतिदिक् इति
 श्रीरामकृतसमभ्यात्मजकमलाकरकृते निर्णयसिंधौ एकादशीनिर्णयः द्वादशीतु
 वैव युगमवाक्यात् द्वादशीतुप्रकर्तव्या एकादश्यायुक्ताप्रभो इतिस्कादाच्च त्रयोदशीतु
 सर्वमतेषु कृत्वा पूर्वा कृत्वा तत्रात्रयोदशीतिथिः पूर्वः सितोयासितः पश्चादिति दीपिकोक्तैः
 प्रकृतत्रयोदशीपूर्वापरा कृत्वा त्रयोदशीतिमाधवाच्च चतुर्दशीतुसर्वमते कृत्वा पूर्वाप्र
 लोभराः उपवासेतु द्वयपिपरेतिप्रदमरत्ने योर्णमास्पमावास्येतुसावित्रीव्रतेविना
 परेग्राह्येभूतविदेनकर्तव्येदशीपूर्णेकदाचिन वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठसावित्रीव्रतमुत्तम
 मिति ब्रह्मवैवर्तात् अत्राद्योयोगविशेषोपराकैरात्तातयः अत्रावस्थाभवेद्द्वारोयदाभ्या
 मिसुतस्य वै जाह्नवीस्नानमात्रेण गोसहस्रफलं लभेत अत्रावासावारेण रविचारेण स
 प्रमी चतुर्थी भोगवारेण विद्युवतसदृशं फलं तत्रैव व्यासः सिन्धुवालीकुहूवापियदिसामदि
 नेभवेत् गोसहस्रफलं दद्यात्ज्ञानं वेमो निनाकृतं हेमाद्रौ बृहन्मुनः अवणाधिधनिष्ठा ईना
 गदेवतमसकै यद्यन्तारविचारेण व्यतीपातः स उच्यते नागदेवतमस्तेषामस्तकोमृगशिरः ।

प्रथमपादश्च न्येसच सर्वेषां अथेति कालः गोभिलः यथांता उपवसुव्याः यथादयोभियस्य वा
 इति उपवासेन्याधाने तत्र मध्याह्ने तत्पूर्वेषां पूर्वप्रतिपत्तं धौतदिने यागः पूर्वाह्ने वायमध्याह्ने
 यदि पूर्वसमाप्यते उपोष्यतत्र पूर्वेषु सप्तदह्याग इष्यते इति लौगाक्षिचचनात् अत्र च द्वेधा वि-
 भागः आवर्तनात् पूर्वोद्देशपरान्तरः परः मध्याह्नस्तुतयोः संधिर्यदा वर्तनमुच्यते इति म-
 नरत्वे च चनात् मध्याह्नाह्नं संबधो माधवमते परे द्वितीयागः अपरार्धे च वारात्रौ यदि पूर्वसमा-
 प्यते उपोष्यतस्मिन्नहनि श्रावते प्रागइष्यते इति लौकाक्षिणेन हेमाद्रिस्त्यपराह संधाव-
 प्यतिरिदिने प्रतिपच्चतुर्थी शचंद्रोदये च सति द्वितीयादिद्युत्यं न भवे सति पूर्वेषु यागः पूर्वर्णे
 शो द्वितीये तु यद्यव्यं तु द्विजातिभिः द्वितीयासहितं यस्माद्द्वयं त्याज्यं लायना इति द्वितीये
 त्विति के मुनि कन्यायेन तुर्याशपरं तुरीये त्विति शूलपाक्षेण पाठः स्पष्टार्थमेव तथा
 भूताये च दरिपरा द्वितीयाक्षयर्गमिनी च रुधिरमाया स्यात् भूते कत्यादिवी क्रिये-
 ति बोधायनवचनाच्चेत्स चित्वा न मदनरत्ने च चतुर्दशी चतुर्थीमा अमावास्या न दृश्य-
 ते श्रावते प्रतिपद्ये तस्यात्पूर्वांतत्रैव कारयेदिति यत्तु माधवः यस्तु वाजसनेयी स्यात्तस्य
 संधिदिनात्पुरा न द्वाप्यन्वा इति किंतु सदा संधिदिने हि स्यात् यच्च कालादरीयुक्तं
 आवर्तनादधः संधियद्यन्वाधाय तदिने परेषुरिष्टिरित्याहु विप्रावाजसनेयिन इति
 यच्च मदनरत्ने मध्यदिनात् स्यादहनीह यास्मिन् प्राक् पूर्वर्णः संधिरिये तृतीया

सारवर्तिकावाजिसनेयिमत्पातस्यामुषोष्यायपरेदुरिष्टिरिति एतत्सोमासीपरमिर
 ति तजैव आचर्त्तनोर्ध्वमर्चागस्ताद्रात्रौवासमाप्तेदे मध्यमः। इन्द्रादवीक्ष्यमाप्तात्तीयेत्यर्थः
 तत्कर्कभाष्यदेवजानी श्रीः अनेतभाष्यादिसकलतच्छास्त्रीयग्रंथविरोधाद् इन्द्राना
 दराद्योपेक्ष्य योर्णमास्याविशेषमाह कात्यायनः संधिश्चेत्संगवाहूर्ध्वं प्राक् पर्यावर्त्त
 नादवेः साधोर्णमासीवित्तेयासद्यस्कालविधौ नरैः अमायाविशेषमाह वैधायनः दि
 तीयाजिमुद्रात्रैत्यनियनयापराङ्मिकीः अन्वाधानं चतुर्दश्यापरतः सोमदरीनात् कात्या
 यनस्य यजनीयेद्विसोमश्चेद्वा रुणं यादिशि दृश्यते तत्र व्याहृतिभिर्कुत्वा दंडं दद्यात् द्विजा
 तय इति एतच्च वैधायनवाजसनेयिविशेषं तैत्तिरीयश्रुतौ तु चंद्रदरीनेयियाग उक्तः ए
 कावैसुमनानामेष्टिर्यामघेजानन्यश्चाञ्चंद्रमाश्रभ्युदेत्यस्मिन्नेवास्मिन्लोके धुकं भव
 तीति अतएतरेपि यदहः पश्चाच्चंद्रमाश्रभ्युदेतितदहर्द्यजनिमां लोकानभ्युदेतीति।
 इति मदनस्त्रोत्रेय्येवं आपस्तंबभाष्यार्थसंग्रहेय्येवं अतः पक्षदयस्यस्यस्वस्त्राह्यवस्य
 तितत्वे इत्येतस्यास्वलायना इति पूर्वोक्तसंधिविषयमिति साधकः शेषपर्वेणोद्योविशे
 वमाह साधवीयेतार्यः प्रतिपद्यप्रविष्टायां यदि चेष्टिः समाप्यते पुनः प्रणीय कृत्स्ने
 ष्टिः कर्त्तव्यायागवित्तमेः गृह्णाजेनायेनियम इति मदनपारजातः एवं पूर्वोक्त्याशः प्रति
 पक्षत्रयोंशायागकाल उक्तः क्वचित्प्रतिपत्तये शेषियागः संधिर्द्यपराह्नेत्याद्याग

प्राप्तिः परे हानि कर्वाणः प्रतिपदभागे च तर्धेपि न दुष्यति शतातयोक्तैः एतत्परिमा
 परमिति मदनरत्ने पर्वणि प्रतिपदः सयस्य तद्वेष्टा कर्तुं प्राप्तिव्यसंधिर्ज्ञेयः तदाह माध
 वः हृदिः प्रतिपदो मास्ति ते दधं पर्वणि सिधेत् सयस्याहं तथा सिद्धासंधिर्निर्णीयता
 सदेति कात्यायनोपि परे द्विष्टिका न्यूनता सथैवाभ्यधिकाश्रयाः तदर्थं सप्रो सर्व
 स्मिन् दासहृष्टी प्रकल्पयेदिति एवं स्मार्तैकस्या लोपा केचित्तेषु तत्रोचित्वा लोपा का
 बाधान गृह प्रवेशनीय होमानंतरभाविन्या योर्गमास्यां प्रारंभणीयो न तु दर्श यथा
 रंभे मलमासयोषमासश्रुक्तास्तादि भवति तदाप्यारंभः कार्यः यानि तु उपरातो
 धिमासश्रुयदि प्रथमपर्वणि तथा मलिश्रुवे यो येनान्वारंभणमिष्यते गुरुर्भर्गवयो
 मोंघेचंद्रसूर्यग्रहेतयेति संग्रहवचनानि तानि प्रतियाते यस्मै सति तयोः प्रशस्ते मासि
 पुण्यतेत्यपराक्ते गर्गवचनादिप्रयोगपारिजाते उक्तं चैतत्प्रयोगरत्ने भट्टैः कालाद
 र्हेतुनामकर्मचजाते धिमिति याठः यादिकास्त आधानानंतरा योर्गमासीचेन्मल
 मासगतस्यामारंभणीया दीन कर्वात कदाचनेति त्रिकांशमंडनवचनाच्छुद्धकाल
 एव विभ्रवेष्टिं कृत्यारंभं कर्वादित्याहुः कालादर्शस्मृतिसंग्रहेपि प्रारंभदर्शय
 र्हेतुस्पोरानि होत्रस्य जादिमं प्रतिष्ठाः पंचकर्मघामलमासे विवर्जयेदिति अथ विर
 क्ततीर्थः तजामस्तं वः यदीच्छा यदि पशुना यादिसोमेन ब्रजेत सोमा वास्यायां यो

एतन्माधोचेति अत्र प्रकृतितः काले सिद्धेऽपि सद्यः कालनाधिधेयात् तृतीयया संगतोक्तैः
 पौर्णमास्यमावास्याशब्दाभ्यां तदन्त्यक्षरौ गृह्यते तेन तदन्त्यक्षरौ रात्रेऽन्त्यर्धमाह रामा
 जरा माधवोपि इत्यादिविक्ततिः सर्वापर्वण्येवेति निर्णय इति अत्र विशेषमाह त्रि
 कोऽमंडनः कात्यायनश्चावर्त्तनात् प्राग्यदिपर्वसंधिः कृत्यानुतास्मिन् प्रकृतिवि
 कृत्याः तदैव यागः परतोयादिस्पातस्मिन् विक्त्या प्रकृतेः परेद्युरिति धर्तृस्वाम्याद
 योय्येवमाहुः यश्च्येति संगत्या विक्ततः पर्वकालत्वादावर्त्तनात् प्राक् संधोऽसंधिम
 भितो यज्ञेति प्रकृतेः प्रतिषदिसमाप्तिनियमात् प्रकृत्यनंतरं प्रति यदि विक्त्ययो
 गात् सर्वेर्विक्ततिरित्युक्तं तेन गतत्वे सारयिना यद्यपि प्रकृतिः सर्वत्वादसर्वमन्ते स्या
 दित्यापस्तंबेनोक्तं तथापि हेतुवादेन श्रुतिमूलत्वाभावादेन वा समाभि व्याहारादि
 त्वेव द्रष्टव्यमिति तदाराधः अत्रागस्त्योऽनुविशेयवक्ष्यामः अन्वारंभाणीयात्तु च
 तुर्दश्याकार्येति हिरण्यकेशिना ततो मातृदत्तीये अन्येषां पर्वण्येव यरो कालोत्तरम
 प्याहुर्वैधायनः अमावास्यायादिविद्येष्टानक्षत्रेवेति अक्षयक्षेकतिकादि विरा
 म्नांते शुद्धेन भजेति केशवस्यामी व्याचरव्यो चातुर्मास्येऽपि द्वादशाह यथाप्रयो
 गपक्षयोर्न भजेत्यारंभः यावत्तीव्रसंवत्सरप्रयोगोक्तस्तत्तु एषां चैवावर्त्तनः
 यरोऽनुविशेयमाह कात्यायनः अर्धादक्षो भवति नियतं पर्वसंधिः परस्तात्क

मा
34

त्वा तस्मिन्नाहिनितुपमं सद्य एव द्वा द्वे वाऽप्रारभ्या य प्रकृतिरथ चेत्यर्थसंधिः पुरस्तात्क
त्वा तस्मिन् प्रकृतिमयत्तु स्यात्पुनः सद्य एव अधिकारयस्तु त्वग्नीषोमीयेण सवनी
येन वासवो न तेजो धाकार्य इति सिक्कां उमं उनः सोमेत्याहायस्तं वः प्रमावास्या यां दी
क्षायजनीये वामास्या यां जयनीये वासुत्यमहः योर्णमास्यां दीक्षा यजनीये वा योर्णि
मास्यां यजनी वासुत्यमह रति यो ध्यायनस्तजो धि पूर्व पक्षस्य प्रथमे हनि दीक्षेते द
ष्टावानक्षत्रयोगे चेति पूर्व पक्षः शुक्ल पक्षः नक्षत्रयोगे चेत्यथ मर्धः चैत्रादिपूर्णि
माया मित्रादि नक्षत्रयोगे दीक्षेतेति अधाने तु पूर्व णि नक्षत्रे बुधोक्तं तत्र यव नक्तं
गार्हपत्यमादधातीत्यादिकर्मकाल व्यापिग्राह्यं दिनद्वये तत्तत्परं ग्राह्यं संकल्प्य स्पष्टं
णिग्राह्यं पूर्व नक्षत्रयोगे तदेव ग्राह्यं यत्र श्रीणि सन्निपतिता न्यतु नक्षत्रं च यव तत्त
मदं विप्रतिषेधकं तु नक्षत्रं च वलीय इति हिरण्यकेशिस्तत्रात् अतुर्वसेनेवाह्मणे
ग्निमादधीनेत्यादि रेणुकारिकायां तु माघादिपंचमासेषु आवर्णे वा मिने तया मा
गीरोक्षी शुक्ल पक्षे अधानमयकारयेदित्युक्तं अत्र मूलं मर्ग्यं अधाननक्षत्राणि
त्वापस्तंबस्त्रे कृत्तिकारोहिणी मृगशिरा कुनर्वसु पुष्य पूर्वोत्तरा पूर्वोत्तरा
वाहा हस्त चित्रा विशाखा नुराधा म्रवणोत्तरा भाद्रपदा इति सोम पूर्वार्धेने विषाख
माह आपस्तंबः सोमेन पश्यमाण आदधानो नर्हन्सर्वे नक्षत्राणि अत्र प्रक

राम
३४

ग्राह्याधानकालवाधः तेन सोमस्य वसंतकालतान्वाध्यते इति रुद्रवृत्ते नारायणवृत्ते
 चौकं जंत्ररत्ने वार्तके च ते वा एते उभयेऽप्युपहृतपाश्मानोक्त्यचयः एष वा उद्यन्नादेत्येयोमनो
 पदेतायदेवै न कदाचन यत्र उपमेदया दधीते त्यजोत्ररायण रूपे दैवयवेदक्षिणा यन
 रूपे च पित्रमृत्युमनुभयमृत्युत्रयं सोमाधाने शतपथे विशिष्य विहितं तदेकवाक्य
 तथा शारंवातरे धिनर्तुन स्सर्क्षेदित्यत्र सोमकालवाध एव ग्राह्याधानकालवाधस्य यदेवै
 नैव द्योयनमेतदादधीते त्यस्यां शाखायां वाक्यान्तरेण सिद्धत्वात् सोमकालवाधार्थं मे
 वेदमित्युक्ते धर्तृस्वामी तस्तस्यापिन स्सर्क्षेदिति लिरवना उभयकालबाधं मन्यते श्रीरा
 माग्रस्त कालान्तरविधाने वा सर्वकालानादरोवेति पक्षद्वयमुक्तवान् तत्राद्ये कति
 कादेकालान्तरस्य यथा ध्याने वसंताद्यवाधेन विधानं तथा सोमेऽप्युदयगयनपूर्व
 पक्षपुराणाह संनिपाते यत्र कालानादेश इति धंदोगस्तत्रोक्तोदयगयनावाधेन सोमाभि
 संधिसंधिरूपकालान्तरविधानादुपगयनं त्वयेक्ष्यत इत्युक्तं द्वितीयपक्षे तु यदेवै न यत्र उप
 नमेदिति सर्वकालानाद उक्त इति भारद्वाजस्तत्रात्सर्वराक्षस्य च विश्वजित्सर्वयष्टर
 ति वत्तद्वयोरप्रयोगात्सर्वकालवाध इति तेन दक्षिणा यने विभवतीत्युक्ते यद्गुरुभाष्येदे
 वतातभाष्ये तत्र रत्ने च यद्वत्स्वपि ऋतुषु भवतीत्युक्तं मितादिक् आदित्यमावास्यात्रेधा
 विभक्तदिनतृतीयांशयोयराद्भागस्तद्व्यापिनी साग्निर्कैरास्त्रा पिंडान्वाहार्यकं आ

35

इंशोरोराजनिशस्यते वासरस्य तृतीयांशेनातिसंध्यासमीपतै इति कात्यायनोक्तेः
दशीप्रादंतुयत्योक्तं पावेणोत्तमकीर्त्तिनं अपराह्ने पितृणां च तत्र दानं प्रशस्यते इति शाता
तयोक्तेः अ दिनद्वये तत्र सत्त्वे सर्वापराह्णव्याधीदर्शनाग्राह्याः यद्युभये धुरेष विहितः सर्वा
पराह्णस्थित इति दीपिकोक्तेः यत्तु कार्माजिनिः भूतविद्वाममावास्यामोहादज्ञानतोपि
वा माह कर्मणि ये कुर्यन्ते वा माह प्रहयते इति तदपराह्णे च तद्दर्शिवेधपरमिति प्राहुः
माह अपराह्णव्याप्तिपरमिति माधवः दिनद्वये पराह्णव्याप्तिभावे रातो व्याप्तौ च तिथिभेदे
पूर्वेति हेमाद्रिः यदा च तद्दर्शयितुं नुरीयमनुसरयेत् अमावास्याभीयमाणानंदेवप्रादमि
व्यते इति कात्यायनोक्तेः चतुर्दशीमामजयेत्यादित्यर्थः क्षीयमाणपरदिने पराह्णव्याप्तिनी
नेत्यर्थः व्यतिरेकमाह वर्द्धमानाममावास्यां तत्तदपरे इति यामांस्त्रीनधिकाच्चापि पितृय
ज्ञस्ततो भवेत् नतः प्रादंतु दिनद्वये पराह्णव्याप्तिदो तिथिद्वौ च हारीतः त्रिमुहूर्ता कर्त्तव्या
सर्वारवर्वाचवद्भुवै कुरु रधुभिः कार्याय येष्टं सामगैतिभिः त्रिमुहूर्ता भावेत् सर्वानेत्य
र्थः पिंडपितृयज्ञस्तु कात्यायनैर्द्यागदिनात्पूर्वेषुः कार्यः पूर्वोवागत्वापि पिंडपितृयज्ञ इति
तत्सूत्रात् व्याख्यातं चेत्तत्कर्त्तव्यैः पूर्वरावदर्शान् पिंडपितृयज्ञोत्तरप्रातः कुतः संगत्वा
त तस्याचमूतिः तस्मात्पूर्वेषुः पितृभ्यः क्रियते उत्तरमहर्देवान् यजंत इति पूर्वेषुः पितृ
भ्यो यज्ञे निष्पत्तिप्रातर्देवेभ्यः प्रतनुतरति च तेन तन्मते गमेवासौ तदहं श्रीगोवा समभिव्या

35A

हारादिति तेन कर्म मते चतुर्दशी युक्तदशी पिंडपितृयज्ञ इति अनंतभाष्ये तु परे दुरित्तु
 कं अत्र द्वेधा प्याचारो दृश्यते आप संवानां तु परदिने मुहूर्तमपि दरी सचित्तजैवपितृ य
 ज्ञः तदाह पस्तवः अमावास्यायां यदहं द्रुमसंनयं पश्यति तदहः पिंडपितृयज्ञं कुरुत इति ।
 अस्य रुद्रदत्तौ काव्याख्या पिंडे युक्तः पितृयज्ञः पिंडपितृयज्ञः सच कर्मोत्तरं न तु दरी शेषः
 यथा वक्ष्यति पितृयज्ञः स्वकालविधानादंतगं स्यादिति तेन च यदहं द्रुमसंनयं पश्य
 ति पंचदश्यां प्रतिपदिवा तदहः कुरुते यदहं स्तोत्रो संधिस्तदहं रित्यर्थ इति श्री रामांडरो
 व्याह पिंडपितृयज्ञस्तु पर्वसंधि मंदहोरात्रौ पराह इति अतः पर्वसंधिदिने पितृयज्ञः
 शतपथश्रुतिरपि यदेवैष पुरस्तात् नयश्चाह दशोऽथ पितृभ्यो ददातीति पर्वसंधिदिने
 हि पूर्वसंधिदिने हि पूर्वतः पश्चाद्वा चंद्रो न दृश्यत एवेत्यर्थः सत्यावाढोऽपि पितृयज्ञं
 प्रक्रम्य दृश्यमाने तु योऽप्यशौभते यज्ञे इत्याह हेमाद्रिस्तु अमावास्या रादिति
 यिव च न एव पूर्वोक्ताय संवत्सरे यदुक्तं न पश्यतीति तत्रक्षयोभिप्रेतः अतश्च त
 दृश्या चंद्रस्य शोणत्वात् ततश्चुक्तदशी पितृयज्ञः पितृयज्ञं तु निवर्त्य विप्रश्चंद्रोक्षये
 ग्निमानिति मन्त्रैः यदुक्तं यदहं स्तेव दरी नं नैति चंद्रमाः तत्क्षयापेक्षया ज्ञेयं
 शोणोत्तराजनिचेत्यपि यदुक्तं दृश्यमाने तच्चतुर्दश्यपेक्षयेति च कात्यायनोक्ते दृश्य
 माने एवैक इति गोमिलोक्तेः यस्यां संध्यागतः सोमो मरणादभिवदृश्यते अथारु

क्षयस्तस्यापि शान्तं करणं कुरुवंति दारीतोक्तेः चंद्रक्षयकालश्चाक्तः कात्यायनेन
 अथ मंरोचतुर्दश्याः क्षीणो भवति चंद्रमाः अमावास्या अथ मंरोचतु पुनः किल भवे
 दण्डरिति तेन पूर्वैश्चुरेव पितृयत्त इत्यचिवा न कर्काचार्यैरपि अपराह्णे पिंडपितृ
 यज्ञः चंद्रादर्शने मावास्यायामितिकात्यायनसूत्रे दर्शनेन क्षय एव उक्तः तस्मिन्
 क्षीणे दद्यात्तीति श्रुतेः अतस्तन्मते चतुर्दशी मुक्तदर्शो पितृयज्ञे सति परदिने या
 गोधी तिस्रः तदेतत्सर्वं यत्कष्टमपि हेमाद्रिकर्कादि रम्यानमापस्तवेरनभ्युपग
 मात्कात्तयवौ धायनादिविरागं आश्रयायना नामपि शेषपर्वणि पिंडपितृ
 यज्ञः तथा च सूत्रे अमावास्यायामपराह्णे पिंडपितृयज्ञः इति अत्र नारायण इतिः
 अमावास्याया रावः प्रतियत्यं च दर्शयोः संधिवचनोप्यत्रा पराह्णसमन्वया
 तदन्त्यक्षोरात्रेवर्त्तते तस्यापराह्णे अत्रार्थे भागे पिंडपितृयज्ञः कार्यः प्रोषवस
 प्येयज्ञनीयेवाहति यदा त्वक्षोरात्रसंधौ तिथिसंधिः स्यात्तदो एव सध्य एवाहति
 क्रयत इति अतएव मुहूर्तमप्यमावास्या प्रतियद्यपि चेद्भवेत् तदन्तमभयं तेयं
 पर्वशेषं तु पर्ववदिति हेमाद्रौ वचनं पिंडपितृयज्ञपरमुक्तं प्रयोगापारजाते अथ च
 स्मार्तविनमतसंयत्ने दर्शो आह्वयति रवंगो एकार्यः अतिरवंगो नामोभयोः स
 हातुद्वाने एतच्च स्थालीयाकेन सह पिंडार्थं मुहूर्त्येति सूत्रेति कृतोक्तं

36A

र्वं उपर्वणि त केचिदाहुः पूर्वदिने पिंडं पितृयज्ञे अतिरंगे एवाहुः सावापरे द्विकेच
 लः पिंडपितृयज्ञः कार्यः इति कृतान् च वक्ष्ये पूर्वपुमासिमास्यथावर्णं काम्यमा
 न्यदये च म्यामे कोटिष्टमयाष्टममित्युदाहृत्य पूर्वपुचक्षुः स्थालीपाका उद्धृत्य गौ
 करणमित्युक्ते दरी आहुः स्थालीपाको नियत इति गम्यते स्थालीपाकमपि पितृयज्ञे
 एवेति पूर्वदिने अतिरंगः सिद्धः प्रयोगपारजाते च वार्षिक आहुः दरी अतिरंग उ
 क्तः किमुत दरी आहुः स्य न्यायविद्वत्त्वाद्वाहुः सत्रस्य हते अक्षरं दरी विद्वद्यत्वात्
 र्वं उपर्वणि पूर्वदिने कवलं आहुः परदिने च केवलः पितृयज्ञः कार्यः अत एवाहुः
 कति कृतान् नात्र पूर्व स्थालीपाको द्योते सर्व आहुः पुसंगादिनि प्रयोगपारजाते
 किरये तद्विषये पूर्वदिने च आहुः गौकरणमेव न पाणि होमः चतुर्थादौ पुसाग्री
 नो बद्धो होमो विधीयते यि अन्नास एहस्ते स्यादतरेषु चतुर्थादौ परि सिद्धे नियमा
 त् न च लोकागौपकस्य कथं गृह्य होमः नान्यागौपकमन्यागौपकं द्रव्यान् इति नि
 वेधात् तैवे आहुः स्य गृह्यते न स्मार्त्तागौपचनागौपकं न व्यत्वात् तस्मात् पूर्वेषु के
 वलं आहुः न अतिरंगः इदमेव च पुक्तं आदिताग्निना तु सर्वाधानि नार्थानि नाया
 संस्कारं र्वं उच दरी आहुः गौपकं यथगेव पितृयज्ञः कार्यं न तु दरी आहुः अतिरंगे ए
 ति विस्तरभीतो विरमामः संस्कारं दरी विरोधमाह लोकादिः पक्षो तं कर्म निर्व

त्वेवैश्वदेवे च साग्निकः पिंडयज्ञततः कुर्यात्ततो न्याहार्यकं वृधाः इति यक्षाने कर्मा
 न्याधाने अत्र न्याहार्यकं दरीश्राद्धं अथमेव साग्नेर्जीवयितृ कस्य पिंडयितृ यज्ञकालो
 ज्ञेयः तस्यापि कात्यायनहोमोत्तमनारंभो वेत्याम्नानात् पिंडयितृ यज्ञाकरणे प्रायश्चि
 त्तमाह पराशरमाधवीये कात्यायनः पितृ यज्ञात्यये चैव वैश्वदेवात्यये च भोज
 ने पतितान्नस्य च सर्वे श्रान्तो भवेदित्यलं प्रकृत्य मनुसरामः निरग्निकादिभिरुत्तमा
 वास्या पराश्रव्या श्रुत्या भेदं कुतय कालव्याधिनीग्राह्याः भूतविद्यायमावस्था प्रति
 दत्तमिच्छितापि वा पित्र्ये कर्मणि विद्वद्भिर्ग्राह्या कुतय कालिकोति हारीतौक्तैः इ
 दं च निरग्निकादि विषयं सिनीवाली द्विजैः कार्या साग्निके पितृ कर्मणि स्त्री
 भिः श्रद्धैः कुरुः कार्या तथा चानग्निके द्विजैः इति लौगाक्षिवचनात् अत्र साग्निके
 यासनाग्निरपीति मदनपारजाते उक्तं कुतय श्रापराश्रव्या श्रुत्या भेदं तु कल्पः अथ
 राश्रव्या व्याधी यदि दरीश्राद्धे अर्हताग्नेः सिनीवाली चिरगत्यादेः कुरु मीते
 ति ज्ञावालिनाभावे विधानात् तेन साग्नीनां निरग्नीनां वा पराश्रव्यापिन्येव मरुत्या
 निपि साम्यं तद्विषयैः समव्योप्नोस्वर्वादिना निर्णयः वैष्येयिकादिन द्रव्ये परा
 श्रव्यापि कुतय व्याधिनीति माधवः इदमेव युक्तं हेमाद्रादिमेत कुतय व्यापिन्ये
 व निरग्न्यादेर्मरुत्या सिनीवाली दृष्ट्येद्रा तथा च व्यासः दृष्ट्येद्रा सिनीवाली नष्ट

चंद्राकृद्गुस्मृतेति पूर्वदिनेपरदिनेराववा नद्यापित्वेसैवग्राह्या ज्ञेयापित्वेवे
 सम्यधिककालव्यापिनीग्राह्यादिनद्वयेरांतः समव्याप्नोतिथिभयेपूर्वाह्नोसा
 म्येवपरा तिथिभयेशिनीवालीतिथिह्नोक्कृद्गुस्मृता साम्येपिचकृद्गुज्ञेयावेद
 वेदांगवेदभिरिति प्रचेतोवचनात् दिनद्वयेसंपूर्णकृतपव्यामिस्तु तिथिह्नो
 वेवभवतीत्यनेतरवचनात्परैवेति कृतपस्तु अहोमुरुतावित्तेपादरापंचचसर्व
 दा नत्राष्टमोमुरुतायः सकालः कृतपः स्मृतः इतिमात्स्याकैः नलादानपितृदेव
 प्रीत्यर्थोपवासादौतपराग्राह्येत्यन्यत्रविस्तरः दर्शमासिकवार्धिकादिश्राद्धप्राप्तौ
 कालदर्शविषेष्टउक्तः दर्शस्थचोदकुभस्यदर्शमासिकयोरपि नित्यस्याचादिकस्या
 पिदार्शिकवार्धिकयोरपीत्युक्त्वा संघातौ ते देवताभेदाश्राद्धयुग्मेसमाचरेत् निमित्ता
 नियतिश्राजपूर्वानुष्ठानकारणमिति निर्णयदीयेपि नष्टचंद्रेयदाकालेनयाह
 दिवसोभवेत् वैश्वदेवंक्षयंश्राद्धं कुर्यात्प्राग्दर्शिकमीमांसाः श्रमाश्राद्धं चानुपनीतोपिक
 र्यात् श्राद्धश्रुतपाठोऽत्रमावस्याष्टकास्तृतीयसंयं चदर्शोयुचैत्युपक्रम्य एतच्चानु
 पनीतोपिकुर्यात्सर्वेषु पर्वसु श्राद्धसाधारणं नाम सर्वकामफलप्रदं भार्याविरहितो
 येतत्तत्प्रवासस्योपिनित्यराः श्राद्धेष्वमंत्रवत्कुर्यात्तन्मनेनविधिनावुधइति मात्स्या
 कैः श्राजश्राद्धातिश्रमेप्रायश्चित्तमुक्तमग्विधाने न्यमुवाच जैयेतमंत्ररातवारंदिने

38A

धः सूर्यग्रस्तास्तो निषेधः मदनरत्नेगार्ग्यः संध्याकालेयदाराङ्गसते शशिभा
 स्करौ तदहर्नैव भुञ्जीत रात्रौ वपिकदाचन सायं संध्यायां सूर्यस्वग्रस्तास्तो पूर्वैर्दि
 रात्रौ च न भोक्तव्यं प्रातः संध्यायां चंद्रस्वग्रस्तास्ते पूर्वरात्रौ बुध्नरे द्विच भोक्तव्य
 मित्यर्थः चंद्रग्रस्तास्ते उत्तरार्द्धे संध्याहोमादौ न दोषः तदाहो प्राणागस्ते वास्तं ग
 ते त्विदौ तात्यामुक्त्यवधारणं स्नानहोमादिकं कार्यं सजातं दूष्ये पुनः एतदन्ताहिता
 गिरिविषयं अपराह्ने ज्ञेयोपायनीयमस्त्रीतत्र निकात्ययनोक्ते हतस्य श्रोतस्येन च प्र
 वलत्वात् अद्विज्ञेयं कुर्यादिति निर्णयदीयः रागप्राप्तभोजने कालनियमोपेतेन
 ज्वरादाविवनभोजनमिति कर्कान्तसारिणः बालसुखात्तराणां तृग्रहमात्स्य
 र्वासेकयामो निषिद्धः सायाह्नेग्रहणं चेत्स्यादयराह्नेन भोजनं अपराह्नेन मध्याह्ने
 नानुसंगत्वे भुञ्जीत संगमे चेत्स्यान्नपूर्वभोजनक्रियेति मार्कंडेयेः इदं च बाला
 दिविषयं कालसुखात्तरैर्विनेति पूर्वोक्ते वेधकालेग्रहणे चापेक्षमन्नं स्याज्यं स
 र्वेषां मेव वर्णानां सत्तत्कं राहुदरीने स्नात्वा कर्मणि कुर्वति श्रुतमन्नं विवर्जयेदि
 ति हेमाद्रौ च त्रिंशन्मत्तात् श्रुतमिति तदंतरतस्त्रोपलक्षणं नवश्राद्धेषु
 यत्तसिंघग्रहवर्द्धिकं च यदिति मित्तभरायां वचनात् भार्गवार्चनदीपिका

ना

यो ज्योतिर्निर्वंधे च मेधातिथिः श्रारनालंघयस्तर्जं दधिस्रैहाज्यपाचितं मणिकस्यो
 दकंचैवनडुव्येद्राद्रस्तर्कं मन्वर्थमुक्तावल्यां श्रनपक्षमिहान्याज्यं स्नानं सब
 सनं ग्रहे वारितक्रारनालादिति रादभौनडुव्यति जलेत्वदोषोरगांगविषयः
 ग्रहो धितं जलं पीत्वा पादस्तुधं समाचरेदिति तत्रैव च न विंशति मते न्यजस्तस्य
 दोषोक्तैः वेधकाले ग्रहलोच भोजने प्रायश्चित्तमुक्तं साधवीये कात्यायनेन चंद्र
 सूर्यग्रहे भुक्ता प्राजायत्येन मध्यति तस्मिन्नेव दिने भुत्वा त्रिरात्रेणैव मध्यति ग्रह
 एव त्रिरात्रं मेकरात्रं चोपवासश्चेयोर्धिना कार्यः एकरात्रमुयोव्येव ग्रहस्तात्वा
 र्था च शक्तिः कंचुकादिस्तस्य निवृत्तिः पापकोशतः त्रिरात्रं समुपोव्येव
 ग्रहलोचंद्रस्तस्य योः स्नात्वा द्वाचविधिवन्मोदने प्रमाणसहेति हेदाद्रौ लिंगोक्तैः
 इदं च षड्व्यतिरिक्तविषयं आदित्ये ह निसंक्रांतौ ग्रहलोचंद्रस्तस्य योः पारणचोप
 वासं च न कुर्यात्पुत्रवान् ग्रहीति जैमिनि वचनात् यदातरवेगस्तास्तस्तदा युत्रि
 णः प्रहरद्वयं हेत्वावालादिवक्रोजनं न त्रयवासः सायाह्ने ग्रहांचेत्स्यादिति
 सर्वोक्तमार्कंडेयवचनात् सायाह्ने संगवे श्रीयाधारदे संगवा दधः मध्याह्ने परतो
 श्रीयात्रोपवा सोरविग्रहे रति स्पृतिश्चेति हेमाद्रिः शारदोपराहः माधवीये त्रि

39A

पुत्रीलोपितत्रोपवासएव अहोरात्रनभाक्तव्यमिति सर्वोक्त निषेधस्य तेनापि
 पालनीयात्वात् उपवासनिषेधस्तत्र तस्योपवासपरः कृष्णेकादशी निषेधवदि
 ति मदनरत्नेष्वेवं इदमेवचयुक्तं वर्धमानस्तु अहोरात्रनभाक्तव्यमिति शान्तात्
 पीयाग्रेस्तथा चंद्रमसो लोका नक्षत्राणां पतिमानवर्तिफलश्रुतेर्मुक्तदरीने उप
 वासः काम्येन त्वयं निषेध इत्याह तत्र अत्रान्तर्वापि प्रागुक्तविधुधर्मे निषेधावश्यं
 भावात् तथा व्यासः रविग्रहः सूर्यवारे सोमसोमग्रहस्तथा चूडामणिरिति धेनिर्ह्य
 तस्तत्र दत्तमनेतकं वारेष्वन्येष्वन्यत्पुण्यग्रहोत्तं चंद्रसूर्ययोः तत्प्रांयकोटिगु
 रितं योगे चूडामणौ स्मृतं अत्रवाधेतयोः स्नानं कथ्यात् ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस
 होमो विधीयते मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्तैस्नानं विधीयेदिति हेमाद्रौ वचनात् स्नानं
 स्यादुपरागादो मध्ये होमः सूर्यार्चनमिति ब्रह्मवैवर्ताच्च सर्वेषां भववर्णनां स्तनकं
 राहुदरीने सर्वैर्लव भवेत्स्नानं स्तनकान् च वल्लीयेदिति ब्रह्मविशिष्टोक्तेः अस्मै
 तत्त्वं मुक्तैस्नानपरमिति मदनरत्ने उक्तं भार्गवार्चनदीपिकायां चतुर्विंशतिमते
 मुक्तौ यस्तनकं वीतस्नानं ग्रहाणां स्तनके सस्तनकी भवेताद्यावत्स्यादय
 राग्रहः इदं स्नानममत्रकं कार्यमिति स्मृतिरत्नावल्यां तत्र तीर्थविशेषो भार

40

जे गंगा स्नाने त कुर्वीत ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः महानदीषु चान्यासु स्नानं कुर्यात् १
 यथाविधि महानदीषु यिमासविरोधे काश्चिच्छ्रेयाः प्रयागे देविकारे वा सन्नि
 हत्या च वारणं सरस्वती चंद्रभागा कोरिका तापिका तथा सिंधुर्गंडिका चैव
 सरयः कार्तिका दितः मलहेमाद्रौ स्पष्टं व्यासः इंदो लक्ष्मणं पुण्यं रवेर्दशगुणं
 ततः गंगा तौ ये तु संप्राप्ते इंदोः कोटी रवेर्दश गवो कोटि सप्तस्य यत्फलं लभते
 नरः तत्फलं लभते मर्त्यो ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः असंभवे तु माधवीये शंखः वापी कूपत
 ङा गोष्ठी गिरिप्रसवणे पिच नद्यां न दे देव रवाते सरसीषु घृतं तु नि उष्णोदकेन
 वा स्नायात् ग्रहणे चंद्रसूर्ययोः अत्र तारतम्यमाह मार्कंडेयः एतिसुष्णोदकात्
 पुण्यं मयारवं च यरोदकात् भूमिषु सुदृता पुण्यं ततः प्रसवणे दकं ततोऽपि सार
 संपुण्यं ततः पुण्यं नदीजले तीर्थे तेषां ततः पुण्यं महानद्यं बुधावने ततस्ततोऽपि गं
 गां बुधपुण्यं पुण्यं ततोऽबुधिरिति उष्णोदकमात्रं विषयं तथा गोदावरी महापुण्या
 चंद्रोदकं समन्विते सूर्यचराङ्गुलाग्रास्ते तमो भूते महामुने न मे दातो यस्य सूर्यैर्ल
 त कृत्या भवेति हि यच्छी चंद्रोदके प्रभासरवंडे गावो नागा सिला धान्यं रात्रानि
 कनकं मही संप्रदायकुरुक्षेत्रे यत्फलं लभते नरैः तदिदं ग्रहणे मोक्षो स्नाना

राम

४०

इवतिष्ठद्गुणं तत्रैवसौरपुराणे बुधिस्त्रानमयक्रम्य दानानियानिलो
 केषुविद्यातानिमनीषिभिः तेषांफलमवाप्नोतिग्रहणेचंद्रसूर्ययोः दे
 वीपुराणे गंगाकनखलं पुण्यं प्रयागं पुष्करं तथा कुरुक्षेत्रं माहाप्रायं राहु
 ग्रहोदिवाकरे स्नानासंभवे स्मरणं वा कार्यं स्मृत्वा रातक्रतुफलं दृष्ट्वा सर्वोद्य
 नारानं स्रष्टाश्चमेधपुण्यं तपोत्वा सोऽत्रामणे लभेत् स्नात्वा वाजिमखं पु
 ण्यं प्राप्नुयादविचारतः रविचंद्रोपरागे च अयने चोत्तरेतयेति मार्कंडेयोक्तेः अ
 त्रिमासमाहं षष्ठ्यश्वराः चंद्रसूर्यग्रहे यस्तु श्राद्धं विधिवदाचरेत् तेनैव सकलाष्ट
 स्त्रीदत्ताविप्रस्यवैकरे भारते सर्वस्वेनाधिकर्तव्यं श्राद्धं वैराहुदर्शने अर्कैर्लक्ष्मि
 नास्ति कथा त्वं केमोरिव सीदति विष्णु राहुदर्शने दत्तं हि श्राद्धमाहं दत्तारं २
 दं चामात्रेन हस्मा वा कार्यं न तन्नेन श्रापाद्यनर्तौ तीर्थे च चंद्रसूर्यग्रहे तथा श्रा
 द्धं प्रकुर्वीत हेमश्राद्धमथपि वेति शातातपोक्तेरिति हेमाद्रिमाधवाद्यः अप
 रार्कस्त एतत्तद्विज्ञानापाकाभावे दृष्टव्यं तीर्थश्राद्धवत् पाकाभावे द्विजातीनां मास
 श्राद्धं विधीयते इति सुमेरुक्तेः संहिके योपदास्तु ग्रसते पर्वसंधिषु गजघायात्
 साप्रोक्ता तस्यां श्राद्धं प्रकल्पयेत् घृतेन भोजयेद्दिपान् घृतं भूमौ समुत्सृजेत् वा

वी

यदीयो के आह विज्ञाने शरीराह गृहण आह भातुर्दीयो दानुस्त्वभुदय इति
 सत के सत के भुक्ते गृहीते शशिभास्करे छायायां दसि न भूवन भूयः पुरुषो
 भवेदित्यापसंवेन भोजनानि धेयाश्च अपंच निषेधः आह भोक्तः हस्ति छायासा
 हचर्यात् अत्र्यहण मिमित्त कश्चादे नेवा मासं कान्त्यादि निमित्तिकानां सिद्धिः या
 र्शिकालाभयो रपीति कालादर्शकैः अत्रारौ च मध्ये पित्तान् आह्लादिकार्यमे
 व सत के सत के चैव न दोषो राहु दर्शने नावदेव भवेच्छ्रिया वन्मुक्तिर्न दृश्य
 ते इति का धवीये हृद्वशिष्टे नोक्तैः स्मार्त्त कर्मपरित्यागो राहो रन्यत्र सत के
 इति आध्यायो के आह कालादर्शकैः अंगि सः सर्वे वर्णा सत के पित्त के राहु दर्शने
 आत्मा आह प्रकुर्वीरन् दानं शास्त्र विवर्जितं मदनं पारजाते प्येवं तेन स्नानमात्र
 प्रकुर्वीत दान आह विवर्जित मिति निर्मलं बंदतो मोक्षः परस्ताः इयं च मुक्ति
 रविरोयानं त्रदीभायुरश्चरणादिसर्वस्मार्त्त कर्म विषय मदन रत्ने प्येवं रज
 त्वलायास्तु भार्गवा च न दीपिकायां सूर्योदय निबंधे न सत कादि दोषोस्ति गृहे
 मज्जादिषु गृहे स्नाया उदवया पित्त्याह हृत्तवारोति अत्र स्नानेने निमित्त के
 प्राप्ते नारीयादि रजस्वलाया अंतरित तो येन स्नानं कृत्या व्रतं चरोदिति आदिर्मिता
 भरोक्तो विधिर्ज्ञेयः तथा गृहणे राजा वधित्तियने आह्लादिकार्यं गृहणे दाह सं

क्रान्तिवात्रार्तिप्रसवेष्टुच ब्रह्मदानेनेमिति कंतेयेरात्राचक्षितदिष्यते इत्यराकै
 व्यासोक्तैः चंद्रग्रहेतया रात्रौ स्नानं दानं प्रशस्यत इति देवलोकैश्च यदा तु ज्यो
 तिः रात्रौ गम्यो दिने चंद्रग्रहो रात्रौ च सूर्यग्रहः तदा स्नानादिनकार्यं सूर्यग्रहे
 यदा रात्रौ दिवा चंद्रग्रहस्तथा तत्र स्नानं न कर्तव्यं तदघातने च न कचिदिति ब्रह्म
 त्रिरात्मज्ञानं ग्रहणादिने वार्धिकाश्चादुप्राप्नोत प्रयोगपारजाते गोभिलः दर्शर
 चिग्रहे पित्रोः प्रत्यादिकमुपस्थितं अन्तेना संभवे हेम्ना कुर्यादामेन वा सतः सा
 ति अत्र दर्शरचिपितृसुतशब्दाप्रदर्शनार्थाः न्यार्थस्यात तेन चंद्रग्रहोपि
 सपिंशदिवा वार्धिकमन्त्रादिना तदिने एव कार्यमिति मदनपारजाते व्याख्यातं
 यस्वी चंद्रोदयेष्वेवं तेन यानि आमन्त्रादं प्रकुर्वीत माससंवत्सरादृते इति अ
 नेने वा वार्धिकं कुर्याद्वेम्ना वामेन न कचिदिति मरीचिगोलाख्यादिवचना
 नि तानि ग्रहणादिना निरिक्तचिषयाणि निर्णयामतेष्वेवं यानि तद्ग्रह
 णादिना भिस्ते तद्वितीये द्विरजो दोषात्तु यंच मेग्रस्तादये यदा चेप्रत्यक्षं समु
 पस्थितं तदिने चोपवासः स्यात्प्रत्यक्षं तु परे हनि तथा ग्रस्तावेवास्तमानं
 तुरविंदुप्राप्तो यदि प्रत्यक्षं तु तदा कर्तव्यं परे हन्येव सर्वदा चंद्रसूर्योपरा

42

गेचतथाप्राहुं परेहनि रन्यादीनिवचनानिमहानिवंधेषु क्वाप्यनुपलं
 भान्निर्मलानि प्रत्युत्पन्नैर्कनिवंधेषु तदिने एव प्राहुमुक्तमित्यलं ग्रह
 णादिसप्तदिनपर्यंतं रास गोपालाद्यागमदीक्षोक्ताशिवार्चनचंद्रकायाज्ञाना
 र्णवे मंत्राधारंभरणं कुर्यान्नग्रहणं चंद्रसूर्ययोः ग्रहणाद्वापि देवो शिकालः
 सप्तदिनावधीति रत्नसामरे सतीर्थैर्कविष्णुग्रासे तैर्दुदामनपर्वणि मं
 त्रदीक्षां प्रकुर्वीतो माससर्वादीन्नरो धयेत् अत्र सूर्यग्रहणमेव मुख्यं सूर्यग्र
 हणकाले तु नान्यदन्वेष्टितं भवेत् सूर्यग्रहणकालेन समो नान्यः कदाच
 न न मासतिथिबारादिशोधनसूर्यपर्वणि रतितत्रैव कालोत्तरवचनात्
 चंद्रग्रहे तयादीक्षायादीक्षाप्रतचारिणी वनस्थस्थचपादीक्षादारिद्र्यसप्तज
 न्मासिति तत्रैव योगिनी तत्रैव निषेधाच्च ग्रहणं च जन्मरारणादौ निषिद्धं नहु
 कं ज्योतिषो विष्णु इदं यो यगतं नराणां शुभप्रदं स्याद्ग्रहणं रवीदोः द्विस
 प्तनंदेषु च मध्यमस्याष्टेषु निष्कथितं मुनिर्देरिति आयरकादशा
 नंदाः नवः षः पंचमदनरत्ने गगः जन्मसप्ताष्ट रिष्का कदेशमस्ये निरा
 करे इको रिष्परो राहुर्जन्मक्षेति धने विच रिष्का दशा अंजानवनिधने स
 मभारदाष्टौ चैव दये विष्णुधर्मे यन्नक्षजगतो राहुग्रसते शशिभास्वरो

42A

तज्जातानां भवेत्प्राज्ञेनराः शान्तिर्नवर्जिताः तत्रैव पुराणांतरे सूर्यस्य
संक्रमोवाधिग्रहणं चंद्रसूर्ययोः यस्य जिजन्मनक्षत्रे तस्य रोगोद्यवा मृतिः
तस्य दाने च होमं च देवार्चनं जपौ तथा उपरागाभिषेकं च कुर्याच्छान्ति
र्न विध्यति स्वर्णेन वाथ पिष्टेन कृत्वा सूर्यस्य वा कृतिं ब्राह्मणाय ददेत्तस्य
न रोगादिश्रुतत्कृतः जन्मनक्षत्रं तस्यैवाक्षरे च जिजन्मनक्षत्रमिच्छते ज
न्मदशमैकोनविंशति तारा शान्ति केचित्सूर्यस्य तदाकारस्य राहो रित्यर्थः
अद्रुतसागरर्त्तार्वावः यस्य राज्यस्य नक्षत्रे स्वर्भानुरुपरज्यते राज्यभंगं सुह
ज्जारां मरणं चात्र निर्दिशेत् राजस्य नक्षत्रं अभिषेकनक्षत्रमिति तत्रैव व्याख्या
नं भार्गवार्चनदीपिकायां ज्योतिःसागरे सौवर्णिकारयेन्नागं यलेनाथयला
र्धतः तदर्धेन फलायां मोक्षिकं न्यसेत् ताम्रयात्रे निधाया यष्ट तस्यैव वि
शेषतः कांस्ये वा तिलो ह्ने चान्यस्य दद्यात्सदक्षिणं चंद्रग्रहे रुध्यस्य विधेदद्यात्स
नागं सुवन्नम्यं सूर्यग्रहे विंचं च हेमजं तुरंगरथगोभ्रमिति क्लृप्तसर्पिश्च कांचन
वा लविवेकेपि सुवर्णं निर्मितं नागं सलिलं कांस्यं भाजनं सदक्षिणं सब

नि.सिं.

४३

43

संच द्रास्त्राण्यनिवेदयेत् सौवर्णराजतं वापि विंशं कृत्वा स्वराक्षितः उपराग
भवत्केशं छिंदे विप्राय कल्पयेत् मंत्रस्तु तमो मय महाभो मसोमस्यै विमर्दन हे
मताराप्रदानेन मम शांतिप्रदो भव विधुं तु दनमस्तु भ्ये सिकानंदनाच्युत दानानेन ना
गस्य रक्षमां वेधजाङ्गयात् इति अत्र शांतिरयुक्ता हेमाद्रौ मात्स्ये यस्य राशिं स
मासाद्य भवेत्तद्गृहण संभवः स्नानं तस्य प्रवश्यमि मंत्रो यथ समन्वितं चंद्रोपरा
गं संप्राप्य कृत्वा त्रास्त्राण्यार्चनं संप्राप्य चतुरो विप्रान् शुक्लमाल्यानुलेपनैः पर
वमेवोपरागस्य समानी यो यथादिकं स्थापयेच्चतुरो कुंभान् गतः सागरानिव
गताश्चरण्यावल्मीकसंगमाद्दृष्ट्वा कुलात् राजद्वारप्रदेशाच्च मृदमान्तीयनिक्षि
पेत् पंचगव्यं पंचरत्नं पंचतृक् पंचपल्लवं रोचनपद्मकं रं वकुं कुमं रक्तचंदनं
शुक्तिस्फुटिकतीर्थी वृत्तिसर्षपगुग्गुल्लन् मधुकंदे वदान् च विष्णुक्रांतां रा
तावरी वलांच सह देवी चानिशाद्विजयमेव च जगदंतं कुंकुमं च तथैवोशीरचंद
नं रातसर्वविनिक्षिप्य कुंभे दद्यात्सुखं सार्वसमुद्राः सरितस्तृतीया निजल
दानदाः श्रायात्तत्र यमनस्य दुरितक्षयकारकाः यो सो बज्रधारो देव आदित्या
नां बभुर्मतः सहस्रनयनश्चंद्रो गृह्योऽंशो हस्तः सूर्यः सर्वदेवानां सप्ताक्षि
रमित्तुतिः चंद्रोपरागं संभूता मतिः पीडां त्ययो हस्तः यः कर्मसाक्षी लोकानो

ने३

४३

43A

धर्मोमद्विषवाहनः यमचंद्रोपरागोऽस्यां गृहपीडां व्ययोहत् रक्षोगणाधिपः सा
 दात्रीलोजनसमप्रभः रवहुस्तोतिमीमं गृहपीडां व्ययोहत् नागपाराधरो
 देवः सदा मकरवाहनः सजलाधिपतिर्देवो गृहपीडां व्ययोहत् प्राणरूपो हि
 लोकानां सदा कृष्णमृगश्रियः वायुश्चंद्रोपरागोऽस्यां गृहपीडां व्ययोहत् यो
 सो निधिपतिर्देवः रवहुस्तलगाधरः चंद्रोपरागकलुषंधनदोत्र व्ययोहत् यो सा
 चिंदुधरो देवः पिनाकी वृषवाहनः चंद्रोपरागपायानिसनाशयत् शंकर
 रः त्रैलोक्ये धानिभूतानि स्थावराणि चराणि च ब्रह्मविष्णुर्कृतज्ञाश्च द
 हंत यमपातकं एवमावाहयेद्देवान् मंत्रैरेभिश्च वासुधैः एवानेव तथामं
 ज्ञान्स्वर्णयष्टिं लेखयेत् ताम्रपट्टे चालिरव्यनवचस्तेन चैव च मस्तकेषु
 जमानस्य निदध्मस्तो द्विजोत्तमा कलशान्द्रव्यसंयुक्तान् नाना रूपसमान् चित्तान्
 गृहीत्वा स्नाययेत् गृहं मद्रूपीठोपरि स्थितं पूर्वैरेव तत्र मंत्रैश्च जायमानं द्विजोत्त
 माः अभिषेकं ततः कुर्यान्मंत्रैर्वीरुणस्तुतः कैः ततः शुक्लांबरधरः शुक्लमाल्या
 नुलेखनः आचार्यवरयेत्पश्चात्स्वर्णयष्टिं निवेदयेत् आचार्यदक्षिणं दद्या
 द्वादानं च शक्तितः अतः ऊर्ध्वं ब्रह्मपूजा तदर्थं न विरोधतः पूजयेत् वसुगोदा

च

निसिं.

४४

५५

नैर्ग्रीह्यमाणनधिराक्षितः गंधमात्यैः धपदीयैः एतयेदेवतुष्टये होमंचापिप्र
कवीतति लैर्वाहनिभिस्तथा दानंच शक्तितोदघ्नान यदीधेदात्मनोहितं सूर्य
गते सूर्यनामयुक्तानां त्रास्रकोर्तियेत् अनेन विधुनायस्तग्रहणे स्नानमाचरे
न नतस्यग्रहणे दोषः कदाचिदपि जायते इति ग्रहणशान्तिः भार्गवाचार्यनदीपिका
यांत्रससिद्धांते सर्वैः यदा स्थितं वीक्ष्यं स्वस्थं तैलांबुदप्यलोः ग्रहणं गुर्विणीजा
न नययेत्तं यदं बिना तथामंगल कृत्ये बुधे विषो यो हेमाद्रौ त्रयोदश्यादि
तो वज्र्यादिना नानवकं ध्रुवं मागल्ये बुधसमस्ते बुधग्रहणे चंद्रसूर्ययोः प्रकारं
तरंतत्रैवोक्तं द्वादश्यादि तृतीयातो वेधे इदं ग्रहे स्मृतः एकादश्याधिकः सौरे
चतुर्थ्यातः प्रकीर्तितः इदं च पूर्णग्रसे अहंरवडग्रहे तयोरितिनत्रैवोक्ते इदं
च ग्रस्तास्ते त्रिदिने पूर्वमिति नारदेन ग्रस्तास्ते विशेषोक्तेर्ग्रस्तं भिन्नेग्रहाण्य
रं ज्योतिर्निवंधे ज्वनः ग्रहणोत्पातभत्याज्यं मंगले बुधश्चतुर्ग्रहं यावच्चरवि
ण्मभुक्ता मुक्तं दग्धकाष्ठवत् अन्यानि चाग्नेयादिमंडलानि तत्फलं वर्णविका
रादिफलंच देवतेभ्यो ज्ञेयं पुरश्चरणचंद्रिकायां चंद्रसूर्यापरागे च स्नात्वा प्रयुज्य
मानसः स्वर्णादिमोक्षयर्थ्यं जपेन्मंत्रं समाहितः जपादशांशतो होमस्तथा हो

राम

४४

विनिर्दि.

४५

44A

रु

मानुषतर्पणं तर्पणस्य दशारो न मार्जिनं कथितं किल तच्चैवं देवतारूपं ध्यात्वा
मानं प्रयज्य च नमो तं मंत्रमुच्चार्य तदंते देवताभिधानं द्वितीयं तासहस्रं प्रादभिः
विंशत्यनेन ततो यैरंजलिना ऋद्धैरभिधिं चेतुस्वमर्धं निमार्जनस्य दशारो
न ब्राह्मणानपि भोजयेत् जयो वा यच्च को होमस्य तर्पणं चाभिषेचनं भदेव पूजनं
पंचप्रकारोक्ता पुरस्त्रिया तथा होमां रात्रौ जपं कुर्याद् होमसंख्या चतुर्गुणं ए
वं कृते ऋतु मंत्रस्य जायते सिद्धिरुन्नमा ग्रहणप्रसंगात् कुरुक्षेत्रं प्रतिगहे प्रा
यश्चित्तमुच्यते तत्रां एस्मृतौ प्रतिग्राही कुरुक्षेत्रे न भयः पुरुषो भवेत् तथा
यि मनसः ऋद्धै प्रायश्चित्ते समाचरेत् तस्मै हृदयं कुर्याद् देवं चैनं समान्वितं सत्रेण
वायजयेत्तायजयेद्वा लभसप्रकं वापी रूपतडागादिरवननैर्विसृजेद्दनमिति ।
एतच्च यद्गृहिते नार्जयेति कर्मणा ब्राह्मणाधनं तस्योत्सर्गं ऋद्धं निदानेन तस्य
सैर्वचेति मन्त्रं कुरुत्सर्गांतरं श्रेयमिति दिक् ग्रहणांतरितस्य पूर्वसंकल्पितं
व्यस्यद्देवगुणं भवतीति शिष्टाः पठन्ति लघुव्रतं चैवर्ते दातव्यमिति नोकास्या
वक्तव्यं कुत्रचित् कथितं अहोरात्रमतिशय्य तदानं द्विगुणं भवेत् दशान्तरं य
वैसु स्याच्छतं चं दुर्गहे भवेत् सूर्यग्रहे सहस्रं तन्मरणं नतकं स्मृतं तदिति अत्र

राम
४५

५५

मूलं चिंत्यं अत्र केचिद्वैदुष्यं लया आहुः ग्रहणस्य निमित्तात्वेन तन्निष्पन्नस्य प्र
 योजकत्वात् ज्योतिःशास्त्रादेनाज्ञानस्य निमित्तत्वे प्राप्तेषु स्वानंदानंतयोश्चाद्वंम
 नंतं राहुदरीने चंद्रस्योपरानेतुयावदरीनगोचर इति ज्ञावाल्या दैवचनेषु दृशिप्रयो
 गाश्चाक्षुषज्ञानस्यैवोपसंहारन्यायेन निमित्तत्वं अन्यथा दृशौ लक्षणास्यात् तेन मेधाफा
 दनेंधादीनां जन्मसमाधेत्यादिनिषिद्धदर्शनात्तच्च ज्ञानाद्वा दौ नाधिकार इति कल्प्यत
 राय्याह दर्शनशब्देन चाक्षुषज्ञानं गृह्यते न ज्ञानमात्रं अज्ञानस्य निमित्तत्वा संभवा
 त्रिमित्तमहि नैव ज्ञानलाभेन दर्शनप्रदवैयर्थ्यापत्तेः तेन चादुषधीयो योग्यः चा
 लः पुण्यः यो ब्यत्वं च प्रयत्नानयने यचाक्षुषज्ञानप्रबंधकरादित्येन मे व्यर्थं त्रयो
 रयताभावात् ज्ञानादीति निर्णयामृतैव न देतुं यदियाक्षुषज्ञानं निमित्तं स्या
 तदा सूर्यग्रहोपदारात्रौ दिवा चंद्रग्रहस्तथा तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद्दानं न च क
 चिदिति वाक्यव्यर्थस्यात् चाक्षुषज्ञानाभावेन प्राप्स्यभावात् तत्सर्वकत्वाच्च नि
 वेधस्य न चेदं ग्रास्तास्तपरं रविचंद्रयोस्तानंतरं रात्रिदिवा ग्रहत्वादिति वाच्यं
 तत्र यदस्य ग्रहपरत्वेधिकरणत्वयोगात् त्रिमित्तपरत्वे च तद्गुह्यनिमित्तकत्वात् तदो
 स्तात्प्रागस्य भावापत्तेः अथ तत्रेति रात्रिदिने उच्येते सावैश्वदेवीति वद्गुणभूते
 ऽपि तन्न तादृशमंत्रलिंगाभावात् तयोर्निमित्तत्वेधिकरणत्वे चान्यप्रयुक्तं

राम
४५

45A

स्नानाद्यभावापत्तेश्च किंच नेक्षेतोद्यतमादित्यनास्तयेतंकदाचन नोपरक्तं न।
 वारिस्थं न मध्यं न भसोगतमिति मनुवचनं बाध्येत दृष्टेरिष्टप्रदोरादुरित्यादिव
 नचात्रविदिते दर्शने निषेधा प्रसक्तवत्पर्युदासनीक्रियतापिनपुत्रेति वाच्यं दर्शन
 स्यान्नुवादेन विधेयत्वाभावात् एतच्चाग्रे वक्ष्यामः तत्त्वे वाधिरुद्धजिकद्वयापत्तेः अ
 स्तसक्तदर्शनविधानेन संकोचश्चेत् न मुक्तिरदृष्टा ततः स्नायादिति मुक्तिस्ताने
 पिचाक्षुषज्ञानस्य निमित्तत्वापत्तेः अस्तु किंचिन्नक्षिन्नमिति चेत् न ग्रास्तास्तयोः प
 रेष्टुरुदये दृष्टाभ्यवहरेषु चिरिति दर्शनी नोत्तरं भोजनविधानादंधस्य पूर्ववेधका
 लादव्यावर्तनी न भोजननिषेधापत्तिः मध्येधीभूतस्य सुतरां यावच्चक्षुः प्राप्नु
 यवा सप्रसंगश्च अर्थात् न लोलपतया तत्रज्ञानमात्रं विवक्ष्येत तत्तत्सर्वमधिनि
 लेखितस्वीक्रियतां एतेन यत्केनचिदुक्तं स्पर्शस्नानं मुक्तिस्तानंच यस्य दर्शने
 तेनैव कार्यं नान्येन क्वाप्यत्ययेन समानकत्वं कत्वावगतो रिति तन्निरस्तं का
 तर्हितस्य गतिः दृष्टेरुदये विरोधत्वात् न ग्राह्यत्वं बद्धविवक्षयार्थतः सि
 द्धान्तमानमात्रानुवादत्वे सर्वसुखं सुखं गुणाद्यनादेरवगृह्यत्वात्त्यावादर्श
 नस्यार्थवत्त्वं न चातयो ग्यतापिसाध्यादर्शनी नोत्तरं मेघचिन्ने योग्यताभावापत्त्या
 दाताद्यभावापत्तेः तेन तत्र देखावधेदेन ज्योतिः शास्त्रावेधत्वमेव योग्यता ९

नि.सिं.
४६

५६

किंच रजसोदरीनाचारीत्रिरात्रममुचिर्भवेदित्यत्रायं धस्त्रीरामा माशौचाभावप्र
संगः यत्तुवर्द्धमानेनोक्तं ज्ञानोत्तरं यधिकारो न ज्ञानकाले स्नानकाले ज्ञानाभावात्
एवंदरीनोत्तरं मुक्तियर्थं तमस्त्वेव योग्यतेति तदधि प्रतिज्ञामात्रे किंच ग्रस्तास्तेत
योः परेधुरुदयेदृष्ट्याभ्यवहरेधुचिरित्यादिवाक्यवैयर्थ्यापत्तिः चादुष्यज्ञाना
न्यथाउपपत्त्येवाप्याउदये स्नानसिद्धेन न मुक्तिस्नानेरास्त्रीयज्ञानमेव निमित्तं नचा
दुष्यं च द्रस्यं गृहे नाद्यातस्मिन्नहनिपर्वतः राहो विमुक्तिं चिज्ञायस्नात्वाकुर्वी
तभोजमिति वदुर्गोतमेन विज्ञायेति ज्ञानमात्रोक्तैः यत्तुमुक्तिं दृष्ट्वात्तभोक्त
त्वं स्नानं कृत्वा ततः परेति तदधि ज्ञानमात्रपरं मेघमालादिदोषोपायदिमु
क्तिर्न दृश्यते आकलय्य तत्कालं स्नात्वा भुंजीत वाग्यतः इति गौडनिबन्धेवचनात्
नैवं प्रज्ञातस्य निमित्तत्वाभावेन निमित्तमहिमैव ज्ञानलाभे वाक्यवैयर्थ्यात्
ग्रस्तास्तेष्वितदपत्तेः किंच दरीनं विशेषणमुपलक्षणं वा नाद्यः दरीनावधि
त्रेकाले स्नानत्वादाय नादेर्वाधात् दरीनविधेरेकतमपि स्नानादिनग्रहणनिमि
तस्यात् नान्यः यावदरीनगोचर इति यावत्तदवैयर्थ्यप्रसंगान् दृष्ट्वा ह्यस्यास्य
ह्येतात्तरमपि स्नानाद्यपत्तेः ज्ञानवक्ष्येय्ये दोषरूपत्वं इति चेत् मुक्त्यपि यदिज्ञा
नवाचकं यदेष्टुं येन ततस्तस्यान्यथाविचार्येत् दृष्टिस्तु यत इति वैयर्थ्यस्य कथं

राम
४६

तर्हि ताने लभ्यते संक्रांतौ स्त्रायादि निबद्धादित्यवेदि अश्रुतत्वादेव नो देश्य
 विशेषण विवक्षा कृतौ वाक्यभेदोधि अश्रुत तर्हि दृष्टं गृह्यं निमित्तमिति चे
 त् गृह्यस्तौ स्त्रांतरस्त्रानापतेः विशिष्टोद्देशो वाक्यभेदाच्च तवाप्येतत्तुल्यमिति
 चेत् यावद्दर्शनगोचर इति वचनेन तन्निषेधात् तत्त्वबधान्यगृह्य इव गृह्यस्तौ सि
 स्यात् किंच दर्शनस्य विधिरनुवादे वा आद्ये गृह्येण दर्शनेन दर्शनविधिरुत्तरी
 नविशिष्टस्नानविधिरुत्तरी नोद्देशेन दर्शनविधिः नाद्यः गृह्योद्देशेन स्नानविधा
 ने च वाक्यभेदात् एतेनाद्वितीयोपपत्तिरास्तः न तृतीयः स्नानस्याप्राप्तेः दर्शनस्य नि
 मित्तत्वे विधेयत्वाच्च अन्यथा सोमवसनादौ प्रसंजनविधिः केन र्येत अथ नाना
 वाक्येषु कचिदर्शनविशिष्टस्नानविधिः क्वचिच्च प्राप्ते दर्शनं निमित्तैव कृत्य स्ना
 नमात्रविधिः तत्र स्नानस्य प्रधानस्य प्राप्तौ तदंगदर्शनप्राप्तिः तस्याचमिमित्तै
 सति स्नानमित्तो न्यन्योन्याश्रयान् एव दर्शनविधौ सति तन्निमित्तकस्नानविधिः
 सति च प्रधानस्नानविधौ तदंगदर्शनविधिः एवमाधिकारे प्रयोजकत्वे च योज्यत्वा
 यत्पूर्वकालत्वे विधौ चास्तेव वाक्यभेदः अन्यथा स्नानोत्तरमपि दर्शनमंगस्यात्
 न द्वितीयः तत्रापि दर्शनगृह्योर्निमित्तत्वे स्नानद्वयापत्तेर्दर्शनाद्यो नैमित्तिका
 इति प्रसंगात् दर्शनविशिष्टगृह्यस्य च विशिष्टस्यानुवादे वाक्यभेदापत्तेः

न च ह विरार्तिवदिसिं निमित्तिर्वाच्यं आर्तिमात्रस्य हे निमित्ते निमेवाद्यार्तेर
 पितृत्वापत्तेर्नैमिक्तिकत्वभंगपुक्तविशिष्टो देवत्वं इह तु ग्रहणमात्रस्य निमित्तत्वे
 न काचित्प्रतिः तस्या ईरी न वाक्यानां गस्ता विषयत्वादना देवग्रहपरत्वाद्वा ज्ञानस्य
 चार्थतः प्राप्तेस्तदैव निमित्तं तेन मेघाद्यादनेंधादेस्तानादिभवत्येवेत्यलं वैदवैद्यैः
 संज्ञायेन इति ग्रहणमिति धः अथ सदस्रानं आश्रुतायनः समुद्रेष्वस्रस्रयाद
 मायांचविशेषतः पापैर्विमुच्यते सर्वैरमायांस्तानमाचरन् भगुभोमदिनेस्तानेति
 तमेव विवर्जयेत् भारते अथ सागरो सेव्यो न स्पृष्टव्यो कदाचन अथ संमंदवा
 रेण सागरं पर्वणि स्थितं पृथ्वीत्वं द्रोदधे स्कां दे पुनाति पर्वणि स्नानात्तर्पणेऽसि
 तं पतिः कदाचिदपि नेवात्र स्नानं कुर्यादपर्वणि अस्यापवादस्तत्रैव प्रभासखंडे प
 र्वकाले च संप्राप्तेन नदीनां च समागमे सेतुवधे तथा सिंधौ तीर्थे च न्येसु संयुतेः एवमा
 दिषु सेतुषु मेधोन्येतेत्येकमणि तथा विनामंत्रं विना पर्वण्युरकर्म विना नरैः कुर्या
 त्प्राणिदेवेशिनः प्रष्टव्यो महोदधिः तथा न कालनियमः सेतो समुद्रस्तानकर्मणि
 तद्विप्रश्नत्रैव पिप्यलादेवेति समुद्रत्रैक्ये लोकभये करे पाषाणं तेन द्यादत्रै
 र्महा राधं प्रकल्पतामिति पाषाणं प्राक्षिप्य विश्वाची च धत्ता चीच विप्रयो ने विरां प
 ते साविधं कुरु मे देव सागरे लवणं भसि नमस्ते विप्रगुप्ताय नमो विष्णो अथा

47A

पते नमोजलाधिरूपायनदीनोपतयेनमः समस्तं जलदाधारशोरवचक्रगदाधारदे
 वदेहिममानुज्ञातवतीर्षनिषेवणे त्रितेत्वात्मकमीशानेनमोविष्णुमुपमापतिं सास्त्रि
 ध्यं कुरु देवेश सागरे लवणं भासि अग्निश्च येनिरनिला च देहोरेतो धाविष्णुस्तस्य
 नाभिः एतत्तु वन्याऽवसमवाचं पततो वगादेतयति नदीनामिति भारतोक्तमंत्रान्
 पठित्वा विधिवत्त्वात्मा सर्वरत्नो भवान् श्रीमान् सर्वस्त्रान करोयतः सर्वरत्न प्रधान
 त्वं गृह्णाध्यमहोदधेऽन्ये दत्वा तर्पयेत् यथोक्तं पृथ्वी चंद्रोदये स्कांदे विष्णुलादं
 विकरं वच कृतांतं जीवकेश्वरं वसिष्ठं चामदेवे च पाराशरमुमापतिं चाल्मी किं ना
 रदं चैव वालारिव ल्यास्तथैव च नलनीलंगवाक्षं च गव्यं गंधमादनं ज्ञावचं ते ह नृमते
 सुग्रीवं चोगदंतया मैदं च द्विविदं चैव त्रयभंतयाः रामं च लक्ष्मणं चैव सीतां चैव तप
 श्विनी एतां स्तुतर्पयेद्विद्वान्जलमध्ये विरोधतः आघ्रातस्तं वयं यंतं यत्किंचित्सच
 राचरं मया दत्तेन तोयेन तृप्तिमेवाभिगच्छत्विति इति मीमांसकनारायणभट्ट
 स्तानुरामस्तुभट्टात्मजा दिनकरभट्टानुजकमलाकरभट्टकृते निर्णयसिंधौ प्रथ
 मः पारिच्छेदः १॥ अथ संबत्सरप्रतिपदमाश्रयति धिक्कृत्ये च कृष्णाघ्राते शुक्लादिमेव
 च विवाहादौ च सौरादिमासं कृत्ये विनिर्दिशेदिति ब्राह्मणप्रायशानुसृत्यतिथिनिर्णय
 स्तत्कृत्ये च निरूप्यते तजमीनसंक्रांतौ पश्चात् षोडशघटिकाः पुण्यकालः रात्रौ तु

सप्तं x

नि.सिं.
४८

५४

निशित्यात्प्राक् परतमसंक्रमे पूर्वोत्तरादिना धं पुं एष निराधेत्तु दिन द्वये पुण्यमिति सा
मान्यनिर्णयादवसेयं अथ तिथिनिर्णयः तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपदिवत्सरारंभः तत्रोद
धिकीग्राह्या चैत्रमासि जगद्गुप्ताससर्जप्रथमे हनि शुक्लपक्षे समग्रं तु तदा सूर्यो
दयेतीति हेमाद्रौ ज्ञात्माक्षेः दिनद्वये तद्वाप्तावा चान्नरो वा पूर्वैव तदुक्तं ज्योतिर्निबन्धे
चैत्रसितप्रतिपदियो चारोर्कोदये सवर्षेणः उदयदितये पूर्वो नोद पूर्वव यपुगलेपि
पूर्वः स्यात् यस्माच्चैत्रसितादेरुदयाद्गानोः प्रवृत्तिरव्यादेरिति वत्सरादौ वसन्तादौ वति
राज्येतथैव च पूर्वविद्धै च कर्त्तव्या प्रतिपत्सर्वदा बुधैरिति गोविन्दारोवेत्तु बशिष्ठा
क्षेः यदा तु चैत्रमलमासो भवति तदा देवकार्यस्य तत्र निषिद्धत्वात् कुक्षे मासि संवत्स
रारंभः कार्य इति केचिदाहुः निःकर्षेण शुक्लादेर्मलमाससो तर्भवति चोत्तर इत्यादि
वचनादाग्निमवर्षीतः यातात् मलमासमारभ्येव वर्षप्रवृत्तेः शुक्लास्तादी विचमासे
एव कार्य इति वयं प्रतीमः ननु शुक्लादौ चैत्रशुक्लप्रतिपदंतरस्याभावाच्च कृतं न मध्य
एवानुष्ठानं मलमासे तु शुप्रतिपदंतरस्य संभवाच्चैव वत्सरारंभो युक्त इति चे
त्त आतोसि नहि प्रतिपदंतरसत्त्वं प्रयोजकं अधिष्ठ वत्सरारंभः स तु मलमासे पी
त्युक्तं प्राक् नहि चैत्रशुक्लादिर्मलमासः पूर्ववर्षेण भवतीति ब्रह्मरूपि सुबचं
अत्र तैलाभ्यंगो नित्यः वत्सरादौ वसन्तादौ वसन्तदौ वति राज्येतथैव च तैलाभ्य

राम
४८

48A

गमकुवाणोनरकं प्रतिपद्यत इति स द्विवसिष्टोक्तेः अस्यामेव नवरात्रारंभः त
 इत्तं मार्कंडेयपुराणे शरत्काले महाप्रजा क्रियते याचवार्धिकीति यावार्धिकी
 त्यनेन संबन्धस्तस्यादौ चैत्रशुक्ल प्रतिपदादि उपक्रम्याष्टमी पर्वते क्रियमाणस्य
 जाविधीयतेऽतश्च शरदसंतयोस्तुल्य एव दुर्गामहोत्सवः कार्यः तत्र परयुत्तैव
 ग्राह्या अमाषुक्तानकर्तव्या प्रतिपद्यं डिकार्चने मुहूर्ते मात्राकर्तव्या द्वितीययदि
 गुणान्वितेति देवीपुराणान्तर्तिस्त्रोद्येताः पराः परयुताः अत्र विशेषः पाराणानि
 र्णयश्च शरदनवरात्रेव स्यात् अत्र प्रयादानमुक्तं मार्कंडेयविष्णु अतीते फाल्गुने
 मासि प्राप्ते चैत्रमहोत्सवे पुण्ये द्विविप्रकथिते प्रयादाने समारभेदित्युपक्रम्यत
 तश्चात्सर्जयेद्विद्वान्मंत्रेणानेन मानवः प्रयेष पर्वसमान्याहूतेभ्यः प्रतिपादिता अ
 स्याः प्रदानात्पितरस्तप्यंतु हि पितामहाः अनिवार्यं ततो देयं जलं सामं च तद्वयमिति
 तथा प्रयादानुमशक्तेन विशेषधर्ममीशुना प्रत्यहं धर्मघटको वस्त्रसंवेष्टिताननः
 ब्राह्मणस्य गृहे देयः शीतामलजलः शुचिः तत्र मंत्रः एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविदस्य
 शिवात्मकः अस्य प्रदानात्सकलाममसंतु मनोरथाः अनेन विधिना यस्तु धर्म
 कुंभप्रबध्ति प्रयादानफलं साधिष्यतीति इह न संशय इति चैत्रशुक्ल तृतीयाया
 गौरीमीश्वरयुतां समुज्ज्वलोत्सवं कुर्यात् तदुक्तं निर्णयामृतदेवीपुराणे

नि.सि.
४२

५९

तृतीयायां यजेदेवी शंकरेण समन्वितां कुंकुमाकुरुकर्धरमणिवसुसुगंध
कैः सकुंगंधधूपदोषैश्च दमनेन विशेषतः आंदोलयेत्ततो वत्स शिवो मातुष्ये
सदेति अत्र चतुर्थी युता ग्राह्या मूर्तते मात्रसत्त्वे धिदिने गौरी व्रतं परे रति मा
धवोक्तेः अत्रैव सौभाग्याय नम्रते मुक्तं मात्स्येवं सतमा समासाहृतं तीयायां
नम्रिये सौभाग्याय सदा स्त्रीभिः कार्यं पुत्रसुरवे सुभिरिति तत्रापि परयुतेव इयं
वमन्वादि रथि अत्रैव प्रसंगात् सर्वमन्वादि निर्णय उच्यते ताश्चात्तादीपिकायं
तिथ्यग्नीनतिथिस्तियाराहृक्षे भोगनलो ग्रहः तिथ्यर्कान् शिवो अश्वो मणिः
यीमन्वाद्यो मधोरिति तिथिपूर्णिमा अग्निरुत्तरीया नेति वैशाखे नास्तीत्य
र्थः अर्शदशमी कृष्णभः कृष्णमाष्टमी अनलस्तृतीया ग्रहो नवमी अर्काष्टादशी
शिवारकादशी अश्वः सप्तमी मधोऽश्वे जादारभ्येतामन्वाद्यय इत्यर्थः अत्र मूलवचना
नि हेमाद्रादेर्ज्ञेयानि एतामन्वाद्यो हेमाद्रि मते शुक्लपक्षस्यापौर्वाद्रिकाः कृष्णप
क्षस्याप्रपराद्रिका ग्राह्याः पूर्वाह्ने सदा ग्राह्याः शुक्लामनयुगादयः देवैर्कर्मणि पित्रे
च कृष्णैर्वायराद्रिका इति गारुडवचनात् अयोमन्वादि युगादिकर्म तिथयः
मि सवाद्रिका स्युः सितैर्ज्ञेया अपराद्रिका अवहृलेशेति दीपोक्तिश्च कालादरीत्त्वप
राहृत्वायित्वमन्वादि कृतं तत्त्वयुक्ते भित्ति युगादि निर्णये च द्याक् अत्र च म्नाड सु

राम
४८

49A

को३

कं मात्स्ये कृतश्राद्धं विधानेन मन्वादिषु युगादिषु सायनादिदिसाहसंयित्वाणां
 तद्विदं भवेदिति मन्वादिश्राद्धं मालमासे सद्यपि कायं मन्वादि कं तेषां च कयो
 न्मासद्वयोपि चेति स्मृतिचंद्रोक्तेः अत्र पिंडराहितं श्राद्धं कर्तव्यं तदुक्तं कालादौ
 विद्युत्वायने संक्रांति मन्वादिषु युगादिषु विहाय पिंडनिर्वापं सर्वश्राद्धं समा
 चरेदिति मन्वादिश्राद्धं च नित्यप्रकरणे प्रायश्चित्तदर्शनात् तदुक्तं विधाने त्वं
 भुवः प्रतिमंत्रं च तवारजले जपेत् मन्वाद्योपदान्मनाः कुरुते नैव वापियति एवं
 यजप्रायश्चित्तं वीसादि दर्शनेतानि द्वा एनवति श्राद्धा निमित्तानि तानि त्रिंशु अमास
 नुं युगक्रांति धर्तव्या तमाह लया श्राद्धव्यं च सर्वेषुः वएनवत्यः प्रकीर्तित इत्य
 त्तानि च कारादष्टकाग्रहणं चैत्रशुक्ल तृतीये वमत्सजयेत् अत्रैव प्रसंगाद्ग्राह
 तारजयेत्यानिर्णीयं ते तत्र पुराणसमुच्चये मत्स्योक्तं भुवि नैव मधुसिते कूर्मा वि
 धौ माधवे वाराहो गिष्ठिासु तेन भक्षित इति सिते माधवे सिंहो भ्राष्ट्रपदे सिते हरि यो श्रीवा
 मने माधवे रामो गौरिति धिवतः परमं भद्रा मोनवम्यां मधोः कृष्णोष्टम्यां नभसि सि
 तपरे चाश्विने यद्वरा म्यां बुधः कल्कि नभसि समभ्युक्तोष्टम्यां क्रमेण अक्षो मध्ये वाम
 नोराम रामो मत्स्यः क्रोऽश्वापरा द्वे विभागे कूर्मः सिंहो द्वादश कल्की च सायं कृष्णो रात्रौ
 कालसाम्ये च पूर्वोति केचिन्नस्पृष्टान् श्लोकान् पठन्ति यथा चैत्रशुक्ल पंचम्यां भग
 वान् मीनरूपध्वक् ज्येष्ठे शुक्ल द्वादश्यां कूर्मरूपधरो हरिः चैत्रे कृष्ण नवम्यां त्रहरिर्वा

राह रूपधृक् नरसिंहश्चतुर्दश्यां वैशाखे शुक्ल पक्षके मासि भाद्रपदे शुक्ल द्वादश्यां वा
मनोहरिः राधा शुक्ल तृतीयायां रामो भार्गव रूपधृक् चैत्रे शुक्ल नवम्यां तुरामो दश
रथात्मजः नभस्ये तृदितीयायां बलभद्रो नवद्वारिः श्रावणे चतुर्दश्यां कृष्णमास्ये
लोकरक्षकः ज्येष्ठे शुक्ल द्वितीयायां बौद्धः कल्की भविष्यति कौंक्षणा स्तु वराह पुरा
ण स्थिते तेन वाक्या निपठंति आषाढे शुक्ल पक्षे तृतीयायां कादश्यां महातिथौ नयेती मत्स्यना
म्नीति तस्या कार्यमुपोषणं नभो मासि तृतीयायां हरिः कमठ रूपधृक् नभस्य शुक्ल
पंचम्यां वराहस्य जयेति का वैशाखे च चतुर्दश्यां नृसिंहः समपद्यते वैशाखे शुक्ल पक्षे
तृतीयायां भृगुहहः मासि भाद्रपदे शुक्ले द्वादश्यां वामनो हरिः चैत्रे नवम्यां रामो
भृगु कौशल्यायां परः पुमान् श्रावणे चतुर्दश्यां वासुदेवो जनार्दनः पौष शुक्ले तु
सप्तम्यां कुर्यादौदस्य स्रजनं माघ शुक्ल तृतीयायां कल्कि नास्रजनं हरेः प्रातः प्रा
तस्तु मध्याने सायं सायं तथा निशि मध्याह्ने मध्यरात्रे च सायं प्रातरनुक्रमेति
तदत्र समूलतः निर्णये सति कल्पभेदेन व्यथस्या द्रष्टव्या एताश्च तत्तदुपासका
नां नित्यः अन्येषां तु काम्याः जन्माष्टम्यादौ तु विशेषं वक्ष्यामः चैत्र शुक्ल पंच
मी कल्पादिः तदुक्तं हेमाद्रौ मत्स्ये ब्राह्मणोपादेन स्यादिः कल्पादिः सा प्रकीर्तिता
वैशाखस्य तृतीयाया कृष्णमासा फाल्गुनस्य च पंचमी चैत्रमासस्य तथैवा न्यातव्या

50A

परा शुक्लाजयोदशीमाघेकार्तिकस्य नवमीमार्गशीर्षस्य संप्रैताः सं
स्मराभ्यहं कल्याणामादयो हेतुदत्तस्याक्षयकारकाः अत्र सर्वे धिने लियोमन्या
दिवत्तज्ञेयाः चैत्रशुक्लाष्टम्याभवान्याउत्ततिः तत्र नवमीयुताग्राह्य अष्टमीनव
मीयुक्ता नवमीचाष्टमीयुतेति ब्रह्मवेचनं तत्र अत्रभवानीयाजोक्तो कार्तिरंघो
भवानीयस्तु परंपेत शुक्लाष्टम्यामधोनरः न जानुशोकं लभते सदानंदमयो भ
वेदिति अत्रैवाशोककलिका प्राशनमुक्तिहेमाद्रौ लौगे अशोककलिका आर्षे
येषि वंति पुनर्वसौ चैत्रमासि सिताष्टम्या न तैशोकमवाप्नुयुः प्राशनमंजस्तु त्वाम
शोकवराभष्टमधुमांससमुद्भवं पिबामिशोकसंतप्तो मातृशोकं सदा कर्तुमिति अत्र
विशेषः एष्टी चंद्रोदये विष्णुः पुनर्वसुबुधो येना चैत्रमासि सिताष्टमी प्रातस्तु विधि
कस्त्याया लोहित्यतो येष्टु सयाति ब्रह्मणः पदं चैत्रे तु सकलमोसंश्रुतिः प्रयत्नमानसः
लोहित्यतो येष्टुः स्त्रायात्स कैवल्यमवाप्नुयात् लोहित्यो ब्रह्मपुत्रः मंत्रस्तु ब्रह्मपुत्रम
समाजं शतैः कुलसंभव असौ प्रागर्भसंभृतया यं लोहित्यमेष्टु चैत्रशुक्ल नवमीराम
नवमी तदुक्तमगस्त्यसंहितायां चैत्रे नवम्यां प्राक यक्षे दिवा पुण्ये पुनर्वसौ उपेगु
नृगो रिरांश्चोच स्थिग्रहं च के मेष्टेष्टु संप्राप्तं लगे कर्कटका दूये प्रावि
रासीत् सकलया कौशल्यायां परः पुमान् तस्मिन् दिने तु कर्कटव्यस्य वासवतं सदा

नि.सिं.

५१

५१

तत्र जागरणं कुर्यादधुना यथोभवीति अथ च मध्याह्नये गिनी ग्राह्या चैत्रपु
द्भे नवमी पुनर्वसुता यदि सर्वे मध्याह्नयोगे न महापुण्यतमा भवेदिति तत्रैवो
क्तैः तथा चैत्रमासे नवम्यां न जातौ रामः स्वयं हरिः पुनर्वसुक्षसंयुक्ता सा निधिः सर्व
कामरा श्रीराम नवमी प्रोक्ता कोटि सर्यग्रहाधिका तथा केवलापि सदोपोष्या न
वमी राव संग्रहात् तस्मात्सर्वात्मना सर्वैः कार्ये चैत्रवमी व्रतं दिनद्वये मध्याह्न्या
श्रौतदभावे वा यवदिने पुनर्वसुक्षयुक्ता मयित्युक्ता परैव कार्या तदुक्तं माधवीये
गारुडसंहितायां नवमी चाष्टमी विद्यात्याज्या विष्णु परायणैः उपोषणं नवम्यां च
दशम्यां चैव पारणामिति अष्टमी विद्या स ऋक्षापिनोपोष्याति माधवः रामार्चनं च द्वि
कायामपि विद्वैव चैव क्षयुक्ता व्रतं तत्र कथं भवेत् विद्वानियेधप्रवणं नवमी चेति
वाक्यतः वैष्णवानां विशेषात् तत्र विष्णु परैरपि दशम्यां दिव्यं द्विष्टे द्विष्टा न्येवै
भवेः तदन्येषां च सर्वेषां व्रतं तत्रैव निश्चितमिति अत्र दशम्यां दिव्यं द्विष्टे द्विष्टा न्येवै
न्येषामिति बवदन् यदा प्रातस्त्रिमुहूर्तौ नवमी दशमी च भयवारात् सूर्यो दयात्प्रागेव
सामर्थ्येन तदा स्मार्तानां तत्रैव कादशी भिमतोपसा वासन् नवमी व्रातांगपारणा
लोपः स्यात् अतोऽष्टमी विद्वैव स्मार्तैः कार्यं वैष्णवानां त्वरुणादय विद्वैव कादशी
हेयत्वा न पारणालय प्रसंगादिति द्वितीये व्रतैः कार्येति सूचयति दशमी वृद्धभावे

राम
५१

51A

वृत्तविद्यायाः श्रवणेन वेद्येनैव रायि विद्ये वेद्यो यो व्योत्यर्थसिद्धं इदं च ब्रतं संयोग एव यत्क
 न्यायं न काम्यं विन्यं च तदुक्तं हेमाद्रावगास्ति संहितायां उच्यते अंगं जागरणं पितृ
 नृदिश्यतर्थाणं तस्मिन्दिने तत्कर्तव्यं ब्रह्मप्राप्तिमभीक्ष्ण्यः सर्वेषामप्ययं धर्मो न
 किमु ज्ञेयं कसाधनः अत्र चिर्वापि पापिष्टः कृत्वेदं ब्रतमुत्तमं पूज्यः स्यात्सर्वभू
 तानां यथा रामस्तथैव सः यस्करामनवम्यात्तु भुक्ते मोहाद्विस्मृधीः कुंभीपा
 केष्टुघोरेष्टुपच्यते नाजसंशयः तथा श्रुत्वा रामनवमी ब्रतं सर्वे ब्रतौत्तमं ब्रताय
 न्याति कुरुते न तेष्वां फलभाग भवेत् प्राप्ते श्रीरामनवमी दिने मर्त्तौ विस्मृधीः उच्यते
 रां कुरुते कुंभीपाकेष्टुपच्यते अत्र केचित्तदुपासकानामेवेदं ब्रतं नित्यं न त्वन्यथा
 मित्याहुः अन्ये तत्र करणे दोषप्रवणं तस्मात्सर्वात्मना सर्वैकाम्यं वै नवमी ब्रत
 मिति एवैकवचनाच्च जन्माष्टम्यादिवदिदमपि सर्वेषां नित्यं अन्यथा जन्माष्टम्यादा
 वयित्तदुपासकानामेव नित्यतां वक्तुः को वारयितेत्याहुः अत्र विशेषो हेमाद्रावग
 स्तसं संहितायां आचर्य चैनं सं पूज्य चण्डालात्प्राप्य यन्निशि श्रीरामप्रतिमादानं करि
 व्येदं द्विजोत्तमः भक्त्या चार्यो भवप्रीति श्रीरामो सितचमेव च तथा स्वर्गहे चोत्त
 रे देशे दानस्योद्दलमंडपं शंखचक्रहस्तमद्भुभिः प्राग्द्वारे समलं कृतं गरुत्तच्छा
 दे वाणोऽप्रदक्षणे समलं कृतं गरुत्ततदा खट्वांगदे श्वेव पश्चिमे सुविभक्त्यधि

42

52

ते यमस्वस्तिकनीले श्रीकौबेरे समलंकृतं मध्ये हस्तचतुष्पादं वेदकायुक्तं
 मायतं ततः संकल्पयेदेवं राममेव स्मरन्मुने अस्यां रामनवम्यां च रामारा
 धनतत्परः उपोष्याष्टसुयामेष्ठसृजिधित्वा यथाविधि इमां स्वार्णमयीं रामप्रति
 मां च प्रयत्नतः श्रीरामप्रीतये दास्ये रामभक्ताय धीमते प्रीतोरामो हरत्वा श्रुयाया
 निसुवहूनि मे अनेकजन्मसांसिद्धान्यभ्यस्तानि महोति च ततः स्वार्णमयीं राम
 प्रतिमां पलमर्मत्रतः निर्मितां द्विजोदिव्यां वा मां कस्थितजानकरी विभुतीं दक्षिस्म
 करेत्तानमुद्रां महाभुने वामेनाधः करेणात्तदेवीमालिग्य संस्थितां सिंहासने
 राजतेजपलद्वयविनिर्मिते तथा अशतो यो महाभाग सत्त्वितानुसारतः पाले
 नार्धतदर्धाधर्धतदर्धाधर्धेन वामने सौवर्णराजतं वाधिकारयेद्गुणैर्दत्तं पाशैर्भरत
 शत्रुघ्नोद्युतघ्नकरावुभौ चापद्वयसमायुक्तं लक्ष्मणं चाधिकारयेत् दक्षिणं
 गेदशरथं युग्रावेक्षणतत्परं मानुरंकगतं राममिन्दुनीलसमप्रभं पंचामृत
 स्नानपूर्वं संपूज्य विधिवत्ततः कौशल्यामंत्रस्तु रामस्य जननी चासिरामरूप
 मिदं जगत अतस्त्वां पूजयिष्यामि लोकमातर्नमोस्तुते नमो दशरथायैति सू
 जयेत्पितरं ततः अत्र दशाचरणपंचावरणादियुगान्यजज्ञेया अशोकका
 सुमेरुं कर्मार्घ्यं दद्याद्विचक्षणः दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च

राम
५२

52A

राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधिनाथ च पवित्राणामसाधनाज्ञातरामस्वयं
हरे गृहाणा धर्ममया दत्तं भ्रातृभिः सहितो नद्य पुण्यां जलं पुनर्दत्वा यामेयामेय
पूजयेत् किं वै विधि वक्तव्यं रात्रौ जागर्माणस्ततः ततः प्रातः समुत्थाय स्नानं
दिका क्रियाः समाप्य विधिद्रोमं पूजयेत् विधिबन्धुने ततो होमं प्रकुर्वीत मल
मंजोणमंजवित्त पूर्वोक्तपयस्कं द्रास्थं डिलेवा समाक्षिः लौकिकारोगो विधा
नेन रात्रमष्टौ नरं ततः साज्येन याप्य सेनेय स्मरन्नाम मनन्यधीः ततो भक्त्या सुसं
तोष्य ज्ञाचार्यं पूजयन्नुने ततो रामं स्मरन् दद्याद्देवं मंजमुदीरयेत् इमास्वर्गमयी
रामप्रतीमां समलं कृत्वा चित्रवस्त्रयुगादि चो रामो हं राघवापते श्रीराम प्रीतये दा
स्ये तुष्टो भवत राघवः इति दत्वा विधानेन दद्याद्देक्षिणां भुवं द्राक्षत्यादि पापेभ्यो मु
क्तये नात्र संशय इति इयं मलमासेन कार्या सुतप्रमथ्य जपं स्यात्त्रौ पवासः कृतो भवे
दिति नक्तं श्रीमलमासे तु मलमासेन व्रतानि चेति साधवीये संद्वचनान्न ननु
रामनवमी व्रतस्य नित्यत्वाद्देकादशिवन्मलमासेधिकं त्रैव्यतास्यादिति चेत् अत्र
ब्रूमः नैकादशयुपवासस्य व्रतत्वेन प्राप्तिः किंतु राकादश्यां न भुंजीत पक्षयो रुम
यो रपीत्यादि निषेधस्य मासे पिपालनीयत्वात् कृत्वा देकादश्यां पुत्रवत्तु गृहिणा इवा
यादुपवासः प्रसज्यते नात्विह तथेति व्रतत्वेन प्राप्तिश्चाप्या सा च निषेधेन प्र

संगः स्यादमासे विरोधाख्या विहितं वर्जयेन्मले इति निषेधाच्च एवं जन्माख्या
दावपि बोद्धव्यं इति रामनवमी चैत्रशुक्लैकदश्यादौ लोत्सवं उक्तौ त्रासे चैत्र
मासस्य शुक्लायामेकादश्यांत वैष्णवैः आदौ लनीयो देवैराः सलक्ष्मीकोमलोत्सव
इति चैत्रशुक्लद्वादश्यादमनोत्सवः द्वादश्यांचैत्रमासस्य शुक्लायां दमनोत्सवः वैष्ण
यनादिभिः प्रोक्तः कर्त्तव्यः प्रतिवत्सवमिति रामर्चनचंद्रिकोक्तेः ऊर्जैर्जते मधौ
दोलाश्चावरोते तस्य जने चैत्रे मदनारोपमकुर्वीत एव जन्त्यध इति तत्रैव पाश्र्वा
चनाच्च शिवभक्तादिभिस्तु चतुर्दश्यादौ कार्यं तत्र स्यात्स्यायातिथिबुद्ध्या
देर्दमनार्थेणामिति तत्रैवोक्तेः तिथ्यस्तु वद्विर्विरेद्योगिरिडागणेशः फणी
विशाखे दिने हस्तनक्षत्रः दुर्गांतको विष्णुहरिः स्मरश्चरार्चः शशीचेति तिथीबुद्ध
व्या इत्युक्तः अथागमोक्तदीक्षावतो दमनारोपणविधिः रामार्चनचंद्रिकोक्तेः त
त्रैकादश्यां क्रियालोपविधानार्थं यत्तया विहितं प्रभो न मे विद्या भवेदत्र कुरुना
पदयंमपि सर्वथा सर्वदा विद्मो समन्वयरमागतिः उपवासे न त्वां देवतोषयामि
जगत्पते कामक्रोधादयो व्येते न मे स्पृष्टं तद्यातकाः त्र्यं सद्यप्रभृति देवैरा
यावद्देवोषिकं दिनं तावद्रक्षात्याया कार्या सर्वस्यास्य जगत्पते इति देवं संप्रा
प्य दमनमादाय पंचजायेन प्रोक्ष्य वरिणा प्रक्षाल्यारोक्मले देवाग्नेवा

53A

अथैकाकायनमस्तुभ्यं कामस्त्रीशोकनाशनै शोकार्तिहरमे नित्यमानंदं जनयस्व मे
 इत्येकं बुद्ध्यादिकालपर्यंतः कालरूपो महाबलः कलते चैव यः सर्वतस्मे कालात्मने
 नम इति काले वसंताय नमस्तुभ्यं वक्षगुल्मलताय च सहस्रमुखसंवासा कामरूपनमो
 स्तुते इति वसंते कामभस्मसमूहतरतिर्विषयपरिप्लुत अश्विगेधर्वदेवादि विमोदकन
 मोस्तुते इति दमने च संप्रज्यनमोस्तुते च वाराणाय जगदाद्रादकारिणे मन्मथाय जज्ञे
 त्रेरतिप्रीतिप्रियाय नम इति मनुष्यस्थायः ॐ कामाय नमः इति संप्रज्य निराया देवाग्रेपं
 चर्वाणि मुदनेन वाष्टदले कृत्वा वहिः शतरसं तद्वह्निर्वत्तलजयं वदहीरक्तं च त्रसं च कृत्वा तत्र
 कंभं संस्थाप्योपरि दमनं प्रतिष्ठाप्य ज्ञाथं देवदेवस्य विघ्नो लक्ष्मीयतेः प्रभोः दमनत्वमि
 हागधसानिधं कुरुते नमः ॐ ह्रीं कामदेवाय नमः ॐ ह्रीं रत्ये नमः इत्यावाह्यदिक्षु पूर्वादितः
 स्मरराय नमः मुने गायनमथाय रामाय ह्रीं वसंते सरवाय स्मराय इक्ष्वापाय पुष्यस्त्राय
 नम इति पूजयित्वा ॐ तत्स रूपाय विष्णवे कामदेवाय धीमहि तन्नो नमः प्रचोदयादित्य
 ये त्तराते संमंजसं पूजयित्वा ह्रीं नमः इति पुष्पांजलिं दत्त्वा नमोस्तु पुष्पवाराणय जगदा
 द्रदकारिणे मन्मथाय जगन्नेत्रे रतिप्रीतिप्रियाय इति नत्वा आभं त्रितो सिंदेवै रापुराण
 पुरुषोत्तम प्रातस्त्याय जाधे व्यामि संनिधौ भवते नमः नवेदयाम्यहं तुभ्यं प्रातर्दमनकं
 मुभं सर्वथा सर्वदा विघ्नो नमस्ते स्तु प्रसीद मे इति देवं संप्रार्थ्य पुष्पांजलिं दत्वा अ

सिं ए चक्रमंत्रेण चारुं कुर्यात् ततः प्रातर्नित्यं पूजां कृत्वा पुनर्देव्यं संसृज्य दूर्वागं
धातुन पुक्तं दमनमादाय फलमंत्रं धत्वा देवदेव जगन्नाथवाधितार्थं प्रदायक इदिस्या
न्युरयेः कामानुममका मे शरीरिय इदं दमनकं देवगृहाण मदनुगृहात् इमां सोवत्सरी
पूजां भगवन्परिपूरय इति मंत्रांते पुनर्नित्यं मंत्रेण देवे समर्पयेत् ततो गदेवताभ्यः स्वस्व
मंत्रेण दत्त्वा प्रार्थयेत् मभिविद्रुममालाभिमंदारकुसुमादिभिः इयं सोवत्सरी पूजा तवास्तु
गरुडध्वजवनमालां यथा विष्णोर्कोस्तु मंसतते हृदि तद्ददामनकीं मालां पूजां च हृदये वक्ष्ये
जानता जानता वापिन कृते यत्तु चर्चने तत्सर्वं पूर्णं तां यात त्वत्प्रसादा इमां पते जिततपुंडरी
कासनमस्ते विष्णुभावननमस्तेस्तु हृषीकेश महापुरुष पूर्वज मंत्रहीनमिति च संप्राप्य
पंचोपचारैः पुनः संसृज्य नौराज्यं पारयेदिति दीक्षारहितानां तु मानैव समर्पणं
शुभ्रत्रयोदशी ग्राह्या यवित्रदमनार्थेणोपति तत्रैवोक्तेः गौणोपिकाल उक्तस्तत्रैव हरौ
नदमनारोपः स्यात्तद्यो विष्णुतो यदि वैरीये प्रभवे वापित त्रयो स्यात्तदर्थं लीं आव
णवभिष्कुलास्ते कर्तव्यमिति नारदः इति पाठान्तरं इदं च मलमासेन कार्यं उपाकर्मोत्त
सर्जनं च यवित्रदमनार्थेणोपति कालादौ माला मासवर्ज्यं वृषपरिगणनात् उपाक
र्मं च हृदये च कर्मं पर्वीत्सवे तया उत्तरे नित्यं कर्तव्यं तत्रैवोक्तेः फलं भवेदिति माध्वरी
ये प्रजापतिवचनाच्च शुक्रास्तादौ तु कार्यमेव पूर्वोक्तवचनात् उपाकर्मोत्तर्जनं

54A

च परत्र दमनार्थं एषा न स्य वलिविद्योः राधेन परिवर्तनेन कर्माशुद्धिस्तथा च गु
 रोर्मोक्षेयौ तिविनिश्चय इति ज्योतिर्विचये ह्युक्तं गार्ग्यवचनाच्च चैत्रमुक्तं त्रयोदश्या
 मते गार्ग्ये तत्र सा पूर्वोक्ता गार्ग्यान्तपोदरातिथिः पूर्वः सित इति दीपिकोक्तेः चैत्रमुक्तं चतुर्द
 शी पूर्वोक्ता मधोः प्रावणमासस्य शुक्लपक्षे चतुर्दशी सारात्रिभ्या यिनी गार्ग्यानाम्ना
 शुक्ला कदाचनेति हेमाद्रौ यौधायनोक्तेः परापूर्वाद्गामिनीति वा पाठः अत्र केचिद्यथा
 कृतमेवाप्यवर्णयन्ति निशि भ्रमंति भूतानि रात्रयः शूलभृद्यतः अतस्तत्र चतुर्दश्या
 सत्यान्तस्मृजने भवेति ब्रह्मवेवर्तते हेमाद्रिबाधवादि लिखनमप्येवं संप्रदायविद
 स्त्याहुः चतुर्दशीतकर्ममात्रं त्रयोदश्यायुताविभो इति त्वं कामुत्सर्गः तदपवादश्चतुर्दशी
 कादशी यथा शुक्लपक्षे चतुर्दशी पूर्वविधानैकैर्माकर्तव्यापरसंयुतेति नारदीयव
 चनेन तदपवादश्च मधोः प्रावणमासस्येति तत्रापवादभावे पुनरुत्सर्गस्यास्थितिरि
 ति न्यायने मुहूर्तविद्वेगग्राह्येति सिध्यति ब्रह्मवेवर्तते सामान्यरूपमन्यत्र सर्वकथा
 मिति तेन पूर्वदिने मुहूर्तत्रयवेषधेपूर्वा अन्यथा नरेति चैत्रपूर्णिमा सामान्यनि
 र्णयान्तरे च अत्र विशेषो निर्णयान्ते विष्णुस्मृतौ चैत्री चित्रायुता चैत्यान्तस्याधि
 त्रयस्तद्वदनेन सौभाग्यमाप्नोति तथा ब्राह्मे मन्देवे वागुरौ वापि वारेद्येतेषु चैत्रिका

निर्गसं

५५

55

कोटि

नजाप्रमेधजंपुण्यंस्तान्नाद्रादिभिर्लभेदिति अत्र सर्वदेवानां दमनपूजात्ता
तत्रैव वायवीये संवत्सरकृताचार्याः साकल्याया विज्ञानपुराणं दामनेनार्चयेच्चै
ज्यां विरोधेण सदाशिवमिति अनुस्वीयति यथा समुच्चय इति केचित्तस्वीयति य
वकरणे अत्र दमनपूजनमिति प्रत्ये दीक्षिततदितरविषयत्वेन व्यवस्थेत्पयरे इय
मन्वादि रायि सा च पर्यमुक्तां चैत्रकृष्णत्रयोदश्यां महावानुष्णी संज्ञको योगो गौडेषु
प्रसिद्धः तउक्तं वाचस्पति कृतौ मूलपाणौ च स्वतन्त्रे वारुणेन समापुक्ता मधो कृष्ण
त्रयोदशी गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहस्तैः समा रात्रिचार समापुक्ता सामहा वारु
णी स्पृजा गंगायां यदि लभ्येत सूर्यग्रहस्तैः समा शुभयोग समापुक्ता रात्रौ
रात्रिभिर्वा यदि महामहेति विख्याता त्रिकोटिकुलमुद्धरेत् तत्रैव ज्योतिषे चैत्र
सिने वारुण ऋक्षपुक्ता त्रयोदशी सूर्यसुतस्य चारो योगे शुभे सामहती महत्यागे
गात्रलेर्कग्रहकोटि तुल्येति स्थली सतो ब्रह्मांडपुराणे वारुणेन समापुक्ता मधो
कृष्णत्रयोदशी गंगायां यदि लभ्येत रात्रि सूर्यग्रहैः समेति कल्पतरो ब्रह्मे मधो कृ
ष्णत्रयोदश्यां रात्रौ रात्रिभिर्वा यदि वारुणिति समाख्या शुभे तु महती स्पृजा चैत्र
कृष्णचतुर्दश्यां विरोधः पृथ्वी चंद्रोदये लात्यः चैत्रकृष्णचतुर्दश्यां यः स्नापयिष्व

राम

५५

55A

सन्निधौ न प्रेतत्वं मया प्रोतिगंगायां तु विशेषतः इति मोडेरत्वेन देवमुक्तं चतुर्दश्याः
 मित्येवं देवलीयत्वेन यठेत् इति श्रीरामस्तुभ्य भट्टस्तरिस्तु न कमलाकरभट्टकृतं
 कालनिर्णयसिंधौ चैत्रमासः मेषसंक्रमे प्रागपरादशाष्टिकाः पुण्यकालः रात्रौ तु
 प्रागुक्तं अत्र धर्मघटादिकानमुक्तं पृथ्वीचंद्रोदये यादौ तीर्थे वा नुदिनं स्नानं तिलै
 म्र पित्ततर्पणं दानं धर्मघटानां मधुस्तदनसूत्रं माधवे मासिकं कीर्तनमधुस्तद
 ननु स्थिदं म्रयं वैशाखस्नानं तत्र पृथ्वीचंद्रोदये विष्णुस्मृतिपापयोत्तुलं मकरमे
 येन प्रातः स्नानं विधीयते इति विष्णुस्मृत्यं च महायतकनाराजं मिति सौरमा
 राउक्तः अन्यन्यक्षद्वयमुक्तं तत्रैव यादौ मधुमासस्य मुक्तायामेकादश्यो मुयो
 दितः ये च दश्यां च भौवारमेव संक्रमे तत्र वैशाखस्नाननियमं ब्राह्मणानामनु
 ताया मधुस्तदनमभ्यर्च्य कृत्वा संकल्प्य हव्यं तत्र मंत्रः वैशाखं सकलं मासं मे
 व संकृतमहो रवेः प्रातः सनियमः स्नात्वा श्रीपातं मधुस्तदनं मधुहर्तुः प्रसादेन
 ब्राह्मणानामनुगृहात् निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वह माधवे मेषगे
 भानौ मुरारे मधुस्तदनं प्रातः स्नानेन मेनायकलदोभवयापह्निति तीर्थं विशेषा
 पित्तत्रैवोक्तः मेषसंक्रमणे भानौ माधवे मासि यत्नतः महानद्यां नदी तीर्थेन
 देसरसिनिर्जरे देवघाते यथा स्नायात् यथा प्राप्ते जलाराधे दीपिका कृपया पीयु

रवा

56

नियतात्मा हरं स्मरन्निति संकल्पे च तत्तीर्थनामग्रहं भूताने तद्विष्णु तीर्थमि
ति वदेत् यदा तज्जायते नाम तस्य तीर्थस्य भोदिताः तत्रैतत्पुष्पारणं कार्यं विष्णु
तीर्थमिदं त्विति तीर्थस्य देवता विष्णुः सर्वत्रापि न संशयः इति तत्रैवोक्तेः तथान्यो
पि विरोधस्तत्रैव यमेतलसीत्समगोराख्यातया भ्यर्च्य मधु द्विषं विरोधेण त
वैरावेनरो नारायणो भवेत् माधवं सकलं मासेतलस्यायोच्चयेनरः तिसंध्यं मधुं हत्वा
रं नास्ति तस्य पुनर्भवः तथा प्रातः स्नात्वा विधानेन माधवे व्याधवः प्रिय योऽस्य म
लमासिंचे तोयेन वहुना सदा कुर्यात्पुनः किरणं तंतु सर्वदेवमयं ततः पितृदेवमनु
व्यांश्च तयं येन सचाचरं योऽस्य सर्वदेवमुदकेन समंततः कलानामयुते तेन तारि
ने स्यात्तसंशयः कंडूषयष्टतो गांस्तत्वापि प्यलनधरां कृत्वा गोविंदमभ्यर्चनं
र्गतिमवाप्नुयात् तथा एकभक्तमथोनक्तमया चित्तमंतद्रितः माधवे मासियः कु
र्यात्समते सर्वमोक्षितं वैरावे विधिना स्नानं देवनद्यादिके वादिः हविष्यं ब्रह्मच
र्यं च भूराय्या नियमस्थितिः ब्रतं दानं दमोदिविमधुस्तदनयुजने अग्निजन्म सहस्रा
मप्यायं हस्तुदा रुणं मदनरत्ने स्कांदे प्रफक्काधी वैरावे देवे दयागले तिका कथान
यजनं च त्रस्तम्भवासांसि चंदने जलयात्राणि देवानि तथा दुष्यगृहाणि च पा
नकानि च चित्राणि प्राक्षारं भफलान्यपि तिथितत्वे ददाति यो हि मेवा दो सकृ

राम
५६

56A

ननु वदन्ति तान् पितृभ्यः पितृभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते तथा धैरावेद्योऽं
 पूर्णसंभोज्यं वैदित्तमनेददन्ति सुरराजोऽद्रस्यति परमां गतिं एवं संपूर्णस्नाना
 शक्तौ हं वा स्नायात् तदुक्तं तत्रैव पापे जपो दण्डाच नृदेष्टा वैरा रक्षा वादनत्रय
 अथिसम्यग्विधानेन नारी वा पुरुषा पि वा प्रातः स्नातः सानियमः सर्वपापैः प्रमुच्य
 त इति न पदात्तु वैरायो मलमासो भवति तदा काम्यानां तज्ज समाप्ति निषेधान्मस
 द्वयं स्नानं तन्नियमाश्च कर्त्तव्या मासे पवास चो जायणा दित्तमस्तमासे एव समाप्ये
 त तदुक्तं दीपिकायां नियतत्रिंशदिनत्वाद्युभे मासारभ्य समाप्रयेत् मलनेमा सो
 पवात्रतमिति अत्र दानं विराय क्तोपरा क्तं वामनपुराणे गंधाश्च माह्यानि तथा चैरा
 वे सुरभीणि च देवा निद्विजमुखेभ्यो मधुसूदनतुष्टये एवं स्नाने कृते तस्योद्यायने
 कार्यं तदुक्तं तत्रैव मासमेव वहिः स्नात्वा नद्यादौ विमले जले एकादश्यां च द्वादश्यां चो
 णि मास्या मध्यापि वा उयोध्या नियतो भूत्वा कुर्यादुद्यापनं बुधः मंडमंकारयेद्वा दौ कल
 शं तत्र विन्यसेत् निःकेशावातदर्थं न तदार्धं न वा पुनः रात्र्या वा कारयेद्देवं सो वारं ल
 स्यान्ति लक्ष्मीयुतं जगन्नाथं एजयेत् दासने बुधः भस्मणे अदनेः पुष्पे दीपनैवेद्ये स
 चयेः एवं संपूज्य विधिवद्वाज्रोजगाम् चरत् शोभतेः कृतमैत्रोयग्रहवैद्योग्रहान्म
 जेत मेजरो च यायोर्मित्रदेवत्यात्वा त होमं कुर्यात्तपनेन वायसेन विचक्षणः तिलज्येन
 यवैर्वा चैवापि सर्वाद्यापि स्वशक्तितः प्रष्टीतरसहस्रवारान् मष्टीतरनेवा प्रतद्विष्णु

रनेनैव इदं विस्मरनेवा ब्रतसंपूर्तिं सिध्यर्थं धेनुमेकां ययस्विनी पादुकोपान
 सौहृदं गुरवे व्यजनं तथा शय्यां सायस्करां दद्याद्दीपिकां दर्पणं तथा ब्राह्मणान्
 भोज्यं त्रिरात्रेभ्यो दद्यात्तदक्षिणं कलशान् जलसंपूर्णं सौभ्यो दद्यात्संध्यां
 वंक्तुं साधवस्य उद्यायनविधौ शुभे फलमाप्नोति सकलं विष्णुसायुज्यमाप्नुयात्
 एव वत्सरात्तौ तत्रैवोक्तं वैशाख्यां विधिना स्नात्वा भोजयेद्ब्राह्मणान् दश कुरारं सर्व
 पापेभ्यो मुच्यते नात्र संशय इति वैशाखशुद्ध तृतीयायां नक्षत्रे सायुर्वाङ्मया
 यो नीग्राद्या दिनद्वयोपेत्याप्तौ परैव तदुक्तं निर्णयामृतं नारदये वैशाखे शु
 क्लपक्षे तृतीया रोहिणीयुताङ्गुलीभाबुधवारं रासामेनापि युता तथा रोहि
 णीबुधयुक्तापि पूर्वविद्धा विवर्जिता भक्त्या कृतापि मां धातुपुण्यं हन्ति पुरा क
 तं ज्योतिर्विनायकोपेतारोहिणीबुधसंयुता विनापि रोहिणीयोगीश्वरकोटिप्र
 दासदेति इयं युगादिरपि सा चोक्ता रत्नमालायां माघे पंचदशी कृष्णानभस्ये च
 त्रयोदशी तृतीया माघे शुक्लानभस्ये ज्येष्ठ्यादय इति यत्तु गौडाः माघस्य
 पूर्णिमायां तु घोरं कलियुगं स्मृतमिति ब्रह्मकोर्वैशाखमासस्य च या तृतीया न
 वम्यसौ कार्तिकशुक्लपक्षे नभस्य मासस्य इति मिश्रपक्षे त्रयोदशी पंचदशी च

57A

माधेरतिविष्णुपुरणोचकारेण तमिष्यपदानुबन्धेनैषिपूर्वानुरोधात्परिणामा
 स्पेवज्ञेया द्वेष्टुक्ते इत्यादिकं तन्निर्मलमित्याहुः तनदर्शितमासस्यप्रवृत्तेरुप
 रंयुगमिति भविष्यविरोधात् एतेन ब्राह्मणानुसारात्परिणामायामेव युगादिश्रु
 त्वं ब्रह्मलयाणिः परास्तः तेन कल्पभेदात् युगभेदात् व्यवस्थेति तत्त्वं एतेन
 कार्तिकेन वमीशुक्लमाघमासे च पूर्णिमेति च हर्षादिदीप्यमानं निर्मल
 त्वेति नारदीयाज्ञानकृता अत्र श्राद्धमुक्ते मासेषु कृतं श्राद्धं विधानेन मन्वा
 दियुगादिषु हायनानि हि सप्तसंपिन्नां नृसिद्धं भवेदिति भारते पियामन्वा
 द्यायुगाद्याश्चतिययस्तुमानवः स्नात्वा च कृत्वा च जज्ञानं तफले लभेदिति श्राद्धे
 पि पूर्वाह्नापि नीग्राया पूर्वाह्ने तु सप्तकार्याः शुक्लौ मनुयुगादयः दैवे कर्मणि पि
 ज्येच कृष्णे चैवापराह्निके इति याज्ञोक्ते द्वेष्टुक्ते द्वेष्ट्या कृष्णे युगादीकवयो वि
 दुष्टुक्ते योवाह्निके ग्राये कृष्णे चैवापराह्निके इति हेमाद्रौ नारदीयच चनाच्च दी
 पिकापि अथो मन्वादियुगादिकर्म निययः पूर्वाह्निकाः स्युसिते चिन्नेया अथ
 राह्निकाश्च वदुल्लेखेति स्मृत्यर्थे सारेपि युगादिमन्वादिश्राद्धेषु शुक्लपक्षे उदयव्या
 पिनीति श्रिग्राया कृष्णपक्षे पराह्नेति च नृष्य व्यापिनीति दिवोदासीये गामिलः ।

नि.सिं.

५८

58

वैशाखस्य तृतीयांशः सर्वविद्वांसोऽपि वै हव्यं देवानां गृहं तिकव्यं च पितरस्तथेति
तेनेयं सर्वाङ्गमपि नो दिनद्वयेन त्वेयै वैति धर्मतत्त्वविदो हेमाद्र्यादयः अनन्तमद
स्तु वैधतिर्वीतीयातो पुगमन्यादयस्तथा सन्मुख उपवासं स्पृष्ट्वा नादावन्ति मा
स्तु ताश्च ददातादविति आहुसंग्रहः उपवासस्तु मेव भवति यत्तु मा कंडेयः मुक्त
पक्षस्य सर्वपक्षे आहुं कुर्याच्च द्विचक्षणाः कष्टमपक्षपराहे क्रिरोहितांतु न लेघयेत्
रोहिरो न वमो मुहूर्तः अत्र मुक्तपक्षे पुगादि आहुं सर्वाङ्गे कार्यमिति अलापा
णि पृथ्वी चंद्रो निर्गोपामतादयस्तु कालादरीं मा आहु मायरा द्विकमुक्ता रात्र
मन्वेतरादीनां विनिर्णयस्तु त्वा द्वे मुक्त इत्यादिवचने विधुसर्जादि विषयं
आहुत्वा पराद्विकोचति व्यवस्था मराडुः सेयं सर्वाङ्गानेकवचने धिराधान् सर्वाङ्गे
दैविकं कुर्यादित्यादिवचने नादेव सिद्धेर्वचने वैर्यार्थमात्रं स्वाधेयं विलसितमा
त्रमित्युपेक्षणीयं किंच कालादरीं तिन्यायमूलावचा मूलावा नायः पुगा
दि आहुस्यामा आहु विस्तृतत्वेन न्यायतो पराङ्गप्राप्तावपि वचने न तस्य बाधा
न नात्यः अतिदेशादेव पराङ्गप्राप्तेर्वचनवैयर्थ्यात् अप्राप्ते शास्त्रमर्थवदिति
न्यात् तेन यदि कालादरीं तः कथंचिद्वा ज्ञेयं न समाधित्वा तर्हि न्याय

ना

राम
५८

58A

प्राप्तकृष्णपक्षयुगादिविषयत्वेन सा व्यवस्था यतीयेति दिक् अत्र विरोधो हे
माद्रो भविष्ये वैराघेयस्य पक्षे तु तृतीयायां तथैव च गंगातोये नरः स्नात्वा मु
च्यते सर्वकिल्बिषैः तस्यां कार्यापवैर्होमो यदौर्विष्णुसमर्चयेत् यावन् दद्याद्विजा
निभ्यः प्रयत्नः प्राशयेद्यवानिति कल्पतरो यज्ञयेच्छंकरं गंगाकैलासं च हिमा
लयं भगीरथं च नृपतिं सगराणां सुरव वरुमिति अत्र दानविषेयस्तत्रैव भवि
ष्ये इमां प्राकृत्य उदकं भानुसकनकां सात्रां सवैरसौत्सह यवगाधमवणकान्
कुदध्यादनं तथा गोमिषकं सर्वमेवात्र सस्यदाने प्रशस्यते इति देवीपुराणे पि
तृतीयायां तु वैराघेरोक्षिण्यर्धे प्रसज्यत उदकं भूप्रदानेन शिबलोका महीयते
मंत्रस्त एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णुशिवात्मकः अस्य प्रदानात् त्र्यंशु पितरपि
पितामहाः गंधोदकतिलैर्मिश्रं सान्नं कुंभफलान्वितं पितृभ्यः संप्रदास्यामि
अक्षय्य उपतिष्ठत इति अत्र च पित्रहितं श्राद्धं कर्त्तव्यं अथ न हितये श्राद्धं वि
शुद्धं दत्तये तथा युगादिषु च सर्वासु धिं निर्वपणादृते इति हेमाद्रौ पुलास्त्य
वचनात् अत्र रात्रिभोजने प्रयश्चित् मृगविधाने रात्रौ भुक्तवत्सरे तु मन्वादिषु
युगादिषु अभिस्वहृष्टिं मंत्रं च जपेदरानपातक इति अपरार्कयमः कृतो
पवासाः सन्निलं धेयुगादिदिनेषु च दास्यं तन्नादिसं हितं तेषां लोकामहोदय इ

ति वैशारेवमलमासेसति तत्रैवयुगादिः कार्या तथाचहेमादौऋषिऋगः
 दशहरासुनोत्कर्षः अतश्चैपियुगादिव्युत्पाकमिति चोत्सर्गसतदिक्वृषा
 दितरिति एतद्वराहरादिकं ह्यवादि संक्रमे इयं कन्याचंद्रे हवे रवा चित्यादि ।
 नासो रमा सोक्तैरित्यर्थः कालादरीथिः प्रदोदकं भमन्वादि महलययुगादि
 धिति मलमासकर्तृव्येयुपरिगणनञ्च महालयराब्देन मघात्रयोदस्पृश्यते
 तिमाधवः स्मृतिचंद्रिकायां तु मासद्वये कर्तव्यमित्युक्तं यौगादिकं मासिकं
 च आर्द्रां चापर्याधिकं । मन्वादि कर्तव्यं कंच कुरुयां मासद्वये पिचेति अपरप
 भः कृष्णपक्षः नतमहालयः तस्य तत्र निश्चिधान् मदनरत्ने पिमरीचिः इति मास
 मृताहेच आर्द्रं यत्प्रतिवत्सरं मन्वादौ च युगादौ च तन्मासोऽभयोरपीति प्रतिव
 त्सरे क्रियमाणं कल्पादि आर्द्रमिति स एव व्याचरेद्यो अत्र आर्द्रा करणं प्रा
 यश्चित्तमुक्तमृगविधाने नयस्य धावामत्र च रातवारं तदा जयेत् युगादयो यदा
 न्यनाः कुरुते नैव चाधिय इति अत्र समुद्रे स्नानं प्रशस्तं तदुक्तं यद्ये चंद्रोदये
 सौरयुगादौ युगादौ तु नरः स्नात्वा विधिवत् वल्लोदधौ गोसहस्रप्रदानस्य कुरुते
 त्रेफलां हि यत् तत्फलं लभते मर्त्ये भूमिदानस्य च ध्रुवमिति अयं निर्णयः सर्व
 युगादिषु बोद्धव्यः इति युगादि निर्णयः इयमेव नृत्तीया परशुरामजयेती साध

राम
५६

59A

नैष व्यापिनी ग्राह्या तडक्तं भार्गवा च नदीपिकायां स्कादभविष्ययोः वैशा
खस्य सितेपक्षे नृतीयायां पुनर्वसो निरायाः प्रथमेयामेरा मारव्यः समक्षा हरिः
त्वाच्चगैः षडग्रहैर्दुक्ते मिथुने राहु संस्थिते रेणुकायास्तु योगार्भादवतीर्ण हरिः
स्वयमितिः दिनद्वयेतद्याप्ता चरातः समव्याप्तौ च पराऽग्रन्यथा पूर्वैव तडक्तं तत्र
राचभविष्यमुक्ता नृतीया वैशाखे वशुद्धो व्यादिनद्वये निरायां पूर्वयामे चेडन
रा मयत्र पूर्वकेति वैशाख वशुक्ल सप्तम्यां गंगोत्पत्ति तडक्तं पृथ्वी चंद्रोदये ब्राह्मे वैशा
ख वशुक्ल सप्तम्यां जह्नुना जाह्नवी पुरा क्रोधात्पीता पुनस्तपत्काकरा रंध्रात् दक्षिणा
त ततो तत्र प्रजयेद्देवी गंगा गङ्गान मेखला मिति अत्र शिष्याचारान्मध्याह्न्या यनी
ग्राह्यादिनद्वयेतद्याप्ता चरात वैशाखे कदेश व्याप्तौ वा पूर्वायुगमवाक्यात् अत्रैव
वैशाख वतार इत्युक्तं कल्पतरो अष्टाविंशति मे प्राप्ते विष्णुः कलियुगे सति दाक्षो
विनष्टधर्माश्च बुद्धो भूत्वा प्रवर्तयत् तत्र पूज्यो भविष्यो सौ पुण्याद्यैर्दिवसत्रयमि
ति वैशाख वशुक्ल द्वादश्यां योगविशेषो हेमाद्रौ ज्योतिः शास्त्रे पंचानतस्थो गुरुन
मिथुनौ मेघे राविः स्याद्यादिमुक्तपक्षे पाशाभिधानाकरभेरा पुक्ता निधिव्यती
पात इति ह योगः अस्मिन्सुगोभूमिहिरण्यवस्वदानेन सर्वपरिहाययापं सुरत्वं
मिंद्रत्वं मनामयात्वं मर्त्याधिपत्यं लभते मनव्या इति पंचाननेन सिंहः पाशाभिधा

नि.सिं.

६०

60

नातिथिद्वादशिकरभोदस्तः वैशाखशुक्लचतुर्दशीन्दसिंहजयंती साप्रदोषव्यापि
नीग्राह्या तदुक्तं हेमाद्रौ नृसिंघुराणे वैशाखशुक्लपक्षे तदुक्तं निशामुरवे मज्जन्मासं
भवं युग्यं व्रतयाप्यप्रसाशनं वर्षे वर्षे तदुक्तं मम संतुष्टिकारणमिति दिनद्वये
पितृह्या प्रावरातः समव्याप्तौ च पराविषमव्याप्तौ त्वधिकव्याप्तिमाती दिनद्वये व्यवा
प्तौ परापरदिने गौणकालव्याप्तेः सम्यात्सर्वदिने च तदभावात् युत ततो मध्यं न
वेलायां न घादौ विमले जले जलशुभ्यपक्रम्य परिधाय ततो वासा व्रतकर्मसमारम्भे
दिनि तत्रैवोक्तं तत्संकल्परूपव्रतौ पक्रमविषयं न चैतावता मध्याह्नव्यापि नीग्राह्ये
ति भूमितव्यो पूर्वोक्तवचनविरोधात् वैशाखस्य चतुर्दश्या सोमे वारे निलक्ष्णे के
श्वतारो नृसिंहस्य प्रदोषसमये द्विजा इति टोडुरा नंदे स्कांदात् कूर्मसिंहौ बोद्धव्यौ
तयोचसायमिति पूर्वोक्तपुराणसमुच्चयवचनाच्च इयमेव योगविरोधेणानि प्रसास्ता
तदुक्तं तत्रैव स्वातिनक्षत्रयोगे चरानिवारे तु मद्रुतं सिद्धियोगस्य संयोगे वरिजैक
रोगे तथा पूसां सोभाय योगे न लभ्यते देवयोगतः तथा एभिर्धनानि स्थानादिन्या
पनाशने तथा सर्वेषामेव वर्णामधिकारोऽस्ति वद्रुते मद्रुतैस्तु विरोधेण कर्तव्यं
सत्यरायणेः तथा सिंहः स्वर्गमयो देवो मम संतोषकारकः तथा विज्ञायमस्मिन्
यस्तुल्यं येषां पक्तं नरः सयाति नरकं यो रंयावच्चंद्रादिवाकरो इदं च संयोगात्

राम
६०

नि.सिं.
६१

61

नेयाः पांडुनेदन अत्र कृष्णजिनदानं कार्यं तथा च विष्णुः कृष्णजिनेति लान्त
कृष्णान्दिरायमधुसर्पिर्वी ददाति यस्तु विप्राय सर्वतरति डक्कतमिति ॥ ॥ इति
श्रीनारायणभट्टसुतरामकृष्णभट्टात्मजदिनकरभट्टानुजकमलाकरभट्टकृते नि
र्णयसिंधौ चैराखः मासः समाप्तः सप्तसंक्रांतो यत्वाः बोडराघटिकाः पुरायकालाः
रात्रौ संक्रमे सति प्रागेवोक्तं हमाद्रौ शिवरहस्यः विचित्रदारुपत्रस्थकं भेग्री चोशि
वोपरि मोचयेद्यः यथोधारं सत्रासं पदमृच्छति ज्येष्ठशुक्लतृतीयायोरंभावतमुक्तं
माधवीये भविष्ये भट्टकृष्णयज्ञेन रंभारं व्रतमुत्तमं ज्येष्ठशुक्लतृतीयायास्नानानिय
मततपरेति सायर्वविद्याग्राह्या हस्तया तथारंभासा विज्री वटपैतकी कृष्णायमी च भू
ताचकर्तव्या संमुखीति स्थिरिति स्कांदोक्तेः ज्येष्ठशुक्लदशमी दशहरा तदुक्तं हेमाद्रौ ब्रह्मे
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता हरते दरापापानि तस्माद्दशहरा स्मृतेति वारादि
मि दशमी शुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कृते हनि अवतीर्णयतः स्वर्गान् हस्तर्क्षे च सरिद्रा
हरते दरापापानि तस्माद्दशहरा स्मृतेति स्कांदे तु दरायोगो उक्तः यथा ज्येष्ठे मासि
सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्ते योः अतीपाते गगानंदे कं न्यां चंद्रे लवे रवौ दरायोगे नरः
साक्षात् सर्वपापैः प्रमुच्यते इति अत्र बुधः भौमयोः कल्पभेदेन व्यवस्था इयं च व
यत्रैव योगावाहुल्यं सैव ग्राह्या योगाधिक्ये फलाधिक्यात् ज्येष्ठे मलमसे स

राम
६१

61A

ति तत्रैव दशहरा कार्या न तत्र मुद्दे दशहरा सनोत्कर्षश्च तत्रैव विद्युगादि स्थितिरे
सादौ ऋष्यश्रंगोक्तैः तथा स्कंदे यांकांचित्सरितं प्राप्य दद्यादर्थतिलोदकं मुच्यते
दशभिः पापैः समस्तायातकोपमैः अत्र विशेषः कारीरं वडे ज्येष्ठे मासि सितेष दो
प्राप्य प्रतिपदं तिथिं दशममेधके स्नात्वा मुच्यते सर्वपातकैः एवं सर्वा सु तिथि
मुक्रमस्त्रायी नरोत्तमः अमुक्त पक्षदशमी प्रतिजन्माद्यमुत्सजेत तथा लिंगं दशा
श्रमेधे संदृष्ट्वा दशहरा तिथौ दशजन्मा जितैः पापैः स्वज्यते नात्र संशयः तथा भ
विष्योत्तर कारीरं वडयोः निरायां जागरं कृत्वा समुपेक्ष्य च भक्तिः पुण्ये र्गंधे
नैवेद्यैः फलेषु दश संख्यया तथा दीपैश्च तांबूलैः पूजयेच्च दद्यात्विनः स्नात्वा
भक्त्या तु जाह्नवां दशकृत्यो विधानतः दशप्रसूति कृत्वा श्रुतिलान् सपिंश्रवे ज
ले सक्तु पिंडान् गुडपिंडान् दद्याच्च दश संख्यया ततो गंगा तटे रम्ये हेम्वारुपेण वा त
था गंगायां प्रक्षतिमां कृत्वा वक्ष्यमाणं स्वरूपिणी संस्थाप्य पूजयेद्देवीं तथला
भेदतपि वा अथ तत्राप्य राक्तश्रेणि रवेत्येतेन वै भुवि वक्ष्यमाणेन मंत्रेण कुर्यात्
पूजां विशेषतः नारायणं महेशं च त्रस्ताणभस्करं तथ भगीरथं च नृपतिं हि
मवंतं नगेश्वरं गंधपुष्पादिभिः सम्यग्दद्यात् शक्तिपूजयेत् दशप्रस्थां स्तिलान्

62

दद्यात्तदशद्विप्रेभ्यएवच दशप्रस्थान् यवान् दद्यात्तदशसंख्यागवीस्तथा प्र
 स्थः षोडशपलानि पलं मुष्टिमात्रं पलं स्मृतमिति महार्णवे उक्तं मात्स्यकध
 मं उक्तमकारादिजले चरान् कारयित्वा यथा शक्तिस्त्वेतन्मरुजनेन वा तद्वत्
 भेषिष्टमयानभ्यर्च्य कृत्वा दिभिः गंगायां प्रक्षिपेदाज्यदीपांश्चैव प्रचादयेत् १
 पुण्याद्यैः पूजयेत् गंगामंत्रेणानेन भाक्तितः ॐ नमः शिवायै नारायणैये दशहरायै
 गंगायै नमो नमः इति मंत्रं तु यो मर्त्यो दिनेन तस्मिन् दिवा निरां जयेत्येव स हस्त्रा
 णि दशधर्मफलं लभेत् काराखिन्दे तन्मोमंत्र उक्तः नमः शिवायै प्रथमं नाराय
 णैये यदंततः दशहरायै यदमिति गंगाये मंत्र एवै स्वाहंतः प्राणवादिभ्रभवे द्विषा
 सोमनुः पूजादानं जयो ह्मो ने नैव मनना स्मृत इति अत्र गंगा स्तोत्रपाठमपि
 दशवारं कर्त्तव्यं तदुक्तं भविष्ये तस्यां दशपामे तच्च स्तोत्रं गंगाजले स्थितः यः प
 ठे दशकृत्वा सुदरिद्रो चापि चाक्षमः सोपतत्फलमाप्नोति गंगां संपूज्य यत्न
 तः इति स्तोत्रं च प्रतिपदादि दशमी पर्वतं दिनं तद्विंशत्यथा यठनीय
 मिति शिष्टाः अत्र सर्वोपि विस्तरः स्तोत्रादिच भट्टकृतत्रिस्थली सेतोरवधे
 ये विस्तरभीते स्तनलिरव्यते एवं कुर्यतः फलमुक्तं काराखिन्दे एवं कृत्वा

विधानेन विप्रश्नाद्यविवर्जितः उपवासी बभूव मातैर्दशपौत्रैः प्रमुच्य
 ते सर्वान् कामान् चाप्नोति प्रेत्य प्रसृज्य लीयते इति च अस्योक्तं वधरामेष्ट
 रस्य प्रतिष्ठा दिनत्वादिरोवेण सजाकोयो तडक्तं स्कांदे सेतुमाहात्म्ये ज्येष्ठे
 मासि सिते पक्षे दशम्या बुधहस्तयोः गगनं देवतीयाते कन्या चंद्रवर्षे रवौ द
 शयोगे सेतुमध्ये लिंगरूपधरहर रामो वै स्थापयामास रात्रि लिंगमनुत्तम
 ति इति दशहरा ज्येष्ठशुक्लैकादशी निज्जिला तव निज्जलमिषो व्यभिप्रेभ्यो
 जलकुंभान् दद्यादिति निर्णयाम्ते उक्तं मदनरत्ने स्कांदेपि ज्येष्ठे मासि नवम्येष्ट
 या शुक्लैकादशी शुभानिज्जलैः समुपेष्ट्या त्रजलकुंभान् सशर्करान् प्रदाय विप्रमुखे
 भ्ये मादते विष्णुसन्निधौ ज्येष्ठपौर्णमास्यां सावित्री व्रतं तडक्तं स्कांदविषययोः
 ज्येष्ठे मासि ते पक्षे द्वादश्या रजनी मुखे इत्युपक्रम्य व्रतं त्रिरात्रमुदिरया दिवा रात्रिस्थि
 राभवेदिति अंत्युपसंहृतं ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे पूर्णिमायां तथा व्रतं चीर्णपुरा महाभ
 त्प्राकथितं ते मयानुयेति दाक्षिणात्याश्चैतदेवाद्रियेते एतच्चामावास्यायाम्युक्तं
 निर्णयाम्ते भविष्ये प्रमायां च तथा ज्येष्ठे वटमले महासती त्रिरात्रोपोषिता नारी
 विधिना तेन यजयेत् मदनरत्ने त्विदं वाक्यं पंचदश्यां तथा ज्येष्ठे इति पठित्वा ज्येष्ठे
 पूर्णिमास्यामुक्तं तथा अशक्तौ तु त्रयोदश्यां नक्तं कुर्याज्जितेन्द्रियश्चापि चतु

६३

ईश्याममायोसमुपोषणमिति तत्रपाश्यात्याज्रादियंतेहेमाद्रिसमयोद्योतादिदुलभाद्
 यदपूर्णमायासक्तं तत्रनेदानीप्रचरति गौडास्तु मेवेवावृषभेवापिसावित्रीतांविनि
 र्दिशेत्तज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यासावित्रीमचयेति याः बटमूले सोपवासाः नतावेधव्यमाप्र
 यु रिति पाराशरोक्तेष्वनृदश्याप्रदोवेन्नतं दिनद्वयेतद्यासोपरैवेत्याहु तन्निर्मलं तत्र
 पूर्णिमामावास्ये पूर्वविद्धे ग्राह्ये भूतविद्वानकर्तव्याश्रमावास्याच पूर्णिमा वर्ज्ये
 त्यानरश्रेष्ठसावित्री व्रतमुत्तममिति ब्रह्मवेवर्तान् स्कां देयि भूतविद्वांसिनीवाली
 नतु तत्र व्रतं चरेत् वर्ज्येत्याह सावित्री व्रतं तदशिरिच बाहनेति मदनरत्ने ब्रह्मवे
 वर्ज्येति प्रतिपत्यं चमी भूतसावित्री बट पूर्णिमानवमी दशमी चैव नोपोष्याः परसंयु
 ता इति यदा त्वष्टादशघटिका चतुर्दशी तदा पराग्राह्या पूर्वविद्धेव सावित्री व्रते पंच
 ष्ठीति धिः नादोषादशभूतस्य स्पृष्टे तच्च परेद् नीतिभाधवः वस्तुतस्तु भूतो
 ष्ठादशनाडीभिर्द्वयं त्रुत्तरांति धिमित्यस्य व्रतांतरे सा च कल्याणविशेषतः
 प्रवृत्त पूर्वविद्धा विधाय वचनेन तस्य बाधा दष्टादशनाडीवेधेपि पूर्ववेत्ययं य
 या साधुः अत्र पौर्णिमानुरोधेनैव यथा त्रिरात्र संपत्तिर्भवति तथा त्रयोदश्यादि
 ग्राह्ये तस्याः प्रधानत्वात् अयं निर्णयो पौर्णिमायामपि ज्ञेयः पाराशरं त्रयोर्णिमांते
 कार्यं अत्र सूत्रे व्रतेषु विशेषः परिभाषामुक्तः अत्र विशेषो भविष्ये ॥ गृहीता

64

तेपत्तेद्वितीयायुष्यसंयुता तस्यां रये समारोप्य रामं मां वै भद्रया सह यात्रोत्सवं
प्रवर्त्य च प्रीणयेत् द्विजान् बहून् तथा ऋक्षाभावेति यो कार्यायात्रा सा प्रीतये मम
आद्यादमुक्तं दशमीयोर्गमासीच्च मन्वादिः सा च पूर्वाह्नायिनीति प्रागुक्तं आद्याद
मुक्तं द्वादश्यामनुराधायोगरहितायां पारणं कर्त्तव्यं तदुक्तं भविष्ये आभाकर्त्तुमि
तयक्षेत्रे मेत्रमवगारेवति संगमेन हि भोक्तव्यं द्वादश्यादशीदरेत् अस्यार्थः आ
द्यादभाद्रपदकार्तिकमुक्तं द्वादशीचनुराधामवगारेवती योगो पारणं न कुर्यात् इति
अत्र यद्यप्येतावदेवोक्तं तथाप्यनुराधाप्रथमपाद एव चतुर्थः तदुक्तं विष्णुधर्म
मैत्रादिपादे स्वपितीह विष्णुयोग्यात्यपादे प्रतिबोधमेति श्रुतेः समध्ये परिवर्तमेति
प्रबोधपरिवर्तनमेव चतुर्थमिति वक्तुं न शक्यं पर्यवचनमिदं चानिर्मुल एव अ
त्रैव विष्णुरयनोत्सव उक्तो हेमाद्रौ ज्ञाते राकादस्यां मुक्तायामाद्यादभगवान्
हरिः भुजंगरायने शोते कीर्णवर्दीरादौ राघवपथके आद्याद्या संविशे हरिः
मिद्रात्यजति कार्तिक्या तयोस्तं पूजयेत् सदा ब्रह्मत्यादिकं पापे क्षिप्रमेव व्यपोहति
हिंसात्मके स्तुतिं तस्य यज्ञैः कार्यं महात्मनः प्रस्थापेच्च प्रबोधे च सर्वजितो येन
केशवः दंडानंदे पि स्कादौ आद्यादमुक्तं द्वादश्यां कर्त्तव्यं तस्य मम होत्सवं
अथ द्वादश्याममुक्तः आभाकारितयक्षेत्रे मेत्रमवगारेवती आदिमध्याव

जले सदेति
कल्पतरौ य
मः

राम
६४

63A

बालकं पात्रे प्रस्थमात्रं युधिष्ठिर ततो वेश्मये पात्रे च सुयुग्मेन वेष्टिते सावित्री।
 प्रतिमां कुर्यात् सौवर्णी वापि सन्मयी साई सत्यवता साध्वी फलने वेष्टी पक्वेः र।
 जन्मा कंठस्त्रे सुश्रुभे कंकमके सरैः पूजयेदिति शेषः अ रजनी हरिद्रा कंठस्त्रे
 जं सौभाग्य तेनः सवित्र्या रमानकं वापि वाचयेत् तद्विज्ञे तमं राजो जोगां कृत्वा
 प्रभाते विमलेततः तामपि ब्राह्मणे दत्वा प्रणिपत्य क्षमाययेत् मंत्रस्तु सावित्रीये म
 या दत्ता सहस्रं नाम हसति ब्रह्मणः प्रीतानां ध्यायन् ब्राह्मण प्रतिगृह्यतां ब्रूते नानेन
 राजेन्द्र वैधकं नाश्रुयात्कचिदिति ज्येष्ठे योर्गमाया विरोधमादित्यपुराणे ज्येष्ठे।
 मासि तिलान् दद्यात् योर्गमास्या विरोधतः प्रश्नमेधस्य यत्पुण्यं तत्प्रप्नोति
 न संशयः विष्णुरपि ज्येष्ठे जोष्टा युता च स्य तस्या ह्यत्रोपानत्प्रदानेन नरो नराधि
 पत्यमाप्नोति इति हेमाद्रौ ज्योतिषे ऐन्दवः राशौ चैव प्रजापत्ये रचिस्तथा सर्गि
 मा ज्येष्ठमासस्य महाज्येष्ठे प्रकीर्तता इयं मन्वादि रापि साधोर्वाङ्मिकी ग्राह्या वि
 रोधस्तु चैत्रे उक्तः तथा परार्के वामनपुराणे उदकं भवुदानं च तालहृतं सच दनं
 विचिक्रमस्य प्रीत्यर्थं दातव्यं ज्येष्ठमासि ते इति इति भट्टकलाकरस्तोत्रे नीलीयु
 सिंधौ ज्येष्ठमासः मिथुन संक्रांतौ पराः खंड राघटिका पूज्य कालः राजोत्पत्ति
 वीर्यं प्राप्ताः उष्णकृत् द्वितीयाया रथोत्सवः तदुक्तं तिथितत्वे स्मृतेः प्राचाठस्य सि

64A

सनेषु प्रस्थापयन्ते नोत्सवाः तिरिस्वापो दिवो स्थानं संध्यायां परिवर्तने अन्यत्र
 यादयो जे पिद्वा दस्यामेव कारयेत् आभाकाद्येष्टु मासेष्टु मिधुने माधवस्य च द्वादशां
 अक्षयक्षेत्रे प्रस्थाप्य चर्तनोत्सवं इति भविष्योक्तेः द्वादश्यां संधिसमये नक्षत्राणां
 मसंभवे आभाकासितपक्षेष्टुरायनावर्तमादिकमिति वाराहोक्तेः द्वादश्यामि
 त्यत्रादिपाराणां होमाग्रं विवक्षते पाराणां हेमचरात्रघटादीन्वा दबन्तु इति रार्मर्च
 नचंद्रकोक्तेः अजेकदशी द्वादशयोर्देशभेदेन व्यवस्था इदं च मलमासेन कार्यं ईरा
 नस्य बलिर्विष्णोः रायनं परिवर्तनमिति कालादरी निवेधात् यदपि एकादश्यां तु
 गृहीयात्संक्रांतौ कर्कटस्य वा आषाढ्यां चानरो भक्ष्या चानुर्मास्य व्रतक्रियाभिः
 ति हेमाद्रौ ब्रह्मवैवर्ते तिदपि मलमासे सति द्रष्टव्यं मिधुनस्थे यदा मानुरमा वास्या
 द्वयं स्पृशेत् द्विराषाढः सविज्ञेयो विष्णुः स्वपतिकर्कटे इति तत्रैव मोहकलो
 तरोक्तेः तत्रैव चानुर्मास्य व्रतारंभ उक्ते भारते आषाढे तु सिते पक्षे एकाद
 श्यां यो धिनः चानुर्मास्य व्रतं कुर्याद्यत्किंचिन्नियमो नर इति तस्यानित्यत्वं तत्रैव
 कं वार्धिकाश्रतुरोमान्वाहयेत्कैचिनरः व्रते न नो चेदाप्नोति किल्बिषं वत्सरोद्भवं
 असंभवे तु लार्केपि कर्तव्यं तत्प्रयत्न इति अस्यारंभश्चक्रास्तादावधिकार्यः
 नरो रावं न मोह्यं चक्रगुर्वीनवातिथेः रवं इत्वं चिंतयेच्चादौ चानुर्मास्य चिधौ

न

६५
नि.सि०

65

नरइति हेमाद्रौ तद्वर्गादर्थोक्तेः इदं च द्वितीयाधारं भविष्यं पृथगारंभस्तु न भवत्ये
व आशौचमध्येपि द्वितीयाधारं भवति अशुचिर्वापि यदि वा पुमान् व्रतमेतन्न
नरः कृत्वा मय्यने सर्वपातकैरिति भार्गवाच्च न दीयिकायां स्कादोक्तेः आरधेस्
तर्कं न स्यादनारधेतुस्तत्कमिति विष्णुवचनाच्च यत्तु संक्रान्तं यद्यामासं देवेपि
ज्यैकर्मणि मलमासमशौचं च वर्जयेन्मतिमान्नरः इति हेमाद्रौ चतुर्मास्यव्रतप्रक
रणे भविष्यवचनं न तस्य चानुमंत्रणं मंत्रवदसं वक्तुं मध्ये यद्विहितं मिति तेयं मन्यथा
पि अस्य पूर्वोक्तस्य विवाहादेश्चातुर्मास्यव्रते कः प्रसंगप्रकरणनिविशयिवाप्रथ
मारंभविषयं तेयं केचित्तु प्रतिवर्षं चानुर्मास्यव्रतप्रयोगाणां भिन्नत्वादाशौचं द्वि
याते द्वितीयादिप्रयोगेन भवत्येवेत्याहुः तन्न प्रतिवर्षं च यः कुर्यादेवं वै संस्मरन्
हरिंदेहांतेति प्रदाप्तेन विमानेनार्कवर्चसा मोदते विष्णुलोके सो यावदाहूतसंस्त
वमिति हेमाद्रौ भविष्यवचनादित्यास्ताविस्तरः इदं च शिवभक्त्यादिभिरपि का
यै शिवे वा मन्त्रिसंयुक्तौ भानो वा गाणनायके कृत्वा व्रतस्य नियमं यथोक्तफ
लभाभवेदिति ब्रह्मवैवर्तते व्रतगृहणप्रकारस्तु हेमाद्रौ भविष्ये महाएजांत
तः कुर्यादेव देवस्य चक्रिणः जातीकुसुममालाभिर्मन्त्रेण तेन एजयेत् सुप्रेतव
पि जगतां यजगत्सु प्रभवेदिदं पुबुद्धेव विदुस्तेन पुस्तनो मे भवात्यत एमंतां पु

रास
६५

तिमा विष्णोः पूजयित्वा स्वयेनरः प्रभाषेताग्रतो विष्णोः कृतं जलिपुरस्तथा चतु
 रो वार्षिकान्मासान् देवस्योत्थापनावधि इमं करिष्ये नियमं निर्विधं कुरु मे च्युत
 इदं व्रतं मया देव गृहीतं पुरुतस्तवः निर्विधं सिद्धिमायात् प्रसादात्तव केशव गृहीते
 स्मिन्नुत्ते देवपंचत्वे यदि मे भवेत् तदा भवतु संपूर्णत्वत्प्रसादाज्ज्ञानार्द्धेन गृहीते स्मि
 न्नुत्ते देवपंचत्वे यदि मे भवेत् ततो भवतु संपूर्णत्वत्प्रसादाज्ज्ञानार्द्धेनेति तत्र भार्गवा
 चं न वदीयिकायां नृसिंहपरिचर्यायां च भविष्ये आवर्णे वर्ज्ये वाकं दधिभाद्रपदे
 तथा दुग्धमाश्रियुजे मासिकार्तिके द्विदलं त्यजेदिति स्कंदे पिचात् मास्यकल्पे चात्वा
 र्येता नित्याज्या निचतुराश्रमववर्तिनं प्रथमे मासिकर्तृमं नित्यं शाकव्रतं न
 रैद्वितीये मासिकर्तृमं दधि व्रतं मनुजं मं यद्यो व्रतेत तीये च तथैव चतुर्थे च पिनिशमया
 द्विदलं वद्वीजं च हंता कंच विवर्जयेत् नित्यान्येता निविषेद्रुद्रताम्या इर्मनी क्षिणाः
 जं वीरराजमाषाश्रमलकं रक्तमूलकं कृष्णं चैभ्यं च तस्मात्पेत्यजेदुधः तथा
 विशोषा द्वादशी धात्री कृष्णं इति तिणीत्यजेत् जीर्णधात्री फलं ग्राह्यं कथं चित्का
 यशोधनमिति तीर्थस्त्रीरव्यो स्कंदे वार्षिकं श्रुतं रोमासान् प्रसूते वै जनार्द्धेन मंचरव
 व्यादि रायनं वर्ज्येद्रुक्तिमान्नरः श्रुतं तो वर्ज्येद्रायासां ममधुपरोदनं यदो
 लं मूलकं चैव हंतो कंच न भक्षयेत् अभक्ष्यान् वर्ज्येद्रायासां ममधुपरोदनं यदो

नि.सिं.

६६

66

ये राजमावानकुलस्याप्रः प्राप्तां धान्यं च संत्यजेत् राकं दधियको मायान् प्रा
वणादिषु संत्यजेत् अत्र न्यजेदिति वर्ज्जनं संकल्प रूपः पृथुया सो ज्ञेयः
अतोपक्रमान् अत्र केचित् राकारं पत्रपुगपुष्पादित्यमरको रास्य राक
ते शिमनेनेति राक इति श्री रस्वामिनाम्नारमानात् व्यंजनमात्रस्य निषेधा
माचक्षते अत एव राकरावस्य पत्रादिदशविधराको योगरूढत्वात् योगा
श्चरुटेर्वलीयस्त्वास्तपादीनामपित्यागायनेषु तत्पुण्याचक्षते तेन मूलप
त्रकरीयग्रफलकांजधिरूढिकाः त्वक्कुष्ठं कवचं चेति राकं दशविधं
स्पृष्ट इति श्री रस्वामिनोक्तस्य राकनिषेध इति आधिरूढकं प्रकुरः चरु
तत्त तत्र तत्का लो इवाः राका वर्ज्जनीया प्रयत्नतः बहुवीर्जवीजे च बिका म
रिच वर्ज्जयेदिति भविष्य वचनात्तत्र तत्कालो न्यत्रानां दशविधराकानां नि
षेधः अत्र तत्कालो इव जातीयत्वं विवक्षितं तेनातयादिरोक्षितानां बर्वात्
इवानां अपि निषेधः अत्र तत्कालो इव त्वमात्रं विवक्षितं न तत्र तन्मात्रकालो
इव त्वंगोरवात् तेन अन्यकालो इवानां सर्वेषां निषेधः इति निष्कर्षः बहुवीर्ज
नित्यनेकवीजमिति केचित् इतरावयवापेक्षया बीजावयवायत्र बहुवस्तुदि

राम
६६

G6A

न्यन्ये अवीजं कंदलादि वस्तुनस्त्विदं महा निबंधे स्वभावान्निर्मलमेव आचार
 प्रदोषे हेता कंचकलिंगचविल्वौ दुवरभिः एतः उदरे यस्य जीर्णं तितस्य हूरते शूरिः
 तथा परार्थे देवलः ब्रह्मचर्यं तथा रौचं सत्यमामिषवर्जनं व्रतैश्चेतानि चत्वारि व
 रिष्वा नीति निष्कयः आमिषाणि बोक्तानि रामार्चनं चंद्रिकायां पर्यये प्राण्यगवृत्तिं च
 सांभुजं वीरं वीजपरकं अथ तृशिष्टमायादिपद्धिस्मोरनिवेदितां दग्धमन्त्रमस्तरचमा
 संकेयष्टधामिषं सव्यंततदेशलभ्यं सुप्ते देवे विवर्जयेत् पापे कार्त्तिक मस्तत्ते गोत्रा
 ग्रीमद्विषी दुग्धादन्यदुग्धादिचामिषं धान्ये मस्तरकाः प्रोक्ता अन्नं यथुचितं तथा द्विज
 क्रीतारसाः सर्वे लवणं भूमिजं तथा ताम्रपात्रस्थितं गव्यं जलं पल्लवं संस्थितं आत्मा
 र्यं याचितं चान्नमामिषं ततस्मृतं बुधैः तथा निष्ठावान् राजमाध्याश्रमस्तरं संधितार
 निच हेतकं चकलिंगं च सुप्ते देवे विवर्जयेत् संधितानि लवणं शाकादीनि तत्रैव वि
 छुधर्मे चतुर्थं यो ह मासेषु हविष्याशीनयापभाक् हविष्याणि तु यद्वा चंद्रोदये भ
 विष्ये हेमं तिकं स्विन्नं धान्यं मुद्राय वा स्तिलाः कस्तापकं गुनीवार वस्तुकं
 हिलमोचिका षष्टिका कालशकं च मूलकं केजुकं तरु कंदः संधवस्त
 सामुद्रगव्यं च दधिसर्पिं वीर्यं न हतसारं च पनसां स्थं मृदुरीतकी पिप्यली
 जीरकं चैव नागरं च तिलं तिणी कंदला लवलाधाजी फलान्यगुडं मैक्षवं अने

लीपचूला = ४

११
 अथ गतिः सिद्धयक निवृत्तिः = ४

= ४ = हेमंत भव्यं तं अग्निं धान्यं व्रीहयो हविष्यं सितकैः कृष्णैः निनिर्दिः अतएव उक्तं तिलयोः

67

लघुक्लेशमुनयोहविष्याणिप्रचक्षतेति मदनरत्नेवंसितमस्मिन्नमन्त्रार्कध्यानं
 तेडुलाः केसकेकेमुजाइतिप्राच्येषुप्रसिद्धः कंदः कालायस्तुसतीनकइत्यम
 रः वज्ररीतिप्रसिद्धं धान्यं अगस्त्यसंहितायां हैमंताछुक्तानालिकेफलंचैव
 कदलीलवलीतथा आम्रमामलकंचैवपनसंचहरीजकी ज्ञानंतरप्रशस्तच
 रुचिष्यमन्यतेबुधः अन्यमपि ज्ञानान्युक्तानि हेमाद्रौ भविष्ये स्त्रीवापनरोवा
 मङ्गलौ धर्मार्थसदृष्टतः गृहीयान्नियमानेनानन्दतथावनपूर्वकान् तेषां फ
 लानि वक्ष्यामि तत्कर्तृणां पृथक् पृथक् मधुस्वरो भवेद्राजा पुरुषो गडवज्जीना
 त्तैलस्य वज्जीनाद्राजसुंदरांगः प्रजायते योगाभ्यासी भवेद्यस्तु स ब्रह्मपदमा
 प्रयात् तौ वलवज्जीनाद्रोगीरक्तकंठप्रजायते घृतन्यागा चला वण्य सर्वस्तिग्ध
 तनुर्भवेत् शाकपक्षाशनाद्रोगी अप्यकादोमलो भवेत् भूमौ प्रस्तररायी च वि
 प्रो मुनिवरो भवेत् राकांतरो यवासान्नस्रलोके महीयते धारणा नखरो मंगा
 च गंगा स्नानफलं लभेत् मौनव्रती भवेद्यस्तु तस्याज्ञा सवलित भवेत् भूमौ
 भुङ्क्ते सदा यस्तु स पृथिव्याः पतिर्भवेत् प्रक्षिणा शतं यस्तु करोति स्तुति पाठ
 कः हंसयुक्तविमानेन सच विष्णु परं व्रजेत् प्रयाचितेन प्राप्नोति पुत्रान् धर्मी

राम
६७

67A

नरोवतः वदन्नुक्तलभोक्तायः कल्पस्यायीभवेद्विनि पर्णेषु योनरोभुक्ते
 कुरुसेत्रफलं लभेत् गुडावर्जिनरोदद्यात्तद्रुतेताम्रभाजनं सहिरांयनरः श्रे
 ष्ठलवणस्याय्ययंविधिः सुप्तेदेवेतुयोविष्टोः शिवरयां गणमर्चयेत् पंच
 वणैस्तु योनित्यं स्वस्तिकैः पञ्चकैस्तथा सयातिरुद्रलोकं हि गणपत्यमवाप्नु
 यात् अथोवांसमप्तोकात्रिकया दानानि नक्तैव सुयुगं एकांतरोपवासे गौः भू
 रायने राय्याषष्ठकालभोजने गौः त्रीहि गोधूमादित्या मेहै मत्रीद्यादि कृच्छ्रे
 गेयुगं शाकाशनै गौः यथोन्नते च मधुदाधिष्ठतन्नते सुवासौ गौश्च ब्रह्मचर्ये
 स्वर्णमूर्तिं तां लघ्नते वासौ युगं मोनेष्टतं कंभो वसुयुगं घंटा च देवाग्रं रंगमा
 लिकाकरणोधेनैर्हमप्यंच दीप्यन्नते दीपिका वासौ युगं च भूमिभोजने च पर्ण
 भाजने च कास्यापात्रं गौश्च चतुष्पदीये गोग्रासे च गो हव्ये प्रक्षिणा शनै
 वस्त्रं अनुक्तैः सुस्पर्णैः श्वेत्यादि हेमाद्रौ तेयं तथा भार्गवार्चनदीपिकायां पा
 पाशेषा यनी बोधिनी मध्ये रासी दूर्वाय मार्गिकैः भृंगराजेन देवास्तु नार्चयितुं क
 दाचन हेमाद्रौ पाशे आवादादि चतुर्मास्य नभ्यं वज्रं येन नरः समाप्तो च पुनर्दद्या
 त्तिहातैल युतं घटं आवादादि चतुर्मासान् वर्जयेन्नरवर्त्तनं संपत्ता कंगं जनं चै

नि.सिं.

६८

68

वमधुसर्पिर्घटाच्चित्तं कार्त्तिकपातत्पुनर्हंमंत्रास्मरणयनिवेदयेत् अन्यान्यपिकैरा
कर्त्तृनादिवर्जितसंकल्परूपाणि पृथ्वीचंद्रोपेत्यानि टोडरानंदे स्कांदे एकांतरेण
तरंवाकुर्यान्मासोपवासकं अर्चनं फलाहारं नक्तं व्रतमथापि वा अत्रैवं तत्प्रमुद्रा
धारणमुक्तं रामार्चनचंद्रिकायां भविष्ये शयन्याचैव बोधिन्याचक्रतीर्थे तथैव च शं
खचक्रविधानेन वद्विभक्तो भवेन्नरः इति अतस्तन्नेतदमो अश्नुत इति ऋग्वेदान्तरं
सहोवाच बाहव त्वयस्तस्मात्पुमानात्महिताय हरिं भजेत् स स्तोत्रमौलेर्वर्मा
एयमिना संदधत इति शतपथश्रुतेः पुनर्विद्योः अत्र च ज्ञेयं पुनर्मेजन्मांभोधी
तेर्ज्ञेयं चैव वृत्तिगोपाः मूलेवाहोर्दधत्येपुराणि लिङ्गान्यतेतन्नायुधान्यपर्यंत इति सा
मवेदान्तरं अग्निहोत्रं यथानित्यं वेदस्याध्ययनं यथा ब्राह्मणस्य तथैवेदं तत्प्रमुद्रा
दिधारणमिति यथा पुराणचैति ब्राह्मणः क्षत्रयो वैश्यः शूद्रो वा यदि चेत्तरः शंखच
क्रोच्चित्तं तत्तत्सुलसीमंजरीधरः गोपीचंदनलिप्तांगो दृष्टश्चेत्तदधं कृत इति कांशी
रं व्रजत तत्प्रकारमार्चनं रिंद्रिकातो रस्तु ज्ञेयः पृथ्वीचंद्रोयस्तु यस्तु संतप्तं
खादिलिङ्गाच्चिद्रुतनुर्नरः स सर्वपातनाभोगी चंद्रालेजन्मकोटिष्ठ द्विजंतु तम
शंखादिलिङ्गां कित्तंतनुर्नरः संभाष्य रौरवं याति यावदिंद्राश्चतुर्दशेति चतुर्नार
दयोक्ते स शंखचक्राधं कृतं च गीतं नृत्यादिकं तथा एकाज्जाते रयंधर्मे नृजा

राम

६८

68A

तस्याद्विजन्मनः शरंवचक्रं मदायस्तु कुर्यात्तप्तायसेनवा सप्तद्रवद्विः कार्यः स
 वस्मात्तद्विजकर्मणः यथास्मरानजंकाष्टमनर्हसर्वकर्मसु तथाचक्रं कितोविप्रः सर्व
 कर्मसु नार्हितः तथा शिवकेशवयोरंकान्मूलचक्रादिकान् द्विजः नधारयेत्तमनि
 मानवैदिकेवर्त्मनि स्थितः इति विद्याखलायनादिवचनात् ऋग्वेदादिश्रुती
 नामान्यार्थत्वात् अन्यश्रुतीनां वा सत्त्वात् चक्रादिधारणं ऋद्रविषयमित्युच्यते
 नृत्यं चोदरार्थं निषिद्धमिति श्रीधरस्वामी यद्यपि निषेधस्य प्राप्ति सायेदात्वा
 द्विधिविना च तदयोगादुपजीव्य विरोधेन तोयशौकरोतीति वद्विकल्पो युक्तस्त
 यापि एकजातेरयं धर्म इत्यनेन सामान्यवाक्यानामयसंस्कारात् द्विजातिनिषेधो
 नित्यानुवाद इति तदारायः अजशिष्टाचार एव संकटपाशिनः सरणसुरीरिति सं
 क्षेपः आवाढयोर्मास्यां कोकिलाव्रतमुक्तं हेमाद्रौ भविष्ये आवाढयोर्मास्या
 त्संध्याकाले ह्युपस्थिते संकल्पयेन्मासमेकं प्राचरणे प्रत्यहं स्नानं करि
 ष्ये नित्यताव्रतचर्चस्थितासती भोक्त्यामिनक्तं भूराय्या करिष्ये प्राणिनां दयामिति
 अस्य नक्तव्रतवान्सायाह्नापि नीग्राह्या अत्रैव शिवरायनोत्सव उक्तो हेमाद्रौ वाम
 नपुराणे चोर्मास्यामुमानाथः स्वयं चर्मसंस्तरे वैय्यचे जुटाभारं समुद्रध्यात्वा द्विबर्कमाण
 मदनरत्ने व्यवेष्ट्य प्रदोषव्यापिनी अत्रैव व्यासस्तज्जाता तत्र त्रिभूता चेत्परं वैति सखान्या

69

पद्धतो त्रिमुहूर्तौ ॥ अधिकं ग्राह्यं पर्वक्षौरप्रणामयोरिति वचनात् ॥ ११ ॥ इति रामक
 क्षमभदात्मनजदिनकरभदात्तजकमलाकरभदकते निर्णयसिंधौ आवाहमासः
 ॥ ११ ॥ कर्कसंक्रांतो पूर्वत्रिंशदंशः पुण्यकालः सूर्योदयोत्तरसंक्रमेत्तपरतएवपुण्यं ।
 राजौत्तनिशीत्यात्प्राक्परतश्चसंक्रमेपरार्कहेमाश्रनंतभदादिमते पूर्वोत्तरदिन
 योपंचनाश्रः पुण्यकालः धनुर्मीनावतिक्रम्यकन्याचमिषुनंतथा पूर्वापरवि
 भागेनरात्रौसंक्रमतेरविः दिनांतेपंचनाश्रस्ततसापुण्यतमाः स्मृताः उदयेषितथा
 पंचदैवेष्वेवकर्मणीतिस्कादोक्तैः पूर्वापरविभागेनेतिमकरकर्कभिन्नसंक्रां
 तिपरंवक्ष्यमाणवचोविरोधादित्युक्तं मदनरत्ने तेनायमर्थः राजौ पूर्वभागेमक
 रेउदयेपंचनाश्रः पुण्यारात्रावपरभागेकर्कसंक्रमेदिनांतेपंचनाश्रः पुण्यः
 विषुवतोपूर्वदिनेपंच परदिनेपंचेतिवाक्यात्तरानुरोधात् तेनहेमाद्रौमाधवयोः
 सर्ववचनानां चाविरोधः माधवमतेन शुद्धरात्रे तद्दृष्ट्वसंक्रांतो दाक्षिणायने
 पूर्वमेवदिनंग्राह्यं यावन्नोदयतेरविरिति सद्गगर्गोक्तैर्मिथुनात्कर्कसंक्रां
 तिर्द्यदित्यादंशुमालिनः प्रमातेवानिशीथेवातदापुण्यंत्तपूर्वतः इति भविष्योक्ते
 श्रुत्वादिनरात्रपुण्यं दाक्षिणायनात्तेन देवाद्रियते अत्ररात्रावपिज्ञानादिभवतीत्यु
 क्तं प्राक् अत्रदानोपवासादिपूर्वमुक्तं तथा कर्कक्षेरादिकर्तनं निविधं कर्कक्षेरादिक

राम
६५

69A

वापिकन्यायां कामुकेरवौ रोमरवंडंगहस्थस्य पितृनप्राशयते यमश्रुतिसमंतुवच
नात्पुक्तं जीवयितृक निर्णये गुरुभिः अथ नदीनां रजोदोषः हेमाद्रौ अत्रिः सिंहः
कर्कटयोर्मध्ये सर्वानघोरजस्वलाः नस्त्रानादीनि कर्माणि तासु कर्वातमन
वः इदं च इन्द्रनदीषु सिंहकर्कटयोर्मध्ये सर्वानघोरजस्वलाः तासु स्नानं न कर्वा
तवर्ज्यं यित्वा समुद्रगा इति व्याघ्रोक्तैः मानस्ये त्वगस्तपो दयावधित्वमुक्तं यावन्नोदेति
भगवान्दक्षिणाराविभूषणं तावद्भोजनं बहानघः करतोयाः प्रकीर्तिताः करतोयाः
अत्यतोयाः तथा कात्यायनः पाराशर्यमुपगच्छति ग्रीष्मे कसरितो भुवि तासु प्रा
प्तविनस्तापदसर्पेण दशवासरे इदं चापादि स्मृतिसंग्रहे धनुः सहस्राण्यष्टौ गति
र्थासां न विद्यते न तानदीराववहा गतास्ते परिकीर्तिताः महानदीषु न भविष्ये उक्तं
आदौ तु कर्कटे देवि महानघोरजस्वलाः त्रिदिने तु चतुर्थे हि सुखास्तु जाहि वीयथा
महानघश्चर्चसे गोदावरी भीमरथी तंगभद्रा च वेणुका तापी यथोष्मी विंध्यस्य
दक्षिणे तु प्रकीर्तिताः भागीरथी नर्मदा च यमुना च सरस्वती विशाका च विहस्ता च
विंध्यस्योत्तरतः स्थिताः द्वादशैता महानघो देवर्षिद्वेत्रसंभवाः मदनरत्ने पुराणात
रे महानघो देवका च कावेरी चंजरा तथा रजसा तु प्रदुष्टास्युः कर्कटो द्वौ अहं

नि.सिं.

७०

70

नृपकात्यायनः कर्कटादौ रजो दुष्टा गोमती वासरत्रयं चंद्रभागासती सिंधुः।
सरस्वतीर्मदा तथा इदं गंगा व्यति क्वचि खयं गंगा च यमुना चैव पूज्यतां सरस्व-
ती रजसानाभिभूयते ये चान्ये नदसंज्ञिकाः शोणसिंधुर्दिराया रम्यः कोकलो-
हि नद्यर्धराः शतदुश्चनदाः सप्त पावनाः परिकीर्तिता इति देवलोकेः यत्र प्रथमं
कर्कटे देवि त्र्यहं गंगारजस्वलेन्यादिव चनेन ज्जाह्वीभिन्नगोदावर्यादिगंगा
तीरे मिति मदनरत्ने अन्ये च तर्गता रजो विषयं गंगा धर्मद्वयः पुण्या यमुना
च सरस्वती ज्जंतरी तर्गता दोषाः सर्वा वस्थासु चामल इति निगमोक्तैः तीरे वासिनां
तर्गता दोषो नास्ति न तर्गता रजो वासिनामिति निगमोक्तैः रजो दुष्टमपि जलं गंगा ज-
लयोगे पावनं गंगा भसा समायोगात् दुष्टमप्युपावनमिति मात्स्योक्तैः नूतन-
कृपादौ त्रयो गया त्रयत्वः अजागावो माह्व्यश्चात्प्रणीचप्रस्तिका भस्मे
नैवोदकं चैव दशरात्रेण मृध्यतीति क्वचित्च दोषमाह व्याघ्रपादः अभावे कृपया
पीना मनसा धियो भूतं रजो दुष्टे पिययसि ग्रामभोगेन दुष्यति भोडास्त-
न्येनापि समुद्धत इति द्वितीयपादे पाठः तेनोद्धतेन दोषः तथा च तासु स्नानं
नेति प्रागुक्तमित्याह वसिष्ठोऽपि उपाकर्मणि चोत्सर्गेऽप्रेतस्नाने तथैव च चंद्रसूर्यग-
है चैव रजो दोषानविद्यते इत्यनेन विस्तरेण श्रावणं प्रोक्तं तृतीयामधुस्त्रवारव्याग-

राम

७०

70A
 श्रीरेषुप्रसिद्धा सापरयुताग्राह्येतिदिवोदासः श्रावणशुक्लचतुर्थीपूर्वयुता मातृवि
 श्वेगोश्वरश्चादिवचनात् श्रावणशुक्लपंचमी नागयज्ञोदयरेवेति सामान्यनि
 र्णये उक्तं चमत्कारचिंतमणौ पंचमीनागयज्ञायां कार्याषष्ठीसमन्यता तस्यां तु
 तुषिता नागाश्चरासचतुर्थिकेति श्रावणपंचमीशुक्लासंप्रोक्ता नागपंचमीतां परि
 त्यज्य पंचम्यशुक्लचतुर्थी सहिता इति मदनरत्ने मिधानाच्च तं त्रयरेवेति अत्र विशेषो हेमा
 दौ भविष्ये श्रावणे मासि पंचम्याशुक्लपक्षे नराधिप द्वारस्योभयतो लैरबागो मयेन
 विषो ल्लिगाः यजयेद्विधिवद्दीरदधिर्द्वौ कुरैः कुरैः गंधपुष्पोपहारैश्च वास्त्राणां
 चतुर्थ्यगैः येन स्यात् यजयेत्तीह नागान् भक्तिपुरःसराः न तेष्वां सर्ववीरभयं भवति क
 त्रचिदिति श्रावणशुक्लद्वादश्यां दधिघ्नं प्रागुक्तं तक्रादीनां च निषेधः तत्र दधिव्य
 वहारभावादिति वक्ष्यते अत्रैव विष्णोः पवित्रारोपणमुक्तं हेमाद्रौ विष्णुरहस्ये श्रा
 वणस्य सिते पक्षे कर्कटस्ये दिवा कुरैः द्वादश्यां वासुदेवाय पवित्रारोपणं स्मृतं
 द्वादश्यां श्रावणे वापि पंचम्या मथवा द्विज अनुकूलेषु कर्तव्यं पंचदश्या मथापि वे
 ति शिवेति तत्रैव कालोत्तरे श्रावाढांते चतुर्दश्यां नभस्य नभसोस्तथा अष्टम्यां
 च चतुर्दश्यां पक्षयोः सुभयोः समं प्रति अन्यदेवतानां तु वक्ष्यते अधिवासं तु दीपि
 कायां गोदोहं तत्काले पूर्वद्युर्वाधिः वासनमिति गौणं कालो रामार्चनं च

द्विकायां पवित्रारोपणं विद्या द्रव्येण न भवेद्यदि कार्त्तिके वधिः स्रज्जास्ते कर्त्तव्यमि
 तिनारदः हेमरौप्यताम्रभौमेः सूत्रैः कोशेययमजैः कुरौः कारौश्च कार्यासेव द्वाह
 तय कार्त्तिकेः शुभैः कृत्वा त्रिगुणं स्रजं त्रिगुणं कृत्य शोधयेत् तत्रोत्तमं पवित्रं तुष
 ष्या सहशतैस्त्रिभिः सप्तत्या सहितं द्वाभ्यां शताभ्यां मध्यमं स्रजं साशीतिनाशते नैव क
 निष्ठं तत्समाचरेत् साधारणं पवित्राणि त्रिभिः सूत्रैः समाचरेत् उत्तमं तशतं त्रिपंचा
 शतं त्रिपंचा मध्यमं कनिष्ठं त्रिपंचा त्रिपंचा त्रिपंचा त्रिपंचा त्रिपंचा त्रिपंचा त्रिपंचा त्रिपंचा
 दशोति च केचन चतुर्विंशतद्वादशाष्टावित्येके लुनयो विदुः हेमाद्रौ विष्णुरस्यैव त्वन्य
 योक्तं श्रद्धांतरशतं कुर्याच्चतुः पंचाशदेवता सप्तविंशतिरेवाथ ज्येष्ठे मध्यकनीयसं
 अधमं नाभिमात्रं स्यादुरुमात्रं द्वितीयकं प्रलंबतो जानुमात्रं प्रतिमायां निगद्यते शि
 वपवित्रं तु तत्रैव शौचागमे एकादशित्ययवा सूत्रैस्त्रिंशता वाष्टयुक्तया पंचाशता
 वा कर्त्तव्यं तु ल्यग्रं ग्रंथं तरालकं द्वादशांगुलमाना निव्यासादष्टांगुलानि च लिंगविस्तार
 रमानानि च तुरंगुलकानि चेति हेमाद्रौ कालोत्तरयुगधर्मे कृत्वा मणिमयं कार्यं जे
 तायां हेमसंभवपट्टजं हरे प्रोक्तं कार्या संतु कलोत्तरं अधिकारणे पित्रे च विष्णुर
 हस्ये ब्राह्मणः सत्रियो वैश्यस्तथा स्त्रीश्च द्रव्यं च स्वधर्मा विस्थित सर्वे भक्त्या कुर्युः
 पवित्रकं तथा श्रुतो देवेति मंत्रेण द्विजो विष्णो निवेदयेत् अद्भ्यस्तुल मजो वाये

नवापनयेद्वरिं एतच्च नित्यं न करोति विधानेन यवित्रोपयोगं तु यः तस्य सावत्सर
 तीक्ष्णानिः फलामृत्तिसत्तम तद्भक्तिं समाधुक्तै नरैर्विष्णुपरायणैः वर्धयेद्वर्धयेत्प्रकर्तुं
 यं यवित्रोपयोगं हरेति तत्रैवोक्तैः देवताविशेषेति यथोचितं त्रैव धनदम्भरमा
 गौरीगणेशः सोमराट्गुरुः भास्करश्चण्डिका वासुकिस्तथा र्वयः चक्रपाणि
 र्पुनर्गम्य शिवो ब्रह्म तथैव च प्रतिपत्प्रभृति त्वेता यज्ञास्तिथिषु देवताः यथोक्ताः
 मुक्तपक्षे तु तिथयः श्रावणस्य चेति तथा हेमाद्रौ कालोत्तरे चतुर्दश्या मथाष्टम्या
 सर्वसाधारणं तु तदिति तत्प्रकारस्तरामार्चनचंद्रिकायां ततस्तानि यवित्राणि
 वैष्णवे पटले पटले शुभे संस्थाय्य मुचिवसेण विधाय पुरतो न्यसेत् अरत्तिसंमितं
 वेणीकृत्य त्रयस्त्रिंशत्तु कुर्यात् क्रियालोपविधानार्थं यत्त्रयाविहितं प्रभो म
 येतत्क्रियते देवतवत्तु येषु यवित्रकं न मे विद्या भवेद्देवकुरुनायदयां मयि
 सर्वथा सर्वदा विष्णो मम त्वं परमां गतिः उपवासेन देवतां तोषयामि जगत्प
 ते कामजीवा दयो व्येते न मे स्पृष्टं तद्घातकाः प्रथमं भ्राते देवेश याच हरे
 शिक्कं दिनं तावद्द्रक्ष्यात्स्वया कार्या सर्वस्यास्य न मेोक्तते इति देवसंप्रार्थ्य कं
 न संस्थाय्य तत्र वंशपात्रे जं सावत्सरस्य यागस्य यविजीकराण्यभोः वि

नि.सिं.

७२

72

सुलोकायवित्राद्यमागधेदनमोक्तते अनेनमूलेनवाह्योत्तममध्यमकनिष्ठे
बुविष्मत्रसुद्रान्तत्वरजसमोसदेवत्रयंवनमालायांप्रकृतिचावाह्यत्रिभुपयात्र
स्मविष्मरुद्रानगंयिषुक्रियायोरुषीविराविजया इराअपराजिताः मनोन्मनीजयाभ
द्रोमुक्तिश्चेत्यावाह्यसंयज्य ॐ संवत्सरद्वताचीयाः संयर्गफलदोषियत् पवित्रारोयणा
येतात कुरुकंधरतेनमः विष्मतेजोद्वंरम्यं सर्वपातकनाशनं सर्वकामप्रदं देवतावा
जेधारयाम्यहमिति देवकरे मंगलस्तत्रं वधादेवं संयज्य निमंत्रयेत् आमंत्रितोसि
देवेश पुराणपुरुषोत्तम प्रातस्त्यापजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु केशव क्षीरोदधि
महानागशाय्यावस्थितविग्रह प्रातस्त्यापजयिष्यामि सान्निध्यं कुरु तेनमः २
निवेदयाम्यहंतुभ्यं प्रातरेतत्पवित्रकं सर्वथा सर्वदा विष्मो नमस्तेस्तु प्रसीदमेततः
पुष्पांजलिंदत्तारात्रो जागर्णं कर्ष्यादित्यधिवासने प्रातर्नित्यं यजोक्तत्वागंध
दूर्वाक्षतपुतपवित्रमादाये देवदेवनमस्तुभ्यं गृहाणेदं पवित्रिकं पवित्रो
करणायायवर्षयज्ञाफलप्रदं पवित्रकं कुरु दद्यात्तु यन्मया उक्तं ते कुरुते शुद्धो
भवाम्यहं देवत्यत्पुसादात्सुरिष्वर मूलसंयुटे तेनानेन दत्वांगदेवताभ्यो नान्ना
समर्थं महानैवेद्यं दत्तानीराज्यं मरिणविदुममालाभिरित्यादिभिर्दमनारो योक्तुम
जोः प्रार्थयित्वा गुरवे त्रासुरोभ्यं अदत्त्वा स्वयंधारयेत् तथा मांसं यक्षमहोरजं ।

राम
७२

72A

त्रिरात्रं धारयेत्तथा देवे तं स्रजं संदर्भं देशकालविषयकया अकरणेन तत्रैव पवि
 त्रारोपणं कालेन करोति कथंचन तदा युतं जयेन्मंत्रं स्तोत्रं वापि समाहितं इति युक्तं
 इति पवित्रारोपः आवाणमुक्तं चतुर्दशीसर्वयुताग्राह्या अत्र वक्तव्यो विशेषः चेत्त्र
 मूक्तं चतुर्दश्यामुक्तः अथोपाकर्म तत्र वह्वाणां प्रयोगपारिजीते रौनकः अथा
 आवाणो मासे अवगर्हयुते दिने आवाणं अवलोमासि पंचम्या हस्तसंयुते वसेदि
 दधातीत दुपाकर्म यथोदितं अध्यायोपाकृतिकुर्यात्तत्रोपासनवर्द्धनेति अत्रोपा
 र्णमास्यसंहारन्यायेन यजुर्वेदपरिति हेमाद्रिः अत्र हस्तयुता पंचम्युज्जोकारि
 कापि तन्मासे हस्तयुक्तायां पंचम्या वा तदिष्यत इति केवलं पंचम्या हस्तयुते न्यासि
 न दिने इति हेमाद्रिः उपासनवर्द्धने तु कर्मद्वयं इदं केचित्तो किकाग्रौ प्रकुर्व
 ते इति कारकोक्तलौ किकाग्निना विकल्पते तत्राद्यध्याये रत्नारच्च इति स्रजान्
 सशिव्यत्वेन दधिकारकस्याचार्याग्रौ नान्यस्याग्रावन्योऽज्जुयादिनि निषेधात्तौ
 किकराव तदभावे तु स्मार्त्त इति निगर्वः यद्यपि दीपिकायां वेदोपकृतिरोषधिप्र
 जनने पक्षे सिते आवणे इति मुक्तं पक्षे चि सर्वेषां मरुत्या कलत्वेनोक्तः ववभ्यमा
 णागार्धवचनेन दंदोगान्प्रतिविहितस्य तस्याचिरोधनः सर्वाश्रतिप्रक्षेप न

नि.सि.
७३

73

थापि श्रावणमाससंबंधस्य स्तत्रोक्तत्वात् कृष्णपक्षेऽपि कार्यमिति तद्वाः तथाच स
त्रं श्रुत्वा तो ध्यायोपाकरणमाश्रयिनां प्रदुर्भावे श्रावणेन श्रावणपंचम्या हस्तो न
वा श्रुत्वा श्रावणो मुख्याये गौणाः तस्यायम्यात् तस्या हर्षययोगे हेमाद्रौ व्यासः धनि
या संयुते कुर्यात् श्रावणं कर्म य इवेत तत्कर्म सफलं ते ये मया करणसंज्ञितं श्रावणे
न तयत्कर्म ह्युत्तराष्टादसंयुतं संवत्सरकृतो ध्यायस्तत्क्षणदेव नश्यतीति गार्ग्यो
पि उदयव्यापितित्वे च विष्णुर्ह्युदिकादयं तत्कर्म सफलं ते ये तस्य युगं पत्यनेन कर्त्त
मिति पूर्वेषु हस्तराष्टादयोगे परेषुः श्रावणभावे घटिकादयन्नेवापंचम्यादौ का
र्यं न तत्पूर्व विद्यायोगे संग्रहमात्रे श्रवणभावात् किंच परेषुः संग्रहात् स्पर्शे निश्चिद
पूर्वाग्रहणे किं मानं संग्रहवाक्यं श्रावणवाक्यं चेति चेत्तर्हि व्रीहवाक्यादशराफवा
क्याश्च मासमिष्टाणामप्युपादानं स्यादिति मरुतं निषेधानुप्रवेशानैरपेभ्यवाधात्
ति चेत् इहापि तत्प्राप्तेन सर्वा योदयिकं व्याख्यातं निषेधनप्रवेशोभयत्र तत्प
त्वात् श्रावणयुतदिने संक्रांत्यादौ त उपाकर्म न कुर्वेति क्रमात्सामर्थ्यजुर्विदः गृह
संक्रांतियुक्तैषु हस्तश्रावणपर्वविवृति हेमाद्रौ निषेधात् पंचम्यादयो ग्राह्या मदनरत्ने
पि यादिस्याच्च श्रावणं पर्वग्रहसंक्रांतिद्वयितं स्यादुपाकरणं श्रुत्वा पंचम्या श्रावणस्य
त स्मृतिमाहात्म्ये संक्रांतिग्रहणं वापि यदि पर्वणि जायते तन्मासे हस्तयुक्ता योप

राम
७३

74

राम
७४

74A

स्यात्तत्र मादौ चरुच परिशिष्टे अत्र व्योषधयस्तस्मिन्मासे न भवेति चेत् तदा भा
 ३ परे मासि श्रवणेन तदिव्यते इति तत्राप्यत्र मासे न कुर्यादेव तादृशं किमस्माच्च दत्ते
 इति सत्रात् बर्षे नैव भवेत्तर्हि कं एतच्च शुक्लास्तादावपि कार्यं उपाकर्मात् सत्त्वं च य
 विच दमनायेनामिति दमनारोपे निरिवतल च नात् नित्येनेमिन्नेके ज्येष्ठो मास यत्
 क्रियासु च उपाकर्माणि चोत्सर्गो ग्रहे वेधान विद्यते इति प्रयोगपारिजाते संग्रहात्कैः प
 र्वाणि ग्राहणे सति पूर्व विरात्रादिवेधाभावं प्रकृतिदं तेन पर्वणि ग्राहणे पिचतुर्द
 श्यां श्रवणे कार्यमिति हेमाद्रिः अन्ये प्रथमं भस्म न भवति गुरु भार्गवयोर्मिह्ये
 वालो वाचादुके पिवा नयाधिमास संसर्गमलमासादिषु दिने प्रथमोपाकृतिर्न स्यात्क
 तं कर्म विनाशकृदिति तत्रैव करण्योक्तैः अत्र प्रथमं भेदादि आद्यं कुर्यादिति नारा
 यणसूतो एतच्चाधिमासेन कार्यं उपाकर्मात्तयोत्सर्गः प्रसवाहोत्सवाष्टकाः मास
 ह्येष्टो परे कार्यं वज्रपित्वात्तयैतकमिति ज्योतिः पराशरोक्तैः उत्कर्षः कालस्यैष्टो स्या
 दुपाकर्मादिकर्मणि अभिषेकादि सदानां न तत्कर्म युगादि स्थिति कात्यायनो
 क्तैश्च यत्तु उपाकर्माणि चोत्सर्गो न दिष्टं साधादितम् इति अत्र व्यष्टं गवतस्तस्मात्
 गविष्यंते वा संसर्गो एवोक्तैः एतच्चापराह्णे कार्यं उपाकर्मापराह्णे स्यादुत्सर्गः प्रा
 तरेव त्विति अध्यायानो मृपा कर्म कुर्यात्कालोपराह्णे केतुविसर्गः स्यादिति चेद

विदो विडुरिति च हेमाद्रौ गौभिलोक्तेः वस्तुनस्तु भवेदुपाकृतिः योर्णिमास्यां पूर्वाङ्ग
 एवत्विति प्रचेतो वचनात्पूर्ववाक्यं सामगविशये तेयामपराङ्ग एवोक्ते रित्यपदं वक्ष्य
 ते दोषिकापि अस्य तु विधेः पूर्वाङ्गा कालः स्मृत इति याज्यवास्त्वं पर्वणि कुर्युः ।
 तच्चापस्तवैरोदयिकं ग्राह्यमन्यैस्तु पूर्वा पूर्वाप्योदयिके कुर्युः श्रावणं तेतिरीया
 काः वदुःचाः श्रावणे कुर्युर्ग्रहसंक्रान्तिवर्जिते इति गार्ग्योक्तेः संप्राप्तवान्श्रुतीर्ग
 स्मापवैण्योदयिके पुनः श्रुतो भूतदिने तस्मिन् नोपाकरणमिष्यत इति कालिकापुरा
 णे अथ चेदोषसंयुक्ते पर्वणि स्यादुपाक्रिया दुःखरो कामयग्रस्ताराद्ये तस्मिन् दिजा
 यप्रतिमदनरत्ने हेमाद्रौ गार्ग्येण दोषोक्तेः अत्र श्रिगाभदीये विशेषः श्रावणः श्राव
 णं पर्वसंगवस्य द्यदा भवेत् तदैवोदयिकं कार्यं नान्यदोदयिकं भवेत् परारारमाधवीये
 णि गार्ग्येः श्रावणी योर्णिमासीत् संगवात्परतो यदि तदैवोदयिकी ग्राह्या नान्या दो
 दयकी भवेत् कर्मकालमहाकालादरी निगमः श्रावण्या प्रोक्ष्य घावा प्रतिपत्तरा
 मरुर्नैकेः विडास्या खं दसां तत्रोपकर्मात्सर्जने भवेत् अत्र योर्णिमासीत् श्रावणं ह
 स्मयोरुपलः क्षणं तेन तावपि संगवस्य रौ उदये संगवस्य रौ श्रुतो यवैणि चार्कमे
 कुर्युर्न भस्त्रपाकर्म ऋग्यजुः सामगाः क्रमादिति पृथ्वी चंद्रः तेनोदयसंगवो भयव्यासि
 नीशुरव्यापरेभ्यः संगवाभावे पूर्वेषु तदयामावे चैके क सत्वे पूर्वेषु अतर्दरि वे

75A

धानियेधाविधात सामान्यवाक्यादौ दायिकी कर्म यथा प्रागात्मानपूर्वा संगवनि
मिन्नपूर्वविद्यापवादाभावात् नान्यदौ दायिकी तस्य पूर्वविद्यापरत्वाभावात् नेनभा
प्रादौकालांतरेस्यान्ननिधिदे नहीत्रीहलाभे निधिदुमाषग्रहणोयुक्तं अतए
व परेष्टुः संगवव्याप्तौ पूर्वविद्यानिधिदुः तदभावेन नेति मर्यादवस्थाप्य युक्ता
विधिवैषम्यात् आधनिषेधेपि तथापि तत्र पूर्वविद्यावचनसत्वे हि सा युज्यते ए
वं प्रवृत्तेऽपि ज्ञेयं विद्यचर्कघटकादयै मिति पूर्वोक्तविरोधात् नेन प्राशस्त्यमात्र
परतत्वेन वात्यायनादीनां नु दिनद्वये पूर्वाह्नव्याप्तौ एकदेशस्य र्शवा पूर्ववेति हे
मादिः यदापि प्रावणोदुर्गानवमो र्ध्वत्वेन वदुताशिनौ पूर्वविद्यापुक्ते व्यापि
वरात्रिर्वलेदिनमिति त्रसवैवर्ते तत्र त्रस्य पवित्रश्रवणा कर्मादिदेवकर्मविष
यमिति हेमादिः अतएव वचनात्कुलधर्मव्रतादावपि पूर्वैव मदनरत्नेष्वेवं
मनपारिजातोपि पूर्वविद्यायां प्रावण्यावाजसनेपि नामुपाकर्मेत्युक्तं मदनरत्ने
मुपर्वेणैषादके कर्तव्यः प्रावणं तैत्तिरीयका इति वक्तुं परिशिष्टाद्वक्तुं न्यतिकर्म
विधानार्थं प्रहर्तुं तैत्तिरीयकर्मविध्ययोगात् पूर्वोक्तकालिकापुराणादौ सामान्यत
मौदयकपर्वप्राप्तेस्तन्निषेधेन वक्तुं नानाश्रवणविधानां तैत्तिरीयकपद अनुवा
दत्वात् तस्य च प्राप्ताधीनत्वात् प्राप्तेऽप्यनुवर्तमानमात्रपरत्वात् सर्वयजुवेद्युपलक्षणा

र्थं अवयुक्त्यानुवादोक्तान्तविधायकं येनविशेषविधिनाउपसंहारः स्यात् अ
 नुवादत्वात्सुभरणानदोषः अन्यथा औदधिकपर्वविशिष्टोपाकर्मोद्देशेन क
 तंविधौकतविशिष्टेवा औदधिकपर्वविधौवाक्यभेदापत्तेः तस्मात्तैत्तिरीयकपदावे
 षभायासर्वपञ्चर्वेदिनामोदधिकमेवपर्वेत्पुक्तं तत्र नन्वावत्परिशिष्टेचकुचान्
 प्रत्येवविधिः धनिष्ठाप्रतिपत्तयुक्तंत्वाच्चरक्षसमन्वितमित्यादितदुदाहृतेएवय
 रिशिष्टेवेदान्तरधर्मविधिनादर्शनात् नान्यनुवादोपेकात्मिकापुराणाद्वदुचोदीना
 मन्वितदापत्तेः कुरुरित्यस्यविधित्वेनतस्यैवार्थवादत्वेनैतत्प्राप्तानुवादित्वाच्चन
 चतैत्तिरीयकाणागृहेनाधिरस्ति येनानुवादत्स्यात् नचवाक्यभेदः तैत्तिरीयकमात्र
 स्यकर्ममात्रस्यावीउदेश्यत्वायोगेनहविरातिरदृष्टवर्षब्राह्मणमुपनयीतेतिवच्च
 गत्याविशिष्टस्योद्देश्यत्वात् उद्देश्यविशेषलोहितिविशिष्टेवाक्यभेदोक्तविशिष्ट
 स्योद्देशेतिगणकादौप्रसिद्धं अन्यथोत्रादेवद्वयपदस्यैवविचक्षयस्याप्रवणस्य
 सर्वसाधारण्यपत्तेः तस्माद्देमाद्रिमतमेवयुक्तमितिदिक् इदंचशिष्यान्ध्यायय
 त आवसध्येऽग्नेः अन्नध्याययतोनाधिकारशक्तिवर्कः आवरायमधिगृहणादि
 उवाचांकात्तौयभिन्नैः प्रोक्ष्यपद्यांकार्येतैस्तुआवरायपंचम्या संक्रान्तिर्गृहणं
 वापिपोर्णमास्यायदाभवेत् उपाह्वतिस्तुपंचम्याकार्यावाजसनेधिभिरिति

स्मृतिमहर्षिर्वेवाजसनेपिग्रहणादिति हेमाद्रिः यत्रवौधायनः श्रावण्यो
 पौर्णमासाद्यावोषाहृत्येत्येवेतयोश्च ग्रामपिदोषेऽप्याद्याकार्यमित्येवमर्थ
 तच्छास्त्रीयविषयं वा सामगास्तुर्गोहस्तिकुर्षुः वहुचाः अचणोचैवहस्त
 र्हेसामवेदिन इति निर्णयमते गोभिलोक्तैः सोऽप्युत्तरः धनिष्ठाप्रतिपद्युक्तं
 त्याष्टश्रद्धासमन्वितं श्रावणं कर्म कुरुर्वीरनृजग्यजुः सामयाठका इ
 तिमदनरत्नैः परिशिष्टोक्तैः गाग्येपि सिंहेरवोत्तुष्ट्यर्क्षेयर्वाह्विचरेद्वहिः
 दोगामिलिताः कर्षुस्तर्गः स्वस्वधंदसां श्रुतपक्षेन हस्तेन उपाकर्मपरिष्कार
 मिति मुष्ट्यर्क्षेयर्वाह्वे उत्तर्गः अपराह्णिकमुपाकर्मत्यन्त्रयः अत्यस्तविशेषः प
 र्चमेवोक्तः प्रयोगपारिजाते गोभिलः उपाकर्मोत्सर्जनं च वनस्थानामवीक्ष्य
 ते साधारणध्वपनां गत्वा तद्वह्निं ब्रह्मचारिणं उत्सर्जनं च वेदानामुपाक
 रणकर्म च श्रुत्वा वेदजपेन फलं नाप्नोति मानवः सर्वपालोपेतस्तु पुः उप
 वासश्च वेदोदितानां नित्यानामिति मनुनाभोजनोक्तैः एवमुत्सर्गेपि अ
 यप्रसंगदत्रैवोत्सर्जनमुच्यते तच्च पौषमासे रोहिण्या तत्कृष्णाम्यावा
 कार्यं पौषमासस्य रोहिण्या मषकायामयाधिवा जलांते दंदसां कुर्यादुह

न विधिना दक्षिरिति प्राज्ञवत्क्योक्तेः आवर्ण्योष्यपद्यां चोपाकृतोक्तमे
 ण्योष्यमुक्तप्रतिपदिमाघमुक्तप्रतिपदिवा कार्यं अर्धपंचमान्मासान
 धीयोतेतितेनैकोक्तेः यत्तु हारीतः अर्धपंचमान्मासानधीत्योर्ध्वमुत्सृजेत्
 पंचार्धषष्ठान्वेति तदा घृण्यकर्मविषयं यौधायनस्तु योष्यां माघ्यावाक्यं
 योष्यां माघ्यां चोत्सृजेदिति तत्संज्ञात् तैत्तिरीयेस्तु योष्यां कार्यं योष्यां योर्णमा
 स्यां रोहिण्यां चोत्सृजेदिति तत्संज्ञात् बहुचैस्तु माघ्यां कार्यं अध्यायोत्सृज्य
 नं माघ्यां योर्णमास्यां विधीयते इति कारिकायां कतेः कान्तीयास्तु भाद्रपदे कुर्युः उत्स
 र्गश्चेति तदा तिष्यातिष्यां योष्यपदे पिवेति कात्यायनोक्तेः सामगास्तु सिद्धार्कं यु
 स्ये कुर्युः तथा च सिंहरे वौचितिगार्ग्यवचनं पूर्वमुक्तं सर्वेषु याकर्मदिने वा
 कार्यं युष्येत्संज्ञं न कुर्यादुपाकर्मदिने यवेति हेमाद्रौ खादिरगद्योक्तेः
 यदा सिंहस्तु सूर्ये सति तन्मध्यस्थस्तनक्षत्रात्पाक्युष्यः कर्कस्थो भवति त
 दा तस्मिन् युष्ये उत्सर्गं कृत्वा तदुत्तरहस्तोत्पाकर्म सामगाः कुर्युः मासे योष्यपदे ह
 स्तात्पुष्यः पूर्वो भवेद्यदा तदा च आवर्ण्य कुर्यादुत्सर्गं धंदसां द्विज इति तत्रैव
 परिशिष्टोक्तेः अत्र द्वाचपि सौरमासौ ज्ञेयो तेषां सौरस्येवोक्तेः अत्र विशेष

माह कस्माजिनिः उपाकर्मणि चोत्सर्गे यथा का संसमेत्य च ऋषी न दर्भमया
 न कृत्वा पूजयेत्तर्पयेत्तत इति उपाकर्मणि पुत्सर्गे च त्रिरात्रं पाक्षिणीमहोरात्रं वा
 नध्याय इति मित्ताक्षरा मुक्तं अत्र नदीनारजो दोषो नास्ति उपाकर्मणि चोत्सर्गे
 जो दोषो न विद्यते इति गार्ज्या क्तेरिति अत्रैव रक्षाबंधं मुक्तं हेमाद्रौ भविष्ये न ४
 ततोऽपराह समये राक्षसो दलिकां प्रभं कारयेदक्षतेः राक्षेः सिद्धार्थे हेमभूषि
 तैरिति अत्रोपाकर्मनतर्पस्य पूरति निया वार्थिकस्यानुवादेन तु विधिः गोर
 वात्प्रयोगविधिभेदेन क्रमायोगात्तद्धूद्रादौ तदयोगाच्च तेन परेष्टु रूपाकार
 णोपि सर्वेष्टु रपराक्तेन तत्कराणां सिद्धं इदं भद्रायां न कार्यं भद्रायां देन कर्त्तव्ये
 प्रावर्णीकाल उनीतया प्रावर्णीन परिहंति ग्रामं दहति फालुनीति संग्रहे
 क्तैः तत्संवेत्तु रात्रावपि तदंते कर्त्तव्ये इति निर्णयाम्ते मंत्रस्तु येन बद्धो वलीरा
 जादानवेद्रो महाचलः तेन त्वामपि बध्नामिरभेमाचलमाचल ॥ ब्रह्मरौः क्षत्रि
 ये वैश्येः शूद्रे बून्येऽश्वमानवेः कर्त्तव्यो रक्षिका चोरो द्विजान्संपृज्य राक्षित इति अ
 त्रैव हयग्रीवोत्पतिः तदुक्तं कल्पतरौ प्रावर्ण्या प्रवणो जातः पूर्वहयशिरा हरिः
 जगात्सामवेदं तु सर्वकल्मषनाशनं स्वात्वा संपूजयेत्तु पांशुचक्रगदाधरं कर्म्म

नि.सिं.

७८

78

अत्रास्त्वनायनेन प्रवर्णकर्मोक्तं आचरणं पौर्णिमास्थं अवर्णकर्मोति तत्रा
स्तमययोगिनीगत्या अस्तमिते स्थालीपाकं अयथित्वे तिस्रज्जातं पुनरावनिरी
दरीप्रयोगात्तः पातनियमानंदगैः प्रसंगासिद्धिरुक्ताद्यादौ अन्यथापरेषु प्राप्नोक्तः प्र
संगः प्रसंगस्य यत्तत्कासु पौर्णिमादरीशब्दयोः पौर्णिमाकाणवदहोरात्रवाचितान्
त्रैवकर्मकालव्याप्तिग्राहेति विवृणुतित्वाद्येवपर्वेधंति आवर्णदिमासचतुर्थे
यत्तदंघ्रभद्वितीयासु अन्यमन्यरायनसु तत्र चंद्रोद्यव्यापिनी दिनद्वयेन
त्वैपरेति निर्णयामते इति श्रीमीमांसकचरणकथामभट्टात्मजकमलाकरभा
स्वतनो निर्णयसिद्धौ आवर्णमासः ॥ ॥ सिद्धेपराः बोधराघटिकाः पुराणकालः
अन्यत्सर्ववत् अत्र गोप्रसवेऽकृतसागरेनारदः भानोऽसिद्धगते चैव यस्य
जोः संप्रसूयते मरणं न स्थानिर्दिष्टं यद्भिर्मासे न संशयः तत्र शांतिप्रवक्ष्यामि
येन संप्रसूयते शुभं प्रसूता तत्र क्षणादेव तां गां विप्राय दापयेत् ततो होमं प्रकुर्वी
त घृताक्तै रजसर्षपैः प्राकुतीनां घृताक्तानामयुतं जुहुयात्ततः व्याहृतिमि
श्रायं होमः सोयवासः प्रयत्नेन दद्याद्विप्राय दक्षिणामिति तथा सिद्धराशौ गते
सूर्ये गोप्रसूतिर्विदामवेत् पौषे च मह्योस्सतेऽद्वैवाश्नतरीतथा तदानीं
भव्येता किंचित्तत्त्वात्पे शांतिकंचरेत् अस्य वामेति सूक्तेन तद्विहोमिति

राम
७८

78A

मंत्रतः जुहुपाद्यति लाज्येन शतमष्टौ नराधिकं मत्स्यं जयविधानेन जुहुमाचत
 पायुतं श्रीसक्तेन ततः स्त्रायाच्छानिस्तुतेन वायुनः मध्यरात्रे निरीये वा यदागोः
 क्रंदिने सदा गामे वा स्वर्गदेवापिरांति कं पूर्ववदिशेत् एवं श्रावणे वडवाप्र
 सवोदिने निषिद्धः तडक्तमयर्ववेदिनां गार्ग्यपरिशिष्टे माघे षष्ठे च महिषी श्रा
 वणे वडवादिवा सिंहे गावः प्रसूयंते स्वामिनो मृत्युदायका अत्र तडक्ताः मृता
 रव्यां शांतिः कार्याः भाद्रकृष्णतृतीया कज्जली संज्ञा सा पराग्रहेति दिवोदासीये
 ष्यक्तं वचनं तद्वरितालिका प्रकरणे वक्ष्यमः भाद्रकृष्णचतुर्दशी वङ्गलारव्या म
 ध्यदेशे प्रसिद्धा सा साया ह्रस्वापिनी ग्राह्या दिनद्वये तत्पर्वगा ग्राह्या गौर्याः च
 तृतीया वदधे नृपजा दुर्गा च नंदुर्भरहो लिके च चतसस्य पूजा शिवरात्रिरेता परा
 च्विताद्यंति नृपसराष्ट्रमिति दिवोदासीये वचनात् अत्र वत्सपूजायाः पृथ
 ग्गयादानाद्धे नृपजा राद्येन वङ्गलारव्या गृह्यतेति स एव व्याचरत्यो मदनार
 येवं अत्र गे पूजाया च नारायणं च तत्रैवोक्तं भाद्रकृष्ण षष्ठी दलषष्ठी सा
 सप्तमी च तेति दिवोदासः भाद्रकृष्ण सप्तम्यां शीतला व्रतं तत्र पूर्वग्राह्येति
 हेमाद्रौ अथ जन्माष्टमी सा च कृष्णादिमासेन भाद्रपद कृष्णमाष्टमी तथा भा

इयदे मासि कृष्ण षष्ठ्यां कालो युगे अष्टविंशतिमे जातः कृष्णो सो देवकी सुतर
 ति कल्पतरो ब्रह्मोक्तेः अत्रेदं माधवमत अष्टमी द्वेधा जन्माष्टमी जयंती चेति
 अत्राद्या केवलाष्टमी येन कुर्वति जानेतः कृष्णजन्माष्टमी जन्ते ते भवन्ति न
 राः प्राज्ञा व्याला व्याघ्राश्च कानने इति स्कां दत्त दिवा वा यदिवारा जौ नास्ति चेद्दोहि
 रणी कलारा त्रियुक्तां प्रकुर्वीत विशेषेण उ संयुता मिति पुराणांतरात् प्रावणेव
 म्लैयसो कृष्णजन्माष्टमी जन्ते न करोति नरो यस्तु भवति क्रूरराक्षस इति भविष्यो
 क्ते अत्र केवलाष्टम्या एवोपोष्यत्वा गतेः सैव रोहिणी युक्ता जयंती कृष्णाष्टम्या भ
 वेद्यत्र कले कारो हिणीय दि जयती नाम सा प्रोक्ता उपोष्या सा प्रयत्नतः इति वद्वि
 पुराणाच्च अष्टमी कृष्णस्य रोहिणी अक्षसंयुता भवेत्प्रोष्य दे मासि जयंती
 नाम सा स्मृतेति विष्णुरहस्यादिवचनाच्च ज्योतिरादित्यवत्संज्ञया कर्मभेदः रो
 हिणी योगश्राहोरात्रे मुख्यः निशीथमात्रे मध्यमध्यमः दिवसाद्वावधमः असा
 रात्रे तयोर्योगो माससंयुक्तो भवद्यपि मूर्तं मास्यहोरात्रे योगश्चेत्तामुपोष्ये
 दिति वसीष्टसंहितोक्तेः अर्धरात्रे तयोर्गोपे नारायण्युदये सति नियतात्मा
 अचिन्तातः पूजानत्र प्रवर्तयेदिति विष्णुधर्मोक्तेः वासरेवा निरायां वाय

ब्रह्मत्याघिरोदिणी विरोधेन न भामासेसेवोयोव्यामनीधिभिरिति पुराणा
 नराच विरोधेन त्वश्रुतेः भाद्रपदे पीदं श्रावणेन न भस्येवेति वक्ष्यमाणत्वं
 गौडास्तु निरीथरावरोद्गोणीयोगे जयंती नान्यथेभ्याम् तत्र वंसरेवानिरायो
 वेति विरोधान्न योगविशेषाद्गुणात्कलमित्यन्ये ज्ञेयाकरणे दोषश्रुतेरुपेक्ष्यः तत्र
 जन्माष्टमी व्रते ये वै प्रकुर्वन्ति तं पूर्वोक्तवचनेषु श्रुकरणे निदाश्रुतेः वर्षे वर्षे तु या
 नारी कृष्णजन्माष्टमी व्रते न करोति महाप्राज्ञवाली भवति कानने इति स्कां देवी
 साश्रुतेः न करोति नरो यत्त्विति पूर्वोक्तं रजस्वीलिंगमतेन मदनरत्नस्कादे
 त्वत्र फलमप्युक्तं जन्माष्टमी व्रते ये वै प्रकुर्वन्ति नरोत्तमः कारणेन पथवा लोका
 न् लक्ष्मीस्तैः सदा स्थिरा सिध्यति सर्वकार्यणि कृते जन्माष्टमी व्रते इति जयं
 ती व्रते तु नित्यकाम्यं महाजयाये कृत्वा जयेती मुक्तये न घ धर्ममर्थं च कर्म
 च मोक्षं च मुनिपुंगव ददाति वांछितानर्थान् ये चान्येष्यति दुर्लभा इति स्कां
 दादौ फलश्रुतेः श्रुद्धान्नेन तु यस्यापे रावहस्तस्थभोजने तत्पापे लभने कृति
 जयंती विमुखो नरः न करोति यदा विघ्नोः जयंती संभवं व्रतं य मस्य वशमायं
 न्नः सहते नारकी व्यथा मित्यकरणे निदाश्रुतेः यदा च सर्वेषु परेषु चोरो

80

हि एरीयोगस्तदाजन्माष्टमीजयंत्यामेतर्भूताज्ञेयानतुजन्माष्टमीव्रतेप्रयक्
 कार्येविष्णुश्चरवलचनतडुक्तेमाधवेनैवयस्मिन्चैवजयंत्यारव्येयोगोजन्मा
 ष्टमीतदाअंतर्भूताजयंत्यास्यातदक्षयोगप्रशास्यतइतिमदनरत्ननिरीया
 मृतगौडमेधिलमतेय्येवंकेचतुरोहिणीसंयुतौयोव्यासर्वाघौघविनोशि
 नीअर्धरात्रादधौर्धाकालयावायदाभवेत्जयंतीनासाप्राक्तासर्वयापप्र
 नारिनीत्यगितपुराणादधरात्रेएवरोहिणीयोगस्यप्राशस्त्यात्मुहूर्तमधिल
 म्येतेत्यादीनांचार्धरात्रयोगेषुपपत्तेर्नजयंतीव्रतेभिन्नमित्याहुःतत्त्वतुह
 माद्रिमतेपिजयंतीव्रतेभिन्नमेवउदयेचाष्टमीत्यस्यतेनजयंतीपरत्वोक्तेःकिंचरा
 हिएयामर्धरात्रेक्षयदाक्षमाष्टमीभवेत्तस्यामम्यर्चनशोरेर्हतिपापंविजन्मजमि
 ति विष्णुधर्मोक्तेःसमायोगेत्तरोहिण्यानिशीघेराजसप्तमसमजायतगोविंदोवा
 लरूपीचतुर्भुजःतस्मान्नंभजयेत्तत्रयथाविज्ञानस्तपतःइतिचक्रिपुराणाच्चाहु
 रात्रस्यकर्मकालत्वमवसीयतेअतःकर्मयोगस्ययःकालःइत्यादिवचनात्पूर्व
 वैवप्राप्तेःपरादिनेसतौपिरोहिणीयोगस्यनप्रयोजकत्वंअन्यथानुध्वारादेर
 पितत्वायतेःकिंचजयंतीशब्दोरात्रिविशेषवचनःअभिजिज्ञामनभवेजय
 तीनामशर्वरीमुहूर्तोविजयोमामयत्रयातोजनार्दनइतिब्रह्मांडपुराणात्ते

ननुद्योगिरोहिण्यांगोरात्वात्रतभेदः यत्तुवासरेवानिशायांवेतितत्वेसुतिक
 न्यायेननिशीथयोगस्येवस्तत्पर्यएवदिनेर्दरात्रयोगाभावेवाप्रशस्यार्थमित्या
 दुः अन्येनयद्यपिदिवावायदिवारजोनास्तिचेद्रोहिणीकला रात्रियुक्ताप्रकुर्वी
 तविशेषेदुसंयुतामित्यनेन रोहिणीयोगाभावेअर्धरात्रव्याप्तेर्ग्राह्यतोक्ता तथापि
 चास्मिन्वर्षेजयंतीयोगोनास्तिनत्रजयंतीव्रतलापेप्राप्तेष्टमीमात्रेपिजयंतीव्रतका
 र्यमित्येवंपरमिदमिति तदाशयः अत्रहिसजायार्थविश्रुतितायजेत एवामसं
 भवेकुर्यादिष्टिं वैश्वानरीद्विजइतिवद्रोहिणीयोगाभावेविधानात्तत्कार्यापत्तिः
 स्फुटैवअतएवेतौ जयंतीनामशर्करीति यच्चस्कंदे उदयेचाष्टमीकिंचितनवमी
 सकलापदि भवेच्चबुधसंयुक्ताप्राजायत्यर्क्षसंयुता अथिवर्षरातेनापिलभ्यते
 वाथवानवेति यच्चयादौ प्रेतयोनिगतानांनुप्रेतत्वेनाशितनुतेः येः कृताश्रावणे
 मासिअष्टमीरोहिणीयुताकिंपुनर्वध्वारेण सोमेनापिविशेषतः किंपुनर्नवमीपु
 त्ताकुलकोट्यस्तमुक्तिदेति तद्वानादिविषये उपवासाश्रावणादित्यनेनभट्टजये
 तीपरमितिहेमाद्रिः उदयेचंद्रोदयेरतिकेचित्तन्न चंद्रोदयसत्वेऽसंदेहान्नवमी
 सकलेत्येवागानानाभावाच्च तेनपूर्वेषुः सप्तमीपरदिनेसूर्यादयेघटिकापिग्रा
 ह्यापूर्वविद्राष्टमीतिपाद्योक्तेः अतोन्नत्रतभेदोनाय्यंतर्भावइत्यचिवान् गोज

नि. सि.

८१

मी

तत्र व्रतभेदं
जातोमः ३

४१

सू नवमं परमिदं वचनं नवमी सकलपदीति विशेषोक्तेः एतत्पर्यदिने जयं न्य
भावपरमित्याहुः जयं त्यादिसर्वापवादोयमिति आचार्यचूडामण्यादयः वयं तु
सर्वलोकास्तजन्माष्टमीमेवानुतिष्ठन्ति नहि प्राचो न भवेद्येव रोहिणीसहित
ष्टमी यदा कृष्णानरे लोधा सा जयंतीति कीर्तिता प्राचो न भवेद्योगानभस्ये तभवे
कुर्वेमिति माधवीये वसिष्ठे संहितोक्तापि भाद्रे जयंतीनापि क्रियेते यद्वा गुणान
फलं संप्रमेव सक्त्वं सकामसुपबयेदिति वदित्येतन्न नित्यत्वा नुपपत्तेः अत्र गीता
मुख्यचंद्राभ्यामेक एव मास इत्यन्ये तत्र एकवाक्ये उभयनिर्देशो वाराके द्वयायो
गात् अतो जयंती व्रतस्यापि नित्यत्वा उपवासद्वयं कार्यमिति ब्रूमः अतएव हेमाद्रि
मदनरत्नादौ जन्माष्टमी व्रतं जयंती व्रतं च भिन्नमङ्गं भिन्नकालत्वात् सर्वथा ताव
दंतर्भावेनेति सिद्धं यद्यपि पूर्वापराया ल्यापि रोहिणी युते वकार्येति ग्रंथानां
इदं तत्वं प्रतीयते जयंती परमेव इदं च काश्यमेवेत्यनंतमहः तद्वृत्तं हेमाद्रौ जेयं नि
त्यकाम्यमिति तु बहवः ननु यथा विष्णुश्चंद्रवलयो गेन प्रवणदादरीवामन
जयं त्यादिसर्वसिद्धिर्दया वैकादरी सत्यापि परतथा कलाकाष्टा मुहूर्तापि
यदा कृष्णाष्टमीति विधिः नवम्यां सैव ग्राह्यस्यात्सप्तमी संयुतानहि श्यादिवच
नादर्शदयादिवद्योगाधिक्ये कलाधिक्ये त्वरेव जन्माष्टमी युक्तेति चेत् वा

राम
८१

नि.सिं.

८२

८२

संहितोक्तैश्च अत्राष्टमीद्विधारोहिणीरदितातद्युताचम्राद्यापिचतुर्थी य
र्वेद्युरेवनिशीथयोनिनीपरेद्युरेवोभयेद्युरनुभयेद्युश्चेति तजाद्ययोरसंदे
ह एव कर्मकालव्याप्तेः जन्माष्टमीरोहिणीचरिचरात्रिस्तथैवच पूर्वविद्धे
वकर्तव्यातिथिभांतेचपारणमितिभ्रष्टकैश्च अस्मात्कैवल्यरोहिण्युपवासो
यिसिद्धः अंत्ययोः परैवप्रातः संकल्पकालव्याप्तेराधिक्यात्तवर्जनीयाप्रयत्ने
नसप्तमीसंयुताष्टमीति ब्रह्मवेवर्ज्याश्च एवमंशतः समव्याप्रावपिधिषमव्या
प्तौत्वाधिक्येननिर्णीयः रोहिणीयुतापिचतुर्द्धापूर्वेद्युरेवनिशीथेरोहिणी
युतापरेद्युरेवोभयेद्युरनुभयेद्युश्च अत्राप्याद्ययोरसंदेहः कार्यविद्धापिसप्त
म्यारोहिणीसहताष्टमीति पाद्योक्तैः जयंत्यापूर्वविद्धायामुपवासं समाच
रेदितिगारुडश्च सप्तमीसंयुताष्टम्यानिशीथेरोहिणीयदिभवितासाष्टमी
पुण्यायावच्चंद्रदिवाकराविति वद्विपुराणाञ्च तृतीयपक्षेपरैव वर्जनीयाप्र
यत्नेनसप्तमीसंयुताष्टमी सञ्चक्षापिनकर्तव्यासप्तमीसंयुताष्टमीति ब्रह्म
वेवर्ज्यान् चतुर्थ्यापि त्रेधा पूर्वद्युर्निशीथेष्टमीपरेद्दिरोहिणीपरेष्टमी
पूर्वेद्दिरोहिणी उभयेद्युर्मरुभयस्यनिशीथासंबंधोवेति माद्येपरेद्युर्ज

राम
८२

81A

नैमास्थानहितव्रतभेदोद्वेगोर्नित्यत्वद्वयोरकरणोदोषोवाश्रतः इत्येतेस्त्रिभि
 र्हेतुभिः संज्ञाभेदाद्वर्षभेदात्फलभेदात्तत्रोपवासभेदः स्पष्ट एव एकदेवतत्वा
 द्वावगाद्यादशीवन्नपाराणालोपदोषोपितेन व्रतद्वयमेव युक्तं द्वयोरपिनित्य
 त्वात् केचित्तत्रेतायां द्वापरे चैव राजनृक्तनयुगे तथा रोहिणीसहिता चैवं विदु
 र्भिः समुद्योयिता श्रतः परं महीपालसंप्राप्ते तामसेकलौजन्मतो वासदेवस्य भ
 चित्ताव्रतमुन्नममिति हेमाद्रौ चक्रिपुराणात्कलौजन्माष्टमीव्रतनयं तीव्र
 तमित्याहुः तन्न तामसेकलावित्युक्तेः परमश्रेयो हेतोरस्यात्कलौभाविनां
 उल्लभत्वमुच्यते तेन कलौतामसानकरिष्यंति किंतु धन्या एवेत्यर्थः अन्यथा
 भाद्रपदश्रावणचाराभविष्यतिकलौयुगे इत्यादौ विधिकल्पनापत्तेः अत्र निशी
 थवेध एव ग्राह्य सर्वोक्तवचनेषु तस्यैव मुख्यकालत्वात्तैः अष्टमी शिवरात्रि
 श्रवर्धरात्राद्यो यदि दृश्यते घटिकायासा सर्वविद्याप्रकीर्तितेति माधवीयेषु
 रागांतरात् अर्धरात्रे रोहिण्या यदा कृत्स्नाष्टमी भवेत् तस्यामभ्यर्चनं
 शौरैर्देति पापं जिज्जन्मजमिति भविष्योक्तैः अष्टमी रोहिणीयुक्ता निश्य
 र्धे दृश्यते यदि मुख्यकाल इति रव्या तत्ताजजाते हरिः स्वयमिति विशिष्ट

नि.सिं.

८३

83

एति वातानि भृगवाताद्यैः पूर्वविद्धाष्टम्यामपि निष्यन्ते पारलोक्तैः तेन कलाकाष्टे
तिवाक्योत्तरवराज्जायंती परमेतत् तत्त्वे तु अष्टम्याः कर्मकालाच्चात्रे दिवावायदिवा
रात्रेनास्ति चेद्रोहिणी कलारात्रियुक्तं प्रकुर्वीतेति पूर्वोक्तवाक्ये रोहिणीयोगा
भावे ग्राह्यत्वात्तेर्वचनात्कर्मकालव्यापिनीत्युक्ता पूर्वापरावाल्यापि रोहिणीयुता
युता ग्राह्या माधवमदनरत्ननिर्णयामृतानेत भट्टगोडसे थिलगंधादिष्वप्येवमिति
उपवासद्वयकार्यं द्वयोर्नित्यत्वादिति तु वदे अन्त्ययोपरैव सप्रमी संयुताष्टम्या
भूत्वा ऋक्षे द्वितीयोत्तम प्राजापत्यद्वितीये हि मुहूर्तार्धं भवे यदि तदाष्टयामिकं पुराणं
प्रोक्तं व्यासादिभिः परेति स्कांदात् मुहूर्तेनापि संयुक्ता संहरा साष्टमी भवेत् किं
पुनर्ब्रवीमी युक्ता कुलकोट्यास्तमुक्तिदेति यास्माष्टमी योगराहित्या न्नोपपद्येति भा
वः निवादिन्योपास्तकास्तजमाष्टमी रामनवमी शिवरात्र्यादौ पूर्वोक्तकर्मकाली
नोतिथित्यन्ताद्विप्रमुहूर्तौ परेवतिथिर्ग्राह्या उदयव्याधिनीर्गंधाकुलेतिथि
रुपोऽथो निवाक्यो भगवान् ये वा वाचिता र्थफलद इति हेमाद्रौ मातस्योक्तं युक्ति
सप्रमीव्रते भविष्यात्ते रित्याहुः तन्न यदि द्वितीये दिवसे तु ऋक्षेतिथ्योऽर्थः
स्यान्मतदोषवासः पूर्वप्रकृत्यादिवसे द्वितीये दिने कर्मकालोऽथ तदा व्रताद्यमिति
मातस्य वाक्येन तत्रैवोपसंहरात्सर्वार्थत्वे मानाभावात्तत्त्वज्ञानेति चोदति

रा

८३

82A

यंतीयोगस्य सत्यापरेवेति माधवः तदुक्तं तेनैव यस्मिन् वर्षे जयंत्याख्यो योगो जन्मा
ष्टमी तदा अतः भूता जयंत्यास्यात् ऋतुयोगप्रशस्यते इति पूर्वविद्धाष्टमीयात् तद
द्वयेन वमीदिने मूर्तमपि संयुक्तासंपर्गासाष्टमी भवेदिति कलाकाष्टासुहृती
पि यदा कृष्णाष्टमीति पितृः नवमीसेव ग्राह्यात् सप्तमी संयुक्तानदीति पाप्मोक्तेः स
मादिस्त्वाहः प्रष्टव्या प्राधान्यात् तस्याः पूर्वेषु कर्मकर्मव्यापित्वात् पूर्वैव पादोत्त
पूर्वे हि निशीथेष्टम्यभावे ज्ञेयं अतर्भावात् किंस्तु सर्वधुंसनमात्रमित्याहुः अन्ये तु
पूर्वविद्धाष्टमीति वाक्ये जन्माष्टम्यां सूर्योदये वैधनिवैधात् कलाद्यटीमात्रो योद
पिकी ग्राह्याकार्यविद्धापि सप्तम्येति जयंतीपरां जयंत्यां पूर्वविद्धायां सप्तमां समा
चरेदिति लोकवाक्यत्वात् तत्रापि द्वयोर्नित्यत्वात् कालभेदाद्योपवासद्वयं भवत्येवं
यदा तद्वेबलाष्टमी मुद्राधिका तदा त्यागहेतोः सप्तमी वैधस्याभावात् पूर्वैव यदिवा
विप्रत्यना तदा परदिने ग्राह्यतिथेरभावात् पूर्वैव एवे सदा ऐषी वैकवाक्यानि दा
सप्तमी वैधपराणि येन जन्माष्टमी पूर्वविद्धासंज्ञां सकलामधि विहाय नवमी
मुद्रासुपोष्यन्नतमाचरेदिति व्यासोक्तेर्विद्धायाः सवे मुक्तनवम्यामुपवासः दशमी
वैधे द्वादश्युपवासवदित्याहुः ते निर्मलत्वात् उपेक्षाः मूर्तमपि संयुक्तेति रोहि
एति योगे जन्माष्टम्याः तिर्थ्यतपारणवाक्यानां निर्विषयत्वात् न च जयंतीपरा

सप्तम्याः उत्तरार्धे दिवसे इत्यस्यानंतरमन्यधेत्यध्याहारः अन्यथा ऋषिपंचम्या
 दोतदापतिः शिष्टाचारत्रैतिचेत् नतस्यन्यायवचोविरोधे देयत्वात्तदानीं क्वा
 पिनिष्ठाकीपासनाभावश्चेति संशेषः इति दिक् पारणानुतिधिरष्टगुणं हंति
 नक्षत्रंचयत्तगुणं तस्मात्प्रयत्नतः कर्मातिधिभांतेच पारणमिति ब्रह्मैवती
 त्रतिष्ठत्तयोर्थं द्याधे दानक्षत्रांतमथापिवाऽप्रद्वरात्रेतदाकर्मात्पारणे त्व
 परेहनीतिहेमाद्रौ चचनाश्चार्धरात्रेयुभयानेन्यतरांतेवेति मुख्यः पक्षः सर्वे
 द्वेवोपवासेषु दिवा पारणमिष्यात् इति ब्रह्मैवती त्वन्यविषयं दिनमुख्यका
 ललाभे अन्यतरांतेवाज्ञेयं नौजास्तनरात्रौ पारणं कुर्यादनेवेरोहिणी ब्रह्मात्
 तत्र निरूपयितत्कुर्यादज्ञापित्वा महानिरा मिति ब्रह्माऽपुराणाद्रौ सार्द्धं प्र
 हरमध्ये कार्यं महानिरातुविज्ञेयामध्यमेमध्ययामयोः तयामध्यमप्रहरमत्रे
 विज्ञेया तु महानिरातिस्मृत्यंतरात् कल्पतरौ मदनरत्ने चैवं कामधेनौ गर्ग
 स्तु महानिरातुविज्ञायामध्यमं प्रद्वयमित्याह सद्द्वरात्ततयस्तु महानिरा
 द्यष्टिके रात्रौ मध्यमयामयो रित्याह वेदयाऽपरमेतदेत्यर्थः महानिराया म
 न्यतरांते तृतीयादिने पारणं उपरेहनीति पारणान्तरदिनपरत्वात् उभयां

नि.सिं.

८४

84

तोयेक्षणदित्याहुः तत्तत्र त्रस निशा तोर्वा गन्यतरां तलाभे महा निषेधः माहा
निशापामेवलाभेतत्रैव पारणमिति अशक्तौ तव द्विपुराणे भांते कर्कति ये वा
पिशस्तभारतपारणमिति गास्ते विष्णुधर्मच जयंत्या पूर्वविद्धाया मुपवा संमाच
रेत् त्रिप्यंते चोत्सवांते वा प्रतीकुर्वीत पारणं अशक्तौ त्रिप्यंते तिष्ठि भांते वा
पारणं यत्र चोदितं यामत्र योर्ध्वगाभिन्या प्रतरे वदिपारणं स एवोत्सवांते तिप्यंते चो
त्सवांते वा प्रतीकुर्वीत पारणमिति कालादरीं श्रेति संक्षेपा अष्टम्या विशेषो हेमाद्रौ
भविष्ये ततो अष्टम्या तिलेः स्नातो नद्यादौ विमले जले सदेशे शोभनं कुर्याद्देवक्याः
सुतिका गृहं तन्मध्ये प्रतिमा स्थाप्या सा चाष्टविधा स्मृता कांचनी राजती ताप्री
पैतली मन्मथी तथा वाक्षी मरिग मयी चैव वर्णकैः लिखिता यवा सर्वलक्षणस
पूर्णपर्यं केच पटाक्षते देवकौ तत्र चैकस्मिन् प्रदेशे सुतिका गृहे प्रसूतां च प्र
सूतां च स्थापयेत्तमं च कोपिरि मां तत्र बालकं संप्रपश्यं के सूनया धिने यशोदांत
त्रचैकस्मिन् प्रदेशे सुतिका गृहे तद्वत्कल्पयेत्पार्थ प्रसूतवत्कन्यकां करय
यो वसुदेवो यमदिति श्रेव देवकौ शोको वैवलभश्चो यशोदा किति रत्नभूत नंदः
प्रजापतिर्दक्षो गार्गी आचि चतुर्मुखः गोर्धनः कुंजरश्चैव दानवाः शस्यपाणयः राम

८४

लेखनीयश्रुतत्रैव कालियो यमन इदे इत्येवमादिय किंचिच्छ्रुत्पते चरतं मम लेख
 धित्वा प्रयत्नेन पूजयेद्भक्तिन्यरः मंत्रेणानेन कोतेय देवकी पूजयेन्नरः गयद्भिः
 किन्नराद्यैः सततपरिचिता वेणुवीणा ननादैः शृंगारादर्शकं भूषणैश्चतकरैः किंवा
 हैः सेव्यमानाययं के स्वास्तयेयामुदिततरसुरवी पुत्रिणो सम्यगास्ते सा देवी देवमा
 ता जयति सततया देवकी कांत रूपयादां संवाहयंती श्रीदेवि कथा श्रवणं तिके ।
 निषण्णपंकजे मज्जानमो देव्यै श्रिये इति शंखेनोयं समादाय सपुष्पकरा चंदनं ।
 जानुभ्यां धरिणी गत्वा चंद्रायार्घ्यं निवेदयेत् अर्घ्यं राजेव सोऽंशं यातयेद्भुजसर्पिषा
 नाडीवर्द्धयते वंशं नामादेः करणं मम ततो मंत्रेण त्रैलोक्या चंद्रायार्घ्यं समाहितः
 श्रीतेदारुवसंभृतं श्रीगो न समुद्रवः गृह्णाण्यं शोणा कंदं रोहिण्या स हितो मम ।
 ज्योत्स्नायते नमस्तुभ्य नमस्तुभ्योतिषायते नमस्तु रोहिणी कांत अर्घ्यं न प्रति
 गृह्णातु ॥ प्रभाते ब्राह्मणान् शक्वा भोजयेत्कृतमाचरेः ॐ नमो वासुदेवा
 य गोत्रे स्मरन्ताय च शान्तिरस्तु शिवं चास्तु इत्युक्त्वा मां चित्तं ज्ञेयं इदं प्रतिमास
 कथ्याष्टम्यामप्युक्तं मदमरत्ने वक्षिषुराणो प्राप्तिमासं च ते पूजामष्टम्यां यावत्
 रिष्यति मम यैवारिवलान् लोकान् संप्राप्य त्यसंशयं तथा पुनर्न चिधि

नायस्तु प्रतिमासं नरेश्वरः करोति वत्सरं पूर्णं यावदागमनं हरेः दद्याद्धर्मासं
 पूर्णं भोगैरत्नैरलंकृतं इति जन्माष्टमीव्रते भाद्रमावास्याया कृष्णार्द्धे सुक्तं
 हेमाद्रौ मरीचतेन मासेन भस्ममावस्या तस्यां दर्शोच्चयोमतः श्रुत्या तयामैसादर्शोचि
 नियोज्याः पुनः पुनः नभाश्रावणः तेन दर्शोत्तमासे जन्माष्टम्यनंतरदर्शो लभ्यते मर
 दनरत्ने तु मासेन भस्ममावस्या तस्यां दर्शोच्चयोमतः इति मरीचिवाक्यमुक्तं नभः
 स्ये भाद्रपदः तेन महालयं तर्गतदर्शो लभ्यते योर्णमास्यां तमासेनैव वा ते येस्य वि
 रोधः गौणमुख्यचंद्राभ्यामेकावदर्श इत्यन्ये भाद्रपदशुक्लात्तृतीयायां हरितालि
 काव्रतमुक्तं तत्र पराग्राह्यामुहूर्तमात्रसत्येधिदिने गौरीव्रतं परेशुद्धाधिकायाम
 येवं गणयोगा परासनादिति माधवोक्तेः श्राधामधुश्रावणिका कज्जली हरिता
 लिका चतुर्थी मिश्रितास्त्रीभिर्दिवान्तैर्विधीयते तृतीया नभसः शुक्लामधुश्राव
 णिका स्मृता भाद्रस्य कज्जली कृष्णा शुक्ला च हरितालिकेति दिवोदामोदाहृतिवच
 नाच्च भाद्रशुक्लचतुर्थी वरदचतुर्थी सामध्याह्न्यपि नीग्राह्या प्रातः शुक्लतेलेः स्ना
 त्या मध्याह्ने पूजयेत्तथेति हेमाद्रौ भविष्ये तत्रैव पूजोक्तेः मदनरत्ने येवं परदि
 ने एवं तेन साकल्येन वामध्याह्न्याप्यभावे सर्वयक्षेष्टसुखाग्राह्या तथा च स

हस्यातिः चतुर्थीगणनायस्यमानविद्याप्रशस्यते मध्याह्नव्यापिनीचेत्स्यात्पर
 तमेत्यरेदनीति मानविद्याप्रशस्तास्याच्चतुर्थीगणनायके मध्याह्ने परतमेत
 स्यान्नागविद्याप्रशस्यते माधवीये स्मृत्यन्तराच्च गणेशरूपे स्कंदे कदंतसूर्य
 कर्ण नागयज्ञोपवीतं पाशां कधरंदेवं ध्यायेत्सिद्धिनायके मिति ३ यंरविभो
 मयोरतिप्रशस्ताभाद्रपुल्लचतुर्थीयाभौमेनार्केण वायुता महती सात्रविघ्नेश
 मर्चित्वेष्टं लभेन्नरः इति निर्णयामृतैवाराहोक्तेः अथ चंद्रदर्शनं निषिद्धं तथा
 चापराके मार्कंडेय सिंहादित्येष्टपक्षे चतुर्थ्या चंद्रदर्शनं मिथ्याभिह्वरणं
 कुर्यान्नस्मान्परयेन्नतंसदेति चतुर्थ्यानपश्येदित्यन्वयः प्रधानक्रियान्वय
 स्माभात् तेन चतुर्थ्या मुदितस्य पंचम्याननिषेधः गौडश्रव्येवमाहुः परारारोपि
 कंन्यादित्ये चतुर्थ्या तमुक्ते चंद्रस्पदर्शनं मिथ्याभिह्वरणं कुर्यान्नस्मान्परयेन्न
 तंसदा सिंहकन्यादित्याभ्यां चांद्रभाद्रोलाहते तदोवशां नित्ये सिंहः प्रसेनमिति
 वैयठेदिति ह्येकस्तु विष्णुपुराणे सिंहः प्रसेनमवधीतसिंहो जाववताहतः स
 कुमारकिमारोदीस्तवह्येष्वस्य मंतक इति भाद्रपुल्लपंचमी ऋषिपंचमी साम
 ध्यापिनीग्राया स जात्रतेषु सर्वेषु मध्यानव्यापिनीति धिरिति माधवीये

सारीतोक्तेदिनद्वयेतत्वे हेमाद्रि मते पारासिता परदुता स्यात्तं च मी दीपकोक्तेः मा
 धवमते पूर्वा युगमवाक्यान्निर्णयस्तुक्तः अत्र ऋद्धीन प्रतिमासु स्रजयित्वा कृष्ट
 भूमिजरा केन वर्तनं एवं सप्रवर्ध्या गि कृत्वा सप्रवर्ध्या प्रतिमासु स्रजयित्वा कृष्ट
 गौष्टोत्तरराते निलान् कृत्वा सप्रवर्ध्या गि कृत्वा सप्रवर्ध्या प्रतिमासु स्रजयित्वा कृष्ट
 लिता सेव स्रजयित्वा गि कृत्वा सप्रवर्ध्या गि कृत्वा सप्रवर्ध्या प्रतिमासु स्रजयित्वा कृष्ट
 स्नानं भास्करस्रजनं प्रारानं च गम्य स्रजयित्वा गि कृत्वा सप्रवर्ध्या गि कृत्वा सप्रवर्ध्या प्रतिमासु स्रजयित्वा कृष्ट
 तरो भविष्ये येयं भाद्रपदे मासि ऋद्धी स्याद्भरतर्षभयोऽस्यापश्यति गंगेयं दक्षिणा
 पथं वासिनं ब्रह्महत्यादियापेक्षमुच्यते नात्र संशयः गंगेयः स्वामि कार्त्तिकेयः भा
 द्रपदे सप्तम्या मासु क्ता भरणं तत्र पूर्वा युगमान् भाद्रपदे कृत्वा ऋद्धी स्याद्भरतर्षभयोऽस्यापश्यति गंगेयं दक्षिणा
 र्वाग्रया आवणी दुर्गान् च मी दुर्वा चैव कृत्वा रात्री पूर्वविद्वान् कर्त्तव्या शिवारात्रिर्व
 लेदिनमिति हेमाद्रौ सहस्रमेतैः शुक्ला ऋद्धीति निर्णयः मासि भाद्रपदे भवेत्तु इवा
 ऋद्धी तसाज्ञेयानोत्तरासा विधीयत इति पुराणसमूहयाच्च यत्र मुहूर्तरोहिणी ऋ
 म्या पूर्वा वायुदिवा परा दुर्वा ऋद्धी तसाकार्ये ज्येष्ठा मूलं च वर्ज्येति तत्रैव
 परा कार्ये तुक्तं तत्पूर्वदिने ज्येष्ठादि योगे इष्टव्यं इवा ऋद्धी सदात्पा ज्येष्ठा
 मूलं च संयुता तथा एव इक्ष्मिणा इवा हंत्य पत्या निना न्यथा भर्तुरा युहं रा

86A

मूलेनस्मात्तांपरिवर्त्तिष्येदिति तत्रैव तन्निषेधात् इदमस्त्योदये कन्यार्के च नका
ये शुक्लभाद्रपदे मासि द्वांसंज्ञा तथाष्टमी सिंहाकर्कशवर्तमानकन्यार्के क
दाचन सिंहस्थे सोममास्ये नृदिने मुनिसन्तमे इति मदनरात्रे स्कांदोक्तेः अग
स्त्युदये तेनातपूजयेदमृतोद्वां वैधव्यं पुजशोकं च दशवर्षाणि पंचचेति तत्रैव
दोषोक्तेः अभाद्रशुक्लाष्टम्या मगस्त्योदये भाविने सति पर्वत्तच्छाष्टम्यामेव क
र्त्तव्यमिति हेमाद्रिदीपिकायां च इदं च व्रतं स्त्रीणां नित्यं यानपूजयते द्वां मोहादि
दयथाविधि त्रीणि जन्मनि वैधव्यं लभते नाजसंशयः तस्मात्संयजनीया सा प्रति
वर्षं वैधव्यं जनेरिति पुराणसमुच्चयात् यदा ज्येष्ठादिकं चिनाष्टमी नक्षत्रभूते तदा
तत्रैवोक्तं कर्त्तव्या चेत्कर्मभूतेन ज्येष्ठामूलं यदा भवेत्तद्वा मभ्यर्चयेत्तत्तयानं च
ध्यादिवसनयेदिति अत्र विधिर्मदनरात्रे भविष्ये शुचो देशे प्रजातायां द्वायां त्री
संज्ञां त्रयं स्थाप्य लिङ्गं ततो गंधैः पुष्पैर्धूपैः समर्चयेत्तदध्यक्षेते हि जपेष्टं अर्घ्यं द
द्यात्त्रिलोचने द्वायाष्टमीभ्यां तद्विधिवत्तत्तज्येष्ठं दुयान्वितः मंत्रस्तु त्वं दूर्वम
तजन्मासि वंदितासि सरासरैः सोमाभ्यां संतति देहि सर्वकार्यं करी भवय
थाशाखाप्रखाभिर्विस्तृतासि महीतले तथाममापि संतानं देहि त्वमजराश्रणा

मिति अत्रानग्नियं कं भवेत् अत्रानग्नियं कं मन्त्रीयादन्नं दधि फल तथा अक्षार
लवणं ब्रह्मन् मन्त्रीयान्मधुना चितमिति तजैव भविष्योक्तेः भाद्रपदे धिमासे स
ति निर्गच्छयेत्स्कादे अक्षिमासे तसं प्राप्ते न भस्य उदये मुने अर्वाग्दूर्वा ब्रतं कार्यं
परतो नैव कुत्रचित् अत्रैव ज्येष्ठा पूजा क्ता माधवीये स्कादे मासि भाद्रपदे मुने
पक्षे ज्येष्ठर्क्ष संयुता रात्रिर्धस्मिन्दिने कुर्याज्ज्येष्ठायाः परिपूजनमिति इयं ज्ये
ष्ठा योगवरो न पूर्वा पराग्राह्या दिनद्वये योगे परा पूर्वोद्गिराजि योगे पूर्वोद्गिराजि
वर्षा सप्तकार्या स्यादष्टमीनात्र संशयः मासि भाद्रपदे मुने पक्षे ज्येष्ठर्क्ष
संयुता रात्रिर्धस्मिन्दिने कुर्याज्ज्येष्ठायाः परिपूजनमिति तजैवोक्तेः अस्या
पचादः यस्मिन्दिने भवेज्ज्येष्ठा मध्याह्नादूर्ध्वमप्यरात्रिः तस्मिन् दिविष्य पूजा च
न्यूनं चेत्पूर्ववासरे इति इदं केवलतिथौ न भवेत्तजैवोक्तं तत्राद्यं केवलतिथौ
कार्यं अत्रत्यं केवलर्क्षं तदुक्तं मास्ये प्रत्याविक्रंति यावत्तं यज्ज्येष्ठा दैवतं
ब्रतं प्रतिज्येष्ठां ब्रतं यच्च विहितं केवलं तदुक्ते तिथावेवाचरे दाद्यं द्वितीयं केवल
र्क्षं तदुक्ते मदनरत्ने भविष्योत्तवार्षिकं मपि न भज्यते उक्तं मासि भाद्रपदे पक्षे
ज्येष्ठा पदा भवेत् तजैवोक्ता द्वावरां कृत्वा राभिर्मजैवोक्ता यजयेदिति दासिणात्या

= ६ आभाकासितपक्षेष्टुमंत्रश्रवणरेवती संगमेनैव भोक्तव्यं द्वादशाद्वादशी हरेदिति = ६ =

87A सवक्ष एव कुर्वन्ति तथा मैत्रेण वा हवेदेवी ज्येष्ठा यां न प्रयजयेत् मूले विसर्ज्य
देवी त्रिदिने ब्रतमुत्तममिति मंत्रस्त एष्टे हितं महाभागे सुरासुरनमस्तु ते ज्येष्णे
त्वं सर्वदेवानां मत्समीपगता भवेत्पार्वत्यता मग्निवर्णमिति संयज्य ज्येष्ठा ये
ते नमस्तुभ्यं श्रेष्ठायै ते नमो नमः सर्वायै ते नमस्तुभ्यं शंकर्यै ते नमो नमः ज्येष्णे
श्रेष्ठे तयो निवेष्टुं शिष्टे सत्यवादिनि एष्टे हितं महाभागे अर्घ्यं गृहासुरस्थती
त्यर्थः तत्र भाद्रपदशुक्लद्वादश्यां श्रवणयोगरहितायां पारणं कुर्यात् आभाकासि
तपक्षेष्टुतिदिनो दासो दाह तव च नान् उपोष्ये कादशी मोहात्पारणं श्रवणेषु
यैदिकरोति हन्ति तत्पुण्यं द्वादशाद्वादशी भवमिति तत्रैव स्कांदाच्चे अस्मत्तत्रै
व प्रतिप्रसवः मार्कंडेयः विशोषेण महीपालश्रवणं वर्द्धते यदि तिथिस्तये न भो
क्तव्यं द्वादशी लघयेन्न हीति केचित् यदा त्वपरिहारी योगस्तदा श्रवणं न भूते जेधा
विभक्ते मध्यमविंशतिघटिका योगात्पारणं कार्यं तदुक्तं विष्णुधर्मोक्तम्
अमध्योपरिवर्तनेति सुप्तिप्रबोधपरिवर्तनमेव वर्ज्यमिति केचिच्चतुर्धा वि
भज्य मध्यपदद्वयं वर्ज्यमाहुः मंत्रमूलं चित्यं अत्रैव विष्णुपरिवर्तनोत्सवं कुर्या
त् संध्यायां विष्णुसंयज्य प्रार्थयेत् मंत्रस्तुतिथितत्वे उक्तः ॐ वासुदेव जगन्ना

यज्ञमेवं द्वादशीतव यज्ञेनपरिवर्तस्यसंस्वपिहिमाधवेति अत्रैवराजध्वजो
 स्थानेसक्तंमयराके गर्गेण द्वादश्यांतसितेपक्षेमासिप्रोक्ष्यदेतथा राजमुत्था
 पयेद्राजाविश्वश्रवणवासवे श्यमेवश्रवणद्वादशी तत्रैकादश्यांद्वादशीश्रव
 णयोगेसैवोयोध्या एकादशीद्वादशीचवैष्णवमपितत्रचेत तत्रविष्णुमंखलंना
 मविष्णुसायुज्यकुरुवेदिति विष्णुधर्माक्षेः नारदीयेपि संस्य श्येकादशी राजन्
 द्वादशीयदिसंस्य श्येन श्रवणंज्योतिषांश्रेष्ठं ब्रह्मसंन्या व्ययोदिति द्वादशीश्रवण
 स्यष्टास्यशेदेकांशी सएववैष्णवोयोगोविष्णुमंखलसंज्ञित इति हेमाद्रौमास्यो
 क्तेषु दिनद्वयेद्वादशीश्रवणयोगेपिपूर्वातिर्णियामतेत्यस्यपूर्वाद्धमन्यथापठि
 तं द्वादशीश्रवणक्षेत्रस्यशेदेकादशीयदीति हेमाद्रिमते एकादश्याःश्रवणयो
 गाभावेपि तद्युतद्वादशीयोगमात्रेणविष्णुमंखलंभवति निर्णयामतेमते
 तश्रवणस्यैकादशीद्वादशीभ्यांयोगेएवमंखलंनान्यथेति यदानिरास्थानं
 तरं सूर्योदयावधिकलामात्रमपिश्रवणक्षेत्रंभवति तदापिपूर्वैव तदुक्तंतत्रैव
 नारदीयेइमां प्रकृत्यतिथिनक्षत्रयोर्योगोयोगश्रेष्ठेवनराधिप द्विकलौयद्विल
 भ्येत सत्रेयोद्यायामिकं इति योगः शिवरात्र्यादौ शिवयोगात् द्वादशीश्रवण

दि

 राम
८८

स्थवाकृत्तापुण्यतमातिथिः नतसातेनसंयुक्तातावत्येवप्रशस्यतेतिमदनरत्ने
 मात्स्याच्चादिवोदासीयेत रात्रेः प्रथमपादेचेष्टवर्णहरिवासरे तथदासर्वाभ्य
 वसेत्यातर्भातेवपारणमित्युक्तं इदंन निर्मलत्वात्सर्वविरोधाच्चोपेक्ष्यं इयं बुध
 वासरेतिप्रशस्ता बुधश्चवर्णसंयुक्तासेवचेतद्वादरीभवेत् अतमद्वतीसास्याह
 त्तंभवतिचाक्षयमितिहेमाद्रौस्कांदात् यानित्यपठंति उत्तराष्टाटसंमिश्राष्टाणा
 मध्याह्नागपिवा आसरीसेवतारास्याहंतिपुण्यपुराकृतं उदयव्यापिनीग्राह्या
 श्रोणाद्वादशिसंयुता विश्वर्क्षसंयुतासाचेनैवोयोव्याश्रभे सुभिरित्यादीनिब
 चनानितानिनिर्मलानि यदपिस्मृत्यर्थसारे उदयव्यापिनीग्राह्येत्युक्तं यच्चहस्त
 नारदीये उदयव्यापिनीग्राह्याश्रवणद्वादशीव्रतेति तद्यदाशुद्धधिकाद्वादशी
 परिदिनेएवोदयेश्रवणयोगः पूर्वद्वित्रैतद्वित्रैकालेयोगस्तत्परं दिनद्वयेउ
 दययोगेपूर्वैववर्जकर्मकालव्याप्तेरित्युक्तं मदनरत्नेयदात्वेकादश्येवश्रवण
 युजानद्वादशीतदाधिपूर्वैव यदानप्राप्यते जरुदाद्वादश्यंवेष्टमवे क्वचित् एका
 दशीतदोयोव्यापापघ्नीश्रवणाच्चितेति मदनरत्नेनारदीयोक्तेः यदापरेवर्क्ष
 युजानदापरातत्ररात्रेनोपवासद्वयकार्य एकादशीमुयोव्येवद्वादशीस

यत्र ज्ञेयं द्वादशीतव पश्चिन्नपरिवर्तस्थसंस्वपि हि माधवेति अत्रैव शक्रध्वजो
 स्थाने मूर्त्तमपराके गर्गेण द्वादश्यां तसि ते पक्षे मासि प्रोक्ष्य देतया शक्रमुत्थाप
 ययेद्राजा विप्रश्च वराणां सवे र्यमेव अवराणां द्वादशी तत्रैकादश्यां द्वादशी अव
 राण्योगे सैवोष्या एकादशी द्वादशी च वैष्णवमपि तत्र चेत् तत्तद्विष्णुं शंखलं ना
 म विष्णुसायुज्यकृद्देवदिति विष्णुधर्मोक्तैः नारदीयेपि संस्य रेयेकादशी राजन्
 द्वादशी यदि संस्य शेत् अवराण्योतिषां श्रेष्ठं ब्रह्महत्यां व्ययो हिति द्वादशी अवरा
 ण्यष्टास्य शोदेकांशी स एव वैष्णवो योगा विष्णुं शंखलं संक्षित इति हेमाद्रौ मास्यो
 क्तैश्च दिनद्वये द्वादशी अवराण्योगे पि पूर्वातिर्णायाम् ते त्वस्य पूर्वार्द्धमन्यथा यद्वि
 तं द्वादशी अवराण्यर्द्धं च संस्य शोदेकादशी यदीति हेमाद्रिमते एकादश्याः अवराण्यो
 गाभावेपि तद्युत द्वादशी योगमात्रेण विष्णुं शंखलं भवति निर्णयाम् ते मते
 तद्वराण्यस्यैकादशी द्वादशीभ्यां योगे एव शंखलं नान्यथेति यदा निरीक्ष्यानं
 तत्तत्सूर्योदयावधिकलामात्रमपि अवराण्यर्द्धं भवति तदापि पूर्वैव तदुक्तं तत्रैव
 नारदीयेऽपि प्रकृत्यतिथिर्नक्षत्रयोर्योगो योगश्चैव न राधिय द्विकलोपहित
 भवेत् सत्रयोऽष्टाष्टयामिकं इति योगः शिवरात्र्यादौ शिवयोगात् द्वादशी अवरा

दि

 राम
८८

स्य द्वाकृत्त्रा पुण्यतमा तिथिः न तत्सा तेन संयुक्ता तावत्येव प्रशस्यते इति मदनरत्ने
 मात्स्याच्चादिवोदासीयेत् रात्रेः प्रथमया देवे अवर्णं हरिषासरे तथैवा सर्वामुप
 वसेत्सा तर्भाते वपारणमित्युक्तं इदं तन्निर्मलत्वात् सर्वविरोधाच्चोपेक्ष्यं इयं वृध
 वासरेति प्रशस्ता वृधश्च वरणं संयुक्ता सेव चेत्तद्वा दशी भवेत् अतमद्वती सा स्याद्
 न भवति चाक्षयमिति हेमाद्रौ स्कांदात् यानि तत्पठंति उत्तराष्टाटसंमिश्राश्चोणा
 मध्याह्नायिवा आसरे सेवता रास्याहंति पुण्यं पुरा कृतं उदयव्यापिनी ग्राह्या
 श्रोणा द्वादशी संयुक्ता विश्वस्तौ संयुक्ता सा चेन्नैवोपेक्ष्या शुभे सुभिरित्यादीनि व
 चनानि तानि निर्मलानि यदपि स्मृत्यर्थं सारे उदयव्यापिनी ग्राह्येत्युक्तं यच्च हस्त
 नारदीये उदयव्यापिनी ग्राह्या श्रवणद्वादशी व्रते इति तद्यदा शुद्धिकाद्वादशी
 परिदिने एवोदये श्रवणयोगः पूर्वदिने च तद्दिने काले योगस्तत्परं दिनद्वये उ
 दययोगे पूर्वैव वरुणकर्म कालव्याप्तेरित्युक्तं मदनरत्ने यदा त्वेकादश्येव श्रवण
 युक्तान् द्वादशी तदापि पूर्वैव यदा न प्राप्यते अहं द्वादश्या वैष्णवे क्वचित् एका
 दशी तदोपेक्ष्या पापघ्नी श्रवणाच्चितेति मदनरत्ने नारदीयोक्तेः यदा परे वर्क
 युक्ता तदा परा तत्र रात्रौ नोपवासद्वयं कार्यं एकादशी सुयोग्येव द्वादशी स

मयोषयेत् नचात्र विधिलोपः स्यादुभयोर्देवतं हरिरिति भविष्योक्तेः यत्रुवि
 छुधर्मं पाराणां तं व्रतं रोयं व्रतांते विप्रभाजनं असमाप्तिव्रते पूर्वैर्नैव कुर्याद्व्रतांते
 रमिति तदेतद्विचयं अत्र गौडः अणराजनुपरं काम्यं अवणद्वादशी व्रतमिति स्प
 लशीर्षवचनात्काम्यमेवेदं तेनाराक्षस्यनित्यैकादशी व्रतमेवेति मन्यते द्वादश्या
 मयवासेन शुद्धात्मानं पसर्वशः चक्रवर्तित्यमनुलं संप्रप्राप्त्यनुलं श्रियमिति गौडनि
 वेधे मार्कंडेयोक्तेः दक्षिणत्याक्त एकादश्यां नरो भुक्त्वा द्वादश्यां समुपोषणं तत्र
 व्रतद्वयकृतं पुण्यं सर्वं प्राप्नोत्यसंशयमिति वाराहवाचनपुराणोक्तेः अवणद्वाद
 शी व्रतमेवेत्याहुः भुक्ते निफलाद्याहारपरं न च न्यपरं अत्राश्रितानि पापानि निति नि
 वेधात् उपवासद्वयं कर्तुं न शक्नोति प्रथमे निफलाहारी निराहारो परेदनीति दिवो
 दासीवे भविष्योक्तं अशक्नोत्तु गृहीतैकादशी व्रतो यस्तं प्रत्युक्तं मात्स्ये द्वादश्यामुक्तं
 पक्षे तु नक्षत्रं अवणं यदि उयोष्ये कादशी तत्र द्वादश्याय जयेद्हरिमिति पूजयेन्न त
 ष्ववसेदित्यर्थः अगृहीतैकादशी व्रतं श्रेयं कादश्यां भुक्त्वा द्वादश्यामुपवसेत् एवमे
 कादशी भुक्त्वा द्वादशी समुपोषयेत् पूर्ववासराजं पुण्यं सर्वं प्राप्नोत्यसंशयमिति ना
 रदीयोक्तोः पारणं न भयं तेन्यतरांते वा कर्तव्यं तत्तिथिनक्षत्रनियमेति धिभांते

89A

च पारणमिति स्कांदात् तिथिनक्षत्रसंयोगोऽप्यवा सोऽयदा भवेत् पारणं न कर्तव्यं
यावन्नैकस्य संक्षय इति नारदीयादिति हेमाद्रिः यद्यप्यत्र नक्षत्रमात्रं तेऽपि पारणं प्र
तिभाति तथापि तिथिमात्रं तेऽज्ञेयं न त्वस्मांतेति थि मध्येपि याः काश्चित्तिथयः प्रोक्ता
पुण्यानक्षत्रयोगतः ऋक्षांते पारणं कुर्याद्विनाश्रवणरोहिणीमिति विष्णुधर्मश्रव
णं तमात्रे पारणनिषेधात् रोहिण्यां नृभांते कुर्यात्तिथेर्वाकीति वक्रिपुराणां तदंतेष्व
स्तु न त्वत्रैवमस्तीति न ऋक्षांतो नृकल्प इति मदनरत्नश्रुसंभवेत् तिथ्यंतेति थि
भांते वा पारणं यज्जोदितं यामत्रयोर्धर्माभ्यां प्राप्ते बहिः पारणमिति ज्ञेयं २
८ श्रवणसंक्षेपः यत् नृ मदनरत्ने द्वादशी तद्द्वौ वाश्रवणं त एव पारणं कुर्यात् पारणं तिथि तद्द्वौ त्र
द्वादश्यां नृ संक्षयात् तद्द्वौ कुर्यात्त्रयोदश्यां तत्र दोषो न विद्यते इति वक्रिपुराणादिभ्यु
क्तं तदेतस्यामेव श्रवणं युते कादशी विहितं विजये कादशी त्रतपरं न त्रश्रवणं द्वा
दशी परमिति मदनरत्ने गौडास्तु श्रवणं द्वादशी परमाहुः अत्र विधिर्मदनरत्ने वि
तस्मिन्दिने तथा स्नानं यत्र कचन संगमे तथा दध्यौ दनयुततस्यां जलपूर्णं घटं हि
जे वसुसंवेष्टितं दत्वा च त्रयोपानं हमेव च नृगतिमवाप्नोति गतिमग्रां च विदति १
मंत्रस्तु विविधे घटे जनार्दन पूजामभिधाय नमोनमस्ते गोविंद बुधश्रवणं सं

नि.सिं.

६०

१०

नृकः प्रद्योतसंभयं कृत्वा सर्वसौख्यप्रदो भव प्रीयतां देवदेवेशो मम संशयनारतः
वासनावतारनिमित्तो यवा सस्तु व्रतहेमाद्रौ भविष्ये द्वादश्यास्ते विधिः प्रोक्तः प्र
वर्णेन युधिष्ठिरसर्वपापप्रशमनं सर्वसौख्यप्रदायकः एकादशी यदा सा स्यात्
अवर्णेन समन्विता विजया सति तिथिः प्रोक्ता भक्तानां विजया प्रदेत्युपक्रम्य अथ का
ले वदति ये गते सागुर्विणी भवेत् सद्युवेन व मे मासि पुत्रं सा वामनं हरि मित्या
द्युक्ता एतत्सर्वं समभवदेकादश्यां युधिष्ठिर तेनेष्टादेवदेवस्य सर्वपापविजया तिथिः
एषा व्युष्टिः समाख्याता एकादश्यं मया तव पूर्वमेव समाख्याता द्वादशी अवर्णा
न्विता त्वुपसंहारा देकादश्यामेव व्युष्टिः फलं भागवतेष्टमस्कंधे तद्वादश्यां वाम
नोत्पत्तिरुक्ता श्रीणां प्रवर्णा द्वादश्यां मुहूर्ते भिज्जिति प्रभुः गृहं न सत्रताराद्या प्र
कृता जन्मदाक्षिणं द्वादश्यां सविता तिष्ठन्मध्यदिनगतो नृपविजया नाम सा प्रोक्ता
यस्यां जन्मविडहरेः श्रीणां चंद्रेश्वर भिज्जित प्रवर्ण प्रथमं शः गौडा अय्येवं प्र
वक्तव्यं मे दाववस्था तद्विधिः प्रहेमाद्रौ वग्निरुगणे नदीनां संगमे स्नायादर्थये
दत्र वामनं सौवर्णं वसुसंयुक्तं द्वादश्यां गुलमुद्रितं ततो विधिवत् पूज्य हेराम
वेन पात्रेण दद्यादर्थं प्रयत्नतः नमस्ते य स नाभाय नमस्ते जलशायिने तभ्यमर्थं प्र

राम
६०

यदा मिवा लवामनस्तपितो नमः कमल किंजल्कपीतनिर्मलवससे महाद्वरि
 युक्तं धधतस्कंधाय चक्रितो नमः राहं सारवाणपाणये वामना मनाय च यज्ञभु
 कुलदात्रे च वामनाय नमो नमः देवेश्वराय देवाय देवे संभ्रति कारणे प्रभवे सर्वदेवा
 नां वामनाय नमो नमः एवं संप्रजयित्वा तं द्वादश्या मय्ये रवेः भंगार सहितं तं तद्वा स
 णायानि वेदयेत् वामनः प्रतिगृह्णाति वामनो हं ददामि ते वामनं सर्वतो भद्रं द्विजाय
 प्रतियादयेति अनंतभद्रो व्याहः श्रवण द्वादश्यां जनार्दननामा विष्णुः सृज्यते श्रव
 णैकादश्यां वामनावतार इति श्रवण युत शुद्धैकादश्या लाभे तदशमी विद्वापि श्रवण
 युता पि कार्पा दशम्यैकादशी यत्र सानो यो व्याभवेति थिः श्रवणेन तसंयुक्ता सा चे
 त्स्यात्सर्वकामदेति वक्रिपुराणादित्युक्तं मदनरत्न पूजा च मध्याह्ने कार्यं श्रद्धो मधो
 वामनो रामरामाविति पूर्वोक्तवचनात् अत्रैव दुग्धघ्नं तं संकल्पयेत् तदुक्तं
 दुग्धमाश्रयुजे मासीति अत्रेदं चिंत्यते दुग्धघ्नं ते पायसादिवर्ज्यं न वेति नेति केचि
 त्तनदिप्रकृतिवर्ज्यं नेचिकारवर्ज्यं नेयुक्तं दधिघृतादीनामपि वर्ज्यं नापत्ते न च यत्र
 प्रकृतिरसोपलंभस्तद्वर्जनमिति वाच्यं मासविकारस्योष्ट्रदध्यादेः श्रावर्ज्यं ना
 पत्तेः तस्मादध्यादिवत्यायसादिभक्ष्यमिति अत्र ब्रह्मः यत्र विकारे प्रकृतिरसो
 पलंभस्तत्प्रभित्ता वा तत्र विकारस्यापि निषेधः अस्ति च मासविकारे मासवत्प्रभि

नि.सिं.

८१

१।

न मांसत्वायायात् यत्तु श्लोष्टदध्यादेरनिषेधायतिरिति तत्र श्लोष्टमिति विकारत
द्वितेन निषेधात् तथाच विज्ञानेऽप्यश्लोष्टमेकाशफसैणमारायकमथाविकमि
त्यत्र श्लोष्टमिति विकारतद्विताव्यक्तस्तत्रादीनामपि निषेधादित्याहुः नन्वेवं संधि
न्यनिर्दशावत्सागोययः परिवर्त्तयेदिति संधिन्यादिकीरनिषेधेऽपि दध्यादेर्गूढ
तां स्यात् सत्प्रप्राप्तं वचनेन परं निषेधः तदाह परार्थे शंखः कीराणि यान्यभक्ष्या
णि तद्विकाराणामेव धः संप्रदात्रं व्रतं कुर्यात्प्रयत्नेन समाहित इति व्रतं गोमूत्रजया
वकां तस्मात्पायसादुग्धरसोपलेभादुज्जीनं अतएवामिक्षायां दधिसत्त्वेऽपि माधु
र्देयपलेभात्पयो रूपत्वमुक्तं मीमांसकैः तदुक्तं ययएव घनीभूतमांसोऽप्यभिधी
यते इति दध्यादिषु तज्जदभावादवर्ज्जनमिति इति दुग्धव्रथादुक्तं चतुर्दश्यामनंत
व्रतं तत्र त्रिमुहूर्ताय्यो दधिकी ग्राह्येति माधवः तदुक्तं उदये त्रिमुहूर्तायि ग्राह्यां
तत्र तेतिथिरिति माध्याह्ने भोज्यवेलायामिति कथायां अवणादुपरि हि देवेभ्यो
धारयतीति वद्विधिकल्पनात्प्रजाव्रतेषु सर्वेषु मध्याह्ने व्यापिनीतिथिरिति माध
वीये वचनात् मध्याह्ने व्यापिनी ग्राह्येति दिवोदासः प्रजायमानं देव्येवं निर्णय
मते नृघटिका मात्राव्यो दधिकीत्युक्तं तथाभादुपदस्योते चतुर्दश्यां द्विजो न

राम
८१

91A

न पौर्णमास्याः समायोगे ब्रतं चानंतकंचरेदिति भविष्योक्तेः स हूतं मयि चेद्वा ड्रे प
 र्णमायांचतुर्दशी संपूरणीतां विंदुस्तस्यां पूजयेद्विष्णुमव्ययमिति स्कादाच्चेति
 अत्र संलक्षितं तत्वं विध्यर्थवाद्योभिन्नार्थत्वे एकवाक्यतया गात्संदिग्धेषु वा
 क्यशेषादिति न्यायेन पूर्वापरावामध्याह्न्यायि न्येव सुरव्यामाधवस्तु सामान्यवा
 क्यानि र्णीयं कुर्वन् भ्रान्त एव पूर्ववचनेन तन्नतत्र तस्य पुराणं तरेष्टु भावाच्चि वं
 धांतरेष्टु भावाच्च निर्मूलमेवेति छंदे श्रौदधिकत्वे च दर्शित्वा त्वैति युक्तं अथा
 गस्त्याधिः तत्कालो ब्रतहेमाद्रौ भविष्ये कन्यायामगते सूर्ये अर्घ्ये सप्तमे दि
 ने कन्यायां समनुप्रापे र्घ्यं कालो निवर्तते तेन उदयोत्तरं सप्तदिनमध्ये इत्यर्थः य
 त्याये आसप्त रात्रा उदयाद्यमस्य दानव्यमेतत्सकलं नरेण यावत्समाः सप्तदशाथ
 वा स्युर्योर्द्धमप्यत्र बदंति केचित् यमस्यागस्त्यस्य उदयकालादिवोदासीये उक्तः
 उदेतियास्यां हरि संकृमा इवैरेकाधिके विंशति मेध्यगस्त्यः सप्तमेऽस्तं हवसंक्र।
 मास्तु प्रयाति गर्गादिभिरप्यभारिण अत्र विधिर्विष्णुरहस्ये काशपुष्यमयी रम्या
 कृत्या मूर्तिं तवारुणोः प्रदोषे विन्यसेतां तपुष्यधूपविलेपनैः दध्यक्षतवलिंदद्या
 त् रात्रौ कुर्यात्प्रजागरं पूजाचवक्ष्यमाणार्घ्यमंत्रेण कार्या प्रभाते तं समादाय या

नि.सिं.

२२

१२

पातुण्यजलाशयं निरावसानेतां पश्यन् जलांते प्रतिमां मुनेः अर्धदद्यादगस्त्याया
भक्त्या सम्यगुपेक्षितः मात्स्येन अंगुष्ठमात्रं पुरुषं तथैव सौवर्णसत्पाय तवाहुदं २३
पूर्वकारामयीत्वशक्तौ चतुर्भुजं कुंभमुरवे निधाय धान्यानि सप्तांकुतैः संयुता नि
सकारा पुष्पाक्षतशुक्ति युक्तं मंत्रेण दद्याद् द्विजपुंगवाय धेनुं वहुक्षीरवतीं च दद्यात्स
वसुधंदाभरणं द्विजय भविष्ये विरूढेः समधान्यैश्च वंशपात्रनिधापितैः सौवर्णरू
पपात्रेण ताम्रवंशमयेन वा मृद्धिस्थितेन नम्रेण जानुभ्यां धरांगीगतः विष्णुरहस्य
अग्रस्यः रत्नमानेति पठन् मंत्रमिदं मुने अर्धदद्यादगस्त्याय अर्धे मंत्रविधिस्त्वयं
कारा पुष्पप्रतीकारावद्भिमारुतसंभव मित्रावरुणयोः पुत्रकुंभयोर्नेन मोक्तुं
वातापिर्भक्षितो येन समुद्रः शोधितः पुरा लोपामुद्रा मतिः श्रीमान् यो सोतस्मे नमो
मो नोदतेन पापानि विलयं यांति व्याधयः तस्मै नमो स्तुतगस्त्याय ससिध्या यचपुत्रि
णे अग्रस्यः रत्नमानेति विप्रोर्धं विनिवेदयेत् रात्रिपुत्रिमहाभागे अविपलिव
रानने लोपामुद्रेन मस्तुभ्यमर्धमे प्रतिगृह्यतां दत्तैव मर्धं कौरव्यप्रणिपत्य
विसर्जयेत् अर्चितस्त्वं यथाशक्त्या नमोगस्त्यमहर्षये ऐहिकामुष्मिकीदत्ता
कार्यसिद्धिं न जस्वमे विसर्ज्य धित्वा गल्पतं विप्राय प्रतिपादयेत् अग्रस्यो

२३

नमः

राम
२२

92A

मे मनस्सोक्तं अगस्त्योऽस्मिन् घटे स्थितः अगस्त्यो द्विजस्तु येन प्रतिगृह्य सत्कृतः ।
दानमंत्रः अगस्त्यः समजन्माद्यं नारायणं विद्यावयोरघं अतलं विमलं सौरं प्रयच्छं म
सामुने प्रतिगृह्य मंत्रः विष्णुरदस्ये यजेदगस्त्यमुद्विषिधान्ये मेकं फलं रसं होमं कृ
त्वा ततः पश्चादुज्जये मानवः फलं होमाश्चाद्यं मंत्रेण ज्येन भविष्ये दत्वा धर्मसंप्रव
र्ध्वाणि जन्मेषु एतानेन पांडव ब्राह्मणः स्याच्च तर्हि दः क्षत्रियश्च धिर्वीर्यमतिः वैश्यश्च धान्य
निष्पत्तिः शूद्रश्च धनवान् भवेत् यावदायुश्च यः कर्षात्स परं ब्रह्म गच्छति इत्यगस्त्य
यः भाद्रपौर्णमास्यां प्रपितामहात्परां स्त्रीं नृदिश्यं प्रादुं कार्यं तदुक्तं हे मादो नारा
यणमाकं देययोः नादीमुरवाद्येते पितरः पारिर्कीर्तिताः तेभ्यः पूर्वतरा ये च प्रजावंतः सुरैवे धिताः
ते तु नादीमुरवा नादी सुतद्विरितिकथ्यते एतच्च प्रत्यक्षं नित्युक्तेः यक्षप्रादु यक्षो सक्त
महालयपक्षे चावश्यकमिति प्रयोगपरिज्ञाने अत्र अत्र मातामहा अधिकार्या
पितरो यत्र यज्यंते तत्र मातामहा अपीति धोम्योक्तेः पितृशब्दस्य च जनकपरत्वे
वक्तव्यं न विरोधेन पितृभावापन्नपरत्वात् वार्षिकेन वचनान्नितिः न च जीव
तिः न च जीवति पितृकस्यान्यद्वक्तव्यं मातृप्रादु तदायतिः इष्टापत्तेः अतएव स
ज्जन्मप्रादु सुसमात् मातामहायोर्दद्यादिति मदनरत्नकालादौ एतज्जीवपि

का

१३

य

तं प्राद्वेवक्ष्यामः केचित्तु अजहन्क्षणाया पित्रादयो यत्र तत्र माता महास्तेनात्र
 नेत्याहुः न चात्र नामानां दीमुष्माद्वधर्मातिदेशः वैष्णवादिशब्दवद्देवतापरस्वक
 र्त्तनामत्वाभावान्न न्युक्तं सप्तमेध्याये नापि नां दीमुखत्वे पितृ विशेषणं देवता
 यां पारिभाषिकत्वादिति दिक् न पानिर्णीयदीयेगार्ग्यः पूर्णमासीषु सर्वसुनिधि
 खं धिं उपातनं बर्जयित्वा प्रोक्ष्य दीययादरीस्तथैवसेति ॥ ॥ इति श्रीमीमांसक
 रामकृष्णमहात्मजभट्टकमलाकरकृतैर्निर्णीयसिंधोभ्याद्वयदमासः ॥ ॥
 कन्यासंक्रमेयराखोऽशघटिकाः पुण्याः शोचं प्राग्वत् अपमहान्नयः तत्र य
 श्रीचंद्रोदये हृदमनुः प्राघाटमधिधिक्त्वा पंचमं पक्षमाश्रिताः काक्षंति पितर
 क्तिष्ठा अन्नमप्यनुहोजले कन्यायोगे पुण्यतमत्वमाह शाट्यायनिः कन्यास्थार्की
 चितः पक्षः सात्यंतं पुण्य उच्यते इति अजविषेष्टमाह हृदमनुः मध्ये वा यदि वा
 ते यत्र कन्या व्रजे इविः सपक्षः सकलः श्रेष्ठः प्राद्वेवोऽशकं प्रति तथात्र ह्योऽमा
 कं डैयोः कन्यागते सवितरिदिना निदशपंचच पार्वणेनेह विधिना प्राद्वं तजवि
 धीयते तथा तत्रैव बोऽशदिना न्युक्तानि कन्यागते सवितरिद्यान्यैर्हानितबोऽ
 श कतुभिस्तानि तुल्यानि देवो नारायणो ब्रवीत् अत्र हेमाद्रिः बोऽशत्वं जेधा
 व्याचरत्यौ तिथिस्तथापक्षस्य बोऽशदिनत्वे प्राद्वानित्वं धर्मित्येकः पक्षः आद्रप

राम

२३

नि.सिं.
२४

१५

थेकास्मिन्नपिदिनेश्राद्धमुक्तंहेमाद्रौनागरखंडेऽप्रावट्याःपंचमेपक्षेकन्यासंस्थेदिवा
करेयोवैश्राद्धंनरःकुर्वादेकास्मिन्नपिवासरेतस्यसंवत्सरंयावत्संतप्तापितरोधु
वमितिअत्रराक्ताशक्तव्यवस्थेतिप्रंचःतत्रतद्वाचकपदाभावात्तज्योदस्यादिपक्षे
एवनित्यःतज्जैवनिदाश्रुतेःज्ञासेतिएवकारेणतस्येवपंचमपक्षयोग्यवच्छेदोक्तं
रितिगोष्ठाःतत्रएकस्मिन्नपीतिविरोधान्नतेनफलभूमार्थिनान्यानिकार्याणिइति
तत्त्वंविधिवास्तुविशेषःस्मृतिसंग्रहेचत्वारःपार्वणाप्रोक्ताविधवायाःसदेवहि
स्वभर्तृश्वसुरोदीनांमातापित्रोस्तथैवचततोमातामहानंचश्राद्धदानमुपक्रमे
त्ततथाश्राद्धांचविशेषेणमतामयास्तथैवचेतिश्रुतौतस्मृतिरन्नावल्या
स्वभर्तृप्रभृतिभिःस्वपितृभ्यास्तथैवचविधवाकारयेच्छ्राद्धंयथाकालमतंदि
ताविधिवास्वयंसंकल्पंकृत्यान्यद्रुस्माद्द्वाराकारयेदित्युक्तंप्रयोगपरिज्ञातेसा
कृन्महालयेचवर्जतिष्याद्युक्तंपृथ्वीचंद्रोदयप्रयोगपारिजातादिषुवशिष्टःनंदा
यांभार्गवदिनेचतुर्दश्याजिजन्मस्तएकुश्राद्धंनकुर्वीतगृहीपुत्रधनक्षयान्जन्म
मेतत्पूर्वोत्तरेचजिजन्मानिहृदगायैःप्राजायत्येचयोक्षेचजिपक्षेभार्गवेतथा
यस्तुश्राद्धंप्रकुर्वीततस्यपुत्रीवितरयतिप्रजायत्येरोहिणीयोक्षेरेवतीपिअंमया
अन्यान्यपिप्रत्ययरादीनितज्जैवज्ञेयानिचितुनंदाएवकामरव्यारभगवतिनपित

राम
२४

कालमे गंडे वेधेति पातेन पिंडास्या ज्यासुनेषु भिरिति संग्रहात् नंदाः प्रतिपत्त
 वक्ष्ये कादश्यः अश्वः सप्तमी कामत्रयोदशी आरोग्य भद्रः शुक्रः अग्निभक्त
 तिकावालाभं भराणी अत्र पिंडास्या ज्या इत्याहुः तत्र मूलं मृग्य एतच्च सक्तम्
 हल यविषयं सक्तम् हलये काम्ये पुनः आह्विलेषु च अतीत विषये चैव सर्व
 ये मेतत्त विचिंत्येति पृथ्वी चंद्रोदये नारदाक्तः अस्यापवादो हेमाद्रौ अमापाते भर
 ण्या च द्वादश्यां पक्ष मध्यमे तथा तिथि च नक्षत्रं चारचन विचारयेत् पाराशर
 माधवीय मदन पारजातादिषु चैवं निर्णय दीपिकायां तु पितृता हे निषिद्ध
 दिनेषु सक्तम् हल यः कार्यं मृत्युक्तं आवाह्याये च मेयक्षे कन्या संस्थे दिवा क
 रे मृता हनि पितृर्के वे आह्वं दास्यति मानवः तस्य संबन्ध रया वत्सल प्राः पि
 तरो ध्रुवमिति नागरं वंडोक्तैः याति धिर्यस्य मासस्य मृता हेतु प्रवर्तते सा
 ति धि पितृपक्षे तु पूजनीया प्रयत्नतः तिथि दे दोन कर्त्तव्यो विनाशो च यदृष्ट
 या पिंड आह्वं च कर्त्तव्यं विधि न्नैव कारयेत् अशक्तः पक्ष मध्ये तु करोत्ये कदि
 ने यदा निषिद्धे विदिने कुर्यात्पिंड दाने यथा विधीति कान्यायनोक्तेषु आह्वं कर
 णे पिने नंदादिषु पिंडा निषेध इत्याह पाराशर माधवीये कामाक्षि निनभस्य
 स्यापरे यक्षे तथा यक्षे अजमूलं चिंत्यं आह्वं कार्यं दिने दिने इति इति वीणाव

शास्त्र सोमयागवदेकस्याभ्यासेनैकप्रयोगपरमिदं अतः प्रतिपत्तप्रभृतिश्लोकं चर्ज्य
 पितृचतुर्दशीकर्म मितियातकल्कीयं पंचम्यादिपक्षाविषयं पृथ्वीचंद्रोदयेमदन
 पारजातेचैवं अतो नंदादौ सपिंडकश्चाद्धे पुत्रवत्तौप्यधिकारः अतीरपि महालये
 स्यात्ते च दर्शपुत्रस्य जन्मनि तीर्थे पितृनिर्वियेत् पिंडारविवाहदके अपि पूर्वोक्तनंदादि
 निषेधस्तु मत्ताहाति क्रमेणोर्गमास्यादिमृतश्चाद्धे च त्रैयः यत्तु स्मृत्यर्थे सारे
 विहारव्रतचूडासुवर्णमर्धनदधकं पिंडदानं मृदास्नानं न कुर्यात्तिलनर्घां इति
 तस्यात्रापवादोदिवोदासीयेह हस्यतिः तीर्थे संवत्सरे प्रेते पितृयागे महालये
 पिंडदानं न कुर्यात्तुगादिभरणी मघे महालये गयाश्चाद्धे मातापित्रोक्षये हनि
 कृतो हाहोपिकुर्वीत पिंडनिर्वपनं सदेति निर्णयदीयेत नंदादिनिषेधप्रत्यहं
 भिन्नश्चाद्ध विषयः षोडशाहव्याधिश्चाद्ध प्रयोगैकत्वेन प्रत्यहं पिंडदानं कार्यमेवेत्यु
 क्तं तदयमर्थः संयत्रः षोडशाहव्याधिश्चाद्धे कोनपिंडनिषेधः मत्ताहं सक्तमहाल
 ये पितृयागप्रत्यहं श्राद्धभेदे पितृयागोपातादौ तथा अन्यत्र मत्ताहाति क्रमेण पिंडनि
 षेध इति संन्यासिनां तु द्वादश्यां श्राद्धं कार्यं यतीनां च वनस्थानां वैष्णवानां वि
 शेषतः द्वादश्यां विहितं श्राद्धं कृष्णपक्षे विरोधतः इति पृथ्वीचंद्रोदये संग्रहोक्तैः
 अजयक्षेत्राद्वा करणो गौणकालमाह हेमाद्रौ यमः हंसेकन्यासवर्षास्थे शा

केनापि गृहे वसन पंचम्योरंतरोदया उभयोरपि पक्षयोः प्राश्निनस्तथ्यश्लेपंचम्यो
 मध्येत्यर्थः तजाय्यसंभवे भविष्ये येयं दीयान्ययाराजन्म्यारव्यातं पंचदशीभुवि
 तस्यादद्यान्नचेदन्नं पितृणां वैमहालये तजाय्यसंभवे भविष्ये यावच्च कन्या तुल
 योः क्रमादास्ते दिवाकरः श्रुत्यं प्रेतपुरं तावद्धृष्टिकं यावदागतः ब्राह्मे तस्मिन्ने स
 मतिं क्रांते पितरो देवतैः सह निःश्वस्य प्रतिगच्छन्ति आकाशं निस्मृतिरः पंचमं पु
 क्षमाश्रिताः तस्मान्न त्रैवदातव्यं दत्तमन्यत्र निफलातिशयहानि परं दं च श्राद्धमन्त्रे
 नैव कार्यं नामात्रादिना मृताहं च सपिंडं च गयाश्राद्धं महालयं प्रायश्चोपिन कुर्यात्
 श्राद्धमानेन कर्हिचित् इति स्मृतिर्दृष्टिगो गालवोक्ते अथात्र देवतासंग्रहे तातां वा
 त्रितयं सपत्न जननी माता महादित्रयं संस्त्रिंस्त्री तनयादिता तजननी स्वभ्रातरस्त
 त्रियः तातां वा त्मभगिन्यपत्यधवपुग्जाया पिता सद्गुरुः शिष्याः प्राः पितरो महा
 लयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे अस्यार्थः तातजयी पितृजयी अंवात्रयी च स्मृत्यर्थ
 सारोपि महालये मातृश्राद्धं यत्कप्रशस्तं मिति अत्र विशेषः स्मृतिर्दृष्टिगो गाल
 वः अनेकामातरो यस्मिन् श्राद्धे चापरपक्षके अर्घ्यदानं यत्क कुर्यात्पिंडमेकं तु

नि.सि.
२६

१६

निर्वयेत् जीवनमातृकस्तसायनमातुरेकोदिष्टं कुर्यात्पार्वणं आहुदीपकलिका
यांनु पार्वणमुक्तं अन्वष्टकं च जन्मातुर्गीया आहुं महालयं पितृपत्नीषु च आहुं कार्यं
पार्वणवद्धवेदिनिवृद्धन्मन्त्रैः सस्त्रीतिमातामहानां सपत्नीकत्वेपि विभवे सति मा
तामहीनां यथा कार्यं महा लये गया आहुं आहुं चान्वष्टकासु च ज्ञेयं द्वादशद्वयं तृतीयं
प्राष्टे मघासु चैति निगमोक्तेः हेमाद्रिमते च जनवदेव त्वमेव महा लये गया आहुं तद्वै
चान्वष्टकासु च न च देव त्वमत्रेष्टं शेषाष्ट पोरुषं विदुरिति धर्मोक्तेः तात भ्राता च पि
तृव्यः जननी भ्राता च मातुलः तस्त्रियः पितृव्यस्त्री मातुलानी भ्रातृजायाः पितृव्यस्य मा
तृव्यस्य भगिन्योपत्यमर्त्यपुत्राः तेन सायत्याये सधवायेति प्रयोगे ज्ञेयः एतासु
सतीषु न तद्गता देदीनं हारलोपात्ता जाया पिताश्वसुरः श्वश्रुरप्यजो पलक्ष्याः अत्र
मूलं स्मृतिचंद्रकायां ज्ञेयं अत्र पार्वणोकोदिष्ट व्यवस्थोक्ता हेमाद्रौ पुराणांतरे उपा
ध्याय गुरुश्वश्रुपित्रव्याचार्यमातुलाः श्वसुरभ्रातृतत्पुत्रपुत्रार्थिक शिष्यपोष
काः भगिनी स्वामिदुहितृजामातृभगिनीसनाः पितरो पितृपत्नीनां पितृमर्तु
प्रपत्न्यसा सारिवद्व्यदशो व्याप्तास्तीर्थैश्चैव महा लये एकोदिष्ट विधानेन सज
नीयाः प्रयत्नतश्चि इतरेषां पित्रादीनां पार्वणमर्थसिद्धं अत्र क्रमान्मत्वे व्याचा

राम
२६

राखवस्या अशक्तौ लप्यन्ती चंद्रोदये च लविंशतिमते एकस्मिन् ब्राह्मणे सर्वाना
 चादीन प्रयजयेत् दशद्वादशावापिंशान् दद्यादकरणं न तु एकोद्विष्टस्वरूपं चास्य याज
 बल्कः एकोद्विष्टदेवहीनमेकार्थे कपचित्रकं आवाहनाग्नौ करणरहितं त्वे
 पसव्यं वदति अत्रैकपाको वैश्वदेवः तं जपिं डवह्निश्चैकमिति स्मृत्यर्थसागरे उ
 त्तं अत्र पाणि होमः पिंशश्च द्विजांतिक इत्याह प्रयोगपरिजाने आचार्यः का
 म्यमभ्युदयेष्टम्यामेकोद्विष्टमयाष्टमं चतुर्थं च करे होमः पिंशश्चात्र द्विजांतिक
 इति पार्वणेकोद्विष्टयोः समानतंत्रत्वे अग्निसमीप एव अत्र धुरिलोचनो वैश्व
 देवो अपि केन्यागते सूर्यकाम्ये च धुरिलोचनायिति हेमाद्रादित्यपुराणात्
 अत्र प्रतिदिने निन्न प्रयोगात्वादक्षिणभेदो वा प्रयोगेकत्वादंते एव वा दक्षिणे
 चेति कालहेमाद्रावुक्तं एतच्च संन्यस्तपित्वादिना जीवत्पितृकैनापि कार्यं
 तद्धौतीर्थं च संन्यस्तताते च प्रतिने सति येभ्य एव पिता दद्यात्तेभ्यो दद्यात्तवपसु
 त इति कात्यायनोक्तेः यत्तु कोटियाः दर्शश्चाङ्गयाश्चाङ्गश्चाङ्गं चापरश्चक्षिकं
 न जीवति पितृकः कुर्यात्तिलैस्तर्पणं मेव चेति तत्संन्यस्तपि जायति रिक्तविष
 यं काम्यश्चाद्वपरं वा अत्र वदुवक्तव्यं श्रीपितृकत जीवत्पितृक निर्णये ज्ञेयं

नि.सिं.
९

१७

एतच्च जीवति पितृकेन पिंडरहितं कार्यं मुंडनं पिंडदानं च प्रेतकर्म च सर्वशः
न जीवति पितृकः कुर्याद्दुर्विणीयमिरेव चेति दक्षेण एतस्य पिंडनिषेधेऽप्याह
न चष्टक्यामाह चार्धकादौ तु वचनाद्भवतीति वक्ष्यामः तथा द्वागस्तोयः पिंडो य
जनिर्वर्ततमघादिष्टकचंचनसाकल्यंतु न दाकार्ये नियमाद्ब्रह्मवादिभिः साक
ल्यं स्वरूपं च वक्ष्यते अत्र श्राद्धागत्य एतत्तु दिने दिने सक्तं न हलये चैव परे
हानि तिलोदकं गर्गापि पक्षश्राद्धे हिरण्ये च अत्र ब्रज्यति लोदकमिति तथा प्रा
गप्य रजाते गर्जः कृष्णे भाद्रपदे र्मासि श्राद्धं प्रति दिनं भवेत् पितृणां प्रत्यहं क्ता
र्यं निषिद्धा हे पितर्यो सक्तं न हलये स्यादष्टकास्वंत एव हि इदं निषिद्धदि
ने पि कार्या तिथि तीर्थविशेषेषु कार्यं प्रेते च सर्वदेति स्मृत्यर्थं सारोक्तैः तीर्थेति
पि विशेषे च गद्यायां प्रेतपक्षके निषिद्धे पिदिने कुर्यात्तर्पणं तिलमिश्रितमिति
स्मृतिरत्नावल्या वचनाच्च एतच्च श्राद्धं मलमासेन कार्यं न दाह्यतुः तद्विश्राद्धं
तथा सोममग्न्याधेयं मलालये राजाभिषेकं काम्यचन कुर्याद्ब्रह्मलंघिते इति
हेमाद्रौ नागरवंडे पि न भोवाय न भस्यो वा मलमासे यदा भवेत् सप्तमः पितृ
पक्षः दस्यत्रैव तपंचमः एतच्च पित्रोर्मरणे प्रथमाब्दे कृता कृतमिति त्रिस्थलीसे

राम
२७

नौभटाः इदंचनित्यं काम्यं पुत्रानाद्युत्तथास्तथापरोर्यमेष्ट्वर्यमतुलं तथा ।
 प्राप्नोतिपंचमेदत्वाश्चादं कामाश्च पुष्कलानिति जावत्पुक्तैः हस्त्रिकैः समन्तिजो
 तेपितरो देवतैः सह निःश्वस्य प्रतिगच्छति शापेदत्वासुदासं मिति कृष्णाजिन
 वचनाच्च तदिजमे प्रायश्चित्तमुक्तमविधाने दुरोऽश्वस्य मेत्रं च दशमासदिमा
 सयोः महालयं यदा मृतं तदा संसर्गमेति तदिति द्विमासयोः कन्यातुल्योः महा
 लयश्चादं यदा हीनमित्यर्थः अत्र भरण्याश्चादमति प्ररासं तदुक्तं पृथ्वी चंद्रो
 दये मास्ये भरणी पितृ पक्षे तु महिती पारिकीर्तिता अस्याश्चादं कृतं तेन स
 गयाश्चादं कृतं वेत् पृथ्वी चंद्रोदये श्रीधरीये हाहस्पतिः नभस्यापरपक्षस्य ।
 द्वितीया यदि यास्य मे तृतीया चाग्निता राभिः सहिता प्रीतिदायितुः रातस्य
 क्षेष्ठी योगविशेषेण कपिला संज्ञा तदुक्तं वाराहे नभस्य कृष्णपक्षे तु रो
 हिणी यातु भस्मंतेः पुक्तं क्षेष्ठी पुराणतैः कपिला पारिकीर्तिता व्रतोपवासनिष
 मैः भास्करतज्जपयेत् कपिलां च द्विजाप्रायदत्वा कृतफलं भवेत् पुराणस
 मुच्चये भाद्रमास्यसिने पक्षे भानो चैव करे स्थिते याते कुजे च रोहिण्यां साक्षेष्ठी
 कपिला भवेत् अत्र दर्शितत्वेन महालयो भ्राद्रकृष्णपक्षयोः ज्ञेयः इत्युक्तं निर्ण

नि.सिं.
२८

१८

पामते हेमाद्रौ च हस्तार्कस्तफलातिशयायः संयोगे तु चतुर्णां निर्दिष्टा परने
विनेति तत्रैवोक्तेः अत्र विशेषो हेमाद्रौ स्कांदे देवदासतत्त्वे यो रीरं कुं कुं
मेलामनः शिलां पत्रकं पद्मकं वृष्टी मधुगव्येन पेययेत् क्षीरेणागलाग्राक
ल्लेन स्नानं कुर्यात्समंत्रकं आपस्त्वमसि देवेण ज्योतिषां युतिरेव च पापं नाराय
मे देव वाऽमन कर्म काय जं पंचगव्यं कृतस्नानं पंचभंगे स्नानं जायेत् पंच
भंगेः पंचपलैः तथारत्नैर्नाना विधैर्दत्तं सोवर्णं कारयेद्रविं रक्षितं स्तफ
लाहर्धं तदर्थं कर्षितोपि सोवर्णं मरणं कुर्यान्नौकोंचैव न चारयो तथा ल्यवि
त्रोपियः कश्चित्सौपिकुर्यादिमं विधिं प्रभासखंडे स्थापयेद्द्वारं कुंभं चंद
नोदकं धरितं रक्तवस्त्रपुगधनं ताम्रपात्रेण संयुतं रथो रौक्मपलस्यैव
राकचक्रः सुचिजितः सोवर्णपलसंयुक्तं सति सूर्यस्य कारयेत् ततः सूर्य
कपिलां च बोधोपचारैः संप्रज्य दद्यात् दिव्यमूर्तिं त्रिगुणं बुद्धादरात्मादिवा
करः कपिला संहितो देवो मम मुक्तिं प्रयच्छतु तस्मात्तुं कपिले पुण्या सर्व
लोकस्य यावन्ती प्रदत्ता सूर्येण मम मुक्तिं प्रदा भवेति विशेषांतरं तत्रैव ज्ञेयं
मिति दिक् इयमेव चंद्रवृष्टी सा चंद्रोदयव्यापिनी ग्राह्या उभयत्र तथा च

राम
२८

पूर्वोक्तदुक्तं भविष्ये तद्वापदेमासिषव्यापक्षे सितेपरे चंद्रो वक्षी ब्रतं कुर्या
 त्सर्ववेधः प्रशस्यते चंद्रोदये यदा वक्षी पूर्वा देवा परे हनि चंद्रवक्ष्य सितेपक्षे
 सैवोषोष्याप्रयत्नत इति अथ म्यामाश्र लायनेन माघावर्ष संज्ञे प्रादु मुक्तं एते
 न माघावर्षे प्रोष पद्या अपरपक्षे इति इदं सप्तम्यादिषु त्रिषु हः सुकार्यमिति
 नारायणहृत्तिः हरदत्तस्तु मघा युक्तवर्षा सुभवं त्रयोदशी प्रादु मिति म्याच
 रव्योष्ट्वी चंद्रोदये ब्राह्मे आषाढ्या पंचमे पक्षे गयामध्याह्नमी स्मृता त्र
 योदशी गजघाया गयानुल्यातुल्यातुपेतकैः आश्विनकृष्णाम्या महा
 लक्ष्मी व्रतं तत्र निर्णीयामृतपुराणसमुच्चये श्रियार्चनं भ्राद्रपदे सितवर्षे मी प्रा
 रभ्य कन्या गते च सूर्ये समापयेत्तत्र त्रियोचयावत्सर्वस्तु पूर्वार्धगतो युवत्या
 इति तत्रैव कन्या गते क्वे प्राभ्यकर्तव्यं निश्रियार्चनं हस्तप्रातदलस्थे क्वे तद्व्रतं न
 समापयेत् पूजनीया गृहस्थानामष्टमी प्रातृषि श्रियः दोषैश्चतुर्भिः संन्य
 ता सर्वसंपत्करी तिथिः पुत्रसौभाग्यराज्यायुः नारिणी सा प्रकीर्तिता तस्मा
 त्सर्वप्रयत्नेन त्याज्या कन्या गते रवौ विशेषेण परित्याज्या नवमी द्वितीयायदीति दो
 षचतुष्टयं तत्रैवोक्तं त्रिदिने चावमे चैव अष्टमी नोपवा सयेत् पुत्रहानवमी

११

विद्वात्स्वध्रीहस्ताधर्मोर्धगेरवोइति त्रिदिनाचसदिनलक्षणं रत्नमासायां यत्रै
 कः स्पशति तितिथिद्वयावसानेवारश्चेदवमदिने तदुक्तमार्थः यः स्पर्शाद्रव्यतिति
 थिजयस्य चाद्रोत्रिद्युस्य कथितमिदं द्वयंचनेष्ट एतेच सर्वे निवेधाः प्रथम
 मारंभविषयाः मध्येतु सतिसंभवेज्ञेयाः ज्ञतस्य षोडशाव्यसाध्यत्वेन मध्ये
 त्यागायोगात् इयंचंद्रोदयव्यापिनी ग्राह्या तत्रैव यज्याद्युक्ते परदिने चंद्रोद
 याहर्ध्वं त्रिमुहूर्तव्यापित्वे परैव कार्या अन्यथा पूर्वैव पूर्ववा वा परविद्वावा
 ग्राह्या चंद्रोदये सदा त्रिमुहूर्तव्यापिसाध्या परतश्चार्धगामिनीति मदनर
 त्ने निर्णयाम् ते च संग्रहोक्तेः अर्धरात्रिमतिक्रम्य वर्तते यो तत्र रातिथिः तदा त
 स्यातिथ्यो कार्यं महालक्ष्मी जतं सदेति वचनाच्चेति संक्षेपः इति महालक्ष्मी जतनि
 र्णयः अथ नवम्यामन्वष्टकाश्च तत्र कान्यायनः अन्वष्टकासु नवभिः पिंडैः आ
 दमुदाहृतं पित्रादिमातृमध्यंचततो मातामहांत केचन च वक्ष्ये क्रमः स्मृतः श्री
 पृथ्वी चंद्रोदये ब्रह्मांडे पितृणां प्रथमं दद्यान्मातृणां तदनंतरं ततो माता महा
 नां च अन्वष्टकोक्रमः स्मृतः आहरे मादौ छागलेयः केवलास्तः पक्षेयका
 र्या ह्यद्वावा दो प्रकीर्तिताः अन्वष्टकासु मध्यस्थानान्या कार्यास्तु मानरः दी

पि कायानुमाजम्नाद् मादोकार्यमित्युक्तं मातृयजननेत्यन्वष्टकात्वादितः हेमाद्रौ ब्रा
 ह्मेयिऽप्यन्वष्टकासु जन्मस्यो मातृ पूर्वतदिष्यते इति ऽप्रवृत्तारवाभेदेन व्यवस्थेति
 पृथ्वीचंद्रोदयः जीवत्यित् कविष्यमिति निर्णयदीपः इदंच जीवत्यित् केण
 पिकायं तदुक्तं निर्णयामने मैत्रायणीयपरिशिष्टे ऽप्यन्वष्टकंगया प्राप्तौ सत्यो
 यच्च मृते हनि मातुः श्राद्धं सुतः कुर्यात्पितर्ये पि च जीवतीति यद्यपि जीवति
 पितृ कस्य पंचाय्यन्वष्टका अवस्य कर्तव्यास्तथाप्यराक्तस्येव मावरणकी
 योऽप्यष्टकाभयः पितृ लोके भविष्यतीति हेमाद्रौ पाद्योक्तः सर्वासां मे
 वमातृणां श्राद्धं कन्यागते रवौ नवम्यां प्रदानं ब्रह्मन्तजवराय त इति सूते
 नावरणस्तत्प्राप्तेऽप्यप्रजसर्वासामित्युक्तैः स्वमातरि जीवेत्यामपि सपत्नमा
 तृभ्यां दद्यात् तन्मरणोत्पत्तिस्त्येताभ्यश्च दद्यादित्युक्तं जीवत्यित् कनिर्णये गु
 रुभिः ऽप्रजसर्वासां नो मनिर्देशेनैको ब्राह्मणेर्धः पिंऽप्रनामैकेषु द्विवचनादि
 प्रयोगा इत्युक्तं नारायणहर्तौ ऽप्यन्वष्टका श्राद्धं तद्यागश्च गोभिलीयानां म
 ध्यमायामेव न सर्वासु ऽप्यन्वष्टकं मध्यमायामिति गोभिलगोतमाविति
 धंदोगपरिशिष्टात् ऽप्रजभर्तृ मरणोत्तरं पूर्वमृतमातृ श्राद्धं तर्कार्यमिति

केचिदाहुः पठन्ति च आहुं न वयं कुर्यान्न तस्मै भर्तृरित्युच्यते इति तदैत
 त्त्रिर्मूलत्वात् न खलु यत्तारणमात्रं आहुदीयकलिकायां ब्राह्मे पितृमातृ
 कुलोत्पन्नायाः कश्चिन्मृतास्त्रियः तदुक्तं आहुमूलपात्रेण मातृस्ये अत्रमा
 वास्याष्टकात्तस्मपक्षपंचदशीषु चेत्यभिधाय एतच्चानुयनीतोपिकुर्यात्स
 वैष्णववत्स आहुं साधारणनाम सर्वकामफलप्रदं भार्याविरहितोऽप्यतस्मै
 वासस्योपिनित्यशः शूद्रोऽप्यमंगवत्कुर्वादेतेन विधिना वृधः इति तेन सांगे
 गृह्ये ग्रावे वेदमिति परास्तं अन्यष्टकात् प्रथमे वेदं मातुः आहुं मित्यपि पर
 रास्तं लाघवेन मूलैक्यादष्टकायदा विशेषाच्च तेन अन्यत्र अष्टका आहुस्यां
 गस्यापि अत्र प्रधानत्वं वचनात् तथा गिरपुराणे अन्यष्टकासहस्रौ च गद्यायां च
 भयेदिति अत्र मातुः प्रथक् आहुं अन्यजपतिना सह आपस्तंबानां त्वष्टकासच
 सहस्रौ चेति भाष्यकारैः पाठादष्टकायां मातृ आहुं घंदोगैश्च त्रमातृमातामहस्रा
 देन कार्यं किं न त्रिपुरुषमेव न योषज्यः यथक् दद्यादवसानदिना इति क
 समन्वितं मन्वा नयाद्यं आहुषोऽशं प्रत्यादिकं वत्तेषु पिंडास्युः षडिति रिप
 तिरिति घंदोगपरिशिष्टात् अन्यष्टकासु तेष्वा कर्तृविधानादिति मूलपात्रेणः

100A

यत्तु नमि श्रयश्च नवमी मुण्याभाद्रपदे हि या चत्वारः पार्वणाः कार्या पितृ पक्ष्ये
मनीषिभिरिति न देशाचारतो व्यवस्थितं तेयं इदं जीवात्पितृके नापि सपिंडकं
कार्यं हेमाद्रौ विष्णुधर्मोत्तरे अन्वष्टकासु च स्त्रीणां श्राद्धं कार्यं न थैव चेत्पुत्र
स्य पिंडनिर्वपणं कार्यं न स्याम पितृसत्तमेति वचनश्राद्धविधिना पिंडदाने प्राप्ते
पुनस्तत्कीर्त्तिनं यस्य जीवत्पितृगर्भिणी पतित्वादि पिंडदानं निषिद्धं न स्य तत्प्रा
पूर्यमिति श्रीतानचरणाः पुत्रसुवासिनी भोजनमुक्तं मार्कंडेयपुराणे मातुः श्राद्धे
न संप्राप्ते ब्राह्मणेः सह भोजनं सुवासिन्यै प्रदानव्यमिति शातानयो ब्रवीत् भर्तुरग्रे म
तानारी सह दाहे न वाम्ना तस्यास्थाने नियं जीतविधेः सह सुवासिनी तत्रैव मदाल
सावाकं स्त्रीश्राद्धपुत्रदेयाः स्युरलंकाराश्च योषिते मंजीरमेखला दामकर्णिका
कंकणादय इति पुत्रशक्तावनुकल्पमाह खलायनः पुनरुदोषवसमाहरेदग्निना
वाकक्षमयोषेदेवामेष्टकेति न त्वेवानष्टकः स्यादिति हेमाद्रौ धितामहः पुमावा
स्याव्यतीयातपोर्णमास्यष्टकासु च विद्वान्श्राद्धमकुर्वीत नरकं प्रतिपद्यते अ
करणे च प्रायश्चित्तमुक्तं मन्विधाने एभिद्युभिर्ज्येष्मं जं शतवारं न तदिने

आन्वयं कं यथाश्रन्यं संपूर्णं याति सर्वथेति एतन्नयक्षे द्वादश्यां विशेषः यद्यी
 चंद्रोदये वायवीये संन्यासिनो व्याधिकादिपुत्रः कुर्याद्यथाविधि महालये तु य
 श्राद्धं द्वादश्यां विधेयं तज्जति अथ त्रयोदशी श्राद्धं तज्जति चंद्रिका त्रयोदशी भाद्र
 पदी क्ताष्मासुरव्यापित्वा प्रिया तद्व्यति पितरस्तस्यां स्वयंपंचशतं रासाः मघा यु
 तायां तस्यां तु जलाघोरपितो धिताः तद्व्यति पितरस्तद्वद्वर्णाणां मधुना पुते पु
 योगा पारजाते रंरवः प्रोष्टपद्या मतीतायां मघा युक्ता त्रयोदशी प्राप्य श्राद्धं तु कर्तव्यं
 मधुना यायसे न च प्रजा मिच्छा यराः स्वर्गमारोग्यं च धनं तथा नृणां श्राद्धे सदा प्री
 ताः प्रयच्छंति पितामहाः एतन्नित्यमपि यद्यी चंद्रो विष्णुधर्मप्रोष्टपद्या मतीतायां त
 याह्मणा त्रयोदशी तु क्ता एतास्तु श्राद्धकालान्ये नित्यानां ह प्रजायतिः श्राद्धमेते
 श्वकृत्वा एता नरकं प्रतिययन्त इत्युक्तेः एतच्चा विभक्तैरपि पृथक् कार्यं तथा च हेमा
 दौ विभक्ता विभक्ता वा कुर्युः श्राद्धं पृथक् कृत्वा तः मघासु च ततो न्यत्र नाधिकारः पृथ
 ग्विनेति अपरा कं वायवीये हंसे हस्तस्थिते यातु मघा युक्ता त्रयोदशी तिथिर्वै कस्य
 तीनामसा धाया कं जरस्य तु अत्र च अपि नः सकृत्से भ्रया घोनी दद्या त्रयोदशी पायसं
 मधुसर्पिभ्यां प्राकृष्टाये कं जरस्य चेति विष्णुमनुवचने कंवलजयोदशी श्रुते

मघायाऽङ्ग इति कल्पतरुः शूलपाणिस्तु केवलवाक्यानामर्थवादत्वाविधौ च
 मघायोगश्रुतेर्विधिं लाघवादिशिष्टमेव निमित्तमित्याह वस्तुनस्तु मधुर्मांसेऽप्य
 शाकैश्च ययसायायसेन च एष नोदास्यति श्राद्धं वर्षासु च मघासु चेति विशिष्टवच
 ने केवलमघाश्रुतेर्विनिगमकाभावाद्भयं निमित्तं निमित्तं पूर्वोक्तवचनाच्च योगाधि
 के फलाधिक्यं अतएव याज्ञवल्क्यः वर्षात्रयोदश्यां मघासु च विरोध इति त्रयोदशी
 श्राद्धं नित्यं अन्यत्काम्यं अत्र त्रयोदश्यां बहुषु त्रयोदश्यां मघासु च विरोध इति त्रयोदशी
 के पुनरुक्तमपत्यदोषं सहिष्णो रयत्यमाजार्थिनः स्मृत्यन्तरोक्तधनार्थिनो वाधि
 कार इति कल्पतरुः अयत्नं निन्दयात्तदर्थिनो नधिकारात्फलं तत्कामस्येवाधिकार
 इति हलायुधः एतत्पिंडं रहितं कार्यं मघाद्युक्तत्रयोदश्यां पिंडं निर्वर्णं हि ज्ञः स संता
 नो नैव कुर्यान्नित्यते कवयो विदुः इति वस्तुस्यति पराशरोक्तेः इदं मलमासेषि कार्यं मघा
 त्रयोदशी श्राद्धं प्रत्युपस्थितहेतुकं अनन्यगतिकत्वेन कर्तव्यं स्यान्मलिनमुच्येति पाठ
 कर्तव्योक्तेः यानि तु अंगिराः त्रयोदश्यां कृत्वा पक्षेयः श्राद्धं कुरुते नरः पंचत्वं तस्य
 जानीयाज्येषु त्रयोदश्यां निमित्तं वामनपुराणे त्रयोदश्यां तु वै श्राद्धं न कुर्यात्तु त्रयोदशी
 न्यासीति वचनानि पुत्रविधिषयाणि वामनसालयस्य भिन्नत्रयोदशी विषयाणि वाकाम्य
 श्राद्धं विषयाणि वा सपिंडकश्राद्धं विषयाणि चेति केचित् हेमाद्रिप्रसुरवास्त्वेकवर्ग

नि. सि.
१०२

102

आद्विषयाणि आद्वैतैकवर्गस्य त्रयोदश्यामुपक्रमेत् ननु प्रास्तत्रयेयस्य प्रजा
हिंसति तस्य ते इति कार्त्तजिनस्मृतेः यद्यपि पितरो यत्र दृश्यन्ते तत्र मातामहा अपीति धौ
श्याक्तेर्न केवलपितृवर्गस्य प्राप्तिस्तथा आमाहादिप्राप्तिष्वेधो यं पितृव्यादिसर्वे आद्वय
रोवेत्याहुः वयं तपस्यामः पुत्रवद्विषयाण्येवेति असंतानस्तस्य तस्य आद्वे प्रोक्ता
त्रयोदशी संतानपुक्तोयः कुर्यात्तस्य वंशक्षयो भवेदिति हेमाद्रौ नागरवंडे क्लेः
सर्ववाक्यमप्यसंतानस्यैकवर्गनिषेधकमिति अत्र मघाजयोदशी महालयपु
गादिप्राधानां तत्रेण प्रयोगः ननु प्रसंगसिद्धिरिति अन्यत्र विस्तरः अथ चतुर्दशी
पृथ्वीचंद्रोदये प्रचेताः हृक्षारोहिण्यलोहाद्यैर्विद्युज्वालाविषाग्निभिः नरिवदंष्ट्रि
वियत्रानां तेषां शस्ता चतुर्दशी ब्राह्मे पुवानः पितरो यस्य मृता शस्त्रेण बाहताः
तेन कार्यं चतुर्दश्यो तेषां तृप्तिमभीक्षिता नागरवंडे अयमृत्युर्भवेत्तेषां शस्त्र
मृत्युरथापि वा आद्वैतेषां प्रकर्त्तव्यं चतुर्दश्यो नराधिप मरीचि विषशस्त्राण्य
वादहितिर्यग्राह्य एघातिनां चतुर्दश्यो क्रियाकार्या अन्येषां तु विगर्हिताः अ
त्राह्मणघातौ तेन हतेन ननु ब्राह्मण तस्य पतितत्वादिति श्रुत्याणिः अत्रेदं यद्यपि
संशया स्याद्विदितत्वात् स्त्रीणां मपिशस्त्रादिहतानामेवोद्विष्टं कार्यमिति श्री
दत्तोपाध्यायः यत्तु शाकटायनः जलाग्निभ्यां वियत्रानां संन्यासे बाटहे यथि

राम
१०२

४ तद्वद्विपुला मन्त्रं भवेत् तच्छ्राद्धं देवदीनं चेत्पुत्रारधनक्षयः एकोदिष्टं ४४

102A

श्राद्धं कुर्वीत ते यो वै वृत्तिं पितृचतुर्दशीमिति तत्प्रायश्चित्तार्थजलादिमृतवि
षयमित्याकारेऽक्तं अतएव वैधत्यासहगमने पितृकार्यमिति हेमाद्रिः एतच्च दे
वयुक्तमेकोदिष्टं कार्यमित्युक्तं प्रयोगपारजाते प्रेतपक्षे चतुर्दश्यामेकोदिष्टं
विधानतः देवयुक्तमित्येवं मनुरन्नवीत् भविष्ये पिसमत्वं मागतस्यापि पितुः
शस्त्रहतस्य च चतुर्दश्यात्कर्मव्यमेकोदिष्टं महालये चतुर्दश्यात्तयश्चाहुं सपि
त्रीकरणे कृते एकोदिष्टं विधानेन तत्कार्यं शस्त्रघातिन इति संवत्सरप्रदीपे ही
रीतः विष्टे देवास्तत्रापि यजिषित्वा दितौ मलात् ये वै शस्त्रहतास्ते वा श्राद्धं कु
र्वीत दंष्ट्रितः अत्रैकोदिष्टवचनामां निर्मूलत्वं समलत्वे पिपावर्णे शक्तिवरा
णि विष्टादिवचनैः प्रकरणात्कर्ममक्षीययावर्णावगतेरिति मूलपाणिः
तत्र वाक्येन प्रकरणस्य बाधात् पित्रादीनां पावर्णे भात्रादीनां मेकोदिष्टमिति
गोडावाचः तत्र पितृरित्यनेन विरोधात् विरोधवाक्ये वेय्यापने अतः
एवैकमेव साधु अत्र शस्त्रहतश्चैव चतुर्दश्यामिति नियमो न तु चतुर्दश्यमेव
शस्त्रहतस्येति श्राद्धं शस्त्रहतस्ये चतुर्दश्यां महालये इति कालादरात् वार्षिका
दीनामकरणापने तेन महालये एव दिनां तरे पावर्णा माता महादितृप्यर्थे

वि.सिं.

१०३

103

कार्यमेव पिनामहोपिरासुहृत्तश्चेद्वैकोदिष्टद्वयं कार्यं तदुक्तं हेमाद्रौ स्मृत्यंत
रे एकस्मिन् द्वयोर्वैकोदिष्टमिति त्रिषु रासुहृत्तेषु पार्वणमेव कार्यं यत्तु देव
स्यामिनोक्तं त्रिषु पिरासुहृत्तेषु पृथगेकोदिष्टत्रयं कार्यं न तृपार्वणमाह य
त्तवचनाभावादिति तदुक्तं पित्रादयस्त्रयो यस्य रासैर्घातास्त्वनुक्रममात्रं स
भूते पार्वणं कुर्यादादिकानि पृथक् पृथगिति ब्रह्मराशरोक्तं एकस्मि
न्वा द्वयोर्वैकोदिष्टद्वये एकोदिष्टसुतः कुर्यात्त्रयाणां दरीवद्भवे
दिति स्मृत्यंत राशौ तिष्ठन्ती चंद्रोदये उक्तं अप्रगर्के हेमाद्रौ चैवं यस्त्वत्रैव रा
स्रादिना हतस्य वर्षिकमेव पार्वणमेकोदिष्टं वा कार्यं न तत्राह द्वयं प्रसंगे
सिद्धेरिति पृथ्वी चंद्रोदये अत्राह्वाकरणे गिरिमपरे दिनांतरे पार्वणे नैव का
र्यमिति तत्रैवोक्तं यद्यपिरासुविप्रहृतानां च मृगिदंष्ट्रिसरीसृपैः आत्मन
स्यागिनां चैव आह मेघानकारयेदिति घागलेपाथैः रास्रादि हृतानां आहं निवि
द्धं तथापि प्रमादमृतानां आह्वात्वात् कार्यं ब्रह्मादिभिर्बुद्धिपूर्वमृतानां तु
कार्यं यत्तु चतुर्दश्यांतर्गणीया लुप्तपिंडोदकक्रिया इति ब्राह्मणतद्भाषि

राम
१०३

तिप्रलपारिः लक्षणायां मानाभावात्पतिनेनाधिकर्त्तव्यं पतिनस्य चेति ग
 यादिवद्विसेयविधिवलात्पतिनामपि कार्ये इति न व्यगोशः तत्त्वं तु समत्वमा
 गतस्येत्यादिवशात्कृतक्रियाणां कार्ये नाप्येवामिति वयं प्रतीमः यत्तु मनुः न
 पैतृयज्ञियो होमो लौकिकामौ विधीयते न दर्शेन विना आहुमाहिताग्नेविधी
 यते इति अत्र पूर्वार्द्धहेतुत्वेनोक्तं तद्यथा श्रुतमेव मन्वते यद्धीचंद्रोदयः आहि
 ताग्नेः पितृयज्ञकल्पेन आहुनिषेधार्थमिदं न तु सांकल्यादेरधीत्यस्मद्गुरवः क
 ष्यपक्ष आहुमन्वादिनेषु प्राप्ता हिताग्नेदर्शेनियम्यते इति न वयं दर्शेन पार्वणे
 न विना आहुं न तेन कापि वार्धिकार्ये एकोदित्वेनेति हरिहरः इति च तदर्शो अ
 मायां विशेषमाहायराकेंयमः हंसेकस्थितं यातु अमावास्याकराचिता सातेया
 कुंजरघाया इति वीधाय नो ब्रवीत् भारते अजेन सर्वलोहेन वर्ध्यासु नियतव्रतः दि
 हस्तिघायासु विधिवत्कार्णव्यजनवीजिते आहुंदद्यादिति विशेषः आश्विन
 शुक्लप्रतिपदि दौहित्रस्य मातामह आहुमुक्तं हेमाद्रौ संग्रहे च जातमात्रोपि दौहि
 त्रोपि घमानेयमातुले कुर्यात्मातामह आहुं प्रतिपद्याश्विने सिते इति इयं संगव्या
 पिनी ग्राह्येति निर्णयदीपे उक्तं प्रतिपद्याश्विने शुक्ले दौहित्रस्त्वेकपार्वणे आहुं मा

तामहं कुर्यात्सपिबेतासंगवेसदा जानमाजो पिदोहि त्रोजीवत्यपि चमातुले प्रातः संग
 वैद्योर्मध्येऽप्रायस्य प्रतिपद्वेदिति वचनात् अत्र समलत्वं विस्तरं इदं च मल
 मासेन कार्यं स्पष्टमास विशेषारब्धा विहितं वर्धयेन्मले इति निषेधात् इदं च
 जीवत्यित् केनैव कार्यमिति शिष्टाः इदं च शिष्टाचारात्सऽपि उक्तं कार्यमिति के
 चित् पिंडरहितं तदुक्तं जीवत्यित् कस्य सं उ नं पिंडदानं च प्रेतकर्म च सर्वशः
 न जीवत्यित् कः कुर्यात्तदुर्विणीयति रेव चेति दक्षणा पिंड निषेधात् अत्रान्व
 द्यवद्विशेषवचनात् भावाच्चेति संक्षेपः इति श्रीकमलाकरभट्टकृते नि
 र्णयसिद्धौ महालय निर्णयः अथाश्विन शुक्ल प्रतिपदि नवरात्रारंभतन्नि
 र्णयः तत्र भार्गवाचनदीपिकायां देवीपुराणे सुमेधा उवाच ऋणुराजन्
 प्रवक्ष्यामि चंडिकायां जनकं संश्रान्तस्य सिते पक्षे प्रतिपदसु सुमेदिने इ
 त्युपजन्म्योक्तं शुद्धतिष्ठो प्रकर्तव्यं प्रतिपद्योर्ध्वगामिनी आघातनाडिकाः
 त्यक्त्वा ओं ह्रादशापि वा किंचिन्मूहूर्तमात्रं प्रपराङ्मेव कर्तव्यं शुद्धसंतति
 काक्षिभिः इदं चापराह योगिन्याः प्ररासं द्वितीयदिने प्रतिपदोऽभावे ज्ञेयं
 यदा सूर्यादये प्रतिपद भवति तदा परैरेव तथा तत्रैव देवीपुराणे जमरतं जैव

देवीवाक्यं प्रमायुक्तानकर्तव्याप्रतिपत्सु जने मम मुहूर्तमात्राकर्तव्यादि
 तीयादिगुणान्विता आघाषोऽशनादीस्तुलाधायः कुरुते नरः कलशस्था
 पनकं तत्र अरिष्टं जायते ध्रुवं मार्कंडेयदेवीपुराणयोः पूर्वविज्ञातया शु
 क्तभवेत्प्रतिपदाश्विनी नवरात्रव्रतं तस्यां नकार्यं शुभमिच्छता देशभ
 गभवेत्तत्र दुर्भिक्षं चैव जायते नंदायां दर्शयुक्तायां यत्र स्यान्मम यजने इति स्का
 देपि प्रतिपदाश्विने मासि सा शुद्धा शुभदा भवेत् भाद्रपददर्शित्वा नंदायुक्ता
 नरास्यते विरुद्धफलदा सा हि पुत्रदारभया वदेति तथा वर्जनीया प्रयत्नेन
 प्रमायुक्ता तु पार्थिव द्वितीयादिगुणैर्युक्ता प्रतिपत्सर्वकामदा तथा देवीपु
 राणे यो मोक्षयते नित्यं द्वितीयादिगुणान्विता प्रतिपत्स्वारक्षोऽज्ञात्वा सो
 मुने सुखमव्ययं यदिकुर्यादमायुक्तप्रतिपत्स्थायनं मम तस्य संयदि नराः
 स्याज्ज्येष्ठः पुत्रो विनश्यति प्रमायुक्तानकर्तव्याप्रतिपच्चंडिकाचने धनार्थि
 भिरिरोवेणावंशानि श्रुजायते नंदरीकलयायुक्ता प्रतिपच्चंडिकाचने
 उदयोदिसुहृता पिग्नाद्या सोदयगामिनीति देवीपुराणे याचाश्वपुजिमा
 से स्यात्प्रतिपद्द्वयान्विता शुद्धा ममाह्वने तस्यां रातयत्तफलप्रदं रुद्रयामले

नि.सिं.
१०५

105

अमायुक्तासदाचैवप्रतिपन्निदितामता तत्रचेत्स्थापयेत्कुंभं डुर्भिक्षं जाय
ध्रुवं प्रतिपत्सद्वितीयातुकं भारोपण कर्मणि इति यद्यपिरुद्रयामलेंगम
रंच निर्मूलं तथाप्यविरोधात्प्रचाराच्चैतद्वचनानिलिख्यते तिथितत्वेदेकी
पुराणेपि प्रातरावाहयेदेवीप्रातरेवप्रवेशयेत् ततःप्रातश्चसंयज्यप्रातरेववि
सर्जयेत् तत्रैव शरत्काले महासृजाक्रियते याचवर्षिकी साकार्योदयगामिन्या
नतत्रतिथियुगमता तथा कुरुकाष्ठोपसंयुक्तां वर्जयेत्प्रतिपत्तिं राज्यनाशा
यथाप्रोक्ता निदितावाश्चसृजने इति एषु वचनेषु कलशस्थापनेग्रहणतदेवप्र
थमदिने निविध्यते नत्पयतासादि तस्यप्रतिपद्यमावासेति युगमवाक्या
त् ऋक्सास्यभ्यप्रतिपत्तिथिः प्रथमत इति दीपिकोक्तेः ऋक्पक्षेदरीचिद्धेति मा
धवोक्तेश्च पूर्वदिने प्राप्स्यवाधेमानाभावादिति केचित् वक्तृपूर्वाक्तवा
क्येषु चंडिकार्चनसृजनग्रहण उपवासादेश्चांगत्वात्प्रधानदेवीसृजादाव
विषरेति युक्तं कलशस्थापनग्रहणं नृपलक्षणं अतएव देवलः व्रतोपवा
सनियमेधदिकैकापि या भवेत् सा तिथिस्तदिने सज्याविषरीतातयेत्तु के
इति अत्रघटिकासु रूर्त इति गौडः यदानुपूर्वदिने संसर्गिषु वाचभूत्वा

राम
१०५

105A

परदिनेवर्धतेनसंस्पर्शत्वादसायोगाभावाच्च पूर्वव यानिचद्वितीयायोगा
निबेधकानिवचनानिकेचित्पठंति तान्यपिमुद्राधिकनिबेधपरणि पर
दिनेप्रतिषेदोत्पत्ताऽसत्येतदर्थयुतापिपूर्वैवग्राह्या तदाहलक्षः तिथिःशरीरं
तिथिरेवकारणंतिथिःप्रमाणंतिथिरेवसाधनमिति यानित्यमायुक्ताप्रक
र्तव्येत्यादीनिनृसिंहप्रसादेनवचनानितानिसमस्तत्वेसत्येतद्विषयाणि
अत्रेदंतत्त्वपूर्वोक्तवाक्यानां सर्वेषांहेमाद्याद्यलिरिवतत्वेननिर्मलत्वापत्ते
आन्यनिर्णयस्यानुक्तेः सामान्यनिर्णयात्पूर्वत्रप्राप्तावपिगोउनिबंधेषुवि
रोधनिर्णयादोदधिकीग्राह्या तत्रापिघटिकैकेन्यस्यद्विमुहूर्तस्तुतिवोक्तै
र्द्विमुहूर्तौग्राह्या उदतेदेवतभानाविन्यत्रद्विमुहूर्तात्रिरुश्रेतिश्लोदधिक्या
द्विमुहूर्तत्वनियमात् तेनउदयेद्विमुहूर्तापीत्याद्यलसारोधि मुहूर्तमात्राकर्त
व्येतिउद्विमुहूर्तस्तुतिः अन्यथाद्विमुहूर्तविधिर्वेयर्ण्यात् केचित्तुमुहूर्तमा
त्रेतिवचनात्ततोन्म्यनत्वेपरानेत्याहुः गोडाश्रयेवं अत्रदेवीपूजेवप्रधानं
उपवासादेतंगं अष्टम्याचनवम्याचजगन्मातरमंविक्तां पूजयित्वाश्विनेमा
सिबिशोकोजायतेनरः इतिहेमाद्रौभविष्येनस्यास्यैवफलसंबंधात् नवमीति

ए

नि.सिं.

१०६

106

थियर्थं तं ह ध्यायन्नाजयादिकमिति तत्रैव देवीपुराणां च शारत्काले महासूजा
क्रियते याच चार्घ्यकीर्तिमार्कंडेयपुराणां च सर्ववचनादष्टमीनवमीयुजेव
प्रधानमन्यत्सर्वमंगलमिति गौडाः एकाहयक्षोपिका लिकापुराणे यस्त्वेक
स्यामथाष्टम्यां नवम्यामयसाधकैः पूजयेद्दरदां देवीं महाविभवे विस्तरेरिति
रूपनारायणधृतदेवीपुराणे महानवम्यां पूजयेत्सर्वकामप्रदायिका सर्वेषु
वत्सवर्णेषु तव भक्त्या प्रकीर्तिता कृत्वा प्रोत्तियशो राज्यपुत्रायुधनसंपदः सा
च काम्या नित्या च एव मन्येरपितथा देव्याः कार्यं पूजयन् विभूतिमतलाल
धुंचतुर्वर्गप्रदायकमिति यामोहादयवा लस्या देवीदुर्गां महोत्सवे न पूजय
ति दंभाद्वा देवाद्या यथभैरवं जुह्वा भगवती तस्य कामानिष्टान्निहन्ति चे इति
कालिकापुराणे फलनिंदाश्रुतेः वर्षे वर्षे विधातव्यं स्थापनं च विराज्जीन
मिति तित्थितत्वे देवीपुराणां च श्रुतौ यवासादिकमुक्तं हेमाद्रौ भविष्ये एवं च
विंध्यवासिन्यां नवरात्राय वा सतः एकभक्तेन नक्तेन तथैवाचि तेन च पूजनी
या जने देवी स्थाने स्थाने पुरेषुरे गृहे गृहे राक्षसरे ग्रामे ग्रामे वने वने स्नानैः पू
ज्यते ह्ये जासोः शत्रियैर्नृपैः वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैर्ह्ये रन्येऽसमानवैरि

राम
१०६

106A

ति पञ्चरूपनारायणीये भविष्यं एवं नाना स्नेहगणैः पूज्यते सर्वदस्युभिरिति
 तन्नाम सप्तजायं विनामं जैस्तामसी स्यात्किरात्तानां तु संमतेति तत्रैवोक्तेः म
 दनरत्ने देवीपुराणोपि कन्यासंस्थो रवौ शक्रमुक्तमारभ्य नंदिकां अयावीक्ष्य
 वै कार्शीनक्ताशीवायवाद्यदः भूमौ शयीत चामं ज्यकुमारी भोजयेन्मुदावस्त्रा
 लंकारदाने प्रसन्नोऽप्याप्रतिवासरं वलिचप्रत्यहं दद्यादने मांसमाववत् त्रि
 कां संपूजयेद्देवीं जपत्तोत्रपरायण इति नंदिकाप्रतिपदिति मेघिलाः षष्ठी
 तिगोत्रः तच्च पूजनं रात्रौ कार्यं आश्विने मासि मेघांते महिषासुरमर्दिनी
 निरासुसजयेद्भक्त्या सोपवासादिकः क्रमादिति देवीपुराणान् संग्रहेऽपि
 आश्विने मासि मेघांते प्रतिपद्यातिथिर्भवेत् तस्यां नक्तं प्रकुर्वीत रात्रौ देवीं
 च पूजयेत् रात्रिरुपायतो देवीदिवारूपो महेश्वरः रात्रिं तत्र मिदं देवीं सर्वेषां
 पप्रणारानं सर्वकामप्रदं नृणां सर्वरात्रिनिवर्हणं रात्रिं तत्र मिदं तस्य रात्रौ क
 त्वं ज्यते स्यते नक्तं तत्र मिदं यस्मादन्यथा नरकैर्गतिरित्यादिवचनाच्च रात्रि
 त्रतत्त्वमेवाभिप्रेत्य माधवेनोक्तं तस्य नक्तं त्रतत्वादिति ननु रात्रिभोजनात्
 ननु मासि चोत्थियुजेऽमुक्तेन च रात्रौ विरोधतः संपूज्य न वदुर्गी च नक्तं कुर्या

नि.सिं.

१०६

107

समाहितः नवरात्रिभिर्धर्मकर्मनक्तत्रयमिदं स्थितं प्रारंभेन वरात्रस्येत्यादि
स्कादात् माधवोक्तैः अनक्तमेव प्रधानमिति चेत् नवरात्रोपवासतश्च
देरनुययतेः तेन यादिक नक्तानुवादोऽयं न नरात्रेः कर्मकालत्वेन व्यापिनीति
वैजप्रतिपत्त्यानुयात् मैवं न्यायतः प्राप्तावपि पूर्वोक्तवचनेनैवाधानं यथा
वैद्यः कर्मकालव्यापिनीमपित्यस्यास्वल्पाधिपरैव रामनवमीति प्रागुक्तं य
थावा निरीक्ष्ये सतीमपि पूर्वोक्तमाद्यमीत्याकारो हि एतौ क्तपरैवेति मा
धवेनोक्तं तथात्रापि वस्तुतस्तत्रात्रेः कर्मकालत्ववचसां हेमाद्राद्यस्ति रव
नात्समलत्वं विमर्श्य मेवात्रिंशत्कालं पूजयेदित्यादि पूर्वविरोधान्न च माधवो
क्तिस्तयादिक नक्तानुवादश्च तस्मात्सर्वपक्षेषु परैव प्रतिपदिति सिद्धं
अत्र केचिन्नवरात्रिशब्देन वादोरात्रिपरः तद्वैमासिरष्टम्यां कालेमाप्रति
पत्तिरिति प्रारंभेन वचं व्यास्तनवरात्रमतेर्धवदिति देवीपुराणादित्याहुः
तत्र अतिरूपसहस्रैर्नाधिकत्वापत्तेः अत्र मूलाभावाच्च तेन तिथिवाच्ये
वाच्यं तदुक्तं तिथिचूडैर्तिथिरूपेण नवरात्रमपार्थक्यं अष्टरात्रेण दोषोऽयं न व
रात्रिति धिभयेति सच नवरात्रशब्दः क्वचित्क्षणाय कर्मवाची यथा प्रा

राम
१०६

रंभोनवरात्रस्येत्यत्रेतिदिक् प्रतिपद्येद्येत्त्यादियोगनिषेधोभागीवार्चन
 दीपिकायां देवीपुराणोत्वाद्युवैधतयुक्ताचेत्प्रतिपद्येडिका चने तयोरनेवि
 धातव्यं कलशारोपणं गुहेति चित्रोवैधतयुक्तापि द्वितीयायुक्ताचेत्सैवग्रा
 ह्येत्तुक्तं दुर्गासर्वभद्रान्विताचेत्प्रतिपन्नलभ्यतेचिरुद्रयोगैरपिसंगतासती
 सैवापरादेविवृधैर्विधेयाश्रीपुत्रराज्यादिविवृद्धिहेतुरिति यदातुवैधत्या
 दिघरिहारेणप्रतिपन्नलभ्यते तदोक्तं तत्रैव कात्यायनेन प्रतिपद्याश्विनेमासि
 भवोवैधतिचित्रयोः आद्यपादोपरित्याज्यप्रारंभेनवरात्रकमिति भविष्येष्टि
 चित्रावैधतिसंस्मरणप्रतिपद्येद्रवेनप त्याज्यासंस्मरणसप्तस्वाद्यास्तरीयांरोतयजन
 मिति रुद्रयामलेपि वैधतौपुत्रनाशः स्याच्चित्रायाधननाशनं तस्मान्नस्थापयेत्
 कुंभं चित्रायावैधतौतथा संस्मरणप्रतिपदेवचित्रायुक्तायदाभवेत् वैधत्यावापिपु
 क्तास्यात्तदामध्यदिनेरवौ अभिजित्तुमुरुर्नयन्नत्रस्थापनमिष्यते इतिचित्रादिनि
 वेधेसलंचित्यं इदं कलशस्थापनं रात्रौ न कार्यं न रात्रौ स्थापनं कार्यं न च कुंभा
 भिषेचनमिति मात्स्योक्तैः भास्करोदयमारभ्यवाचस्पतुदशनाडिकाः प्रातः का
 ल इति प्रोक्तः स्थापनारोपणादिति विष्णुधर्मोक्तैश्च रुद्रयामले स्नानं मां

नि.सिं.

१०८

108

गलिकं स्नात्वा ततो देवी प्रयजयेत् शुभाभिर्मृत्तिकाभिश्च पूर्वैः कृत्वा तवेदिकां
यवान् चैवापयेत् तत्र गोधूमैश्चापि संयुतान् तत्र संस्थापयेत् कुंभं विधिना मंत्रपू-
र्वकं सौवर्णं राजतं वा पितामं सन्मयजंतु चेति अथ पूजाविधि सा च जयंती
मंत्रेण नवाक्षरेण वा कार्यं तदुक्तं दुर्गाभक्तिरंगिण्या देवीपुराणे कुर्याद्देव्या
स्तु मंत्रेण पूजां क्षीरधत्तादिभिरित्युक्ता जयंती मंगला काली भद्रकाली कया
लिनी दुर्गा क्षिमा शिवा धात्री स्याद्वा स्वधानमोक्तते अनेनैव तत्र मंत्रेण जप होमो
तु कारयेदिति ओं दुर्गे दुर्गे रक्षाणि स्याहेति नवाक्षरः तत्र प्रतियदि प्रातरभ्यंगं कृ-
त्वा देवा कालौ संकीर्त्य ममेह जन्मनि दुर्गा प्रीति द्वा रा सर्वा यद्वा नि पूर्वक दीर्घायु-
विपुल धन पुत्र पौत्राय नवद्वित्र संतति वृद्धि स्थिर लक्ष्मी कीर्ति मल्लभ रात्रु परा-
जय सदभीष्ट सिद्ध्यर्थं शारदन वरात्र प्रतियदि विदित कल रास्यापन दुर्गा पू-
जादिकरिष्ये इति संकल्प्य महीद्यौरिति भूमिं स्पृष्ट्वा औषधयः समिति यत्वा
त्रिसिंघ कलशे स्थितिकुंभं संस्थाप्य इमं मे गंगे इति जलेनाप्यर्घ्यं गंधद्वारा
मिति गंधया औषधीरिति सर्वौषधी कांठात्कांठादिति इत्याः अथ स्येव इति
पंचपलवान् सोनाप्यपि वीतिसप्तमृदः पाः फलिनीरिति फलं सहिरत्नानि हि

राम
१०८

108A

रायं चक्षिष्वायुचासवासा इति वस्त्रेणावेक्ष्य दर्शनादवीति पूर्णपात्रं निधाय
तत्र वस्त्रां संयुज्य जीर्णान् नूतनायां वासूतिमायां दुर्गा मावाह्य पूजयेत् तथ
पादपूर्वीं क्लृप्तं मंत्रमुक्त्वा अग्रागृह्वरदे देवि देत्यर्घ्यं निक्षुद्रति पूजां गृहाण सुमुखि
नमस्ते शंकरप्रिये सर्वतीर्थमयं वारि सर्वदेवसमन्वितं इमं घटं समागच्छति
ष्टदेवगणैः सह दुर्गे देवि समागच्छ सा त्रिधामिह कल्पय वलिं पूजां गृहाण
त्वमष्टभिः शक्तिभिः सहैत्यावाह्यपूर्वीं क्लृप्तं मंत्रेण बोधोपचारैः पूजयित्वा मो
क्षभक्तवलिं कृष्णां गदिवलिं वा निवेदयेत् ततः कुमारी पूजा तदुक्तं हे मां प्रोक्तं
दे एकैकां पूजयेत् कन्या एकत्र ध्यातव्ये वच द्विगुणं त्रिगुणं वापि प्रत्येकं न
वकं तथा तथा नवभिलभते भूमिभैः सर्वं द्विगुणे न तु एकत्र द्यालभेक्षे मं ए
कैनेन श्रियं लभेत् एकवर्षा लया कन्या पूजार्थं तां विवर्जयेत् गंधपुष्पफ
लादीनां प्रीतिस्तस्या न विद्यते तेन द्विवर्षा मारभ्य दशवर्षं ययं ता एव पूज्या
न त्वन्याः तासां वक्त्रं मे एव कुमारी का त्रिमूर्तिः कल्याणी रोहिणी चंडि
का शंभवी दुर्गा सुभद्रा इति नामभिः पूजा कार्याः असांच प्रत्येकं पूजा मंत्रा
फलविशेषा अत एव ज्ञेया सामान्यतस्तु मंत्राक्षरमयी लक्ष्मी मातृणां

रूपधारिणी नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहं एव मभ्यर्चनेन कु
 मारीणां प्रयत्नतः कंचुकैश्चैव वसेत्स्रगंधपुष्पाक्षतादिभिः नानाविधैर्भ
 द्यभोज्यैर्भजयेत्पायसादिभिः तथा ग्रंथस्फुटितशीरांगीरतपयत्रां किंती
 जात्यंधाकेकरांकाणीकुरूपांतरोमसां संत्यजेद्रोगिणी कन्यादासीर्गर्भसमु
 द्भवां तथा ब्राह्मणी सर्वकार्येषु जपार्थेन पवंशजो लाभार्थे चैरण्यवंशोऽस्य
 तार्थेऽद्वयं राजा दुर्गोऽस्य जातानां पूजयेद्विधिना नर इति अत्र वेदपारायणा
 मय्युक्तं रुद्रयामले एवं च त्वेदं विदो विप्रान्सर्वान्प्रसादयेत् तेषां च वरणां को
 र्यं वेदपारायणाय वै इति तथा एकोत्तराभिह्वयानवमीयावदेव हि चंडीपाठं
 जपेच्चैव जाययेद्वा विधानतः तिथितत्वे वाराही तंत्रे प्रणवंचादिस्तोत्रां
 वा संहितां पठेत् अने च प्रणवं दद्यादित्युवाचादियरयः आधारे स्थापयित्वा
 त्र्युक्तं प्रजायेत्सुधीः हस्तसंस्थापनादेव यस्माद्देविफलं भवेत् त्वयं च
 लिरिव तं यच्च ऋद्धेर्लिरिव तं भवेत् अत्रास्त्रेण लिरिव तं नृणां पिविफलं भवे
 त् अथिहंदादिकं न्यस्य पठेत्स्तोत्रं विचक्षणः स्तोत्रेण हृष्यते यत्र प्रणवं तत्र वि
 न्यसेत् सर्वत्र पाठो विज्ञेयस्त्यन्यथा विफलं भवेत् एवं नवमीयर्थं तं प्रत्यहं

109A

कुर्यात् अत्र विशेषो हे माझे देवी पुराणे यदाद्ये दिवसे कुर्यात् चंडिका पूजनादि
 कुं डिगुणं ततदितीये हि त्रिगुणं ततपरे हति नवमीति स्थिपयंतं हृद्या पूजाज
 पादिकमिति एतेन नवरात्रे पूजे वै प्रधानं उपवासादित्यंगामितगम्यते तिथि
 सासेतु तिथिद्वयमिति तित्तं पूजादि महालयमाह वदेकदिने आहृत्या कार्यं
 तद्वैतद्वेवाहतिः तत नवरात्रोपवासादिसंकल्पं कुर्यात् सस्याशक्ताव
 न्येन वा पूजादि कारयेत् स्वयं वाप्यन्यतो वापि पूजयेत् पूजयेत् पूजयेत् तवेति तस्मि
 ण्यं देवी पुराणात् इदं च देवी पूजनं शुक्लादावपि कार्यं तदुक्तं धर्मप्रदी
 पे नष्टे मुक्तेन या जीवे सिंहस्ये च हंसस्य तो कार्यं चैव स्वदेव्यार्चा प्रत्यक्षं
 कुलधर्मत इति मलमासे वचनाभावाच्च भवति अत्र स्वाश्रयस्य पूजन
 मुक्तं मदनरत्ने देवी पुराणे आश्रयपुक् मुक्तं प्रतिपत्त्वा तियोगे शुभे दिने
 पूर्वमुच्चैः श्रवानामप्रथमं श्रियमादरुत् तस्मात्संश्रितैः सत्रपूज्या सोऽश्र
 द्यासर पूजनीया अत रुगानवमीया वदेव हि रांतिः स्वस्तयनं कार्यं त
 दातेषां दिने दिने धान्यभक्ष्यातकं कुक्षं वचा सिद्धार्थकास्तथा पंचवर्णे
 न सत्रेण गंधितेषां तु वंधयेत् वायव्ये वा रुणौ सौरैः राजैर्मित्रैः सवै

नि.सिं.
११.

110

धवैः वैश्वदेवैस्तथा जेयैर्होमः कार्यो दिने दिने कल्पतरो ह्येतदग्रेऽन्यद
पि ज्येष्ठा योगे युरातत्र गजाश्चाद्यो महावलाः पृथिवी मवहनु पूर्वसरोल
वनकानने कुमुदैरावणोपमः पुष्पदंतो यवामनः सुप्रतीको जना नील
स्तस्मात्तंस्तत्र पूजयेत् शक्रादक्षात्समारभ्य नवम्यंतं च पूर्ववत् अश्वबक्षो मा
दादौत्यर्थः अथ प्रतिपदादिषु विशेषो दुर्गाभक्तितरंगिण्या भविष्ये केशसं
स्कारद्रव्याणि प्रदद्यात्प्रतिपदिने पक्षतैलं द्वितीयायां केशसंयमहेतवे प
हो रमिति गोडपाठः दर्पणं चतुर्थयां सिंदूरालक्तकं तथा मधुपर्कं च
तुण्यां तिलकं नेत्रमंडनं पंचम्यां मंगरागं च शक्त्या लंकरणानि च षष्ठ्या
विल्वतरो चोर्धंसायं संध्यात्कारयेत् सप्तम्यां प्रातरागीयगृहमध्ये प्रफू
जयेत् उषोषणमचष्टम्यां मातराभ्यां च पूजनं नवम्यां मुग्रचंडायाः पूजां
कुर्यादलितया संपूज्य प्रेषणं कुर्यादशम्यां सारवोत्सवैः अनेन विधिना
यैस्तु देवी प्रीणयते नरः स्कांदवत्यालये देवी तं पुत्रधनकार्त्तिभिः कृत्यत
त्वारिण्ये लैंगैः कन्यायां कृष्णपक्षे तु पूजयित्वा द्रुमैश्च नवम्यां बोधये
देवीं महाविभवविस्तरेः शुक्लपक्षे च त्र्यंशं तु देवी केशविमोक्षणां

राम
११.

प्रातरेव तपंचम्यास्तापयेत्सुभैजलेः षष्ठ्यां सायंप्रकुर्वीत विल्वसक्षेधिवा
 सनं सप्तम्यां पत्रिकायज्ञा षष्ठ्यां च त्रिजकोत्तुक्तं षुषोषणं यज्ञा च ज्ञा
 गरश्रेव नवम्यां विधिवदलिः विराजं नदशम्यां तु जी उ कोत्तुक्तं मंगलैः अत्र
 नवम्यां बोधसमर्थं षष्ठ्यां बोधनमिति स्मार्त्तफलभूमाधिनः समुच्चय इत्य
 न्येनवम्यां मजं कालिका पुराणे एवेमास्यसितेपक्षेनवम्यां मार्गभेदिता श्रीर
 त्वे बोधकामित्वां पारयज्ञां करोम्यहं अत्र सूत्रे विरोधः पारिभाषायां त्रयः
 अथारौचे विरोधो निर्णयाम्ने विष्णुरूपनिबंधे आश्रिते शुक्लपक्षे त्रार
 धेनवरात्रके षाचरौचे समुत्पन्ने क्रियाकार्या कथं बुधैः सतकेवर्तमानं
 नेचतत्रोत्पन्ने सदा बुधैः देवीयज्ञा प्रकर्तव्या यम्यज्ञविधानतः सतके
 जनं प्रोक्तं दानं चैव विरोधतः देवीमुद्यस्य कर्तव्यं तत्र दोषो न विद्यते इति का
 लादर्शविष्णुरहस्येपि पूर्वसंकल्पितं यच्च व्रतं सनियतो व्रतैः तात्कर्तव्यं न
 रे शुद्धं दानार्चनविवर्जितमिति गोउनिबंधेति पितृव्युक्तं आश्रि
 नक्षत्रनवम्यादि शुक्लपूतिपदादि षष्ठ्यादि सप्तम्यादि चैकं कर्म अत्र अत्र
 मध्ये आशौचपातेपिन दोषः सकल्यो व्रतसत्रयोरिति विष्णु तैरिति

आरधं स्वयमेव कार्यं अनारधं त्वन्येन कारयेदिति दिवोदासः रजस्य ला
 त्विन्येन कारयेत् सतकादिवद्विशेषवचनाभावात् स्त्रीणं च न वरात्रे तां क
 लादि च वृणं भवति तदुक्तं ब्रतहेमाद्रौ गारुडे गंधालंकारतां कलपुष्पमाला
 नुलेपनं उपवासेन दुष्यति दंतधावनमज्जनमिति एतत्समन्तकोपवासवि
 वयं अन्यश्चात्र विशेषः परिभाषायामुक्तः आश्विनशुक्लपंचम्यामुषांगल
 लितान्नतं महाराष्ट्रेषु प्रसिद्धं तत्र वयद्यापिकथायां कालविशेषो नोक्तस्त
 थापिराजौ जागरणं कुर्यात्तीतवादित्रनिस्वनैरिति राजौ जागरोक्तेः शक्तिपूजा
 याराजौ प्राशस्याच्च रात्रिव्यापिनी ग्राह्येति केचित् वस्तुतस्तु वचनं विनारात्रिपू
 जायां मानाभावात् जागरस्य चांगत्यातयुगमवाक्यात् भुक्ता जागरणेन क्ते चंद्रा
 यर्थं प्रतेतथा तराकुप्रेषु सर्वेषु रात्रियोगो विशिष्यते इति कालहेमाद्रौ वचना
 द्य सर्वविद्याग्राह्या रात्रिशब्दः पूर्वविद्धावचनहेमाद्रिः अस्य च भुक्ता जागर
 एरुपत्यादिति साधुप्रतीमः भुक्ता जागरणमजत्येकं पदं तस्मिन् ब्रूते इत्यर्थः
 अन्यथा भुक्तेत्यसंगतेः दिवोदासीयेष्वेवं आश्विनशुक्लपक्षे मूलनक्षत्रे स
 रस्वतीस्थायनं यद्योक्तं निर्णयामते देवीपुराणे मूलेषु स्थायनं देव्याः पूर्वा

111A

बाढासुसजनं उत्तरासवलिंदघाश्च वलोनविसर्जयेत् इतिरुद्रयामलेपि
 मूलजन्तेसराधीरायजनीयासरस्वती यजयेत्प्रत्यहंदेवपावद्वैभवम
 भक्तं नाध्यापयेन्नवलिन्नाधीयीतकदाचन पुस्तकस्यापितेदेवविद्याका
 मोद्विजेतमः मूलस्याद्यपादेआवाहनमिति शिष्टाः अवगाधपादेचवि
 सर्जयेत् आदिभागोनिरायांतुअवणस्पयदाभवेत् संप्रेषणं तदादेव्या
 दशम्यांचमहोत्सव इतिचिन्तामणौत्रह्माऽपुराणान् अथषष्ठीगोनिव
 धेदेवीपुराणे ज्येष्ठानक्षत्रपुक्तायांषष्ठाविल्यामिमंजणं सप्तम्याम्
 लपुक्तायांपञ्जिकायाः प्रवेशनं पूर्वाषाढपुताष्टम्यांपूर्वाहोमाद्युपोष
 उत्तरेणनवम्यांतुचलिभिः यजयेच्छिवां अवणोनदशम्यांतुप्रणयत्यविस
 र्जयेत् कालिकापुराणे बोधयेद्विल्वशारवायांषष्ठांदेवींफलेषुच स
 प्तम्यांविल्वशारवांतामाहत्प्रतिपद्यजेत् पुनःपुजांतथाष्टम्यांविशोषे
 णसमाचरेत् जागरंचस्ययंकुर्याद्वलिदानंमहानिशि प्रभृतवलिदानं
 तुनवम्यांविधिवच्चरेत् विसर्जनंदशम्यांतुकुर्याद्देसारवात्सर्वैः धूलौ

११२

कर्दमनिक्षेपैः जीडाकोतुकमंगलैः सर्वत्रतिथिनक्षत्रयोगादरोमुखः कल्पः
 तदभावेततिथिरेवग्राह्यातिथिः शरीरदेवस्यतिथौ नक्षत्रमाश्रितं तस्मात्तिथिं
 प्रशंसति नक्षत्रं नक्षत्रं नतिथिं विनेति विद्यापतिलिखितवचनं तिथिनक्षत्र
 योगे द्वयोरेवानुपालनं योगाभावेतिथिग्राह्यादेव्याः पूजनकर्मणीति तत्रै
 व देवलोक्तैश्च अत्रचपत्रीप्रवेशात्पूर्वाद्युसायंकालेष्वप्यभावेन तत्पूर्वदिनेधिवा
 सनमिति पूर्ववचनादितिकल्पतरुः सायंश्रुतिः फलातिशयमात्रार्थान्नतु
 कर्मलोपइत्याचार्यचूडामणिः अत्रक्रमः विल्वसमीपंगत्वादेवी विल्वं च
 संपूज्य प्रार्थयेत् तत्रमंत्रं रावणस्य वा धार्याय रामस्यानुग्रहाय च अकाले
 ब्रह्मणा बोधो देव्यास्त्वपि कृतः पुरा अहमयाश्रितः बध्यं साया द्वे बोधयाम्य
 त श्रीशैलशिखरे जातम्रीफलम्रीनकेतन नेतव्यो सिमया गुह्यज्यो दुर्गा
 स्वरूपतइति एवं देवीमाधियास्य परदिने निमंत्रित विल्वराखापत्री प्रवेश
 पूजा कुर्यात् तदुक्तं हेमाद्रौ लिंगे मूलाभावेतुसप्रभ्यां केवलायां प्रवेशयेत्
 दुर्गमाभ्यां न विल्वस्य फलाभ्यां राखिकां तथा तथैव प्रतिमां देव्याः स्नात्वा भु
 ज्य प्रवेशयेत् अत्रचोपवासपूजादौ वा दायिका सप्तमी ग्राह्या नतु दुर्गमवा

स्य

राम
११२

नि.सिं.

११३

॥३॥ अत्र तिथियोगयथे तत्रेणोपवासः तिथिद्वयनिमित्तं यज्ञादिकं तन्नेदेन अ
विरोधो निर्णयामते भविष्ये सप्तम्यां नवगेहानि दारुजानि नवानि च ए
कं वा वित्तभावेन कारयेत्स समाहितः दुर्गागृहं प्रकृतं च चतुरस्रं सुरोभ
नं तन्मध्ये वेदिकां कुर्याच्चतुर्दस्तां समाश्रुतां तस्यां सिंहासनं क्षौमं कंवलानि
न संयुतं तत्र दुर्गां प्रतिष्ठाप्य सर्वलक्षणं संयुतां सर्वदेवमयीं प्रौढां योवनोन्मा
दशालिनीं भुजैश्चतुर्भिरुचिरैर्दंशभिर्बोधिभूषितां तप्तहाटिकवर्णाभां त्रिने
त्रांशशिरोधरां अनेककस्तुमाकीर्णां कंपर्देन सुरोभितां नितं ववसननद
किंकिरीं कृणानादिनीं अलचक्रदंशकिं वज्रचापासिधारिणीं घंटाक्षमाला
करकपानपात्रलसत्करां तदग्रे धिन्नशिरसं महिषं रुधिराश्रुतं निःसृतां
तन्त्रं कंठनाले चर्मासिधारिणीं देवीधृतकरग्रीवं अलेनोरसिताडितं नाग
पाशेन विनिर्मुह्यं क्षेणापि विदुतं च मधुधिरवक्त्रेण धुन्वतोर्ध्वसदानरुखा
सर्वतो मातृवक्त्रेण सेव्यमानं सुरैस्तथा तथेति तत्र देवी प्रकृतं व्याहृती वा
राजती तथा महाभौलक्षणो गेता वक्त्रं अले च पूजयेत् वाक्पीदारुमयी देवी मू
र्तिस्थापने विरोधो दुर्गाभक्तिरंगिराण्यं देवीपुराणे यास्यास्याश्रुमहादुर्गाय

राम
११३

वीस्याजयवदिनी यस्मिन्माभिसुरवी नित्यं नस्था य्यासोम्यदिष्णुरवी प्रतिमाभावेति
 विरोधस्तत्रैव हेमवराजतमद्वातुरो लचित्रार्पितापिवा खड्गे मूले चितादेवी सर्व
 कामफलप्रदा यद्यद्यास्याधुंध्रोक्तं तस्मिन्माभिसुरवी प्रतिमाभावेति देवी भक्त्या चितापुसां
 राज्यायुः सुरवंतसौख्यदा कृत्यतत्त्वार्णवे कालिकापुराणे लिंगस्या पूजयेद्देवी
 मंडलस्यांतयेवच पुस्तकस्यां महादेवी पावके प्रतिमासु च चित्रे च त्रिशिखरे खड्गे
 जलस्यां चापि पूजयेत् विल्वपत्रैर्घपेदेवी तया जती पुस्तनकैः नाना पिष्ट कनैवैद्यै
 र्धूपदीपैर्मनोहरैः भगलिंगाभिधानैश्च भगलिंगप्रदीपकैः भगलिंगक्रियाभि
 प्रप्रीणयेद्दरचंडिकां परैर्नीभिष्यते यस्तु यः पराज्ञाक्षिपत्यपि तस्य क्रुद्धा भगव
 ती शापे दद्यात्सुदारुणं चित्रमन्मया दोस्त्रानाघसंभवे तत्रैवोक्तं अंतिकस्यापि ते ख
 ड्गे स्थापयेदप्येतोयवेति अथ सप्तमी पूजा विधिः प्रतिपत्पुक्त विधिना फलसंकीर्त
 नां तेन वयत्रिकामन्मयदुर्गा पूजा बलिदानानि करिष्य इति संकल्प पूर्वनिमंत्रि
 तविल्वसमीपंगत्वा संसृज्या गधसर्वकल्याणीति पूर्वोक्तं मंत्रं पठित्वा विल्वसम
 महाभाग सदा त्वं कंकरप्रियप्रिय वृक्षीत्वा तत्त्वशाखां च पूज्या दुर्गेति च स्मृतिः २
 गृहीत्वा तव शाखां च देवी पूजां करोम्यहं सारवा धेदो इव दुरवंत च कार्यं त्वया प्र

नि.सिं.
११४

११४

भो गृहीत्वा तव शाखां च यज्या दुर्गेति स्मृतिः उतिष्ठ पत्रिको देवि सर्व कल्याण
हेतवे एजोग्रहाण सकलामस्माकं वरदा भव मेरुमंदरकैलाशहिमवाहि विरि
रेगुरौ जातः श्रीफलहस्तमं विकासासदा प्रिया इति संप्राप्य ॐ ह्रीं धि फट् फट् ॐ
फट् स्वाहेति धित्वा संयज्य ॐ चामुंडे चल चल इति बाधघोषेण देवीं तांचे गृहं वे
श्य आरोपितासि दुर्गे त्वं मन्मथ्यां श्रीफलोपि च स्थिरां नितान्तं भूत्वा च गृहं त्वं का
मदा भवेति स्थिरीकृत्य रंभादिपत्रिकाः पंचगव्येन पंचामृतेन च स्तययित्वा वसे
एण वेष्पास्थापयेत् ततः पूर्ववत्संकल्पं कृत्वा क्षतानां दाय देवीमावाहयेत् त
त्र मंत्रः आवाहयाम्यहं देवि मन्मथ्यां श्रीफलोत्तया कैलासशिखरादेवी विधादेहि
मपर्वतान् आगत्य विल्यशाखायां चंडिके कुरु संनिधिं स्थापितासि मया दुर्गे प्र
जयेत्वां प्रसीद मे आधुरारोग्यं मे श्रयं देहि देवि नमोस्तुते दुर्गे दुर्गस्वरूपासि सुर
तेयो मयैर्चिते सदानंदकरे देवि प्रसीद मम सिद्धये एषो हि भगवत्यंबराश्रयः प्रजय
प्रदे भक्तितः पूजयामित्वां दुर्गे देवि सुरार्चिते पद्मवैश्वफलोपेतेः पुष्पैश्च सुम
नो हरेः पद्मवैश्वस्थिते देवि पूजयेत्वां प्रसीद मे दुर्गे देवि रक्षागधसानिध्यामिह
कल्पय यज्ञभागान् गृहाण त्वं योगिनी कोटिभिः सह इति ततो मूलमंत्रेण पाद्याः

राम
११४

दिगंधांतोपचारैः संसृज्य अमृतोद्भवं च श्रीहंशं करस्य सदा प्रियं विल्वप
 त्रं प्रयद्यामि पवित्रं ते सुरेश्वरीति विल्वपत्रं व्रक्ष विष्णुशिवादीनां द्रोणपुष्पं स
 दाप्रयत्नं तत्रैर्दुर्गे प्रयद्यामि सर्वकामार्थसिद्धये इति द्रोणपुष्पं निवेद्य धू
 पादिदक्षिणां तां पूजां मूलेन कृत्वा प्रार्थयेत् ॐ महिषाधि महाभाये चामुंडे
 मुंडमालिनि आपुरारोग्यमे श्वर्यं देहि देवि नमोस्तुते कृकमेन समालाधे
 चंदनेन विलेपिते विल्वपत्रकृतापीडे दुर्गे हंशारणगतः रूपं देहि यशो देहि
 भगं भगवति देहि मे पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वान् कामांश्च देहि मे सर्वमंगलं
 मांगल्ये इति च संप्रार्थ्य पत्रिकाः पूजयेत् कदल्यां ब्राह्मणं दाडिमे रक्तदंति।
 कां धान्ये लक्ष्मीहरिद्रायां दुर्गामा नेया मुंडा कवौ कालिका विल्वेशिवां अशो
 केशो करहितां जयंत्यां कार्त्तिकी वा वासु संसृज्य दुर्गायै वलिं दद्यात् अत्र राखा
 दिपूजा वक्ष्येत् ततः स्तुति पठेत् तदुक्तं शिवरहस्ये दुर्गाशिवां शांत करीत्र
 स्माणी ब्रह्मणः प्रियां सर्वलोकप्रणं जीव प्रणमामि सदा शिवां मंगलां शो।
 भनतां मुद्गानिः कलां पुरमां कलां विश्वेश्वरी विश्वमातां चैठिकां प्रणमाम्यहं
 सर्वदेवमयी देवी सर्वरोगभयापहं ब्रह्मेश विष्णु नमितां प्रणमामि सदा

चैव

उमा विध्यस्याविध्यनिलयाविध्यस्थानविलासिनी योगिनीयोगमाताचंच
 डिकां प्रणामाम्यहं ईशानमातरं देवीमीश्वरीमीश्वराप्रियां प्रणतोसि सदा दुर्गा
 संसारार्णवतारणी यद्दं पठति स्तोत्रं शृणुयाद्वापियो नरः समुक्तः सर्वपा
 पेस्तु मोदते दुर्गाया सह अथ महाष्टमी सा च परयुता श्रुतपक्षेष्टमी चैव शु
 क्लपक्षे चतुर्दशी पूर्वविद्वानकर्तव्या कर्तव्या परसंयुता इति ब्रह्मवैवर्तान्तर
 मदनरत्ने स्मृतिसंग्रहे शारन्नहाष्टमीयुज्यानवमीसंयुता सदा सप्तमीसंयु
 तानित्यं शोकसंतापकारिणी जंभेन सप्तमीयुक्ता यजितु महाष्टमी वर्ज
 नीया प्रयत्नेन मनुजैः शुभकाक्षभिः सप्तमीशल्यसंयुक्ता मोहादतानतोपि वा
 माहाष्टमी प्रकुर्वाले नरकं प्रतिपद्यते सप्तमी कलया यत्र परतस्त्राष्टमी भवे
 त तेन शल्यामिदं श्लोकं पुत्रयौ क्षयप्रदं तथा पुत्रान्पश्यन्तं हंति राक्षं सराजकं
 हंति जातान् जातश्च सप्तमी सद्विताष्टमी तेनात्र त्रिमुहूर्तवेधः ~~तत्राष्टमी~~
 तिथिप्रकाशे सायंगता पूर्वयुतेति मान्या प्रातः प्रयातोत्तरसंयुतेति रात्रेयुन
 वेधश्च शान्तिनृनं वद्विद्यदीभिस्तिथिसंचयस्य पेटीनसिः पक्षद्वयेपि तिथयः
 स्तिथिं पूर्वोत्तरं त्रिभिर्मुहूर्तैः विध्यंति सामान्योऽयं विधिः स्मृतः तदाद्यदि

कामाजायैदधिकीग्राह्या व्रतोयवासनियमेघटिकेकायदाभवेदितिदेवलोत्तोः
 गौडश्रयेवमाहुः अतएवोक्तंभोजराजेन नचसप्तमीशाल्यसमोपहतेति इयं
 भौमेतिप्रशस्ता अष्टम्यामुदितेसूर्येदिनांतेनवमीभवेत् कुजवारोभवेत्तत्रपुन
 नीयाप्रयत्नतइतिमदनरत्नेवचनात् सप्तमीशाल्यसंविदावर्जनीयासदाष्टमी
 त्तोकापिसामसापुण्यायस्यां सूर्यादयोभवेदिति मदनरत्नेस्मृतिसमुच्चयवच
 नात् अष्टमीनवमीयुक्ता नवमीयाष्टमीयुतेतिपापवचनाच्च इयमेवनवमी
 मूलयुक्ताचेन्महानवमीसंज्ञा अष्टयुक्तशुक्लयक्षेयाष्टमीमूलेनसंयुता सा
 महानवमीप्रोक्तात्रैलोक्येपिसुदुर्लभेति हेमाद्रौस्कांदात् मूलयुक्तापिसप्तमी
 युक्ताचेत्याज्यैवेत्युक्तं निर्णयामृते दुर्गेत्सवे मूलेनापिहिसंयुक्तासदात्याज्याष्ट
 मीबुधैः लेखमात्रेणसप्तम्या अपिस्पाद्यदि ह्येति मसाष्टमीपूर्वेष्टुः पूर्वादि
 व्यापित्वे पर्याययोः परेवेति निर्णयदीपमते एतच्चतुदत्यादुपेक्ष्यरूपनरायण
 धत्तेदेवीपुराणे सप्तमीवेधसंयुक्तायैः कृतानुमसाष्टमी पुनदारधनेहीनो
 भ्रमंतीहपिराचवत् यत्त सप्तम्यामुदितेसूर्येपरतोयाष्टमीभवेत् तत्रदुर्गे
 त्सवेकुर्यान्नकुर्यादपरेहनीति विष्णुरूपनिबंधवचनंतदाग्निनक्षत्रमाष्ट

मीविषयं कन्यायांशुक्तपक्षेत्त यज्ञित्वाष्टमीदिने नवम्यां बोधयेद्देवीं गी
तवादिज्ञानिष्ठनैरिति देवीपुराणे तत्रापि यज्ञोक्तैरिति हेमाद्रौ निर्णया
मृतेचोक्तं यानितु भद्रायां भद्रकाल्याश्रममध्ये स्यादर्चनक्रिया तस्माद्वै सप्त
मीविद्याकार्याङ्गाष्टमीवृद्धैरिति यच्च मोहचूलातरेष्वस्ते च आश्विनस्य
सिताष्टम्यामर्द्धरात्रे तु पार्वती भद्रकाली समुत्पन्ना सौख्यादा समायुते
तथा तत्राष्टम्यां भद्रकाली दक्षयज्ञविनाशिनी प्रादुर्भूता महाघोरा योगिनी
कोटिभिः सहैति यच्च मदनरत्ने महाष्टम्याश्विने मासि शुक्ल कल्पारणकारिणी
सप्तम्यापि युक्ता कार्या यदि न स्यात्परे हनि मूले न तु विशेषत इति तानि परदि
नेष्टम्यभावविषया एतानि मदनरत्ने उक्तं यत्तत्रैव परदिनेष्टमी सत्वेपि
सर्वविद्याविधायकं वचनं यदाष्टमी तु संप्राप्त्या संयानि दिवा करः तत्र उर्गी
त्सर्वं कुर्यान्न कुर्यादपरे हनि उर्जि क्षंतत्र जानीयान्नवम्यां यत्र पूज्यते इति
तत्परदिने दशम्यां नवम्यां भावविषयं यदा सूर्योदये न स्यान्नवमी चाप
रे हनी तद्यदाष्टमी प्रकुर्वीत सप्तम्या सहितान्नयेति तत्रैव स्मृति संग्र

लोक्तः उत्तरास्तिथयो यत्र क्षयं यंति नराधिप पूर्वाष्टमी नदा कुर्यादन्यथात्
 शुभं भवेदिति उर्गोत्सवोक्तेः श्रेति मदनरत्ने वस्तु इदं वचनद्वयं अष्टमी नव
 म्योः सूर्योदयद्वयासंबधपरं अन्यथा पूर्वोक्त विरोधादिति दिक् यत् अहं
 भद्राच भद्राहं नावयो रंतरं क्वचित् सर्वसिद्धिं प्रसादास्मामि भद्रायामर्चिता ह
 मिति देवीपुराणं तद्विधिकरणमध्ये पूजाविधानार्थं विहित्यक्ता महाष्ट
 म्यां मम पूजां करोति यः तस्य पूजाफलं न स्यात्तेनाहमवमानतेति तत्रैवोक्तेरिति
 निर्णयामते तथा कालिकापुराणे सप्तम्यां पत्रिका पूजा अष्टम्यां चाप्युपोष
 णं पूजा च जाहारश्चैव नवम्यां विधिवद्भिरिति अष्टम्युपवासश्च पुत्रवतान
 कार्यः उपवासं महाष्टम्यां पुत्रवान्न समाचरेत् यथा तथा वापतात्मा त्रतो देवी प्रसू
 जयेदिति तत्रैवोक्तेरुपनारायणीये ब्राह्मे अतोर्थे पूजनोपासात्स्मिन्नहनिमा
 नवैः उपोषितैर्वसुधैपमाल्यरत्नानुलेपनैः पशुभिः पानकैः दधैरीत्रो जा
 गरणेन च उर्गा गृहे च रात्रौ पूजितव्यानि पंडिपैः वाद्यभोगानि चिह्ना
 निकवचन्यायुधानि च अत्र विरोधो हेमद्रौ निर्णयामते च भविष्ये कन्या
 गते सवितरि शुक्ले पक्षे अष्टमी युता मूलनक्षत्रसंयुक्ता सामसानवमी स्मृता १

॥७

नवम्यां यजिता देवी ददात्यभिमतं फलं सायुण्यासायवित्राचसाधन्यासुखदा
यिनी तस्यां सदा यजनीया चांमुंडां मुंडमालिनी सदेत्युक्तेर्नित्यतापि तस्यां
लुपयुज्यंते प्राणिनामदिवा दयः सर्वे ते स्वर्गं तिष्ठन्ति घृतापापं न विद्यते याव
न बालयेद्वा जं पशुस्तावन्न हन्यते न तथा बलिदानेन पुष्यधृत्य विलेयनेः य
या संतुष्यते मेधैर्मदिवै विंध्य वासनी एवं च विध्यवाः सन्यां न वरात्रोपवास
तः एकभक्तेन न क्तेन स्वरात्पायाचनेन च पूजनीया जने देवी स्थाने स्थाने पुरे
पुरे स्नातेः प्रमुदितैः हृद्यैः ब्राह्मणैः क्षत्रियैः नृपैः वैश्यैः शूद्रैर्भक्तियुक्तैश्चैवैर
यैश्च मानवैः स्त्रीभिश्च कुरुशाईलतक्षिधानमिदं स्थाप्य जयाभिलाषी नृपतिः
प्रतिपत्त्यभक्तिमान् लोहाभिसारकं कर्मकारयेद्यवदष्टमीमिति लोहाभि
सारकं विधानं तत्रैवोक्तं प्राग्दक् प्रवणे देरोपातकाभिरलंकृतं मुंडपंका
रयेद्विभंजवसप्रकरं परं षोडशहस्तमित्यर्थः आग्नेयं कारयेत्कुंडं हस्तमा
जं सशोभनं मेखलाजयसंकेतं युक्तं यो न्यमस्य दलाभया राजचिह्नानि सर्वा
णि राश्याण्यस्त्राणि यानि च प्राणीयं मुंडपे तानि सर्वाण्यजाधिवासयेत् तत
स्तु ब्राह्मणः स्नातः शुक्लो वरधरः शुचिः ओंकारपर्वकैर्मंत्रैः तस्मिन्नेर्जुदयोत्

राम
११७

धत्ते शशाङ्कमन्त्रैर्होतव्यं यथैव संघत संयुतं हुत शेषं तरंगराणां राजानमुपहार
 येन लोहाभिसारिकं कर्म तेनेत छिभिः स्मृतं धत्तयत्ययनान् श्वान् गजां
 असमलंकृतान् आमयेनगरे नित्यं नंदिद्योषपुरःसरं प्रत्यहं न्ययतिः स्नात्वा
 संपूज्यं पितृदेवताः पूजयेद्वा जचिह्नानि फलमाल्यविलेनेः तस्याभिसरणाद्वा
 द्वाविजयः समुदाहृतः पूजामंगान् प्रवक्ष्यामि पुरारोगक्षानहंतव येः पूजि
 ताप्रयच्छंति कीर्तिम्यायुर्दशो बलं अथ मंत्राविष्णुधर्मोत्तरोक्ता धृजस्य
 यथांबुदः छादयति शिवाये मां च संधतं तथा छादय राजानं विजयारोप्य च
 हृदये चामरस्य शशांकरसंकाशाक्षीरिण्डोरपांडुरः प्रोत्सारपासुडरितं चा
 मरामरदुर्लभं अथाश्वस्य गंधर्वकुलजातस्त्वं माभूषाः कुलद्रुपचाः
 ब्रह्मणः समवाक्येन सोमस्य वरुणस्य च प्रभावाच्च हुताशस्य वर्धयस्त्वं त्र
 रंगमान् तेजसाच्चैव सूर्यस्य सुनीतपसा तथा रुद्रस्य ब्रह्मचर्येण पवन
 स्य वलेन च स्मरत्वं राजपुत्रास्तं कौस्तुभं च मणिं स्मरं यंगतिं ब्रह्महागधे
 न्मातृहापितृहा तथा भूमिहान्तवादी च क्षत्रियाश्च परां श्रुतवः सूर्याचंद्रम
 सो वायुं धावत्यर्यंति ३ः कृतं नृजाश्वतांगतिं क्षिप्रं तच्च पापं भवेत्तव विलुप्तं

यदिगद्येयाः पुष्पाधुनितुरंगम रिष्टन्विजित्यसमरेसहभर्त्ता सरवी भवेत् ।
 अथध्वजस्य राजकैतो महावीर्यस्यामवर्णा चैयाम्यहं पत्रिराजनमस्तोस्तुत
 यानारायणध्वज कारययेयास्तुणभ्रातर्नागरे विष्णुवाहन प्रप्रमेयडराध्व
 रणेदेवारिस्तदन गरुत्मान्मातुतग तिरुचयिसन्निहितोयतः सारवत्या
 पुष्पाध्वन्यत्ररक्षित्वचरिष्टनृदह प्रयपाताकायाः कृतभुक्वसवोरुद्रावा
 युः सोमोमहर्षयः नागाकिंनरगंधर्वयक्ष भुजगगणग्रणाः प्रयमस्तमहा
 दित्यैभतेरोमाताभिः सह राक्तः सेनापतिः स्कंदोवरुणश्चाश्वितत्वयि प्रहंतु ३
 रिष्टनृसर्वानराजाविजयमृच्छन् यानिप्रयुक्तान् परिभिराधुधानिसमंत
 तः पतंतपरिश्रुतांस्तानितबतेजसा हिरण्यकरययोर्युद्धेयुद्धेदेवास
 रेतथा कालर्नेमिवधेयद्वयद्वित्रिपुरघातने शोभितासियधेवाद्य शो
 भयास्मां प्रसंस्मर नीलान्तेतानिमान् दृष्ट्वा नरयत्वाशुनपारयः द्रुत्वाशु
 रिष्टन् व्याधिभिर्विविधैर्घोरैः राक्षसैश्चुधिनिर्जिताः पतनारेवतीनाम्ना ।
 कालरात्रिश्चया स्मृता हस्तवाशुरिष्टनृसर्वान्घातकैत्वं ममार्चिता अथग
 जस्य कुमुदैरावरणौ यमः कृष्ण उव्यदंतोयवामनः सप्रतीकोजनील

एते देवयो नयः तेषां षड्राश्वयो ज्ञाश्ववना न्यद्वे समाश्रिताः मंदो भद्रो मृग
 श्वैव गजः संकीर्ण एव च वने चने प्रसूतास्ते पृथ्यानि समं तिव पांत्वा च
 सवोरुद्रा आदेत्या समरुद्राणाः भर्तारं रक्षना गेन्द्रा मि वस्त्र ति पा ल्यतां अवाप्नु
 हि जयं युद्धे गमने स्तस्ति नो व्रज श्रीस्ते सोमा दलं विष्णोस्ते जः सूर्या ज्ञा चो निला
 त स्थे र्धमे राजपं रुद्रा घरो देवा त्पूरं दरात् पुद्गे रक्षं तु नागा स्त्वां दिराश्च सह देवतेः
 प्राश्विनो सह गंधर्वे पांत्वा सर्वतः सदेति अथ रव इमं जः सिद्धिं रासनः रव इ
 तीक्ष्ण धारो दुरादं सदः श्रीगर्भो विजयश्चैव धर्मधारस्तथैव च एता नितवनामानि
 स्वयमुक्ता निवेधसा नक्षत्रं कृतकं ते तु गुरु देवो महेश्वरः रोहिण्यश्च शरीरं ते
 देवतं च जनार्दनः पिता पिता महो देवस्त्वमापालय सर्वदा नीलजीमूत शंका
 राः स्तीक्ष्ण दंष्ट्रः क्षरोदरः भावमुद्धो मर्षणश्च अति तेजोस्तथैव च इयं येन धत्ता
 दो एणी ह तश्च महिषासुरः तीक्ष्ण धारायश्च दाय तस्मै रव इय ते नमः अथ रुद्रिका
 याः सर्वा युधानां प्रथमं निर्मिता सिपिना किना मृगला युधादिनिः कृष्य कृत्वा
 मुष्टिग्राहं शुभं चंडिकायाः प्रदासि दत्तासि सर्व दुष्ट निवर्हिणी तया विस्तारिता
 चासि देवानां प्रतिपादिता सर्व सत्वां भूतासि सर्वा शुभ निवर्हिणी रुद्रिके

रक्षमानित्यं शांतिं यधनमोस्तुते अथ कटारकपूजा रक्षांगानि गजानरभर
 क्षवाजिधानातिच मम देहं सदारक्ष कटारकनमोस्तुते कटारको मध्यदेशे कटा
 रीतिप्रसिद्धा धनुःपूजा सर्वायुधमहासाजसर्वदेवारिस्तदनः चायं मासमरे
 रक्षसां कंशखरैरिरु धृतं हृद्येन रक्षां संहाय हरेण च त्रयीमूर्तिगंतं देवधनु
 रस्त्रं नमाम्यहं कृतपूजा प्राप्तापातय शस्त्रं स्वमनयानां कमायया गृहाण जी
 विनंतेषां मम सेन्यं च रक्षतां चर्मपूजा शर्मप्रदस्त्वं समरे चर्मसेन्ये यशोधमे र
 क्षमां रक्षणीयो हंता यनेयनमोस्तुते अथ दुंदुभि मंत्र दुंदुभित्वं सन्तानां घोरोह
 दयचर्द्धनः भव भूमिपसेन्यायं नाना तथा विजयवर्द्धनः यथा जन्मत धीव्यशर्म
 हृद्यं तिचवर्द्धिणः तथा स्तुतवरादेन हर्षोस्माकं मुदा बह यथा जीमत्तरादे
 स्त्रीजासोभिताय ते तथा तत्र वरादेन त्रस्यं त्वस्मद्विघ्नो रणो अथ शंखमंत्र पुण्य
 स्त्वं पुण्यशंखानां मंगलानां च मंगलं विष्णुना विधत्ते नित्यं अतः शांतिप्रदा
 भव अथ सिंहासनमंत्र विजयोजय दोजे तारिपुधाती मुभंकरः दुरवहा
 धर्मदः शांतः सर्वारिघ्नतिनाशनः एते वै सन्निधौ यस्मात्तव सिंहासनावलाः
 तेन सिंहासने नित्यं वेदैर्मंत्रैश्च श्रीयते त्वयि स्थितः शिवः शांतस्त्वपि शक्तः

120 म्यस्तु वलिंदद्यान्मंत्रेणानेन सामिधं सरक्तं सजलं चान्नं गंधपुष्पाभैर्द्युतं त्रीं
 स्त्रीन्वरान्समूलेन दिग्विदिक्षुरिके दालि मंत्रश्चावलिंगं क्वचि मंदे वा आदित्याव
 सबसाया मरुतश्चाश्विनौ रुद्रा सुपर्णा पन्नगा ग्रहाः असुराया उधानश्च
 पिशाचो रगराक्षसाः जाकिन्यो यज्ञवेताला योगिन्यः पतनाशिवाः जगतां
 शांतिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः माविष्टं माचमे पापं मा संतपयिष्यतेः सौ
 म्या भवन्तु तन्नाश्च भुजंगेनाः सरवावसाः इति इति महाष्टमी महानवमी तु
 पूर्वयुता ग्राह्या पूर्वोक्तवचनात् नवमी दुर्गा व्रते प्रावर्ण्येति दीपिकोक्तेः
 प्रावर्ण्ये दुर्गे नवमी पूर्वाचे वक्रताशिनी पूर्वाविद्धा प्रकर्तव्या शिवाराजवले
 दिने मिति हेमाद्रौ पाशोक्तेः अभविष्येपि आश्वयुक् शुक्लपक्षे तु अष्टमी
 मूला संयुता सामहानवमी रामजे लाकेपि सुदुर्लभेन मूलमुपलक्षणा दुर्गा
 पूजा स नवमी मूलाद्या नक्षत्रयान्विता महती कीर्तिता तस्यां दुर्गां महिषम
 र्दिनी इति मदनरत्ने लिंगान् अत्र पूजयेदित्यग्रे शेषः यानि तु साकार्योदयगा
 मिन्यां तिथिा बुदयगामिन्यामित्यादि प्रागुक्तानि तानि नवमी भिन्नतिथिपरा
 णि नवम्यां विशेषोक्तेः चेधश्च मूर्तत्रयेणैव ज्ञेयः यद्यपि हेमाद्रि मते मूर्त

126A

दयात्मायिवो धोः स्तितथायिस्तस्यैदयरावसः सायंतुत्रिमुहूर्तैरेव तदुक्तं दीपि
 काया त्रिमुहूर्तैर्गातसकलासायेति साधवोपि सायंतुतरयातदस्य
 जयावनविध्यतेति तेन त्रिमुहूर्तयोगे पूर्वानवमी पूर्वोक्तवचनात् न क
 र्यानवमीतातदशम्यात्कदाचनेति स्कादे परानिवेधाम् त्रिमुहूर्तयोगा
 भावे तु निविद्धापि परैव कार्येति निःकर्षः यत्तु नवम्यांच जयं होमं स
 मीप्यश्रवणेपि चेति संग्रहोक्तैः व्रतं जागरश्चैव नवम्यां विधिवदलिरि
 ति देवीपुराणां नवम्यां होवल्यादि विहितं तज्जाग्रश्च युक्शुक्ल नवमी मुह
 र्त्तैवाकलायदि सातिथिः सकलाज्ञेया लक्ष्मीविद्या जयार्थिभिरिति सौ
 रपुराणां तस्यैदयेपरिं रिक्ता पूर्णा स्यादयरायदि बलिदानं प्रकृतं यं त
 त्रदेशशुभावसं बलिदाने कृतेष्टम्यां पुत्रभंगो भवेत्तपेति मदनरत्ने देवीपुरा
 णां च वल्यादौ पराकार्य उपवासादौ तत्पूर्वेति मदनरत्ने उक्तं प्रतीमा तै
 देव्येवं यत्तु अष्टम्यां बलिदानेन पुत्रनाशो भवेद्दुर्बलमिति कालिकापुराणं
 तत्संधिपरापरं अष्टमी नवमीसंधौ तृतीया रवल्कलकथ्यतेति तत्रैव
 तदुक्तं कामरूपनिबंधे अष्टम्यां शेषदं उम्न नवम्याः पूर्वैरेव च तज्जाग्रि

121

५५

पतेरजाविज्ञेयासामहाफला अष्टमीपाजेभवत्येव आश्विनेपूजयित्वा
 तज्जर्धराजेऽष्टमीषु च घातयंत यश्च न भक्त्या ते भवेति महाबला तथा क
 न्यासं स्मरेत्वा वीरोरुक्ताष्टम्यां पूजयेत् सोपवासे निराक्षिप्तमहाविभव
 विस्तरैः ताथापशुघातश्च कर्त्तव्यो गवलाजदधस्तथेति रूपनारायणविदेयी
 पुराणात् तत्रैवं विधे तस्मादियं महापुण्या नवमीपापनाशिनी उपोष्या
 सप्रयत्नेन सततं सर्वार्थिवैः निर्णयदीपेन महानवमीपरदिने पराङ्गि
 पित्वे पराश्रम्यथा पूर्व आवर्त्तनात् सर्वकालेन नवमी स्यात्परेह नि उगीर्वात
 त्रसर्वेषुः पूर्वाङ्गे त्यष्टमीपयदीति धौम्यवचनादि त्पुनः अस्त्यनुरागद
 वमी विषयत्वेन समलत्वं च विमृशं यानुत्तुनंदायां ज्वलितो वद्विः पूरणीया
 पशुघातनं भद्रायां गोकुलजीडान्नराज्यं विनश्यति इति नवम्यामपराङ्गे तु वलि
 दानं प्रशस्यते दशमी वर्ज्ये तत्र नात्र कार्यं विचारणेति नंदायादरीनेरक्षावलिदा
 नं दशासच भद्रायां गोकुलजीडदेशानारायणजयते इति ब्रह्मवैवर्तनारादादिवचना
 नितानि शुद्धाधिक निषेधपराणीति मदनरत्ने तथा कालिकापुराणे नवम्यां
 वलिदानं कर्त्तव्यं वैयथाविधि जयहोमं च विधिवत्कुर्यात्तत्र विभूतये के

चित्तपूर्वाद्यादायुताष्टम्या पूजा होमाद्युपोषणमिति पूर्वोक्तदेवीपुराणा
 दष्टम्या होममाहुः अन्ये तु द्विविधवाक्यवशादष्टम्या मारभ्य नवम्या समाप
 यंति समुच्चयस्तु युक्तः रुद्रयामले तु विकल्प उक्तः तत्तु निर्मूलं दुर्गाभक्ति तरं
 गिएयादिगोडग्रंथेष्वपि नवम्या होम उक्तः होमे च विशेष उक्तेऽमरतत्रे यायसं
 र्धिया युक्तं तिलैः शुक्लैर्विमिश्रितं होमयेद्विधिवद्भक्त्या दशमन्यपोत्तम रुद्राध्याये
 यथा होमं मंत्रेणैकेन साधयेत् तथा स्तोत्रजपे होमस्त्रैकेनैकेन धारयेत् यद्वा स
 म्पराती जाय्य होमे मंत्रेण नवक्षरः ऐं ह्रीं ल्रीं चामुं गायै विष्णवे इति वाक्षर इति केचि
 त्पूजोक्तो ग्राह्य इति युक्तं रुद्रयामलेपि प्रधानद्रव्यमुदिष्टं यायसां त्रैतिलास्त
 या किं रुद्रैः सर्षपैः पूगैः लजा हवीं कुरैरपि यवैर्वाप्त्री फलैर्दिव्यैर्नानाविधफ
 लैस्तथा रक्तचंदन रवंडैश्च गुग्गुलैश्च मनोहरैः प्रतिष्ठा कंच नु कुर्यात् पायसं
 लसर्पिषे युक्तं दुर्गाभक्ति तरं गिएयां तिलैर्जयंती मंत्रेण च होम उक्तं पुरश्चर
 ण कार्यं तु चित्त्वपत्रयुते तिलैरिति कालिकापुराणं विल्वपत्रैश्चेति स्मार्तः
 तत्र अत्र मानाभावात् अथ वलिदानं तत्र श्रमे धद्यागमद्विषस्वमांसां

उत्तरोत्तरप्राशस्त्यफलविशेषश्चान्यतोवसेय इतिदिक्क वलिप्रकारस्तदे
वीपुराणे कन्यासंस्थे रवौ राक्षसपुत्राष्टम्यां प्रयुज्यते द्रोणपुष्पे अचिता
मृजातोषुत्रागचंपकैः पंचादलभरणेन गंधपुष्पसमन्विते विधिवत्कालि
कालीतिजपारवदेन घातयेत् ॐ कोलिकालियज्ञे शरिलोहदंडायै नमः
तिमंत्रं तडुत्य रुधिरं मांसं गृहीत्वा पूजनादिषु आदिशब्दाच्चरकीविदारीया
यराक्षस्यः नैऋतेभ्यः प्रदानं महाकौशिकमंत्रितं मंत्रस्तवक्ष्यते तथा तस्या
ग्रतो नृपः स्नायात्कृत्वा शत्रुं तपैष्टकं रवदेन घातयत्वा तदघ्रातं कृदविराघयोः
अराक्षो ब्राह्मणेन च कृष्णां डादिभिर्वलिदानं कार्यं तडुक्कं कालिकापुराणे क
ष्णां डमिश्रुदंडं च मांसं सारसमेव च एते वलिसमाः प्रोक्तास्तु प्रोक्ता गसमाः सदा रुद्र
यामले पिष्ट्वा गाभावेतु कृष्णां डं श्रीफलं वामनाहं वसुवं वेष्टितं कृत्वा धू
दयेत्तदुरिकादिना तथा ब्राह्मणेन सदा देयं कृष्णां डं वलिकर्मणि श्रीफले
वासराधीरादिदं नैव तत्कारयेत् घेदे विकल्पः माघात्रे न वलिर्देयो ब्राह्म
णेन विज्ञानता कालिकापुराणे उत्तराभिमुखो भूत्वा वलिं पर्वसुरं वनयो
निरीक्ष्य साधकः पश्चादिमंत्रमुदीरयेत् पशुस्त्ववलिरूपेण मम भाग्यदयस्य

॥ तः प्रणामा मिततः सर्वस्वरूपं वलिस्वरूपं चंडिका प्रीति दानेन दातुराप द्वि
 नाशने चासुं वा वलिस्वरूपं वलेत्तुभ्ये नमो स्तुते यज्ञार्थं वलयः स्वस्व
 यमेव स्वयं भुवः प्रनस्त्वां घातयाम्यस्य तस्या घाते बधो वधः रौं ही श्रीमि
 ति मंत्रेण तं वलिं मत्स्वरूपं चिंतयित्वा न्यसेत्पुष्पं मूर्द्धितस्य तु भैर
 वः रसनोत्तं चंडिकायाः सुरलोकप्रसाधकः ही ही रव इति मंत्रेण ध्यात्वा
 रवकं च प्रजयेत्प्रजियित्वा ततः रवकं आहुं फडिति मंत्रकैः गृहीत्वा विम
 लं रवकं देदयेद्दलिमुत्तमं ॐ ही रौं ही को शिकी तिरुधिरेणा व्यायतामिति
 वलिदाने तु दुर्गायाः सर्वत्रायं विधिस्ततः मत्स्वरूपैः नवम्यां पूर्ववत्स्वा
 कर्तव्या भूतमिधत्वा दक्षिणा वस्त्रपुग्मं च प्राचायाय निवेदयेत् अथा
 जप्रसंगाच्छतचंडीविधानमुच्यते वाराही तं जे संकरे समनुप्राप्ते दुष्प्रि
 कित्या मयेनया जातिभंशे कुलोद्धेदे प्रायुषो नारा आगते वैरिबद्धो व्या
 धिस्तद्धौ धननाशे तथाऽक्षये तथैव विविधोत्पाते तथा चैवातिपातके कुर्या
 द्वाघता हतिततः संपद्यते शुभं श्रेये हृदिः शतहृद्गो जहादित्वा चापरं
 मनसा चिंतितं देवि सिद्धे दष्टो तरा घतात् सदस्त्रावर्जना लक्ष्मीमा वृणोति
 स्वयं स्थिरा भुक्ता मनोरथान्कामं नरो मोक्षमवाप्नुयात् चंड्याः शतहृति या

ठासर्वाः सिद्धं तिसिद्धयः रुद्रयामले रातचंडीविधाने च प्रोच्यमाने ऋणसूत्रम् ।
 सर्वोपद्रवनाशार्थं रातचंडीसमारभेत् षोडशस्तंभमुक्तं मंडपं यत्नवोज्ज्वलं च
 सुकोणयुतां देवीं मध्ये कुर्यात्त्रिभागतः पक्षेष्टकचित्तरम्यामुष्णायै हस्तसं-
 मितां पंचवर्णरत्नोभिश्च कुर्यात्तल्लक्षं शुभं पंचावर्णवितानं च किंकिणीम् ।
 जालमंडितं प्राचार्येण समं विप्रान् वरयेद्दशसत्रं तन् ईशान्यां स्थापयेत्कुं-
 भं पूर्वोक्तविधिना हरेत् वा रुण्यां च प्रकर्तव्यं कुंडलक्षणलक्षितं मूर्तिदेव्याः
 प्रकुर्वीत सुवर्णस्य पलेन वै तदूर्ध्वं तदध्वं तदध्वं नमस्तुते अष्टादशभु-
 जं देवीं कुर्याद्वाष्टकरामपि पट्टकलघुगधत्नां वेदीमध्ये निधाय येत् देवीं
 संपूज्य विधिवज्जलं कुर्याद्दशदिग्जाः रातमादौ रातं चान्ते जपे नमंत्रं नवार्णिकं
 चंडीसप्तसतीमध्ये संयुतो यमुदाहृतः एकं द्वे त्रीणि चत्वारि जापे दिनचतुष्ट-
 यं रूपानि क्रमशस्तद्वत्सजनादिकुमाचरेत् पंचमेदिवसे प्राप्ते होमं कुर्यात्
 विधानतः गुरुं चोपायसं हवीं तिलान् शुक्लान् यवानपि चंडीपाठस्य होमं तु
 प्रतिष्ठाकंदशां रातः होमं कुर्याद्गृहादिभ्यः समिदाज्यचरुनक्रमात् कृत्वा
 पूर्णं कुर्वीत दद्याद्विभुभ्यो दक्षिणां क्रमात् कपिलांगं नीलमणिं खेतांशं च

त्रचामरे अभिवेकं ततः कुर्यर्थजमानस्य ऋत्विजः एवं कृते मरेशानसर्व
 सिद्धिः प्रजायते इति अथ सहस्रचंडी सा च तजैवोक्तं सहस्रचंडी विवृतं
 एतु विद्यमानं दामते राज्यभ्रंरोमहोत्यात्तेजनमारेमहाभये गजमारे श्वमारे च पर
 चक्रभये तथा इत्यादिविविधे दुःखे क्षयरोगादिजैभये सहस्रचंडिका पाठं कुर्या
 द्वाकारये तथा जापका पाठका स्थाप्याः शय्यादाने तथैव च सप्तन्यैधा च भूदा
 नं श्वेताश्वं च मनोहरं पंचनिष्कामितामूर्तिः कर्तव्या चार्धमानतः अष्टाद
 शभुजा देवी सर्वा युधविभूषिता अवारितानंदानंदो सहस्रं प्रत्यहं विभो राते
 वानियताहारः पयः पानेन वर्त्तयेत् एवं यस्मिंश्चंडिका पाठं सहस्रं तु समाचरेत् त
 स्य स्यात्कार्यसिद्धिस्तु नात्र कार्या विचारणेति एतद्वदेष्टव्यमिहानिवेद्येष्टुना
 स्तितथापि प्रवरद्वयत्वात् उक्तं सिति दिक् पाठात् सर्वाः सिद्धांतिसिद्धयः इति रात
 चंडी सहस्रचंडी सहस्रचंडी विधिः अथ नवरात्रपारणानिर्णयः सा च दश
 म्यां कार्या अश्विने मासि शुक्लैः कर्तव्यं नवरात्रकं प्रतिपदादि क्रमेणैव
 यावच्च नवमी भवेत् त्रिरात्रं वापि कर्तव्यं सप्तम्यादियद्यक्रममिति हेमाद्रौ
 सोम्यवचनात् नवमीति विपर्ययं तत्तद्व्यापजा जयादिकं इति प्रागुक्तवचने

निःसिं.
१२४

124

नवमीपर्यंतं प्रधानभूतपूजाद्युक्तैरुपवादे आगत्वेन तत्पर्यंतत्वात् आदि
शब्देनोपवासोक्तैः पूर्वोक्तत्रिरात्रव्रतेन नवम्या अय्युपोष्यत्वाच्च नवपारणां
तत्वेन त्रिरात्रत्वं विष्णुत्रिरात्रादौ तथा प्रोक्तैः नचात्रोपवासो मानाभावा
इति वाच्यं एवं च विंध्यवासिन्यां नवरात्रोपवासतः एकभक्तैर्न नक्तैर्न तथैवा
याचितेन च पूजनीया जनैर्देवीस्थाने स्थाने पुरे पुरे इति हेमाद्रौ भविष्योक्तैः
नवरात्रसमारख्यात्ता नवम्या अय्युपोष्यत्वाच्च ननु तिथिह्रासेष्टावयुषा वासा
भवन्ति कथं समारख्याते न कर्मविशेषेन वरात्रराद्योरुदः अतएवाक्तं देवीपुरा
णे तिथिह्रदो तिथिह्रासे नवरात्रमपार्थक्यमिति चेत् न तिथिह्रासेऽपि न च ति
थीनां मुपोष्यत्वाच्च वरात्रत्वाक्षतेः एतेन वरात्रीणां प्राधान्यात् ह्रासे अमा मादाय
नवत्यमिति मूर्खोक्तिः परास्ताय तु देवीपुराणे कन्यासंस्थे रवौ रात्रि अह्नामारभ्य न
दिकां श्रुत्वा वीर्ययत्ने काशीनक्षत्राणीत्युपवाद्यदइति व्रतचतुष्टयमुक्तं तत्त्वोक्तं
मिसारकविषयं तस्य जायाभिलाषी नृपतिः प्रतिपत्प्रभृति क्रमात् तैसा भिसा
रकं कर्मकारयेत्तथा वदन्मीमिति भविष्येष्टमीपर्यंतमेवोक्तैः रूपनारायणो
ननु नंदादि व्रतत्रयानं पृथगेवाह्ना तस्य नवम्यां पुराणमुक्तं यद्वैपि निर्णये

राम
१२४

124A

आश्विने शुक्लपक्षे तु नवरात्रमुपोषितः नवम्यारण्यं शुक्लं दशमीमिश्रितान
 चेत्त दशमीमिश्रितायत्र पारणेन नवमी भवेत्त इः खदारिद्र्यदाते यात्रयात्रतवि
 नाशनीति ब्राह्मणालिखितं वचनं यच्च रुद्रयामलेशतिवदति अष्टम्या सहकार्य
 स्यान्नवमी पारणादिने यो मोहात्तदशमीवधेन नवम्या चंडिकायजेत्त पारणं च प्रकु
 र्यादैनस्य पुण्यं निरर्थकं नवम्या पारिता देवी कुलहळिं प्रयच्छति दशम्या पारिता
 देवी कुलनाशकरोति वै तस्मात्तु पारणं कुर्यान्नवम्या विबुधा धियेत्यादीनि तानि
 यदि सप्तलानि तदा लोहाभिसारकं न ददितुं चतुष्टयविषयाणि तस्याष्टमीय
 र्थं तमेवोक्तैरित्युक्तं प्राक् अन्यथा महाष्टम्या परविद्यायां पारणविधाने सर्वनिव
 धौर्विरोधो दुर्वारः स्यात्त यानि तु कैश्चिद्विहितानि नवम्या पारणविधायकानि
 वचनानि तानि हे साप्तादि विरुद्धत्वात् निर्मूलानि सप्तलत्वेऽपि यदादिन द्वयेन नवमी
 तदा द्वितीयदिने उपोष्यति स्थिते पारणं न किंतु नवमीमध्ये कार्यं त्वेवने यानि शि
 वरात्रि पारणवत् अत्र केचित् पारणं हिस्तकादिप्राप्तोत्तदति क्रम्य पारणं कु
 र्यादित्याहुः तन्मंदं काम्योपवासं प्रज्जानेत्त्वं न राम तस्स तके तज काम्यव्रतं

नि.सिं.
१२५

125

कुर्याद्वानार्चनविवर्जितमिति माधवीकौर्मोक्तैः व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे हो
मेर्चने जपे प्रारधे स्तनकेन स्यादनारधे तु स्तनकं इति विष्णुवचनं चात्र शौचं
मध्ये विकर्तव्यतावगतेः प्रारणं तत्प्रादुर्गतस्य प्रारंभस्फुटेर्नैवोक्तः प्रारंभो वरणं
यज्ञे संकल्यो व्रतसंज्ञयोः नादीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रियेति रुद्रयाम
लेपि स्तनके प्रारणं कुर्यान्न च म्याहोमयवकं तदंते भोजयेद्विप्रान् दानं दद्याच्च
शक्तित इति तदंते स्तनकांते एवं स्त्रीभिरपिरजो दर्शनमध्ये कर्तव्यमेव प्रारणं
संप्रवृत्ते पिरजसिनत्याज्यं दद्यादशी व्रतमिति माधवीये ऋष्यशृंगवचनात् द्वाद
शी व्रतमित्युपलक्षणं प्रारध्वदीर्घतपसां नारीणां यद्रजो भवेत् न तज्जायिन्न
तस्य स्यादुपरोधः कदाचिन्नोति तत्रैव सत्यं व्रतवचनात् किंच एकादश्यादौ च
पंचधारौ च पाते मासांते प्रारणायतिः मासापवासांते पंचधारौ पाते जीव च
नारंभवश्च यत्नं नियमा स्या यदानारी प्रयस्येदं तरारजः उपोष्ये बभूव तारा
जीवात्वा शेषैरेद्रुतमित्यंगरो वचनं यच्च हारीतवचनां नियमस्या व्रतस्या
स्त्रीरजः पर्येत्कायचन त्रिरात्रं ताक्षिणे इध्वं व्रतशेषं समापयेत् इति तद्विधेवा
पवासविषयं तासां तत्र भोजननिषेधादिति केचित् वयं तु प्रागुक्तं सत्यं

राम
१२५

तवचनेदीर्घतपसामिति विरोधेणोपादानाद्वादर्शव्यतिरिक्तसकलेकदोषवा
 सविशयोयं निषेधः त्रिरात्रिनवरात्रादिदीर्घव्रतेषु तुरजोमध्ये रावपारणे तिष्ठमः
 श्रौतचमध्ये तु सर्वापि पारणा भवति प्रागुक्तकोर्मवचनादिति सिद्धं अप्यंचो
 यवासधारणानिर्णयः सर्वव्रतेषु बोधव्य इत्यलभ्यसा दशम्यं देवीं विसर्जयेत्
 तदुक्तं दुर्गाभाक्तेतरंगिण्यादेवीपुराणे ततः प्रातः पूजिष्याद्वा दशम्यां विधिपूर्
 वकं संप्रेषांतु कर्तव्यं गीतवाङ्मयं त्रिनिश्चनेः रूपं देहि यशो देहि भगं भगवति
 देहि मे पुजान् देहि धनं देहि सर्वान् कामान् प्रदेहि मे महिष्यधि महा माये चामुंडे मं
 उमा लिनि प्रापुरारोग्यमेष्ट्यं देहि देवि नमोस्तुते इति संप्रार्थ्य देवीं ततः उत्था
 ययेद्बुधः उत्तिष्ठि देवि चंडे शिष्टभाष्यां प्रगृह्य च कुरु स्वममकल्याणमष्टाभिः श
 क्तिभिः सह गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चंडिके ब्रजस्त्रातो जलं ध्ये स्थीयतां च
 जलैस्त्रिहेति उत्थाप्य जलं नीत्वा दुर्गे देवि जगन्मातः स्वस्थानं गच्छ पूजिते संवत्सरे
 मतीते तु पुनरागमनाय वैः इमां पूजां मया देवी यथा शक्त्योपपादितं रक्षार्थं त्व
 समादाय ब्रजस्वस्थानमुत्तममिति जले प्रवाहयेत् इयमेव विजयदशमी सा च हि
 तीयादिने श्रवणयोगाभावे पूर्वाग्राह्या तदुक्तं हेमाद्रौ स्कांदे दशम्यां तु नरैः सं

नि.सिं.
१२६

126

म्यकृष्णजिनीयापराजिता रोशानीदिरामाश्रयप्रपराङ्गे प्रयत्नतः यासर्गानव
मीयुक्तातस्यापराजिता क्षेमार्थं विजयां च पूर्वोक्तविधितानरैः नवमीशो
व्युक्तायां दशम्यामपराजिता ददाति विजयं देवीरजिता जयवर्द्धिनी तथा अश्विने शु
क्लपक्षे तदशम्यां पूजयेन्नरः राकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितमिति यदा तस्य
वर्दिने अवलोकयोगाभावः परदिने चाल्पापितद्योगिनी तदा परैव तथा च हेमाद्रौ व्रत
कांडे कश्यपः उदयदशमी किंचित्संपूर्णैकादशी यदि अवलोक्य दशकाले सा निशि
विजयाभिधा अवलोक्यैतत्पूर्णयां काकुस्थाः प्रथितो यतः उत्सवयेत्तुः सीमानं
तदिनं ततो नरा इति काले पराङ्गे परदिने पराङ्गे अवलोक्य भवेत्तु सर्वपक्षेषु पूर्व
मदनरत्नेषु च ज्योतिर्निर्वंधेरत्नकारोचनारदः इषत्संध्यामतिक्रान्तः किंचिदुक्तिः
नृनारकः विजयो नाम कालो यस्य सर्वकार्यार्थसिद्धिदः इषस्य दशमी शुक्ला पूर्व
विज्ञानकारयेत् अवलोकनापि संयुक्ता राज्ञां पट्टाभिषेचने सूर्योदयपदाराज
दृश्यते दशमीति शिः अश्विने मासि शुक्ले तु विजयान्तां विडुर्बुधाः प्रजायंति
नीलितार्थः अपराङ्गे मुरम्यः कर्मकारः तत्रैव पूजायुक्तैः प्रदोषयोगैः तत्र
दिनद्वये अपराङ्गे व्यापित्वे पूर्वा प्रदोषव्याप्तेराधिक्यात् दिनद्वये प्रदोषः।

राम
१२६

व्याप्तित्वेपरा अथराक्षे व्याप्तेराधिक्यात् श्रवणस्फुरोद्दिग्गीवद् प्रयोजकः दिन
 द्वयेपराक्षास्पर्शतुल्यत्वा तत्रापिपरदिनेपराक्षे श्रवणसत्त्वेपरे विदिकु अत्रवि
 शेयोभागीवर्धनदीपिकायां भविष्ये शमीपुक्तं जन्मये भक्तानामभयंकरं अथ
 यित्वा शमीवृक्षमर्चयेच्च ततः पुनः शमीमंत्रस्तु हेमाद्रौ गोपयन्नास्मिन् अमं
 गलानां शमनी शमनी दुःखतस्य च दुःखप्रणाशनी धन्या प्रपद्ये हं शमीशुभां
 तथा भविष्ये शमीशमयते पापं शमीलोहितकंटिका धारिण्यर्जनवाणानां
 रामस्य प्रियवादिनी करिष्यमाणयात्राया यथा कालं सुरंवमया तत्र निवि
 द्युक्तं त्वं भवश्रीराम पूजित इति तथा गृहीत्वा साक्षनामाद्रौ शमीमूलगतं म
 दं गीतवादिजनिर्घोषैरानयेत्सुगृहं प्रति ततो भूषणवस्त्रादिधारयेत्सज
 नैसहेति तत्र नलनी राजनमुक्तं कृत्यस्ते तत्र मंत्र चतुरंगवलं मद्यं निरवि
 ष्टं ब्रजत्विह सर्वत्र विजयो मेस्तु त्वत्प्रसादात् स्वरे श्वरी गौडनिबंधे ज्योतिषे ह
 त्वा नीराजनं राजावल्लभो यथाक्रमं शोभनं रंजनं परमं ललाटे गोष्ठ
 संनिधौ अस्य फलानि शुभाशुभदेशाश्च तत्रैव ज्ञेयाः आश्विनपौर्णिमा
 सीपराग्राह्या सावित्री व्रतमंतरेण भवतो माघपौर्णिमा स्योपरे इति दीपिको

क्तेः अत्र विशेषस्ति यित्वे लैंगे आश्विने पौर्णमास्यां तु चरेत् जागर्तुं निशि
 कौमुदीमासमारब्धता कार्या लोके विभक्तये कौमुद्यां दृजयेत् स्वामी भिद्रमे
 रावतस्थिते सुगंधिर्निशिसद्वेषश्चैर्जीगरणं चरेत् तथा निशीथे वरदाल
 स्मीः कौजागर्तीति भाषिणी तस्मै वित्तं प्रयच्छामि अक्षैः क्रीडां करोतियः त
 त्रैवाश्वयुजी कर्मोक्तमाश्वलायनेन आश्वयुज्यार्मश्वयुजी कर्मोति तच्चैष प
 र्वाणिकार्यं विवृणुत्वात् आग्रयणं तु पर्वणिकार्यं शरदाग्रयणं नाम पर्वणि
 स्यात्तदुच्यते इति शौनकोक्तेः तत्रापि विशेषपर्वणिकार्यमिति प्रागुक्तं तच्च द
 र्शयमाणमासयोरेक कर्मत्वेनैकद्रव्यनियमान् दर्शय्याः परंपौर्णमासे व्याश्व
 प्राग्रभेवतिरिति हेमाद्रादयः ब्रीहिरिति रिष्टा ब्रीहिरितिरेव यजेता यवेभ्यः इति श्रु
 तेन द्राणके स्मृतिपादे स्पष्टं दर्शय्याः परमुक्तमाग्रयणं कं प्राक् पौर्णमासां च
 तदिनिदीपिकोक्तेः तच्चाग्रयणं त्रेधा बीद्याग्रयणं यवाग्रयणं श्यामाका
 ग्रयणं चेति एषां कालः श्रुतो गृहमेधी ब्रीहिरिति एवाभ्यां शरदसं तयोर्ब्रजेत
 श्यामाके नीवारैर्वर्षा स्वापतकालेनान्येन पुराणैर्वेति आपस्तावोपि व
 वासुश्यामाके यजेत शरद ब्रीहिरिति विवसंते यवे ययर्जुवे एउयवे रिति तत्रापि
 श्यामाकाग्रयणं मानेत्यमित्ररेतुश्चनादिनाग्रे नित्यं यवाग्रयणं च कार्यमि

निस्मान्नैवतावुक्तत्वात् सूत्रे श्रीहियवदेवतासंबद्धात्तामेवमंत्राणामाश्रय आ
 क्षित्ताग्रेस्तु यवाग्नयणस्यायनित्यत्वं अपि वा क्रियायवेदितिसूत्रात् यद्वा श्रीह्या
 ग्रयणेन समानतंत्रतास्यामाकेरुत्प्रस्तरं कुर्यान्नाग्नयणं यदि वा तदपि समा
 नतंत्रतमस्त्वमित्यादि नारायणसूतौ परिश्रमवतां सलभमित्यलं इदं च पूर्वो
 भावे देवनभवे कृतिकादिविशाखांते कार्यमिति स्मृत्यर्थसारे उक्तं बोधा
 यनी केशवस्वामिनाप्येवमुक्तं यदात्वे तदाश्विनपौर्णमास्या क्रियते तदे
 ककालत्वादायुज्जिकर्मणोऽप्येव समानतंत्रता भवति तदेतत्तद्वति कृता
 एकवर्द्धिरिध्माज्येति सूत्रे स्पष्टमुक्तं अस्याकरणे प्रायश्चित्तमुक्तं अस्मिन्
 चेदिकायां कात्यायेन नित्ययज्ञात्यये चैव वैश्वदेवद्वयस्य च अनिष्टात्तवयस्ते
 न नवान्नप्राशने तथा भोजनेपतितान्नस्य च सर्वे श्वानरो भवेत् कारिकापि
 अकृताग्रयणं स्त्रीयान्नवान्नं यदि वै नरः वै श्वानराय कर्तव्यं च सूर्याहुति
 स्तुवेति जज्ञग्विधानेन समिंद्रगयामंत्रं वर्षे वर्षे जपेच्छते आग्रयणं यदा
 न्यूनं तदा संसर्गमेति तदित्युक्तं एतच्चायदि मूलमासे कार्यमन्यथानेति प्रा
 गुक्तं अथोप्याक्षित्ताग्न्यादिविशेषः शीकादेनेय इत्यलं भयसा इति श्री

भट्टकमलाकरहते निर्णयसिंधौ आश्विनमासः अथ कार्तिकः तला
संक्रमे प्रागपरादशाघटिका पुण्याः रात्रौ प्रागुक्तं अथ कार्तिकस्नानं तत्र
पृथ्वीचंद्रोदये विष्णुस्मृतिपादयोः तलामकरमे प्रातःस्नानं विधीयते । हवि
व्यं ब्रह्मचर्यं च महापातकनाशने मिनि सौरमास उक्तः प्राच्यां तदेवा द्वियं ते
दाक्षिणात्यास्त आश्विनस्य तु मासस्य या शुक्लैकादशी भवेत् कार्तिकस्य व्रता
नीहते स्या वै प्रारभेत्तु धीदिन्या योक्ते भार्गवार्चने च प्रारभ्येकादशी शुक्लमा
श्विनस्य तु मातवः प्रातःस्नानं प्रकुर्वीत या चत्वारिंशत् कार्तिकभास्कर इति विष्णुरहस्यो ।
क्ते अहो माद्रौ चादिपुराणे पूर्ण आश्विपुजे मासि योर्णमास्यं समाहित इति उक्ता
मासं समग्रपर्याचमन्त्या समाप्यते कार्तिके योर्णमास्यामित्येतेभिर्धान्वाश्वि
न शुक्लैकादश्यां योर्णमास्यां वारभ्य कार्तिकशुक्लद्वादश्यां योर्णमास्यां वा समा
पयेदित्याहुः मदनपारजाते विष्णुः कार्तिकं सकले मासे नित्यस्नानी जिते
द्रियः जपन् हविष्यभुक् शांतः सर्वपापैः प्रमुच्यते अत्र देशविशेषः पादौ का
र्तिकं प्रक्रम्य कुरुक्षेत्रे कोटिगुणे गंगायमयितत्समः ततो धिकः पुष्करे स्या
द्वारवत्यां च भार्गव पुण्यायुर्वश्रसप्तैव मुनयो मधुराधिका दुर्लभः कार्तिको

विप्रामधुरायां नृणां मिह यत्रार्चितः स्वकं रूपं भक्तेभ्यः सप्रयच्छति इति इदं च
 स्नानं कारीर्यं च न देय्यति प्रशस्तं शतं समास्तयस्तत्वाक्तं ते यत्राप्यने फलं ।
 तत्कार्तिके पंचनदे सकृत् स्नानेन लभ्यते कार्तिके विंदुतीर्थे यो ब्रह्मचर्यं पराय
 णः स्नास्यत्यनुदिते भानौ भानुजातस्य भोक्तः इत्यादि कारीरं वंडोक्तेः भानुजो य
 मः स्नानं मंजाश्रितं त्रैव कार्तिके हं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनाई न प्रीत्यर्थं न वदेवे
 शदामोदरमया सह इमं मंत्रं समुच्चार्य मौनी स्नायाद्भूती नरति अर्धं मंत्रोपितं त्रैव ।
 सतिनः कार्तिके मासि स्नातस्य विधिवन्मम गृहाणार्धं मया दत्तं दनुजैर्दुर्निष्कृ
 तं नित्यं नैमिषिके कृष्ण कार्तिके पापनाशने गृहाणार्धं राधया सहितो हरे इमौ मं
 त्रौ समुच्चार्य योर्ध्वं मं प्रयच्छति सुवर्णरत्नपुष्पां वृषर्णं शंखेन पुण्यवान् सुवर्ण
 पूर्णं पृथिवीतेन दत्तानं संरायति एवं संपूर्णं स्नानं शतौ मं स्नायात् वाराणस्या
 पंचनदे मं स्नात्वा तत्कार्तिके अमीने पुण्यवपुषः पुण्यभाजो निनिर्मला इति कारी
 रं वंडोक्तेः अथ मालाधारणं तत्र स्कांदे द्वारका महात्म्ये निवेद्य केरावे मालां तु स्नी
 सी काष्ठं संभवां वहते यो नरो भक्त्या तस्य नैवास्ति पातकं न ज्ञातुं लसी माला
 धात्री मालां विरोधतः महापातकं संहंती धर्मकर्मार्थं दायिनी विष्णुधर्मे स्थरो

नुयानिलोमानिधात्रीमालाकलौनराणं तावद्वर्षसहस्राणिवैकुण्ठेवसतिर्भ
वेत्तमालायुग्मंयोनित्यंधात्रीतुलसीसंभवं वरुतेकंठदेशेतुकल्पकोटिदिवं
वसेत्तुलसीकाष्ठेसंभस्तेमालोक्तस्मजनप्रिये विभर्तित्यामहंकंठेकरुमाक्त
स्मवत्सभं एवंसंप्रार्थ्यविधिवन्मालां कृष्णगलेर्पितां धारयेत्कार्तिकेयोवैसग
हेनवेष्मवंपदंशति यथाकाशीखंडे कार्तिकेमासिमेयात्रायैः कृताभक्तितत्परैः चिं
उनीर्धकृतस्त्रोनेस्तेषामुक्तिर्नहृतः भार्गवाचनदीपिकायांनृसिंहपुराणे अग
स्तिकसुमेदेवयोर्चयेच्चजनार्दनं दर्शनात्तस्यदेववर्षेनरकंनान्मुतेनरः विहायस
र्वपुष्पाणिमुनिपुष्पेणकेशवं कार्तिकेयोर्चयेद्रुत्यावाजयेयफलंफलमेत
स्कांदेकार्तिकेमाहात्म्ये मालतीमालयाविष्णुः केतक्याचैवपूजितः समाःसह
संसुप्रीतोभवतेमधुसूदनः पृथ्वीचंद्रोदयोयासौ कार्तिकेनार्चितः येस्तुकम
लैःकमलैःक्षणः जन्मकोटिषुविपेद्रनतेषांकमलागृहे तथा कार्तिकेकेशवे
यजातेषांनाम्नासुतेः कृताः तेभिर्भस्परवैः पुत्रवसेतित्रिदवेसदा तुलसीद
ललक्षेणकार्तिकयोर्चयेद्वरिं पत्रेपत्रेमुनिश्रेष्ठमौक्तिकंलभतेफलं तथास्का
देकार्तिकमाहात्म्ये धात्रीद्यायाभयः कृष्णान्तिउदानंमहामुनिमुक्तिप्रयाति ।

पितरः प्रसादान्नाधवस्यत् धात्रीफलविलिप्तंगोधात्रीफलविभूषतः धा
 त्रीफलकृताहारो नरो नासयलो भवेत् धात्रीघायां समाश्रित्य योर्ध्वे चक्रधा
 रिणं पुष्ये पुष्ये श्रमे धस्य फले प्राप्नोति मानवः तथा स्कां दे कार्तिके मासि विप्रे
 इ धात्रीसंशोपाशोभितं वने दामोदरं विष्टुं चित्रां नै सोषयेद्विभुं मूलेन पायसा
 नाय होमं कुर्याद्विचक्षणः ब्राह्मणान् भोजयेत् तथा स्वयं भुंजीत वंधुभिरिति
 तथा कार्तिके द्विदलं व्रतं प्रागुक्तं कार्तिके द्विदलं त्यजेदिति पापेऽपि कार्तिक
 महात्म्ये राजिकां मादकं चैव नैवाद्यात् कार्तिक व्रती द्विदलं तिलैः लंच तथा
 न्यन्मतिदूषणं स्कांदेऽपि कार्तिके वर्जयेत्तद्विदलं बद्धवीजकं माषमुद्रु
 मस्तुराश्च कण्ठकाश्च कुलस्यकाः निष्याचाराजमाषाश्च श्राट्क्यो द्विदलं स्म
 तं नूतनान्यपि जीर्णानि सर्वाण्येता निवर्जयेत् अत्र केचित् उत्पत्ति सम
 येदलद्वयं यस्य भवति तत् भूतपूर्वगत्यादिदलमुच्यते इत्याहुः उदाहरंति च
 वीजमेव समुद्रुतद्विदलं चांकरं विना दृश्यते यत्र सस्येषु द्विदलं तन्निगद्यते
 अन्ये तु लक्षणयां माना ज्ञावात् वचनस्य च निर्मलत्वाद् द्विदलात्मकं यस्य स्य रूपं
 तदेव वर्जयेदित्याहुः तथा नारदीये कार्तिके वर्जयेत्तैलं कार्तिके वर्जयेन्मधु

कार्तिकेवर्जयेत्कांस्थंकार्तिकेप्रुक्तसंधितं कांस्थं तत्पात्रभोजनं प्रुक्तं यत्
 धितं संधितं लवणं तत्रैव कार्तिकेचिद्युस्तर्जयेत् दीपदानादिवं व्रजेत् त
 या कार्तिकेनृक्ततादीक्षान्तराजन्मविमोचनी तथा कार्तिकेनृक्तधुसेवीयः प्राजा
 यत्यपरोधं वा एकांतरोयवासी च त्रिरात्रो यो धिते धिच यद्वा द्वादशायसंवासा
 संवाचरवर्णिनि एकभक्तेन नक्तं नक्तं ये वा याचिते न वा उपवासिन भेक्षेण व्रजते
 परमं यदं अन्येपि नियमाः प्रागुक्ताः ग्राह्यमुक्तं स्कां दे व्रीहयोपवगाधमाः
 प्रियंगुतिलशालयः एते हि साचिका प्रोक्ताः स्वर्गमोक्षफलप्रदः काशीखंडे
 ऊर्जेयवान्नमस्त्रीयादेवान्नमथवा पुनः संताकं स्तरां च वृश्चकरी शिंवी श्रव
 र्जयेत् पृष्ठी चंद्रोदये षादे नोर्जे च ध्यो विधातव्यो व्रतिना केनचित् क्वचित्
 अथ नारदीये अत्र तेन क्षये घृत्तमासं दामोदरप्रियं तिर्यग्जो निमवाप्नोति
 नात्र कार्यविचारणा अन्यान्यधितां बूलने लकेश कर्तना दिवर्जन संकल्प
 रुपाणि प्रागुक्तानि तथा कार्तिके आकाशदीउक्ते निर्णयाम्भते पुष्करपु
 राणे तलायां तिलनेलेन सायं काले समगते आकाशदीपे यो दद्यान्मासमे
 कं हरिं प्रति महितीं श्रियमाप्नोति रूपसौभाग्यसंघदेमिति तद्विधिः

हेमाद्रौऽप्रादिपुराणे दिवाकरेस्ताचलमौलिभूतेगृहादहरेषुसुषप्रमाणं ।
 पृथास्तनिर्यज्ञियत्तक्षेदारुमारोव्यभूमावयतस्यमूर्द्धि कृत्वाचतस्रोष्टदलाकृ
 तिरुक्तयाभिर्भवेदष्टदिशानुशारी तत्करिणंकायांतुमहाप्रकारोदीपः प्रदे
 योदलगासाथाद्यो निवेद्यधर्मायहरायभूम्येदामोदरायाप्यधर्मराज्ञे
 प्रजायतिभ्यस्त्वयधर्मराज्ञे प्रजायतिभ्यस्त्वयसत्पितृभ्यः प्रेतेभ्य एवायत
 मस्थितेभ्यः इति अपराकेत्वन्योमंजमुक्तः । अथा दामोदरायनभसितुला
 यांलोलयासह प्रदीपंचेप्रयद्यामिनमोनेतायवेधसेरति कार्तिककृष्णचतु
 र्थीकरकचतुर्थी साचंद्रोदयव्यापिनीग्राह्या नजैवपूजाघाम्नानात् कार्ति
 ककृष्णद्वादशीगोवत्ससंज्ञा साप्रदोशव्यापिनीग्राह्या दिनद्वयेतत्त्वेपूर्वायु
 गमवाक्यात् तत्सपूजावटश्रेवकर्तव्याप्रथमेहनीतिनिर्णयोमृतेभिधाना
 च्छ अत्रविशेषोमदनरत्नेभविष्ये सवत्संतुल्यवर्णाचरीलिनीगांययस्वि
 नीचंद्रनादिभिरालस्य पुष्पमालाभिरर्चयेत्त अर्घ्यंताम्रमयेपात्रेकृत्वापुष्पा
 क्षतैस्त्रिलैः पादमलेतदद्यात्तैवमंज्रेणानेनपांडव क्षीरोदारिवसंभूतेसुरासुरन
 मस्कृते सर्वदेवमयेमानर्गहृणार्घ्यंनमो नमः ततोमायादिसंसिद्धान् वट ।

कान् विनिवेदयेत् सुरभित्त्वं जगन्मातर्देवी विचित्रपदे स्थिता सर्वदेवमये ग्रा
 संमया दत्तमिदं ग्रासं ततः सर्वदेवमये देवि सर्वदेवैरलं कृते मातर्ममाभिलाषि
 तं सफलं कुरु नंदनि इति प्रार्थयेत् तथा तद्दिने तैलपक्वं च स्थालीपक्वं पुष्टि
 धर गोक्षीरं गोघृतं चैव दाधितं च वर्जयेत् ज्योतिर्निबंधे नारदः आश्विने क्त
 क्षयभेतुद्वादश्यादिपंचसु तिथिषु क्तः पूर्वरात्रे नृणां नीराजनविधिः नीराज
 येयुर्देवांस्तु विप्रान् गामान् पुरं गमान् ज्येष्ठान् श्रेष्ठान् जघन्यान् प्रमातृमुख्या
 ऽथोषित इति निर्णयामृतं स्कांदे कार्तिकस्यासिते पक्षे त्रयोदश्यां निशां मुखे
 यमदीपं वहिर्दद्यादयमृत्युर्विनश्यति मंत्रस्तु मृत्युना पाशदंडाभ्यां कालेन शपा
 मया सह त्रयोदश्यां पदीयदानात् सूर्यजः प्रीयतां ममेति कार्तिके कृष्णचतुर्दश्यां
 प्रभाते चंद्रोदये भ्यंगं कुर्यात् तदुक्तं हेमाद्रौ निर्णयामृतं च भविष्यात्तरे कार्ति
 के कृष्णपक्षे तु चतुर्दश्यामिनोदये श्रवणमेव कर्तव्यं स्नानं नरकभीताभिः इति
 श्रुतः मदनरात्रे विधुदय इति पाठः दिनोदय इति पाठान् सूर्योदयोत्तरां त्रिमुहूर्ते
 स्नानं वदतां गोडानां तदनुसारिणां चाज्ञातैव पूर्वविद्धचतुर्दश्यां कार्तिकस्य सि
 ते यरे पक्षे प्रत्यक्षसमये स्नानं कुरुत्यतः इति स्मृतिर्दृष्टेः गोपि चतुर्दशीया

अष्टजस्य कृष्णस्वार्थयुक्ता भवेत् प्रभाते स्नानं समाभ्यज्य नरे रक्त कार्यं संगं
 धत्ते लेन विभूतिकामे रिति पृष्ठी चंद्रोदये ब्राह्मे आश्वि युक् कृष्णपक्षस्य च
 तर्द्धस्यां विधुदये तिलने लेन कर्त्तव्यं स्नानं नरकभीरुणोति कर्त्तव्यं संगल स्नानं
 नरैर्निरयभीरुभिरिति कालांदर्शे पाठः उभयत्राश्वयुजित्यमावास्यां तं मासम
 भिप्रेत्योक्तं तथा तैले लक्ष्मीजले गंगादीषा वल्याश्च तर्द्धरी प्राप्येति शेषः प्रा
 तः स्नानं त्रयः कुर्याद्यय लोकं न पश्यति इति दिनद्वये पिचंद्रोदये च तर्द्धरी प्राप्य
 सत्वे तदा भावेप्यसृणादये संपूर्णं रवंडे वा दिनद्वये च तर्द्धरी सत्वे च पूर्वदिने
 भ्यंगं कुर्यात् पूर्वविद्वच तर्द्धरी मिति वचनात् पूर्वदिने परदिन रावं वा सत्वे
 सेवग्राह्या दिनद्वयेप्यसत्वे सेवग्राह्या दिनद्वयेप्यसत्वे उरुणादयव्यापिनी ग्रा
 ह्याय से प्रत्यक्ष समये इत्युक्तेः वक्ष्यमाण वचनाच्च तदभावे तच्च तर्द्धरी हासं पर
 वंछुः प्रवेश्य पूर्वदिन त्रयोदशरी मध्य एवाभ्यंगं कुर्यादिति दिवोदासः केचिदत्र
 वचनपि साधिवत्त्वेन वदंति तिथ्यादौ न भवेद्यावान् हासो वृद्धिः परे हनिता
 वान् ग्राह्या संपूर्णं घुरष्टोपि स्वकर्मणीति तन्मदं नदीदं पूर्वदिनस्यासंवग्रा
 ह्यात् विधने नक्तैकभक्तजन्माष्टम्यादौ दिनद्वये कर्मकालव्याप्तिभावे सर्वका

पूर्वदिनस्य ग्राह्यत्वप्रसंगात् किंतु यत्रैकभक्तादौ दिनद्वये कर्मकालव्याप्तभा
 वे वा क्वांतरेण न्यायेन वा पूर्वदिनस्य ग्राह्यत्वमुक्तं तत्र मुख्यकालेन त्रिस्थिरभावे
 पितत्रेव नुष्ठानबोधकमिदं न चात्र तदस्तीति यत्किंचिदेतत् तेन चतुर्थयाम
 गामिनी ग्राह्या अतएव सर्वज्ञनारायणः तथा कृष्णचतुर्दश्यामाश्रिते कौद
 यात्पुरा यामिन्याः यस्मिन्मेषां तैलाभ्यंगो विरिध्यते इति मृगां कौदयवेला
 यां जयोदश्यायदा भवेत् दर्शवामंगलस्रानं दुःखशोकभयप्रदमिति कालद
 र्शत्रयोदशी निषेधाच्च तैनायमर्थः यथा गिरि सोत्रियावज्जीवसायंप्रातः काले
 पुव्याप्य कालस्य गुरुत्वं तथा च चतुर्दशी चतुर्थयामे सृणोदयं चंद्रोदयना
 मुत्तरेतरस्य व्याप्यत्वाद्गुरुत्वमिति तदपि त्रयोदशी यदा प्रातः क्षयं याति चतु
 र्दशी रात्रि शेषे च माघास्या तदाभ्यंगो जयोदशीति वचनं तद्धेमाद्रिति
 यामृताद्यालिरिव तत्त्वेन निर्मलसमस्तलक्ष्ये चित्तचतुर्दश्याः सूर्योदयद्वयो
 संबंधित्वरूपः क्षयोत्र चित्तवक्षितः सूर्योदयात् प्राक् संप्राप्ती चंद्रोदयका
 लसत्त्वे च त्वयेवानंगीकारात् किंतु आभ्यंगकालात् प्राक् समाप्तिरूपोत्र
 हासः क्षयशब्देन विवक्षितः सचासृणोदयात् चतुर्थयामात् प्राक् यदाहा

सत्तात्परमिदं अतएव सर्वज्ञनारायणेन चतुर्थयाममंत्रे स्नानमुक्तं तथा चो
 दात्तं तं तथा कृष्णचतुर्दश्यामिति ज्योतिर्विंधेनारदेषि इवास्मिन्नचतुर्दश्या
 मिदं क्षयतिथिर्वपि ऊजादोस्नानसंयुक्ते यावद्दीपावली भवेत् कर्थात्संलग्न
 मेतच्च दीपोत्सवदिनत्रयं येन त्रयोदशीमध्ये स्नानमाहुस्तेषां सासंयनविश्रु
 त्यलंभयसायदपि असुरेणोदयतो न्यत्र रिक्तायां प्रतियोनरः तस्यादिकं भवो
 धर्मेन नश्यत्येव न संशयः इति दिवोदासीये भविष्यवचनेन नमुरव्यकालेऽसुरेणोद
 ये चतुर्दश्यभावे पितृत्रेव स्नानं च्यमित्येव परमिति सर्वं शिवं चतुर्घटिकात्मको
 ऽसुरेणोदये च चर्द्ध इति तत्रैवोक्तं न तथा मदनरत्ने पाद्येऽप्रयामार्गमयोत्तवी प्र
 पुण्याटमया परं भ्रामयेत् स्नानमध्ये तु नरकस्य क्षयाद्यवे प्रपुण्याटममदः
 मंत्रस्तु सीताचोष्टसमायुक्तसंकटकदलान्वित हरपापमयामार्गभ्राममाणः
 पुनः पुनरिति अस्यामेव प्रदोषे दीपान् दद्यादित्युक्तं हेमाद्रौ स्कांदे ततः प्र
 दोषसमीपे दीपान् दद्यान्मनोरमात् व्रताविष्णुशिवादीनां भवनेषु मन्त्रेषु चेति
 दिवोदासीये पित्राले अमावास्या चतुर्दस्योः प्रदोषे दीपदानतः यममार्गांधका
 रेभ्यो मुच्यते कार्तिके नरः खंडति योत्तु सर्वे हि प्रदोषे दीपान् दात्वा परेष्टुः स्नाया

दिति दिवो दासीये उक्तं तत्रैव तौ गो माषपजस्य राकेन भुक्ता तत्र दिने नरः प्रेता
 रक्षायां च तद्दर्शनां सर्वपापैः प्रमुच्यते अत्र यम तर्पणं मृतं मदन पारिजाते हृदम
 नना दीपोत्सव च तद्दर्शनां कार्यं तु यम तर्पणं मदनरत्ने वास्ते अपा मा गेस्य प
 जालि भ्रामये छिरसो परि ततश्च तर्पणं कार्यं धर्मराजस्य नामभिः यमाय धर्म
 राजाय मृत्यवे चानकाय च वैवस्वताय कालाय सर्वभूत हृदयाय च ओडुं व
 राय दध्राय दीलाय परमेष्ठिने हकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वेनमः इति तथा
 यज्ञोपवीतिना कार्यं प्राचीना वीतिना यवेति इदं जीवत्यित् केनापि कार्यं जी
 वत्यितापि कुर्वीत तर्पणं यमभीष्मयोरिति पाप्मानैः अत्र भीष्म तर्पणं मय्यु
 क्तं दिवो दासीये तत्प्रकारस्तु माघे वक्ष्यते इति नरक च तद्दर्शनी कार्तिका
 मावस्यायां प्रातरभ्यंगं कुर्यात् तडुं कं कालादरीं प्रत्यक्षं प्राश्च युक् दरीं
 कृताभ्यंगं गालेः भक्त्या प्रयजयेद्देवी मलक्ष्मीं विनिवृत्तये अस्य व्याख्या
 ने आदिशब्दात् च त्वगुदकस्तानादेरुपसंग्रहः तडुं कं पुष्करपुराणे स्वाति स्थितौ
 रवा विंदुर्यदि स्वाति गतो भवेत् पंचत्वगुदकस्तानी कृताभ्यंगविधिर्नः नीरा
 जितो महा लक्ष्मीमर्चयन् श्रियमश्नुते प्राश्च युग्दरी इति दरीशब्दः प्रत्यक्षं स्वाति

पुक्तातिथिपरः तदुक्तं ब्राह्मे ऊर्जेऽशुक्लद्वितीयां ततिथिमुक्त्वा तिज्जदक्षगोमान
 वोमंगलस्त्रायीनेवलक्ष्मावियुज्यते तत्रैव ईषेभस्तेचदर्शचकार्तिकप्रथमेष्टि
 दिने यादास्वातीतदाभ्यंगः श्रानंकुर्याद्विनोदये कश्यपसंहितायां तु दीपावलीद
 र्शपुजस्य इंदुक्षयेधिसंक्रान्तौ रवौ याते दिनभये तत्राभ्यंगो न दोषाय प्रातः पायाय नुत्त
 ये इति स्वातियोगं विनाप्यभ्यंगो उक्तः मात्स्ये दीपे नीराजनादत्र सेषा दीपावली स्मृ
 ता अग्रजविशेषो हेमाद्रौ भविष्ये दिवानत्र न भोक्तव्यमतेवालात्तराज्जनान् प्रदो
 षसमये लक्ष्मीपूजयित्वा ततः क्रमान् दीपहस्ताश्रदान्याः शक्त्या देवगृहेषु च
 तत्रैवाभ्यंगमभिधायः एवं प्रभातसमये त्वमावास्यां नराधियुक्तत्वात्तु पार्वणश्रा
 द्दधिभीरघृतादिभिः दीपान्दत्त्वा प्रदोषं तु लक्ष्मीपूजययथाविधि स्वलंकृतेन भोक्त
 व्यंसितवस्त्रोपशोभिना अयं प्रदोषव्यापी ग्राह्यः तुलासंस्थे सहस्रांशो प्रदोषे भूतद
 र्शयोः पुस्काहस्तानराः कुर्युः पितृणां मार्गदर्शनमिति ज्योतिषोक्तेः दिनद्वये सत्वे
 परः दंडैकरजनीयोगे दर्शः स्यात्तु परे हनि तदा विहाय पूर्वघुः परे द्विसुखरात्रि
 केति तिथितत्वे ज्योतिर्वचनात् दिवोदासीयेतु प्रदोषस्य कर्मकालत्वात् अ
 र्द्धरात्रे भ्रमत्येवलक्ष्मीराश्रयितुं गृहान् अतः स्वलंकृतान् लिप्तादीपैर्द्राग्रजानोत्सवाः
 सधा धविलिनाः कार्याः पुष्पमालोपशोभिना इति ब्राह्मे अग्रदोषार्द्धव्यापिनी मु

134

रव्या एकैक व्याप्नोपरैव प्रदोषस्य मुख्यत्वादर्धरात्रेनुष्ठेयाभावाच्च यस्तु प्रपराङ्गे प्रक
 तैव्यं प्रादुषित परायणोः प्रदोषसमये राजान् कर्तव्या दीपिमालिकेति क्रमः संस्मृतिः
 यावेव तत्तत्कर्मकालव्याप्तेर्वलवत्वादिमुक्ते अत्रैव दर्शय परारात्रे अलक्ष्मी निवारण
 मुक्तं मदनरति भविष्ये एवं गते निरीयेतु जने निद्राई लोचने तावन्नगरनारीभिः
 सूर्यदिग्दिग्मवादनैः नि कारयते प्रहृष्टाभिरलक्ष्मीस्वगृहागणान् कार्त्तिकशुक्लप्र
 तिपदि गोत्रीन् मुक्त निर्णयामते अस्यामेव रात्रौ वलेः पूजोक्ता हेमाद्रौ भविष्ये
 कृत्ये तत्सर्वमेवै हरात्रौ दैत्ये इवर्णकैः पंचरंगकैः गृहस्य मध्ये शालायां विशाला
 यां ततोर्चयत् लोकापि गृहस्यांतः शाय्यायां मुक्ततेऽल्लेः संस्थाप्य बालिराजानं प
 लैः पुष्पे प्रयजयेत् मंत्रस्तु पाप्मेवलिराजनमस्तु भ्यं दैत्यदानववंदिन इन्द्ररात्रौ म
 रारात्रे विष्णुसांनिध्यदो भवेदिति तथा बलिमुदिश्य दीयंते दानानि कुरुनेदन या
 नितान्यक्षयानां दुर्मयैवं सप्रदर्शितमिति तदेतत्सर्वविद्रायां प्रतिपदिकर्तव्यं
 पूर्वविद्रा प्रकर्तव्या शिवारात्रि वलेर्दिनमिति हेमाद्रौ पाप्मेाक्ते माधवोपि व
 ल्युत्सवं च पूजेष्टुः रूपवासवदाचरेदिति निर्णयामतेपि याकूहः प्रतिपन्मिश्रा
 तजगाः पूजयेत्तपः पूजनाञ्जीर्णवर्धने प्रजागावो महीपतिरिति तथा भद्रा

राम
१३४

यांगो कुलकीडा सदशो वै विनश्यति भद्रायां द्वितीयायां तथा प्रतिपद्यग्निकरणं
 द्वितीयायां तु गोर्धनं छत्रे दं करिष्येते वित्तनारां कुलक्षयेमिति तथा प्रतिपत्तये
 रीसंयोगे क्रीडते न तु गवां मते परविद्धेषुयः कुर्यात्पुत्रदारधनक्षयं इति देवलवचना
 च एते च विधिप्रतिषेधाः सर्वदिने प्रतिपदः सायाह्नापित्वे द्वितीयादिने चंद्रदरी
 न संभवे च ज्ञेयाः गवां क्रीडादिने यत्र राजो दृश्येत चंद्रमाः सोमो राजाय प्रसूतं तिसु
 रभीः पूजकांस्तयेति पुराणसमुच्चयात् दिनद्वये सायाह्नापित्वे तु परैव ग्राह्या
 वर्धमानतिथौ नंदायदा सार्धं त्रियामिका द्वितीयाह्नादिगामित्वा उत्तरानत्र्यो
 च्यते इति तथा पुराणसमुच्चये त्रियामगादरीतिथिर्भवेच्चैत्सार्धं त्रियामा
 प्रतिपद्विहृदौ दीयोत्सवे तमुनिभिः प्रदिष्टे अतो न्यथा सर्वयुते विधेये इति पुरा
 णसमुच्चयादिति निर्णयामृतकारः सार्धं त्रियामिकेत्यनेन चंद्रदरीनाभावात्
 क्तः द्वितीयायाः पंचधा भक्तदिनचतुर्थांशरूपा पराह्नापित्वे चंद्रदरीना संभ
 वात्तवयं त्वेन द्वयचनद्वयं पूर्वसिद्धिं संभवे वेदितव्यमिति ब्रूमः दिनद्वये प्रति
 पदः सायाह्नाप्यभावे तु सर्वे व राजो बलिपूजाविधानेन कर्मकालिमा
 प्यित्वा न परादिने च चंद्रोदये तन्निषेधादिति दिक् मदनरत्ने तु पूर्वविद्धायांगो

श्रीग नीराजनमंगलमालिकेत्तरत्रकार्यकार्तिके शुक्लपक्षेन विधानदि
तीयं भवेत् नारीनीराजनं प्रातः सायं मंगलमालिका यदा च प्रतिपत्तय्या
नारीनीराजनं भवेत् द्वितीयायां तदा कुर्यात्सायं मंगलमालिका मिति ब्राह्मणे
लभ्यते यदि वा प्रातः प्रतिपद्घटिका द्वयं तस्यां नीराजनं कार्यं सायं मंगलमालि
केति भविष्योक्तेः प्रातर्वायदिलभ्येत प्रतिपद्घटिका शुभा द्वितीयायां तदा कुर
यात्सायं मंगलमालिका कार्तिके शुक्लपक्षादौ च मावास्या घटी द्वयं देशभंगभ
यान्ते व कुर्यान्मंगलमालिकामिति देवीपुराणे चैत्सुकं अत्र विशेषो हेमाद्रौ ब्रा
ह्मणे लि प्रतिपदं प्रक्रम्य तस्मात् घृतं प्रकर्तव्यं प्रभाते तत्र मानवेः तस्मिन् घृते जपो
यस्य तस्य संवत्सरं जयः पराजयो विरुधश्च लाभनाशकरो भवेत् दधिना भिष्टु
सहितैर्नैयासा च भवेत्ति शक्ति अजगो वर्धन पूजादि मार्गपात्नी पूजनादि चो
क्तं हेमाद्रौ निर्णयामृतैश्च स्कंदे प्रातर्गोवर्धनं पूज्य घृतं वापि समाचरेत् भू
षणीयस्तथा गावः पूज्याश्वा बह्वदो हनाः गोवर्धनश्च गोमयेन कार्यं मित्रे वा
मंत्रस्त गोवर्धनधराधारगोकुलगणकारण बहुवाहुक्ततथायगवां
कोटिप्रदो भव गोमंत्रस्त लक्ष्मीर्वा लोकपालानां धेनु रूपेण संस्थिता घृतं
सहितं त्र्यम्बकं मम पापं व्यधो हतु तत्रैव स्कंदे ततो पराह समये सर्वस्यादि

135A

राभारत मार्गपाली प्रवधूया तं जे संभेय पादये कुराकाश मयी दिव्यां लवकै।
वैकुण्ठि मुने दर्शयित्वा गजानश्वान् सायमस्यास्तलेन येन कृते होमे द्विजैर्द्वैस्त
वधूयात् मार्गपालिकां नमस्कारं ततः कुर्यान्मंत्रेणानेन स ब्रत मार्गपालि।
नमनमस्तोस्तु सर्वलोक सरवप्रदे विधेयैः पुत्रदाराद्यैः पुनरेहि जतस्य मे नीरा
जनंच तत्रैव कार्यं राष्ट्रजयप्रदं राजानो राजपुत्रश्च ब्राह्मणः शूद्रजातयः मार्ग।
पाली समुल्लंघ्य नीरुजः स्युः सरवान्विताः तत्रैवादि त्मपुत्रो कुराकाश मयी क
र्याद्विष्टिकां सदृष्टानवां तामेकतो राजपुत्राहीनवर्णास्तथान्यतः गृहीत्वा
कर्षयेद्युक्तां यथासारं मुहुर्मुहुः जयेत्तस्मीनजातीनां जयैराज्ञस्तु वत्सरमिदं
यमद्वितीयात् प्रतिपद्युताग्राह्ये त्यक्तं निर्णयामतादौ यमद्वितीया मध्या
ह्ने व्यापिनी सर्वविद्धा चेति हेमाद्रिः अत्र विरोधो हेमाद्रौ स्कांदे जर्जस्तु
द्वितीयायामध्याह्ने च येषाम् स्नानं कृत्वा भानुजायां यमलोकं नययति उ
र्जस्तु यमद्वितीयायां सजितस्तर्पितो यमः वेष्टितः किंचिरे दृष्टेस्तस्मै यद्य
तिवाहितं तथा। भविष्ये प्रथमाश्रावणो मासितथा भाद्रपदे परा तृतीया

अथो मासि चतुर्थी कार्तिके भवेत् आवलोकलुषानामतथा भाद्रपदे परा ।
 तृतीया अथुजे मासि चतुर्थी कार्तिके भवेत् आवलोकलुषानामतथा भाद्रपदे
 गीर्मला आश्विने प्रेतसंचारा कार्तिके याम्यकामते तुल्य प्रथमायां भते द्वि
 तीयायां सरस्वती पूजां तृतीयां आश्विमुक्ता चतुर्थी मुक्ता कार्तिके मुक्ता पक्ष
 स्य द्वितीयायां पुच्छिष्ठिर यमोपमुनया पूर्व भोजितः स्वर्ग हेर्चितः अतो यम
 द्वितीयेयं त्रिषु लोकेषु विष्णुता अस्यां निजगृहे विप्रन भोक्तव्यं ततो नरैः
 स्नेहेन भग्रीहस्ताद्रोक्तव्ये पुच्छिवर्धनं दानानि च प्रदेयां निभगनीभ्यो विधानतः
 स्वर्गालंकारवस्त्राश्च पूजासत्कारभाजनेः सर्वा भगिन्यः संपूज्या प्रभावे प्रति
 पन्नकाः प्रतिपन्ना मता भगिन्यश्चिहे माद्रिः पितृव्य भगिनी हस्ताश्च प्रथमायां ।
 पुच्छिष्ठिरः मातुलस्य सता हस्ता द्वितीयायां तथा नृप पितृमातृस्वसुः कन्येत
 तीयायां तयोः करान् भोक्तव्यं सहजायाश्च भगिन्या हस्ततं परं सर्वासु भगिनी
 हस्ताद्रोक्तव्यं बलवर्धनं यस्यां तिथौ यमुनया यमराजदेवः संभोजितः
 प्रतिजगत्स्वसृजो हृदेन तस्यां स्वसुः करतस्तदिहयो भुनक्ति प्राप्नोति रत्न
 सरवधान्यमनुत्तमं सः गौडाक्त यमंच वित्रगुप्तं च यमदूता अपजयेत् अर्थ

आत्रप्रदानयोयमायसहजद्वयैः मेत्रः एष्टेहिमार्तेऽजपाराहस्तयमांनका लो
 कधरामरेष्टे भ्रातृ द्वितीयास्तनदेवपूजांगरहाणचार्घ्यभगवन्नमस्ते भ्रातृतावा
 नुजाताहंभुं ह्यभक्तमिदंभुं प्रीतयेयमराजस्य यमुनायाविशेषतः ज्येष्ठागूजाते
 निवदितिस्मात्ताः इत्यत्रदानमित्यप्याहुः ब्रह्मांडपुराणेपि यातभोजयतेनारीभ्रातरं
 पुगमकेतियो अर्चयेद्यापितां ब्रह्मेनसावैधव्यमाप्नुयात् भ्रातरायुः क्षयोराजनृभवेत्तत्र
 कर्हिचित् इति कार्तिकशुक्लनवमीपुगादिः साधोवाह्निकीग्राह्यापक्षस्थत्यात्र
 अन्यत्प्रागुक्तं अत्रैवविष्णुत्रिरात्रमुक्तं हेमाद्रौयाये कार्तिकेशुक्लनवमीमवा
 य्यविजितेन्द्रियः हरिंविधायसौवर्णितलस्यासहितंविभुं पूजयेद्विधिवद्भक्त्या
 ज्ञातीतत्रदिनत्रये एवंयथोक्तविधिनाकुर्याद्देवाहिकंविधिमिति कार्तिक
 शुक्लैकादश्याभीष्मपंचकज्ञतमुक्तंनारदीये अतो नरैः प्रयत्नेनकर्तव्यंभीष्मपं
 चकं कार्तिकस्यामलेपसेस्नात्वासम्यग्यतज्जनः एकादश्यानुगृहीयाद्भु
 तं पंचदिनात्मकं इतितद्विधिस्तु नद्यागोमैवेनस्नात्वा मौनीपंचामृतैः पंच
 गव्यैर्विष्णुसंस्त्राप्यसंयज्यपापसेनिवेद्य द्वादशाक्षरमष्टोत्तरशतंजप्त्वा

ॐ नमो विष्णवे निष्कसरेण घृताक्तान् पचान् ब्रीहांश्चाद्योत्तरशतं कृत्वा भूमौ स्वयेत एवं
 पंचदिनेषु कुर्यात् विशेषतस्तद्धो क्रिहरेः कमलैः पादोत्सृज्य त्रिगोमयं प्रैरपद्विती
 ये विल्वपत्रैर्जानुनी संसृज्य गोमूत्रं जपोदश्यां भंगराजेन नामिं संसृज्य क्षीरं चतुर्द
 श्यां करवीरैः स्कंधं संसृज्य दधि परीमास्यां होमांते लोही पाषाणि मांखड्गचक्रह
 स्तां कृष्णवस्त्रवेष्टितं प्रस्थितलोपरि स्थाप्य कृत्वा धर्मराजनामभिः करवीरैः संसृ
 ज्य वदन्यजन्मनि कृतमिह जन्मनि वा पुनः तत्सर्वं प्रशमयान् मत्स्यां पतवपजना
 दिति पुष्पांजलिं शिष्टां कृष्णप्रतिमां च संसृज्य विप्राय दत्त्वा विप्रान्संभोज्य दक्षिणां
 दत्त्वा पंचगव्यं प्राश्य पौर्णमास्यां नक्तं भुंजीते तिलघुनारदीये पंचगव्यप्राशनं
 षडक्षरेणेति हेमाद्रिः हेमाद्रिं भविष्येत्तराकैर्मुन्यत्रैवापंचाहं वत्तनमुक्तं अंते
 युक्तं यद्भीष्मपंचकमिति प्रथितं पृथिव्या मेकादशी प्रभृति पंचदशीति रुद्रं मुन्यम
 भोजनपरस्य नरस्य तास्मिन्निष्फलं दिशति पांडवशङ्खधन्वेति तथा पाण्डोपंचा
 हं पंचगव्याशी भीष्माया ध्ये च पंचसं श्रुत्वा सर्वे चित्तया दद्यात्संज्ञेणानेन संज्ञत
 सत्यव्रताय शुचये गंगेयाय महात्मने भीष्माये न दद्यात्पृथग्माजन्मन्नस्तचारणे
 वै पाण्डुपद्योता जायेनि च सव्येनानेन संज्ञेण तर्पणं सार्ववर्णिकमिति कार्तिक
 गंगाजठरसंभृतः शतनेयो महासुनिः शिषदानं करिष्यामि भीष्मो वै प्रीयतमिति ३

137A

शुक्लद्वादश्यां रेवती नक्षत्रयोगारहितायां पारणं कार्यं तदुक्तं आभाकासितपक्षे
 शुभे अश्विनरेवति संगमे तर्हि भोक्तव्यं द्वादशीरुद्रेति यदा तरेवती यो
 गारहिता द्वादशी सर्वधानलभ्यते तदोरेवत्याचतुर्थपादं वर्ज्येत् वचनं तप्रागु
 क्तं लघुनारदीये कार्तिके शुक्लपक्षस्य कृत्वा चैकादशी नरः प्रातर्दत्त्वा शुभान्कुं
 भां श्रुत्वा निहरि मंदिरं मदनरत्ने वाराहे एकाशी सोमपुक्ता कार्तिके मासि भासि
 नि उत्तराश्रादसंयोगे अनंता सा प्रकीर्तिता तस्यां यात्रि यत्ने भेदे सर्वमानं त्यमश्रु
 ते अस्यां मेव रात्रौ देवोऽप्यनमुक्तं हे सा द्रौ ब्राह्मे एकादश्यां शुक्लायां का
 र्तिके मासिके रावं प्रसन्नं बोधयेत् रात्रौ अक्षान्ति समान्वित इति मदनरत्ने भ
 विष्ये कार्तिके शुक्लपक्षे तत्र एकादश्यां यथा स तमंत्रेणानेन राजेन्द्र देवैः च
 स्थापयेद्विजः रामार्चनचंद्रकादौ तद्द्वादश्यामुक्तं पारणं हे सर्वराजेंद्रं गा
 दीनवा दयन् मुद्रुरिति अत्र देशचारतो व्यवस्था तत्रैव देवदेवस्य स्नानं पूर्वं
 मस्तु इवेत् महाप्रजाततः कृत्वा देवमुत्थापयेत् सुधी मंत्रस्तु वराहपुराण
 उक्तः ॐ ब्रह्मेन्द्राग्नि कुबेर सूर्य सोमादिभिर्विदितवं दनीय बुध्यस्व
 देवराज गन्निवास मंगप्रभावेन सखेन देव प्रयं द्वादशी देवप्रतो धार्थ्य विनि

मितात्वयैव सर्वलोकानां दिता र्थे शेषरायिना उतिष्ठेति वृजो विंदत्यजनि
 द्रं जगत्पते त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्स्वप्ने भवेत्तदं उतिष्ठेति चेष्टते सर्वमुतिष्ठे
 तिष्ठमाधम गतामेघावियेष्टैव निर्मिलं निर्मालादिशः शारदानिचयुष्याणि गृह्णा
 णाममकेशव इदं विष्णुरिति प्रोक्तो मंत्रमुत्थाय नेहरेरिति एवमुत्थाप्य तद्ग्रे
 चात्तु मास्य व्रतसमाप्तिं कुर्यात् तदुक्तं भारते चतुर्धा गृह्येवेचीर्णं चात्तु मास्य
 व्रतं नरः कार्तिके शुक्लपक्षे तु द्वादश्यां तत्समाययेत् लघुनारदीये चात्तु मास्य
 क्षतानां च समाप्तिः कार्तिके स्मृता मंत्रमूर्तिर्याम्यते स नत्कमारेणोक्तः
 इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यैतव प्रभो न्यूनं संस्मरन्तां यातु त्वत्प्रसादाज्जनाईनेति अ
 थ वाराहोक्ते विधिनीविधिः एकादश्यां राज्ञो कुंभे घृतपात्रोपरि हेमं माषमिति
 मत्स्यपंचामृतं तेन संस्त्राय कं कुमप्रीतव सुयुगयमाद्यैः संसृज्य मत्स्यादिदशा
 वतारान् संसृज्य जागरं कृत्वा प्रतदेव माचार्यं च वस्त्राद्यैः संसृज्य जगदादिजग
 द्भ्यो जगदादिरनादिमान् जगदाद्यो जगद्योनिः प्रीयतामेजनाईन इति दत्त्वा द
 क्षिणां दत्त्वा ब्राह्मणान् भोजयेत् इति तथा ब्राह्मे समाह्वयै रवैराज्ञो भ्रातृभ्यस्तस्य
 दने स्थितं उतिष्ठेति देवदेवेशं नगरे पार्थिवः स्वयं चतुरो वार्षिकान् मासान्
 नियमं यस्य याकृतं कथयित्वा द्विजेभ्यः स्तदद्यात् भक्त्या सदक्षिणं यस्य भक्ष्य

138A

स्थानियमंस्ततंतनद्रव्यंदद्यादित्यर्थः इदंशुक्लास्तादावपिकार्यं प्रसोचेतुय
जामन्येनकारयेत् कार्तिकद्वादशीयोर्लोमासीचमन्वादिः साधोर्वाहकीग्रा
ह्यामन्यस्यागुक्तं कार्तिकशुक्लचतुर्दशीवैकुण्ठसंज्ञासानिसीयव्यापिनीग्रा
ह्यातुक्तं हेमाद्रौ भविष्ये कार्तिकस्यसितेपक्षेचतुर्दश्यांनरोधिपसोमवा
सस्तु संसृज्यहरिराजो जितेंद्रिय इति अस्याएवविश्वेश्वरप्रतिष्ठादिनत्यातन्प्री
त्यर्थं पदोपवासादिक्रियतेतादासुतोदयव्यापिनीग्राह्यातुक्तं त्रिस्थली
सेतोसनत्कुमारसंहितायां वर्षेचहेमलेवारब्धेमासेप्रीमतिकार्तिके शुक्ल
पक्षेचतुर्दश्यामरुणाभ्युदयं प्रति महादेवतियोत्रास्तेमुरुर्तेमणिकर्णि
के स्नात्वाविश्वेश्वरोदेव्याविश्वेश्वरमयूजयदितितत्सर्वदिनेचोपवासः का
र्यः प्रभातेविमलेहात्वापूजांमहाकुन्तादंडपाणेर्महाधाम्निवनेस्मिन्त
तपराण इति तजोवोक्तैः अत्रकार्तिकत्रतोद्यापनमुक्तं पासेकार्तिकमा
हात्म्ये अर्थोर्जत्रतिनः सम्यग्गुद्यापनविधिंशृणु कर्जशुक्लचतुर्दश्यांकुर्या
उपद्यापनंजती तलस्याउपरिष्ठान्तुक्रियां पंडिपकांशुभं तलसीमूलदेरो
सर्वतोभद्रमेवच तस्योपरिष्ठाक्कलशंपंचरत्नसमन्वितपूजयेत्तत्रदेवेशो

नि.सिं.

१३६

139

वर्णिगुर्वन्तपा रात्रौ जागरणं कथाङ्गीतवाद्यादिमंगलैः ततस्तपोर्ण
मास्यावेसयतीकान् द्विजोत्तमान् त्रिंशत्भिन्नानथैकं वा स्वराज्यावानिमं
त्रयेत् अतो देवा इति द्वाभ्यां जुहुयात्तिलयायसं ततो गोकपिलादद्यात्सज्ज
येद्विधिवद्गुरुं इति अत्र कार्तिकी पौर्णमासी पराग्राह्या अमा पौर्णमास्यो
परे इति दीपिकोक्तेः अत्र विशेषो हेमाद्रौ द्वाह्ये पुण्या महा कार्तिकी स्याज्जी
वेदोः कृतिकासु च तथा अग्नेयं तददा अर्धं कार्तिक्या भवति क्वचित् म
हती सा तिथिर्ज्ञेया स्नानदानेषु चोत्तमा यदा तु याम्य भवति अर्धं तस्यां तिथौ
क्वचित् तिथिः सापि महा पुण्या मुनिभिः परिकीर्तिताः प्राजापत्यं यदा अर्ध
ं तिथौ तस्यां नराधिप सामहा कार्तिकी प्रोक्ता देवानामपि दुर्लभा इति पा
पैविरारवास्यदा भानुः कृतिकासु च चंद्रमाः सयोगः यमको नाम पुष्करे
वति दुर्लभा इति यमकं पुष्करे प्राप्य कपिलायः प्रयच्छति सहित्या सर्वपापा
निविष्टमवलभते पदं गौडगंधेयमः आद्याद्यां मय कार्तिक्या मध्यां गीन्
पंचवादि जान् तर्ह्येति तत्पूर्वतु तदस्याक्षय्यमुच्यते यमः कार्तिक्या पु
ष्करे स्नातः सर्वपापैः प्रमुच्यते माघ्यां स्नातः प्रयागे तमुच्यते सर्वकि

राम
१३६

139A

ल्विधैः अस्यामेव सायं काले मत्स्यावतारः ज्ञातः इत्युक्तं पापे कार्तिकमहत्मे
 वराहत्वायतो विष्णुमत्स्यरूपो भवन्नतः तस्या दत्तं कृतं ज्ञातं दक्षय्यफलं स्मृतं
 इति अत्र निष्ठुरोत्सव उक्तो भार्गवार्चनदीपिकायां योर्लमास्यां तु संध्यायां कर्त्तव्य
 होपुरोत्सवः प्रभाते नमंत्रेण प्रदीपांश्चरुमालये कीटाः पतंगाः मशकाश्च वृक्षजले स्थलेष्वपि
 चरन्ति नीवाः दृष्ट्वा प्रदीपं न च जन्मभारितो भवन्ति तितं अपचरिष्युः अत्र विष्णो
 र्लो विप्रशस्तः तदुक्तं मात्स्यकर्त्तव्यां यो वक्षो हर्गं कृत्वा नक्तं समाचरेत् प्रैवं पदमवा
 प्रोति शिवव्रतमिदं स्मृतमिति अत्र कार्तिके यदरीनमुक्तं कारीरं वडे कार्तिक्यां कृ
 तिका योगेयः कुर्जात्वा मिदं सप्तजन्मभावे द्विप्रो धनाढ्यो वेदपारग इति ॥
 इति श्री भट्टकमलाकरकृतो निर्णयसिंधौ कार्तिकः समाप्तः मार्गशीर्षक
 द्वाव्यमी कालाव्यमी साचरात्रिव्यापिनी ग्राह्या मार्गशीर्षासिताष्टम्या काल
 भैरवसंनिधौ उद्योष्य जागरं कुर्वन् सर्वपापैः प्रमुच्यते इति कारीरं वडं रा
 त्रिव्रतत्वावगतेः रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्त्तव्यां समुर्वीति धिरिति ब्रह्मवैवर्ते ।
 च दिनद्वयं शतो रात्रिव्याप्ता बुतैरेव भैरवोत्पत्तेः प्रदोषकालीनत्वादिति केचित्
 तत्र शिवरहस्यमध्यान्ते भैरवोत्पत्तेः अवगात् तथा च तत्रैव नित्ययात्रादिकं कृ

नि.सिं.

१४.

140

त्वामध्याह्ने संस्थितारवा वितुषक्रम्यन्नस्राणारुदेवज्ञाते उक्तं तदोग्ररूपानव
द्यान्मत्तः श्रीकालभैरवः प्राविरासीत्तदा लोकान्भीषसन्नरिवलानरेषीति
अत्रोपसमेवप्रधामुक्तं तत्रैव उपोषस्यांगभूतमर्घ्यदानमिहस्मृतं तथाजा
गरांरात्रौपूजायामचतुष्टये संध्यायामपिपूजैवोक्ता तेनमध्याह्नमपिनी
युक्ता दिनद्वयैरातः संध्यायांवातद्व्यात्रौषर्वैव सर्वोक्तवचनान्तराग्न्या
तरेव यामत्रयोर्ध्वगामिन्यां प्रातरेवहिपारणेतिवचनान् अत्रचकालभैरव
पूजोक्तात्रिस्थलीसेतौक्त्याववि विधांपूजांमहासंभारवित्तैः नरोमार्गा
सिताष्टम्यावार्षिकंविष्णुस्तजेत् तथा तीर्थेकालोदकेस्नात्वा कृत्वातप
णमुत्तरः विलोक्यकालराजानंनिरया उद्धरेत्युत्तमिति इयंचकार्तिकवचनंतरा
गौणचंद्राभिप्रायेण मार्गशीर्षशुक्लपंचम्यानागपूजांताहेमाद्रौस्कांदे शु
क्लामार्गशीरेपुण्योप्रावणेयाचपंचमी स्नानदानेर्वृक्षफलानागलोकाप्रदायि
नीति इयंनागपूजांयांषष्ठीयुतैवग्राह्यापंचमीनागपूजायांकार्याषष्ठीसम
विता तस्यांतुतुष्टितानागा इतरासचतुर्थिकेतिमदनरत्नेवचनान् मा
र्गशीर्षशुक्लषष्ठीचंपाषष्ठीतिमहाराष्ट्रेषुप्रसिद्धाः साउत्तरपुताग्राह्याव

राम
१४०

एमुन्योरिति युग्मवाक्यात् पूर्वाङ्गे देविकं कुर्यादिति वचनादस्य च देवक
 मत्वात् इयमेव योगविशेषेण च ये तु च्यते तत्तुं ब्रह्माऽपुराणे मत्वा रिमा
 हात्म्ये मार्गे भाद्रपदे शुक्ल षष्ठी वैधति संयुतारवि वारेण संयुक्ता सा चायेती
 ह कार्तिकेति विशाखा भौमयोगेन सा चायेतीह विश्रुतेति मदनरत्ने पाठः
 मार्गशीर्षे मले पक्षे षष्ठ्या चारे शुभमालिनः शततारा चंद्रे लिंगं स्यादृष्टगोचरमि
 ति इयं योगवशेन पूर्वापरा वाकार्या पंचाषष्टी सप्तमी युतेति दिवोदासः इयमे
 व स्कंद षष्ठी सार्धं युता ह्यष्टमा षष्ठी स्कंद षष्ठी शिवरात्रि चतुर्दशी एताः यु
 वं युताः कार्यास्तिथ्यंते पारणं भवेदिति भृगुक्तैः परे हि राजा वाद्याप्य मध्ये
 पारणं संभवेदं अन्यथोत्तरैवेति दिवोदासः अथ यथैत षष्ठी सुसेना वि
 दारकः स्कादमहासेन महाबल रुहेमाग्निज षष्ठ्यं चक्र गंगा गर्भेन मोक्तो
 इति राजतं स्कंदं संसृज्य विप्रापदद्यादिवोदासः मार्गशीर्षे शुक्ल चतु
 र्दश्यां पिराचमोचनीतीर्थे श्राद्धं त्रिस्थली सती भद्रं रुक्ते तस्य प्राप्तये
 शाख्य स्वपित्रा षुदेरपत्न्यै पार्वणात्वादपराह व्याधिनी ग्राह्या अज्ञातना
 मपिराचा षुदेरपत्न्यै त्रिकोदिष्टत्वात्तथाह व्याधिनीति कलधर्मव्रतादौ

तत्तरैव मार्गशीर्षपौर्णमास्यादज्ञात्रेयोत्यतिः तडक्तं स्कां देस ह्यादिरं वडमार्ग
 शीर्षे तथा मासि दशमे द्विसुनिर्मले मृगशीर्षयुते पौर्णमास्याजस्य च वासरे ज
 नया स देदीप्यमानं पुजं सती मुने तं विष्णुमागतं ज्ञात्वा अत्रिर्नमाकरोत् स्वयं द
 त्तवान् स्वस्य पुत्रत्वादज्ञात्रेय इतीश्वरमिति इयं प्रदोष व्यापिनी हृष्टाः मार्गपौर्ण
 मानं तरावमीश्वरका एवं पौषादिमास जयेयि हेमंत शिशिरयोश्च तृथ्या मये
 क्षाणामष्टमीश्वरका एकस्यां वेत्याश्वलायनोक्तेः एकस्यामष्टम्यां वैकार्ये
 ति हरदत्तः क्वचित्पंचम्युक्ता प्रोक्ष्य पृथक्काभयः पितृलोके भविष्यसीति पा
 ष्वच च नात्र तत्पूर्वसप्तमीषु पूर्वेषुः तत्परनचमीष्वन्यथकासु च आद्रमुक्तं
 कालादर्थे मार्गशीर्षे च पौषे च माघे प्रोक्ष्य फाल्गुने क्षमायकोत्पूर्वेषुः
 रान्यथक्त्वं तथा वृका इति यत्तु विष्णुः अमावास्या त्रिष्रोक्षका तिस्रो च वृ
 का इति यच्च कौर्मैः अमावास्या वृका तिस्रः पौषमासादिषु त्रिषु इति तच्च त्रु
 र्था अनावश्यकत्वाय याचाप्यन्या च तृथी स्यातां च कुर्यात्प्रयत्नतः इति चार
 पुत्रसंज्ञापुराणात् आहुमेतेषु कर्वाणेन रक्तं प्रतिपद्यत इति विष्णुस्मृत्यैरि
 ति श्रुत्याणिः सारवाभेदात् व्यवस्थेति तत्त्वं वा पुत्रसंज्ञयोः अर्थादप्येः

सदाकार्यामांसेरन्यासदाभवेत् शकैः कार्यान्तीयास्यादेवद्रव्यगतोविधिः पौ
 षादिक्रमः अन्वष्टकात् प्रागेव निर्णिताः तजाष्टम्यपराङ्मुखापिनीग्राह्या अ
 षाष्टादनपर्यन्तं प्राङ्पार्श्वेणवद्रवेदित्याश्रलायनकारकोत्तेपराङ्मुखा लत्या
 श्रपार्श्वेणस्य पूर्वैश्चरन्वष्टकाश्राद्धयोक्तमष्टम्यनरोधेन निर्णयः अतएवसू
 त्रं पूर्वैश्चः पितृभ्योदद्यात् अथरेचुरन्वष्टकमितिच अत्रकामकालोविश्वेदेवो
 इष्टिश्चाद्वै क्रतुदक्षाचाष्टम्यकामकालकावितिसायणीये शंखेवाक्ते अथश्चा
 क्षाकरणे प्रायश्चित्तमुक्तं अथविधानेन अभिर्द्युभिर्जयेन्मंत्रं शतवारं ततदिने अ
 न्वष्टकं यदा मून्यं संपूर्णयाति सर्वयेति अथ शक्तेत्वाश्रलायनः अतश्चोभूते
 ष्टकाय मुनास्यालीपाकेनवानडुहोयवसमाहारेदग्निना वाकाकेभ्यो यो
 देवामेष्टकेति नत्वेवानष्टकः स्यादिति मार्गरीक्षादिषु मलमासे सति तत्रा
 ष्टकानकार्या चतुर्णामिति ग्रहणादित्युक्तं नारायणहस्तौ काठकगृह्येपिम
 हलयाष्टकाश्राद्धोपाकर्मोपाधिकर्मयत्न स्पष्टमासविशेषाख्याविहितं वर्ज
 नमलप्रतिमार्गदिरविवारेष्टकाम्यं व्रतमुत्तरेमाहौ तत्रभक्ष्याण्युक्तानि संग्रहे प
 जत्रित्वं तलस्यास्त्रिपलमपि घृतं मार्गरीक्षादिभ्यं मुष्टि त्रित्वं तिलानां त्रि

पल दधितया दुग्धकं गोमयंच त्रित्वं तोयां जलीनां त्रिर्मरिचकमयोत्रिः पलाः २
 सक्तवः स्युर्गोमूत्रं राकं रासकं विरिति विधिना भानुवारे क्रमेण इति श्रीभट्टक
 मलाकरकृतनेतिर्णयसिंधो मार्गशीर्षः धनुः संक्रमे पाराषाड राघटिका पुण्या
 अन्यस्यागवत् अत्रोत्सर्जननिर्णयो वत्तव्योऽप्युपाकर्मप्रसंगात् प्राये वोक्तः कल्प
 तरो भविष्ये षोष्ठे मासि यदा देविमुक्ताष्टम्यां च धो भवेत् तस्यां स्नाने जपो होम
 सूर्येण भोजनं मत्प्रीतये कृतं देवि रात साहसिकं भवेत् अत्रैव रोहिण्या द्वाये
 गोपुण्यतमत्वं तत्रैव ज्ञेयं षोष्ठमुक्ते कादशी मन्वादिः सा चोक्ता प्राक् षोष्ठ्योर्णिमा
 नंतराः सप्तम्यष्टमी नवम्योष्टकाद्याः प्रागुक्ताः षोष्ठा मावास्या यामर्द्धा दयो योग
 विशेषः तदुक्तं मदनरत्ने महाभारते अमार्कपातप्रवरो र्युक्ता चेत् षोष्ठ्यमाघयोः
 अर्धोदयः सविज्ञेयः कोटि सूर्यग्रहे सम इति पुष्यमाघयोर्मध्यवर्तिनी षेष्ठयो
 र्णिमा स्युत्तरा मावास्येत्यर्थ इति भट्टः पुष्यस्य माघस्य चेत्यर्थ उक्तो मदनरत्ने तत्र
 हेमाद्रि विरोधान् तत्र हि माघावोक्तः तथा दिवैव योगः रास्तोयं न तत्रात्रौ कदा
 चनेति हेमाद्रौ मदनरत्ने च स्वर्दि माघा मायां व्यतीपाते आदित्ये विष्टुर्देवतै
 अर्धोदयं तदित्याहुः सहस्रार्कग्रहेः समं तत्रैव माघमासे कृष्णपक्षे पंचदश्यां

142A

रवेदिने वैष्णवेन तत्र श्रेष्ठेण व्यतीपाते सुदुर्लभे घृते कुर्यादित्यग्रेणान्वयः तत्रै
 व ब्रह्मविष्णुमहेशानां सौवर्णीः पलसंख्यायाः प्रतिमास्तु कर्त्तव्यास्तद्वेन
 द्विजोत्तम साग्रं शतत्रयं रांभोर्द्रोणानां तिलपर्वतः कर्त्तव्योपर्वतो विष्णुसुदयो
 सर्वसंख्याया शय्यात्रयंततः कुर्यादुपस्करसमन्वितं तिलैर्होमं कृत्वा प्रतिमां द
 द्यादित्युक्तं स्कांदे अर्धोदये तस्य प्राप्ते सर्वगंगा समंजलं शुद्धात्मनो द्विजा सर्वे
 भवेद्युर्ग्रसं समिताः यत्किंचिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभमिति अत्र दानवि
 शेषानि रणिया मते स्कांदे चतुर्वर्षे पलं मुखं अमंत्रं तत्र कारयेत् चत्वारिंशत्पलं
 वायपंचविंशतिवच अमंत्रं याजं तच्च कांश्यमपमित्युक्तं तत्रैव एवं सुघटि
 तं कांश्यं कांश्यभाजनमुत्तममिति तथा निधाय पायसं तजप यमवदलं लिखे
 त् चैत्त्वमस्य कर्णिकायां तु कर्षमात्रे सुवर्णकं तदभावितं तदर्थं वा तदर्थं वा
 पिकारयेत् भूमौ ततः ङ्गैः शुद्धैः कृत्वा दलमुत्तमं अमंत्रं स्थापयेत् तत्र ब्रह्मविष्णु
 शिवात्मकं तेषां पूजांततः कार्याश्वेतमाल्यैस्तु शोभनै वस्त्रादिभिरलंकृत्य
 ब्राह्मणाय निवेदयेत् मंत्रस्तु सुवर्णयास्य सामं जयस्मा देतत्र्यमयं आयातेः ता
 रकं यस्मात्तद्गुहाण द्विजोत्तम समुद्रमेखलां पृथ्वी सम्यग्दातुं शक्यं तत्फलं

नि.सिं.

१४३

१४३

लभते मर्त्यः कृत्वेदं दानमुत्तममिति इति श्रीभट्टकमलाकरकृते निर्णयसिंधौ पौ
षः अथ माघस्नानं तत्र विष्णुः तुलामकरमेवेष्टुप्रातस्तयायी सदा भवेत् द्वादश्यां
पौर्णिमायां वा शुक्लपक्षे समापनमिति पादोति योष्यस्येकादशी शुक्लामार
भ्यस्यं श्लेशयः मासमात्रनिराहारस्त्रिकालस्नानमाचरेत् त्रिकालमर्चयेत् वि
ष्णुं त्वत्तमोगाजितेन्द्रियः माघस्येकादशी शुक्लायावद्विद्याधरो मेति त्रिकाल
स्नानं मासोपवासविषयं निराहारस्तुक्तेः पृथ्वीचंद्रोदये त्वन्यथोक्तं विष्णुः दश
वापौर्णिमासीवाप्रारभ्यस्नानमाचरेत् पुण्यामृतानि त्रिशितमकरस्थे दिवाकरे
इति अत्र दर्शमिति शुक्लादिमुख्यं चंद्राभिप्रायेण अयं नृपक्षो नेदानीं प्रचरति ।
अत्राधिकारिणो भविष्ये ब्रह्मचारी गृहस्थो वा न प्रस्थो वा भिक्षुकः बालश्च ब्रह्म
पुत्रानश्ननरनारीनपुंसकाः स्नात्वा माघे शुभे तीर्थे प्राप्नुवंतीति स्नानं फलं पादो
सर्वधिकारिणो अत्र विष्णुभक्तौ यथान्य ब्राह्मे उद्योदकेन वा स्नानमशक्ये
सति कुर्वते दृढेष्टुसर्वगात्रेष्टु उद्योदकेन विशिष्यते वैष्णवास्तु तैगोडनिबंधे
च स्नांदे योष्यात्तु समतीतायां यावद्भवति पूर्णिमा माघमासस्य तावद्विष्णु
जाविष्णोर्विधीयते पितृणां देवतानां च मूलकं नैव दाषयेत् ब्राह्मणो मूल
कं भुक्ताचरेच्छां द्रायणव्रते अन्यथा याति नरकं भविष्ये इष्टु इष्टु व्रजेनी

३४

१४३

यं प्रयत्नेन मूलकं मदिरोपमं यदा तु माघो मलमा सो भवति तदा काम्यानां
 तत्र समाप्तिनिधाधाना मासद्वयं स्नानं तत्रियमाश्रक र्त्तव्याः मासोपवासचंद्रा
 यणादितु मलमसेराव समापयेत् तदुक्तं दीपिकायां नियतत्रिंशदिनत्वाच्छुभे
 मास्यारभ्य समापयेत्तमलिने मासोपवासव्रतमिति स्नानार्भे च मंत्रो विष्णु
 नोक्तः तत्र चास्यायनियमं गृहीयाद्विधिपूर्वकं माघमासमिमं पूर्णं स्नानं हं दे
 वमाधव तीर्थस्यास्य जले नित्यमिति संकल्पयेत्तसीति प्रत्यहं मंत्रं श्रयाये दुः
 रवदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविना
 शानं मकरस्थेरवो माघे गोविंदाच्छुभमाधव स्नानेनानेन मे देव यथोक्त फलं दा
 भव इमं मंत्रं समुच्चार्य स्नायात्तौ न समन्वित इति प्रत्यहं सूर्यार्घ्यं मंत्रं श्रयाये चंद्रो
 दये मासे सवित्रे प्रसवित्रे च परंधामजले मम त्वत्तैजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सह
 स्रधेति स्नानकालं सूर्योदयः त्रिस्थली सेतौ मकरस्थेरवो यो हिनसा
 त्वभ्युदिते रवाविति माघमासे रटं त्यापः कचिदभ्युदिते रवाविति च पाप
 वचनात् संप्राप्ते माघमासे तु तपस्विजनवल्लभे केशांतिसर्ववारीणि

नि. ति.

१४४

१५५

समुद्रं प्रतिभास्करे पुनीमः सर्वपापानि त्रिविधानि न संशय इति नारदीयोक्तेः
यो माघमास्युषसि सूर्यकामितमे स्नानं समाचरति चरुनदीप्रवाहे उधृत्य सप्त
पुरुषान् पितृमातृवश्यान् स्वर्गप्रयातमरदेहधरो नरोसौ इति भविष्योत्तरवच
नाच्च ब्राह्मेत्यत एव उक्तः अरुणो द्येतु संप्राप्ते स्नानकाले विचक्षणः माधवी
धिषु गंधायन्यः स्नाति शूरयजित इति तथा अरुणो द्यमारभ्य प्रातः कालाव
धिप्रभो माघस्नानवर्तां पुण्यक्रमात्तत्र च धारयन्तु सनक्षत्रलुप्ततारं तु म
ध्यमे सवितुर्द्विदिने भूयतनौ हीनं प्रकीर्तितमिति तेनातुराक्षये क्षयाव्यवस्था
इदं च स्नानं प्रयागेति प्रशस्ते कारणाः शतगुणा घोक्ता गंगा यमुनसंगमे सहस्र
गुणिता सापि भवत्यश्विमेवाहिनी यश्चिमाभिमुखी गंगा कालिंघा सहसंग
ता हंति कल्पकृतं पापं सामाद्ये नृप दुर्लभेत्यादि पाद्यादिवचोभ्यः विविक्त
रक्तमत्र पितामहकृतप्रयागसेतोत्तयः ब्राह्मे यत्र कुत्रापि वामाघे प्रयागस्मर
णान्वितः करोति मज्जानं तीर्थं सलभे द्वांगमज्जनं तथा समुद्रे प्यति प्रशस्ते
तदुक्तं यद्वितीतं द्वादशे प्रभासखंडे माघे मासि च यः स्नायाच्चैरं तर्ह्येण भावतः
पौंडरीकफलं तस्य दिवसे दिवसे भवेत् माघस्नानं काम्यमेवेति भट्टाः विस्वा

१४४

दिवाक्ये सदावर्यशब्दान्नित्यत्वाच्चगतेर्नित्यकाम्यमितियुक्तं मासपर्यन्तं
 स्नानासंभवेत्तत्र हंकां हंवास्नायात् अस्मिन्नयोगे त्वरात्तेषां स्नायादपि दिन
 त्रयं प्रयागे माघमासे तु अहंस्नातस्य यत्फलं नाश्वमेधसहस्रेण तत्फलं लभ
 ते भुवीत्यादि पाद्यादिवचनात् अगमकरसंक्रमस्य सप्तमी माघीति अहंस्ने
 के माघशुक्ल दशम्यादि इत्यन्ये मकराद्यहं इत्यपरे माघस्याद्यस्त्रहं इति के
 चित्त्रयोदस्यादीति बहव महामाघी पुरस्तत्प्यसत्तौ तत्र दिनत्रयमिति यावोक्तेः
 एतस्यार्थवादत्वाद्यत्किंचिदिनत्रयमिति भट्टाः तत्त्वं तु संदिग्धे मुवाक्यशेषा
 द्विनित्याया जयोदश्यद्येवेति प्रयागं विना पियागे अस्मिन्नयोगे त्वरात्तेषां स्नाया
 दपि दिनत्रयं माघस्नानेनेयमास्तनारदीये नवक्रिंसेवयेत्स्नातो ह्यस्नातोपि च
 तानने होमार्थं सेवयेद्द्विंशीतार्थं न कदाचन अहन्यहनिदानव्यास्तिलाः श
 र्करयान्विताः त्रिभागस्तु तिलानां हि चतुर्थः शर्करयान्विताः अनभ्यंगी वरारोहे
 सर्वमासनयेद्वृत्ती तथा अग्राक्षतशरीरस्तयः कषं स्नानमाचरेत् पदे पदे श्व
 मेधस्य फलप्राप्नोति मानवः तथा शंखचक्रधरं देवं माधवं नाम पूजायेत्
 वक्रिं हुत्वा विधानेन ततस्त्येकाशानो भवेत् भूशय्याञ्जसचर्येण शक्तः स्ना

नि.सिं.

१४५

145

नं समाचरेत् अरातौ त्रसचर्यादौ स्वेष्टा सर्वजकथ्यते तिलस्नायी तिलोदकीति
लक्ष्मीतिलोदकी तिलभुक् तिलदानाचष्टतिलाः पायनाराणा इति तथा प्रया
गसंभवेकारणादराश्वमेधोत्तरस्य प्रयागातीर्थस्नानमुक्तं कारीखंडे कारुडुवे प्रया
गे येन पसि स्नाति मानवाः दराश्वमेधजनितं फलं ते वा भवेत्तु ध्रुवमिति स्नानो
त्तरं भदनपारजाते विष्णुः काष्ठमौनौ नमस्कृत्य यज्ञयेत्पुरुषोत्तमं अवरपमेच
कर्त्तव्यं माघस्नानमिति श्रुतिः भविष्ये तैलमामलकाश्चैव तीर्थदेयास्तु नि
त्यशः ततः प्रज्वालयेद्द्विंसेवनार्थं द्विजन्मने एवं स्नानं वसाने तु भोज्यं देयमावा
रितं भोजयेद्द्विजदं पत्ये भूषयेद्दत्तु भूषणैः कंबलाजिनरत्नानि वासांसि च वि
धानि च चालकानि च देयानि प्रद्याद नययस्तथा उपानहो तथा गुप्ता मोचके
पाय मोचके अनेन विधिना दद्यात् माधवः प्रीयतामिति पादौ भूमौ रायी
त होतव्यं माज्यं तिलससन्वितं तथा अन्नं चैव यथा शक्त्या देये माघेन राध्या
य सुवर्णैरुक्लिं कामाजं दद्याद्देवि देतथा माघांते तु विराद्यो नारदीये
माघावसाने शुभगेष्टदूरसंभोजने स्मृतं सूर्यामे प्रीयतां देवो विष्णुं मूर्तिनि
रंजिनः दं पत्यो वीसमी सद्धमे सपधान्य समन्विते त्रिशतं मोदका देयाः शर्करा
तिला संयुता इति अत्रैकादशी विधानेन न ज्ञतस्योद्यापनं तथेति पायवचनात् १

राम
१४५

145A

पूर्वेद्विउपवासपूजनादिकृत्वा परेद्वि तिलचवाज्यैरष्टोत्तरशतं होमं कृत्वा स
 वित्रे प्रसविजेचेति पूर्वोक्तं मंत्रमुत्वा दिवा करजगन्नाथप्रभाकरनमोस्तुते
 परिसर्गं कुरुते ह माघस्नानमुखः पतेरिति क्षमापयेदिति संक्षेपः मकरसंक्रांतौ
 हेमाद्रिमते परतः चत्वारिंशत्कर्कटकेन ज्योमकरे तु दशाधिका इति ब्रह्मवे
 वृत्तं माधवमते तु विंशतिः त्रिंशत्कर्कटके पूर्वी मकरे विंशतिः परेति वृद्धवशिष्ठोक्तैः
 यदा तु पूर्वी स्नात्वं संक्रांतिर्भवति तदोभयमते पूर्वमेव पुण्यकालः रात्रौ तु प्रदोषे निशी
 चे वामकरसंक्रमे माधवमते द्वितीयदिन एव पुण्यं यद्यस्तमयवेलायां मकरं याति भास्कर
 वः प्रदोषे चार्द्धरात्रे वा स्नानं दानं परेहनीति वृद्धगर्गवचनात् अस्तमयः प्रदोषः प्रदो
 षे पूर्वरात्रे कार्मुकं तु परित्यज्य ऋषे संक्रमते रविः प्रदोषे चार्द्धरात्रे वा स्नानं दानं परेहनीति
 भविष्योक्तेः नराभोगाः परेहनीति हेमाद्रौ पाठः कालादशी निर्णयामृतमदनपारिजा
 तादयोप्येवमृचुः दाक्षिणात्याश्चैतदेवाद्रियंते यत्तु हेमाद्रिणाद्यो वा शब्दोपपद्यते द्वितीय
 स्तथार्थे यथा प्रदोषे पूर्वद्युस्तथार्द्धरात्रे परेहि हृत्युक्तैः तस्यैव नमोस्तुते न परे हि पुण्यं व

नि. सिं.

१४६

१४६

कुं प्रदोषे इति दिनद्वये पुण्यनिशार्थमर्द्ध रात्रग्रहणं हेमाद्रिस्मृत्यंघ्रिसारानंतभद्रादिम
ते तु निशीयात् पूर्वपश्चाच्च संक्रांतौ पूर्वदिने परदिने वा पुण्यं धनुर्मीनावति क्रम्य कन्यां च मि
थुनं तथा पूर्वी परविभागेन रात्रौ संक्रमणं यदा दिनांते पंचनाड्यस्तु तदा पुण्यतया स्मृताः
उदये पितृणां पंचदैवेषु अथ कर्मणीति स्कंदवचनात् पूर्वी परविभागेनेति मकरकर्क
भिनविषयं पूर्वी क्तवच्चो विरोधादिति मदनरत्ने उक्तं षडशीतिमुखेतीते अतीते चोत्तरायणे
इत्यादि विरोधाच्च तेन पूर्वैकवाक्यतयाऽयमर्थः रात्रौ पूर्वभागे मकरसंक्रमे परे ह्युदये
पंचनाड्यः पुण्याः रात्रावपरभागे कर्कसंक्रमे पूर्वदिनांते पंचनाड्य इति एवं सर्वेषाम्
विरोधः मकरे सामान्येन परदिने पुण्यत्वेऽपि पुण्यातिशयार्थमिदं यत्तु देवलयराश्वौ आ
सन्नसंक्रमे पुण्यदिनां ईस्त्रानदानयोः रात्रौ संक्रमणे भानो विषुवत्ययने दिवेति अत्रमा
धुवः आयने दिवा जाते तदई पुण्यं कर्क पूर्वमकरे तं एतन्मध्यदिनायनपरमिति हेमा
द्रिस्तु रात्रौ विषुवत्या सन्नदिनां ई पुण्यमयने त्वासन्नं दिनं पुण्यं दिने इति पाठे उभय
त्रदिनां ई पुण्यमित्याह एतदेवोक्तं दीपिकायां अथायनमधः पश्चान्निशीयाद्भवेत्

राम
१४६

यद्यासन्नमहत्तदधर्ममयवापुण्यमिति तत्त्वतः आसन्नसंक्रममित्यस्य विषु
 द्रवत्येवान्वयः अयनेरात्रौ सति दिने पुण्यं कास्मिन्नित्यपेक्षायां कर्के पूर्वै हि
 मकरे परेऽतीति वाक्यांतरच सादर्थ्ये उच्यमानेन कोपिविरोधः यत्त्वेन तभट्टः
 अथ निरीयात् प्राग्यदा भवेत् अयनं विषुतत्र प्राग्दिनां तिमनाडिकाः पंच पुण्य
 तमाः यस्मान्निरीयाच्चैद्रवे तथा आद्यापरदिनस्यापि तद्वदित्येव निर्णयः इति
 अपरा कर्के व्येवं असंगते यदा सूर्ये कक्षया तिदिवाकरः प्रदोषे वा र्द्धरात्रे वा तदा पु
 ण्यं दिनद्वयमिति बोधा यन वचनात् दिनद्वये वा पुण्यकालः तदा पुण्यं दिनान्तर
 मिति मदनरत्ने पाठः गृह्णन् प्राच्यादीत्यास्त्विदमेवाद्रियते अत्रापि पूर्ववारे मेयं
 तिथि तत्त्वादिगोडग्रंथास्तु प्रदोषार्धरात्रमिन्नरात्रेः पूर्वभागे पूर्वदिनेऽपरभा
 गे परदिने पुण्यमन्यसंज्ञातिवत् विशिष्यते न निर्दिष्टात् प्रदोषश्च प्रदोषो
 त्तमया दूर्ध्वघटिका द्वयमिष्यते इति वत्सोक्त इत्याहुः तत्र असंगते इति त्रित
 यवे यथाप्यतेः अतः प्रदोषपदेन तद्विज्ञेवरात्रि उच्यते अतएव पावनोदय
 तेरविरिति वृद्धिगार्ग्यादि निर्दिष्टाया यने सर्वरात्रौ संक्रमे पूर्वदिनमुक्तं व
 त्साकिरप्यध्वपनापरा इह तमुहूर्त एव प्रदोष मकरे दानविरोधो हेमाद्रौ स्कादे

वत् c.

धेनुं तिलमयी राजन दद्याद्यशो तत्रायणे सर्वान्कामान्वाप्नोति विंदते पर
 मं सुखं विष्णुधर्मोपि उत्तरेत्यर्थेने विप्रावत्सु दानं महाफलं तिलपूर्वकामनदा
 हं दत्तारोगैः प्रमुच्यते इति शिवरहस्येपि तस्यां कृष्णतिलैः स्नानं कार्यं चोद्धर्तनं
 शुभैः तिलदेयाश्च विप्रेभ्यः सर्वदेवोत्तरायणे नान्यो देवाय विप्रेभ्योऽष्टकेन
 समं ददेत् उत्तरायणमासाद्य नरः कस्मात्स शोचति तथा मकरे राजा वपि आ
 दादिभवतीत्युक्तं प्राक्तं प्राक् माघाय योगविशेषोऽर्थोदयः प्रागेवोक्तः माघकृ
 ष्णचतुर्दश्याय मनर्षणमुक्तं हेमाद्रौ यमेन अनर्काभ्युदिते काले माघकृष्णच
 तुर्दशी स्नानः संतर्प्य त्वयं सर्वपापैः प्रमुच्यते इति माघशुक्लचतुर्थी तिलाच
 तृथी साप्रदोषव्यापिनी ग्राह्या माघशुक्लचतुर्थी तु नक्तं न परायणाः येषां
 दुष्टे च विध्यति ते च सूरसुरद्वामितिका एति रं वं ज्ञान माघमासे चतुर्थ्यां तु नस्मि
 न्काल उपोषितः अर्चयित्वा तु यो देवि जागरंत गकारयेदिति स्यात्तौ सौ लैंगा
 च इयमेव कुंदचतुर्थी साप्रदोषव्यापिनी ग्राह्या माघशुक्लचतुर्थी तु कुं
 दपुष्पे सदा शिवं संपूज्य यो हिनक्ता एति स प्राप्नोति श्रियं नर इति कालादरीको
 र्मोक्तेः माघशुक्लपंचमी तु उक्तं हेमाद्रौ वाराहे माघशुक्लचतुर्थी तु वरमारा

147A

ध्यचप्रियः पंचम्यां कुंदकुसुमैः पूजां कुर्यात्समृद्धये इयं माधवमते पूर्वाह्ने मा
 त्रिमते परा चैत्रशुक्ले श्रीपंचमीति दिवोदासः माघशुक्लसप्तमीरथ सप्तमी
 साग्ररुणोदयव्यापिनी ग्राह्या सूर्यग्रहणतल्यातशुक्लमाघसप्तमी अ
 रुणोदयवेलायां तस्यां स्नानं महाफलं मिति चंद्रिकायां विधुक्चनान् अरु
 णोदयवेलायां शुक्लमाघसप्तमी प्रभागे यदिलभ्येत कोटिस्तूर्यग्रहेः सम इति व
 चनाच्च यत्तु दिवोदासीये अचला सप्तमी दुर्गाशिवरात्रिर्महाभरः द्वादशी वत्स
 पूजायां सूर्यदाप्राग्युतासदेति षष्ठीयुतत्वमुक्तं तद्यथा पूर्वदिशि चटिका द्वये
 षष्ठी सप्तमी च परेष्टुः अथ वशादरुणोदयात् पूर्वसमाप्यते तत्परं ज्ञेयं तत्र ष
 ष्ठी सप्तमी दायं प्रवेश्यारुणोदये स्नानं कार्यं मदनरत्ने भविष्योत्तरे माघे
 ष्ठी सप्तमी दायं प्रवेश्यारुणोदये स्नानं कार्यं कर्त्तव्यं स्नानार्घ्यदानाभ्यामाशुपारो
 मासि सिते पक्षे सप्तमी कोटिभास्कराः कर्त्तव्या स्नानार्घ्यदानाभ्यामाशुपारो
 ग्यसंपदः अविधिर्न विध्ये कृत्वा षष्ठीमेकभक्त सप्तम्यानि श्रलंजलं रा
 ज्यं ते वालये धास्त्वदत्वा शिरसि दीपकं तथा जलं प्रक्रम्य न केन चाल्यते
 यावत्तावत् स्नानं समाचरेत् सौवर्णे राजते पात्रे भातबालं बुभुक्षे तथा ते
 लेन वस्त्रिं दानव्यामहारजनरंजिता महारजनं कसंभं समाहितमना भूत्वा

नि.सिं.
१४८

148

दत्त्वारिरसिदीपकं भास्करं हृदये ध्यात्वा इमं मंजमुदीरयेत् नमस्ते तुरुद्र
रूपायरसानां पतये नमः वरुणाय नमस्ते स्फुरिवा सन मोक्तते जले परि
हरे दीपं ध्यात्वा संतर्प्य देवता इति स्नानं मंत्रं अकारं शीरं वडे यद्यज्जन्म कृतं पापं
मया जन्मसप्तसप्त तन्मे रोगं च शोकं च माकरी हंतुं सप्तमी एतज्जन्म कृतं पापं
यच्च जन्मांतरा र्जितं मनो वाक्ताप जं यच्च ज्ञाता ज्ञाते च ये पुनः इति सप्तविधं पा
स्नानात् नमो सप्तसप्तिके सप्तव्याधिसमायुक्तं हरमा करि सप्तमी एतन्मंत्रं यं ज
प्त्वा स्नात्वा पादोदकेन रः केशवा दित्यमा लोक्य भणान्निःकलुषो भवेत् दि
वोदासी ये मदनरत्ने च इक्षुदं डेन जलं वाऽर्चयित्वा सप्तार्कपत्राणि वदरी पत्रा
णि च शिरसि निधाय पूर्वोक्तैर्मंत्रैः स्नात्वा तिलपिष्टं मया पूर्वैर्हमं स्तुत्यं स
प्तज्यविप्राय दद्यात् अर्घ्यं मंजमदनरत्ने सप्तसप्तवदप्रीत सप्तलोकप्रदीपन ।
सप्तसहितो देवगृहाणां धीर्दिवाकर नतः जननी सर्वलोका लोकानां सप्तमी स
प्तसप्तिके सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमंडले इति प्रार्थयेत् सौरागमे अ
र्कपत्रैः सबदो ईवाक्षतसचंदनैः अष्टांगविधिना चार्घ्यं दद्यादात्यतुष्टये अ
त्रदानविशेषो मदनरत्ने भविष्ये ताम्रपात्रे यथा राजया मन्मये वा यशस्ति

राम
१४८

मान् स्थापयेन्निरपिष्टं च स घृतं स गूडं तथा कांचनं तालकं कृत्वा प्रशक्तास्ति
 लपिष्टं संघाद्यरक्तवस्त्रेण पुष्पैर्धूयैः रथार्चयेत् दानमंजस्तु आदित्यस्य
 प्रसादेन प्रातः स्नानफलेन च दुष्टदोर्भाग्यदुःखघ्नं मया दत्तं नृतालकं तालकं क
 र्णभरणं तत्रैव भविष्योत्तरे एवं विधिरथ बरं रथवाजिपुक्तं हैमं च हैमशतदी
 धितिना समेतं दद्याच्च माघसितसप्तमिवासरेयः सोऽसंगचक्रगतरेव मही भुनक्ति
 श्यं मन्वादि रपि श्यं च मूलपक्षस्य त्वात्योर्वा द्विकीर्ग्राह्या यदा माघो मलमासो भ
 वति तदा मासद्वये मन्वादिश्राद्धं कुर्यात् मन्वादि कं तेर्षिकं च कुर्यान्मासद्वये पिचे
 ति स्मृतिचंद्रिकोक्तेः माघश्रद्धाष्टमी भीष्ममी तदुक्तं हेमाद्रौ पाद्ये माघमाससितता
 ताष्टम्यां सन्निलं भीष्मतर्पणं श्राद्धं च येन राक्षसैस्तस्यः संततभागिन र इति भारते
 पिश्रद्धाष्टम्यां तु माघस्य दद्याद्भीष्माय योजनं संवत्सरकृतं पापं तत्कारणादेव न
 श्यतीति धवलनिबंधे स्मृतिः अष्टम्यां तु सिते पक्षे भीष्माय तु तिलोदकं अन्नं च वि
 धिवद्भुजैः सर्ववर्णादिजातयः सर्ववर्णैर्गते द्विजा नय इति संबोधनं तर्पणमंजस्ता
 जैव भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेंद्रियः आभिरद्रिरवाप्तोऽनुपुत्रपौत्रोऽचिन्ता
 क्रियां वैपाद्यपद्यगोजाय सांस्त्यप्रवरप्य च अपुत्राय ददाम्यनुज्जलं भीष्मा

नि.सिं.
१४८

149

यवर्मणो वसनामवतारायशंतनोरात्मजायच अर्घ्यददामिभीष्मायऽप्रावाल
ब्रह्मचारिणेइति एतच्च जीवत् पितृकस्यापि भवति जीवत्पितापि कुर्वीत तर्पणं
यमभीष्मयोरिति याचोक्तेरिति जीवत्पितृनिर्णये पितृनिर्णये पितृचरणोरुक्तं
एतच्चापसवेकार्यमिति दिवोदासीये अत्र श्राद्धं काम्यं तर्पणं नित्यं ब्राह्मणाद्याश्च
येवर्णादद्यभीष्मायनोर्जितं संवत्सरं कृतं तेनैव पुण्यं नश्यति स तमेति मदनरत्नेव च
नात माघशुक्लद्वादशीभीमद्वादशी त्वया कृतमिदं वीरतव नाम्ना भविष्यति सा
भीमद्वादशी देवा सर्वपापहरा शुभेति हेमाद्रौ पाश्र्ववचनात् इयं सर्वयुता युग्मवा
क्यात् माघी पूर्णिमा परेत्युक्तं प्राक् तथा हेमाद्रौ ब्राह्मे मघोऽस्यां योऽश्वजीवेंदोर्महा
माघीति कथ्यते तत्रैव ज्योतिषे मैत्रेय्ये यद्वा सौरिः सिंहचगुरुचंद्रमाः भास्करः
श्रवणर्क्षच महामाघीति सा स्मृता तथा भविष्ये वैशाखी कार्त्तिकी माघीति थयो
तीव्रजिताः स्नानदानविहीनास्ताननेयाः पांडुनंदन तथा निलयात्राणि देया
निकंचुकाः कंवलास्तथेति माघ पूर्णिमानंतराष्टमी माघी अष्टका तन्निर्णयः प
र्वमुक्तः तथा च तत्सृष्टकाश्च राक्तावियमावस्यकी हेमंत शिशिरयोश्च तर्णमपर
पक्षाणामष्टमी सृष्टका एकस्यां चेत्पाश्र्व लायनोक्तेः तथा माघाष्टकां प्रक्रम्य

३४

राम
१४८

149A

तामेकाष्टकेत्याचक्षत इत्यापस्तववचनाच्चेत्यादिप्रयोगपरजानेतेषां इति श्रीभट्ट
 कमलाकरकृततेमाधःसमाप्तः फाल्गुण शुक्ल द्वादश्यां विशेषः कल्पतरो फा
 ल्गुनस्य च मासस्य शुक्ल द्वादश्यां महीयनेत्युपक्रम्य जानादासरथेः यत्रीतस्मिन्नहनिजा
 नेकी उपोषितोरघुपतिः समुद्रस्य तटे तदा रामपत्नी च संयज्यासीताजनकं नंदनीति
 फाल्गुण शुक्ल चतुर्दशी शिवरात्रिः सा च केषुचिद्वचनेषु प्रदोषव्यापिनी ग्राह्येत्युक्तं
 केषुचिन्निशीथव्यापिनी तत्राद्यामाधवीयेवायवीये त्रयोदश्यस्तगते सूर्ये च तस्यै
 वनाडिषु भूतविद्वान्यातत्र शिवरात्रिं तत्र चरेत् स्मृत्यंतरेपि प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या
 शिवरात्रिचतुर्दशी रात्रौ जागरणं यस्मात्तस्मात्तां परितोषयेत् अत्र प्रदोषो रात्रिः
 उत्तरार्द्धे तस्याहेतुत्वोक्तैः कामिकेपि आदित्यास्तमयेकाले अस्ति चेष्टा चतुर्दशी त
 द्रात्रिः शिवरात्रिः स्यात्सा भवेत् इतमेतमेति द्वितीयापितत्रैव नारदसंहितायां अर्द्ध
 रात्रियुतायजमाघशुक्ल चतुर्दशी शिवरात्रिं तत्र कुर्याज्जागरणं नयेति ईशान
 संहितायां माघशुक्ल चतुर्दश्यामादिदेवो महा निशि शिवलिंगं यो दूतः कोटिस्
 र्यसमप्रभः तात्कालं व्यापिनी ग्राह्या शिवरात्रिं तत्रेति पृथिः अर्द्धरात्रौ दधश्रोर्ध्वं
 युक्तायत्र चतुर्दशी तत्रिथावेव कुर्यात् शिवरात्रिं तत्रेति नार्धरात्रौ दधश्रोर्ध्वं यु

नि.सि.
१५०

150

क्वायजचतुर्दशी नैवतत्रतंतं कुर्यात्पुरे श्रद्धा नितः श्रद्धरात्रि श्रद्धिनीययामां त्यक्त
तीययामाघघटी द्वय रूपरतिमाधवः वचनं तत्तं प्राक् एवं सति पूर्वेषु रेवोभयव्या
मौ पूर्वैव त्रयोदशीयदादेवि दिनभुक्तिप्रमाणतः जागरे शिवरात्रिः स्यान्निशि पूर्णमच
तुर्दशीतिस्कांदोक्ते दिनभुक्तिरस्तमयः जयेती शिवरात्रिप्रकार्ये भद्रा जयान्वितेति
स्कांदाश्च दिनद्वये निशीथव्यभिक्त हेमाद्रिमते पूर्वा श्रद्धरात्रा पुरस्ताच्चैज्यायोगो
यदा भवेत् पूर्वविद्धेष्टकर्तव्या शिवरात्रिः शिवप्रियेरिति पादवचनात् मदन
रत्नेष्वेवं गौडाश्रये च माहुः निर्णयाम्ते न सर्वापि शिवरात्रिः प्रदोषव्यापिन्ये
व श्रद्धरात्रिवाक्या निक्कै मुनिकन्यायेन प्रदोषस्तावकानीत्युक्तं तत्र श्रद्धरात्र
स्य पूर्वकर्मकालोक्तेः परदिने प्रदोषनिरीयोभयव्याप्तिसत्त्वादपरेवेति तमाधवः
इदमेव च युक्तं प्रतीमः परेष्टुः प्रागुक्तैर्धरात्रये कदे राव्यामौ पूर्वेषुः संपूर्णत
द्यामौ च सत्यपि परेष्टुः प्रदोषनिरीयोभययोगे पूर्वेषुः संपूर्णव्याप्तेः पूर्वैव व्या
प्यार्धरात्रं यस्यां तु लभ्यते याचतुर्दशी तस्यामेव त्रतं कार्यमत्र सादार्थ्यं भिर्न
रैः तद्द्विधाधो न्विताभूता सा कार्यवृत्तभिः सदेति माधव धृतेरानसंहितोक्तेः
पूर्वेषुः निरीथस्य परेष्टुः परेष्टुः प्रदोषस्येत्येकैकव्याप्तौ तु पूर्वैव जयायोग

राम
१५०

150A

स्य प्राश स्यात् तच्चोक्तं नागरखंडे माघफाल्गुनयोर्मध्ये अस्मिन्नायाचतुर्दशी ।
 अनंगेन समायुक्ता कर्त्तव्या सा सदातिथिरिति पादोति अर्धरात्रात्पुरस्ताच्च ज्ञाया
 योगो यदा भवेत् पर्वविडेव कर्त्तव्या शिवरात्रिः शिवप्रियेरिति स्कां देपि भवेद्य
 अत्र योदरयं भूतव्याप्ता मदानिरा शिवरात्रिर्न तत्र कदा जागरणं नयेति मद्
 नामपि पापानां दृष्टावैनिःकृतिः पुरा न दृष्टा कर्त्तव्यं तं पुंसां कुरुयुक्ता तिथिं शिवो
 मिति स्कां देदरी योगस्य निदितात्वाच्च यदा चतुर्दशी पूर्वैद्युर्निरीया इध्वं प्र
 हतापरेद्युश्च निरीयादवागेव समाप्ता नदापरेद्युरेकव्याप्तिस्तत्वात् परैव मा
 घासिते भूतदिने हि रात्रिर्न भवेति योगं यदि पंचदश्या जया प्रयुक्तान्तं जातं कदा
 शिवस्य रात्रिं प्रियकृत्तव्येति वचनात् एवं दिनद्वये प्रदोषव्याप्ताभावे निरी
 यव्याप्तिस्तत्वात् पूर्वैव तेन दिनद्वये निरीयव्याप्तौ प्रदोषव्याप्ता निर्णयः । दिनद्वये
 प्रदोषव्याप्तौ निरीयेन निर्णयः एकैकव्याप्तौ निरीयेन निर्णय इति इयं च
 रविभोमसोमचारेषु शिवयोगे चाति प्रास्ताद्वेमाद्रोतीर्य खंडे लैगे फाल्गुनस्य
 चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे समादिताः कृत्तिवासे श्वरं लिङ्गं मर्चयंति शिवं शुभं तेयां
 ति परमं स्थानं सदा शिवमनामयं शिवरात्रिपारणेतु विरुद्धवाक्यानि दृश्यंति
 स्कां दे कृष्णाम्बुमीस्कंदखट्वा शिवरात्रिचतुर्दशी एता पूर्वयुता कार्या स्तिथ्यं

नि.सिं.
१५१

151

ते पारणं भवेदिति जन्माष्टमीरोहिणीचशिवरात्रिस्तथैव च पूर्वविद्धेव क
र्तव्यातिथिभांते च पारणमिति तिथिमध्ये पि पारणं स्कां दे उक्तं उच्यते चतुर्द
श्या चतुर्दश्यां तु पारणं कर्तैः सुकृतलक्ष्यैः श्रुतं वाच्यं वा न वा ब्रह्मांडोदर
मध्ये तु या नितीर्या निसंतिवै संस्नातानि भवेति इह भूतायां पारणे कर्तुं तिथी
नामेव सर्वा सामुपयासव्रतादिषु तिथ्यंते पारणं कुर्याद्विना शिवचतुर्दशीमिति
अत्र यामत्रयादवाक् चतुर्दशी समाप्तो न दंते तद्धर्मागमिन्यां प्रातस्तिथि मध्य
एवेति हेमाद्रिमाधवादयो व्यवस्थामाहुः तत्र तिथ्यंते तिथिभांते वा पारणं यत्र
चादितं यामत्रयोर्द्धर्मागमिन्यां प्रातरेव हि पारणेत्यादि सामान्यवचने रेव व्यव
स्था सिद्धे रुभयविधिवाक्यवेपथ्यस्यऽपरिहरत्वात् वयं तु तिथ्यंते पारणं भवेदि
ति कृत्वाष्टम्यादिविषयमेव न तु शिवरात्रिविषयं न दुपादानं न पूर्वमुक्तत्वे मात्रक
थनार्थं कथमन्यथा स्कां दे एव अन्य हृदयवाक्यवन्निथि मध्ये पारणविधानं य
दंते तस्माद्विना शिवचतुर्दशीमिति यथुं दस्तशिवरात्र्याः सर्वप्रकारेषु तिथि मध्य
एव पारणेति ब्रूमः शिष्टाचारोप्येवमेव दीपिकायां तु रात्रावपि तिथ्यंते एवोक्तं ।
ब्रूततिथेरंते निरीयेपि चास्त्रीयादिति मदनरात्रकालादरीयोस्तसां सस्तमय
यर्थं तं व्याधिनीचेत्यरेह नि दिवैव पारणं कुर्यात्पारणे नैव दोषभागत्मुक्तं

राम
१५१

151A

तत्र तिथिमध्ये पारणा विधानं त्रिष्विधे फलायोगाच्च तिथ्यन्तानपेक्षणाद्वा
 वाप्रशक्त्या चतुर्थयादासंगतेः तेनेदं शिवरात्रिभिन्नं त्रतपरं ज्ञेयं इदं च ब्रतं संयो
 गप्रथत्कन्यायेन नित्यं काम्यं च तथा च माधवीयेत्कांदे परात्परं तं नास्ति शिवरा
 त्रिः परात्परं न परजयति भक्तैरंरुद्रं त्रिभुवनेश्वरं जंतुजन्म सहस्रेषु भ्रमतेनात्र
 संरायेति अकरले प्रत्यवायश्रुतेः वर्षे वर्षे महादेवि नरो नारी पतिव्रता शिवरा
 त्रौ महादेवं नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत् इति वीप्साश्रुतेः अर्णवो यदि वा सुव्येक्ष्यते
 हिमवानपि चलन्त्येते कदाचिदे निश्चलं हि शिवं त्रतमिति वचनाच्च नित्यता मम
 भक्तस्तयो देवि शिवरात्रिमुपोषकः गणत्वं मक्षयं दिव्यमक्षयं शिवरासने
 सर्वान् भुक्तामहाभोगान् ततो मोक्षमवाप्नुयादिति त्कांदात् द्वादशादिकमेतत्
 स्याच्चतुर्विंशादिकं तु चेति तत्रैव शान्तं संहिता वचनात्काम्यता तत्रैव शिव
 रात्रिब्रतं नाम सर्वपापप्रनाशनं अचंडालमनुष्याणां भुक्तिमुक्तिप्रदाय
 कं अत्र जागरोपवासपूजाः समुदिताः ब्रतं न तु प्रत्येकं समुदितानां फल
 संबंधात् यत्तु अथवा शिवरात्रिं च पूजा जागरो नयेत् तथा अखंडितव्रतोया
 हि शिवरात्रिमुपोषयेत् सर्वान् कामानवाप्नोति शिवेन सह मोक्षे कश्चित्

वि

वि.सिं.

१५२

तत्र?

152

रायविशेषेण ब्रतहनेनोपियः पुमान् जागरं कुरुते सरुद्रसमतां ब्रजे दित्यादि
स्कादंतदनुकल्पत्वादशक्तपरं माघेतरप्रतिमासशिवरात्रिस्तु शिवरात्रिशिव
स्य माघकृष्णचतुर्दश्यामेव स्मृतत्वात् माघमासस्य शेषेया प्रथमा फाल्गुनस्य च
कृष्णमाचतुर्दशी सा तु शिवरात्रिः प्रकीर्तितेति हेमाद्रौ वचनाच्च नाप्यनिरूपयस्तज्जेति
रात्रौ यामचतुष्टये यजुर्विधानाद्यस्मिन् दिनेऽधिकारादिव्याप्तिः सा गाह्या सा
म्येतत्पूर्ववेति हेमाद्रिरुचिवानुवस्तुतस्तु प्रतिमासकृष्णचतुर्दश्यामपि सर्वका
मप्रदकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिब्रतमित्युपक्रम्य चतुर्दश्यां कर्त्तव्यं शिवरात्रिब्रतं
शुभमिति हेमाद्रौ कालोत्तरे शिवरात्रिशिव प्रयोगात् कौंड्यायनामप्यनाग्निहो
त्रेनैत्यकाग्निहोत्रधर्माश्चतुर्दश्यामिति प्राप्तिः स्यादेव अतः प्रदोषनिशीयो भयव्याप्येव
निरूप्य इति वयं प्रतीमः अस्यारंभो हेमाद्रौ स्कादे प्रादो मार्गेश्वरे मासि दीपोत्स
वदिनेपि वा गृहीयान्माघमासे वा द्वादशे वसुधोषयेन दीपो ध्वजमथासाधकृष्णा
या तु चतुर्दशी द्वादशस्य पिमासेषु प्रकुर्यादिह जागरं तथा एवं द्वादशवर्षे द्वादशे
वतयोधनात् वरयेदिति शेषः चतुर्दश्याविधानार्थं चतुर्दश्यां कुंभोपरि न्यसेत् दे
वसुमयासदितं शिवं सोमं एष्यथ वारोयेत्यथ भे संस्थितं शुभे इत्युक्तं हेमाद्रौ तिसं

राम

१५२

पश्यस्थिरं चरं वालिं गंपंचामृतसहस्रशतपंचारातदधीन्यतरकुंभैः संस्त्राप्यसंप्रज्यजा
 गरं कृत्वा परेद्युस्तिलान्सहस्रशतं वसुत्वा विप्रेभ्यो वस्त्राणि द्वादशगं प्रदत्वा चार्थाय धे
 नुं शय्या च दत्वा विप्रानभोजयेदिति मदनरत्ने उक्तं माघमावास्यायुगादि तदुक्तं माघ
 मासे च मावास्येति अन्यत्रागवत् तथा न्योषिविरोधो विष्णुपुराणे माघीसिते पंचदशी
 कदाचिदुपैति योगाय दिवा रात्रौ न ऋक्षेण कालः स परः पितृणां न ह्यल्प
 पुष्येर्नृपलभ्यते साविति वास्तुं शतभिषा इदं च कुंभादित्येते यमिनि हेमाद्रिः भा
 रते काले धनिष्ठा यदिनाम नस्ति न भवेत्तु भूपाल न दायित्वभ्यः दत्तं तिलान्नं प्रद
 दाति तत्सिं वषा युतं तत्कुलजैर्मनुष्यैरिति फाल्गुनयोर्णमासी होलिकासा च सा
 याद्रव्यापिनी ग्राह्या सायाद्रे होलिकां कुर्यात्सर्वद्वे क्रीडनं गवामिति वचनादिति नि
 र्णयान्ते उक्तं ज्योतिर्निबंधे तु प्रतिपदभस्ते भद्रा सुयार्चिता होलिकादिवा संवत्सरं
 च द्वाष्ट्रपुरंदरुतिसाद्रुतं प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या पौर्णिमा फाल्गुनी सदा तस्यां भद्रा
 मुरं च न्यत्वा पूज्या होला निरागमुरव इति नारदवचनात् प्रदोषव्यापिनी तदुक्तं हे
 माद्रौ मदनरत्ने च भाविष्ये अस्यां निरागमे पार्थ संख्या शिशवो गृहे गामये
 नेपलिते च सचतुष्के गृहांगणे इत्यादिना तत्रैव तद्विधानाच्च तेनेयं पूर्व

नि.सिं.

१५३

153

विद्याश्रावणी दुर्गा नवमी पूर्वा चैव कृताश्विनी पूर्वविदेव कर्त्तव्या शिवरात्रिर्वैल्ले
दिनमिति ब्रह्मयजुस्सर्वैवर्तौ केश दिनद्वये प्रदोष व्याप्नोषरेव पूर्वदिने भद्रास
त्वात् तत्र च होलिका निषेधात् तदुक्तं निर्णयाम्ते मदनरत्ने च पुराणसम्ब
वे भद्रायां दीपिता होलौ राक्षसं गकरोति वे नगरस्य च नैवेद्यात् स्नातां परिवर्जये
त् तथा भद्रायां द्वेन कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा श्रावणी नृपती हन्ति ग्रामं द
हति फाल्गुनी तथा दिनाद्वात्परतो यि स्यात् फाल्गुनी यो हि मायदि रात्रौ भद्राव
सानेत् होलिका दीप्यते तदेति यदा तु पूर्वदिने च तर्द्धा प्रदोष व्याप्तिनी परदिने च
परिणामाक्षयवसात्सायाद्वात्प्रागेव समाप्यते तदा पूर्वदिने संसर्गा रात्रौ भद्रा
सत्वात् तत्र च तन्निषेधात् परे हनि प्रतिपद्येव कुर्यात् सार्द्धं यामजयं वा स्यात् द्वितीय
दिवसे यदा प्रतिपद्येव कुर्यात् सार्द्धं यामजयं वा स्यात् द्वितीय दिवसे यदा प्रतिप
दधर्मानात् तदा सा होलिका स्मृतेति भविष्यचुचनादिति निर्णयाम्ते नकारः मदन
रत्ने व्येवं यत्तु वक्तो वक्षिं परित्यजेदिति भविष्यं वक्तो होलिकायां वक्षिं प्रतिपदं व
र्जयेदित्यर्थः तदुक्तं भिन्नविषयमिति तत्रैवोक्तं अन्ये तु तस्यां भद्रासुरं वत्यात्केति
प्रदोष व्याप्तिनी नस्याद्या पूर्वदिने तदा भद्रासुरं वर्जयित्वा होलिकायाः प्रदीप
नमिति नारदवचनात् निरागमे प्रसज्येत होलिका सर्वदा बुधैः नदिवा प्रजयेत्

राम
१५३

153A

ङं टां सजिताडः खदा भवेदिति दिवो दासीये वचनात् यामत्रयोर्धुक्ता चेत्प्रनियत्तुभ
 वै त्रिभिः भद्रासुरं परित्यज्य कार्या होला मनीषिभिरिति विद्याविनोदेभिधाना
 च भद्रासुरं विहाय सर्वे दिनरात्रौ कार्येत्याहुः भद्रासुरं तनाद्यस्तपंच वदनं ग
 लकस्तथैकेति रत्नमालोक्तं ज्ञेयं शिष्टाचारोप्येवमेव अत्र चेच्चंद्रग्रहणं तदा त
 नां वाङ्मिश्रभद्रावर्ज्योर्णमास्या होलिका दीपनं अथ परे द्विग्रस्तौ दयस्तदा पूर्व
 दिने भद्रावर्ज्योरात्रिचतुर्थ्यामे विधिपुष्टे वा होला कार्या ग्रहोत्तरं प्रतिपत्तत्वात् सर्वत्र
 दिवा होलानिषेधादिति दिवो दासचंद्रप्रकाशो वस्तुतस्तत्परदिने प्रदोषे पौर्णमा
 सी सत्वे कर्मकालस्य रौच्यं तर्थायामादिगोणकालग्रहणे माना मावात् भद्राभा
 वाच्च ग्रहणकाले एव होला कार्या न च सर्वेषामेव वर्णानां सतकं राहुदर्शने
 स्नात्वा कर्मणि कुर्वीत मृतमंत्रं विवर्जयेदिति निषेधात् वायं भूतहोलेति वाच्यं
 तस्योत्तरार्धशेषत्यात् प्रजामंत्रस्तु असृक्कया भयमंत्रस्तैः कृतात्वं होलिवालिरो
 अतस्त्यासजियिष्यामि भूते भूतिप्रदा भवेति यत्तु वार्तिककारे होला काग्रचार प्रा
 मेत्युक्तं तद्धेमाद्याद्यदाह तभविष्यावचनान्यसिद्धानि कृत्वा चिंताज्ञेया आर्त्याधि
 करणवत्तुत्वाशिनी मलमासेन भवति इयं मन्वादि रपि सा तत्पूर्वा द्वैकीया

नि.सि.
१५४

154

ह्यामलमासे सति मन्वादिप्रादं मास द्वये कार्यमित्युक्तं प्राक् कृत्य चिंतमणौ ब्राह्मे
नरो दोलागतं दृष्ट्वा गोविंदं पुरुषोत्तमं फाल्गुन्यां संयतो भूत्वा गोविंदस्य पुरं ब्रजे
तु चैत्रकृष्णप्रतिपदिव संतोत्सवः सा चोदयि कीर्त्या प्रसूते मधुमासे तु प्रति
पद्युति ते रवा विनिभविद्योक्तेः दिन द्वये तथा त्वेपूर्वा चत्सरादौ वसंतादौ वलि
राज्ये नथेव च पूर्वविद्धेव कर्तव्या प्रतिपत्सर्वदानधैरिति ह्रस्वशिष्टवचनात्
अत्र विद्यो बोद्धे माद्रो भविष्ये चैत्रमासि महावाहो पुण्ये तु प्रतिपदिने यस्तत्र श्रये
चं स्पृष्ट्वा त्त्वा नं कुर्यान्नरोत्तमः न तस्य डरितं किंचिन्नाधयो व्याधयो नृपेति तथा प्र
वृत्ते मधुमासे तु प्रतिपद्युति ते रवौ कृत्वा चावश्यं कार्याणि संतर्क्य पितृदेवताः १
वन्दयेद्देविकां भतिं सर्वदुःखाय शान्तये मंत्रं च वंदितां सिसुरेन्द्रेण ब्रह्मणा शंक
रेण च अतस्तं पाहिनो देवि भूते भूतिप्रदा भवेति अत्र च न कृत्स्नं प्रारंभं न मु
क्तं तत्रैव पुराणसम्बन्धे हृत्ते तु वारसमये सितपंचदश्यां प्रातर्वसंतसमये समु
पस्थिते च संप्रश्यन्न कृत्स्नं सहचंदनेन सत्यं हि पार्थ पुरुषोत्तमं समात्सर कीर्त्या
तु मंत्रस्तु च तमग्नं वरांतस्य माकंदकृत्स्नं तव सचंदनं यि वाम्यघसर्वकामार्थ
सिद्धये इति चैत्रमासास्यामन्वादिः साचापराक् व्यापिनी ग्राह्या कृष्णपक्षस्य त्वा

राम
१५४

154A

त इति फाल्गुनः एवं निरूपितमिदं गहनं तत्कालतत्त्वं विचार्य वचनेऽनये
 असम्यक् तद्वेषदृष्टिमपसाय विवेचनीयं विद्वद्भिरिति चिरंतं प्राणतोऽस्मि
 तेषु मया सदा सदा यदि गदितं मंदमतिना किमेतत्तच्छब्दं बाध्यवसितमपि स
 ल्यमतिन तदेवं यत्किंचिद्गदितमिदं विख्यातमहिमा प्रतापोऽस्य सर्वा विकसति
 तपि त्रैचरणयोः यो भादतंत्र गहना एव कर्णधारः सास्त्रांतरेषु निरिवलेष्यपि
 मर्ममेता योत्र प्रमः किलाकृतः कमलाकरेण पीतो मुनास्तु सक्तती बुधरामस्तु
 दमः ॥ ११ ॥ इति श्रीमन्नारायणभट्टसरिस्तनुरामस्तु भट्टकमलाकरस्तु नि
 र्णयसिंधो संबत्सरस्तु निरूपणं नाम द्वितीयः परिच्छेदः अथ प्रकीर्णक नि
 र्णयः ॥ ११ ॥ श्रीरामस्तु दमतनयः कमलाकरसंज्ञितः निरूप्यति यिक्तत्वं तत्र प्रकी
 र्णवक्तुमुद्यतः तत्रादौ संस्कारेषु गर्भाधानं तत्र प्रथमं जौदरीने दुष्टसासगाहण
 संक्रममादिफलं तत्र रांत्यादिचपित्तकृतं भट्टकृतप्रयोगरत्ने तदं किंचित्त्वं च तेम
 दनरत्ने नारदः अमारिकाष्टमी यष्टी द्वादशी प्रतिपत्त्यपि परिघुस्यतु यद्वा धैर्य
 तीयाते च वैधृतो संध्यास्तूर्यपूवे विष्णामश्वभं प्रथमार्त्तं वै रोगी पतिव्रतादः रवी
 पुत्रिणी भोगी भागिनी पतिव्रता क्लेशभागी सूर्यवारादिषु क्रमात् वैधव्यं सुतैला

= ५ = नाभिस्तुले स्थितं पुंश्च तर्दत्तसमन्वितं तस्मिन् सर्वाश्रयते गर्भसंभवकर्तारं अधोमुखं स्थितं
 स्त्रीणां तदालम्बकलाकृतिं बाल्यामरं वयः प्राप्तिमुक्लं विक्कसद्वैवेत्त उम्बलं कृतं मंस्त्रीणां स
 = नावेन सवेदुजः तदा प्रभृति सर्वासां मासि ऋतुर्भवेदिति = ५ =

भस्ममेतैराजुविर्वर्धनं मित्रलाभः राजुहविः कुलविर्वधुनोरानं मरणां वंशं
 द्विश्च निरोहाराकुलक्षेय तेजैश्च सुतनाराश्च कुलहानि निति धिक् क्रमात् गरीः सुभगा
 चैव दुःखराणां लावं ध्या पुत्रसमन्विता धर्मयुक्ता व्रतैश्च परसन्तानमोदिनी सपुत्राद्यै
 व दुःपुत्रा पितृवेरमरुता सदा दीनो प्रजो वती चैव पुत्रां ध्या चित्रकारिणी सा धीयति प्रिया
 नित्यं सपुत्रा कष्टचारिणी स्वकर्म निरेता हिंसा पुण्यपुत्रादिसंयुता नित्यं धनचया
 तौ पुत्रधान्यसमन्विता मरिचचा ज्ञा पुण्यवती दत्तवती देः क्रमात्फलं नारदः कुलीरह
 वचापां त्यक्त्यन्युक्तन्या तलाघटाः राशयः सुभदाज्ञेया नारीणां प्रथमार्त्तवे ग
 रीः सुभगा श्वेतवस्त्रास्या दृढवस्त्रा प्रतिव्रता कौमवस्त्रा क्षितीरास्या नचवस्त्रा
 सरवान्विता उर्भगा जीर्णवस्त्रास्या ऐगिणी रक्तवाससा नीलांबरधरानारीपुष्पि
 ता विधिवातनः वस्त्रेऽप्युर्विषमारक्तविंदवः पुत्रमाप्नुयात् समाश्चेत्कन्यकाचि
 तिकलं स्यात्प्रथमार्त्तवे अपुत्रस्त्रीसंगवर्जनमाह वशिष्ठः प्रभूतदोषेयदिदृश्य
 ते तत्पुंश्च तदा शांति कर्कर्म कार्यं विवर्जयेद्देवतदेकशय्याया वद्वजो दर्शनमुत्तमे
 द्विज्योतिर्निर्वंधे वशिष्ठः आद्यार्त्तयोषमुक्तेर्जमधुमुचिनभस्याश्च मुक्ता
 पवारादिक्ताया वांष्टयः पितृपरसदने रात्रि संध्या पराह्ने मिश्रा ग्रासलती

155A

भोगविवरमनरुणा ल्पाधिकासंचराष्ट्रो न्यातः पापस्य लज्जनसदृशज्वरनीलर
 त्तोवरंच आद्यर्तौ दुर्भगानानारी विष्कुंभे चेदजस्यला वंध्याचैवातिगंडे च मूले
 मूलवती भवेत् गंडे तु पुंश्रुली नारी व्याघाते चात्मघातिनी वजे च त्वैरिणी प्रो
 क्ता पाते च प्रतिघातिनी परिधे मृतवंध्या च वै धत्तौ पतिमारिणी शेषा शुभाव
 हा योगाय यानाम फलप्रदाः शान्तिमाह प्रयोगपारजाते शौनकः सार्त्तवानां
 तु नारीणां शान्तिवक्ष्यामि शौनकः पंचमेति चतुर्थे वाग्नहातिथ्यपुरःसरं द्रो
 णप्रमाणधान्येन व्रीहिराशि त्रयं भवेत् कुंभत्रयं न्यसेद्रासौ तंतुवस्त्रादिवेष्टि
 ते सक्तेनायनवर्चेन प्रसवश्च परित्यज्य ऋचाय प्रचतस्रद्वजाय च ततः क्र
 मात् मध्यकुंभोक्षिपिद्वा न्यमोषधानि च हेमच उदंवरः कुराह्वीराजीवं वटवि
 ल्वकाः विष्णुं ज्ञात्वा यत्तुलसीवर्दि वंशं वरचयुष्यिका रातावर्यं शुभं धाचनि
 र्मुंडी शर्वपदं यं श्रुयामागः पलाशं यनसो जीवकस्तथा प्रियंगु वज्रगोधमा
 व्रीहयोः स्य एव च क्षीरं दधि च सर्पिः पयः पञ्चतपोत्पलं कुरंतं यं गुंजा वचा भ
 द्रकमुस्तकाः दात्रिंशदौषधानी हयथा संभवमाहरेत् मृतकाश्चौषधादीनां त
 न्मंजोराक्षिपेत् क्रमात् कुंभोपरि न्यसेत्पात्रं कारयं मृदेणुतामजं भवने मुरी।

न्यसेत्तत्र इन्द्राणी च पुरंदरं जयेद्वायवी माहोमा च्छ्री सक्तं च जयेत्ततः स्थिरानवै
 दक्षिणं कुंभः मृत्विगेको जयेदथ चत्वारि रुद्रसक्तानि चतुर्मंत्रोत्तराणि च संस्थ
 रान्तं त्रं कुंभं श्रीरुद्रं रुद्रं संख्याया रान्द्राग्निं सक्तं च तत्रैव संस्थ रान् जयेत्
 कुंभस्य पश्चिमे देशे शांति होमं समाचरेत् इवाभिस्तिलगो धूमैः पायसेन मृत्ते
 न च त्विष्टभिश्चैव इवाभिरेकैका चाद्धेति भवेत् अष्टोत्तरसहस्रं वा रातमष्टोत्तरं
 वा गायत्र्यैव तद्दोतव्यं हविरत्र च तद्व्यं ततस्त्रिष्टुक्तं इत्वा समुद्रादूर्ध्वं सक्ततः ।
 संतता माज्यधारां तां सरणां कृतिमथाचरेत् अथाभिषेकं कुर्वीत प्रतिकुंभस्थितो द
 कैः प्रायोदितेति नवाभिः सक्तं च ततः परं इन्द्रो अंगत्वेनैव पावमानैकमेवा
 त उभयं शुभं वधनस्य स्तिदा विराणकया जयेच्च केन मंत्रेण जानवेदस ए कये
 समुद्रज्येष्ठा इत्यादि त्रायां तां च त्रिभिः क्रमात् इमा आयात चेनैव वेदस्य त्वेति मंत्र
 तः मंत्रेणापतमीशानं त्वमग्ने रुद्र इत्यथ तमुष्महीति मंत्रेण भवनस्य पितरं तथा
 जानते रुद्रेति मंत्रेण शिवं संकल्प्य मंत्रतः इन्द्रत्वाद्यभयं पंचमं त्रैवाभिषेचयेत् धेनुं
 ययस्विनीं दद्यादाचार्याय च भूषणैः सदक्षिणमनहादं प्रदद्याद्दृष्टाधिने महाशान्ति
 प्रजाप्याथ द्वास्तृणान् भोजयेत्तत इति नारदः तत्र शांतिं प्रकुर्वीत घृतं इवाति

लाक्षतैः प्रत्येकाष्टशतं चैव गायत्र्या जुह्यात्ततः सर्णिगोभृतिलाभ्यात्सर्वदोषाय नुत
 ये प्रकारं तं रं मदनरत्ने ज्ञेये विस्तरा नोच्यते ग्रहणो रजोदरीने तु जातकर्म प्रसीदिवेशं
 ति वक्ष्यमः प्रथमतो विरोधः स्मृतिचंद्रकाया प्रथमतो पुष्पिण्याः पतिपुत्रवती त्रि
 याः अक्षतैरासनं कृत्वा नास्मिन्तामुपवेशयेत् हरिद्रागंधपुष्पादीन् दद्युस्तं बलकं स
 जं दीपैनीराजनं कुर्यात्स दीपे वा सयेतदे लवणास्यमुद्रादि दद्यात्ताभ्यः स्वराक्षित इ
 ति द्वितीयाधर्तुत न्नियानास्यारजातिदक्षः अंजनाभ्यजने स्नानं प्रवासं दंतधाव
 नं न कुर्यात्सातं वानारीग्रहणमीक्षणं तथा अत्रिरपि वर्जयेत्तद्धुमां संचपात्रे व
 र्चचभोजनं गंधमाल्यं दिवा स्थापेत्तं बलं चास्य शोधनं दग्धेशवावेभंजीतयेये वा
 जलिनापिवेत् मदनरत्ने दारीतः रजः प्राप्ताचेदधः शयति भूमौ काष्ठीयसेया रोगान्मु
 ये चास्त्रीयात् इति विष्णुधर्म अग्राहारंगारसानां न पुष्पालंकारधारणं अंजनं कंकतं गं
 धाः पीठशय्याधिरोहणं अग्निं संस्पर्शनं चैव वर्जयेच्च दिनत्रयं तथा प्रथमतोः पूर्व
 स्त्रीगमनं न कार्यं प्राग्रजोदरीनात्पत्नीनेया कृत्वा पतत्यध न्यधीकारेण मुक्रस्यन्न
 स्नहत्या मवाप्नुयादिति तत्रैवाश्वलायनोक्तेः तज्जगत्तौ गमनमाह पातवल्क्यः यो
 उशर्तुनिशास्त्रीणां तस्मिन्पुग्मासं विरोदिति अन्ततावप्याह गौतमः ऋ

नि.सिं.
१५८

157

1212174181181

तावुपेयात्सर्वत्रवाप्रतिषिद्धवर्जमिति मनः श्रुतः स्वाभाविकस्त्रीरात्रयः कोऽरा
 स्मृताः तासांमाघाश्रतस्रस्तुनिदितेकादशीचयात्रयोदशीचरोवास्युः प्रशस्तादशारात्र
 यः मदनरत्ने देवलः तस्माज्जिरात्रिचंडालीपुष्टितांपरिवर्जयेत् तत्रतिथ्यादीनादश्री
 धरः षष्पष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमध्यमयत्रहित्वा रोवाश्रुभाः स्युस्तिथयोनिषे
 केवाराः शशाकार्यसिते दुर्जोना उभयत्रयक्षद्वये आर्योगुरुः सितः शुक्रः इंदुजोबुधः ।
 विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरयोष्मसलोन्नरावरुणभानिनिषेककार्योद्यज्यानिपुष्य
 वल्लरीतकराश्विचित्रादित्याश्रमध्यमफलाविफलास्युरत्ये विद्यादिदेवत्यनक्षत्राण्यु
 त्तानिरत्नमालायां भैरादस्रयमाग्निधातुशरानः सर्वोदितिर्वाक्प्रतिः कक्षजाः पि
 तरोभगार्थमरवीत्वाष्टाद्वयोमारुतः शक्ताग्नीत्ययमित्रवासवश्रुतितोयंचविषे
 विधिगोविंदोवसवोंबुयाजचराणाहिवृध्रुपद्याभिधमः उत्तराराक्षेनोन्नरात्रयं श्रु
 तमलस्यद्यज्यत्वमुक्तं याज्ञवल्केनत एवंगघनस्त्रियांक्षामांमघासुलंघवर्जयेत्
 दित्युक्तं तेनपूर्ववत्सलं चिंत्यं श्रुतसमासपुत्राविषमासकन्येति तेयं शुग्मास
 पुत्राजायंतेस्त्रियोयुग्मासरात्रिषु है इति हेमाद्रौ रोवाक्षेः तज्यायुन्नरोन्नराप्रश
 स्तातदाहापक्षेवः तज्यायुन्नरोन्नराप्रशस्तेति तत्रैव व्यासः रात्रौचतुर्थ्यांपुत्रः स्यादत्या
 युर्धनवर्जितः पंचम्यापुत्रिणीनारीष्वष्टपुत्रस्तमध्यमः सप्तम्यापुत्राद्योषिदष्टम्या

राम
१५७

मीश्वरः पुमान् नवम्यां सभर्गमारी दशम्यां प्रवरः सतः एकादश्यां मध्यम्यां स्त्री
 द्वादश्यां पुस्तकोत्तमः त्रयोदश्यां सतायायावर्गं शंकरकारिणी धर्मज्ञा सुकृतज्ञा
 आत्मा वेदी दृढव्रतः प्रजापते चतुर्दश्यां पंचदश्यां पतिव्रता आश्रयः सर्वभूतानां
 षोडश्यां जायते पुमानिति अत्र चतुर्थदिन निषेधि स्नातां चतुर्थे दिवसे रात्रौ गोष्ठे
 द्विचक्षण इति महाभारतोक्तैश्चतुर्थे हनि स्नाताया युगमासवागर्भसंदधातीति हारी
 तोक्तैर्विकल्प्यते यः तत्रापि स्नानं तैरजस्वलायास्तु चतुर्थे हनि रास्यते गम्यानि ह
 तैरजसिनान हते कथंचनेत्यापस्तंबोक्तैर्व्यवस्था ज्ञेया अजसर्वास युगमासगमन
 मावरणकं युगमास्त्विति बहुवचन निर्देशात् इति विज्ञाने श्वरः तस्यैकस्यां रात्रौ सप्तदेव
 कार्यं सस्य इंदो सक्तु जलक्षणं जनयेत् पुमानिति याज्ञवल्क्योक्तैः इदं च तैर्गमनम
 न्यकाले प्रतिबंधादिगमनासंभवे आहुं कादश्यादावपि कार्यं ब्रह्मचार्यैः पर्वण्येषां
 अतस्त्रैवर्जयेदिति याज्ञवल्क्योक्तैः आख्यातं चेदं मिताक्षरायाः यः आहुदौ ब्रह्मचर्यं वि
 हितं तत्राप्युत्तोगच्छतो न ब्रह्मचर्यं सबलदोष इति पर्याणीति वक्तुं चेनाष्टमी चतुर्दश्या
 गृहणमिति च मदनरत्नेष्वेवं यत्तस्मादोशिवरस्ये दिवा जन्मदिने चैव न कुर्या
 त्तेषु नंजनी आहुं दत्वा च भुक्ता च श्रेयोधीन च पर्वसि नि तदनुत्तविषयं ब्रह्मचार्यैः
 भवति यत्र तत्राश्रमे वसन्निति मन्त्रैः दर्शदोत्तन भवत्येव पर्वण्यर्थं दत्तत्वात्

माधवीयेन ऋतुकाले नियुक्तो वानैव गद्येन स्थियं कचित् तत्र गद्यसमाप्नोति
 एतच्छफलमेवास्ति तिसृष्वमनसु क्लेशादेव ब्रह्मचर्यं नियतमित्युक्तं पृथ्वीचंद्रोदये
 येषां एतत्सतिसंभवे ते ये अनेकभार्यस्य तौ योगपद्ये हेमाद्रौ करणपः योगपद्येन
 तीर्थानां विवाहक्रमणो ब्रजेत् रभणार्थमपुत्रां वागृहणक्रमणोपि चेति गृहणम
 त्रगृहणं ऋग्विधाने विष्णुर्योनिं ब्रजेत्सक्तं योनिस्त्वष्टा त्रिभिर्ब्रती गर्भाधाने
 ततः कुर्यात्स पुत्रो जायते ध्रुवं अगमने दोषमाह पराशरः ऋतुस्त्रानेन यो भार्यां स
 त्रिधौ नोपगच्छति घोरायां भूणस्त्यायां पच्यते नात्र संशयः अस्यापवादमाह मद
 नरत्ने व्यासः व्याधितो बंधनस्यावा प्रवासेष्वप्यपर्वसु ऋतुकाले पि नारीणां भूण
 स्त्याप्रमुच्यते वृद्धां बंध्यासस ऊजां मृता यत्यामपुष्पिणी कन्यां च वक्रपुत्रां च वर्ज
 यन्मुच्यते भयात् सृष्टां गतरजस्कां गर्भाधानां गहो माकरणे प्रायश्चित्तमाह पारजा
 ते आश्वलायनः गर्भाधानस्या करणान्नस्या जातस्तु डव्यति मृक्तत्वा गार्दिजे द
 त्वा कुर्यात्सुं सवनं यतिः गर्भाधानं च मलमासश्च क्रास्ता दावपिकां य उत्सवेषु च स
 र्वेषु सीमंतं ऋतुजन्मसु सरासरे ज्ययोश्चैवं मौत्थदोषो न विद्यते इति ज्योतिर्निर्व
 षेभ्यः ऋतौ गमने पराशरः ऋतौ तु गर्भं कृत्वा त्त्रानं मेयुनिनः स्मृतं अन्
 तौ तु यदा गद्ये चैव च मत्रपुरीषवत् स्त्रीणां तु न त्त्रानं उभावप्यशुचौ स्यातां दंपतीशय

नंगतो रायनाऽपि नाना रीमुचिः पुमान् इति ह द्विरात्तातयोक्तेः अत्र कश्चिद्विशेषः
 चते तत्रात्रैरजसिजननादौ चरात्रिं विभागोक्तत्वात्प्राध्वभागद्वये चेत्पूर्वं दिनग्रा
 ह्यं परतस्तत्तरमिति सिताधरायां यत्तु प्रागर्द्धरात्रात्प्राग्वास्त्येयादयान्पूर्वं दिनमि
 त्तुक्तं तत्र देशाचारादयव स्यात्तया सप्तदशदिनपर्यन्तं पुनरजोदृष्टौ स्नानमात्रं अ
 द्यदशैकरात्रं जनविशेषैः द्वहः विंशतप्रभृतिजिरात्रमितितन्त एव ज्ञेयं यत्तु चतुर्दश
 दिनादद्योगमुचित्येनास्ति एकादशदिने एकरात्रं द्वादशे द्विरात्रं ऊर्ध्वं त्रिरात्रमिति
 प्रयोगपारजाने व्येवं रोगजे तु तत्रैव विशेषः संग्रहे रोगेण यद्भजः स्त्रिणामन्वहं
 य हि प्रवर्तते नास्त्युचित्युक्तं भवेत्तेनैस्याद्वैकारिकं मतं मितिकर्माधिकारस्तत्रात्रैव
 तावेव साधवारानतावत्स्यात्त्रातापिसूरीरजस्वला यावत्प्रवर्तमानं हिरजो नैव
 प्रवर्तते इति श्राद्धदेसादौ शोरेवाक्तेः तत्रापि स्थकालोऽपि चिरेवेत्याह अष्टम्यगः रोग
 गजेवर्तमानेपि काले निर्याति कालजंतस्मात्कालेऽप्रमत्तास्यादन्वयासं करो भवेत्
 तयारजस्वलायारजस्वलांतरस्य रीः कामतः स्नानं कामतः उपवासः पंचगव्या
 शनाच अक्षवर्णानां तत्रात्राः क्षत्रियादिस्पर्धक्रमेण कृष्णार्द्धपादोनक्त
 धृक्कृष्णः क्षत्रियादीनां तृक्तधृपाद एव क्षत्रियादीनां क्षीनवर्णस्य रीः त्रिरात्र
 उपवासः वैश्यस्तद्गोः पर्वयास्पर्शे होरात्रं द्विरात्रं च एतच्च कामतः प्रकामत

क्त प्राक्शुद्धेरनराने अकामतश्रंजालादिस्थरीयनरानमेव प्राक्शुद्धेः कामतः।
 क्त प्रथमेक्षिप्यरुः द्वितीयेक्षुहस्ततीयेरकारुः सस्यरीतु ह्यहकारुः चाभुजाना
 याश्रंजालादिस्थरीय अक्षरात्रं उच्छिष्टयोः स्थरीतु कृष्णश्यादिमिताक्षरायां तेयं स्म
 त्यथसारेतु सर्वत्रवालापत्यायाः स्थरीस्नाने क्तने भुक्तिः पश्चादनरीन प्रत्याप्ताय इ
 ति स्नानविधिंचाहपराशरः स्नानेनेमित्तके प्राप्तेनारीयादिरजस्वला पञ्जातरिततो
 येन स्नानं क्तत्वाव्रतं चरेत् सिक्तगात्राभवेदद्भिः सांगोपांग कथंचन नवस्रपोऽनेकु
 र्यान्नाम्यदासश्चधारयेत् अथरजस्वलास्नानंदेवज्ञयाज्ञवत्सभः ब्रह्मानुराधास्त्रि
 नसोमभेद्युहस्तानि नारवंऽलवासवेष्टुविश्वार्यमक्षोतरभाद्रभेष्टुवरांगनास्नानवि
 धिः प्रदिष्टः ज्वरेत्तशानाज्वराभिभूतायानारजसाचपरिप्लुता कथंचनस्था भवेद्धौचं
 शुद्धिस्थात्केनकर्मणाचतुर्थेदृनिसंप्राप्तेस्थरोदन्यातुतांस्त्रिंसासचैलावगाथाः
 पः स्नात्वास्नात्वापुनः स्थरोत् दशद्वादशकृत्योवा आचामेचपुनः पुनः अनेचवाससां
 त्यागः ततः शुद्धाभवेत्तसेति इदंचातरमात्रेज्ञाय अतरेस्नानउत्पन्नेदशकृत्योह्यनातर
 इति पराशरोक्तेः रजसोज्ञानेत्परासरमाधवीयेप्रजापतिः अविज्ञानेमलेसाचमलवद्
 सनायदि क्तनेगृहेष्टुष्टस्याकुद्धिस्तस्याः त्रिरात्रतः देवजानीयेकारकायां उच्छिष्टानु
 द्विजातीनारजस्वीयादियरपति उपवासमधोच्छिष्टे ऊर्ध्वोच्छिष्टे अहंक्षिपेत् अथपुंसव

नंप्रयोगपाराजातेजातेजातकर्णः द्वितीयेवातृतीयेवामासिपुसवनंभवेत् व्यक्ते
 गर्भंभवेत्कार्यं सीमंतेनससायवा हसस्यतिः तृतीयेमासिकर्तृव्यंगदहेरन्यत्रो
 भमं गृह्येचतुर्थेसासेतुष्वेमास्यथवाष्टमे सक्तप्रस्ततागृह्यः एतेनप्रतिगर्भम
 पिभवतीतिज्ञायते बहुचकारिकापि कर्त्रीस्यादेवरक्तस्यायस्यायत्पुरसंसभवः
 आवर्ततइदंकर्मप्रतिगर्भमितिस्थितिः ब्राह्मे गर्भाधानादिसंस्कर्त्तापिताश्रेष्ठतमः
 स्मृतः श्रभावेस्वकुलीनः स्यादांधवोवान्यगोजजः मदनरत्नेसत्यघ्नतः मृतोदेरांत
 रगतोभर्तास्त्रीपद्यसंस्कृता देवरोवागुरुर्वापिवंरयोवापिसमाचरेत् हेमाद्रौयमः
 प्रथमेमासिद्वितीयेचायदापुत्रक्षत्रेणचंद्रमायुक्तः स्यादिति वराहः हस्तामलंश्रव
 णः पुनर्वसुमृगशिरस्तथापुष्यः पुंसंज्ञकेषुकार्येष्टेनानिष्ठुभानिधिष्मानिम्नुराधा
 नृहविषावर्धयेतेइतिश्रुतेः गर्गापि पुत्रामश्रवणस्तिष्योहस्तश्रेष्ठपुनर्वसुः श्रमि
 जित्वाष्टयाश्रेष्ठमनुराधातथाश्रपक् नृसिंहः रिक्तंपर्वचनवमीत्यत्कापुंसवनेश्रु
 भाः ज्योतिर्निबंधेवशिष्टः मृत्युश्रसौरेस्तनहानिरिंदोः मृतप्रजापुंसवनेबुधस्य
 काकीचंचंधाभवतीहस्तुक्तेस्त्रीपुत्रलाभोरविभोमजीवैः प्रचनलो नभस्याय्य
 यमेवकालः दीपिकायांतुचतुर्थेनवल्लोभनमित्युक्तं अथसीमंतः हेमाद्रौवेज
 वायः अथसीमंतोनयनं चतुर्थेपंचमेष्वेचेति वाशिष्टः चतुर्थेसप्तमेमासिच

नि.सिं.

१६.

160

देवाय्यथचाष्टमे हेमाद्रौ रां रवः गर्भस्येदने सीमंते नयनं यावद्दानप्रसवः क्वा
र्त्ताजिनिः गर्भलंभनमालभ्यथावन्नप्रसवस्तथा सीमंते नयनं कुर्याच्छ्वस्य च
चनं यथा मासश्चात्र सौरः सावनो वा कालविधाने चतुर्थे वष्टममासभात्रिसौ
रेण गर्भप्रथमं विधेयं सीमंतकर्म द्विजभाभिनीनां मासेष्टमे विष्णुवल्लिचक्र
यात् वशिष्टः चतुर्थे सावने मासि वष्टे वाय्यथचाष्टमे ज्योतिर्निबंधे नारदः
प्ररिक्तापर्वदिवसे कुजजीवार्कवासरे कालविधाने सीमंते तिष्यहस्तादिति हरिश्
शिभृत्योष्णविध्युत्तरारव्याः पक्षध्दि चरित्रं पितृतिथिमयहायापरास्तुः प्रशस्ताः
प्रदितिः पुनर्वसुः पक्षाध्दि च द्वाह वशिष्टः चतुर्दशी चतुर्थी च शुक्लमीनवमी तथा
वष्टी च द्वादशी चैव पक्षध्दि द्वाहयः स्मृताः क्रमादेतास्तितिथितुवर्जनीयाश्चनाडिकाः भू
ता भवन्तु १४ तत्त्वं २५ क ८ दश १० राखास्तुराभनाः कालनिर्णये शुभसंस्थे निशा
नाथे चतुर्थी च चतुर्दशी योर्णमासी प्रशंसंति केचिन्सीमंतकर्मणि ब्रह्मस्यतिः पूर्व
पक्षः शुभः प्रोक्तः कृष्णः श्रान्त्यत्रिकं विना चतुर्दशी चतुर्थी च शुक्लपक्षे शुभप्रदे नार
दः विप्रक्षत्रिययोः कुर्याद्विवासीमंतकर्मनत्त वैश्यशूद्रकयोरेतद्विवा निरप्यपि केच
न वाराः पूर्वोक्ता एव एतच्च सक्तान्प्रतिगर्भवाकार्यमिति हेमाद्रिः सकृच्च कृतसंस्का
राः सीमंते न द्विजस्त्रियः धन्ये गर्भप्रसूयेते स सर्वः संस्कृतो भवेदिति हारीतोक्तः सीमं

राम
१६.

तोनयने कर्मनस्त्री संस्कार इष्यते । केचिद्गर्भस्य संस्कारात् प्रतिगर्भे प्रयुज्यते इति
 हेमाद्रौ विष्णुवचनाच्च स एव स्त्री यद्युक्तसीमंता प्रसवे तु कथंचन गृहीतपुत्रा
 विधिवत् पुनः संस्कारमर्हति सीमंते भोजने प्रायश्चित्तमुक्तं पराशरमाधवीयेधौ
 स्येन ब्रह्मैवमेव सीमेव सीमंते नयने तथा जातकर्मन वस्त्रादेभ्युत्काचां द्रायणां
 चरेत् ऋग्विधाने तु अरादवेज्जयेन्मंत्रं शतवारं न संशयः सीमंते च यदा भुंक्ते तु
 च्यते किल्विद्यातदेति अथ गर्भणीतत्यतिधर्माः वराहः सामिषमशनं यज्ञात्प्रम
 दापरिवर्जयेदतः प्रभृतिः गृहकारिका अंगारभस्मास्थिकपालचुल्लौस्त्यादिकेषु
 पविशेन्नारी सोलूषलाघे दृषदादिके वापेत्रे तु घाद्येन तथोपविष्टा नो मार्जनी गो
 मयपिंडकादौ कुर्यान्नवारिण्यवगाहनं सा अंगारभूत्यास्थिकपालचुल्लौस्त्यादिरेव क्ष
 मां कलिवपुर्भगमथो न कुर्यात् नो मुक्तकेशी विवशाथवास्यां कुंतेन संध्यावसरे
 नरोते नामंगलं वाक्प्रमुदीरयेत्सास्तन्यालये हस्ततलं नयायात् विष्णुधर्मोत्तरे
 कटुतीक्ष्णकषायानि मृत्पृष्ठमलवणाक्षिच आयासे च व्ययापंचगर्भणीवर्जये
 त्सदा प्रयोगपाराजाने कश्यपः गर्भिणी कुंजराश्वादिशैलहर्म्यारोहणं व्यायामं
 क्षीघ्रगमनं शकटारोहणं त्यजेत् शोकं रक्तविमोक्षं च साध्यसंकुक्तरासेन व्यवसा
 यं दिवा स्यात्संरात्रौ जागरणं त्यजेत् मदनरत्ने स्कांदे हरिद्रां कुंकुमं चैव सिंहं कज्जलं

तथा कुर्यात्सकंचतो बलं मंगल्याभरणं शुभं केरासंस्कारकवरीकर्णविभूषणं
 भर्तुरायुष्यमिदं तीहुरये रुभिणीनहि लहस्यतिः चतुर्थमासि वधे वा यष्टमे ग
 भिणीषदा यात्रा नित्यं विवर्ज्या स्यादायादेतु विरोधतः यात्रवल्क्यः दौहदस्या
 प्रदानेन गर्भो दोषमवाप्नुयात् वैकुण्ठमरणं वापि तस्मात्कार्यं स्त्रियाः दौहते गर्भि
 णीप्रियं तत्रैवाश्चालायनः वपनं मैथुनं तीर्थवर्जयेद्गर्भिणीयतिः आद्यं च सप्त
 मात्मासाहर्ध्वं चान्यत्र वेदचित् आद्यं तद्भोजनमिति प्रयोगपारजातः कालविधाने सु
 हर्तृदीपिकायां च कौरंशवानुगमनं नरवक्तं तनं च यद्वादिवास्तुकरणं त्वतिहरया
 नं उद्वाहमौपनयनं जलधेः श्रगाहमायुः क्षयार्थमिति गर्भिणीकायतीनां रत्नसंग्र
 हे गालवः दहनं वपनं चैव चो लं वैगिरिरोहणं नावप्रारोहणं चैव वर्जयेद्गर्भिणीय
 तिः अन्यत्रापि प्रवक्तृगर्भायतिरश्चिद्यानं मृतस्य वा हं दुरकर्मसंगतस्यानुपत्ते
 न गयादितीर्थयागादिकं वास्तुविधिं न कुर्यात् प्रवक्तृगर्भावनिता चेत्मा सत्रया
 त्यरां वपमासात्परतः स्तुतिनं वमरिष्ठवासिनी अस्तुतिगाहप्रवेशा गरीः यदि
 एषेदव पौष्णे बुधाती वरुणयोरपि पुनर्वसौ युष्य हस्तधनि शुक्रासुच मैत्रेयावृ
 तथा शिवास्तुत कागारवे रानं एतच्च संभवे प्रस्तुति संभवे काले सद्य एव प्रवेशये
 दिति वशिष्टोक्तेः तच्च नैऋत्यां कार्यं वारुण्यां भोजनग्रहं नैऋत्यां स्तुति कार

161A

गृहमिति वशिष्टोक्तेः विष्णुधर्मः दशाहंस्ततकागारमायुधेऽविशेषतः वक्रि
नातिडकालातेः पराकुंभैः प्रदीपकैः सुसलेन तथा चारिवारिकैश्चित्रतेन च ।
अथ जातकर्मपारजाते विशिष्टः आत्मा जातपिता पुत्रस्य चैलेस्त्रानमाचरेत् मनुः
प्राज्ञाभिर्वर्द्धनात्पुत्रो जातकर्मविधीयते वर्द्धनं ददनं हेमाद्रौ वै जावयः जन्मना
नंतरं कार्यपातकर्म यथाविधि देवादीनां तत्कालं चेदतीतेस्ततः केन वेत्त पृथ्वीचंद्रोद
ये विष्णुधर्मे अर्धित्रनाभिकर्तव्यं आर्द्धवैपुत्रजन्मनि पुत्रपदेन कन्यासंग्रहणे
तदास्तत्रैव कार्याजनिः प्रादुर्भावे पुत्रपुत्रो गृहणे चंद्रसूर्ययोः स्त्रात्यानंतरमात्म
यान् धितुं न आर्द्धेन तर्पयेत् एतच्च राजावधिकार्यं पुत्रजन्मनि याजायां शर्वयं दिक्षम
क्षयमिति तत्रैव व्यासोक्तेः वैजवायः जातमात्रं कुमारस्य जातकर्मविधीयते स्नान
प्राशनतः पूर्वनाभिकीर्तनं तोषिवा एतेन नैमित्तिकामयीदं जातेष्टिवदशौचांते
कार्यमिति शकाशं परास्ता जाते कुमारं पित्राणामामादात्पुत्रं पतदहरितहारीतोक्तेः
अथ आर्द्धमासेन हेमावाकार्यमित्युक्तं पृथ्वीचंद्रोदये आदिपुराणे जात आर्द्धेन दद्यात्
तुपकाचं ब्रह्मणोऽप्रीति हेमाद्रिस्तु पुत्रजन्मनि कुर्वीत आर्द्धं हेमैव बुद्धमान्
न यद्येन न चामेन कल्याणान्यभिकामयाचिनि संबर्त्तौक्ते हेमैवेत्याह एतच्च जन
नाशौचे मरणशौचे च कार्यमित्याह मिताक्षरा धाप्रजापतिः आशौचे हसमुत्पन्नै

नि.सिं.

१६२

162

पुत्रजन्मपदाभवेत् कर्तुं स्तात्कालकी मुक्तिः पर्यारोचे न मुच्यति केचित्पुत्रतारो
चस्य मध्येत पुत्रजन्मपदाभवेत् आरोचायगमे कार्यं जातकर्म यथाविधीति स्म
तिसंग्रहोक्तो आरोचाने कार्यमित्याहुः स्मृत्यर्थसारे पिकित्युक्तः मद्रुध्रवचर
क्षिप्रमेधेयामुदयेयि च गुरोश्च केयवाकेंद्रे जातकर्मचनामच मद्रिलक्षणमा
ह श्रीधरः रोहिण्युत्तरसंस्थिरं गिरिशमलेंद्रो जे रगादारुणं क्षिप्रं चाश्विदिने सद्युष्य
मनलेंद्राग्नीतसाधारणं उग्रं सर्वमघातकं मद्रुगतिव्याघ्रात्यमेत्रं वरं विष्णुस्वा
ति शतोदुवस्यदिनयः कर्षुः स्वसंज्ञाफलं अत्र सर्वत्र जातनामकमादावुक्तकालाति
क्रमे न भत्रादिकं ज्ञेयं देशकालोपघाताद्यैः कालातिक्रमणं यदि अनस्तगे ज्येष्ठसि
ते न त्कार्यं चोत्तरायणे इति मदनरत्ने नारदोक्तैः बहस्पतिरपि मुरव्यालाभे विधिज्ञेन
विधिश्चिंत्यः प्रमादतः नक्षत्रगतिविलग्नानां विचार्यैवं पुनः पुनः सततके संध्यादौ
विशेषं ब्रह्मणः अथ जन्मनि दुष्टकालाः तत्र गंडांतः ज्योतिर्निबंधे नारदः पूर्णा
मंदारवयोस्थित्योः संधिर्नाडीद्वयंतथा गंडांतं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु कु
लिरसिंहयोः कीदृचापयोर्मीनमेवयोः गंडांतरालं स्यात्तद्यटिकायै मृतिपदं सर्वं
द्वयोर्ममभेद्ययोः उरांशाभसंधयः तदग्रभेद्यापयादाभानां गंडांतं संज्ञकाः रत्नमा
लायां पौष्ठाश्विन्याः सार्यापित्रर्क्षयोश्च यच्च ज्येष्ठाश्वलायोरंतरालं तद्गंडांतं स्याच्चतु

धं

राम

१६२

नैष्ठिकं हि यात्रा जन्मोद्वाहकाले निष्ठे रत्नसंग्रहेन वनीतारिष्टे सर्वेषां गंडजाता
 नापरित्यागो विधीयते वर्ज्ये दर्शनं प्राचं न च षण्मासिकं भवेत् तिथ्यर्क्षं गंडे पितृ
 मातृनारो लगेतु संधौ तनयस्य नाराः सर्वेषु नो जीवन्ति हंति च धनजीवन पुनः स्या
 द्वाहुवारणाः अथैषां दानं उत्तरगार्गे तिथिगंडे त्वनका हंनदा जेधे नुरुच्यते का
 चने लग्नगंडे तु गंडदोषो विनश्यति उत्तरे तिलापात्रं स्यात्पुष्पे गोदानमुच्यते अजाप्रदा
 नं त्याजे स्यात्पूर्वाषाढे च काचने उत्तरातिथ्यक्षिप्रासुपूर्वाषाढे द्रवस्य च कुर्याच्छांतिं प्र
 यत्नेन नक्षत्राकरजां बुधः अथाश्लेषाफलं मधीस्यते जगलकां सयुगं च वाहुदुग्गा
 तुगुह्यपदमित्यसिद्धे हभागः चारणादिनेत्रदुतभुक्कृतिनागरुद्वयद्वादयं च शिरसः क
 मशस्तनाड्यः राज्यं पितृक्षयो मातृनाराः कामर्क्षियारतिः पितृभक्तो वली स्वधुः त्यागी
 भोगी धनी क्रमात् ज्येष्ठाफलमुक्तं त्रसयामले ज्येष्ठादौ जननी मातृ द्वितीये जननी पि
 ता तृतीये जननी भ्राता स्वयं माता चतुर्थके आत्मानं पंचमे हंति सर्वं हंति दशांशक
 इति अथ मूलफलं सप्तः अभुक्तमूलं संभवं परित्यजेत्तवालकं समष्टिकं पिताथवा
 नतमुरं विलोकयेत् तदा वपाद्यके पिता विपद्यते जनेन्यथा तृतीयके धनक्षयश्च
 तृथीकः शुभावहः प्रतीयमंतपादतः फलं तदेव सार्यमे अभुक्तमूलं त्वादृष्टद्विवाशिष्टः
 ज्येष्ठाने घटिका चैका मूलादौ घटिका द्वयं अभुक्तमूलमिति हः जातेन तत्र विवर्जये

नि.सिं.

१६३

163

त केचिज्येष्टां तं मूलाद्ये च पादं शुभं कर्म मूलमाहुः कश्यपसंदितायां च न्ययोक्तं मू-
लाद्यपाद्यजो हन्ति पितरं तद्धितीयजः मातरं स्वं तृतीयो र्यास हृदं तृतीयजः फलं तदे-
व सार्यर्क्षे प्रतियं त्वं तपादतः अथ मूलस्य दशः जयार्णवे मूलं सन्तु त्ववा रा रावापजं
पुष्यफलं शिखा वेदाश्च मुनयश्चैव दश १० वसवस्तथा च नंदा हवा रा परसा हस-
द्रा ११ मूलमेदः प्रकीर्तितः मूले मूलविनाशयस्तं मेहानि धनक्षयः त्वचिभ्रातृ विना-
शाय शारदा मातुर्विनाशस्तु यत्रे सपरिवारः स्यात् पुष्ये पुनः पवला भः फलेषु लभ-
ते राज्यं शिखायामस्य जीवते अन्यत्र त्वन्ययोक्तं मूलं सप्रघटीषु मूलं हननं सन्तं मेष्टु-
खक्षयं त्वगिदं धविनाशनं च विटये सदैव हन्तो मातुलः यत्रे कैः सुकृती तु वाणकुसुमे म-
त्री फले सामरैः राजा वक्रि शिखाल्यमायुरितिसन् मूलं ध्रिये स्यात् फलं भूयालवक्ष्यमः
चर्कालि सिंहेषु घटे च मूलं दिवि स्थितं दुग्मतुला गनां त्ये पाताला गमेष धनुः कुलीरन-
क्तेषु मर्त्ये श्रितिसंस्मरंति स्वर्गे मूलं भवेद्राज्यं पाताले च धनागमं मृत्युलोके यदा मूलं
तदा सत्यं समादिशेत् वशिष्टः नैऋत्यभोद्रुतसुतः सुता वाक्षि प्रादवरं यं सूरं निहन्ति
तदं तपादे जनि तो नाहंति तस्यो क्रमेणादि भवे कलत्रं सुरेशता राजनिता धवाग्रजं
द्विदैवता राजनिता तदेवरं पुरंदर्क्ष जनि तः सुतस्तथा स्वस्याग्रजं हन्ति न पुत्री कायदि प्र-
योगपारजाते मूलजाश्च सूरं हन्ति मालजा च तदंगनां माहेंद्रजाग्रजं हन्ति देवरं दि

राम
१६३

163A ह१

चदेवजा नृसिं प्रसादे धवाग्रां हंतिसुरं जाततथैव पत्न्या भगिनी पुमांश्च द्विदे
वजादेवरमाश्रु हन्याद्वा धीनुजामाश्रु हि हंति स्तनः पत्न्या गजामग्रजामग्रजबाहंति
ज्येष्ठर्क्षजः पुमान् तथा भार्या स्वसंवाशालकं चाद्विदेवजः कन्यकादेवरं हंति वि
शाखां त्यसमुद्रव प्राधपायत्रयेनैव प्राधमेतु पुमान् भवेत् न हन्यादेवरं कन्या तु
लामिश्च द्विदेवता तदृक्षां त्योद्गवावर्ज्याड्या हृष्टिकपुष्टवत् चित्राद्यर्धे पुष्यमध्ये
द्वि यदि पूर्वाषाढाधिक्यपदितृतीये जातः पुत्रः श्रोत राधे विधत्ते माता पित्रो भ्रातरं
बालनाशं द्विमासं चोत्तरादौ षः पुष्ये चैव जिमासिकैः पूर्वाषाढाष्टमे मासि चित्रा
या एमासिकं फलं नवमासं तथा श्लेषा मूले चाष्टकवर्षकं ज्येष्ठा पंचदशे मासि पु
त्रदरी नवजिता वशिष्ठः व्यतीपातं गहानि स्यात्परिधे मृत्युमादिशेत् वैधृतौ पि
तृहानिः स्यान्नष्टं दावधत्तां ब्रजेत् मूले समूलनाशः स्यात्कुलनाशो धृतौ भवेत् वि
क्ततां गोचरी नेच सधयो रुभयोरपि पर्वण्यपि प्रसूतो च सर्वा रीष्ट भयप्रदः तदव
त्तदंत जातश्च पादजातस्तथैव च तस्माच्छांतिं प्रकवीग्रहारां कुरचेत्तसां गरीः कृष्णां
चतुर्दशी योषकु र्यादादौ भस्म तं द्वितीये पितरं हंति तृतीये हंति मातरं चतुर्थे मा
तुलं हंति पंचमेवं शनाशानं षष्ठे तु धननाशः स्यादात्मनो वंशनाशानं देवकीर्तिः
यद्येकस्मिन् धिमे जायेते उस्तिरो यवा पुत्राः पितरं न कारयेते पद्य परे प्रीतिरनु

164

लास्यात गरीः एकस्मिन्नेव नक्षत्रो भ्रात्रोर्वाप्यित् पुत्रयोः प्रसूतिश्च नयो पुत्रो मृ
 त्पुर्भवेदकस्य निश्चितं शौनकः गृहणे चंद्रसूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते आधिपतीं
 दासी एवमादौ तु ऋतुदरीनात् इत्यं संजायते यस्य तस्य मृत्युर्न संशयः शान्तिस्तु
 न दक्षाधिपते रूपं सुवर्णेन प्रकल्पयेत् सूर्यग्रहे सूर्यरूपं हैमं चंद्रराजते राक्षस
 यं प्रकुर्वीत नागेनैव विचक्षणः नागः सीमं वयाणां चैव रूपाणां स्थापनं तत्र कार
 येत् आकृष्टेनाप्यायस्व स्वर्मा नोरिति स्रजामंत्रः नक्षत्रदेवतायास्तन्मंत्रेण संयज्य
 तमं जेत्स्वर्गं समिद्धि शार्कं संभवैः चंद्रग्रहे च बालाशैर्द्वीभीरादुमेव च समिद्धि
 सप्तभस्य भेषाय जुहुयाद्बुधः आज्येन च रुणाच्चैव तिलैश्च जुहुयात्ततः पंचगव्यैः
 पंचरत्नैः पंचतर्पणं च पक्ष्मवेः जलैरौषधैश्चैव अभिषेकं समाचरेत् मंत्रैर्वा रुणा
 संभूते रायो दिष्टादिभिस्त्रिभिः इमं मंत्रं गेरतस्तत्पायामीति मंत्रकैः यजमानस्ततो
 दद्याद्भक्त्या प्रतिभक्तित्रयं मातये अकालप्रसवनायैः कास्तातीत प्रजास्तथा विल्ल
 तप्रसवाश्चैव पुंसप्रसवकस्तथा अमानुषा अमंडाश्च पुजातव्यं जनस्तथा ही
 नागा अदिकां गां प्रजायते यदि वास्त्रियः पशवपक्षणाश्चैव तथैव च सरीसृपाः
 विनारांतस्य देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् न निर्वासयेत् न गतं नः शान्तिं समा
 चरेत् विष्णुधर्मोत्तरे उपरिप्रथमं यस्य जायते च शिशोर्द्विजाः दंतैर्वा सहस्य स्यात्

 राम
१६४

164A

ज्ञानमभार्गवसत्तमद्वितीयेचतुर्त्तयेचतुर्थेपंचमेतथा यदादंताश्रुजायंते मा
 निचैवमह्यं मातरं पितरं वा यस्वादेदात्मानमेवच गजव्यगतालंनौस्य
 वास्याययेद्विज तरभेवैतधर्मज्ञकांचनेवावरासने सर्वौषधैः सर्वगंधैर्वीजैः
 पुष्पैः फलैस्तथा पंचगव्येनरत्नेश्रयताकाभिश्चभर्गव स्थालीयाकेनधाना
 रंयजयेदनंतरं सप्ताहंवात्रकर्तव्यंतथा ब्राह्मणभोजनं भद्रासनेनिबैश्येनमृद्धि
 मूलैः फलैस्तथा सर्वौषधैः सर्वगंधैः सर्ववीजैस्तथैवच स्नाययेत्सजयेचाज
 चद्रिंसोमं समीरणं पर्वतांश्रुतयारव्यातान्देवदेवंचकेशचं एतेषामेवजु
 ह्यात्तद्यत्तमग्नौयथाविधि ब्राह्मणानां तदातव्याततः संयज्यदक्षिणां ज्ञान
 यामले प्रथमंदंतनिर्मुक्तिरुर्ध्वा लस्यचेद्रवेत् क्लेशायमातुलस्ये हतदाप्रो
 क्तमर्थिभिः सौवर्णीराजतंवापिताम्रंकांस्यमयंतवा दध्णोदधानेनसंयर्णीया
 जंदद्याधिराकरे समंत्रभाजनंदत्वासपरयेत्मातुलः शिरं सु सालंकारं सव
 स्त्रचशिरं सुमालिग्य सादरं तत्रमंत्र रक्षमांभागिनेयत्वरक्षमेसकलं कुलं
 गृहीत्वाभाजनं सान्नं प्रसन्नोभवमेसदा निर्विघ्नं कुरु कल्याणं निर्विघ्नं च स्व
 मातरं मयात्मनमधिष्ठेच्चिरं जीव मया सह एवं कृते विधाने तु विघ्नः को
 यिन जायते इति श्रयत्रिक शांतिः शांति सर्वस्वे सतत्रये सता चेत्या तत्र

165

ये वासतो यदि मातापि वौ कुलस्यापि तदा निष्कमरुद्रवेत् ज्येष्ठनारोधनेहानिः
 डः रं वासुमरुद्रवेत् जानस्यैकादशहेवाकादशहेमने अत्रार्थम्विजो ह्यत्रा
 ग्रहयज्ञपुरस्सरं ब्रह्मविष्णुमहेशैन्द्रप्रतिमाः स्थापितः कृताः पूजयेद्वा न्यराशिस्थ
 कलशोपरिशक्तिः पंचमेकलसेरुद्रं पूजयेत् रुद्रसंख्यया रुद्रसंक्रान्तानि चत्वारि
 शान्तिस्तुक्तानि सर्वराः आचर्यैजुद्रया नत्रसमिदाज्यतिलं अतं अष्टैतत्स
 रुद्रं वा शान्तं वा त्रिशान्तं वा देवताभ्यश्चतुर्वक्त्रादिभ्यो ग्रहपुरःसरं ब्रह्मादिमंत्रै
 र्द्विस्ययतं इन्द्रभयामहे ततः स्थित्वा कृतं कृत्वा वलिं दद्यात् इति ततः अभिषेकं कृ
 तुं वस्य कृत्वा चार्घ्यं पूजयेत् हिरण्यधेनुरेका च अत्र विजादक्षिणा ततः आज्यस्य वी
 र्यं कृत्वा शान्तिपाठं लकारयेत् इति अन्येषु मूलादिगर्हो मुखं शान्त्यादि प्रयोगाचारजा
 ते तेषां मिताक्षरायां मार्कंडेयः रक्षणीया तथा वष्टी निशानत्रविरोधतः रात्रौ जागरणं
 कार्यं जन्मदानं तथा वलिः धनं वाः शस्त्रहस्ताश्च न्यगोतैश्च यो धितः रात्रौ जागरणं
 कर्तुं दशम्यां चैव सततं के व्यासः सति कृत्वा वासनि लया जन्मदानां देवताः तासां जाग
 निमित्तं लुप्तादि जन्मनि कीर्तिताः पृथमे दिवसे षष्ठे दशमे चैव सर्वदा त्रिंशे ते शुन
 कुर्वीत सततं पुत्रजन्मनि अपरां के ब्राह्मे कन्याश्च तस्यैवाकाद्या वातप्रीत्यैव पंचमी
 ओडता र्थाचवा लानां वष्टी च शिशुरक्षणी रविकृतं पूजनीया वै वै रथत्रास्यै दिजाति

राम
१६५

165A

भिः राकानुमतिः सिनीवाली कुहूरिति च तस्य कन्या इत्यर्थः अथ दत्तकपुत्र
परिग्रहविधिः पारजनते रौतकः अपुत्रो मृतपुत्रो वा पुत्रार्थं समुपोष्य च वा
ससौकुं उलेदत्वा उष्णीषं चागुलीयकं बध्नन् नैनं संभोज्य ब्राह्मणं श्रविरो यतः
अन्वाधानादियत्तं ब्रह्म ज्योत्यं वनांतकं दानुः समक्षं गत्वा तु पुत्रं देहीतियाचयेत्
दाने समर्थो दाता सौम्ये यज्ञेनेति पंचभिः देवस्य त्वेति मंत्रेण हस्ताभ्यां परिगृह्य च अं
गादंगे त्वचं जप्त्वा आघ्राय शिशुमुत्थिनि गृहमध्ये तमाधाय च संकुत्वा विधानतः प
त्वा हृदे त्वचा चैव तुभ्यमग्रं चैकया सोदरदादित्येताभिः प्रत्यचंपंचभिस्तथा स्ति
ष्य कदा हि होमं च दत्त्वा शेषं समापयेत् ब्राह्मणानां सपिंडेषु कर्तव्यः पुत्रसंग्रहः तदभा
वे सपिंडो वा अन्यत्र न कारयेत् मिताक्षरा दोतमाहृतिभिराज्येन होम उक्तः तत्रैव वशि
ष्टः न त्वेचैकं पुत्रं दद्यात्प्रतिगृहीयाद्दानस्त्रीपुत्रं दद्यात्प्रतिगृहीयाद्वा अन्यत्राठज्ञाना
द्वर्तुरिति यत्तु मंत्रकहोमस्य पुत्रप्रतिग्रहं गत्वा व्याहृत्यादि मंत्रपाठे च स्त्रीषु द्वयोरनधिका
रा नयो र्दत्तकः पुत्रो न भवत्येवेति अथ विवेके रुद्रधरेणोक्तं तन्न भर्तु नृन्यासिया अ
थि प्रतिग्रहोक्तेः यद्यपि मेधानि यिनाभार्यान्वचददष्टरूपदत्तकत्वं होमसाध्यमुक्तं स्त्रि
याश्च होमासंभवस्तथापि ब्रतादिवादिप्रकारा होमादिकारयेदिति हरिनाथादयः संवे
धतत्वे प्येवं एवं श्रुदस्यापि स्त्रीषु द्वाभ्यां धर्माणां इति स्मृतेः अतएव श्रुदकर्तृकहोमो
विप्रकारैव पराशरेणोक्तः दक्षणा र्थं तु यो विप्रः श्रुददक्षिणामादाय तदीयं हविः

नि.सिं.

१६६

166

रांतिपुष्पादिसिद्धये वैदिकैर्मैत्रैर्ज्ञेयैस्तिस्र्यविप्रस्येव दोषः अद्रक्त होमपत्ते
लभेतेवेतिग्याचचक्षे शुद्धिविवेकेस्तुधरेस्मेतं नन भर्तुस्तथासिद्धाः शुद्धिप्रति
रक्तकेविशेषः कालिकापुराणे पितृगोत्रेण यः पुत्रः सरक्तः पृथिवीयति आ
वृत्तंतेनपुत्रः सपुत्रतायातिं घान्तः चोपायेन संस्कारानिजगोत्रेणवैकृताः ।
दत्ताद्यास्तनयास्तेस्युरन्यथादासउच्यते ऊर्ध्वं लुपंचमाद्वानदत्तद्याः संताः नृपाः ।
गृहीत्वापंचवर्षांयुत्रेष्टिप्रयमंचरेदिति यत्तद्देमादौदत्तः विक्रयंचेवदानंचनने
यास्युरनिधवः दारापुत्राश्च सर्वस्यमात्मनैवतु योजयेदिति यच्चयाज्ञवल्क्यः स्यकु
दुंवाविरोधेन देयं दारसुतादौतेति तद्वर्धस्यदानानिधुपुत्रपरं अथयमयोः संस्कार
क्रमार्थं ज्येष्ठकनिष्ठभावउच्यते मनुः जन्मज्येष्ठेनचावाकानं सत्रसंस्थास्यपि
स्मृतेः यमयोश्चैवगर्भेषु जन्मतो ज्येष्ठतास्मृता देवलेपि यत्पुत्रतस्ययमयोः
पर्यंतिप्रथमं सुरं संतानः पितरश्चैव तस्मिन् ज्येष्ठप्रतिष्ठितं भागवतेतु
द्वौतदाभवतो गर्भौ सतिर्वैराविपर्ययादितुक्तेः पश्चादुत्पन्नस्य ज्येष्ठसुक्तं प्रजु
देशाचारतौ व्यवस्था अथसुतकास्तानि ज्योतिषेकरं द्वाभ्यानि लवा सवात्यमं
दवाश्चिद्रव भेद्विष्टं निधावरिक्ते शुभमामनं निप्रसूतिकास्तानविधिमुनी
डाः अथनामकर्ममदनरत्ने तद्व्याप्तिः द्वादशेदशमेवापि जन्मतोपि त्रयोद

राम
१६६

शे षोडशे विंशतो चेव द्वात्रिंशो वर्णतः क्रमात् पातचल्यः अहयेकादशेना
 म हेमाद्रौ भविष्ये नामधेयं दशम्या नृदादश्या मासिके च न अष्टादशे दशित
 यावदं त्यजे मनीषिणः दशम्या मतीता यामिति ज्ञेयं आशौचाद्यगमेनामधेयमि
 ति विष्णुर्ज्ञेयः गृह्यपरिशिष्टे पिजननादशरात्रे मुख्ये शतरात्रे संवत्सरे वा नामकरणं
 व्यष्टेतीति ज्योतिर्निबंधे गर्गः अमासं क्रांति विष्णादौ प्राप्तकाले पिनाचरेत् श्री
 धरः मित्रादित्यमघोतराशतभिक्षु स्यातीधनिष्ठा अतः प्राज्ञेराश्विराणां कपोदमदि
 नक्तत्पुष्पेष्ठराशौ स्थिरे छिद्रं पंचदशीं विहाय न वमीषु द्देष्टुं मे भार्गवज्ञाचार्या
 मृजपादभागादिवसेनामाति कुर्याच्छिरोः सतुः शमीतं ब्राह्मणस्यास्य द्दमांतं
 क्षत्रियस्य तु वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेक्ष्य संयुतं मदनरत्ने नारदीये सततं
 तेनामकर्मविधेयं स्वकुलोचितं नाम धर्तव्यं मासस्य मङ्गलगलं सुसमादरेः त
 औवगार्ग्यः मासनामगुरोर्नामदद्याद्गलस्य वैधित्वा कृष्णं नतो व्युत्तश्च श्री
 वैकुण्ठो यजानाद नः उपेन्द्रो यज्ञपुत्रो वासुदेवस्तथा हारिः योगीशः पुंडरीकाक्षो
 मासनामान्य नृक्रमात् अत्र मार्गशीर्षादि चैत्रादिवाक्रम इति मदनरत्ने जन्मा
 सनामप्रथमं दद्यात्संबधं चैव हि देवालयगजाश्वानहश्वाणां वापि कृपयोः स
 वीयणानां पणानां चिह्नार्थं यो धिमां नृणां काव्यानां च कबीनां च पञ्चादी

नि.सिं.

१६७

167

नां च सर्वेशः राजर्षिसादद्यास्त्रनां नाम कर्म विशिष्यते नाक्षत्रमपि नाम कार्यं अ
भिवादनीयं च समीक्षेत तन्मातापितरो विद्यातामोपनयनादित्यश्रुत्या योक्तेः क
लदेवतानक्षत्रसंबंधपितानामकुधादिति मदनरत्नेशैवाक्तेः तच्च नक्षत्रपादाक्ष
राद्याक्षरं कुर्यादित्युक्तं परिशिष्टे तदक्षरादिकं नाम यस्मिन्धिष्ठ्ये पदक्षरमिति सप्त
र्षिभाष्ये तुरोरे मम ज्येष्ठि हर्षिदो दान्त्ये च वां त्यश्रवराश्रुयुक्तं शेषेष्टुनाम्नाः
कपरः स्वरोत्यः स्वायोरदीर्घः सविसर्गश्चः इत्युक्तं दान्त्येति प्रोष्टपदेत्यत्रादौ दान्त्ये
च हर्षिः प्रोष्टपाद इति अतमयभरणीशब्दः प्रुतावुक्तः प्रुवणादौ च वादि हर्षिः १
अयभरणः प्रायभरण इत्यादि मदनरत्ने वशिष्टः जन्माहे द्वादशाहे वा दशाहे वा
विशेषतः उत्तरारेवती हस्तसल्लुब्धा सवारुणाः प्रुवणादिमैत्रं च स्वाती मृ
गशिरस्तथा प्राजापत्ये धनिष्ठा च प्ररास्तानाम कर्मणि अथ खट्वारोहः पारि
जाते हस्तस्यतिः रवाक्षारो हस्तकर्त्तव्यो दशमे द्वादशे पिवा योऽशो दिवसे चापि द्वि
शो दिवसे पिवा ज्योतिर्निबन्धे करज्ये वैष्णवरेवती कुदिनि द्वये चाश्विन क
वेष कुर्याच्छिस्तान् नृपते अतद्वदो लानं वै सूरवतो भवेति तत्रैव आंदोलो
रायने पुंसो द्वादशो दिवसः शुभः त्रयोदशस्तु कन्यायाननक्षत्रविचारण अन्य
स्मिन् दिवसे चेत्त्यात्रिर्यगास्ये प्ररात्यते अथ हृग्धयानं नृसिंहः एकत्रिंशत्

राम
१६७

दिने वैवययः रात्रौ नयाययेत् अन्नप्राशननक्षत्रादिवसोदयराशिषु अथ करणवै-
 धः मदनरत्ने विशिष्टश्रीधरो मासेष्वे सप्तमे वाष्टमे वा वैध्या करैर्गद्गादशेषो
 उशोऽस्मिन्मध्ये नाहः पूर्वभागे नरात्रौ नक्षत्रद्वे द्वेतिथीवर्जयित्वा अत्र जन्ममासो वर्ज-
 ज्योतिर्निर्वधे गार्गीः मासेष्वे सप्तमे वाष्टमे मासि वत्सरे कर्णवेधं प्रशंसति पु-
 ष्यायुः श्रीविष्वक्ष्ये मदनरत्ने प्रथमे सप्तमे मासि अष्टमे दशमे च वाद्वादशे च तथा कु-
 र्यात्कर्णवेधं शुभावहं हेमाद्रौ व्यासः कार्तिकेयौर्गमासे वा चैत्रे वा फल्गुने पि वा
 कर्णवेधं प्रशंसति मुक्तपक्षे शुभे दिने श्रीधरः हरिहरकरचित्रासौम्ययोद्योत्त-
 राद्यौ दिति वसुधुषटालो सिंहवर्जेषु लग्ने राशिगुरुबुधकाव्यनादिने यवैरिक्ता-
 राहितेतिथिषु शुद्धे नैधने कर्णवेधः मदनरत्ने तद्वस्यतिः द्वितीयादशमीष्वष्टी स-
 प्तमी च त्रयोदशी द्वादशीपंचमी रास्ता तृतीया कर्णवेधने सौवर्णी राजपुत्रस्य रा-
 जती विप्रवैरययोः अद्रस्य वायसी सची मध्यमाष्टांगुलात्मिकाः हेमाद्रौ देवलः
 कर्णरंध्रे रवेऽध्यायानविशेदगजन्मनः तद्वृष्टा विलययाति पुण्याद्यां पुरातनाः
 संखः अंगुष्ठमात्रसुषिरो कर्णो न भवतो यादि तस्मै श्राद्धं न दातव्यं दत्ते चेदासुरं भ-
 वेत् अथ तां वलभक्षणां चंडेश्वरः सार्द्धमासद्वये दद्यात्तां वलं प्रथमं राशेः कर्ण-
 रादिकं संमिश्रं विलापहिताय च मूलार्कचित्रकरतिष्यहरोदनेषु पौर्णमास्ये

नि.सिं.

१६८

168

पि

गशिरोदिनि वासवेष्टु अर्केंडजीवभृगुवोधनवासरेष्टु तौ बलभक्षणविधिर्मु
निभिः प्रादिष्टः अथ निष्कमरां ज्योतिर्निबंधेयमः तृतीये वाचतुर्थे चामसि निष्क
मरां भवेत् यमः ततस्तृतीये कर्तव्यं मासि ५ सूर्यस्य दर्शनं चतुर्थे मासि कर्तव्यं
शिरोऽंशद्वयदर्शनं अत्र सूर्ये दोः कर्मणीये चतयोः आर्द्धं न विद्यते इति धंदोगपरि
शिष्टा धंदोगानां निष्कमरां द्वि आर्द्धं नास्तीति कल्पतरुः व्यासः मैत्रेयश्च पुनर्वसुप
यमभेयो ह्येनक ले विधौ हस्ते चैव सुरेश्वरं च मृगशिरां च राश्यां च कर्त्तव्यं
क्रमेण शिरोऽर्द्धं धनुरीं शुक्रं शरिरेति यौकं न्या कं भतुलामृगागि भवने सौम्यग
हले किते मदनरत्ने अथ प्राणानकाले वा कुर्यात् निष्कमरां क्रियां विष्णुधर्मै दि
गीशानां दिने तत्र तथा च दार्क्योर्द्विजः पूजनं वासुदेवस्य गगनस्ये च कारयेत् व
हिर्निःकारयेद्देहा च रवपुण्याह निस्वनेः चंद्रार्कयोर्दिगीशानां दिशां च गमन
स्य च निक्षेपार्थं मिमंदादिते मेरुक्षंत सर्वदा अप्रमत्तं प्रमत्तं वा दिवारात्रमयापि वा
रक्षंत सततं सर्वे देवाः शक्रपुरोगमा अथोपवेरं प्रयोगपरिजाते पादौ विष्णु
धर्मचपंचमे च तथा मासि भूतौ तस्य वैरायेत् तत्र सर्वे ग्राहाः रास्ता भौमो व्यत्रवि
रोधनः उत्तरात्रिंशं सौम्यं दुष्पक्षं शक्रदेवतं प्राजापत्यं च हस्तश्च रास्तमाश्विनमि
त्रं भस्मराहं पूजयेद्देवपृथिवी च तथा द्विज रक्षेन्न वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभे आ

राम
१६८

युः प्रमाणं सकलं मिश्रितं हरिप्रिये अचिरादायुषस्तस्य ये केचित्परिपंथिनः
 जीवतारोग्यवित्तैश्च निर्दह्य चिरैरात्मानं वरेण्यशेषभूतानां मातात्मसिक्ता
 मधुकं अजरावाप्रमोद्ये च सर्वभूतनमस्कृता चराचाराणां भूतानां प्रतिष्ठाना
 व्ययासि कुमारं पाहि मातस्त्वं ब्रह्मातदनुमन्यतां अयान्नप्राशनं परिजाते
 नारदः जनमतो मासिष्ये स्यात्सौरेणात्प्राशनं परं तदभावेष्टमे मासि न च मे द
 शमेपि वा द्वादशे वापि कुर्वीत प्रयमात्प्राशनं परं संवत्सरे वा संपूर्णे केचिदिदं ति
 पठिताः मदनरत्ने लोकाक्षिः षष्ठे न प्राशनं जातेषु चेति शंखः संवत्सरे न प्राशनं
 मध्यं संवत्सरे वेति नारदः षष्ठे वाप्यष्टमे मासि पुंसां स्त्रीणां तु पंचमे सप्तमे मासि वा
 कार्यं नवान्नप्राशनं शुभं रिक्तादि नक्षत्रे नक्षत्रे न द्वादशे मष्टमी मसान्त्यक्तान्य
 निययः प्रोक्ताः सितजीवतवा सराः चंद्रवारं प्रशंसन्ति कृष्णे चात्यत्रिकं विना
 श्रीधरः आदित्यतिथ्यवसुसौम्यकरानिलाश्विचित्राऽजचिह्नवरुणोत्तराश्वि
 मित्राः बालान्नभोजनविधौ दशमे विधौ दशमे विष्णुद्वेष्टा विहाय न वमीत्ययः
 शुभाः स्युः तशिष्यः बालान्नभुक्तौ व्रतबंधने च राजाभिषेके खलु जन्मधिष्य
 शुभं त्वनिष्ठं सततं विवाहे सीमंतयात्रादिषु मंगलेषु मार्कंडेय विष्णुधर्मयोः ब्रह्मा
 णां शंकराविष्णुचंद्राकौचदिगीश्वरान् भुवं दिशश्च संयज्य कुत्वा वक्तुं तया चरुं देव

नि. सिं.

१६९

169

तापुरतस्तस्य धातुसंगरातच अलंकृतस्य दातव्यमन्त्रपात्रे सकोचने मध्वाज्यदधि
संयुक्तं प्राशयेत्पापसंतचेति अथाव्यर्त्तिः व्यवहारनिर्णये नवांवरधरो भूत्वा य
जयेच्चिरायुवं माकंडेयं नरो भूत्वा यजयेत्प्रयत्नस्तथा ततो दीर्घायुवं व्यासे राम
द्रोणिं कृपेवंसिं प्रह्लादं च हनूमंतं विभूषणमथाचयेत् स्वनक्षत्रं जन्मतिथिं प्राप्य
संयजयेन्नरः षष्ठीं च दधिभक्तेन वर्षे वर्षे पुनः पुनः तिथितत्वे रातत्रामाभितिलहे
मोयुक्तः प्रादिपुराणे सर्वे अजन्मा देवसे सत्ताते मंगलवारिभिः गुरुदेवादिन विष्टा
अयजनीयाः प्रयत्नतः स्वनक्षत्रं च यितरो तथा देवः प्रजापतिः प्रतिसंबत्सरं यत्नात्क
र्तव्यममहोत्सवः कृत्यचिंतामणौ गुडगुग्गुनि लान्दद्याद्दत्ते गंधौ च बंधयेत् गुग्गु
लुं निवसिद्वार्यद्वारो रोचनादिकं संयमभातु विष्टे रोमद्विप्रययेदिदं चिरजी
वीयथा त्वं न मुनीनां प्रवर्द्धि ज कुरु सुमुनि राईलतया मां चिरजीविन माकंडेयम
हाभागसप्तकल्यांतजीवनं प्रापुरारोग्यसिद्ध्यर्थमस्माकं वरदो भव सुतिलं गुड
संमिश्रमं जल्पार्धमितं ययः माकंडेया त्ववरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विह्वये इति ययुः
यिवेत् तिथितत्वे स्कां दे रं डनं न ख के रानां मे युना ध्वगमो तथा ग्रामिषं कले
हं हिंसा वर्ष हृदौ चिबते ययेत् तत्रैव दीपिकायां कृतं तत्कृतयो वारे यस्य जन्मति
तिर्भवति अन्तर्द्वययोगसंप्राप्ते विष्टस्तस्य यदेयदे कृतं ततः शनिः तस्य सर्वोद्य

राम
१६५

169A

धिस्रानंगुरुदेवाग्नियजतं सप्तमः मृतेजन्मनि संक्रान्तौ श्राद्धे जन्मदिने तथा
 अस्य स्य रीने चैव न स्त्राया दुष्यचारिणा अत्र जन्मनि धिरो दधिकी ग्राह्या यु
 गाद्या वर्ष वृद्धि सप्तमी यावती प्रिया रवे सैदयामीक्षते न तत्र तिथियुग्मने तिक्त
 त्यतात्वा एव च नान् अथ कुटिसत्रं प्रयोगयारिजाते ब्राह्मे प्रतिसंवत्सरांतर्द
 वक्षेन्मृगाविधिपरं दत्वा गोभृष्टिराण्यादि तथा स्य एणिदिनिर्मितं वधावा क
 टिसत्रं च वासेः संग्रहस्तनं इवांकुरे रथा ज्येन चरणा बाधिना किनं ?
 आधुव्यहोमं कृत्वा चतुर्थये तित देवताः अथ चैलं प्रयोपरिजाते वदुरुशि
 व्यः जाताधिकाराज्जन्मादितृतीये देवतचौलकं आधे वे कर्त्तव्ये केचित्पचम
 दै द्वितीयके उपनीत्या सदैवै चिकल्पाः कुलधर्मतः ब्रह्मस्यति तृतीये देशि
 रोगर्गर्भाज्जन्मती वाचिशेषतः पंचमे सप्तमे वापि स्त्रियाः पुंसोपि वा समं तत्रै
 व नारदः जन्मतस्तु तृतीये दे श्रेष्ठमिधंति पंडिता पंचमे सप्तमे वापि जन्मतो
 मध्यमं भवेत् अधमं गर्भतः स्यात्पुनश्च म्येकादशे पि चेति पारिजाते ब्रह्मस्य
 तिः उत्तरायणे सूर्ये विरावात्सो म्यगोलके मृक्षपक्षे शुभं प्रोक्तं कृष्णपक्षे
 शुभेतरत् अशुभं तत्रिभागः स्यात्कृष्णपक्षे त्रिधा कृते तत्रैव वशिष्टः

नि.सिं.

१७०

170

दित्रिपंचमसप्तम्यामेकादश्यांतथैवच दशम्याचत्रयोदश्यां कार्यक्षौरं विजुनता
नंसिंहीयेष्वष्टमीचतुर्थीचनवमीचतुर्दशी द्वादशीदश्यां रौं द्व प्रतियच्चैव
निदिताः वशिष्ठः रवेरंगारकस्यैव सूर्यपुत्रस्य चैव हि निदिता दिवसाः सौ
रेश्याः कार्यकराः शुभाः ज्योतिर्निबंधे ब्रह्मस्यतिः पापग्रहणं वारादौ विप्रा
णं शुभदं रवेः क्षाजिनवक्षौरे उतमानवतारकाः स्त्री ए पुनराणि वायव्यं रोहिणी
वातुणं तथा क्षौरेष्वरमध्यमाः प्रोक्ताः शेषाद्वादशागर्हिताः निधने जन्मनक्ष
त्रेवैनाशे चंडमोक्षमे विपत्करे वधे क्षौरं प्रत्यरे वा विवर्जयेत् अत्र लग्नशुद्धि
त्येच योगाज्योतिर्विज्ञोत्तेयाः अत्येच विरोधाः रमशुकर्मनिर्णीये वक्षंते एत
च्च शिशो मातरि गर्भिण्या न कापं न दाहं ज्योतिर्निबंधे मदनरत्ने च हृद्गर्भ्यः
पुत्रस्तु जातौ माता यदि सा गर्भिणी भवेत् रास्त्रेण मृत्युमाप्नोति तस्मा क्षौ
रं विवर्जयेत् अस्यापवादमाह तत्रैव नारदः स्तनौ मातरि गर्भिण्या च जातौ कर्म
नकारयेत् पंचाब्दात्प्रागयोर्ध्वं तु गर्भिण्या मधिकारयेत् यदि गर्भविपतिः स्यात्
विरोधां मरणं यदि सहोपनीत्या कुर्याच्चैतदा दोषो न विद्यते ब्रह्मस्यतिः वा
र्भिण्या मातरि शिशो कर्म नकारयेत् व्रता भिद्ये केप्येवं स्यात्कालोचद

राम
१७०

170A

ब्रूतेष्ट्वि गभिर्गणायामपि पंचमासपर्यंतं न दोषस्तु क्लृप्तं मुहुर्न दीपिकायां गर्गिण
 पंचममासाद्धर्ममातुर्गर्भस्य जायते मृत्युरिति मदनरत्ने ब्रूहस्पतिः पुत्रवृद्धा क्लृप्तं
 तौ मातागभिर्गणायामपि पंचमासपर्यंतं न दोषस्तु क्लृप्तं मुहुर्न दीपिकायां गर्गिण
 कुमारस्य न कुर्याच्चौलकर्मतु पंचमासदधः कुर्यादन्न रुध्न न कारयेत् गर्गिहतर
 स्योत्पादनं यस्य लग्नं न स्य न कारयेत् दोषनिर्गमनात्पश्चात्त्वस्थो धर्मसमाचरेत्
 लग्नमिति मंगलयलक्षणं ज्योतिर्गर्गः विवाहोत्सवपक्षेष्टमाता यदि रजस्वला
 तदा समुत्पन्ना प्रीति पंचमं दिवसं विना विशिष्टः यस्य मांगलिकं कार्यं तस्य मातर
 रजस्वला अर्धं न देवा तत्रैव ब्रूहस्पतिः प्राप्नोमभ्युदयश्चाहं पुत्रसंस्कारकर्मणि यत्नी
 रजस्वला चेत्स्यान्न कुर्यान्नपि तातदापि तेति कर्तुमात्रोपलक्षणं संकटे तु वाक्यसाधु
 क्लृप्तं अलाभे तु मुहुर्न स्वरजो दोषेष्टुपस्थिते श्रियं सद्यज्यविधिवन्नतो मंगलमाच
 रेत् एतच्च मंडनोत्तरं न कार्यं न मंडनाद्यापि हि मंडनं च गोत्रैकतायां यदि नाक्यमेद
 ति मदनरत्ने वशिष्टोक्तेः तत्रैव कात्यायनः कुलैरिति त्रयादवाहः चंडनान्नमंड
 नं प्रवेशान्निर्ममो नैष्टेन कुर्यान्मंगलत्रयं ब्रूहस्पतिः एकमात्रज्योरेकवत्सरे
 पुरुषस्त्रियोः न समानक्रियां कुर्यान्मातृभेदे विधीयते आरौचे तु संग्रहे संकटे
 समनुप्राप्ते सतके समुपागते कृष्णां गभिर्धृतं रुक्मागं च दद्यात्पयस्विनी चूडाय

नि.सि.

१७

१७१

नयनोदप्रव्यतिष्ठादिकमार्चरेदिति ज्योतिर्निबंधे षष्ठे देवोऽशोवर्षे वि
वाहो वैतयेच अंतर्वेत्तांचजायायांनेव्यतेमुडनं कुचिन् अन्योविशेषोवा
ह प्रकरणेचक्षतेदीयिकायां नक्षत्राजन्मभागेनयदासुणेमुशानोक्तजे प्रतिप
अद्विज्ञासुविद्यारंभस्तुपंचमे प्रयोगरत्नेमध्ये शिरसि चैडास्याहमिष्टानां न
दक्षिणे उभयोः पार्श्वयोः त्रिकशयानां शिरवामता माधवीयेयेवं आपस्तंब
स्त्वाह तस्मीकेरा त्विनीयययर्षि शिरवानिदधाति ययर्षिप्रवरसंख्यया तासां
मध्य शिरवावर्जं नयनयनेवपनं कार्यं प्रतिदिशं प्रवयतीत्युपनयने नैवोक्तेः ।
रिक्तोवा एवो नपि हितो यन्मुडस्तस्यैतदधिधानयश्चिरवेति श्रुतेः विशिरवाकु
पवीतश्च यत्करोति नतस्तत्तमिति निषेधाच्च सजेतुवचनात्मशिरववपनमिति
सुदर्शनभाष्ये उक्तं यत्तु कुमारविति शिरवद्वेति लिंगान्तश्चंदोगपरं अपराकै
मदनरत्ने च लोंगाक्षिः दक्षिणतः कसंजावशिष्टानां नुभयतोऽत्रिकशयानां
संजाभगवः पंचक्षत्रं गिरसावाजिमेके मंगलार्थं शिरिनो न्ययया कुलध
मवेति कसंजा शिरवावाजिः केशपेद्भिः स्मृतिदर्थे एका शिरवादक्षितो वशि
ष्टगोत्रस्य पंचांगिरसाभगोस्तु नैका शिरवाकश्ययगोत्रजानां शिरवाभयद्राधि
यथा कुलोवा एतच्छ्रुतिरिक्तविशयं इत्यानियताः केशवेशा इति वशिष्टेभ्यः

वि२

साम
१७१

171A

यत्तु पापे इति युक्तं अत एव सारतः संहिद्रोत शिखो धित्वा प्रोधा द्वैराग्यतो पि
 वा प्राजायत्यं प्रकुर्यात्तां निष्कृतिर्नान्यथा भवितु एतत्परिग्रहयके अत्र देशभेदा
 यवस्थितिदिक् ज्योतिर्निवेधो नर्मदोतरदेशोत्त सिंहस्थे देवमंत्रिणिः शुभकर्मन
 कुर्वत निषेधो नास्ति दक्षिणे अत्र भोजने प्रायश्चित्तं पराशरमाधवीये निर्व
 तेष्टुहोमेत्तु प्राङ्गामकराणां तथा चरेत्सातपथं भुक्ता जातकर्मणि चैव हि अतो ये
 युत संस्कारे यवासेन शुध्यते एते संस्कारास्त्रीणाममंत्रकाः कार्याः होमस्तु सं
 जकाः कार्याः होमस्तु संमंत्रकाः कार्याः होमस्तु संमंत्रक इति प्रयोगादिति ज्ञाते आ
 मलायनोपि होमस्तु त्वं पुंवत्स्यात् स्त्रीणां च जकता वपीति मनुरपि अमंत्रिका
 त्कार्ये यं स्त्रीणां माह दशो वत इति होमेष्वमंत्र इत्येके संस्कारास्त्रीणामहोमकास्तु स्त्री
 स्थुरिति स्मृत्यर्थसारे होमोनेति हति कृतं अथ विद्यारंभः मदनरत्नेन सिंहः शुभ
 रस्त्री कृतिं कुर्यात्प्राते पंचमहायने उत्तरायणे सूर्ये कुंभमासं विवर्जयेत् दीपिका
 यां वर्षयज्ञं न्यके काले यद्वैरिक्तांशानि कुजं अनध्यायान् विना नत्वा देवं ग्रथस्त
 तंगुरुं श्रीधरः हस्ताक्षित्य समीरमित्रपुरजित्योष्माक्षिचित्राच्युते श्वाराकर्षरादिना
 दयाहिते राशौ स्थिरे चोभये पक्षे सूर्या निराकरे प्रतिपदे रिक्तां विहायाष्टमी वद्वी
 मशुद्धभाजि भवने प्रोक्ता क्षरस्त्री कृतिः विष्णुधर्मीतरे यजयित्वा हरितं कर्माति

नि.सिं.
१७२

१७२

यादेवीसरस्वती स्वविद्यासत्रकारांश्च स्वाविद्याच विशेषतः रात्रेष्वामेव देवानां ना
न्मातृजुदुयाद्यन्ते दक्षिणमभिर्दिजेन्द्राणां कर्तव्यं चात्र एजनमिति अथ धनुर्विद्या
दीपिकाकायां अदिनिगुरुयमार्कस्वान्तिचिजान्तिपिअध्वरिवसस्स लेखिंदुभागा
त्यभेषु शनिराशिबुधवारविष्णुवोधेविषोषेसुसमयतिथियोगेचाय विद्याप्रदानं
अथानुपनीतस्य विशेषः गौतमः प्रागुपनयनात्कामचरवादभक्षा इति भक्षणात्
शुनादेरपि इति हरदत्तः अथ रात्रे हस्तशान्तातपः शिशोरभ्युक्षणां प्रोक्ते वालस्याचमे
नं स्मृतं रजस्वलादिसंस्पर्शे स्नानमेव कुमारके प्राक् चूडाकरणदालप्रागन्नप्राण
नाच्छिष्टः कुमारकस्तु वितेयोषावर्णमौजीनिबंधनं आयस्तं वापि अन्नप्राशना
त्पुनो भवत्या संवत्सरादित्येके इति गौतमोऽपि न तदप्यस्य रीनादौ रोचं तस्या
नुपनीतस्य चंडालादिस्थे स्याथि स्य रान्न स्नाने इदं च षष्ठ्यवर्षात्प्राक् ऊर्ध्वं तस्मा
न भवत्येव वालस्य पंचमा द्दष्टा द्दष्टार्थे रोमाचरे इति स्मृतं तेः कामचारादिकेप्ये
वं उन्नेकादशवर्षस्य पंचवर्षात्परस्य च चरे हरः सहस्रैव प्रायश्चित्तं विष्णु द्वये अतो
वाल तस्यामा नापराधो न पातकमिति स्मृतेरिति हरदत्तः स्मृत्यर्थसारे प्येव
अथोपनयनं आश्रलायनः गभीरमेष्टमे वा द्वेपंचमे सप्तमे वा द्विजत्वं प्राप्नु
यादिप्रोवर्षे त्वेकादशे नृपः मनुः ब्रह्मचर्यं सकामस्य कार्यं विप्रस्य पंचमे रा

राम
१७२

172A

लोवलार्थिनः ब्रह्मेवैर्यस्यार्थार्थिनोऽष्टमे विहसुः ब्रह्मेऽधनकामस्य विद्याका
 मस्य सप्तमे अष्टमे सर्वकामस्य नवमेकांतिमिदतः प्रापस्तवः गर्भाष्टमे बुभ्रास्य
 तुमुपनयनपीतवद्रुचनं गर्भषष्टि गर्भसप्तमयोः प्राप्यैमिति सदरीभाष्ये कैचि
 त्तुविप्रस्यं नमन्यते प्रापस्तवः अथकाम्यानि सप्तमे ब्रह्मवचं सकाममष्टम आयुः का
 मं नवमेतेतस्कां मंदराममेवाथकाममेकादशे इन्द्रियकामं द्वादशे परकाममुपनये
 त् गौणकाममाह मनः आद्योऽराद्रास्यसावित्रीनातिवर्तते आद्या विराज्ञे
 बंधोराचेतुर्विराते विराः ज्योतिर्निबधे अग्रावाहुजावैर्यास्वावधेरुर्ध्वमद्यत
 अकृतोयनयाः सर्वसुखलाएव ते स्थिता गर्गः विप्रं वसंते भित्ति यं नि दाधे वैरं यद्यनांते
 ब्रूति नं विदध्यात् माघादिशुक्रातकपंचमासाः साधारणावसकलादिजानां हेमाद्रौ
 ज्योतिषे माघादिशुचमासेषु मौजीपंचसुरास्यते पारिजाते हस्तस्यतिः जवचापकुली
 रस्थे जीवोप्यशुभगोचरः अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु हस्तराते नजन्म
 धिष्मेन च जन्ममासेन जन्मकालीयदिनं विदध्यात् ज्येष्ठेन मासि प्रथमस्य स्नोस्त म
 यासताया अपिमंगलानि राजमातैः जातं दिनं दूषयते बशिष्ठोऽथ द्यौचमार्गी
 नित्यतंदरात्रिः जातस्य पक्षं किल भागुरिप्रशोभाः प्रशस्ताः खलु जन्ममासि जन्म
 मासेति यो भेदविपरितदलो सति कार्यमंगलमित्याहुर्गर्गभार्गवैरौ नका ज

नि.सिं.

१७३

173

तममासनिषेधेपिदिनानिदशवर्जयेत् अथभयजन्मादिवसाधुमास्युत्तिथयोपरं ।
गंधान्तरे ब्रूतेजन्मत्रिकादिस्थोजीवोपिष्टोर्चनात्सक्तत्वं शुभोत्तिकालेत्तुर्थाष्टम्यय
स्थोर्दिगुणार्चनात् शुद्धिर्नैवगुरोर्धस्यवर्षेप्राप्तेष्टमेयदि चैत्रेमीनगतेभानौतस्यो
पनयनंशुभं जन्मभादयमेसिंहेनीचेवाराशुभेगुरो मीनजीवंधःशुभः प्रोक्तश्चेज
मीनगतेरवौ नारदः बालस्यबलाहीनोपिरात्याजीवोबलप्रदः यथोक्तवत्सरेकार्थमा
नक्तैचोपनायनं रातिश्रागेवक्ष्यते ज्योतिर्निबंधेनसिंहः तृतीयायंचमीषष्टीदि
तीयाचापिसप्तमीयक्षयोःरुभयोश्चैवविशेषेणसप्तजिता धर्मकामोसितेयक्षो
क्तमैचप्रथमातथा शुक्लजयोदशीकेचिदिदंतिमुनयस्तथा टोडरानंदेशिष्टः
नैमित्तिकमनध्यायं कृष्णैचप्रतिपदिनं मेरुलावंधिनेशस्तं चोलेवेदवनेष्वपि
प्रशस्ताप्रतिपत्कृष्णेनारवापरसंयुता एतदतीतकालस्यार्जस्यवटोरुपनयन
विषयेप्रशस्ताप्रतिपत्कृष्णकदाचिच्छुभगेविधौ चंद्रेवलपुतेलग्नेवर्षाणामतिलं
चनेइति आसोक्तैरित्तेरित्याहुः एवंसप्तम्यपि तस्यागलग्रहत्वाक्तेः बहस्यतिः
शुक्लयक्षःशुभःप्रोक्तः कृष्णश्रात्यजिकेविना तथा मिथुनेसंस्थितेभानौज्येष्ठमा
सेनदोषकृत् मदनरत्नेनारदः विनर्तनावसंतेन कृष्णपक्षेगलग्रहे अपराद्धे
चोपनीतःपुनःसंस्कारमर्हति अपराद्धेधाभक्तदिनतृतीयाशयुक्तं तज्जे

राम
१७३

ववसेतेग लग्नो न दोषायेत्यर्थः नारदः कृष्णयक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादि दिनत्रये ज्योति
 र्निचतुष्कं च षष्ठ्या वेतेग लग्नः वशिष्ठः पापाराकगते चैवै प्ररिनीचास्थितेपि च
 अनध्याये चोपयनीतः पुनः संस्कारमर्हति अनध्यायस्य पूर्वपुस्तस्तवैवापरिहृति
 तवंधं विसर्गं च विचारं भनं कारयेत् राजमातैः प्रारंभानंतरं यत्र प्रत्यारंभो न सिध्य
 ति गर्गादि मुनयः सर्वे तमेवाहुर्गलग्नः ज्योतिर्निबंधे षष्ठ्या सच सर्वोऽप्युगम्यं
 तरादिषु अनध्यायं प्रकुर्वीत तथा सोपपदा स्वपि सोपपदा स्मृत्यर्थसारे सिता ज्येष्ठे
 द्वितीया च अश्विने दशमी सिता चतुर्थी द्वादशी माघे रैताः सोपपदाः स्मृताः एवं प्रदोषा
 दिवर्ज्यं प्रदोष स्वरूपमाह गोभिलः षष्ठी च द्वादशी चैव अर्द्धरात्रौ न नाडिका प्रदोष
 मिह कुर्वीत तृतीया तृतीयामिका ज्योतिर्निबंधे व्यासः याचैत्रवेराख सिता नृती
 यामाघस्य सप्तम्यथा फाल्गुनस्य कृष्णे तृतीयोपनये प्रसक्ताः प्रोक्ता भारद्वाज मुनी दु
 मुस्त्यैः पुत्राधिकृष्ण प्रतिपद्वतज्ञेयं यत्तत्तद्गार्ग्यः अनध्याये प्रकुर्वीत यस्तु नैमि
 त्तिको भवेत् सप्तमी माघशुक्ले तृतीया चाक्षया तथा बुधजये दुवारा अष्टम्या निब्र
 तवंधने इति तत्राप्यश्रितार्थोपनयनविषये स्याध्यायविषुजो घत्वा कृष्णप्रतिपदादयः
 प्रायश्चित्तनिमित्ताने मेरुवै कृतं तदानीं लावंधने मता इति तेनोक्तेरिति निर्णयामते
 कालादौ यद्यप्यप्यायेत पूर्वस्येत्तु का अनिरुक्तं परिदानं कालश्चेत्याह लायने

नि.सि.
१६४

174

न पुनरुपनयने कालानियम उक्तस्तथापि निमित्तानंतरमेव सः तदानीमकरणे तु
सर्वोक्तकालो ज्ञेयः प्रतिवेदसुपनयने कालानियम इति युक्तं। गर्गः गृहे रवींदोरव
निप्रकंपे वोक्तमोल्कायतनादिदोषे ब्रते दराहानिबंदं तितद्रुता सुयोदराहानिबंदं
कैचित् संकटे तु चंडेश्वरः दाहे दिशो चैव धारा प्रकंपे वज्रप्रपाते च विदारणे च केतो
तथोल्काशुक एव प्रपाते महेन कुर्यात्तत्र तमंगलानि तजैव वेदज्ञतोपनयने स्थाप्या
याध्ययने तथा नदीषोऽप्युवांसो मयदास्यध्ययने पिच हेमाद्रौ ज्योतिषे हस्तत्रये पु
ष्यधनिष्ठयोऽप्यौष्माश्वि सौम्यादिति विष्णुभेषु शस्तेति चोचंद्रबलेन युक्ते कार्योद्धिता
नां व्रतबंधमौक्षौ ज्योतिर्निबंधे नारदः श्रेष्ठान्यर्कत्रयान्ये ज्यचंद्रादित्युत्तरादि च वि
ष्णुत्रयाश्विमिजाज्वयोनिभान्मुपनायने बृहस्पतिः त्रिष्टनोरेषुरोहिण्याहस्ते मेजे च
वासवेत्याद्ये सौम्यपुनर्वसोऽरुद्रमंक्रमनं च न ज्योतिर्निबंधे पूवाहस्तत्रये सार्यश्रुति
मलेषु च चंद्रां यजुषां योष्ममेवाकादित्यपुष्यमृदुध्रुवैः सामगानां हरीणां कवस्युषो
नराश्विनैः धनिष्ठादिति मेवाकादित्यपुष्यमृदुध्रुवैः सामगानां हरीणां कवस्युषो
पुनर्वसुनिषेधेति ताराचंद्रात्कलेषु ग्रहाकेषु भेषु पि पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः
संस्कारमर्हति ज्योतिर्निबंधे नारदः सर्वेषां जीवशुक्रजवाराप्रोक्ता ब्रते शुभाः चं
द्रार्कौ मध्यमौ ज्ञेयो सामवाङ्मजयोः कजः शारवाधियतिवारश्च शारवाधियचलंत

राम
१६४

या सखाधिपति लग्नं डलमंत्रियं ब्रते शारवाधिपाश्वरत्नसंग्रहं जगत्पर्व
 सामयजुषामधिपाश्वरत्नसंग्रहं जगत्पर्व
 शां चंद्रातिपरिजाते हस्तस्यतिः बह्वृचानां गुप्तो वीरेयजुर्वेदे जुषां बुधे सामगानां
 धरास्तनोरथर्वविदुषां रवेः अत्र लग्नमध्यादिदेवज्ञेभ्यो ज्ञेयं विस्तारभयात्रोच्य
 ते ललः ब्रह्मेहि पूर्वसंध्यायां वारिदो यदि गर्जति तद्दिने स्यादन्नध्यायो ब्रतं तत्र विव
 र्जयेत् ज्योतिर्निबंधे नां दोषं दं कृतं चेत् स्यादन्नध्यायस्त्वकालिकः तदोपनयनकार्यं
 वेदार्भनकारयेत् एतच्च कृचातिरिक्तानां ते वा तद्दिने वेदार्भभावात् अतस्ते वा
 मुपनयनं न भवत्येव एतच्च प्रातः स्तुतिं सायं स्तुतिं तु दिवे च चरुं श्रययित्वा सा
 यं साध्योत्तरं होमं कुर्यात् न संध्या गर्जिते काले न हस्तमुत्पातदूषिते ब्रह्मोदनं प
 न्नेदं गतो पक्वं चेन्नैव ज्ञेते ब्रह्मोदनं पक्वं दग्धं नोपक्वमन्नं न डध्यतीति संग्रहोक्तेरि
 ति प्रयोगरत्ने महचरणाः अत्र शांतिरप्युक्तान् सिंहप्रसादे ब्रह्मोदनविधेः स
 र्वं प्रदोषे गर्जते यदि तदा विघ्नकरं ते यं बटोरध्वपनस्य तत् तस्य शांतिप्रकार उच्य
 ते रास्त्रानुसारतः प्रधानं वायसं साज्यं द्रव्यं शांति यजौ भवेत् स्तुतं हस्तस्य ते वि
 द्वां पठेत् तदा विघ्नद्वये गायत्री चैव मंत्रः स्यात् प्रायश्चित्तं तु सूर्ये वा धेनुं सवत्स
 का दद्यादाचार्या यययसिनी ब्राह्मणान् भोजयेत् स्यात्कृतो ब्रह्मोदनं चरेत् उच्य

नि

नि.सि.
१७५

175

नयनेचाधिकारिणः साधवीयेहृदमनुक्ताः पितापितामहोभ्राताज्ञातयोऽगोत्र
जाग्रजाः उपायनेधिकारी स्यात्पूर्वाभावेपरः परः प्रयोगरतौ पितृपौत्रनयेत्युक्तं तद
भावेपितुः पिता तदभावेपितुर्भाता तदभावेपितृसोदरः पितृति विप्रपरं नक्षत्रियादेः
तेषां पुरोहित एव उपनयनस्य दृष्ट्या यत्वात् तेषां चाध्ययनेनधिकारात् अत्रापितृस्य
ज्येष्ठभ्राजभावेऽधिकारः असंस्कृतास्तसंस्कार्याभ्रातृभिः पूर्वसंस्कृतैरेति यातुव
ल्योक्तैः मानसजोदोषेत्तु प्रागुक्तं अथर्ववैदिककादीनां चिरोक्तः प्रयोगधारजाते ज्ञा
त्वे ब्राह्मणं ब्राह्मणज्ञानो ब्राह्मणः स इति श्रुतिः तस्माच्चरंवैदिकविरक्तवामन
पंगुषु जडगददोगार्ते अङ्गगविकलांगिष्ठमतोन्मत्तैश्चैव कुर्यात्तैश्चैव निरंद्रियै
धत्तपुंस्त्वैव चैतेषु संस्कारास्तु यथोचितं मतोन्मत्तैश्चैव निरंद्रियैश्चैव
कर्मस्य नधिकाराद्यपानित्यं नास्ति चैतयोः तदपत्यं च संस्कार्यमपरेत्याहु रन्यथा सं
स्कारमंत्रहोमादीन् करोत्याचार्य एव तु उपनयेनाश्रयविधिबदाचार्यः स्वसमीपतः
श्रान्तीयाग्निसमीपे वा सावित्री स्थिरमवाजयेत् कन्यास्वीकरणादन्यत्सर्वं वि
प्रेणकारयेत् एवमेतद्विजैर्जातौ संस्कार्यौ कुंडगाकलकाविति स्मृत्यर्थं सारं
येवं कुंडगाकयोः संस्कार्यत्वं आदे निषेधश्च भोजनपुत्रविराजः अन्यस्यपि वि
वासेषु विधिस्तति इति वचनादब्राह्मणेष्वप्युपनयनाद्यप्राप्तेः इत्यर्थः गा

रा.स.
१७५

175A

अथ देशश्चोत्तरतोमेः कार्यः उपरेणगनिमुपविशतः प्रहसुरवश्चाद्यैः प्रत्यङ्गुरव
इतरोर्ध्वदिशोऽतिशयं स्वाय नस्तजोक्तैः यद्यकात्यायनेनाप्यास्मैसावित्रीमन्त्रादोत्तरतो
मेः प्रत्यङ्गुरवायेत्युक्तादक्षिणस्तिष्ठ प्राणीनाएवैकेऽतिविकल्पउक्तस्तथापि कु
तीयानामेव सः बहुचान्नात्तरतएववेदैक्यात् भिक्षायां विशेषमाहकात्यायने
मातरमेवाग्रेभिसेत पाराशरमाधवीये मातरं वास्वसारव्याप्तुर्वाभगिनीनिजां
भिसेत भिक्षाप्रथमं याचैन्नविमानयेत् अथ संस्कारलोपे रौनकः प्रारभ्या
धानमाचौलात्कालेनीतेन कर्मणं आहृत्याज्यं ससंस्कृत्य दुत्वा कर्म यथाक्रमं एते
ष्वेकैकलोपेन पादकृष्टं समाचरेत् चडाया अर्धकृष्टं स्यादापदित्वेव मीरितं अ
नायदिसर्वत्र द्विगुणं द्विगुणं चरेत् पारजाते कात्यायनः लुप्ते कर्मणि सर्वत्र प्राप्ति
नं विधीयते प्राप्तिने कृते यश्चात् लुप्तं कर्म समाचरेत् स्मृत्यर्थसारे चैवं कारि
कायां तु प्रायश्चित्ते कृते नीते कर्म कृता कृतमित्युक्तं प्रायश्चित्ते कृते यश्चादनीतमपि
कर्म वै कार्यमित्येकं आचार्या न्यत्यन्ये तु विप्रश्चिन इति त्रिकांशमंशेन तु काला
तीतेषु कार्येषु प्राप्ते च त्वपरेषु च कालातीतानि कृत्वेव विदध्या इतराणि तु इत्युक्तं
तत्र सर्वेषां तत्रेण नीदो अहं कुर्यात् देशकालकर्मैक्यात् गणेशः क्रियमाण
नां मातृणां यजनं सक्तत् सक्तदेवभवेच्छाद्रुमादौ नष्टयगादिद्विनिधं दोगपरि

य

नि.सि.
१७६

176

शिष्टात् एतद्ब्रह्म नो मय त्यानां पुगयत्संस्कारकरणा विषयमिति बोधदेवः अतीतसंस्का
राणां पुगयत्कारणोऽत्यये तत्रापि चोत्तस्य उपनीत्यासदेति पक्षे उपनीतिदिने एवानु
ष्ठानेन पूर्वदिने सहस्यस्य दिवसे केषु सन्निकृष्टतरत्वात् सदा चारो व्येवं उपनीतिदि
ने मध्याह्नसंध्या साह पारजाते जैमिनिः पावद्वयोपदेशरुक्ता वत्संध्यादिकं च न
च ततो मध्याह्नसंध्यादिसर्वकर्म समाचरेत् इति ब्रह्मगायत्री यत्तु वचनं उपायने तु क
त्रैवं सायं संध्युपासने आरंभे दुस्य संतु मध्याह्ने तु परेहनीति तस्माद्यंतरविषयमि
ति पारजातः विकल्प इति युक्तं यस्यामः उपनयनाग्निस्तिरात्रंधार्यः अहमेतमग्निं धा
रयंतीति त्यापस्तवोक्तेः ब्रह्मयज्ञे विशेषमाह तत्रैव जैमिनिः अनुयाक्तदेवस्य कर्त
व्यो ब्रह्मयज्ञकः वेदस्थाने तु सावित्री गृह्यते तत्समायत इतिः सुरिष्वाणा हिंसनभास्क
रा लोकनाशी लपरिवादादि वर्जयेत् मनुः अभ्यंगमंजनं चाक्षररूपानक्षत्रधारणं व
र्जयेत् इति प्रकृतं पारजाते कौर्मः नादरी चैव वीक्षेत नाचरेदंत धावनं गुरुधिष्टं भेषजा
र्थं प्रपुंजीत न कामतः एतन्निधिमध्यादि विषया अन्यस्य गुरुधिष्टस्य सर्वदा प्राप्तेः स
चेद्वाधीप्सीत कामं गुरोरुधिष्टं भेषजार्थं सर्वं प्रश्नीयादिति वशिष्टोक्तेः ज्येष्ठभ्रातुरि
त्यपि ज्ञेयं पितुर्ज्येष्ठस्य च भ्रातुरुधिष्टं भाज्यामित्यापस्तंबोक्तेः गुरुपुत्रे तु सप्तम्यंतरे उ
क्तं गुरुवद्गुरुपुत्रः स्यादन्यत्रोधिष्टं भोजनान्नं प्रचेताः तां ब्रह्माभ्यंजनं चैव कां स्य

राम
१७६

पात्रे च भोजनं यत्तिष्ठन्नस्त्रचारी च विधवा च विवर्जयेत् यमः मेखलामग्निनंदं
 मुपनीतं च नित्यशः कौपीनं कटिस्त्रचं च त्रसचारी तु धारयेत् अग्नीधनं भैक्षचर्यमधः रा
 व्यंगुरो हितं कुर्यादिति शेषः मेखलामाहाश्रलायनः तेषां मेखला मोंजी ब्राह्मणस्य
 धनं ज्ञात्वा क्षत्रियस्य मोंवी वैश्यस्येति आचार्यः त्रिहस्ता मेखला कार्या त्रिवारं स्यात्समा
 वृता तद्वंशस्य स्वयः कार्या पंचचा सप्तवायुनः अत्र प्रवरं संख्यया नियम इति सूत्राः
 अथ दंडः मनुः ब्राह्मणे वैत्तपालारौ क्षत्रियो वाट् रवाट् रो घैष्यसौंडवरो वैरेण
 दंजनं हति धर्मतः एषामभावे गोतमः यद्विधो वा सर्वेषां मूर्ध्न्यललाटना सा प्रामा
 ण्य इति अग्निनमाहाश्रलायनः अस्तेन वा ससा संवीते मेणे येन वाजिने ब्राह्म
 णं रौरवेण क्षत्रियमाजेन वैश्येति यद्यप्येते यशस्वेन मृगिचर्मैवोच्यते एण्य
 ट्त्रितियाणि निस्मृतेः एण्यमेण्यश्चर्मा घमेण्येण्यसु ने जिह्मिन्मरकोराः
 च तथापि कृष्णरुक्ता न्याजिनानीति शंखोक्तैः सर्वेषां वारोरवामिति यमोक्तै
 श्च मृगचर्मण्यसह विकल्पोत्तेयः वस्तुजिनयोक्तविकल्पः कार्या संवां चिह्नत
 मिति गौतमोक्तैः अथ यज्ञोपवीतं मनुः कार्या समुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्वं सतं
 त्रिहस्तं पारजाते देवलः कार्या सक्षौमगोवालशणवत्पत्राणादिकं यथा संभ

वतो धार्यमुपवीते द्विजातिभिः तत्र वतंतु वतार्य सावित्र्या त्रिगुणं कुर्यान्नवसूत्रं तत्र
 अवेत इति ते नैवोक्तेः मनुः यंदोगपरसिद्धे त्रिषु हर्षवतं कार्यं तत्र प्रमथेत तत्र त्रिषु
 तंचोपवीते स्यात्तस्यैको गंधिरिष्यते ऊर्ध्वं तत्र दक्षिण करसूत्रं कृत्वा बलितं वामावर्त्ति
 बलितं त्रिगुणं कृत्वा दक्षिणावर्त्ति बलितं कार्यं स एव कस्तुभः एवं त्रितंतु कर्मिन्त्यर्थः
 कात्यायनः पृष्ठदेशे च नाभ्यां च धृतं यद्विद्वत्ते कटिं तद्धार्यमुपवीते स्यान्नानि लंबेन चो
 धितं । वशिष्ठः नाभेरूर्ध्वमन्वायुष्यमधो नाभेरुपक्षयः तस्मान्नाभिसमं कुर्यात्
 उपवीतं विचक्षणः पारिजाते देवलः उपवीतं च दोरकं हेतये नरयोस्मृते एकमेव प्र
 तीनां स्यादिति शास्त्रस्य निर्णयः स एव बहूनि वायुः कामस्य तत्र मंत्रमाह स एव य
 तोपवीतमिति वाक्याहत्यावापिधारयेत् हेमाद्रौ यतोपवीते द्वे धार्ये श्रोते स्मार्त्तैः क
 र्माणि तृतीयमुत्तरैर्यार्थेन स्वाभावेन दिव्यते देवलः सावित्र्या दशकृत्यो द्विर्मंत्रिनाभि
 स्तुडक्षयेत् विधित्वं वाप्यधोपातं भुक्तानिर्मृतिमुत्सृजेत् मनुः मेखला मजिनं देउमु
 पवीतं कमंडलुं असुप्राप्य चिनद्यानि गृहीतान्यानि मंत्रमः श्रयेत् कोपो प्रायश्चित्तं मनुः
 अकृत्या भेक्षे चरणमसमिधं च पादकं अनातुरः स प्रराजमवकीर्णं ब्रूते चरेत् अम
 त्या अर्घ्यं दित्या गेत्तु याज्ञवल्करः नैऋत्या कार्यं तत्कालं स प्रराजमनातुरः कामाव
 कीर्णं इत्याभ्यां जुहुयाद्वा जुहुयाद्वा जुतिष्ये उपस्थानततः कुर्यात्समासिंचनेन तत्र मंत्रा

177A

स्तुमिताभरायो सक्तलोयेतु ऋग्विधाने मानस्तोके जयेन्मंत्रे शतं संखं शिवालये अ
 ग्निकार्यविनाभुंक्तेन पापं व्रतचारिणः स्मृत्यर्थं सारेतु संध्याग्निकार्ययोर्लोये स्नात्वा
 सहस्रं जयः भिक्षालोये व्रतं अभ्यासे द्विगुणं पुनः संस्कारश्चेत्युक्तं अपरांके संवत्तः
 यः संध्यां चैव नोस्ते अग्निकार्यं यथाविधि गायम्यसहस्रं तु जयेत्स्नात्वा समाहितः पारि
 जाते शतातपः व्रतचारी तु योऽग्नीयान्मधुमांसं तथैव च प्राजापत्यं चरेत्तद्धं व्रतरो समाप्तं व
 येत् ऋग्विधाने तं चो धिया जयेन्मंत्रं लक्षं चैव शिवालये व्रतचारी स्वधर्मं मुन्यनं च
 स्मरन्मेति तत्र स्त्रीसंगे तु मनुः श्रवकरिणी तु कालेन गर्दभेन चतुष्यथे स्थालीपाक
 विधानेन यजेद्देवैर्निकृतिं निशि विस्तरस्तुमिताभरायो जपेः उपवीतनाशे तु हंसैः म
 नो व्रतयतीभिस्तु तस्य आज्याहुती हुत्वा पुनः प्रतीयात् तत्रैव मरीचिः व्रतसंविनाभुं
 क्ते चिण्मंत्रं कुरुते यवा गायम्यसहस्रेण प्राणायामेन मुष्यति अभिवादनप्रत्य
 भिवादनादी विरोधः स्मृत्यर्थं सारपारजातादौ ज्ञेयः यमः ज्ञायानधिकनीयां संसं
 ध्यायामाभिवादयेत् विना शिष्यं च पुत्रं च दौहित्रं इहितिः पतिं अथ पुनरपिनयनं
 पारजाते शतातपः लशुनं गृहजं न जग्ध्वा पालां तु च तथा मुनं उष्टमानुषके भामि
 तसभी क्षीरभोजनोत्तुपायनं कर्षान्नं तप्तं कर्षं च रेन्मुदुरिति हैमाद्रौ ब्रह्ममनुः
 जीवनं यदि समागच्छेद्व्रतं के मे निमज्ज्य च उद्धृत्य स्नाय पित्या स्पृजात्तर्कमादिकार

येन तेजोवयासे तेनशय्याप्रतिगाहीपुनः संस्कारमर्हति चंद्रिकायां वौधायनः सिं
 धुसौवीरसौराष्ट्रान् तथा प्रत्यंतवासिनः अंगवंगकलिंगां प्रगत्वा संस्कारमर्हति
 मनुः अज्ञानात्प्राणविरामं संसृष्टमेव च पुनः संस्कारमर्हति जयोवर्णादि
 जातयः मिताक्षरायां पाराशरः यः प्रवर्तितो विप्रः प्रज्ज्यातो विनिर्गतः अनाराक
 निवृत्तप्रगार्हस्थ्यं चेष्टिकोर्षति सचरेत्रीणि कृष्णानि त्रीणि चाद्रायणानि च
 जातिकर्मादिभिः सर्वे संस्कृतश्रद्धिमाप्नुयात् तथा पिजादिव्यतिरेकेण ब्रह्म
 चारिणः तेन कर्मकरणे पुनरुपनयनमित्यपराकादयः त्रिस्थलीसेनौ कर्मनाश
 ब्रह्मस्य र्शान् करतो यावेलघनान् गंडकीयाद्रुतकण्ठान् पुनः संस्कारमर्हति नैडास्त
 करतो याजलस्य र्शान् कर्मनाशविलघनादिति तत्र दानधर्मेषु करतो यास्त्राने
 द्राशस्योक्तेः करतो ये सदान्तिरे सतिष्ठेति विष्णुते आह्लाचयसिधौ एणां पापं हरकरो
 द्वे इति स्मृतिर्दय ए चंद्रकीलिरिव नं स्नानमंजाच्च पराशरः अजिनं मेखलादंजो मे
 अयं च याज्ञानि च निवर्त्तते द्विजातीनां पुनः संस्कारकर्मणि हरदत्तस्त यः एकं च
 दमधीत्यान्यवेदमध्येतु मिधतिः कस्य पुनरुपनयनं तेन प्रतिवेदमुपनयनं कर्त्तव्य
 मित्याह अन्ते नैतन्मन्त्रं सर्वेभ्यो वै वेदेभ्यः सा विष्णुश्च तस्यापस्तंबोक्तेः तदि
 धिवारिकायां वेदान्तमधीत्येव ऋग्वेदं जन्मधीयते उपनीतिरियं तेषामलंकर

एवञ्जित तद्वैतद्वयनीतस्य प्रायश्चित्तं यदा भवेत् कृता कृतं च वचनं मेधाजननमेव च
मेधाजननसद्भावेन तच्च यदा भवेद्दिह प्रवचनीयं कृतं यदा भवेद्द्वयं न हि परिदानं न कार्यं स्या
त्रिमितानं तत्र त्विदं सर्वं स्यात्वाचये स्यात्तत्सविज्ञानं महरति यत्तद्वैतः द्विविधास्ति
यः ब्रह्मवादिन्यः सद्यो बध्नात् तज्जब्रह्मवादिनां सपनयनमगती धनं वेदाध्ययनं स्वर्ग
देवभैक्ष्यचर्येति सद्यो बध्नात् सपनयनं कृत्वा विचारः कार्य इति तत्र युगांतरवि
षयं पुरा कल्पे बुनारीणां मौंजीबंधनमिष्यते अध्यापनं च वेदानां सावित्रीवाचनं तथे
ति यमोक्तेः अध्यानाध्यायपारजाते हारीतः प्रतिपत्युच्यते दर्शयामि यमोक्तं यवलोहयोः सोम
धावेद्यशव्यानां धापीतकदाचनः नारदः अयने विपुने चैव शयने बोधने हरेः अनध्या
यस्तु कर्त्तव्यं यथा दिव्यपुत्राश्च निर्णयामते चात्तमस्य द्वितीयासु मन्वादिषु अनध्या
यस्तु कर्त्तव्यं यथा च सोमपदातिथिः गर्गः अचाक्षुर्जनपश्येत् याद्वितीया विधुक्षये चात्त
मास द्वितीयास्ता प्रवदंति मनीषिणः स्मृत्यर्थं सारेषु आवादीकारिणी कौफालादुनीसमी
पस्य द्वितीयासु चेति मनुः उपाकर्त्तव्यं चोत्सर्गं त्रिरात्रं क्षपणं स्मृतं प्रष्टुकासत्त्वहो
रात्रमृत्यं तासु च राजिष्ठिति उत्सर्गं तु मनुः कथं एष होरात्राभ्यां प्रष्टुकासत्त्वहो
रात्रे प्रष्टुकासत्त्वेन सप्तम्यादिजयं जयंति स्म प्रष्टुकासत्त्वहोरात्रमृत्यं तासु च राजिष्ठिति
मोक्तैः अतश्च तस्मिन् सौरक्षत्वं तासु चोद्गाहं तस्य पर्वतं नैव निषेधसिद्धेति सच जना
यणः एते नित्याने मित्रकाव्याह याज्ञवल्क्यः अहं प्रेते ह्यनध्यायः शिष्यवर्तिगुरवेधु

छ उपाकर्मणि चोत्सर्गस्वरावाश्रये तथा संध्यागर्जितनिर्घातभक्तं योत्की
 निपातने समाप्य वेदं छु निशमाराण्यकमधीत्य च पंचदश्यां चतुर्दश्यां मष्टम्यां रा।
 रुस्तके ऋतुसंधिषु भुक्त्वावाश्रयिकं प्रतिगच्छ च यशुमंडूकनकुलत्वादिमा
 धारमृषकैः कृतं नरेत्त्वहोराजं कृतं धर्मविदो विदुः केचिद्देशे यावत्तद्दिननाडिकाः।
 तावदेव त्वनध्यापो नतमिष्टादिनांतरे प्रदोषं त्वाहप्रजापतिः षष्ठीचद्वादशीचैव अर्धं
 रात्रौ न नाडिकाः प्रदोषे न त्वधीषीत न त्तीनवनाडिका निर्णयामृतैर्गरीः रात्रौ यामत्रया
 दवाक सप्तमी वात्रयोदशी प्रदोषसत्तु विज्ञेयः सर्वविद्याविगर्हितः रात्रौ न वसुनाडी छुच
 त्थी यदि दृश्यति प्रदोषः सत्तु विज्ञेयो वेदाध्ययनगर्हितः कोर्मि अनध्यायस्तु नो गे
 बुनेति हासपुराणयोः न धर्मशास्त्रे न्ये छुपत्राण्येता निवर्जयेत् रौनकः नित्ये जयेत्
 काम्ये च क्रतौ पारायणे पि नानाध्यायोस्ति चेदानां ग्रहणे स्मृतः इत्यनध्यायाः अथ
 महनाम्नादि ज्ञतं श्रीधरः नित्ये न भवति राशवर्गोदयनिरीक्षणं चौलवर्त्समारब्धान्तं
 सगोदनव्रते छुच एतेषां लोपे रौनकः ज्ञती निविधिना कृत्वा स्वरावाध्यायने चरेत्
 अकृत्वाभ्यसने येन सपायी विधिज्ञातकः प्रत्येकं कृद्मेकैकं चरित्वा ज्याकृती शतं।
 कृत्वा चैव तु गायत्र्या द्वादिना ह रौनकः स्मृत्यर्थं सारे तु त्रीन्यद्वादशावत्कृत्वा न
 कृत्वा पुनर्व्रतं चरेदित्युक्तं अथ समावर्तनं सुरेश्वरः भौमभानुजयोर्वारेन भवति

179A.

राज्यायते तद्यो ध्ये ग्रहणे मुनिशोकावधिग्रस्तास्ते त्रिहस्त्युक्तं प्राक् स्मृत्यर्थसा
रेतु राजोगहेतिसोराजीः दिवावश्रुतं सतसोरः भुक्तेषु तसवविषयं ऊर्ध्वो
जनाउत्सवेगोतमोक्तैः आदिकमहेकोद्विष्टमिन्नं तत्रतुमह इतिमनुः स्मृत्यर्थसारेचै
वं यत्तुपश्चाद्येतरायोअहमुपवासोविप्रवासश्चेतिगोतमोक्तं तत्प्रयमाध्ययने पातव
त्वचः स्वक्रोष्टुगर्दभंभालकसामवाणनैनिश्रुते अमेध्यरावश्रुतांत्यस्मृतातयति
तांतिके देशेषुवाद्यैवात्मनिचविद्युत्तनितसंश्रवे भुक्ताईपारिणरंभोतरर्धरात्रेनिमा
रुते पांसुप्रवर्धेदिग्धाहेसंध्यानीहारभीतषु धावतः सतिगंधेचशिष्टेचगृहमागते स्व
रोष्ट्रयानयानहस्त्यश्रुनोत्तक्षेरेणरोहणे सप्तजिंरादनध्यायानेतांतात्कालिकानूविडःवा
एरिवंधः राततेतुवीरोतिहरदत्तः अमेध्यास्नातकादयस्तनितंगर्जः वर्धतेन्यत्रगर्जस्रष्टि
विद्युतांयोगयथे आकालिकः वर्धसतात्कालिकः इतिनारायणः संध्यागर्जेतुक्षारीतः
सयंसंध्यास्तनितेरात्रिः प्रातः संध्यास्तनिते होरात्रं राजौविद्युत्यपररात्रवधि विद्युतिन
तंचायरराजैदितिगोतमोक्तैः दिनतृतीयंस्ततरंतुविद्युतिसर्वरात्रमित्याहएव त्रिभा
गादिप्रवृत्तौसर्वमिति अर्धत्रयमध्ययामद्वयेइति विज्ञानेश्वरः मध्यदंडचतुष्टयेइति
निर्णयामते मनुः नविवादेनकलहेनसेनायानसंगमः नभुक्तमात्रेनाजीर्णंन

180

वमित्वानस्तक सधिरचसतेगात्राश्च सेराचपरिभते कोमे सेषातकस्यद्याया
 यंशाल्मलेर्मधुकस्यच कदाचिदपिनाध्येयंकोविदारकपिस्ययोः मन्त्रः शयानः
 पौठ्यादश्रुत्वाचैवावसविषकां नाधीपीतामिषंजग्धास्तनकान्नाद्यमेवच पौठ्या
 दःपादोपरिपाददाता आसनारूढपौदौवेति हरदत्तः सोपपदास्वपिप्रागुक्तं स्मृत्यर्थ
 सारे अवणाद्वादशीमहाभरणेयाः प्रेतद्वितीयायास्थसमूह्यामाकारोरावदर्शनेचाहो
 रात्रं असपिंडेगुरौजिह्वात्रात्रं आचार्येउपाध्ययेचयक्षिणी आचार्यभार्यापुत्रशिष्ये
 सहोरात्रं अग्न्युत्पातेगोविप्रमृतौत्रिरात्रं अयनेविषुवेचयक्षिणी अकालसद्यो
 च आरण्यमाज्जारसर्पनकुपंचनस्वादेरंतरामनेत्रिशत्रं आरण्यअमृगालादिवा
 नररजकादौद्वादशरात्रं खरवराहोष्ट्रचंडालसत्तिकोदक्याशवादौमासं गोगवया
 जानास्तिकादौजिमासं शशमेघश्रुपाकादौषण्मासंगजगंडसारससिंहवाघ्रम
 महापयिस्ततघ्नादावक मनध्यायः शोभनदिनेचानध्यायः विवाहप्रतिष्ठाघापन
 दिष्टासमाप्तेः संगोत्राणामनध्यायः उदयेस्तमयेचापिमहूर्तत्रयगामियत् तद्दिनं
 तदहोरात्रं चानध्यायविडोविडुः केचिदाहुः क्वचिद्देशेयावतादिननाडिकाः ताव
 देवत्वनानध्यायो नतन्मिमेदिनांतरे प्रदोषंत्वाहप्रजापतिः षष्ठीचद्वादशीचैवअ
 र्धरात्रोननाडिकाः प्रदोशेनधीयीततत्तीनवनाडिका निर्णयामृततेगर्गः रात्रौ

रम
१८.

यामजयादवाक् सप्तमीवात्रयोदशी प्रदोषसवतुविज्ञेयः सर्वं विद्याविहितः रात्रौ
 नवसुतामीषु चतुर्थी यदि दृश्यते प्रदोषः सतुविज्ञेयो वेदाध्ययनागर्हितः कोर्म
 अनाध्यायस्तु नंगेष्टनेतिहासपुराणयोः नधर्मरात्रेष्टन्येषु पर्व एयेता निवर्जये
 त रौनकः नित्येजवेचकास्येचक्रतौ पारायणेपिच नानाध्यायोस्तिवेदानां गुरु
 एग्राहणे स्मृतः इत्यनध्यायाः अथ महामायादिज्ञाने श्रीधरः तिथिनक्षत्रवारी
 रावर्गेदयनिरीकां चैलवर्त्सनाख्याने संगोदानज्ञानेष्टच एतेषां लोपे रौनकः
 व्रती निविधिना कृत्वा स्वरावाध्ययनं चरेत् अकृत्वाभ्यस्यते येन सयापी विधि
 द्योतकः प्रत्येकं कृद्धमेकैकं चरित्वा ज्याकृतीशानं कृत्वा चैवतुगायत्र्या स्नायादित्या
 द रौनकः स्मृत्यर्थे सारे तु जीन्यद्वादशवक्त्रा कृत्वा पुनर्व्रतं चरेत् विष्णुं अथ
 समावर्त्तनं सुरेश्वरः भौमभानुजयोर्द्वारे नक्षत्रे च व्रतो दिने ताराचंद्रविष्णुद्वौ च
 स्यात्समावर्त्तनक्रिया वशिष्टः स्नानं मध्याह्नकाले तद्दोरायां कारयेत्कुंभं पूर्वा
 ह्नैतक भौवेतु कुर्यात् स्नानं यथाविधि सर्वज्ञतवो विवाहस्य तिष्ठ० त्राद्यदादक्षि
 णायने विवाहसादा समावर्त्तनमपि तजैव अन्यथोदगायने समावर्त्तनेऽनाश्रमीनेति
 येनेति विरोधः स्यादित्युक्तं सुदर्शनभाष्ये एतच्च व्रतचारिव्रतलोपे प्रायश्चित्तं कृ
 त्वायं तदाहवो धायनः रौचसं स्यादर्भभिक्षाग्निकार्यराहित्यकोपीनोपचीतमेव

नि.सिं.

१८१

181

३

लादंगजिनाधारण दिवास्यापधत्रपाडकास्त्रविधारणोद्वर्तनानुलेपनाजमहृत
नृत्यगीतवाद्यभिरतौत्रसचारकधृजयंचरेत्तमहाव्याहृतिहोमंयादित्रयोदशहोमं
चकुर्यात् समावर्त्तनोत्तरं पूर्वमृतानां त्रिरामारौचंकार्यं प्रादिष्टीर्ष्य नोदकं
कुर्यादाव्रतस्य समापनात् समाप्तेहृदकंदत्वा त्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति मन्त्रैः
प्रादिष्टीर्ष्यसचारीति विज्ञाने श्वरः त्रसचर्षेयदि कश्चिन्नमृतस्तदा त्रिरात्रमध्ये वि
विरुः कार्यो न्ययानेति सिध्यति जनने तु सत्यपिन त्रिरात्रं तत्रातिक्रान्तारौचाभाडु
दकंदत्वेति वचनञ्चेति दिक् त्नातकत्रतान्याह व्यासः यज्ञेयवीतद्वितयं सोदकं
चक्रमंडलु धौत्सी वममलेयादुकेचाय्युपानहौ रौक्तेचक्रं उलेवेदः कृत्तकौ
शनरवः शुचिः वेदोदर्मवदुः मनुः उपानहौ च वासश्च धृतमन्यैर्नधारयेत् उप
वीतमलंकारस्रजं करकमेव च अन्यान्यपि च ह्रस्वगृह्यस्मृत्यादिभ्यो ज्ञेयानि अथ
धुरिकाबंधः ज्योतिर्निबधेनारदः धुरिकाबंधनं वक्ष्ये नृपाणां प्राक्करग्रहात् विवा
होक्तेषु मासेषु शुक्लपक्षेप्यनस्तगे जीवे शुक्ले च भूयुत्रे चंद्रतारावलान्विते मौंजी
बंधर्क्षति दिवा दौ पियुक्लजवर्जितवासे सौ संग्रहे मृद्राणां राजपुत्राणां मौंज्यभा
वेस्वबंधने मौंजीबंधोक्तनिष्पादोकादौ भौमदिने दिने चिना अथ विवाहः यत्
वत्त्वयः अविष्णुतत्रसचर्षे लक्षणावासां शतरलक्षणे र्थुक्ता वाह्यानि कांशी १

राम
१८१

181A

रं उदौ प्रसिद्धानि अंतरायवैपिंडान् कृत्वेत्याश्रलायनोक्तानि मन्त्रः अस्य पिंडा
 चयामातुरसंगे जाचयापितः साप्रशस्ता द्विजातीनां तत्तत्कर्मणां शिष्यैषु ने ५ अस्य
 पिंडासापिंजरादितां तच्चैकवारीरावयवान्वयेन भवति एकस्य हि पिंडा मातृवारी
 रस्यावयवाः पुत्रपौत्रादिषु साक्षात्परया वाश्रुतौ शिष्यादिस्त्ये एतान् स्थिताः
 यद्यपि यस्याः यस्या सहभातयत्नीनां च परस्परं नैतत्संभवति तथाप्याधारत्वेनैकवारी
 रावयवान्वयोस्त्येव उपस्थिभिरस्थीनि इति मंत्रलिंगात् एकस्य हि पिंडा रारी रस्यावय
 वा पुत्रद्वारा ता स्वाहित इति विज्ञाने सरादयः वाचस्पतिः ५ चंद्रिका वरार्क मेधाति
 थिमाधवा दयस्तु एक पिंडा नाना क्रियान्वयित्वे सापिंड्ये लेपभाजप्रतर्थाद्योपि त्रा
 द्याः पिंडभागीनः पिंडदः सप्तमस्तोत्रं पिंड्यं साप्रयोरुषति मात्स्याकैः न च यित् व्यादि
 क्षेत्तत्रास्ति इति वाच्यं तत्कर्तृकश्राद्धे देवतैक्येन तत्सत्त्वात् देवदत्तकर्तृकश्राद्धे हि
 ये देवता भूतास्तोत्रं मध्येयः कश्चिदन्यकर्तृकश्राद्धे नु प्रविशति तेष्वासापिंज्रं तद्वा
 र्याणां मपि भर्तृकर्तृकश्राद्धे सहाधिकारित्वेन तदन्वयात् एवमेव सागलाभर्तुः
 पिंडे गोत्रे च स्तनके रिति स्मृतेषु प्रकृतीनां च वैराग्यवत्त्वात् तस्य सापिंज्रनिमित्तत्वे मा
 नाभावात् न च मातुलादिक्षेत्तत्रास्तीति वाच्यं माना महारूपदेवतैक्यात् ननु गुरुशि
 ष्यादेरपि श्राद्धदेवतात्वात् सापिंड्यत्वे स्यात् किं बहुना सर्वाभावे तु नृपतिः कारयेत्

नि.सिं.
१८२

182

स्परिवध्यत इति मार्कण्डेयपुराणादौ ज्योतिष्शास्त्रकृत्वात् सायिंज्यप्रसंगाः सत्यं पंचमा
त्सप्तमाहर्ध्वमातृतस्तथेति याज्ञवल्क्यवचनेन मातापितृसंबंधावतत्सत्वात् ऊर्द्ध
सायिंज्यनिवर्तन इति शेषः ननु पंचमत्वाद्यत्र नियस्यते जनमातृति इत्यादिवाक्यभेदा
त् न मैवं मातृकुले पंचमत्वपितृकुले सप्तमत्वस्य बोधने तुल्यत्वात् यौरुख्यत्वाद्
दोष इति चेत् तुल्यमुभयत्रापि अन्यकृत् के राज्ञस्तपित्वाणां नादेव नत्वाभावात्
अ किंच अवयवान्यप्यक्षेपथायोगरूपापरिहारस्तथेहापितेन मातृकुले पितृ
कुले कपिंडानक्रियान्वायित्वं सायिंज्यमित्याहुः तै नैकस्य विप्रादेः षट्पुत्रादयश्चेतव
त्सपिंडा भवंति अत्र केचिदभयतः सपिंज्यनिवृत्तावेवोदाहो नान्यथेत्याहुः अद्विचिं
तामणिवाचस्पति हरदत्तदयस्तु सगोत्रवत्सायिंज्यस्य सप्रतियोगा कत्वेन संयोग
वदुभयनिरूप्यत्वादेकतो निवृत्तावन्यतो निवृत्तेरावर्यकत्वान्मलपुरुषमारभ्या
ष्टमो वरः मलपुरुषमारभ्य द्वितीया तृतीयादिकामुद्धेदित्याहुः शिष्टास्तु नवध
वरयोस्तानः सायिंज्य किं न कृत् स्थ संतति त्वात्तत्सायिंज्ये नैव अतो षमवरं प्रति
कन्यया असायिंज्ये पिकन्यायाः कृत् स्थ न सायिंज्यात्तत्संततिः स्यत्वाद्हरस्तो प्र
तिसपिंड एवेत्यविवाहः सायिंज्यासायिंज्ययोः प्रतियोगिभेदेनाविरोधादित्याहुः
इदमेव पुनः अशौचेऽप्येव सायिंज्ये तेषं यत्र तु मध्ये विधिन्मपि सायिंज्यं मंडुक

राम
१८२

182A

सुतिवत् पुनः सिद्धिं जसापिं ज्योर्दोषः रजवर्तते यथा कूटस्थात्पंचम्योः कन्ययोः पुत्रौ
 तत्र निवृत्तिः तदयत्ययोस्त्वनृत्तिस्तत्रापिन सपिं जसापिं ज्योर्दोषः संबंधभेदान्
 अत्र कूटस्थमाप्येकमाणा कार्या तदुक्तं बध्वावरस्यवातातः कूटस्थात्पंचम्योः
 प्रमः पंचमीचेत्तयोमाता तत्सापिं ज्योर्दोषः निवृत्त इति कूटस्थो मूलपुरुषः विस्वरूपनि
 बंधे एवमुक्तप्रकारेण पितृवंधुसप्तमात्र ऊर्ध्वमेव विवाह्यत्वं पंचमानर्हत्वं
 तः संतानोभिद्यते यस्मात्पुर्वजाडुभयजयतमादाय गणोद्दीमान् वरं यावच्च कन्य
 कां स्मृतितात्वेनारदः आसप्तमात्वं च समाचक्ष्वंधुभ्यः पितृमातृतः अविवाहासगो
 त्राच्च समानपुबरात्तथा अत्र बंधुभ्य इति पंचमी निर्देशात्पितुः पितृस्य सुपुत्रात्सप्तमी
 मातुः पितृस्य सुपुत्राच्च पंचमी मपि त्यजेत् एवमन्यवेधुसुतेषां तत्रापि विगोत्रात्ययेऽ
 द्वागपि विवाहं कुर्यात् वक्ष्यमाणवचनात् त्रिगोत्रगणनाद्यमातामहगोत्रापेक्ष
 यान्ति स्वापेक्षया अन्यथापितुः पितामहप्रसंग इति संबंधतत्त्वाद्येमेव संस्थाः
 दुहितुर्दोहित्री पुत्रीपरिणयास्यात् च आमातामहगोत्रापेक्षया तु जिगोत्रांतर्ग
 तेन विवाहप्रसंग इति संबंधतत्त्वाद्ये गोऽग्रंथाः संबंधविधेके मूलपाणिनिर
 प्याह पंचमात्सप्तमादद्वागपि त्रिगोत्रांतरित्वा विवाहा असंध्याभवेन्मातुः

183

पिंडेनैवोदकेन वा स विवाहादिजातीनां त्रिगोत्रांतरिजावधेति स ह न म
नूक्तेः सचिकर्षेपि कर्त्तव्यं त्रिगोत्रात्परतो यदीति देवलोकोच्चेति एतच्च द
क्षिणात्यानमन्ते यत्तु वशिष्ठः पंचमी सप्तमी चैव मातृतः पितृतस्तथेति
यच्च विष्णुपुराणे पंचमी मातृपक्षात्पितृपक्षावसप्तमी गृहस्थ उद्धेतुक न्या न्या
येन विधिनान्येति पंचमी सप्तमी मतीत्येति व्याख्येयं पंचमे सप्तमे चैव येषां वैवाहिकी
क्रिया क्रियापराश्रयिहितायाः प्रदत्ता गता इत्यपराकं मरीचिवचनात् सारलनायां रा
खलिरिव तो सपिंडतो तु सर्वेषां गोत्रतः साप्तमौ रूषीधिः श्रौतकदानं च श्रौतचनदा
नुगं गोत्रसंतानं श्रौतचकलानभिव्याप्य गच्छतीत्यर्थः शुद्धि विवेके शुद्धि चिन्तामणि
च ब्राह्मणे सर्वेषां भववर्णिनां विज्ञेया सप्तमौ रूषी सपिताततः पश्चात्समानोदकध
र्मीता ततः कालवशात्तत्र विस्मृतौ वासगोत्रतः समानगोत्रतः समाने मोक्षक संज्ञा
तुतावन्माजापिनश्यति सप्तोर्द्ध्वयः सोदकास्ततो गोत्रजाः तत्रैव ब्रह्मे उपविभक्त
धनास्त्वेते सपिंडापरिकीर्त्तिताः तेनाविभक्त धनाभावे विभक्तः सपिंडाधन सारीना
न्यथोत्तर्यः तेन विवाहिश्रौतचैधनग्रहणे च त्रिधा सपिंडाः सिद्धे यत्तु पंचमी मातृतः
परिहरेत्सप्तमी पितृतोः स्त्रीमातृतः पंचमी पितृतो वै त्रिपेठीनासि स्मृतौ त्रीनित्यतुक
ल्प इति माधवोक्तेः पंचमी सप्तमी चैव मातृतः पितृतस्तथा दशभिः पुरुषैः ख्याता

राम
१८३

त्र ओत्रियाणां महाकुलात् उद्वाहे सप्रमादूर्ध्वतदभावेत् सप्रमीपंचमीतदभावेत् पितृ
 यक्षेय्यं विधिः सप्रमीचतथाषष्ठीपंचमीचतयेवच रावमुद्वाहयेत्कन्यानदोषः शाका
 टायनः तृतीयावाचतथीवाषक्षयेरुभयोरापे विवाहयेन्मनुः प्राहपाराशर्योगि
 रायमः यस्तु देशानुरूपेण कुलमार्गेण चोद्वाहेत् नित्यं संव्यवहार्यस्यादेदाच्चै
 तत्प्रदर्शयते इति चतुर्विंशतिमतात् चतुर्थीमुद्वाहेत्कन्याचतुर्थीः पंचमीपिवा परा
 शरमतेषष्ठीपंचमीनतुपंचमीमिति पराशरोक्तेज्ञानकल्पत्वेनापदिपंचम्यादिय
 रिणयनं कार्यमिति प्रतीयते अत्र हितदभावे इति स्पष्टमेवाकल्पत्वं मुक्तं तन्नय ३६
 धाश्रुतं ज्ञेयं निर्मलत्वात् सर्वोक्तमरीचिवचो विरोधात् वरक्तविकल्पा संभावा
 त् पंचमात्सप्रमादीनां यः कन्यामुद्वाहेद्विजः गुरुतल्पी सविज्ञेयः सगोत्रांचैव मु
 दहन्निति विष्णुक्तेः अतस्मात्समूलत्वे सति मदनपरिजाना बुधुक्तदिशदत्तकस्त्व
 पन्नसंवंधायनप्रवेशो ब्राह्मणो दीनां क्षत्रियादिसंयिंशविषये वा सर्वोक्तानि ज्ञेया
 नि नत्यनुकूल्य इति भूमित्वं यत्तु स्मृतिवद्विक्रमाधवादयश्चाहुः तृतीये संग
 छावहेच्चतुर्थे संगघावहा इति शतयथाश्रुतेः तत्प्राजदुमिन्नस्येव योषा भागस्ते
 पैतृकसंभवे च यामिवेति गर्भे तनोर्जनिता दंपती करिति च मंत्रवर्गात् मातृक
 ससुतां केचिन्पितृसुसुतां तथा विवाहंति क्वचिद्देशे संकोच्यार्थसंयिंशतामि

पाराशरस्य
 लत्वात्

निं.सिं.

१८४

184

पि

तिरातातयोक्तेऽमातुलकन्योदाहः कार्यः यद्यपि पितृसुसुकन्योदाहोपि प्रा
प्रस्तथाप्यस्वर्ग्यलोकविद्विष्टमिति निबन्धाद्वचनांतरेण तदुदाहस्यादिधाना
चनकार्यः अयंतुदाहिराण्यशिष्टाचारात्कार्य इति न च पूर्वोक्तश्रुतीनां अर्थवा
दमात्रता मतांतरेण सिद्धौ उपरिदेवेभ्योधारयतीति वदन्पयस्याविधिकस्य नात
यत्तुसातातयः मातुलस्यतुसतामदामातुगोजांतयेवच समानप्रवरंचैव त्यक्ता
चांद्रायणचरेत् यच्चमलः पैतृसुसैभागीनीसखीयांमातुरेवच मातुश्रभ्रातरा
प्रस्यगत्वाचांद्रायणचरेत् एतास्मिन्नस्तुभार्यार्थेनोपयुक्तेतदुदिमान् यच्चव्यासः
मातुःसपिंडायत्तेनेवर्णनीयादिजातिभिरिति तद्गंधर्वादिविवाहेऽहमात्रविषयं
तत्रपितृगोजात्रिसते अतएवमात्रेणैवपुराणे गंधर्वादिविवाहेषुपितृगोजेण
धर्मविदिति ब्राह्मदिधिविवाहेतपरिणैवेति भेदसोमेश्वरोपितृतीयध्यायेवाक्य
पादेमातुलकन्योदाहसुदाहृत्यस्मृतिविरोधेनाचारप्राप्तस्यास्यवर्तिकेचाधो
क्तवपिपूर्वोक्तश्रुतलिंगवलीपस्यादस्यकर्तव्यतामह तदेतद्वक्तव्यपालकद य
त्रिममातुसौदरकन्याविषयत्वे नासर्वमातुलकन्याविषयत्वेनचोपपन्नमप्यविवा
रितंरमणीयंयथातथास्तु तथापिकलोताद्यन्निविद्धमेव गोजात्मातुसपिंडाच्चवि
वाहो गोवधस्तथेमेतिदिपुराणात् साधवीयेवोधा यतोप्यस्य निंदामाह पंच

१८४

184A

धाविप्रतिपत्तिर्दक्षिणतेनद्योतरतल्लणीविक्रयोत्प्रेतेनसुयाचसहभोजनंयुधिष्ठिरभो
जनंमातुलपितृसुसुहितगमनमिति यद्योतरतः सीधुपानादिकमुक्ताइतरानकुर्व
नुष्यतिइतरइतरस्मिन्निति भद्रसोमेश्वरेणापिस्मृतिविरुद्धनामातुलकन्यादाहादी
नामस्माद्वचनादहंरामाएयमित्युक्ते ह दस्यतिरपि उह्यते दाक्षिणा ज्यैमातुला
स्यसुतादिजैः नत्स्यादाश्रनरा सर्वव्यभिचारनतासियः नक्षतासियः उत्तरामद्य
पात्रैवस्यस्यान्तराजस्वलाइत्यनाचारत्वमाह अतएवदेमादोसास्ये कर्णाटकादीना
नत्कारिणांश्राद्धोर्नवेधः वापदेवेनापिलिरितं ब्राह्म यजमातुलजोदाहीयत्रवैह्वली य
पतिः श्राद्धेनगच्छेत्तदिप्राः कृतेयच्चनिरामिषमिति तस्मात्मातुतः पंचयित्ततः सप्रचत्यक्तो
द्वेदिति सिद्धं संबंधविवेकैः सुसुतः ब्राह्मणातोमेकपिऽस्वध्यानामादरामादुमिविधितिः
भवति आसप्तमादिक्यविधितिर्भवति आतृतीयात्पिऽविधितिरन्यथापिऽशौचक्रिया
विधिदाइसहातुल्योभवति अस्यार्थमाहश्रुतपाणिः जीवात्पित्रादित्रिकस्यसुप्रयिता
महादयस्तयः श्राद्धदेवतात्वात्पिऽभाजोभवति तदूर्ध्वत्रयोनवपुरुषपर्यंतालेयभाजः
श्राद्धकृत्तौचदशमइतिदशमाहूर्ध्वसापिंज्यनिवृत्तिः दशमादित्युपलक्षणं तेनपितृ
यितामह जीवनेनवपुरुषपर्यंतपितृजीवनेषाष्टपुरुषपर्यंतसापिंज्यामिति ज्ञेयं अ
पुत्रधनग्रहणसन्निहिताभावेसाप्तपुरुषपर्यंतमधिकारः धनग्राहिणमारभ्यतृतीयः
पौत्रः तदूर्ध्वश्राद्धविधेदः अन्यथाधनहारित्वेऽपुत्रश्राद्धाद्यकरणेऽसह्यर्थः आतृतीया

नि.सिं.
१८५

185

दित्यरूढकन्याविषयं प्रमात्रानां तस्त्रीणां त्रियुखीविज्ञायते इति विसिद्धोक्तेः एत
च्चाशौचविषयं सापिंडं न तत्र विवाहो न तत्र यवौक्तवचनेः यच्च मातृसप्तमातृनियमादि
तिमेषातिथिप्रमुखादाशङ्क्याः वाग्दानोत्तरमेतादिति मुद्विवेकः सातकुलाविषय
कानकन्याविषयं चैतत् अन्यथा प्रमात्रानां यथास्त्रीणां सापिंडं साप्तयोरुखं प्रमात्रा
नां भर्तृसापिंडं प्राह देवः प्रजापतिरिति कोर्मैरा विरोधः स्यादिति रात्राकरस्थितित्वा
दिगौडगोथा युक्तं चैतत् अन्यथा कन्योत्पत्तौ पुरुषत्रयपर्यंतमेव सततं स्यान्नो
ध्वं सापत्नमातामहकुलेत्याह भित्ताक्षरायां रारवेः यद्येकजाता वदवः पृथक्
क्षेत्राः पृथक् जाताः एकपिंडाः पृथक् रोगाः पिंडस्त्वावर्तते त्रिषु पृथक् क्षेत्राः भि
न्नजातीयस्त्रीयुजाताः पृथक् जाताः सजातीयभिन्नमातृयुजाताः अत्र त्रियुरु
खं सापिंडमिति विज्ञाने शरीराव्याचरणे पृथ्वीचंद्रोदये सापिंडादीपिकायां चैवं
मदनपारिजाते तु पृथक् क्षेत्राः भिन्नमातृजाः पृथक् जाताः भिन्नजातीयाः एवं हि
जातीयसापत्नमातृकुलविषयं सवर्गसापत्नमातृकुले चतुःपुरुषं सापिंडं पं
चमी सप्तमी चैव मातृतः पितृतत्तयेति वशिष्टोक्तेः सप्तमीमिति ब्राह्मणादीनां स
त्रियादिदारोत्पन्नपितृकुलविषयं चेत्पुक्तं तत्त्वकैयोलकल्पितत्वाद्दुःशान्तरविरो
धाच्च निर्मूलं पितृपत्न्यः सर्वा मातर इत्युक्ता स्वमंतनादपत्यानि भागिनेयानि
ति पृथक् च अन्यथा सापिंडत्वेन निवेधात्सपत्नमातृलत्वादिनिर्देशोऽप्यपृथक्

३= कपोलकल्पेति यदंभावायोग्यमित्युच्यते- राम
१८५

185A

अतएव तेन स्मृतिर्को मुद्यां सुवर्णसापत्नमातामहकुलपरत्वेन तथैव शंखवच
 ने व्याख्याते तेन वासिष्ठं पंचमी सप्तमी अतीत्येति व्याख्येयं तस्मात्प्रायेव व्याख्या
 युक्ता प्रयोगरत्नमहैस्मृतिरत्नादिगोऽग्रथेषु सपत्नमातामहकुले यावदुक्तं वाच
 निकमेव सापिंज्यमुक्तं यथाह सुमंतः मातृपितृसंबन्धाऽप्रासप्तमादविवाद्याभ
 वंति प्रापंचमादन्येषां पितृपत्यः सर्वा मातरस्तद्भ्रातरो मातुलास्तद्भगिन्यो मा
 तृश्वसारस्तत्तदुद्दितास्तद्भगिन्यस्तदपत्यानि भागिनेयानि अन्यथा शंकरकारि
 णः स्पृष्टाया ध्याया पितुरेते देवेति प्रापंचमादिति मातृकुले त्रिगोत्रांतरितविषयं
 चेति प्राच्याः मातृस्य समानप्रवराचेव शिष्यसंतिरिव च ब्रह्मदातृगुरोश्चैव संततिः
 प्रतिषिध्यते तद्भगिन्यो मातृश्वसार इति तद्भ्रातरे न पाठितं क्वचिद्वचनादविवादः
 यथागृहपरिशिष्टेऽविरुद्धसंबन्धामुपययत्तेत्युक्ताविरुद्धसंबन्धः स्वयमेवोक्तः
 यथाभार्यासुर्दुहितापितृव्यपत्नीस्वसाचेति बौधायनः मातुः सपत्या भगिनी त
 त्सतांच विवर्जयेत् पितृव्यपत्या भगिनीस्तत्सतांच विवर्जयेत् अतो मातृश्वसः सा
 पत्नपुत्रकन्याप्यविवाद्या सापत्नमातृकुलजास्मिति मदनपारिजातोक्तेरिति केचि
 त् केचित्तु ज्येष्ठो भ्राता पितुः सम इति मन्त्रके स्तपत्या मातृत्वात् तत्पितुर्मातामहत्वा
 ज्येष्ठभ्रातृपत्नी भगिनी न विवाद्याः तथा उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान् ब्रह्मदः पिते

नि.सिं.

१८६

186

निमनूक्तेर्गुरुणात्रिपुरुषं सायिंशं सरवापिनिर्वाप्यः अतस्तेषां कन्या नो दद्यात् ।
गायत्र्या उपदेष्टुं कन्या नैवो ददेत् द्विजः गुरोश्च कन्या शिष्यो वा तत्संतत्यापि नैष्य
ते पुरुषत्रये पर्यंतं भ्रात्रादेर्नैतदिष्यते वा कसं वंधक्तानां तत्सहसं वंधभागिनां ।
विवाहो जनकैर्नैवो लोकगर्हा प्रसज्यत इति वचनाच्चेत्याहुः तत्र मूलविंसदत्तकवि
षये रूच्यते तत्र गोत्रगोत्रमः ऊर्ध्वसप्तमात् पितृ वंधुभ्यो वीजितेभ्यश्च मातृ वंधुभ्यः
पंचमादिति वंधुग्रहणादत्तकमात्रपरमिर्धकिंतु संतानेपि एतत्संज्ञादितद्वानु
व्यायणापरमिति हरदत्तः उपरतिचंद्रकाया अत्र स्मृतिचंद्रिका नियोगाद्युत्पा
दयति नस्माद्वीजिनोऽयू र्ध्वसप्तमादित्यर्थ इति दत्तकस्य जनकविषयमेतदिति सा
यिंशमीमांसायां तैत्तिरीयस्य जनककुले साप्रपौरुषं जननीकुले पांचपौरुषं सायिं
शं दत्तक्रीतादिपुत्राणां वीजवत्सपिंडता सप्तमी पंचमी चैव गोत्रित्यं पालकस्य चेति
बहुतमनूक्तेः वीजनश्चेति गोत्रमोक्तैश्च पालकपितृकुले तृपंचपुरुषं पालकमा
तृकुलोत्रिपुरुषं तथाचापराकैपैहीनसि जीन्मातृतः पंचपितृतः पुरुषानतीत्यो ददे
दिति एतत्सायव्याचख्यो दत्तकादीन्पुत्रान्यितपक्षतो निवृत्तपिंडगोत्रार्थयान्प्रत्ये
तदुच्यते पंचपितृत इति नान्यात्प्रतीति यत्तु ह्युक्तमः स्वगोत्रेष्कुलतयेत्युदत्त
क्रीतादयः सुता विधिना गोत्रमायांति न सायिंशं विधीयते यच्च वशिष्ठः अन्यथा

राम

१८६

खोद्गवोदतः पुत्रश्चैवोपना विधितः स्वगोत्रेण स्वराखेकविधिना स्यात्स्वराखभा
 गिमिति यच्च नारदः धर्मार्थवर्धिताः पुत्रास्तत्र द्वौ गोत्रौ पुत्रवत् श्रृणुं विभागित्वं ते
 युक्तेवलमीरितमिति तत्पालककुले साप्रयोरुखं सापिंडं नेत्येवं परं न तु सर्वथा सापिंडं
 प्रतिषेधपरमिति सापिंडमीमांसायां मदनपारिजातादपि दत्तकानुप्रवेशोऽल्पसापिंडं
 प्रतिभाक्तपूर्ववचसां महानिबन्धेष्वाप्यनुपलभादपराक्षादिलिखानाभावात्पूर्व
 क्तव्यवस्थायाश्च प्रतिभज्ञानतुल्यत्वाद्यैरेतस्मिन्निवृत्ते ते वा मेव शोभते मम तु पालककु
 ले एकपिंडदानक्रियान्वयित्वरूपं साप्रयोरुखमेव सापिंडं वीजिनश्चेति गौतमोक्तं
 जनककुले पितावदेव जीन्मातृतः इत्यादितु सर्वेण मातृकुलपरं यथेकजानावद्वे
 इति शंखे केवाक्यत्वादिति युक्तं प्रतिभाति अतएवास्य ह्यामुष्याय एतत्त्वे हेमाद्रिप्रव
 रमंजरी च त्रिकनारायणादिभिरुक्तं भट्टसोमेश्वरेणापि पृथयाः कुंतिनौ जस्य पालक
 कन्यात्वेऽपि ऊर्ध्वं सप्तमापित्वं धृष्यो वीजिनश्चेति गौतमोक्तं दंतिभाया पृथया ज
 नकस्य श्रृणुसेनस्य कुलेऽपि साप्रयोरुखं सापिंडं मुक्तमपि वा कारणान्न हरेत्तत्र
 सापिंड्यदीपिकायां न दत्तौ दीनां जनकगोत्रेणोपनयने कृते जनककुले साप्र
 योरुखं सापिंडं पालकमातापितृकुले त्रिपुरुखं पिंडं निर्वीयान्निर्वीय्य लक्षणं
 त्रिपुरुखं सापिंडं पालगोत्रेणोपनयने तत्कुले साप्रयोरुखमित्युक्तं तत्र च

नि.सिं.

१८६

187

त्र

शोषायनसंस्कारानि जगोत्रेणैवैकता दत्तायास्तनयास्ते स्युरन्यथादासउ
च्यते इति कालिकापुराण उपनयनोत्तरं दत्तकनिधेधात् त्रिपुरुषमित्यत्रापि
मूलं मृग्यमित्यलंबद्वना मातापितृद्वारक साधिं उवतीनां कन्यानामिधं संख्यारा
मवाजयेयिनोक्त उद्योक्तः पितरोऽपितुः पितरोऽपितुः तत्तन्महदं यपि दं दंतस्य च नृकम
व्यचतनो यस्य स क्रमाच्छोऽश वंशारभकदं यति प्रामिति रित्या सप्तकदारदा एवै
कान्ययकन्यकाः पितृकुले त्वसप्तकक्षेत्रे यद्यप्येकस्य बहवः सुतास्युस्तदपी
हत्तु संबंधसाम्यदेकैव गणितेत्यवधार्यतां एकस्मान्मिथुनात्सुतो यदुहिता दं द
धंतं दयंतदयात्तस्मादं दचतुष्टुमव्यचतनोतः षोडशा तोरदाः यावत्सप्तमकक्षमग्निसि
तवः कन्याः इहैकान्ययेता दंतैर्गुणितारसै करवदशे वंशे साधिं शः पितुः मातुर्जन्मद
दं यती च मिथुनदं दंतयोः सागरास्तस्याः पंचमकक्षमव्यमिति रित्येकान्ययः पुंसते
दं ददं दयुगंततो अथ इतो षो पंचकक्षं शरक्षोण्यः सप्तगुणः शराभविधवो मातुः
साधिं शः कुले कुलद्वयस्य कन्यकायुतामिधः साधिं शः हिमांशुद्वगधरादृशा विवा
हकर्मवर्जिता इति एतच्च सर्ववर्णसाधारणं सर्वत्र साधिं शसद्भावादिति विज्ञाने श्वरो
क्तः आयेचमात्सतमादुर्ध्वमात्ततः पितृतः क्रमात् साधिं शानि वर्जितसर्ववर्णस्य यं वि
धिरिति हरनाथधृतदेवलवचनाच्च संबंधतत्वे सुमंतुः पितृष्वस्तसतां मातृष्वस्त

राम
१८६

187A

सुतो मातुल सुतो मातुल सगोत्रां समानर्धे यो विवाह्य चां दाय एं चरेत्परित्यजेनां मातु
वद्विभयादिति दिक् ऋषेरिदमार्धं प्रवरः गोत्रप्रसिद्धं समानेऽर्धे गोत्रेयस्य तस्मा
ज्जाज्ञायानभवति तौ अथ संक्षेपेण गोत्रप्रवरानिणयः तौ च भिन्नौ निषेधे निमित्ते
सगोत्राय डहितरं न प्रयच्छेदित्यायस्तं वाक्तेः असमानप्रवरैर्विवाह इति गोत्रमोक्तेः अ
नजगोत्रभागमाह प्रवरमंजयौ बोधायनः विश्वामित्रो जमदग्निर्भारद्वाजो यगोत्र
मः अत्रि वसिष्ठः कश्यपश्च्येने सप्तर्षयः सप्तानामृषीणां मगस्याष्टमानां यदयत्नं
तज्जोत्रमिति यद्यपि केवलं भार्गवेष्वर्षिषेणादिषु केवलं गिरसेषु च हरितादिषु
नैतत् ऋग्वेगिरसोऽनंतरा गीतेः तथाप्यत्रैषा यतिरेवेति केचित् अतएव स्मृत्य
र्थसारे प्रवरैक्या देवाजा विवाह उक्तः यद्यपि वसिष्ठादीनां न गोत्रत्वे यत्नं तेषां सप्ता
र्वित्वेन तदपत्यत्वाभावात् तथापि तत्पूर्वभावि विवसिष्ठाद्यष्टाद्यपत्यत्वेन गोत्रत्वं
युक्तं अतएव पूर्वेषां परेषां चैतज्जोत्रं अत्र विशेषः स्मृत्कृते प्रवरद्वय एव ज्ञेयः प्र
वरस्तु प्रवरणानि प्रवराः कल्पकारा हि वासिष्ठोतिहोता विसिष्ठवदित्यधर्दुरित्या
दिना येषां वरणमामं न तिते प्रवराः तच्च वरणं यद्यपि गोत्रभूतस्यापि क्वचिद्
र्यते तथापि पूर्वच दिक् दधिभेदो द्रष्टव्यः अन्यथा तेषां आर्षेय इत्यादि निर्दे
शानुपपत्तेः अन्ये तु तज्जोत्राणां आर्षेय इति भेदमाहुरिति परंपरं प्रथममित्या

188

अलायनत्वेनोक्तेः श्रुतत्वं तु गोत्रभूतस्य पितृपितामहाएव प्रवराः पितृचारोऽथ
 पुत्रोऽथ यौज इति शतपथश्रुतेः अत्र विशेषमाह वौधायनः एक एव ऋषिर्वा
 त्प्रवरेऽनुवर्तते तावत्समानगोत्रत्वमन्यत्र भृग्वंगिरसांगणमिति स्मृत्यर्थ
 सारः त्रिषमाणतया वा पितृसत्तया वा अनुवर्तने एकस्य दृश्यते यजतद्गोत्रं तस्य
 कथ्यते भृग्वंगिरोगणेषु तु माधवीये स्मृत्यन्तरे पंचानां त्रिषु सामान्याद विवा
 हसि त्रिषु द्वयोः भृग्वंगिरोगणेष्वेवं शेषे कोऽपि चारयेत् एकोऽपि समानः प्रवरो वि
 वाहं चारयेदित्यर्थः वौधायनोऽपि भृग्वंगिरसावाधिकृत्य द्वार्षेयसंनिपातेऽ
 विवाहः श्रार्षेयाणां श्रार्षेयाणां श्रार्षेयसंनिपातेऽविवाहः पंचार्षेयाणामिति १
 भृग्वंगिरोगणेषु पित्रमदग्निरगोतमभारद्वाजेऽथैकप्रवरसाम्ये सर्वेषां मध्यसमा
 नगोत्रत्वादेव विवाहः इति दिक् अथ गोत्राणि प्रवराश्चोच्यन्ते तत्र वौधायनः गो
 त्राणां तु सहस्राणि प्रयुक्तान्यवुदाति च ऊनपंचाशदेवैषां प्रवरा ऋषिदरीनात् त
 त्र सप्तभृगवः वत्साविदा श्रार्षिषेणयस्का मित्रयुवाः वैन्यात्सुनका इति वात्सानां
 भार्गवच्यवना प्रनौर्वजामदग्न्येऽपि भार्गवौर्वजामदग्न्येति वा भार्गवा प्रवानेति वा
 विदानां पंच भार्गवच्यवना प्रवानौर्ववेदंति भार्गवौर्वजामदग्न्येति वा एतौ जाम
 दग्न्यसंज्ञौ श्रार्षिषेणानां भार्गवच्यवना प्रवानां श्रार्षिषेणारूपेति भार्गवा श्रार्षिषेणा

नूपेतिवा एवात्रयाणां परस्परमविवाहः वात्स्यानां भार्गवच्यवनाप्रवानेति वत्स
 पुरोधसयोः पंच भार्गवच्यवनाप्रवान्वात्सयोरोधसेति वैजवनिमथितयोः पंच भार्ग
 वच्यवनाप्रवान्चैजवनेमथितेति एते त्रयः क्वचित् एवामथिपूर्वैरपि विवाहः अ
 तत्तद्गुणस्थाज्जवयो न्यश्च विशेषो मत्स्येति प्रवरदर्पणे ज्ञेयः यस्कांतां भार्गवेतहव्या
 सावेदसेति मित्रयुवानां भार्गववाध्वश्चदिवो हसेति भार्गवच्यवनदैवोदासेति वा
 वाध्वस्येत्यको वा चैत्यानां भार्गवचैत्यपार्षेति एते एवरेयेताः अनुक्तानां अनुक्ते
 तिवागार्त्समदेति वा भार्गवगार्त्समदेति द्वौ वा भार्गवशौ न हो गार्त्समदेति त्रयो वा
 वेदविश्वज्योतिषां भार्गववेदवैश्वज्योतिषेति शाठरमाठराणां भार्गवशाठरमाठ
 रेति एतौ द्वौ क्वचित् यस्कादीनां स्वगणं त्यक्त्वा सर्वे वाहः तडक्तं सृत्पथसारे यस्का मि
 त्रयुवोचैत्यः अनुक्ता प्रवरैक्यतः स्वस्वहित्वा गणं सर्वे विवाहेषु परावरैरिति अथा
 गिरसः तैगोतमाः भरद्वाजाकेवलंगिरसश्चेति त्रिधा तत्र तत्र गौतमाः दश अथास्या
 शरद्वन्ताः कौमंडाः दीर्घतमसः श्रौतानसाः कारेणपालयः राहूगणः सोमराजका वाम
 देवाः हृदुवन्त्याश्चेति तत्रायास्यानामां गिरसायास्यगौतमेति शरद्वन्तानामां गिरस
 गौतमशरद्वन्तेति कौमंडानामां गिरसोत्तप्यकाक्षीवन्तगौतमकौमंडेति वा अंगिरसाशि
 गौतमशरद्वन्तेति कौमंडानामां गिरसोत्तप्यगौतमो शिजकाक्षीवन्तेति त्रयो वा दी
 र्घस्यो शिजगौतमकाक्षीवन्तेति वा अंगिरसोत्तप्यगौतमो शिजकाक्षीवन्तेति त्रयो वा दी

नि.सिं.
१८५

189

धृतमसामांगिरसौ तथ्य काशी वत गोतमदै धृतमसेति आंगिरसौ तथ्यदै धृतमसे
तित्रयोवा औशनसामांगिरसगोतमौशनसेतित्रयः कारेण्डपालानां मांगिरसगो
त्रमकारेण्डपालेतित्रयः राहुगणानामांगिरसराहुगणगोतमेति सोमराजकाना
मांगिरससोमराजकगोतमेति वामदेवानामांगिरसवामदेव्यगोतमेति सहस्रुस्था
नामांगिरसवार्हदुक्थगोतमेति आंगिरसवामदेववार्हदुक्थेतिच उत्थ्यानामां
गिरसौ तथ्यगोतमेति राघुवानामांगिरसराघुवगोतमेति एतौ द्वौ क्वचित् एवां स
र्वे वा गोतमानामविवाहः अथ भरद्वाजः ते चत्वारः भरद्वाजाः गर्गा ऋक्षाः कथयति
भरद्वाजानामांगिरसवार्हस्यत्यभारद्वाजेतित्रयः गर्गाणां मांगिरसवार्हस्यत्यभारद्वा
जसैन्यगार्गेतिपंच आंगिरससैगार्गेतिवा अन्त्ययोर्वत्ययोवा भारद्वाजगार्ग्यसै
न्येतिवा गर्गभेदानामांगिरसतैत्रिरिकापिभुवेति ऋक्षाणां कापिलानां चांगिरसवा
र्हस्यत्यभारद्वाजवांदनमातवचसेतिपंच आंगिरसवांदनमातवचसेतित्रयोवा क
पीनामांगिरसामहीयवोरक्षयसेति आत्मभुभुवामांगिरसभारद्वाजवर्हस्यत्यमंत्रव
रात्सभवेतिपंच अथ क्वचित् भारद्वाजानां सर्वेषामविवाहः अथ केवलमांगिरसः
हरितानामांगिरसां वरीषयो वनाञ्चेति आद्यो मां धातावा कृत्सानामांगिरसमां
धातुकोत्सेतिकारवानामांगिरसां जमोठकारा एवेति आंगिरसघोरकारा एवेति

राम
१८५

189A

रधीतराणां मांगिरसवैरूपराधीतरेति आंगिरसवैरूपपार्थदश्रेति वा अष्टा
 दंष्ट्रपार्थदश्वैरूपेति वा अंत्ययोर्कृत्ययो वा मुकुलानां मांगिरसभार्यश्रमोदुल्ले
 ति आद्यः तादर्थ्या वा आंगिरसतादर्थमोदुल्लेपि वा विष्णुहृदयानां मांगिरसपौरुषकु
 त्सत्रासदस्यवेति एषां स्वगां विहाय सर्वे विवाहो भवति हरितकुत्सयोक्तृनभव
 ति अथात्रयः ते चत्वारः आत्रेया वाङ्मताकाः गविष्टिराममुकुला इति अर्धतनामात्रेया
 र्चनानरास्या वाञ्छेति वाङ्मताकानां मात्रेयार्चनानरास्य वाङ्मताकेति धनं जयमात्रेयार्चवा
 नस्य धने जयेति केचित् गविष्टिराणामत्रयार्चनानरागा विष्टिरेति आत्रेयाणां वि
 ष्टिर्यौर्धातिथेति वा मुकुलानां मात्रेयार्चनानराग्यौर्धातिथेति वामरथ्यसंमंगल
 वैजवायनामात्रेयार्चनारातिथेति आत्रेयार्चनानरागा विष्टिरेति च संमंगला
 नामत्रिसंमंगलस्यावाञ्छेति केचित् अत्रैः पुत्रिका पुत्राणां मात्रेयचामरथ्यपौ
 त्रिकेति अत्रैः सर्वेषां मधिवाहः अथ विश्वामित्राः ते दश कृशिको लोहितः
 रौक्षकाः कामकायनाश्रजाः कता धनं जयाः अथ मर्षणाः पुरणाः इंदुकोशिका
 इति कृशका इति कृशिकानां वैश्वामित्रदेवरातौ औदलेति लोहितानां विश्वामि
 त्राष्टकलोहितेति अंत्ययोर्कृत्ययो वा वैश्वामित्रमाधुधंदसाष्टकेति वा विश्वा
 मित्राष्टकेति द्वौ वारौ रौक्षकानां वैश्वामित्रगायितरे वारौ वैश्वामित्ररौक्षक

190A

न्यवः पराशराजात्तकर्ण्येति वशिष्ठानां वासिष्ठेऽप्रमदो भरद्वास्त्विनिचिसिष्ठेत्ये
वा कौण्डिन्यनां वासिष्ठमैत्रावरुणकौण्डिन्येति उपमन्युनां विसिष्ठेऽप्रमदो भरसचे
ति वसिष्ठाभरद्वास्त्विन्द्रप्रमदेति वा आधेयोर्व्ययोवा पराशराणां वसिष्ठराक्षया
राशयेति जातकर्ण्यानां वसिष्ठात्रिजातकर्णेति वसिष्ठानां सर्वेषां मविवाहा
अप्रत्यस्यात्रिभिश्च अथागस्त्याः ते चत्वारः १ धमवाहाः सोमवाहासां नवाहा यज्ञवा
हाश्चेति आध्याना मास्यदार्यच्युते धमवाहेति आगस्त्येत्येको वा सोमवाहनामाग
स्त्यदार्यच्युतसोमवाहेति सांमवाहानां सांनवाहोत्यः यज्ञवाहानां यज्ञवाहोत्यः आधे
पूर्वोक्ताश्चैव सारंवाहानां तदंतास्ययः दर्भवाहानां तदंतास्ययः अगस्त्यानामागस्त्य
माहेंद्रमायो भुवेति सारमासानामागस्त्यपोरमासपारणे निहिमोदकानामागस्त्य
हैमवचिहैमोदकेति पाणिकानामागस्त्यपेनायकपाणिकेति एतेष्वष्टकचित् अग
स्तीनां सर्वेषां मविवाहः अथ द्विगोत्राः रौंगशैशिरीणां मांगिरसवाहस्यत्य भारद्वाज
कात्याक्षीलेति पंच कात्याक्षीलयोः स्थाने रौंगशैशिरीषा अंगिरसकात्याक्षी
लेति त्रयो वा एषां भरद्वाजैर्विष्णुमित्रैश्चाविवाहः एवं कपिलानां कृत्तानां च सं
वृत्तिरिति मायादीनां मांगिरसगौरिवीतमां कृत्येति एतत्तत्र गौरिवीतसां कृत्येति वा
एषां स्वगणस्यैर्वसिष्ठैः रौंगशैशिरीरैर्लोगाक्षिभिश्चाविवाहः कश्यपैरपीति प्रयो

गपारिजाते लौगाक्षीणां काश्यपावत्सारवासिष्ठेति काश्यपावत्सारसितेति वा
एतेऽहर्वसिष्ठान्तं कश्यपाः एवावसिष्ठेः कश्यपे संकृत्याद्येष्वाविवाहः देवरात
स्य जामदग्न्येर्विष्णामित्रेष्वाविवाहः इति प्रयोगपारिजाते तत्तुक्तं अथो वयं वां गि
रससक्तयेयां नवमुत्रंतां अंगिरसोजन्मजा गति अतकविः इत्यंगरोगणस्येत्वेन
भार्गवजामदग्न्येस्मत्तेर्हरिवंशादिस्मत्ते अविरो धातु तेन द्वौ देवरातौ एकां गि
रसः आत्यक्तः अन्ते भार्गवतयोः कल्पभेदेऽपि अंगिरसेन देवरात नेव मदग्नेन भवत्ये
व चित्त धनेन यानां विष्णामित्रे रत्रिष्वा विवाहः जातक कर्णानां विसिष्ठे रत्रिभिष्वा
विवाहः एवं दत्तकजीतकृत्रिमस्वयंदत्तः पुत्रिकापुत्रादीनां मुत्यादकपालकयोः
पि जोगैत्रप्रवरावर्ज्या इति प्रवरमंजरी नारायणचतिप्रयोगपारिजातादयः अ
त्र सर्वत्रोपपत्तयः मूलचमत्कृते प्रवरदर्शने ज्ञेयमिति दिक् क्षत्रिवैश्ययोस्तु पुरोहित
गोत्रप्रवरावेति सर्वसिद्धांतः यद्यपि वद्वर्चपरिशिष्टेऽपि भरद्वाजयोर्विवाह उक्तस्तथापि
भरद्वाजाश्चकपयोगर्गारोक्षायणा इति चत्वारोऽपि भरद्वाजगोत्रे वधान्नन्वमुमिथः क
पि गर्गभरद्वाजामिथो रोक्षायणादिजाः नोद्वहेयुः संगोत्रत्वात्प्रवरे वधान्न कुत्रचित् ३
तिस्मत्तर्धसाराद्युक्ते रविवाह एव तयोरिति प्रवरमंजरी स्वगोत्रघ्नानेन सत्या
वादाः अप्रयानाज्ञातवधोः पुरोहितप्रवरेणाचार्यप्रवरेणाचैति आचार्यगोत्रप्र

191A

वरानभिज्ञस्तद्विजस्वयं दत्वात्मनस्तु कस्मेचित्तद्वोत्रप्रवरो भवेत् यद्वा स्य गोत्रप्रवरवि
धुरोजमदग्निजः विवाहं च न तेनैव गोत्रेण तु समाचरेत् इति कश्चित् अथ मातृगोत्रनि
र्णयः शातातयः मातृलस्य सतः मूर्द्धमात्तृगोत्रात्तथैव च समानप्रवरं चैव गत्वा चाद्रा
यं चरेत् यद्यपि स गोत्रं मातृरप्येकेनेधंत्युद्वाहकर्मणि जन्मना म्ना विज्ञाने यद्वा
हेदधिरोक्तिरिति व्यासोक्तेरज्ञातनामत्वेन स गोत्रत्वदोषस्तथापि नेदं कलौ प्रचर्तते गो
त्रान्मातुः सपिंडाच्च विवाहो गोत्रवधस्तथेति कलिबर्ज्यत्वोक्तेः इदं मातृगोत्रवर्जनं मा
ध्यदिनीयानामेव मातृगोत्रं माध्यदिनीयानामपुत्रायाश्चेति सत्याद्यादोक्तेरिति कश्चित्
महाराष्ट्रकल्पितं तन्निर्मलं अन्यथा गुर्जरादेः कातीयस्य कुतो निषेधः अतएवाह प्रव
रमंजरीकारः दोषस्यातिगुरुत्वात् सर्वेषां मातृगोत्रं बर्ज्यमिति कंन्यायाः प्रवरो एकः च
रमातृगोत्रं न स्यो भवति तदा भगनी ज्ञेयो इत्यर्थः यत् न एकस्मिन् प्रवरे तुल्ये मातृगोत्रे
वरस्य च तमुद्वाहनं कुर्वीत सा कन्या भगिनी स्मृतेति मातृकले प्रवरचित्तनमुक्तं तदा स
होदिविवाहोऽपराभिनिदिक् विसरस्तु ग्रंथान्तरेभ्यो ज्ञेयः स गोत्रादि विवाहे प्रायश्चित्तं
स्मृत्यर्थं सारे इयं स गोत्रसंबन्धे विवाहविषये स्थिते यदि कश्चिद्ज्ञानतस्तत्कन्यामष्टौप
गच्छति गुरुतल्पप्रताप्येर्धर्मस्तज्जात्यतात्रजेत् भोगतस्तं परित्यज्य पालयेज्जननी
मिव अप्रज्ञानादेंदवैः अथेति भिर्गर्भैस्तु कश्यपः एवं सापिंडेऽपि सपिंडा यत्पदारेणु प्रा

नि.सिं.
१५२

192

एतन्मागेविधीयते इति सहस्रमोक्तेः तिथितत्वेवौ धायनः सपिंडांसमोत्रांचेदमन्योपय
धेन्मातृवदेनां विभूयात् कन्या विवाहकालउक्तो ज्योतिर्विंधे यद्वयमध्येनोदाद्याक
न्यावर्षद्वयं यतः सोमोभुक्ते ततस्तद्वर्ध्वश्चतयानलः राजसार्त्तः अयुग्मे दुर्भगाना
रीयुग्मे तु विधवा भवेत् तस्माद्गर्भा न्विते युग्मे विवाहे सायतिव्रता मासत्रयादूर्ध्वमयुग्म
वर्षे युग्मे पि मासत्रयमेव यावत् विवाहशुद्धिं प्रवदंति संतो वत्स्यादयः स्त्रीजनिजन्म मासा
त्पराशरमाधवीयेतु जन्मतो गर्भाधानादयंच माव्यात्परं शुभं कुमारी वरणं दानं मेखला
बंधनं तथोत्तुक्तं संबन्धतत्वेयमः कन्या द्वादशवर्षाणि यावदज्ञावसेकृते ब्रह्महत्यापित्तु
स्याः सा कन्या चरयेत्तद्यं भारते त्रिंशद्वर्षोऽष्टादशवर्षां विदेत नग्निकां दशवर्षां वधवां वा
धर्मं सीदति सत्वरः अतो प्रहृते रजसिकन्या दद्यात्पिता सक्त तत्रैव सप्तमं वत्सरादूर्ध्वं वि
वाहः सर्ववर्णिकः कन्यायाः रास्यते राजसैन्याया धर्मगर्हितः रामार्त्तः राहुग्रस्ते तथा
युद्धे पितृणां प्राणसंशये अतिप्रौढा च या कन्या चंद्रलग्नबले न तु मनुः त्रिंशद्वर्षो द्वे
त कन्या कृत्वा द्वादशवर्षी कीं द्वादशवर्षी वधवा धर्मं सीदति सत्वरः यद्यपि विवाह
स्तद्वर्षायाः कन्याया रास्यते बुधैरिति सबर्तौ के रत ऊर्द्ध रजस्वलेत्यादेशे द्वादशवर्षी
र्ध्वं विवाहेति विदुस्तथापि दारभावे द्वादशवर्षोऽष्टादशवर्षे त्रैविण्यवर्षेण तु मती को दो त
पितृ शासनमिति पराशरमाधवीयेवौ धायनोक्तेश्च मनुः स्त्रीसंबन्धे दशैतानि कु

राम
१५२

192A

लानियरिवर्जयेत् सीनाऽऽक्रिया किंपुरुष निधंदो रोमराऽऽरीरुक्षयाः मांगल्याः प
 स्मारिश्चित्रकुलानिवा तथा नर्क्षऽऽसनदीनामीत्यपवर्तना सिकोनपक्ष्यसिप्रेष्यना
 सीनविभीषनासिका यमः तस्माड्वाहयेत् कन्यायावन्नर्त्तमती भवेत् तथा मूल
 नदीनाफलं प्रागुक्तं तथा वर्णवश्यग्रहमेमादिघटितविचारो ज्योतिर्विद्वाज्ञेयः
 विस्तारान्नोच्यते अथ गुर्वर्कवलं ज्योतिनिर्वधे गार्गः स्त्रीणां गुरुवलं प्रेष्टु
 रुवाणां रवेर्वलं तयोऽंद्रवलं प्रेष्टमिति गर्गाभाषितं जन्मत्रिदशमारिस्थः प
 जयाशुभदोगुरुः विवाहेऽथ चतुर्थाष्टदशस्यामृतिप्रदः देवलः नव्यात्मा जाधनतीवि
 धवाकुरीला पुजान्विता हतधवा सुभगा विपुजा स्वामिप्रिया विगतपुत्रधवा धनाद्या
 वध्या भवेत् सुरगुरौ जमरोभिजन्म बृहस्पतिः ऊषचापकुली रस्या जीवोप्यशुभो
 चरः अतिशानता दद्यात् विवाहोपनयादिषु लक्षाः द्वादशदशमचतुर्थे जन्मनि बद्धा
 वमेतत्तीये च प्राप्ते पाणिग्रहणे जीवे वैधव्यमाप्नोति गर्गः सर्वत्रापि शुभं दद्याद्वा
 दशाब्दात्परं गुरुः पंचषष्ठाब्दयोरेव शुभो चरतामता सप्तमात्यं च वधेषु स्वाच्च स्वर्ग
 तो यदि अशुभोपि शुभं दद्यात् शुभं दर्शयति किंपुनः राजस्य लायाः कन्यायाः गुरुशुद्धिं
 न चिंतयेत् अष्टमेपि प्रकर्त्तव्यो विवाहः सिंगुणा चिनात् अर्कगुर्वावलं गोर्वा रोहिण्य
 र्कचला स्मृता कन्या चंद्रवला प्रोक्ता हवली लग्नतो वला अष्टवांशो भवेद्गोरी नव

रविशुद्धिं च

नि.सि.

१५३

193

वर्षाचरो हिरणी दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं राजस्वला अथ त्वहस्यति रातिः १
शौनकः कन्यको द्वाहकाले तत्रातुकूल्यं न विद्यते त्रास एण स्यात्पनयने गुरोर्वि
धिरुदाहतः सुवर्णेन गुरुं कृत्वा पीतवस्त्रेण वेष्टयेत् शिरान्यो धवलं कुम्भं धान्योपरि
निधाय च दमनं मधुपुष्पं च पलाशं चैव सर्वपात्रं मांसी गुडं च यामा गीविङ्गी रावि
नीवचा सह देवी हरिक्रान्ता सर्वेषां धिरानावरी वलां च सह देवी च निरादिपतमेव
च कृत्वा उपभागयंत्ये तस्य शारवाक विधानतः ग्रहोक्तं मंडलेभ्यर्च्य पीतपुष्पाक्षता
दिभिः देवपूजोत्तरे काले ततः कुम्भानुमंत्रणं अथ सत्यसमिधश्चाज्यं पायसं सर्पिषा य
तं यवव्रीहितिलाः साज्या मंत्रेणैव त्वहस्यतिः अष्टोत्तरशतं सर्वहोमशेषं समाययेत् २
पुजदारसमेतस्य अभिषेकं समाचरेत् कुम्भाभिर्मंत्रेणैव स समुद्रज्येष्ठं मंत्रतः पू
तिमां कुम्भं वसंच आचार्यानिवेदयेत् कुम्भं सविम्बं ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाच्छुभ
दः स्यान्न संशयः इति त्वहस्यति राति शौनकः गुरोर्वा दित्येकं पीपातेव क्राती चारणे
गुरोर्नष्टे शरिणि शुक्रे वा वाले स देयवा गुरोर्पोषे चैत्रे यवर्षा सुशरद्यधिकमास
कै केतुद्रुमे निरंशे कै सिंहस्थे मरसंत्रिणि विवाहं नयादि पुरहर्म्यगृहादिकं शौ
रं विद्योपविष्टां च यत्नतः परिवर्जयेत् मदनं पर्येष्यते ज्योतिः सागौ वाले शुक्रे नष्टे शु
क्रे सदैव जीवे नष्टे जीवे वाले जीवे सिंहस्थे जीवे सिंहस्थे जीवा दित्ये नयामलिखते

राम
१५३

मासि सुरार्चयेति चारणे वायो कूपविवादि क्रियाः प्राग्मुदितास्त्यजेत सिंहस्थं मकर
 स्थं च गुरुं यत्नेन वर्जयेत् लक्षः प्रतीचाङ्गतो जीवस्तरारिं नेति चेत्पुनः लघ्नः संवत्सः
 रोत्रेयः सर्वकर्मवहिकृतः सिंहस्थगुरोरपवादमाह पराशरः गोदा भागारथीमध्ये
 नोद्वाहः सिंहगे गुरो मघास्थे सर्वदेशेषु तथा मीनगतैरवो वसिष्ठोऽपि विवाहोदक्षि
 णे कूले गोतम्यानेतरत्र तु भागीरथ्युतरे कूले गोतम्यादक्षिणे तथा विवाहोत्तवं
 धम् सिंहस्थे येन दुष्यति कन्यादातृक्रममाह याज्ञवल्क्यः पितापितामहो भ्रातास
 कृत्यो जननी तथा कन्या प्रदः पूर्वनाशे प्रकृतस्यः परपरः अप्रयच्छन्समाप्नोति भ्राणह
 मृताहतौ गम्येत्त्वभावे दातृणां कन्या कुर्यात्स्वयं वरं भ्रातृणां संस्कृतानामेवाधिका
 रमाह याज्ञवल्क्यः असंस्कृतास्तु संस्कार्याः भ्रातृभिः पूर्वसंस्कृतैः भगिन्यश्च निजा
 दंशादत्वांशं तुरीयकं अत्र च कारेण पूर्वस्त्वैरित्यस्यानुत्तरे विवाहयथापद्रव्यदाने
 च संस्कृतग्रहाण व्यर्थं स्यात् अतः कर्तृ नियमोयं तेनानुयनीत भ्रातृमात्रादिसत्त्वे मात्रादेरे
 वाधिकारो न भ्रातुरित्युक्तं संवधतत्यादौ कन्या स्वयं वरे मातृदातृत्वे च ताभ्यामेव नां दी
 प्राङ्कार्यं तत्र च स्वयं प्रधानसंकल्पमात्रं कृत्वाऽन्यर्द्धस्त्राणद्वारा कारयेदिति प्रयोगपरिजा
 ते वस्तु संस्कृतभ्रात्राद्यभावे स्वयमेव नां दी प्राङ्कुर्यात्प्रमाता पुत्रेषु विद्यमानेषु नान्यं
 वैवारयेत् स्वधामिति विधा उपनयनेन कर्माधिकारस्य ज्ञातत्वाच्चेति पृथ्वीचंद्रोदयः माध

नि.सिं.
१२४

११५

वीये परार्के च नारदः पिता दद्यात्स्वयं कन्यां धाता वा तृमते पितुः मातामहो मातुलम्
सकुल्यो वांधवस्तथा माता च भावे सर्वेषां प्रकृतो यदि वर्तते तस्यामप्रकृतिरथा यो कन्या
दद्युः स्वयं जानयः सकल्यो पितृपक्षीयः वांधवो मातृवंश्यः मदनपारिजाते कात्यायनः
स्वयमेवौरसी दद्यात्पित्रभावे स्ववांधवाः मातामहस्ततो न्यादिमाता वा धर्मज्ञा सुता ततो
न्यामौरसी भिन्ना धर्मज्ञा नियो गतः क्षेत्रज्ञा मातामहो माता मातुलो वा दद्यात् तेनौरसी
दाने पितृवंधुषु सत्सु मातामहादीनां नाधिकारः आस्यापवाक्यतत्रैव दीर्घप्रवासयुक्ते
षु दौर्गंडेषु च वंधुषु माता तु समये दद्यादौरसीमायिकन्यानां मनुः यदा तु नैव कश्चि
त्स्यात्कन्याराजातमात्रजेन परकीयकन्यादाने विशेषो मदनरत्नेस्कादे आत्मीकः
तत्सुवर्णेन परकीयांतु कन्यकां धर्मेण विधिना दानैः स गौत्रे पिबुज्यते अत्र प्रकृतः
तिस्मिन् ग्रहणादप्रकृतमेव स्वयं ज्ञेयं यदि तत्कार्यं कुर्यादप्रकृतिगतः तदप्यक्तमेव
स्यादत्वात् अस्य हेतुत इत्यपराके नारदोक्तेः यदि तु सप्रयदी विवाहो होमादिप्रधाने
जातं तदा गवैकल्ये पिता हतिर्विवाहस्य गौडा अथ्येवमाहुः तत्रैव मरीचिः गौरीदद
न्नाकपृष्ठं वैकुण्ठरोहिणीददत्त कन्या ददद्भुल्लोकं रौरवं तुरजस्वलां अथ सासनि
लीयः तत्र जन्ममासे शेषः प्रायुक्तः ज्योतिः प्रकाशो व्यासः माघफाल्गुनैवैशाखे
यद्यदा मारीरीर्षको ज्येष्ठे वा सादमासे च सुभगा वित्तसंयुता आचरेद्योषे

राम
१२४

194A

च कन्याभाद्रपदे तथा चैत्राश्वयुजाति केषु याति वैधम्यतो लघु नारदः माघफा
 ल्गुन वैशाखा ज्येष्ठा मासाः शुभावहाः कार्तिके मागरीर्षिश्च मध्यमौ निदिताः परे च
 सिद्धः पौषे पिकुषात्मकर स्थिते कर्के चैत्रे भवेन्मेषरातो यदा स्यात् प्रशस्तमाषाढ कृतं
 विवाहं वदन्ति गर्गामिथुनस्थिते कर्के चंडेश्वरः मार्गे मासितया ज्येष्ठे क्षौरं परैरायं
 मृतं ज्येष्ठपुत्रदुहित्रोक्तं यत्नेन परिवर्जयेत् कनिकास्थं विन्यक्ता ज्येष्ठपुत्रस्य
 कार्येत् रत्नकोशे जन्मर्क्षे जन्मदिवसे जन्ममासे शुभं त्यजेत् ज्येष्ठमास्याद्यगर्भ
 स्य शुभं वर्ज्यं स्त्रिया अपि पराशरः श्रुज्येष्ठा कन्यकाय ज्येष्ठपुत्रो वरो यदि अन्ययो
 वातयोस्तत्र ज्येष्ठे मासः शुभप्रदामिहिरः ज्येष्ठस्य ज्येष्ठ कन्याया विवाहेन प्रशस्यते
 तयो रन्यनक्षत्रे ज्येष्ठे ज्येष्ठे मासः प्रशस्यते द्वौ ज्येष्ठे मध्यमौ प्रोक्ता वेक ज्येष्ठं सरवाव
 हं ज्येष्ठत्रयेन कर्कते विवाहे स संमतं यत्तु सर्वकालमेकै विवाहमिति तदा सुरादिवि
 वाहविषये धर्म्ये विवाहेषु कालपरीक्षणना धर्म्ये स्थितिगदस्य परिरिष्टात् रत्नमा
 लायामस्येवं अथ दरादोषः व्यस्रोक्षये वेधश्चलना च तथैव पातः खार्जूरवेधौ द
 रायोगचक्रं युतिश्रुजामित्रमुपग्रहश्च बाणारव्यवर्ज्ये च दरो वदोषाः एकां लक्षणं ज्यो
 तिषे तथैव अतीचारगेगुरोर्न विसिद्धः अतीचारगते ज्येष्ठे वर्जयेत् न दनेतरं विवाहादि
 शुकार्येषु श्रुष्टा विंशति वासरान् रत्नमालायां एकपंचनचयुग्मस्य उदराजीणि सप्त

चतुरष्टरष्टरष्टलाभदः द्वादशाजहृष्टभादिराशितोघातचंद्रइति कीर्तितोबुधैः नारदः भूवाणानंदहस्ताश्ररसादिगर्विरीलजाः वेदावसुशिवादित्याधातचंद्रोयथाक्रमं यात्रायां युद्धकार्येषु घातचंद्रं विवर्जयेत् विवाहे सर्वमंगल्ये चोलादौ व्रतबंधे ते घातचंद्रो नैव चिंत्य इति पाराशरो ब्रवीत् ज्योतिर्निबंधे विवाहचौलव्रतबंधेष्वेव पट्टभिद्ये केचन थैवराज्ञां सीमंतयात्रासु तथैव जाते नोचितं नीयैः स्वलघातचंद्रः नारदः अकालजा भवेत्प्रदिष्टुनी हीरहृष्टयः प्रत्यर्कं परिवेषं दवापाभध्वनयो यदि दोषाय मंगले नूनमदोषाथैव कालजाः अकालहृष्टिस्वरूपमाह लक्षः पौष्पादिचतुरो मासाः प्रोक्ता वृद्धिरकालजेति सार्द्धं धरः निघाते क्षितिचलने ग्रहभुक्ते राहुदशने चैव आपंचदिनात्कन्यापरिणीतानाशसु ययाति उत्कापाते इचापप्रवलघ्न नरजो धूमनिघातविघ्नहृष्टिप्रत्यर्कदोषादिसकलबुधैः स्थाज्यमेवैकरात्र दुःस्वप्न इति निमित्त्येष्टप्रभफलदशोऽर्जुनो भ्रातृबुद्धौ चोले मौं जीनिबंधे परिणयनविधौ सर्वदा स्थाज्यमेव ज्योतिः प्रकारोऽर्वाकूषोऽशनाश्वः संक्रांतेः पुण्यदाः परतः उपनयनव्रतयात्रापरिणयनादौ विवर्ज्यास्ताः गर्गः दिग्दाहे दिनमेकं च ग्रहे सप्तदिनानि तु भूकं पेचसमत्यन्त्रे त्वहमेव तु वर्जयेत् उत्कापाते विदिवसधुमेयं च दिनानि च वज्रपाते चैवार्द्धं न वर्जयेत् सर्वकर्मसु दर्शनादर्शनाद्वा दुक्तेष्वोः सप्तदिनं त्यजेत् यावत्कर्क

195A

तुङ्गमस्तावदशुभः समयो भवेत् अस्यापवादेऽङ्गुतसागरे अथ दिवसत्रयम
 ध्येऽनुदानीयं यदा भवति उत्पन्नदोषशमनं तदैव शंखाचार्थाः संबंधतत्वे भू
 यां ने दोषोऽस्मिन्नदिश्यादेस्तने सति अथापरिहार्ये कन्याया वैधव्ययोगे विशेषे
 ष्य उच्यते मार्कंडेयपुराणे बालवैधव्ययोगे तु कुंभद्विप्रतिमादिभिः कृत्या लग्नततः
 पश्चात्कन्योद्वाहेति चापरं तत्र पुनर्भूदोषाभाव उक्तेः विधानखंडे स्वरूपं लुपिय्य
 लानां च प्रतिमा विद्विषु रूपिणी तथा सह विवाहे तु पुनर्भूत्वनजयते स्वरूपेण
 संवादे विवाहात्सर्वकाले च चंद्रतारावलान्छिते विवाहे तैश्च मंजोरा कुंभेन सह चो
 दहेत् सत्रेण वेष्टयेत्पश्चाद्दशतनु विधानतः कुंभमालकृतं देहं तयोरेकांतमंदरे त
 तः कुंभं भवतिः सार्धं प्रमज्ज्य सलिलाशये ततो भिद्ये च नं कुर्यात्तं च षष्ठ्यववारिभिः कुं
 भप्रार्थना तत्रैव वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रययति जीवय कन्याश्चिरं
 पुत्रसखं कुरुदेहि विष्णुवरान् देवकन्यापालय डः खतः ततो लंकारवस्त्राढ्या
 वराय प्रतिपादयेत् इति कुंभविवाहः मूर्तिदानमपि तत्रैवोक्तं ब्राह्मणसाधुमा
 नं अथ संसृज्य विविधा रूपाः तस्मै दद्याद्विधानेन विष्णोर्भूतिं चतुर्भुजां सुवर्णसु
 वर्णेन चित्रराज्याथ वा पुनः निर्मितां रुचिरां शंखगदाचक्रां प्रसंयुतां दधानां वा
 ससीकमुदोत्पलमालिनी सदक्षिणां च तं दद्यान्मंत्रमेनमुदीरयेत् यन्मया प्राचि

जनुविध्वत्पायतिसमागमं विप्रोपविष शस्त्राद्यैर्हतोवाचिरत्नया प्राप्यमानं मदा
 द्यौरं यशः सौख्यधनाय हं वै धव्यायति दुःखाद्यानायाय सुखलब्धये वदु सो भाग्य
 लब्धोचमहाविघ्नो रिमातनुं सौवर्णीं निर्मितां शक्त्या तुभ्यां संप्रददेद्विज अन
 द्यायाहमस्मीति त्रिवारं प्रजयेदिति एवमस्त्विति तस्योक्तेः गृहीत्वा स्वगृहं विरोत्
 ततो वैवाहिकं कुर्याद्विधिदाता मृगीदृश अन्येय्यश्च यचिवाह ह्यक्षसिचनादयस्त
 त्रैवक्षेयाः विस्तारभयान्नोच्यंते अथ प्रति कुलादि ज्योतिर्निबंधे गरीः कृते तु नि
 श्रये यश्चात् मृत्युर्भवति कस्यचित् तदानमंगलं कुर्यात्कृते वैधव्यमाप्नुयात् ज्यो
 तिर्मैधातिथिः वध्वराय घटिते सानिश्चिते वरस्य गेदेय्ययकन्यकायाः मृत्युर्
 दित्या नमनुजस्य कस्यचित् तदानकार्यं रवलुमंगलं बुधैः मंगलं विवाहः स्मृतिः
 चंद्रिकायां कृते वाङ्निश्रये यश्चात् मृत्युर्मृत्युस्य गोत्रिणः तदानमंगलं कार्यं नो
 रो वैधव्यं दं ध्रुवं भृगुः वाग्दानानंतरं यत्र कुलयोः कस्यचित् मृतिः तदोदाहो नैव का
 र्यः स्ववंशस्य दोषतः शौनकः वरवध्वोः पिता माता पितृव्यश्च स होदरः एतेषां प्र
 तिकूलं च महाविघ्नप्रदं भवेत् पिता पितामहश्चैव माता चैव पितामही पितृव्यस्त्रीस
 तो भ्राता भगनीया विवाहता एभिरत्र विपत्तेश्च प्रति कुलं बुधैः स्मृतं अन्यैरपि वि
 पत्तेश्च केषुचिद्बुधैर्न तद्भवेत् मांडव्यः वाग्दानानंतरं माता पिता भ्राता विपद्यते

196A

विवाहो नैव कर्तव्यः स्ववंशहितमिदं सङ्कटे तु मेधातिथिः वाग्दानानेत
 रं यजकुलयोः कस्य किं नृमृतिः तदा संवत्सराद्धर्धविवाहः शुभदो भवेत् स्म
 तिरुत्तवल्गं पितुरवमशौचं स्यात्तद्वं मातुरेव मासत्रयं तु भार्यायास्तदधर्मात्पु
 जयोः अन्ये वा तु सपिंडानां माशौचं मासमीरितं तदंते शांतिकं कृत्वा ततो लग्ना वि
 धीयते ज्योतिः प्रकाशो प्रतिकूलेष्वपि कर्तव्यो विवाहो मासतः परं शांतिविधाय
 गां दत्वा वाग्दानादि चरेत्पुनः शांतिविनायके शांतिं तथा च मेधातिथिः संकटे स
 मनुप्राप्ते याज्ञवल्क्येन योगिनारांतिरुक्ता गणेशस्य कृत्वा तां शुभमाचरेदिति प्रतिकू
 लेन कर्तव्यो गणेशवद्वत्तत्रयं प्रतिकूलेष्वपि कर्तव्यमित्याहुर्वहुर्विस्तरे प्रतिकूलेष्वपि
 इत्येवमासमेकं विवर्जयेत् ज्योतिः सारे दुर्भिक्षे राष्ट्रभगे च पित्रोर्वा प्राणसंशये पौढ
 ग्रामयिकन्यायां नानुक्तं प्रतीक्ष्यते मेधातिथिः पुरुषत्रयपर्यंतं प्रतिकूलं स्वगो
 त्रिणां प्रवेशान्निर्गमस्तद्वत्तथा मुंडनमंडने व्रतकर्मण्यनिर्वर्त्य चरेन्नाभ्युदया किं
 यां आचर्येत नतः पुंसि पंचमे शुभदं भवेत् अथ रजोदोषे निर्णयः साधवीये
 प्रारंभात्प्राविवाहस्य मातायादिरजस्वला निवृत्तिस्तस्य कर्तव्या स हत्वश्रुतिचो
 दनात् प्रारंभान्नदीप्राहात् नादीमुप विवाहादावित्यादिना तस्यैव प्रारंभोक्तैः
 मेधातिथिः चौले च व्रतबंधे च विवाहे यत्नकर्मणि भार्यारजस्वलायस्य

नि.सिं.

१५७

197

१५

प्रायसस्यनरोभने वध्वरान्यतमयोर्जननीचेद्रजस्वला तस्याः शुद्धः परं कार्यं मा
गल्यं मनुरवकीर्त तद्धमनः विवाहव्रतच्छडासमातायदिरजस्वला तदानमंगलं
कार्यं शुद्धो कार्यं शुभे सुभिः गर्गः यास्योद्वाहादिमंगल्ये मातायदिरजस्वला तदा
नतत्प्रकृतैवमायुः क्षयकरं यतः नादीश्राद्धोत्तरं रजोदोषेन कपर्दिकारिकासु स्तुति
कोदवर्षयोः शुद्धे गां दद्यादोमपूर्वकं प्राप्ते कर्मणि शुद्धिः स्यादितरस्मिन्ननुशुध्य
ति अलाभे सुमुहूर्तस्य रजोदोषे च संगते श्रियं संयज्यतत्तु कुर्यात्प्राणिग्रहणमंग
हैमीमावमिजापय्यां श्रीसूक्तविधिना चयेत् प्रत्यचं पायसं हुत्वा अभिवेके समा
हरेदिति अथैकक्रियानिर्णयः जोतिर्विधेयं तद्धमनः एकमात्रजपोरेकवत्स
रे सुखस्तियोः न समानक्रियां कुर्यान्मातृभेदे विधियते एतेन एव स्य पुंसो विवाह
यमेकदिने निषिद्धं मातृभेदाभावात् नारदः पुत्रोद्वाहात्परं पुत्राविवाहो न ऋतु
त्रयो न तयो व्रतसु द्वाहं न मंडनादपि मंडनं वराहः विवाहस्त्येकजातानां वरमासा
भ्यंतरे यदि असंशयं त्रिभिर्वर्षैस्तत्रैकविधवा भवेत् मदनरत्ने वसिष्ठः न पुं
विवाहो धर्मः तत्र ये पि विवाहकार्यं इह तः प्रकुर्यात् न मंडनाद्यापि हि मंडनं च
जोत्रैकतायां यदि नावभेदः एकोदरभ्रातृविवाहस्तत्स्वसुर्न पारिग्रहं वि
धेयं वरमासां ध्ये मुनयः समस्तचूर्नमंडनं तेष्वेककार्यं मंडनं न तो कार्यं एतदयवा

राम
१५७

197A

स्तत्रैव ऋतुत्रयस्य मध्ये चेदन्यावस्य प्रवेशानंतदाद्येकोदरस्यापि विवाहस्तप्रश।
 स्यते सारावल्या फाल्गुने चैत्रमासे तु पुत्रोद्वाहोपने भेदावस्य कुर्वीत न तु त्रयवि-
 लवने संहिता प्रदीये ऊर्ध्वविवाहस्तनयस्य नैव कार्यो विवाहो दुहितः समाहं प्रप्राप्य कन्या
 असरा लयं च वध्वे रपात्स्वर्गहं न वाहो मदनरत्ने वसिष्ठः द्विरो भनत्वे कर्गहे पिने षष्ठ
 नंत पश्चान्न वभिदिने स्तः श्रावण कं रो भन मत्सवो वा द्वारे यवाचार्य विभेद तो वा एकोदर
 प्रस्ततानां नमि कार्यत्रयं भवेत् भिन्नोदर प्रस्ततानां नेति रातात यो ब्रवीत् ज्योतिर्निबंधे कात्या
 नः कलेजस्तत्रयादवीकु सुंडनात्र तमंडनं प्रवेशान्निर्गमने द्यान कथानंगलत्रयं कर्चेति मु
 नयः केचिदन्यस्मिन् तसरे लघु लघु वाग्गुवा कार्यं पूर्णं नेमि तिकंतु यत् पुत्रोद्वाहः प्र
 वेशाख्यः कन्योद्वाहस्त निर्गमः सुंडनं चौलमित्युक्तं ब्रतोद्वाहोत्तमंगलं चौलं सुंड
 नमेवोक्तं वर्जयेन्मंडनात्परं मौंजीचो भयतः कार्यो तो मौंजी न सुंडने श्रभिन्ने व
 तसरेपि स्यात्तदहस्तत्र भेदयेत् प्रभेदे तु विनाशः स्यान्न कुर्यादेकमंडपे संकटे तु
 कथं दिकारिका वराह मिहिरश्च उद्वाहपुत्री न पिता विदध्या तु अंतरस्योद्वाहनं क
 दापि यावच्चतुर्थं दिनमत्र पूर्व समाप्य चान्योद्वाहनं विदध्यात् कश्यपः मौंजीवं
 धस्तयोद्वाहः षणमासाभ्यंतरेपि च पुत्रोद्वाहनं कुर्वीत विभक्तानां न दोषस्तत्
 ज्योतिर्निबंधे विवाहमारभ्य चतुर्थि मध्ये श्राद्धं दिनं दर्शनं यदि स्यात् वैधव्यमा

नि.सिं.

१६८

198

ता

प्रोति तदाशुकन्याजीवेत्यनिश्चयनपत्न्यास्यात् तथा विवाहमध्ये यदि चेत् १
क्षयाहस्तत्रस्वमुख्याः पितरो नयंति कृते विवाहे परतस्तु कुर्यात्स्वध्या १
भिर्नतद्रुषयेत्येवाभद्रद्रुषयंति स्वधाभिरिति श्रुतेः सप्तमसि कविषये हेमाद्रौ शा
य्यायनिः प्रेतश्राद्धानि सर्वणि सपिंडीकरणं तथा अपहृष्यापि कवीत कर्तुं नादी
सुरवं द्विजः सपिं विनायकवर्षे दोषमाह तत्रैव उच्यते हृद्रे श्राद्धविदीनस्तु प्रेतश्राद्धा
नियमश्चरेत् सश्राद्धी नरके घोरे पितृभिः सह मज्जतीति मेधातिथिः प्रेतकर्मण्यनि
वर्त्यचरेत् नान्यदुदयक्रियां श्रावतर्पयंततः पुंसि पंचमेष्टुभद्रं भवेत् स्मृत्यंतरे सपिंडी
करणादवगम्य कृत्यपि पुनरप्ययत्नं कृत्यंते कथं पुनरनिषेधनात् स्मृतिसारावल्या
भ्रातृपुत्रे स्वसृगे भ्रातृस्वसृपुत्रे तथा एकस्मिन् मंडपे चैव न कुर्यान्मंडनद्वयं सादर
विषयमेतत् यमः एकोदरप्रसूतानामेकस्मिन् वासरे पुनः विवाहे नैव कुर्यात् १
मंडनोपरिमंडनं गार्ग्यः भ्रातृपुत्रे स्वसृपुत्रे भ्रातृपुत्रे तथा न कुर्यान्मंगलं किंचिदे
कस्मिन्मंडपे हनि एकस्मिन् वासरे प्राप्ते कुर्यात् यामलजातयोः क्षौरं चैव विवाहं च
मौजीबंधनमेव च ज्योतिर्विवरणे एकोदरयोर्द्वयोरेकदिनोद्धरने भवेत् नाराः नष्टं
रे एकदिने केष्याहुः संकटे च श्रुतेः अर्धं विवाहाद्युभदोनरस्य नारी विवाहो नष्टश्च
अयं स्यात् नारी विवाहात्तदहोपि प्रशस्तं नरस्य पाणिग्रहमाहुः राचायाः भिन्नमात्तजयो

राम

१६८

तत् एकवासरे विवाहमाहमेधातिथिः पृथक्मातृजयोः कार्योविवाहस्त्वेकवासरे
 पुत्रमिमं संये कार्यं पृथग्वेदिकयोस्तथापुष्यपट्टिकयोः कार्योदरीनं नशिरस्थयाः भ
 नीभ्यामुभाभ्यांचयावत्सप्तपदी भवेत् यमयोस्तु विविधः भट्टकारिकायां एक
 सिमन्वत्सरे चैव वासरे संये तथा कर्त्तव्यं मंगलं स्वस्त्राभ्यां जोर्धमलजा तयोः
 ज्योतिर्निबंधे नारकः प्रत्युद्वाहो नैव कार्यो नैकस्मै दुहितृद्वयं नैव कजन्ययोः पुं
 सोरेकजन्ये तु कन्यके तथा नैवं कदाचिदुद्वाहो नैकदा संये न द्वयं नैव कजन्ये तु कन्ये
 के पुत्रयोरेकन्ययोः न पुत्रीद्वयमेकस्मै प्रदद्यात् कदाचनेति कन्यापारजोदरीने तु
 अप्यराकै संवर्तः माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथा चैव च त्रयस्तने नरकं याति इ
 द्वा कन्यारजस्यलां हारीतः पितुर्गोहे तु यावन्पारजः पश्यत्यसंस्कृता सा कन्या ह
 वली ज्ञेया तत्पतिं वलीयतिः देवलात्रिकश्रपयाः पूर्वार्द्धे तदेव भूराहत्या पितुस्त
 स्याः सा कन्या हवली स्मृता यस्तां समुद्धेत् कन्यां ब्राह्मणो ज्ञान इवैलः अग्राद्वेय
 मया दूतेयं तं विद्याद्वलीयति माधवीये वौधायनः जीणि वर्धाम्भु मतीकांक्षेत
 पितृणां सनं विष्णुः ऋतुत्रयमुपास्ये च कन्या कार्यात्स्वयं वरं अगवरस्य दोषा
 नावमाह यमः कन्या द्वादशवर्षाणि या प्रदत्ता वसेत्त गृहे भूराहत्या पितुस्तस्याः

नि.सिं.
१६५

१९९
दि

साकन्यावरयेत्स्वयं एवं चोपनतां यत्नीनामन्येत् कदाचन ननु तां वंधकीं विद्यात्म
नुस्वायं भुवोन्नवीत् मनुः अलंकारं नाददीत् पितृदत्तं स्वयं वधे पितृदत्तं मातृदत्तं ते
यस्याद्यदितं हरेत् चरंप्रत्याहापिजेन दद्याच्छ्रुतां लुकन्यामृतं मतीहरन् महिस्वा
म्यादतिर्कमेदत्तनां प्रतिबोधनात् अत्र प्रयाश्चित्तं सक्तं माश्रलायनो न कन्यामृतं
मतीश्रुतां कृत्यानिःकृतिमात्मनः श्रुद्धिं च कारयित्वा तामुद्धेदानं संधीः पितृश्रु
तस्वयं पुत्र्यास्तगणयेदादितः संधीः दानावधिगृहेयतात्यालये च रजावती दद्या
त्तदहत् संख्यायाः शक्तः कन्यापितायादि दानं त्वेकायिनिः स्वनदानेन तस्यायथा
विधि दद्याद्वास्तु एवमतिनिस्तः सदक्षिणं तस्यातीतं संख्येष्टवराय प्रतियादये
त्तु दुष्येति दिने कन्यारात्रौ पीतागवाययः अष्टरजसे दद्यात्कन्यायेरत्नभूषणं
तामुद्धरन् चरन् प्रापि कृष्णं डेर्जुं द्यात्तु द्विषा इति मदनपारेजाते यज्ञपर्श्वः विवाहे वि
तते तं त्रेहोमकाल उपस्थिते कन्यामृतं मती दृष्ट्वा कथं कर्त्तव्यं नियातिकाः स्नापयि
त्वा तं कन्यामर्चयित्वा यथाविधिः पुंजानमाहुतिं कृत्वा ततस्तत्र प्रवर्त्तयेत् अत्र गं
धर्वाद्यद्यो विवाहास्तद्व्यवस्थाया करेण संकटे पेशाचमाह माधवीयेवत्सः सर्वा
पाथैरसाध्यास्यान्सुकन्यायुरुषस्यया चौर्येणापि विवाहेन सा विवाह्यारहः स्थिता

राम
१६५

199A

गांधर्वादिविवाहेष्वप्युदकपर्वकंदानमाह तत्रैव यमः नौदकेन नवाचारकन्या
 याः पतिरुच्यते पारिगृह्णसंस्कारात्पतित्वं सप्तमेयदे पारारारमाधवीयेदे
 वलोपि गांधर्वादिविवाहेषु पुनर्वैवाहिको विधिः कर्तव्यश्च त्रिभिर्वर्णैः सम
 र्थेनाग्निसाक्षिकं तत्रैव परिशिष्टे गांधर्वात्तरपेराचा विवाहाराक्षसश्चयः पूर्व
 परिश्रयसेवां यश्चादौ विधीयते अतो होमादावक्तृते भार्यात्वाभावाद्दरांतरायदेवाः
 तथा च तत्रैव वसिष्ठवैधायनौ वलादयहता कन्यामंत्रे यदि न संस्कृता अन्यस्मै
 विधिवद्देया यथा कन्या तथैव सेति मदनपारिजातेनारदः पारिगृह्णसंस्कारां
 नियतं दारस्तथा तेषां मिथ्या च विज्ञेया विहाङ्गैः सप्तमेयदे स्मृतिचंद्रोक्त्या मय
 राकैचैवं आरौचैतुयाशबल्यः दाने विवाहे यज्ञे च संग्रमे देशविज्ञेये अप्रापद्यपि
 च कथायां सद्यः शौचविधीयते केषां मित्यपेक्षेते ब्रह्मपुराणे उक्तं दातुः प्रतिगृ
 ह्णतुश्च कन्या दाने च नो भवेत् विवाहपिष्ठा कन्यायाः लाजा होमादिकर्मणि
 ति ब्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे आरध्वेस्तनवं न स्याद नारध्वे तु स्त
 नकमिति विष्णुवचनाच्च आरंभसेनैवोक्तः प्रारंभे वरणं यज्ञे संकल्यो ब्रतस
 त्रयोः नां दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रियेति वरणमिति मधुयर्कय

रं गृहीतमधुपर्कस्यायजमानाच्चरुत्विजः यस्मादरोचेतिपतितेन भवेत्तिति निश्चय
इति ब्राह्मोक्तेः मधुपर्कात्सर्वं तदभवत्येवासेचमिति मुखिविवेकः रामांशभाष्ये
येवं नादीमुरवावधिस्मृत्यन्तरे एकविंशत्यहर्षज्ञे विवाहोदशावासरः त्रिषट्चो
लौपनयनेनादीम्राड्विधीयते प्रारंभावेपिलग्नान्तराभावेगद्यविष्णुः नदेवप्र
तिष्ठाविवाहयोः पूर्वसंभृतयोरपीति अत्रयायास्त्रिंशत्माह मदनपारिजाते विष्णुः
अनारध्यविशुध्यर्थं कृष्णं डैर्जुहुयात्तच्छतं गां दद्यात्पंचगत्मासीततः सतकी सं
गृह्येपि संकटे समनुप्राप्ते सतके समुपागते कृष्णं डैर्भिर्घृतं हुत्वा गां च दद्यात्पय
स्विनी चोपनयनोद्वाहप्रतिष्ठादिकमाचरेत् यदेव सतकप्रतिष्ठादेवाभ्युदय
क्रिया अन्नादिषु विशेषः षड्विंशत्यहर्षे विवाहोत्सवयज्ञेष्टं अत्र रामतस्तत
के परैरन्नं प्रदातव्यं भोक्तव्यं च द्विजोत्तमैः परैरसगोत्रैः भुंजीतेषु त्रिषु त्वं त
रामतस्ततके अन्यगोहोदकाचांता सर्वे ते शुचयः स्मृताः एतदरोचान् सर्वं मघ
यक्त्वा च विषयं तत्रैव शेषमन्नं त्याज्यमित्यर्थः यद्यक्त्वा तेन ब्रह्मस्यतिराह
विवाहोत्सवयज्ञेष्टं तत्र रामतस्ततके पूर्वसंकल्पितान्नेषु दोषः परिकीर्ति
त इति धर्मार्थविराहकरणफलमुक्तं महाभारते ज्ञात्वा स्याद्विज्ञेयसामर्थ्यादे

200A

कं चोद्वाहयेद्दिजं तेनाप्याप्नोति तत्स्थानं शिवभक्तौ नरोद्धवं अपरावर्के दक्षः माता
 पितृविहीनं तसंस्कारोद्वाहनादिभिः यः स्थापयति तस्येह पुण्यं संख्या न विद्यते ।
 मदनरत्ने भविष्ये विवाहादिक्रिया सिद्धि काराण्यः प्रयच्छति धर्मतः सोऽस्त्वमेध
 फलं लभेत् कन्या गृहे भोजन न वेधो पितृवैव प्रपन्नजायां तु कन्यायां न भुंजीत क
 दाचन दौहित्रस्य मुखं दृष्ट्वा किमर्थं मनुरोचति अपरावर्के आदिपुराणे विष्णु
 जामातरं मन्येन्नस्य कोपेन कारयेत् अप्रजायां तु कन्यायां नाश्रीयात्तस्य चैव
 हेतुस्तदेयानवेकन्या दत्त्वा प्रीयात्कदाचन अयं भुंजीत मोहाच्चैतस्य पारो नरेव से
 त् तत्रैव कस्यपः अहं तं यत्र निर्मुक्तं वासः प्रोक्तं स्वयं भुया शस्तं तन्मौगलिके
 तावत्कालं न सर्वदा यत्र निर्मुक्तं नृत्तं विवाहमध्ये सिद्धासह भोजनेऽपि न दोषः
 इत्याह हेमाद्रौ प्रायश्चित्तकाण्डे गालवः विवाहकाले यात्रायां यथैव समाकुले
 असहयो भवेद्दिप्रसदा कार्यं हि जन्यभिः एकया न समाहोरात्र कपागे च भोज
 नं विवाहे यथियात्रायां कृत्वा विप्रानदोषभाक् अमया दोषमाप्नोति यश्चाश्चंद्रा
 यणं चरेत् मिताभरायामप्येवं रत्नमालायां मूलमैत्रभरो हिणी करैः योष्म
 मासुतमद्योत्तराचितैः भोमसौरिरविचारवर्जिते पारिषीडनविधिर्विधीयते ।
 अजानिष्टनक्षत्रादीदानमुक्तं ज्योतिषे विपतारे गुंडद्यान्निधनेति लकाचनं प्रत्य

नि.सिं.
२०१

201

रेलवलंदद्याच्छांगदद्याच्चिजन्मसु चंडेचरांवलवलंचतारेनिथिविरुद्धेत्वय
तंडुलाश्च धान्यंचदद्यात्करणेचवारेयोगेचिरुद्धेकनकंप्रदेयं विवाहेमंडपमा
हवशिष्टः षोडशारत्नकंकुर्याच्चतुद्वारोपशोभितं पेंडपंतोरणेधुक्कं तत्रवेदिं
प्रकल्पयेत् अष्टहस्ततरचयेन्मंडपंवादिषट्करं देवतमनोहरः चित्राचिरारचा
शततारकाश्विनीज्येष्ठाभरणयोस्यभवाच्चतुष्टयंहित्वाप्रशस्तफलतैलवेदिका
प्रदानकंकंडनमंडपादिकं हेमाद्रौव्यासः कुंडनदलनयवारकमंडपमृद्धेदिचर्ण
काद्यारिवलं तत्संवधिगतागतमृक्षेवैवाहिकेकुर्यात् यवारकंचिकसारइति
प्रसिद्धं उद्धर्तनंवेवाहिकेतुदिवसेष्टमेवायतिथौष्टमे चतुर्थिकंप्रकवीतवि
धिदृष्टेनकर्मणा वेदीमाहनारदः हस्ताद्धितांचतुर्दत्तैश्चतुरस्रांसमंततः संभैश्च
तुर्भिः सस्रदंशवामभागेसयनि समानयाचतुर्दिक्षुसोपानैरुपशोभिता प्रागु
दकप्रचणारंभास्तंभहंसस्रकादिभिः एवंविधामातुनुक्षेमिषुनं सारिनिवेदिका
मिति सप्रारवमते मंगलेषुचसर्वेषुमंडपोगृहेमानतः कार्यः षोडशहस्तावान्
नहस्तादशावधिसंभैः श्रुतभिरेवत्रवेदीमध्येप्रतिष्ठिता हस्तावध्याः सोपानं
पश्चिमतः उपरिभागेउक्तपरिमाणोद्धितं अथमृदाहरणं ज्योतिर्निबंधेनारदः
कर्तव्यंमंगलेष्टादौमंगलायांकुर्येण नवमेसप्तमेवापिपंचमोदिवसेपिवा ।

राम
२०१

201A
 तृतीयेकीजनक्षत्रे शुभ वारे शुभोदये सम्यग्गृहाण्यंलं कृत्य चित्तानध्वजतो
 रणैः सहवादित्र नृत्ताभे गीत्वा प्रागुत्तरांदिशं तत्र मृत्तिका स्तुतिं कृत्वा गृहीत्वा पु
 नरणातः मन्मथे च यवा वैशाखे पुत्रेष्टु योजयेत् अनेकवीजसंयुक्ता तोय पुष्पो
 पशान्मिता शोनकः आधानं गर्भसंस्कारं जातकर्म च नाम च हित्वा न्यत्र विधात
 व्यंमंगले करवापनं हस्त्यतिः आत्यंतिकेष्टु कार्येष्टु कार्ये सद्यो करार्पणं अ
 त्रेव वाग्दानं हरिद्रा वंदनं च कार्यं ज्योतिः प्रकारे च तुर्यो मंडपः श्रेष्ठः सप्तमः ये च
 मस्तथा नवमैकादश श्रेष्ठौ वष्ट तृतीयके विवाहं नैरवोदये वा कन्या वरणमाच
 रेत् वरस्यापि वरणमाह चंडेश्वरः उपवीतं फलं पुष्पं वा सांसि विविधानां च देयं
 वराय वरणे कन्या भ्रात्रादिजेन वेति वाग्दानेन तं वरमरणे परार्के स्मृतिचोदिकायां
 च चरिष्टः अर्द्धिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतोर्ध्वं वरो यदि न च मंत्रोपनीता स्यात् कमा
 रीपितुरेव सा यत्न नारदः उद्धाहितापि सा कन्या न चेत्संप्राप्तमैष्टुना पुनः संस्कार
 मर्हति यथा तथैव सेति यच्च कात्यायनः वरो जधन्यजातीयः यत्ति तत्की वराववा
 विकर्मस्यः सगोजो वा दासो दीर्घी मयो विवा उदापि देया सा न्यस्मै सदा वरणं भू
 यणेति इदं कलौ निषिद्धं देवरेणुसुतोत्पत्तिर्दत्ता कन्या न दायते इत्यादित्यपुराणे

नि.सिं.
२२

202 कलौ निवेधान् दत्ताशब्द उदाहरः (उदायाः पुनरुदाहमिति हेमाद्रावुक्तेः दशांतरगम
नैतुकात्यायनः वरयित्वा त्रयः कश्चित् प्रणयेतुरुद्योयदा ज्ञत्वा गमांस्तीनतीत्यकन्या
न्यवरयेदं अपराकेनारदोपि पतिगृह्यतुयः कन्यावरोदेशांतरं व्रजेत् त्रीन् वृत्तान् सम
तिक्रम्य कन्यान्यवरयेदं शुक्लदानेन मनुवक्ष्ये कन्यायां दत्तमुक्तायां म्रियेत यदि मुक्ता
दः देवरायप्रदातव्यायदिकन्यातुमन्यते चंद्रकायां कात्यायनः प्रदाय मुक्तां गच्छेद्यः कन्या
यास्तु धनं तथा धार्यासा चर्षमेकं तदेयान्यस्मै विधानतः अनेकेभ्यो हि दत्तायामनुदा
यातु तत्रैवै सर्वो गतश्च सर्वेषां लभेता धवरस्ततो यश्चादरेण दत्तं तस्या प्रतिलालेन सः अ
था गच्छेन्नवोदायां दत्तं सर्ववरोदरेत् यातु बल्यः दत्तामपि हरेत्सर्वो यश्च दत्तं दत्तं
जेत् सर्वस्य दोषसत्त्वे इदमिति विज्ञानेन सः संवधत त्वेव शिष्यः कुलशीलविहीनस्य
यश्चाद्विपत्तिस्तस्य च अपस्मारिचिधर्मस्य रोगिणो वेद्यधारिणो दत्तामपि हरेत्कन्या
सगोत्रोदांतश्चैव च मनुः षण्डाधवधिरदीनो विवाहो स्तियथोचितं विवाहासंभवेतेषां
कनिष्ठो विवाहेतदा पितृव्यपुत्रेसापन्नेपरदारसुतेषु च विवाहाधानयज्ञादीपरिवे
दोनद्वयं अन्यद्वक्तव्यं विस्तरभीतेर्नोच्यते इति दिक् अत्र नां दीप्रादेविशेषतदाधिका
रि विशेषं चाग्रे वक्ष्यामः इदं चाप्यविवाहेयिता कुर्यात् द्वितीयादौ वरणवनां दीप्रादं पि
ता कुर्यादाद्येयाणि गृहे पुनः अत्र ऊर्द्धं प्रकृवीत स्वयमेव तनां दिकमिति स्मृतः त्रिकां
डमंडनोपि पित्रोस्तु जीवतोः कुर्यात्पुनः प्राणिगृहं यदा पितुर्न दीमुखं प्रादं नोक्तं

राम
२२

स्यामनीविभिरिति रेणुकायनमाह नारदः षडंगुलमिति तैत्तिरीयसंहितादशांशुलमायतेक
 द्यात्पाता लघतामपात्रं तदशभिर्मलेः ताम्रपात्रैर्जलैः पूर्णं न तपात्रे वाथवाश्रमे मंडला
 धौ दयंवीत्येव सत्रविनिर्दिष्टे तजमंजः मुख्यत्वमसि यंत्राणां ब्रह्मण निर्मितं
 पुरा भावाभावायदं पत्न्योः कालसाधनकारिणमिति वरस्य मधुपर्कमाह याज्ञव
 ल्क्यः प्रतिसंवत्सरं त्वर्याः स्वातकाचार्यपार्थिवाः प्रियो विवाहश्च तथा यज्ञं प्रत्यत्वि
 जः पुनः अत्र विरोधो गृह्यपरिशिष्टे वरस्य भावेच्छारवातच्छरवागृह्यचोदितः म
 धुपर्कः प्रदानमोह्यन्यशाखेयिदातरि अत्र वरदात्तशब्दोऽत्र त्विगाद्युपलक्षणं तदा
 हुः अर्च्यं शाखयामधुपर्क इति अर्च्यस्य यच्छारवीयं कर्म तच्छारव्यामधुपर्क इति
 याज्ञिकाः जयंतस्तु वराण्यवत्सर्वजयजमानशाखयेवमधुपर्क इत्याह तत्तु नाद्रियते च द्याः
 अत्र यंचाशतभवेद्द्रुहा तदर्धेन तु विष्टर इत्यादि गृह्यपरिशिष्टो देविष्टरादिलक्षणं म
 धुपर्कादिविधिश्च गृह्याद्देयः कन्यादाने प्रयितमह पूर्व कृतं स्मृतं तर्ह्यसारे नादी मु
 खे विवाहे च अत्र प्रयितामह पूर्वकं नाम सकार्त्तये द्विद्वानन्यत्र पितृ पूर्वकं नादी सुरेव
 इति वक्तुं चाद्यतिरिक्तविषयं गृह्यपरिशिष्टे पित्राद्यानुलोम्यान्नात् आसः भुक्तासु
 ददेत्कन्यासा वित्री गृहणं तथा उपोषितः सतां दद्यादर्चिताया द्विजाय न भुक्तेति मधु
 पर्कवैधव्यभोजनपरं गृह्यपरिशिष्टे कन्या वरयमाणानामधर्मा विधीयते प्रत्यङ्

नि.सिं.
२३

ता १

203

सुरवावरपंतिप्रतिगृह्णन्ति प्राञ्जराः मदनरत्ने ऋष्यशृंगः वरगोजं समुच्चार्य प्रक्षिप्तं
हसर्वकं नाम संकीर्तयेद्विद्वान् कन्यो याश्चैव मेव हि तिष्ठेत् सर्वसुरवादातावरः प्रत्यङ्-
सुरवाभवेत् मधुपर्कं र्चितायेनांतस्मै दद्यात्सदक्षिणं उदयाजंतो गृह्य मंत्रेणानेन
दापयेत् गौरीकन्यो मिमांसा विप्रयथाशक्ति विभूषितं गोजायशर्मणोऽभ्युदंतं विप्रसमा-
श्रय भूमिं गोश्चैव दासी च वा सोऽसि च स्वाशक्तिः महिषी वा जिनश्चैव दद्यात्स्वर्णम-
णीनपि स्तूततः स्वगृह्यविधिना होमाद्यं कर्म कारयेत् यथाचरं विधेयानि मंगल्यकर-
तुकानि च एतत्कन्यादानं त्रिः कार्यमिति शौनकः गृहप्रवेशनीय होमे विशेषमाह आश्र-
लायनः अर्द्धरात्रे व्यतीपाते तु परेष्टुः प्रातरेव हि गृहप्रवेशनीयः स्यादिति यज्ञविदे विदुः
रिति औप्रासिन होमे विशेषमाह शौनकः यदि राजौ विवाहाग्निरुत्पन्नः स्यात्तथा सति उ-
पक्रम्योत्तरस्याहः सायं परिचरेदं यदि राजौ नवनाडीमध्येऽग्न्युत्पत्तिस्तदा तदेव होमार्हः
तदुत्तरं चेत्परदिने सायमारंभ इति सदृशं न भाव्ये उक्तं अथ देवकोत्थापनं समेव दिवसे
कुर्यात् देवकोत्थापनं बुधः षष्ठं च मिषमं नेष्टं मुक्तापंचमं सप्तमौ निर्णीय दीपे गार्ग्यः
नांदी प्राद्वेक्षते यश्चाष्टावन्मातृदिसर्जनं दर्शं प्राद्वेक्षेत् प्राद्वं स्नानं रीतोदकेन च अथ
सकं स्वधाकारं नित्यं प्राद्वं तथैव च ब्रह्मयज्ञं चाध्ययनं नदीसीमा तिलं घृतं उपवास
व्रतं चैव प्राद्वं भोजं मेव च नैव कर्तुं सपिंडाश्च मंडयोद्दासना विधिः हस्तस्य तिः तीर्थं

राम
२३

203A

सं विवाहे याजायां संग्रामे देशविप्लवे नगरग्रामदाहे च स्पृष्टास्य छिन्नं दुष्यति योग्यपात्रव
 ल्क्यः न स्नायादुत्सवेतीते संगलं चिनिवर्त्य च अन्नं ब्रज्यसह दंष्ट्रं च चित्तेष्टदेवतां
 ज्योतिषे स्नानं सचैलं तिलमिश्रकर्मप्रेतानुपानं वलशप्रदानं अर्घ्यवतीर्षी मरदर्शनं
 च विवर्जयेन्मंगलतोदमेकं मासयद्द्विविवाहादौ व्रतप्रारंभेण च जीर्णभांडादिनस्या
 ज्यंगृहसार्जनं तथा ऊर्ध्वविवाहासु त्रस्य तथा च व्रतबंधनात् प्रात्मानो मंडनं नैव वर्षं
 वर्षाद्धमेव च अभ्यंगे स्नाने चैव विवाहे सुत्रजन्मनि मांगल्येष्वाच सर्वेषु न धार्ये गो
 पिचंदनं ज्योतिर्निबन्धे उद्वादात्प्रथमे शुचौ यदि वसद्धर्तृगृहे कन्यका हन्यात्तज्जननी
 क्षये निजतनुं ज्येष्ठे पतिज्येष्ठकं पौषे च स्वसरं पतिं च मलिने चैव जस्य पित्राले तिष्ठंति पि
 तरं निहंति न भयं तेष्वाभवे भवेत् निबन्धे विवाहात्प्रथमे पौषे आषाढे वा धिमासके
 न सा भर्तृगृतिष्ठे चैत्रे पितृगृहे तथा द्वे मासौ स संतरे विवाहव्रतच्छडासु वर्षमर्द्धतदर्द्ध
 कं पिंडदानं मृदास्नानं न कुर्यात्तिलतर्पणं अथ वधप्रवेशः जयंतं गो मार्गशीर्षे त
 था माघे मधवे ज्येष्ठे संज्ञके सुप्रशस्ते भवेद्देवमप्रवेशो न वयोधितो नारदः आरभ्यो
 द्वादशदिवसाद्यष्टे वाप्यष्टमे दिने वधप्रवेशसंपत्त्ये दशमेप्यसमे दिने संग्रहे विवाहमा
 रभ्य वधप्रवेशो पुनरिति यो योऽरावासरान्तरात् ऊर्ध्वततो के पुजिपंचमांतादतः परस्ता
 न्नियमो न चास्ति नारदः समे वर्षे समे मासे यदि नारी गृहं व्रजेत् आयुष्यं हरते भर्तुः

204

सानामरणं व्रजेत प्रयोमरत्नेत वधप्रवेशः प्रथमेतत्तीये शुभप्रदः पंचमेथवा
 द्विदितीया केवाथचतुर्थकेवाष्ट्ये वियोगामपक्षदुःखदः स्यादित्युक्तं तत्र मूलं चिं
 त्यं हृद्वरिष्ठोपि वष्टाष्टमे दशमे दिने वा विवाहमारभ्य वधप्रवेशः पंचांगसं
 शुद्धिदिनं चिनापि विधावसक्तो वणेपि कार्यं क्लृप्तः स्वभवनपुरप्रवेशो देशानां
 चिह्नवेतयोद्वाहे नववध्वा गृहगमने प्रतिशुक्र विचारणानास्ति मांडवः नित्यया
 ने गृहे जीर्णो प्राशनान्तेषु सप्तसु च धूपप्रवेशमागत्ये नमोदंगुरुशुक्रयोः ज्योतिः
 प्रकाशो वा मे शुक्रनवोढायाः सखं हानिमुद्धरिणे धनं धाम्यं च यष्टस्य सर्वनाशः
 पुरस्थिते नवोढायास्तु वैधव्यं यदुक्तं संस्मरं भगो तदेव विवर्धयेत्तं यकेवलं तद्विरा
 गमे सर्वतोभ्युदिते शुक्रे प्रयायादक्षिणायरे पश्चादभ्युदते चैव यायात्सर्वोत्तरे दिशो
 विवहारात्ततो योद्मात्क्रमांश्च वणाच्च पुगे हस्तत्रये मूलमघोत्ररासु पुष्ये च मेजे च
 वधप्रवेशो रित्ते नरे वत्सर्ककुजे च रास्तः गर्गः व्यतीपाते च संक्रांतौ गृहलो वेधता
 यपि श्राद्धं विना शुभं नैव प्राप्तकालेपि मानवः तथा अमासंक्रांतिविश्रादौ प्राप्तका
 लेपि नाचरेदिति अथ हिरागमनं ऋभो ह्ये माघफाल्गुण वैशाखे शुक्लपक्षे शुभे
 दिने शुक्लादित्य विश्रद्धो स्यान्नित्यं पत्नी हिरागमः वादरायणः नाहारां शुद्धिनोत्तरादि

 राम
 २०४

गुरुब्रह्मानराधाश्विनीराक्षेभास्करवायुचिष्ठवरुणावाक्येप्रशस्तेतिथौ कुंभाजालिग
 तेरवौशुभकरेप्राप्तेदयेभार्गवेजीतास्फुजितादिनेनचवधवेरमप्रवेशःशुभः अथपुनर्विवा
 हः श्रीधरीये पुनर्विवाहं वध्यामिदं पत्न्योः शुभं त्रिदं लग्नें डेलग्नयोदोषेग्रहतारादि
 संभवे अन्येष्टशुभकालेषु दुष्टयोगादिसंभवे विवाहेवापिदं पत्न्योराशौचादिसमुद्भवेत् ।
 तस्यदोषस्यशांत्यर्थं पुनर्विवाहमिष्यते याज्ञवल्क्यः सुरापीत्याधिताधस्तावध्याय्यध्याय्य
 वदास्त्रीप्रसूत्याधिवेत्तव्यापुरुषद्वेष्टिणीतया मनः वध्याष्टमेधिवेत्तव्यादशमेतुमत्तप्रजा
 एकदशेस्त्रीजननीसद्यस्तत्प्रियवादिनीति संग्रहेतुप्रजादशमेवर्षेस्त्रीप्रजाद्वादशमन्यजेत्
 मत्तप्रजांपंचदशेसद्यस्तत्प्रियवादिनी एकासुक्तम्यकामार्थमन्यं लब्धं च यश्चानि समर्थ
 स्तोषयित्वा र्थैः सर्वोद्यमयरां वदेत् याज्ञवल्क्यः आतासंपादिनीदशावीरस्तत्प्रियवादिनी ।
 त्यजत्तदप्यस्त तीयांशमद्रमोभरणं स्त्रियाः मनः अधिविचित्रातयानारीनिर्गच्छेद्रोषिताग्रा
 दात् सासद्यः सन्निरोद्धव्याज्यावाकुलसन्निधाविति हेमाद्रौकात्यायनः अग्निशिष्टा
 दिष्टुष्टुवां वहुभार्थः सवर्णियाकारयेत्तद्वहुत्वं वैज्येष्टयागर्हितानचेति याज्ञवल्क्यः
 सत्यामन्यासवर्णयां धर्मकार्यं न कारयेत् सवर्णसुविधौ धर्म्यं ज्येष्ठयानविनेतरा द्विती
 यविवाहो माश्रयिमाह कात्यायनः सदोराभ्यान्युनर्दारुद्वौ दुंकार एतन्तरात् यदिष्ट
 दग्निमान् कलंकहोमोस्य विधीयते स्वाग्नावेव भवेद्दोमो लौकिकेन कदाचन त्रिवं

मा

नि.सिं.

२५

205

पत्र

३ मं ३ नो पि आद्यायां विद्यमानायां द्वितीया मुद्देद्यदि तदा वैवाहिकं कुर्यादावसथे
निमान् सुदर्शनभाष्ये तु द्वितीयविवाहो लौकिके एव न सर्वोपासने रत्नं रदं चासंभवेत्
अथ अग्निद्वयसंसर्गाः कार्यः तमेवाहरो न कः अथाग्न्यागं ह्ययो र्यो गं सपत्नी मेदजात
योः सहाधिकारसिध्यर्थं महं वक्ष्यामि रौ न कः अरो गामुद्देत्कं न्यो धर्म लोपभयात्
स्वयं कृतं विवाहे च त्रतां ते तु परे हनिष्ये कस्य ङिलयोरग्नी समाधाय यथाविधिः तत्र
कृत्वा ज्यभागां तमचाधानादिकं ततः जुहुयात्पूर्वापत्यग्नौ तया चारध आहुतीः अग्नि
मौले पुरोहितं सक्तं न च कृत्वा चेन तु समिधेन समाधाय अयं ते यो निरित्य चा पुन्यचरो हेत्य
नया कनिष्ठा नो निधाय तं आज्यभागां तं तं त्रादि कृत्वा रभ्य तदादितः समन्वारधरता
भ्यां अग्नीभ्यां जुहुयाद्ध्यतं चतुर्गृहीतमेताभिर्ऋग्भिः बह्विर्यथाक्रमं अग्नावग्नौ
अरतीत्यग्निनाग्निः समिधयते अस्तीदमिति तत्सभिः पाहिनो अग्नि एकया ततः र्वि
ष्टकदारभ्य होमरोधं समापयेत् गोयुगं दक्षिणादेया प्रोत्रिया पाहिताग्नेये यत्सारे का
दिमन्ताग्नाते नैव तां पुनः प्रादधीतान्यया सार्धमाधानविधिना गृहीति वो धाय न स
त् अथ यदि गृहस्थो द्वे भार्ये विदेत कथं तत्र कुर्यादिति यस्मिन्काले विदेनो भावनीय
रिचरेदयराग्निमुप समाधाय परिक्रिया जीविरूप्य सचि चतुर्गृहीतं गृहीत्वान्यार
ध्यायां जुहोति ५

राम
२०५

205A

क्षाजंतदेतदार्त्तस्यातिवैलंब्याश्रद्धाशुक्तस्यभवतीतिवैधा यनोक्तैरिति मदनरत्नेह
 द्वगार्ग्यः युष्याग्नेमुतरादित्ययोधमजेष्वचित्रार्कद्विदेवेंडुभेष्ट कुर्युर्वद्वाधानमायं
 वसंतग्रीष्मोष्णान्तैवेवविप्रादिवणाः कालादरेः अग्निहोत्रं दर्शपूर्णमासावप्युत्तरा
 यतोऽपक्रम्ययथाकालमुपासीरन् द्विजातयः सोमंचयश्चबंधचसर्वाश्रविहृती
 रयि सोम्यायनेयथाकालंविदध्मुर्हमेधिनः अत्रविशेषः सर्वमुक्तः अग्निहोत्रका
 लउक्तंछंदोगपरिशिष्टे उदतेनुदितेचैवसमयाध्युषितेतथा सर्वथावर्त्ततेयज्ञेतीयं
 वैदिकीश्रुतिः एषोस्वरूपंतत्रैव रात्रेस्तथोऽरोभागेगगहनक्षत्रमख्यते कालेचनुदितं
 ज्ञात्वाहोमंकुर्याद्विचक्षणः तथाप्रभातसमयेनष्टेनक्षत्रमंडले रविर्धावन्नदृश्येतस
 मयाध्युषितंचत्तरेरवामात्रंप्रदृश्येतरस्मिभिश्चासमान्वितः उदितंतद्विजानीयात्त
 त्रहोमंप्रकल्पयेत् आश्रुत्वायनः उयोदयंमुधितउदितेवा सायंतसएवश्रुत्वा
 तेहोमइति सएव प्रदोषांतोहोमकालः संगवातः प्रतरिति छंदोगपरिशिष्टे या
 वत्समाभावांतनभस्य आगिसर्वतः नचलोहितिमापेतितावत्सायंतुरुह्यते ओ
 पासनेप्येवंतस्याग्निहोत्रेण प्रादुःकरणाहोमकालो व्याख्यातौ इति आश्रुत्वायनो
 क्तैः श्रुत्वावसधानं पारस्करः श्रावसथ्याधानंदारकालेदायद्यकाल एकेषामिति
 दायद्यकालौविभागकाला मदनरत्ने व्यासः अग्निर्वैवाहिकोपेननगृहीत प्रमादि

२०७

नापि तर्कपरतेनेन गृहीतव्यः प्रयत्नतः योग्यहीत्वा विवाहाग्निगृहस्थ इति मन्यते
 अन्नं तस्य न भोक्तव्यं ह्यथा पाको हि सस्मृतः ज्येष्ठभ्रातरि पितरि वा सागेनोक्तमिष्टं
 स्पृष्टं तस्य वागमभावेन दोषः तदा हतव्ये गार्ग्यः पितृपाको यजीवी वा भ्रातृपिको य
 जीवकः ज्ञानाध्ययननिष्ठो वा न दुष्येताग्निना विना गृहस्थस्याप्यध्ययनमाह सत्य
 व्रतः अनधीत्यपि ज्येष्ठे स्नातो दास्य यथा तथा अधीतेन सचर्येण सांगं चेदंगुरो
 गृहे इदं चाधानं ज्येष्ठेऽक्तताधानेन कृताधानेन कार्यं दाराग्निहोत्रसंयोगं कुरुते
 योग्योऽपि स्थिते परिवेत्ता स विज्ञेयः परिविन्निस्तु पूर्वजश्रुतिमनुशातानयोक्तेः स्मा
 न्नं व्यवंसेदर्थेति ष्टि ज्येष्ठेन कुर्यादारसगृहं प्रावस्य तथा धानं पतितस्तु भ
 वेदिति तत्रैव गार्ग्योक्तेः प्राजायां च दोसाहसं संतः ज्येष्ठभ्राता यदा तिष्ठेदाधाने
 नैव वा अयेत अन्तर्ज्ञातस्तु कर्त्तव्यं तं शंखस्य वचनं यथा तद्वद्विशिष्टः अग्रजस्तु य
 दानर्त्तनरादध्यादनुजः कथं अग्रजानुमतकुर्यादग्निहोत्रं यथा विधिः हारीतः सोदरा
 णां तु सर्वेषां परिवेत्ता कथं भवेत् दारेस्तु परिविद्यंते नाग्निहोत्रेणानेज्यया अधिका
 रिणोऽपि भ्रातरस्तु ज्ञातया कुर्यादिति मदनपारिजातः विवाहस्तु नृजया पिनेत्यर्थः सो
 दरोक्तेरसोदराणां न दोषः तदा हस्ते मादौ वसिष्ठः पितृव्यपुत्रान्सायत्सान् उपरना
 रीपुतांस्तथा दाराग्निहोत्रसंयोगेन दोषः परिवेदने परनारीसुतादत्तकादयः दत्तका
 मपि सोदरे दोष एव देरांते विशेषमाह सराव अष्टौ दश द्वादश चर्षाणि ज्येष्ठभ्रातरम

207A

निविष्टमप्रतिभमाणः प्रायश्चित्तभवतीति ह्मिवादावप्यदोषमाह कात्यायनः
 देशान्तरस्थलीविकल्पणनसेसोदरान् वेरमानिष्ठांश्चपतितम्बदुल्ल्यानिरोगिणः
 जडम्कांधवधिरकुज्ज्वामनरं वज्रकातम् अतिहृद्धानभार्याश्रक्तक्षिसक्तानन्यप
 स्यचधनहृदिप्रसत्तांश्चकामतोकारिणस्तथा कुटिलोन्मत्तचौरांश्चपरिविन्दन्
 दुष्यन्ति एवं ज्येष्ठे धिन्नहस्तादावपिनपरिवेष्टत्वं तदाह त्रिकांडमंडनः दर्शयिष्यौ।
 एतस्मादेष्टि सोमेत्प्रामग्नि संग्रहं अग्नि होत्र विवाहं च प्रयोगे प्रथमे स्थितन कुर्यात्।
 ते जनके ज्येष्ठे सोदरे चाप्यकुर्वन्ति होत्रजादावनीजाने विद्यमाने पिसोदरे नाधिकारवि
 द्यातोस्तिभिन्नौदर्येति चौरसेयं गंधमसकवधिरपतितोन्माददूषणो सन्यसे धिन्नहस्तादौ
 यद्वाद्यादिदूषणे जनके सोदरे ज्येष्ठे कुर्यादेवेतरः क्रियामिति आरोहन्तं दशानं शक्त
 शरीरमेत्याधयने मंत्रवर्णिच शक्तरोरं गुली तं जरन्नेषुक्तं अंगवैकल्यात्सर्वमाह्नि
 ताम्नि त्वेधिक्रियेतैव नित्येषु आधानं नूनं कुर्यात्तस्यानैमित्तिकत्वादिति एवं च त्रं गु
 लोपि खंडं गुल्लकाणविकर्णदत्तस्येवाधिकारः एकादशसुदशान्तर्गतेः शरीरकाह्यं
 वा विप्रनिविद्धमिति हिरण्यके शिसूत्रे कर्माशक्तिहेतोरेवं गवैकल्पस्य निषेधात्।
 अतएव द्राष्टव्यास्मिन्सूत्रे याज्यप्रथमे सिद्धिर्भूतो रिति काणादेन्युत्तांगस्याप्यधिका
 रः कृतः अपराकं उशमाः पितापितामहोपस्य अंगजो वापिकस्य चित्तं तयोऽग्नि होत्रमं

निसिं.
२०८

208

त्रेषु न दोषः परिवेदने पितृराजायामप्यदोषमाह मदनरत्ने सुमंतुः पित्रायस्य तु नाधी
तं कथं पुत्रस्तु कारयेत् अग्निहोत्रे अधिकारोस्ति शंखस्य च चनं यथेति नाधी तं कृतमित्यर्थः
एतदाज्ञायामेवेति हेमाद्रिः यत्पितुः सत्यप्यनुज्ञानेनादधीतकलचनेति तत्सत्यधि
कारे ज्ञेयं अथ ऋद्धस्य संस्काराः यमः ऋद्धये वैविधिः कार्यो विना मंत्रेण संस्कृतः न के
नचित्समस्तजघंदसानप्रजापतिः घंदसामंत्रेण व्यासोपि गर्भाधानं पुंसवनं सीमंती जात
कर्म च नाम क्रिया निष्क्रमोन्नप्राशनं वयना क्रिया कर्णवोधो ब्रतादौ शोचोदारं भक्तिया
विधिः केशांतः स्नानमुद्धाहो विवाहानि परिग्रहः ते ताग्निसंग्रहश्चैव संस्कारः षोडश
स्मृता इत्युक्ताह न वैता कर्णवेधांता मंत्रवर्जं क्रियाः स्त्रियाः विवाहो मंत्रास्तस्याः ऋ
द्धस्या मंत्रतो ददाति मदनरत्ने हिरण्यगर्भदाने तु गर्भाधानं पुंसवनं सीमंती नयनं
तथा कर्णहिरण्यगर्भस्य ततस्तद्विजापुंगवा इत्युक्ता जातवर्कमादिताः कर्णद्विधाः
षोडशाद्यापरा इत्यजस्त्रिया जातकर्मिनामकरणं निष्क्रमोन्नप्राशनं चूडा विवाहः षड्
ऋद्धाणां तु षोडशेते पंचमहायज्ञाश्चेत्येकादशे तु क्लृप्तं रूपं नारायणहरिहरभाष्ये चैव
शाङ्गधरस्तु द्विजानां षोडशेते च ऋद्धाणां द्वादशे च हि पंचैव मिश्रजीतीनां संस्काराः कृ
तधर्मतः वेदव्रतौ यनयनमहानाम्नीमहाव्रतं विना द्वादशऋद्धाणां संस्कारानाममंत्रतोऽ
त्थाह अथ राक्षस्तु गर्भाधानमृतौ पुंसवनं ताह एतच्चैतन्वैविध्यपरं न द्विजातिमात्रपरं

राम
२०८

208A

तथा सत्यपनयनं विधाय वाचं स्यादिति तेन तन्मतेष्टी भवति ब्राह्मेत विवाहमात्रं सं
 स्कारं शूद्रोऽपि लभतां सदेतुक्तं अत्र सः सः शूद्रोऽपि चरत्वेन देशभेदाद्वाव्यवस्थायान्न मनः
 न शूद्रे पातकं किंचिन्न च संस्कारमर्हतीति तदर्थमाह मेधातिः यत्सामान्यतो निषिद्धं
 तेनान्ततादि न तदति क्रमेऽप्यप्यथा हि जानां उपनयनरूपं संस्कारं च नार्हति ते च
 तद्धीकार्याः शूद्रो वर्णाच्चतुर्योऽपि वर्णात्वाद्धर्ममर्हति वेदमंत्रस्वध्यावषट्कारादिभिर्वि
 नेति व्यासोक्तैः अमंत्रस्य तश्च द्रव्यविशेषो मंत्रेण गृह्यते इति मरीच्युक्तेश्च इयं परिभाषा सदा
 र्था तेन शूद्रधर्मस्य सर्वत्र विधेयं मंत्रः पठनीयः सापिषोराण एवेति शूलपाणिः एवं स्त्रीणां
 मपीति तिक् इति रामकृष्णमभ्यात्मजकमलकरभट्टकृते निर्णयसिद्धौ संस्कारनिर्णयः
 अथ शूद्रकालस्य तत्र जलारायस्य वराहः हस्तामघानुराधापुष्यधनिष्ठात्रराशिरोदि
 श्याः रातमिषगित्यारंभे कृत्यानां रास्यते भगणः हेमाद्रौ भविष्ये तस्मिन्सालिलसंपूर्णे
 कार्तिके केचिन्न विशेषतः मुनयः केचिदिदं ति व्यतीते चोरायणे न कालनियमे
 तत्र सलिलं तत्र कारणं दीपिकापि मार्तण्डेऽपि शूद्रो मुरजिदरायने माघषट्कस्य शू
 क्रैः शूलाघाटोत्तराश्विप्रवणगुरुकरेयो घमशक्रां जेचंद्रैर्ब्राह्मे च पूर्णमदनरविति
 यौ ३२ सद्वितीया तृतीये कार्यान्ते यं प्रतिष्ठातृगुरुसितदिने कालशूद्रैस्तुलग्ने वराहः
 ग्रामेऽथदि कोणे ग्रामस्य पुरस्य वा भवति कृत्यः नित्यं स करोति भयंदाहं च समानसंप्रा

धौ८

भैत्रे

नि.सिं.
२०६

209

यः नैऋत्येवलभयं वनिताक्षयं च वायवे दिक्जयमेतत्पत्कारोखास्तु शुभावसाः कृ
याः वास्तुशास्त्रे भूतिपुष्टिपुत्रहानिपुरंधीनाशं मृत्युं संयदं शत्रुवाधां किंचित्सोरखं शंभुको
णादिकार्यात्कृपोमध्ये गेहमर्थक्षयं च उत्सर्गविधिश्चाक्तेव ह्युच्यते परिसिद्धे अथान्तो वापी
कूपतडागयज्ञं व्याख्यास्यामः पुण्यप्रदकसमीपे गिंसमाधाय वारुणं च कृत्वा यत्पितृज्यभा
गांते अज्याहुतीर्जुं कृत्वा समुद्रज्येष्ठे तिथित्युच्यते ततो हविष्ये तत्वायामीति पंचत्वनोम
नेति द्वेदं संमेवरुणेति च सिद्धं कृतं नवसंमार्जनं ते धेनुं तारयैतामनुमंजयेदिदं सल्लि
लंपविचं कुरु सुमुद्राः पूता अमृताः संतु नित्यं मां तारयंती कुरु तीर्थाभिषेकं लोकास्त्रो
कं नरते तीर्थते चेति पुष्पाग्रे न्यारधयतीर्थं यो अस्मान् नित्यं यापयति तायां दिशुः स्थापये
त्सपचसाद्रुगवतीति हि कृतं चेद्विष्णु एव तीत्यलं कृतं तां चिप्रायदद्यादितरां वा शक्नोत
क्षिणां तत उत्तरे देवपितृ मनुष्याः प्रीयंतामिति ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वस्त्ययनं वाचपी
त वित्तरक्तमात्स्योक्तौ स्मात्कृते जलाशयोत्सर्गविधौ ज्ञेयः कूपो देरुत्सर्गाकरणे दोषः
उक्तो भविष्ये सदा जलं पवित्रं स्यादयं वित्रमसंस्कृतं कुरागेणापिराजेंद्रनस्पृष्टव्यमसं
स्कृतं तथा वापी कूपतडागौ यज्जलं स्यादसंस्कृतं अयेयतद्रवेत्सर्वपीत्वा चां प्रायणं चरेत्
अथ हव्यरोपणं चंडीसरः आदित्यचंद्रपितृतिथ्यविराखयोष्ममूलोत्तराजयत्तरंगमद्वार
एव एतेषु तारकगणेषु हितं नराणां वृक्षादिरोपणमिहोपदिशंति धीरः अथ मूर्तिप्रतिष्ठा

राम
२०६

209A

विशिष्टः हस्तजये मित्रहरित्रये च यो धनदयादित्यासुरेज्यभेषु तिस्रो जराधाः तृशलांक
भेषु सर्वामरस्यापनमुन्नमस्यात् मात्स्ये चैत्रे चाफालुने वापि ज्येष्ठे वा माधवे त
था माघे च सर्वदेवानां प्रतिष्ठा मुभदा भवेत् नारदस्तु चैत्रे निषेधति विचैत्रे चैवमा
सेषु माघादिषु च पंचस्थितितेनात्र विकल्पः अत्र माघमासे विष्णुप्रतिष्ठा व्यतिरिक्त
विषयः माघे कर्तुं विनाशाय फालुने मुभदा भवेदिति विष्णुधर्मोक्तेरिति हेमाद्रिः मात्स्य
प्रतियत्तु द्वितीयायां तृतीयायां धनप्रदा चतुर्थ्यानां शमाप्नोति यमस्य स्यात्सरावाव
हा विनायकस्य देवस्य तथा तत्र दत्तप्रदा पंचम्यां श्रीयुता कर्तुं वरदा च तथा भवेत् ष
ष्ठ्यां लक्ष्मीयुता नित्यं सप्तम्यां रोगनाशिनी अष्टम्यां धान्यवद्भुलानवम्यां च विनश्य
ति भद्रकाल्याः कृता तत्र कर्तुं नैव तिस्र्ये धर्मैश्च कुरीते या दशम्यां त तथा ति
थौ एकादश्यां तथा युक्ता द्वादश्यां सर्वकामदा त्रयोदश्यां तथा ज्ञेया चतुर्दश्यां विन
श्यति क्लृप्तमपक्षे पंचदश्यां कर्तुं क्षयकरी भवेत् पंचदश्यां तथा शुक्ले सर्वकाम
करी भवेत् आषाढे द्वे तथा मूलमुन्नरात्रयमेव च ज्येष्ठाश्रवणारोहिण्यः पूर्वाभा
द्रपदा तथा हस्ताश्विनीवासवानराधौ देवतीव भेषु गदितं विष्णोः प्रतिष्ठापनं सुखं
त्यभिजित्सुराश्वरकयोर्विनाधिपस्कंदयौ त्रैमेति गमस्त्वैः करोति जटभेदुर्गादिका
नां मुभं गणपरिहृदरक्षोयक्ष भूतासुराणां प्रथमफणि सरत्यादिकानां च यो धे

अवसि स गतनामो वासवे लोकपानां निगदितमखिलानां स्थापनं च स्थिरेषु तेज
 सिनीक्षेमकदगिनाह विधापिनी स्याद्वनदादृष्टा च आनंदकृत्कल्पविनाशिनी च
 सूर्यादिवांशेषु भवेत्प्रतिष्ठा माधवीये वैखानसः मानभैरववाराहनरसिंहजिविज
 माः महिषासुरहं मम स्याप्या वैदक्षिणायने वैराद्योप्यर्थे लिंगप्रतिष्ठायां विरोधः हे
 माद्रोलक्षणसमुच्चये उत्तराशागते भानौ लिंगस्थापनमुत्तमं दक्षिणेत्यनं पूज्य त्रिव
 र्धाधर्मयावहं स्वर्गादे स्थापनं नेष्टं तस्माद्वैदक्षिणायने स्थापनं तत्प्रकर्तव्यं शिशिरा
 दाद्यनुत्रये प्राह विस्थापितं लिंगं भवेदरदयोगदं हेमं तेजानंदं चैव लिंगस्यारोपणं
 तं रत्नावल्यां माघफालगुनवैशाखज्येष्ठाषाढेयुपचसमासेषु मुक्तपक्षेषु लिंगस्था
 पनमुत्तमं विद्यमारया ह तत्रैव वैखानसः मार्गशीर्षादिमासोद्धे निदिनौ ब्रह्माणपुरा
 मासेषु फालगुनः श्रेष्ठश्चैत्रो वैशाख एव च त्रिमेवाप्याश्रयुग्मासे प्रावणे मासि वा भवेत् वौधा
 यनस्तत्रैव हि सुप्रतिष्ठा सुप्रक्रम्य द्वादश्यां श्रावणयोवायानि चान्यानि पुण्यनक्षत्राणीति
 कार्तिकादिविशारंते चित्यर्थः सर्वदेवेषु मासविरोधाद्देमाद्रौ विष्णुधर्ममाघे कर्तुं वि
 नाराय फालगुने शुभदा भवेत् लोकानंदकरी चैत्रे वैशाखे वरसंयुता आज्ञायुता स
 दा ज्येष्ठे आषाढे धर्महृदि दाश्रावणे धनहीना स्यात्प्रावणे चिनश्यति श्रावणेना
 शमाप्नोति वक्रिना कार्तिके तथा सौम्ये सौभाग्यमलस्यो धैर्यं धिरनुत्तमा दोषान्विता
 धिमासे स्यात्कर्तुं शक्नोति एव चेति अत्र प्रावणं श्रित्योर्नैवेधः मार्गशीर्षे विधिः

५

 राम
 २१०

विष्णुव्यतिरिक्तविषयः तत्र तस्योक्तेः देवीस्थापने तत्रैव विशेषे देवीपुराणे देव्यामाधे
 श्विने मसि उत मासवाकामदा तथा नति धिर्न च नक्षत्रं नोपवा सोत्रकारणं सर्वकालप्र
 कर्तव्यं कृष्णयक्षे विरोधतः अन्य आत्र विचारो हे माद्रो ज्ञेयः नारदः संत्यर्प्य हीना कर्त्ता
 रं मंत्रहीना तु अश्विजं स्त्रियं लक्षणहीना तु न प्रतिष्ठा समेरियुः अत्राधिकारिण उक्ताः
 कृत्य कल्पतरौ देवीपुराणे चर्णिम विभेदेन देवीस्थाप्यास्तु नान्यथा ब्रह्मा तु ब्राह्मणे
 स्थाप्यो जायत्री सहितः प्रभुः चतुर्वर्णैस्तथा विष्णुः प्रतिष्ठाप्यः स्रवार्थिभिः भैरवो
 पि चतुर्वर्णैरंत्यजानो तयामतः मातरः सर्वलोकैस्तथाप्याः स्रज्याः सरोत्तम लि
 गे गृहीयति वापि संस्थाप्य तु यज्ञे सदा शिव सर्वस्वे भविष्ये यस्तु सजयते लिंगे
 दावादिं मंजगात्यति ब्राह्मणक्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वामत्यरायणः तस्य प्रीतः प्रदास्या
 मिश्रभान् लोकाननुममान् तियित्त्येस्कादे शूद्रः कर्माणि योनित्यं स्वीयानि कुरु
 तो प्रिये तस्याहमर्थां गृह्णामि चेद्रवंतं विभूषिते ब्रह्मचारी गुरुस्थावाचानप्रस्थ
 आसुवने एवं दिने दिने च सजयेदं चिकायति संन्यासी देवदेवेशं प्रणवेनैव पूजय
 त् नमो जेत शिचो नैव स्त्रीणां पूजाय विधीयते एतच्च पुराणप्रसिद्धजीर्णलिंग
 पूजाविषयं यानि तु त्रिस्थली सैतो नारदीये यः शूद्रेणार्चितं लिंगं विष्णुवा प्रणमे
 न्नरः न तस्य निःकृतिर्दद्यात् प्रायश्चित्ता मुने रपि न मेघः शूद्रसंस्पृष्टं लिंगं वा हरिमे

वच ससर्वपातनाभोगीयावदाचंद्रतारकं पारवंडयजितंलिंगं नित्यापारवंडतां व्रजेत्
 आभीरपूजितंलिंगंनत्वा नरकमश्नुते यो विद्मिः पूजितंलिंगं विष्णुवापिनमेतुयः
 सकोटिकुलसंयुक्तश्चाकल्पंरौरवंवसेदित्यादीनितानि नूतनस्थापितलिंगादिविष
 याणि यदाप्रतिष्ठितंलिंगंमंत्रविद्भिर्ध्याविधितदाप्रभृतिश्रद्धाया विद्वापिनस्सरो
 दितिनैत्रेवोक्तेः प्रतिष्ठायां तद्द्रादीनां नाधिकारः स्त्रीणामनुपनीतानां श्रद्धायां च न
 रेश्वरः स्थापनेनाधिकारोस्ति विष्णोर्वाशंकरस्य च यः श्रद्धां संस्कृतंलिंगं विष्णुवापि
 नमेन्नरः इहेवात्यंतदुःखानि पश्यत्यासुष्मिके किमु श्रद्धावानुपनीतो वसुयोवापति
 तोयिवा केशवं वा शिवं वापि स्युः नरकमश्नुते इति हस्तनारदीयस्कांदोक्तेरिति जि
 स्थलीसेतोपितामहचरणाः चतुर्वर्गैरिति पूर्वोक्तवचनादिद्विधादि प्रतिष्ठायां श्रद्धा
 स्यविकल्प इति तदुक्तं पर्यायः तत्रैव गौतमः शिवार्चनं सदाप्येवं श्रुचिः कुर्यादुदञ्च
 रवः वाचस्पतिश्च तत्र प्राकृत्यश्रितो दगास्यस्तु प्रातः सायं निशासु चैति प्रयोगपारिजा
 ते गृह्यपरिशिष्टे प्रतिमाः प्राञ्जल्यो यजेता न्यत्र प्राञ्जल्यः एतच्च स्थिरप्रतिमाविषयं
 अन्यत्र वालार्चासु अथ प्रतिमाः भार्गवार्चनदीपिकायां च वक्ष्ये सौवर्णी राजनी
 ताम्नि मृन्मयी च तत्राभवेत् याबाणधातुयुक्ता वारीति कंठस्य मयी तथा रीतिः
 पित्तलं शुद्धाद्यु मयी चापि देवतार्चा वराहस्यते अंगुष्ठपर्वदाभ्यवितस्ति यथावदे

211A

वत्त गृहेषु प्रतिमा कार्यानाधिका रास्यते बुधैः पंचरात्रे तु मृदा रु लाक्षा गोमेद मधु छि
 द्र मयी नत्वि तिनियेध उक्तः भागवते शैलीदारु मयी लोही लेख्या लेख्या च सै कती
 मनो मयी मणि मयी प्रतिमा छ विधा स्म ता का वं मधु क स्यैव तत्र का वेषु मधु क मा
 नीय च व सं धरै कृत्वा तत्प्रतिमा चैव प्रतिष्ठा विधिना चैपेदि नि चारा हेतु रे देवी पुराणे
 सप्तगुलं समारभ्य पाव च द्वाद शं गुलं गृहे स्पर्चा समाख्या ता प्रा सा चाधिका शुभा
 ति धितत्वे कालिका पुराणे प्रतिमायाः कपो लो द्वौ स्युः दक्षिण पारि ना प्राण प्र
 तिष्ठा कर्तव्या तस्या देव त्व सिद्धये वासुदेव स्य वी जेन त द्विष्ट रि त्यनेन च तथैव हृदये गु
 ष्ठं दत्वा राशस्त्र मंत्रं वित् एभिर्मंत्रैः प्रतिष्ठा तु ह्यो पिसमाचरेत् अस्यै प्राणः प्रति
 ष्ठं तु अस्यै प्राणः सरं तु वा अस्यै देवत्व मर्चायै महेति यच्च कचन ह्यपरी र्ष पंचरात्रे ।
 अर्चक स्य तयो योगादर्चन स्याति रायनात् आभिरु प्या च्चिं बस्य देवः सान्निध्य
 मृध्ति प्रयोग पारिजाते व्यासः प्रतिमा परये त्राणां नित्य स्नानं नकारयेत् कारये
 त्यर्चदिवसे यदा वा मलधारणे लिंगे विशेष स्ति धितत्वे भविष्ये मृद रम गो राक्षसि
 गो रा क्षसि ह्यताम्र को स्य मयं तथा कृत्वा लिंगं स कृत्वा ज्य वसेत्क ल्प युतं दिवि दातं
 वित्तं पुदं लिंगं स्फाटिकं सर्व काम दं कृत्वा संपूज्य विप्रेंद्र लस्य सेवा धितं फलं त
 जैव काल कौ मुद्यां स्कादे अक्षाद न्यपरी माणां न लिंगं कुत्र चिन्नरः कुर्वीतां गुष्ठ

नि.सिं.

२१२

२१२

तौ हस्त्वेन कदाचित् समीचरेत् प्रहोतीति गुजाः गुज्जाः यंचाल्यमाद्यकाः तेषां उरा
काः कर्षीस्त्रीत्यमरकोशात् प्रयोगयारिजाते क्रियासारे नवाद्यसंज्ञागुलिकं लिंगं
श्रेष्ठमिहोच्यते षट्पंचकचतुर्मासं नमध्यमं विविधं स्मृतं त्रिद्विकंगुलमानं यत्रै
विधतत्केनीयसं एवं नवविधं प्रोक्तं वरलिंगं यथाक्रमं अथ पंचस्तत्र निर्णयः गो
तमीयत्वे लिंगं मस्तकविस्तारो लिंगो घ्रायसंमोमतः परिधिसि त्रिगुणितस्त्वद्वितीय
ठं व्यवस्थितं प्रणालिका तथैव स्यात्पंचस्तत्र निर्णयः अत्रेदं तत्वं लिंगं सस्तकवि
रं लिंगोच्चतासंमं कृत्वा तस्मिन् गुणसंवेद्यनाहं लिंगस्थो ल्यक्तत्वात् नमं हाते चतुरस्रं
वापिठविस्तारमधश्चाद्वैचक्यात् योठोच्चता तल्लिंगोच्चता तौ द्विगुणा योठमध्ये लि
गाद्विगुणस्य ल्योठोच्चता तृतीयांशेन कठं कृत्वा तस्यैर्धं मधश्च संमं च संप्रद्वये वा
कृत्वा लिंगविस्तारं षष्ठांशेन योठोपरिवाहमेरवलां कृत्वा तदंतः संलग्नतत्समं
रवाते कृत्वा योठो वदिल्लिंगसमं लिंगं योठयदार्द्धं वा मूलैर्देष्टुं समविस्तारायामेता
दद्वैविस्तारं तृतीयांशेन मध्ये रवातां योठात्समेरवलां च नलिकां कुर्यात् अत्र मू
लं सिद्धं तरोषरं प्रौवागममेव तेयं यत्रैव ब्राह्मे सर्वत्रैव प्रशस्तो ब्रुः शिवसूर्या
चैने विना तत्रैव चाराहपाययोः गृहे लिंगद्वयं नार्थं शालग्रामद्वयं तथा द्वेच

न

राम
२१२

212A

जे द्वार कायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयंतथा शक्तित्रयंतथानार्च्यं गणेशत्रयमेव च दैवैरा रवे
 नार्च्ये चैव भग्नं च प्रतिमांतथा नार्च्यं च तथामतस्य कूर्मादिदेशकंतथा गृहे गिरिदग्धा
 भग्नान्नार्चाः पूज्या वसुंधरे एतासां पूजनान्नित्यमद्वं प्राप्नुयाद्गृहीतालंग्रामाः
 समाः पूज्याः समं धित्वेन हि विष्णुमानैव पूज्यास्तु विष्णुमेव लोकमेव हि शालग्रामा
 मशिलाभग्नान् पूजनीया सचक्रका विष्णुपुराणे ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैष्य
 वीर्यते स्वधर्मतत्परो विष्णुमाराधयति नान्यथा अभक्तानामप्यथ देवपूजामाह प्र
 योगपारिजाते आश्वलायनः पृथगप्येकपाकानो ब्रह्मयज्ञो हि जातिनां अग्निहोत्रं तु
 रार्चा च संभ्या नित्यं भवेत्पृथक् तत्र विष्णुधर्मे शालग्रामशिलावापि चक्रां कितशि
 लांतथा ब्राह्मणः पूजयेन्नित्यं क्षत्रियादिनं पूजयेत् इदं स्पृशेद्दिसदिमय जाविष्यं
 शूद्रो वा नृपन तो वा स्त्रियो वापि तोपि वा कैरावं वा शिवं वापि स्थष्टानरकमश्नुते
 ब्राह्मणपि हरं विष्णुन स्थरोक्षेयश्छति सतथा मृतनाथा वा तस्यानास्तीह निःकृतिः
 स्त्रीणां मनुष्यनीतानां शूद्राणां च जनेश्वरः पूजनेनाधिकारोस्ति विष्णो वा शंकरस्य
 वेति स्कांदात् स्पृशेद्दितानु तयोर्भवत्येव तत्र वक्तुं चत्वारो ब्राह्मणैः पूज्यास्तु यो
 राजन्यजातिभिः वैश्यैर्हो वैवसं पूज्यो तथैकः शूद्रजातिभिरिति स्कांदाच्च अन्ये तु
 दीक्षितादीक्षितविषयत्वेन व्यवस्थामाहुः विष्णुधर्मे तयो रसंभवे चैवैसा चेह नव

213

धास्मता रत्नजाहेमजाचेवराजतीतामृजातथा रैतिवचचीतयालो हीरोलजादुम
जातया अतोधमाचविज्ञेयामन्मयीप्रतिचया एकाफलानितत्रैवज्ञेयानि तत्रैवपा
शैशालग्रामंप्रक्रम्य तत्राध्यामलकीतुल्यायज्यासकमेवयाभवेत् यथायथाशि
लासूक्ष्मीतयास्यानुमदत्फलं तथा यवमात्रंलग्नः स्यात् यावार्धलिंगमुच्यते शि
वनाभिरितिरव्यातसिष्ठुलोकेषु उल्लभः तत्रैव शालग्राममयीमुद्रासंस्थितायजकुत्रचि
त्तवाराणस्यायवार्धिकं समंताद्योजनत्रयं येमृतातत्समीपेत्तुमृतावानीयतेति कं
सर्वोमोक्षवाप्नोतिसत्यं सत्यं न चन्यथा तत्रैव चक्रांकमिष्टुनं यज्येनैकं चक्रांकमर्च
येत् चक्रांकमिष्टुना तसार्द्धशालग्रामंप्रसजयेत् तत्रैव वाराहे हृददेशे शुचौ वापि चक्रां
कोपतिष्ठति योजनानां तथा त्रीणि समक्षेत्रे वसंधरे तत्रैव शालग्रामंप्रक्रम्य क्रय
क्रीतापरिज्ञेयामध्यामायाचिताधमा प्रयोगपरिज्ञाते वाराहे एते लक्षणसंघनापारंय
र्षक्रमागता उत्तमासातुविज्ञेयागुरुदत्तायितत्समा अथ पार्थिवयज्जा नैदिपुराणे आ
युष्मान् बलवान् श्रीवान् पुत्रवान् धनवान् सुखी वरमिष्टं लभेस्त्रिंशं पार्थिवं यः समर्च
येत् तस्मान्न पार्थिवं लिंगं ज्ञेयं सर्वार्थसाधकं तत्रैव गोभरहिरायवखादिवलिपुष्प
निवेदने ज्ञेयो नमः शिवायेति मंत्रः सर्वार्थसाधकः सर्वमंजाधिकश्चायमेव
काराद्यः षडकारः भविष्ये नृत्तयोद्यौ शिवस्यैताः पूर्वदिक्क्रमये आग्नेयं ताः

राम

२१३

213-A

प्रपूज्यास्तवेद्यो लिंगे शिवं यजेत् अत्र न प्राची मग्नतः शंभोरिति रुद्रयामले नि
 वेधानांतरालं प्राची किं तु प्रसिद्धे वति धितत्वे देवीपुराणे मृदाहरणसंघट्टे प्रति
 स्थापनमेव च स्तपनं पूजनं चैव विसर्जनमतः परं हरो महेश्वरश्चैव मूलपाणिः
 पिनाकधृक् पशुपतिः शिवश्चैव महादेव इति क्रमः स्कांदे अष्टाष्टपिचपत्रा
 णि श्रीहक्षस्य निवेदयेत् तत्रैव भविष्ये धातुरकैश्च यो लिंगं सक्तं पूजयेत् तेन नरः
 मागोलक्षफलं प्राप्य शिवलोके महीयते योगिनी तं जे शिवागारे कल्पकं च सूर्या
 गारे च शंखकं दुर्गागारे वंशवाद्यं मधुरीचवादेत अर्द्धहस्तादो स्कांदे स्यष्टा रुद्रस्य
 निर्मातृं सवासा आश्रुतः शुचिः प्रयोगपारिजाते किपासारे मध्यमानामिका मध्ये
 पुष्पसंग्रह्य पूजयेत् अंगुष्ठतर्जन्यग्राभ्यां निर्मातृमयनोदयेत् अग्रणीतं च निर्मा
 तृं चंडेसाय निवेदयेत् अग्रमन्यं मस्तकं लिंगे सदा कुर्वीत पूजकः मूलपाणिं लिंगे वरं
 प्राणपरित्यागः शिरसा वापि कर्तनं न चैव पूज्यं अंजीत शिवलिंगे महेश्वरं स्तनकैर्मते
 कैश्चैव न त्याज्यं शिवपूजनं तिथितत्वे लिंगे विना भस्म त्रिपुंड्रेण विनारुद्राक्षमालया
 पूजितो हि महादेवो न स्यात् तस्य फलप्रदः तस्मान्मृदापि कर्तव्यं ललाटे वै त्रिपुंड्रं रुद्राक्ष
 धारणे विशेषः शिवस्यैक एकवक्त्रं शिवशक्षा दुस्तुत्या व्यपोहति अवध्यत्वप्रति
 स्तिष्ठो नो वद्विस्तं भं करोति च द्विवक्त्रो हरगो स्यात् गोवधाय धनशक्तं त्रिवक्त्रो य

हृ२

नि.सिं.
२१४

२१४

काम

मिजन्माययापराशिंप्रनाशयेत् चतुर्वक्त्रः स्वयं नृणां नरस्यो हति पंचवक्त्रस्तुका
लागिनरगम्याभक्षयापन्नं वडवक्त्रस्तुगुहो ज्ञेयो नृणां हत्यादिनाशयेत् सप्तवक्त्रस्त्वनं
तः स्यात्स्वर्णस्तेयादिपापहृत् विनायकोष्टवक्त्रः स्यात्सर्वानृतविनाशकं भैरवो
नववक्त्रस्तु शिवसायुज्यकारकः दशवक्त्रः स्मृतौ विष्णुर्भूतप्रेतभयापहः एकाद
शमुरवः सर्वकामफलप्रदः द्वादशास्यस्तथादित्यः सर्वरोगनिवर्हणः ज्योति
शमुरवः सर्वकामफलप्रदः चतुर्दशास्याः श्रीकण्ठेश्वरोद्धारकरः परः इति तथा विनामं
त्रेण यो धत्ते रुद्रं तं भुवि मानवः स्यात्तिनरकानघोरान्घावादिं द्वाभ्युदश पंचामृत
पंचगव्यं स्नानकाले प्रयोजयेत् ज्यैष्ठ्यं वक्त्रादिमंत्रं च तथा तत्र प्रयोजयेत् यद्वा अघोरं
मंत्रं अघोरतरं त्रैलोक्यं नमस्ते रुद्र रूपं स्वस्ति अनेनाभि मंत्रं आधारयेत् तथा अष्टोत्तरशतं का
र्याचतुः पंचाशदेवता सप्तविंशतिमाना वा ततो हीना स्मृता बुधैः प्रजापतिः मोक्षा
धी पंचविंशत्या धनार्थी त्रिंशता जयेत् पुष्टार्थी पंचविंशत्या पंचदश्याः भिचारके स
प्तविंशतिं रुद्राक्षं भुवि सन्मुखं तस्य प्रीतो भवेत् रुद्रः स्वयं दंष्ट्रं प्रयच्छतीति वीणदेवः
रुद्राक्षं त्रैलोक्यं देवदेवान्य रिमिता नमस्तु के विंशती देवदृष्टं कर्णप्रदेशं करपुग
लं कृते द्वादशः द्वादशैव वा ह्येति दोः कालाभिर्नयनपुगकृते एकमेकं शिरसां वा
भस्यष्टाधिकं यः कलयति शतकं स स्वयं नीलकंठः तत्रैवाशिवधर्मं स्नानं

राम
x ४ x रुद्राक्षमालया देहस्य या यत्करोति नरः पुण्यं सर्वकोटिगुणं भवेत्कोट्युदात्तं द्विजेभ्यः २१४

214-A

पलरातं ज्ञेयमभ्यंगः पंचविंशतिः पलानां द्वे स हस्ते तु म हास्त्रानं प्रकीर्तितं पंचषट्
विंशत्यलं लिङ्गेऽभ्यंगं कारयेदथ शिवस्य सर्पिवास्त्रानं प्रकृतं पलरातेन च तावतामधुना
चैव दध्ना चैव ततः पुनः तावते च चक्षुरेण ग व्येनैव भवेत्ततः भूयः सार्द्धं स हस्ते एण पला
नामैक्षवेन च रसेन कारयेत्तानं भक्त्या चोष्मां बुनात्ततः विश्वा दौ तु स्कां देक्षिराद्
रा मुला दध्ना धत्ते नैव देशा न रं धत्ता दशगुणं क्षौद्रं क्षौद्राच्चैवैका वं तथा ब्रह्मे देवा
नां प्रतिमा यत्र धत्ताभ्यंगक्षमा भवेत् पलानि तत्र देयानि अद्वया पंचविंशतिः इदं जीर्ण
कृताभिप्रायेण सगृहे विष्वक्मेना यदा तत्र नैवेद्यस्य शतं शकं पादोदकं प्रसादं च
लिङ्गे चं डे श्वराय न पंचायत सन्निवेशमाह वायदेवः शंभौ मध्यगते हरी न हरभूदेव्या
दुरौ शंकरे भास्ये नागसुता रवौ हरगणेशा जौ विकाः स्थापिताः देव्या विष्णु हरे भव
करवयो लंबोदरे जेश्वरे नां वाः शंकरभागतो निसुखदायका स्तुते हा निप्रदाः शंक
रभागतः ईशानकोणादारभ्य प्रदक्षिणामित्यर्थः अत्र दिक् स्वरूपमुक्तं प्रयोगपारिजा
ते मंत्ररास्त्रे देवस्य मुखमारभ्य दिशं प्राचीं प्रकल्पयेत् तदादि परिवाराणां मंगाद्या व
राणां स्थितिः अत्र क्रमः पादौ रविर्विनायकश्चंद्रौ ईशो विष्णुः पंचमः अतु क्रमेण पृ
थ्वी ते मुक्तमेतुमहद्वयं तथा सृज्य पूजकयोर्मध्ये प्राचीं प्रोक्ता विचक्षणैः अथ केरा
यादिस्तत्रैव वायदेवः केविगोवादाय द्रुपे प्रजापत्युक्तं ममात्रिना बाधो न हसनि श्री

| | |
|-------|--------|
| वि. १ | स्व |
| दे | शि ग |
| शि २ | भग |
| दे | वि स्व |
| शि ३ | ग |
| दे | स्व वि |
| वि ४ | शि |
| स्व | दे ग |
| वि. ५ | शि |
| दे | ग स्व |

पशाद्यगे विगयेचये अत्रकेचिदुत्पाद्यैः केशवविष्णादिचतुर्विंशतिस्तर्तयोऽभि २
 धीयन्ते शालुशंखात् चैगेऊगदेत्तेयेत्यर्थः शिष्टे भुजेपञ्चत्वर्थतः सिद्धं अत्रदक्षिणे
 र्द्धकरक्रमेण ज्ञेयं दक्षिणेर्द्धकरक्रमादिति हेमाद्रौ वचनात् विशाखे विपरीतंगजे
 त्यर्थः अत्रापि शादित्यनुवृत्तिः शंखाद्गुदाचके इत्यर्थः गये इत्यत्र शादित्यनुवृत्ते शंखा
 रुदापये इत्यर्थः विपरीतैयमेगदेरापिशंखात् ज्ञेये चयेचक्रमे शंखाचक्रमे इत्य
 र्थः विश्वत्रापि पञ्चचके इत्यर्थः तेन गये इत्यद्योस्तर्तयः चये इत्यत्र च अत्रमूलं हेमाद्रौ
 ज्ञेयं अथ वौधानस्तत्र जैवित्रमी चानुसृत्य लिङ्गाच्चाप्रतिष्ठेयते यजमानः पूर्वो
 क्तकाले पूर्वेषु दशदादराद्योऽशान्यतरहस्तमंडपं कृत्वा गेये हस्तमात्रं चतुरस्रं कंडं स्य
 डिलं वा सर्वतो हस्तमात्रं वेदिं नैर्ऋतवास्तुमंडलं मध्ये चेदी तदुपरि सर्वतो भद्रं चक
 त्वा प्राणानायम्यास्यास्तर्तौ देवस्य सान्निध्यार्थं दीर्घां पुलीक्ष्मीं सर्वकामसम्पदां क्षय
 सखकामोऽसकस्तर्तिप्रतिष्ठाकरिष्यति संकल्प्य गणेशाय जनपुण्याहवाचन १
 मातृयज्ञा नादीश्राद्धानि कृत्वा चार्थं चतुरोऽष्टविजस्तत्त्वावसूयैः प्रजयेत अथाचा
 द्योयदत्रसंस्थितमिति सर्वयान् विकीर्यो हिक्षेति कुर्यादकेन भूमिप्रोक्ष्य देवा १
 प्राधांत यातुधाना अयधांत चिन्नादवज्जनं रक्षसेति भूमौ प्रादिरां कृत्वा स्मृत्वा
 तलापद्विति मार्गेण मंडपप्रतिष्ठां कृत्वा वापंचगव्यहिरण्यपत्रदूर्वाश्च यत्पला

215-A

एषां रौतयो द्विष्टे तितिसभिर्हिरण्यपौति च तस्यभिः पवमानः सवर्जन इत्यनवाके
नाभिषिच्य व्याहृतिभिरिदं विष्णुरिति फलपत्रद्वयाः समर्घ्यरक्षो हणमिति हस्तकं
काण्वध्वा वाससाद्याद्य अवनेहेऽनुडुत्तममिति जलेधिवासयेत् इदं वैधापनोक्तं त
तश्च ललिंगे चारितं प्रतिष्ठाप्य गोक्षीरे नीवारचारुं कृत्वा विष्णुं श्रेतुं कृत्वा शरमधि श्रययि
त्वा ज्यभागांते पलाशोद्वराश्रय्य शम्ययामार्गं समिद्राज्येन चरुणा तिले वा पुन्ये
कविंशतिमष्टौ वा द्रुती लोकापालमूर्तिमूर्तिपतिभ्यो द्रुत्वा स्थाप्य देवमंजोष पूर्वो
क्तसमिन्न तिलने वा ज्येष्ठ सहस्रमष्टशतः सष्टाविंशतिं वा द्रुत्वा अग्निर्जुर्भिरित्य
नुवाके लदश द्रुतिर्जुद्रुयात् प्रतिहृद्व्यहोमोते देवपादनाभिशिरः सुस्थशेत् अज्य
होमे चोत्तरतः सजलं कुंभे संपातानयेत् तेषां मंत्रा इद्रोपे हो इतीदस्य सोमोति
ष्टपि वीष्टैः मध्येरेभ्य इतितत्पतेः सर्वस्य अग्न आ हा हीत्यग्नेः अग्निं दूतमित्याग्नि
मूर्तेः स्तुति नमः शर्वाय च यशुपतये चेति यशुपतेः यमाय सोमं यमस्य असिदि
वीरे नित्यजमानमूर्तेः स्तुतिं श्रुतं तत्पते रुद्रस्य असुन्वतनिर्जतेः आकृष्टमेन सूर्य
मूर्तेः पौरुषो अग्नौ इतितत्पते रुद्रस्य इन्द्रमेव रुणक्त्सस्य शन्नो देवी जलमूर्तेः न
मो भवायेति वस्य आनो नित्युद्रिः वायोः वात आवातु वायुमूर्तेः तमीशानं तस्य
नेरीशानस्य प्राप्यायस्व कुवेरस्य वयं सोमसोममूर्तेः तत्पुरुषयेति महादेवस्य

अभित्वा ईशानस्य आदित्यत्रस्येत्याकाशस्य उम उग्राय चेति तत्पनेभीमस्य १
ततो देवस्य पादौ स्थितौ एवं द्वितीयोद्भवानाभि तृतीये मध्यं चतुर्थे उरः पंचमेशि
रः स्थितौ प्रतिपद्यां संपातजलेन देवमभिधिं चेत ततः स्विष्टकृदादिशेषं समाप्यार्चा
शोधयेत् स्थिरलिंगार्चादौ तनेदानीमग्निस्थापनहोमादिकार्यं ततो देवनत्वात्वा
गतं देवदेवेशविश्वरूपनमोस्तु ते ऋद्धे पितृदधिर्धरे ऋद्धिं कर्मः सहस्रतामिति संप्राप्य
उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते इति सकृत्विगुत्याप्य पूर्वमस्तु त्रेगुत्रारणेऽधुना वा कार्यं अग्निः
समिधमिति स्तुतमग्निपददेनं पठित्वा तत्सहितं पुनः पठेत् एवमष्टसहस्रमष्टाविरातिं वा
पठन् जलं पातयेत् ततोर्चा द्वादशवारं मृदाजलेन च प्रक्षाल्य मंत्रवत्यं च गच्छं कृत्वा ययः
पृथिव्यामावो राजानमिति च स्त्राय्य आप्यायस्व दधिक्रावणस्तेजो सि मधुवाना आ
यं गौरिति पंचामृतैः संस्त्राय्य लिंगं चेन्नमस्ते रुद्रमन्यव इत्यष्टाभिः संस्त्राय्य धृतेनाभ्यजो
द्वर्त्तने नो द्वयोर्ध्यादकेन प्रक्षाल्य गंधदात्वा संपातो दकेनाभिधिं च सक्लवैश्चतुर्भिः कुं
भैरायो द्विष्टेति त्रिभिराकालशेषित्वा च प्रत्येकं समुद्रेष्टेति चतुर्भिराकालशेषित्वा च मि
लितैः संस्त्राय्यो दुंबरादिपीठे धामुपवेश्य परितोष्टदिक्षु सजलं कृतान् सस्याप्यतेषु गं
धधुष्य हवीः क्षित्वा घेससमृदः द्वितीयेषु स्फुरपणिरामी चिकंकतारं मंतकत्वं चं
पत्नवांश्च तृतीयादिषु सप्तधान्यपंचरात्रफलपुष्पाणि कुराह्वारोचना संपा

216-A

नोदकगंधफलसर्वोवधः क्षिप्वाक्रमेणापो हि स्येति त्रिभिर्हिरण्यवर्णैः तिचतुर्भिः प
 त्तमानानुकेनचाभिर्विच्यैककुंभे रसिपलारावटस्वदिरविल्याश्चस्यविकंकतपनसा
 मृशिरिवोदुं वराणां पलान्कषायांश्चाक्षिप्वाः स्येव इत्यभि विच्यपंचरत्नोदके
 नहिरण्यवर्ण इति संस्त्राय वा ससीदत्योपवीतादिदीपांतकृत्या हिरण्यगर्भः यज्या
 त्तमयः प्राणतः यस्येमेयेनद्योः यंकुंदसी आपो ह्यत् पश्चिदापो. इत्यथैषिष्टदीपान्
 दत्वा सुवर्णशलाकपात्रैजसपात्रस्य मधुघृतं च गृहीत्या चित्रदेवानां तजोसीति मंजो
 भ्यां ॐ नमो भगवते तुभ्यं शिवाय हराय नमः हिरण्यरेतसे विधमो विष्णु रुपाय ते न
 मः इति च दक्षिणसंवेदे वने जे मंजा हत्पालिरेवत् जंजाति त्वेत्यं जनन मधुना चांत्वा
 देवस्य त्वेति मध्वाज्यं क शर्कराभिः शुद्धा तेनैवांजनेन पुनरंजयेत् अत्रानन्मीति शेषः
 स्थिरलिंगे तु स्वर्णसूत्र्यागंधेन ॐ नमो भगवते रुद्राय हिरण्यरेतसे पराय परात्मते वि
 ष्णु रूपायोमा प्रियाय नम इत्युद्धा जनादिना जयेत् ततः कर्त्तव्या यगागम्य चिग्न्य अदा
 क्षिणां दद्यात् अथाचार्यः प्रत्यक्षमादौ प्रणाचं वदन् पुरुषसूक्तं नस्तत्त्वाचं शपात्रे
 पंचवर्णादनेन देवस्य नीराजनें कारयित्वा रुद्राय चतुष्पथादौ दद्यात् मंत्रस्तु ॐ नमो
 रुद्राय सर्वनाधिपतये दोममृत्ला धरायो मादधिताय विश्वाधिपतये रुद्राय वै नमो
 नमः शिवभगवति कर्मास्तु स्वाहेति उपस्थपणे भूतेभ्यो नम इति केचिदेतद्रा

सौस्त्रिप्रतिष्ठाया मिधंति अथाचार्यः सर्वतोभद्रदेवानावाहयेत् मध्ये ब्रह्मा
 णाम्वादिदिक्षु इन्द्रादिलोकपालात् ईशानेन्द्राद्यंतरालेषु वसुनरुद्रान् आदित्या
 न् अश्विनौ विष्णुं देवान् पितॄन् नागान् स्कंदहोत्रं ब्रह्मेरानाद्यंतरालेषु दत्त
 विष्णुदुर्गास्वधधाकारं मृत्युरोगान् समुद्रान्सरितः महतः गणपतिं चेति मध्ये
 एव पृथिवीमेतं स्थाप्य देवं वा वायुप्रागादिवज्रं राक्षिदं इंद्रवज्रं पाशं अंकरागं दं
 मूलं तदा ह्येगोतमं भरद्वाजं विश्वामित्रं कश्यपं जमदग्निं वशिष्ठं मन्त्रिमरुंधतीं च
 तद्वैद्येन वग्राहन् तदा ह्येगं द्वाकोमारीं ब्राह्मीं वाराहीं चामुंडां वैद्यमवीं माहेश्वरीं वैद्य
 नानीति एतानामभिरावाह्यं संप्रज्याधीयं देवं तन्मंत्रेण वाह्यं मंडलमध्ये चींस्तु प्रतिष्ठो
 भवेति निविश्य संप्रज्य वक्रौ मंडलदेवानां नामिस्तिलाज्येन दशदशकुलीं कुत्वा शप्यायं
 देवसारोप्य पुरुषस्तुक्कारं नारायणं अस्तुत्वा देवेभ्योऽसकृदीत् यथा पुरुषात्म
 नेन मः प्रकृतितत्त्वाय नमः बुद्धितत्त्वाय नमः अहंकारतमनसे सवागे प्रकृतितत्त्वाय नमः बुद्धिः हृदि
 शब्दतत्त्वाय नमः स्पर्शतत्त्वाय नमः रसतत्त्वाय नमः गंधतत्त्वाय नमः स्पर्शतत्त्वाय नमः बुद्धिः हृदि
 पाणिपादयाय नमः पृथिव्याय नमः वायुवाकाशसत्त्वरजस्तमोदेहतत्त्वानि विम्य
 सेत् ततः पुरुषस्तुक्कारं मृगद्वयं करणैः तदुत्तरं कथ्योः तं यत्तमिति तिस्रः

217-A

नाभिहृत्कंठं च तस्माद्वेति द्वयं वाङ्मोः ब्राह्मणोऽथेति द्वयं नासयोः नाभ्येति ।
 द्वयं मक्षणेः श्रुत्यांतिरसि केचित्तत्त्वसमन्यथाहुः पुरुषप्रकृतिमहदहंका-
 रतत्वातिराकस्यरीरूपरसगंधतन्मात्राणि आकाशवायुतेजोयथधिक्त्रात्र ।
 त्वक्चक्षुरसनध्राणवापाणि पादपायस्थमनस्तत्त्वानीति केचिदेतानि स्थिर-
 लिंगादावेवेष्टंति ततः सुरवशाद्यो भवेति शय्यायां देवं स्थापयित्वा मंडलशय्ययो-
 रंतगलेन गंतव्यमिति प्रेषदत्वा मंडलदेवताभ्यो नामभिः पायसेन चरुणा वा वलीद-
 घात नीवारचरुशेषेण दिग्वलं नैदं स्थिरप्रतिष्ठायां स्थिरलिंगार्चोदौ त्वयं विरो-
 धः अग्निस्थापनहोमवर्जसर्वपर्ववत्कृत्वा इदानीमग्निस्थापनं कृत्वा पूर्वोक्तहो-
 मं कुर्यात् नात्र नैवारश्चरुः विष्णुश्चेत्पूर्वोक्तहोमं कृत्वा पुरुषसूक्तेन प्रत्यक्षमाज्यं
 हुत्वेदं विष्णुरिति पादोऽस्य स्या पुनस्ता एव हुत्वाऽतो देवेति शिरः स्य स्या पुनस्ता एव
 हुत्वा पुरुषसूक्तेन सर्वांगं स्य शेत स्थिरलिंगं चेदग्निस्थापनादि पूर्वोक्तमिदाज्यमिति
 हुती हुत्वा यात इष्टुरित्युत वाकांते द्रापे सहस्राणीत्यनुवाकाभ्यां च प्रत्यक्षमाज्यं हु-
 त्वा सर्वो वैरुद्र इति मूलं स्य शेत पुनस्ता एव हुत्वा कद्रुद्रायेति मध्यं पुनस्ता एव हुत्वा
 नमो हिरण्यवाहव इत्यग पुनस्ता एव हुत्वा परेरुद्रेण सर्वांगं स्य शेत ततो धामं

तदिति पराणि कृत्यान्वा एवमधिवासनं कृत्वा परेष्टुः सद्ये वापीठिकां स्थापयित्वा महा
सखित्यावाद्यादिदिति द्यौरिति स्तुत्वा ज्ञानमश्नितिसंयज्यते नैव पराणि कृत्यान्वा तिव्र
स्त्रणस्य तदिति देवमुस्याय्य पुण्यां दत्वा पुरुषसूक्तेन स्तुत्वा त्वो दुत्यमित्युस्याय्य कनिक
ददितिसूक्तेन विष्णुसद्योजातमिति पंचानुवाकैर्लिंगगृहप्रवेश्य पीठिकायां इंद्रादि
नामभिरष्टरत्नानि क्षिप्त्वा सप्तधा मरुतः शिलाः क्षिप्त्वा पायसेन संलिप्य प्राणवे
नागान्या संकृत्वा सुवर्णशलाकामंतरितां कृत्वा ॐ सुलग्ने प्रतितिष्ठ परमेश्वरे तु
त्वा तौ देवौ तिविष्णुरुद्रेण च लिंगं स्थापयेत् ततः प्राणप्रतिष्ठा चलावीदौ त्वधिवासनांते
परेष्टुः कृतिष्ठ ब्रह्मणस्य ते इति देवमुस्याय्य पुरुषसूक्तेन नारायणाभ्यां स्तुत्वा घृते व्री
हिरुं कृत्वा त्रैदेवतामंत्रेण दशाहुतीर्हुत्वा नामभिर्हुं कृत्यान्वा जग्नये स्वाहा सोमाय ध
त्वं नरये कुक्षे अन्नमये प्रजापतये परमेष्ठिने ब्रह्मणे अग्नये सोमाय अग्नये नृदाय
अग्नये नृपतये प्रजापतये विश्वेभ्यो देवेभ्यः भूर्भुवः स्वः अग्नये सिद्धं कृते इति ततः स
प्रते पुनस्त्वित्याभ्यां पराणि कृतिः तज्जग्राचार्यो याज्यो बधीरिति सर्वे बधीः समर्घ्यं संपातो
दकंदेवमंत्रेण रातवारमभिमंज्यते नैवाभिधिं चेत ततः उतिष्ठेति देवमुस्याय्य विश्वतश्च
क्षरित्युपस्थाप्य देवं ध्यात्वा जपे ब्रह्मणे नमः एवं विष्टमेवेरुद्राय इंद्राय इंद्रादीनष्टौ वसु
भ्यो रुद्रेभ्यो अर्धित्येभ्यो अग्निभ्यां मरुद्भ्यः कवेराय गंगायामिदं नदीभ्यो गंगी सोमाभ्यां

218-A

द्राग्निभ्यां वायुपि वीभ्यां धन्वतरये सर्वे राग्य विष्णो देवेभ्यो ब्रह्मणे इति ततः स
 पातो दकेन यजमानमभिषिच्य देवं ध्यात्वा प्रतिष्ठ परमेश्वरेति पुण्यां जलं निवेद्य स
 चिदानंदं ब्रह्मैव भक्तानुगृह्णाय गृहीतविग्रहं करचरणयुवयविनं शंखचक्राणां
 युधवंतं निजवाहनाद्युपेतं निजहृत्कमले वा स्थितं सर्वलोकाणि मणीयांसं परं
 मेव्यासि परमं श्रेयं गमयेति मंत्रेण पुण्यां जलं वागतं विभाव्या चीयां विन्यस्य प्राण
 प्रतिष्ठां कुर्यात् यथा प्राणप्रतिष्ठा मंत्रस्य त्रैलोक्यविष्णु रुद्राजययः ऋग्यजुः सामा
 मिष्टं दं सिक्रिया मयवपुः प्राणरव्या देवता आवीजा कारातिः प्राणप्रतिष्ठायां वि
 नियोगः ततो ऋषादीन् ब्रह्मेण शिरोऽसुरवद्दयगुह्यपादेषु विन्यस्य ओं कं रं वं गं
 घं ङं ञं यं पि यं यते जो वा या का शात्मने ओं हृदयाय नमः ओं राव्यस्य रीरूप
 रपरसंघात्मने शिरसि स्वाहा ओं टं ङं श्रेष्ठत्वकचसुर्जिह्वा प्राणत्मने ओं शि
 रवाये ओं तं ए वा क् पा क् पाणि पाद पाद पस्थान्मने रौं क व चा ङं उं पं ऊ व च
 नदान विहरणे त्सर्गे नंदात्मने ओं नेत्रयाय ओं यं रं लं वं रां वं सं हं लं दं ञं मं नो
 बुध्यं हं कारचि ज्ञात्मने अः अस्त्राय फट् एवं प्रात्मनि देवे च कृत्वा देवस्यैष्ट्या ज
 येत् ओं आं हं त्रैलोक्यं रं लं वं रां वं सं हं सः देवस्य प्राणा इह प्राणः ओं आं हं सः देव

नि.सिं.
२१५

219

स्य जीव इह स्थितः ॐ आहं सः देवस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि ॐ आहं सः देवस्य
वाङ्मनः श्रोत्रं घ्राणं प्राणा इहागत्य स्वस्तये सुखेन सुचिरं तिष्ठतु स्वाहेति
ततोर्चाहं गच्छं दत्वा जयेते अस्ये प्राणा प्रतिष्ठंतु अस्ये प्राणा प्रतिष्ठंतु अस्ये प्रा
णांतरं तु च अस्ये देवत्वमर्चायेनामहेति च कञ्चनेति ततः प्राणवेन संरुध्य सजी
वे ध्यात्वा धुवाद्यो रिति ह्यंजत्वा कर्णे गायत्री देवमंत्रं च जप्त्वा कर्णे गायत्री देवमं
त्रं च जप्त्वा पुरुषसूक्तेनोपस्थाप्य पादनाभिरारः सुस्थः स्याद्देवै ध्याति त्रिजयेत ततः
कर्त्ता स्वागतं देवदेवेश मभा गता त्वमिहागतः प्राकृतं त्वमहं ह्यहं मा बालवत्परिपालय
धर्माय कामसिद्धयर्थं स्थिरो भव शुभाय नः तावत्स्वयात्र देवेश स्थिय भक्त्या नुक्ते यथा
भगवन् देवदेवेश त्वं पिता सर्वदेहिनां येन रूपेण भगवंस्त्वया व्याघ्रं चराचरं तेन रूपेण
देवेश स्वाचार्यां सन्निधौ भवेति न मेत एतदंतं सर्वदेवादेवानां समानं देवसंज्ञं मूलमंत्रो
वैदिको वाग्राह्यः अथाचार्याः कर्त्ता चालिङ्गमर्चा वा ॐ भूः पुरुषमावाहयामि ॐ
भुवः ॐ स्ववः ॐ भूर्भुवः सुवरावाहयामीत्यावाह्यं प्राणवेनासनं दत्वा तेनैव दूर्वाश्यामाक
विष्णुं क्रांतौ मिश्रयाद्यं इमां श्रावः शिवतमाः क्षताः पूजतमामेध्यामेध्यातमा अमृता
अमृतं रसापाद्यास्तानुषतां प्रतिगृह्णतु भगवान्महाविष्णुर्विष्णवेन मरति पाद्यं भग
वान्महादेवो रुद्राय नम इति लिङ्गे इमां श्रावः श्रावमनीयास्तज्जवतामित्याचमनी

राम
२१५

219-17

यं अर्थाश्च ततो वेदमंत्रैः संसाध्येदं विष्णुरिति विष्णो नमो अस्तु नीह गीवा येति लिं
 गोप्रतिसरं विसस्य इमे गंधाः शुभादिव्याः सर्वगंधैः रत्नं कृताः यता ब्रह्मपवित्रेण यताः
 सूर्यस्य रश्मिभिः यता इत्यादि पूर्ववत् इति गंधं इमे माल्याः शुभादिव्याः सर्वमाल्यै
 रत्नं कृताः यता माल्या इमे युष्या इति युष्यं च न स्यति रसाध्रयो गंधा यो ध्रुव उन्नतः आ
 ध्यातः सर्वभूतानां ध्रुवो यं प्रतिगृह्यतां प्रतिगृह्णात्वित्यादि ध्रुवं ज्योतिः शुक्रं च तेजश्च
 देवानां संततं प्रियं प्रभाकरः सर्वभूतानां दीपो यं प्रतिगृह्यतां इति दीपं दत्त्वा विष्णो संक
 षेण वासुदेव प्रद्युम्नानिरुद्धपुरुषोत्तममाधोक्षजं नृसिंहाद्युत्तमजनादेनोपेन्द्रहरिस्तु मेति
 द्वापशानामभिः युष्याणि समर्प्य तेरेव तर्पणं कृत्वा पायसगुडोदनचित्रोदना नियविजं
 ते विततमिति निवेद्य कृत्वा रं पूर्वोक्तनामभिः कृत्वा तने च शार्ङ्गिः ले म्रिये सरस्वत्ये विष्ण
 वै इति कृत्वा विष्णुर्नमं तदस्य प्रियं पुनर्द्विष्टुपरो माजपाविचक्रमेजिर्देव इति जुहु
 यात् लिं गोदूपा तं कृत्वा भवाय देवाय शर्वाय ईशानाय पशुपतये रुद्राय उग्राय भी
 माय महते देवाय नम इति युष्याणि दत्त्वा तेरेव तर्पणं कृत्वा यच्चित्रं ते इति पायसगुडो
 दनं च निवेद्य पूर्वोक्तनामभिः कृत्वा रं कृत्वा भवस्य पशुपतये स्वाहेत्याद्यष्टभिः गुडोदनं दु
 त्वा भवस्य देवस्य सुताय स्वाहेत्याद्यै हरिद्रोदनं कृत्वा अंबकं मनोमहांतं मानस्तोके
 आरात्ते गोधूं चिकिरीं द्विलोहितसहस्राणि सहस्रश इति द्वादश एते कृत्वा शिवा

२२०

य शंकराय सहमानाय शितिकंठाय कपर्दिने ताम्राय प्ररुणाय अथ गुरमाणाय ।
 हिरण्यवाहवे सस्यंजराय वभ्रुणाय हिरण्यवेति च जुहुयात् ततः स्विष्ट कृदादिशेषं
 समाप्य पूर्वोक्तिसर्वहविर्बिधिवे लिंगाय वा वलिं दद्यात् मंजस्तु त्वामेकमाघं पुरु
 षं पुरातनं नारायणं विश्वसृजं यजामहे त्वमेव यज्ञो विहितो विधेयस्तु त्वामात्मनात्म
 न् प्रतिगृह्णीष्व हव्यमिति लिंगे तु नारायणपदे रुद्रं शिवमिति वदेत् ततोऽस्य परे भू
 भुवः स्वरो मिति हुतशेषं निधाय प्रदर्घ्यद्वादशानि स्रगां वा गां दत्वा अर्च्य गभ्योऽपि दक्षि
 णं दत्वा शतं द्वादश वा विप्रान् भोजयेदिति संक्षेपः प्रसादमात्रेण तने तु मात्स्यात्कृत्वा
 लाशय प्रतिष्ठा विधिमेव कुर्यात् गोरुक्तराण्यग्री प्रक्षेपादितु न भवति द्वारलोपात्
 वारुणा होमस्थाने वा सूक्ष्मोऽन्यतद्वदेव ॥ इति भट्टकमलाकरकृतो लिंगार्ची
 प्रतिष्ठा विधिः अथ पुनः प्रतिष्ठा ॥ तामाधिकृत्य ह्यशीर्षयंचरात्रे चंजलामद्यसंस्प
 र्शं दूषिता वक्रिणाथवा अथ पुण्यजनसंस्पृष्टा विप्रदत्तजदूषिता संस्कार्येति शेषः यदा
 र्थादरीत्रास्ते स्वं इते स्फुटिते दग्धे भ्रष्टे माननिवर्जिते यागमिच्छेद्दीने यशस्यष्टे य
 तिते दुष्टभूमिषु अन्यमंत्रार्चिते चैव यतितस्य र्शं दूषिते दशस्येतेषु नोचक्रुः सन्निधाने
 द्विवैकसः यागः पूजा यशर्मदनादिषु ततैव यंचरात्रे स्वं इति स्फुटिता दग्धा यस्मा
 दद्याभयावहा तस्मात्समुद्धरेत्तौ पूर्वाक्तविधिनानरः सिद्धांतशेखरे चौरचंडा

 राम
 २२०

220-A

लपति तत्रोदक्यास्यरीने सति शिवाद्युपहतौ चैव प्रतिष्ठा पुनराचरे पंचरात्रे मंगलं
 गादिसंघाने प्रतिष्ठा पुनराचरेत् जलाधिवासविहितनोत्रोन्मीलनवर्जितां शुद्धि
 विवेके विष्णुः इव्यवत्कृतशौचानां देवता चानां भयः प्रतिष्ठापनेन शुद्धिरिति अर्चाः
 प्रतिमाः तत इव्यस्यताम्रादेरुक्तशौचं कृत्वा पुनः प्रतिष्ठा कुर्यादित्यर्थः स्मृत्यर्थसा
 रैत्येतत् तद्विधिर्वैधापनसत्रे पूर्व प्रतिष्ठितस्या बुद्धिपूर्वमेकरात्रं द्विरात्रमेकमासे दि
 मासं चर्चनादिविधे देस इरजस्वलाद्युपस्यरीने जलाधिवासं कृत्वा कलशेन स्नाययेत्
 ततः पंचगव्येन परं शुद्धोदकेन स्नाययेदष्टसहस्रमष्टशतमष्टाक्षिं शान्तिं वा कलशैः पुरुष
 सक्तैः ततः पुष्पाणि दत्त्वा गडोदनं निवेदयेदिति बुद्धिपूर्वतु विधे दे पूर्वोक्तां प्रतिष्ठा
 पुनः कुर्यात् पूर्वोक्तविष्णुवचनात् इदं मलमाससंक्रांता दावपि कार्यमिति मदनर
 त्रिहेमाद्रौ च देवार्चा प्रासादभेदेन तु मलपाणौ कार्ययः चापी कृपारामसे तु सभातडागवक्ष्य
 देवतायतनभेदेन प्रायश्चित्तसंक्रांतीर्जुयादित्यर्थः विष्णुमानस्तोत्रे विष्टैः कर्मा
 णि पादोत्थेति या देवता मुत्सादयति तस्यै देवताये ब्राह्मणान् भोजयेदिति शंखलि
 रितौ प्रतिमारा मक्षपसंक्रमध्वजसेतुनिधानभेगेषु तत्समुत्थानं प्रति संस्कारोष्टरा
 तंच निधानेनानामिति समुत्थानं प्रति क्रिया प्रति संस्कारः पुनः प्रतिष्ठा अष्टशतं पाणा
 देऽर्च्यैः अर्च्यजीर्णद्वारः सचलिंगादौ दग्धे भग्ने च क्षिते वा कार्यः अप्रयचनादिसि

नि. सिं.
२२१

221

द्वप्रतिष्ठितलिंगादौ भगादिदृष्टेपिनकार्यः तत्र तु महाभिषेकं कुर्यादिति विक्रमः कर्मा
मकदेवस्य जीर्णं द्वारं करिष्य इत्युक्त्वा पुण्यं वाचयित्वा चार्थमृत्विजं प्रसूतत्वा लिंगे ओं व्या
पके श्वरशिरसे स्वाहेत्येवं षडंगं कृत्वा ऽधो रमंत्रं रातं जप्त्वा मिं प्रतिष्ठाप्य धोरेण घृतसर्षपैः
सहस्रं हुत्वा दाभ्यो नाम्ना वलिं दत्वा जीर्णं देवं प्रणवेन संप्रज्य ब्रह्मादिमंडलदेवानां होमं
पूर्वोक्तं कृत्वा देवं प्रार्थयेत् जीर्णं भगमिदं चैव सर्वदोषवहं नृणां अस्याद्वारे कृतं रातिः
रासुस्मिन्कथिता त्वया जीर्णं द्वारविधानं च नृपराष्ट्रहितावहं तदधि तिष्ठ तौ देव प्रहरा
मितवाज्ञयेति ततः क्षीराज्यमधुदूर्वाभिसमिद्धि आद्योत्तररातं देवमंत्रेण हुत्वा सहस्रं च
हुत्वा पायसेन शङ्खत्वा लिंगं प्रार्थयेत् लिंगं रूपं समान्प्रयेनेदं समधिष्ठतं यायास्वसमि
तं स्थानं संप्रज्यैव शिवाज्ञया अत्र स्थाने च पादिसर्वाद्येष्वरैर्धत्ता शिवेन सह संतिष्ठेति मं
त्रितजलेनाभिषिच्य विसर्जयेत् ततोऽसुमंत्रितेन रवनित्रेण रक्तत्वा लिंगमादाय नद्यादौ र्वम
देवेन लिंगं प्रवेन मूर्तिं क्षिपेत् दारुजं तु मधुना भ्यज्या धोरेण दहेत् हेमरत्नादिमयं तु द
ग्धं च लिवायुनस्तत्रैव स्थापयेत् ततः रात्रौ अघोरेण तिलैः सहस्रं हुत्वा प्रार्थयेत् भगव
न्भूतभक्ष्ये शलोकनजगत्यते जीर्णं लिंगं समुद्धारः कृतस्तवाज्ञयामया अग्निना दा
रुजं दग्धं क्षितं शैलादिकजले प्रायश्चित्ताय देवेरा अघोरास्तु एतार्थितं ज्ञानतो ज्ञा
नतो वापि यथोक्तं न कृतं यदि तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु तत्र सादामहेश्वरेति ततो यज

राम
२२१

221-A

मानः प्रार्थयेत् गोविप्रशिल्पिभूषणानामाचार्यस्य च यद्वलः शान्तिर्भवतु देवेश अर्चिद्रंजा
यत्तामिदं मन्त्रौतुविशेषः त्वत्सादे ~~म~~ न निर्विघ्नं देहं निर्माय यत्तस्यै वासं कुरु सुरश्रे
ष्ठता तत्त्वं बाल्यके गृहे वसत्केशं सहित्वै ह मन्त्रि वेत्त सर्ववत् पावत्कारयते भक्तः
कुरुतस्य च वांछितमिति ततो नवां मन्त्रिं लिङ्गं वा क्तत्वा क्त विधिना स्थापयेत् मन्त्राच्च गि
पुराणे स्पष्टं इति जीर्णोद्धारः अथ तुलसीग्रहणं देवयाज्ञक कृते स्मृति सरे वैधृतौ च
व्यतीयाते भौम भार्गव भानुषु पर्वद्वये च संक्रांतौ द्वादश्यां स्तनक द्वये तुलसीये विचि
न्वित्ति ते धिं दंति हरेः शिरः विष्णुधर्मोत्तरे रविचारं चिना हूँ वा तुलसी द्वादशीं विना
जीवितस्या चिनाशाय प्रविचिन्वीत धर्मवित्त तथा संक्रांता वर्क पक्षांते द्वादश्यां नि
शि संध्ययोः ये हि त्रे तुलसी पञ्चमोऽष्टि त्रे हरि मस्तक पादौ द्वादश्यां तुलसी पञ्चधा जीप
त्रं च कार्त्तिके लुनाति सनरो गच्छेन्निरघाननिगर्हितान् रुद्रयामले द्वादश्यां च दिवा स्वा
पस्तुलसी वचयत्ताया विष्णोश्चैव दिवा स्नानं वर्जनीयं सदा बुधैः विष्णुधर्मो न हि द्यात्
तुलसी विप्रो द्वादश्यां वैष्णवः क्वचित् देवार्थं तुलसी छेदो होमार्थं समधांतया इडक्षये
न डक्ष्येत्त गवार्थं दुत्तणस्य च ग्रहणं मंत्ररूपाये तुलस्य मृतनामासि सदा त्वं केशव प्रये
केशवार्थं विचिन्वामि वरदा भव शोभने इति परिज्ञाते दक्षः समित्युष्य कृशादीनां हि
तीयः प्रहरामतः अथ पुण्यादेः पटुं धितत्वं भार्गवार्चने भविष्ये प्रहरंति स्मृते जाती कर

वीरमहर्निशं तलस्याचिल्वपत्रेषु सर्वेषु जलजेषु च न पयुषितं दोषोऽस्ति मालाकाररू
पिच वह्नारदीये वर्ज्यं पयुषितं पुष्पं वर्ज्यं पयुषितं जले न वर्ज्यं तलसीपत्रं न वर्ज्यं जा
वीजलं तत्रैव पाद्ये तलसीपयुषितानेव विल्वं तु त्रिदिनावधि पक्षपंचदिनात्पाज्यं शेष
पयुषितं विदुः स्कांदे पालाशं दिनमेकं त्रयं कजं चादिनत्रयं पंचाहं विल्वपत्रं च दशाहं तुल
सीदलं पदार्थादर्शं राघवभट्टस्वन्यया विल्वाया मौगीजो मौतुलसी कशौतौ केतकी भृंगद्वी
मंदा भोजो हृदैर्भी मुने तिलतगैरन्नं सकलैर्मन्त्री चंयां श्वाराति कुंभी दसनमस्तु च काचित्त्वतो
हानि शस्ता त्रिशत् ३ अत्र ३ का १ पी ६ शो ११ दधि ४ निधि ८ च ८ भ १ भ १ यमा २ भ य एवे अ
स्यार्थः शताशतावरी मंदः मंदारः मुहिर्नागकेसरः मुनिरास्यः अश्वारातिः करवीरः कुं
भी पाटलेति कैदेव निष्टुः मुरयः षट् षट् ईशाः एकादश उदधयश्चात्वारः निधयो नवद
सवोद्वेगभरेकः यमो हौ विल्वभारभ्याहियं तु गणयित्वा दर्भा मारभ्य पुनस्त्रिंशदादिगण
येदित्यर्थः एतद्दिने त्रयं पयुषितानीत्यर्थः होडरानंदे स्कांदे मनुमुपक्रमस्य तस्य माला भग
वतः परमप्रीतिकारिणी शुक्ला पयुषिता वापिन दुष्प्रभवति क्वचित् निधितत्वे मात्स्ये
विल्वपत्रं च मांघ्यं च तमाला मलकीदलं कादूरं तुलसी चैव पक्षं च मुनिपुष्पकं एतस्म
युषितं न स्यात्कुराश्रकालिकास्तथा सरतिसारावल्यां जलजानां च सर्वेषां यजाणामा
ह तस्य च कुरा पुष्पं जतसुवर्णं कृतयो रधि न पयुषितं दोषोऽस्ति तीर्थतो यस्य चैव

ग्र १

राम
२२२

222-A

ॐ मुकुलेर्न च ये देवचंपकैर्न लजेर्विना अथ शिवनिर्मात्यनिर्णयः सिद्धांतराख
 र धरादिरापमारत्नताम्रौयामुकादिद्वान् विहाय शेषं निर्मात्यचंडेरायनि
 वेदयेत् अन्यदत्रादियानीयं तावत्तुल्यं दद्याच्छेदाय निर्मात्य शिवभु
 क्तं तु सर्वशः प्राचर्या शिवचंगनामाज्ञाभंगे तुल्यकंधनस्य भक्षणं तेषां पादो न लक्ष्मी
 रितं निर्मात्य भक्षिते लक्ष्यादतः शुद्धिरीरितः दानं च भक्षणं समं न दर्धं न दुपक्षणे १
 अकामाद्रक्षणे यद्वा निर्मात्यस्य जयेत्तु धी न्नस्य च कर्त्तुं स्रग्धर्मं न सहितं ततः काम
 तो भक्षणं दीक्षा प्राप्य भित्तं न चान्यतः निर्मात्यलंघने घोरे प्रजयेदयुतं ततः स्पर्शं श्रुलंघ
 नसमो विक्रयो भक्षणं न च स्मृत्यर्थसारेपि शेषसौर निर्मात्यनैवेद्य भक्षणं चांद्र
 अभ्यासे द्विगुणं मत्याभ्यासे यतनं अन्य निर्मात्ये यनायद्येवमिति चंद्रचन्द्रोति
 लिंगं घटि रित्क विषयं तथा च पुरुषार्थप्रवाधे भविष्यज्योतिर्लिंगं विना लिंगं
 यः पूजयति सन्नमाः तस्य नैवेद्या निर्मात्य भक्षणं तत्र कृच्छ्रं शालिग्रामोद्भवे
 लिंगे र्वा लिंगे स्वयं भुविरसलिंगे तथा च सरसि द्वा प्रतिष्ठिते हृदये चंद्रका
 ते च स्वर्णरूप्यादि निर्मिते शिवदीक्षावता भक्तेनेदं भक्ष्यमिति रीयते तथा वाण
 लिंगे स्वयं भूते चंद्रकाते हृदि स्थिते चांद्रायणं समं ते यं शोभो नैवेद्य भक्षणं

लिंगे स्वयं भवे वाणोर व्रजे रसनिर्मिते सिद्धप्रतिष्ठिते चैव न चंद्राधिकृतिर्भवेत् ।
 यत्र चंद्राधिकारोऽस्ति तद्भोक्तव्यं न मानवेः चंद्राधिकारो यत्र भोक्तव्यं न भक्तिः त्रै-
 विक्रम्या वाणलिंगे च लोहे च सिद्धलिंगे स्वयं भुवि प्रतिमास्तु च सर्वास्तु न चंद्राधिकृ-
 तो भवेत् अत्र ब्रह्महापि शुचिर्भूत्वा निर्माल्यं यस्तु धारयेत् तस्या पापं महर्घं घृणा-
 रापि व्ये म हाव्रतेति स्कांदादमुचिना नग्रांशं शिवनिर्माल्यं किं तु स्त्रात्वेति स्माज्ञाः अनुय-
 नीतेन ग्राह्यमिति श्रीदत्तः शिवदीक्षीहीनेर्न ग्राह्यमिति शैवाः निश्चितत्वे हेमाद्रौ पर-
 शिष्टे अग्रांशं शिवने वेद्यं यत्र पुष्पं जलं फलं शालग्रामशिलासंगात् संव्याप्य वि-
 त्ता पंचायतनं जायते त्रेण निवेदतमित्यर्थः शिवपुराणे ये वीरभद्रशायिताः शिव-
 भक्तिपरं पुरवाः शंभोरन्यत्र देवेषु ये भक्ता येन दीक्षिताः तैवामनर्हमीशस्य तस्य साद-
 र्यं चतुष्टयं कारीरं च जलस्य धारणं सार्धं विष्णोः स्नानं जन्मनः राघजालं धराबंधः स-
 मस्तसुरवत्सलः तथा स्नापयित्वा विधानेन यो लिंगं स्नपनोदकां त्रिः पिवेद् द्विविधं पापं ।
 तस्येहामुचिनरयति लिंगं स्नपनं वार्षिकं कुर्यात् स ध्यामिवेचनं गंगास्नानं फलं त-
 स्य जायते त्रिविधं फलं इदं पूर्ववाक्यवशादिष्टे शरविशयामिति केचित् कारीरस्य
 पुराणप्रसिद्धसर्वलिंगविशयं कारीरं चोदरे स्वरिष्याने तथैव दर्शनादित्यने अथ
 कश्चिन्मराजमात्रेऽः अरक्षेतरयोश्चैव मवममममलानुराधास्मिनीप्राजायत्यकर

223-A

द्विदैवतगुरुप्रालयेयपादेषु च निर्देष्टव्यं यमै हलैश्च समनोमालाभिस्त्यर्चितैर्दत्त्वा
क्षेत्रयतेर्बलं हरधरः क्षेत्रततः कथयेत् प्राजेराश्रवणोत्तरादिति मघामार्तं उतिष्ठा
श्विनीपौष्णानुभमरीचय शतभिषक् स्वाती विशारवा तथा जीवाकेंदु सितेंदुनं
दनदिने लगे च सोम्योदये सस्यानां वयनतथेवलने रास्तास्तया रोपणे चंडेश्वरः
हस्तचित्रादिति स्वाती रेवत्या श्रवणा त्रये स्थिरलग्ने गुरोर्वारे वीजं धार्यत्तु शुक्र
योः ऊं धनदाय सर्वलोकहिताय देहि मे धान्यं स्वाहा लेखयित्वा इमे मंत्रधान्यागारे
निधाययेत् सस्यं तद्विपरां कुर्यात्सजितं प्रतिपद्येत दक्षिणादिशुभ्रवगमनं गमनमि
नवास्तु नारीषु व्ययमपि सस्यधानानां नवधा नवधा वसां रे कुर्धुः शनिवारे च नो कार्थी
धनधान्यव्ययो बुधैः श्रवणं वस्त्रं प्रीतिः रोहिणी शुक्रपंचके श्विने पुनरासु च पु
नर्वसु द्वये रेवतीषु वसुदैवते च नैव व्ययस्य पतिघानमिष्यते जीर्णैरेवो सततमेव
भिरार्द्धमिद्रोभौ मे सुचैषु धदिने तु भवेदनाय ज्ञानाय मंजिणि भृगो प्रियसंगमा
यमं देमलाय च नवां वरधारणं स्यात् रोहिणी गुरुपुनर्वसुतरे या विभर्ति नवचसु
भ्रवणो सानयो विदवलंबते पतिज्ञानमाचरति चारुणो प्रिया अप्रयाले कारवलयादि
दैवतवत्सलभः नासत्यप्यस्मावसुभिः करपंचकेन मार्तंडभौमगुडदानवमंत्रिवारे
मुक्तासुवर्णमणि विद्रुमशंखदंतरक्तचराणि विधृतानि भवेति सिद्धे ज्योतिर्नि

रव

बंधे हस्तानुराधनगयधनिष्ठयुक्तचित्रोतरासुचपुनर्वसुरोहिणीकुलमेस्थि
रेरविसुतेंदुजजीवकारेहेमादिधाराणविधिः कथनोनराणां तत्रैवस्त्रीपतिः पौ
ष्पास्त्रीनीवसुकराधिष्ठयेचभेष्ठकोसुभहेममणिचिद्रमकाचरांरवाः नार्था
धत्ताः सुमरवार्यकराभवेतिब्राह्मोतरादितिगुरुसुसुरवायभर्तुः तत्रैवशरवादिवर
रत्नानिपुष्यादित्युतरासुच रोहिणीनेवगृहीत भर्तुजीवितकांक्षिणी अथस्त्री
कर्मवासवादितित्रराष्ट्रमैत्रेचंद्रास्त्रीनीष्ठच स्त्रीकर्मतनुत्राणामेभिःश्रद्धैः पूरा
स्यते अथशय्यो हस्तादितिग्रसगुरुत्रराणिपोष्माश्विनलेंदुभाचित्रेभानिवरेकुजीवेंड
सितेंदुजानांशय्यासमारंभणमुतमंस्यात् अथरास्रधारणं पुष्येचादितिचित्रपयतन
येराजोत्तरारेवतीस्वातीवाजिनिशसवमित्रसहितेभानौगुतेभार्गवे कुंभेकीटवद्यैर
गयतोचेंदौश्रुमैकीक्षितेसत्राह राखंडभक्तधुरिकाधार्यानयाणांदिताअथस्वामि
सेवा अथचंडेश्वरः रोहिण्युतरपोष्णेकुवसुवास्त्राणयोरपि सेवेतस्वामिनंभृत्यःश्रु
भवारोदयेत्रया ज्योतिर्निबंधे दासीदासादिभृत्यानांकुर्यात्संग्रहांबुधे स्थिरलगेनसु
भैरवेमंदवारेविशेषतः अथगजाश्रुदोलासराव पौष्मप्रजेरादितिभद्रयानिहस्ता
दिषट्कश्रवणोत्रराणि दोलादिमातंगतरंगमाणारोहणोभीष्टफलप्रदानि अथ
नृत्यं हस्तः पुष्योवासवरोहिणीचज्येष्ठापोष्णवास्त्रांचौतराश्रु सदाचार्यैःकी

राम
२२४

924-A

नितम्बकवतीनृत्यारंभे शोभनोयं भार्गव अथ राजदर्शनं श्रीपतिः मृगाश्रिति
 व्यभवत्तद्विद्यास्तधवत्वाद्याभस्यभानि मैत्रेण युक्तानि नरेश्वराणां विलोकने भा
 नि शुभप्रदानि अथ क्रयविक्रयो भाद्रपदजिदशमं त्रिदिवाकरेषु मूलानिलोत्तरतु
 रंगमरेवतीसु सारंपारिगरजनीकरमैत्रभेषु लानेः सदेवभति क्रयविक्रयाभ्यां बसेतु
 चित्राशतभिषा स्वाती रेवती चाश्विनी शुभा अथ एतथा प्रोक्तौ वत्साणां क्रयणेशुभाः
 अथ सैतः स्वाती युक्ते मंदवारे ह्यलने शुभे दिने सैतनां वंधने कार्यं ध्रुवभे चार्कजवयोः
 अथ यमस्तु कृत्यं श्रीपतिः चित्तो रावेष्टमवरो हि एतु चतुर्दशी दर्शादिनाष्टमी शुस्थानं प्रवे
 रंगमनं विदध्या तु मानपशुनां न कदाचिदेव चंडेश्वरः हस्तमूलविशारवा सुरेवत्यां अव
 एतथा मैत्रे च वारुणो मेष्टं क्रयणमुच्यते एवात्र यामतमयूरवद्गर्जनेषु इंद्राग्निवाजिव
 सुवासणां शंकरेषु एतेषु गोमहियदंति तुरंगमादिनाता प्रकारपशुजातिगतिः प्रशस्ता
 अथ गजदंतधेदः ज्योतिर्निवेधे त्वाष्ट्रैर्वैष्टमव अश्विन्यामादित्येव सुदेवते दंतिनां शुभदं
 कर्मेषु ह्येह स्तेचकीर्तितं अथ निक्षेपः भरणी त्रीणि एवाणि आर्द्रा श्रूयामघातयाचि
 जा ज्येष्ठा विशारवा च मूलं मृग पुनर्वसु एभिर्दंतेषु प्रयुक्तं च यद्यन्निक्षिप्यते धनं पृष्ट
 तो धावमानस्य धनिनोपपद्यते अथ ऋणमोक्षः श्रीधरः वागीशमंददिवा संवाकल

न

गुणैरिक्तासमं ददिवसे कुलिकोदये च मैत्रद्वितीयपदमैत्रमुद्रतैयुक्ते राशुद्रमेच अण
मोक्षसुशान्तिसेतः अथ राजमुद्र मुद्रुध्वक्षिप्रचरेषु भेषु योगे प्रशस्ते शानिचंद्रवर्जवारेति
पौष्णराजयाद्वये च मुद्राप्रतिष्ठाशुभदाहिराज्ञा अथ नौः चंडेश्वरः पौष्णाश्विनीतरगावासाणि मित्र
चित्राशीतोष्णरश्मिबसवोनलंवत्पुनः नि वारे च जीवभृगुनंदनके प्रशस्ते नौकादिसंघटन
वाहनमेषुकुप्यात् अथ भोगः गुरुभरविभानु राधाविधातपौष्णाश्विरोहिणी स्यात् स्वा
तृत्तरासकुर्याच्छयनासन भोगभोगादि अथ स्मशुकर्म श्रीपतिः पुष्पपौष्णेचाश्विनीकेदं
वेचराक्रेहस्ताद्ये त्रिकेभ्यो दित्याक्षौरं कार्यं वैष्णवादित्रये च मुक्ताभौमादित्यपातंगिवारान्न
स्नातमुक्तात्कटभूषितानामभ्यक्तयात्रासमरोत्सुकानां क्षौरं विदध्यान्निशि संधयोवाजिजी
विष्णुणां नवमेन वद्वि त्रिस्थलीसेतो हृद्गार्ग्यः रव्यारसोरवारेषु रात्रौ याते व्रतादनि आ
काहप्रतिपदिक्ताभाद्राः क्षौरेषु वर्जयेत् गार्ग्यः षष्ठ्यमाष्टर्षिमापातचतुर्दश्यष्टमी तथा
आसुसंनिहितं पापं त्रिषु तैले भगे क्षुरे राजमात्रेऽः देवकार्ये पितुः आदेरवेरं रापरिक्षये
क्षौरकर्मन कर्त्तव्यं जनममासे च जन्मभे हृद्स्पतिः राजकार्ये नियुक्तानां नराणां भय
जीविनां रमाश्रुलोमनखधेदेनाम्रिकालविशोधनं तथा क्षौरं नेमि तिकं कार्यं निवे
धे सत्यपि ध्रुवं पात्रादिमृतिदीक्षासप्रायश्चित्ते च कीर्यते केचित्ततराई मन्यथा पठंति
मुंडनस्य निवेधेपि कर्त्तनं तु विधीयते इति नारदः नृपा विप्रा राजपापते मरणे वंध

225-A

मोक्षार्थे उद्वाहे रिवलवारक्षतिथिषु क्षौरमिच्छदं भारते प्राञ्जल्यवरमश्रुकर्मणि का
 रणीतसमाहितः उद्वाहो रवो वायव्यभक्त्या नयायुर्विदत्तमस्तु अपराके उद्वाहः प्राञ्ज
 रवो वायव्यनेकारयेत्सुधीकेशमश्रुलोमनरवान्मुदकं स्यात्तिवापयेत् दक्षिणं कर्म
 मारभ्य धर्माद्यपापसंक्षये शिरव्याधेन वसेत्कारे शिरवाधेन शिरोवयेत् यतीनां लक्ष्मि
 धो निगमे कक्षोपस्थ शिरवाधेन ज्ञेयं तु संधिषु वायवेदिति अन्येपि विधिप्रतिषेधाः
 प्रागुक्ताः अथ धनसंग्रहः त्रस्तातिलार्कमघमलजिपर्वरौद्रेयोष्मानुराधगुरुविष्णु
 विशारदयुक्ते वारे कुजाके भृगुने दनसोमजानां ज्ञेयं धनस्य करणं भवति प्रशस्तं अ
 धनवान्ने श्रीपतिः रेवतीश्रुतिपुनर्वसुदस्तत्रासत एतद्यगपि द्वितीये च अत्ररेषु ग
 दितं यद्युक्तानां प्राशनं नवचान्नविधानं अथ नवभोजनपात्रं ज्योतिर्निबन्धे भो
 ज्यपात्रे सुधासिन्धो यद्येका समाहरेत् तत्रान्नप्राशनं प्राक्काले भोजनमाचरेत् अ
 थ नवपर्णफलादिभक्षणं चण्डेश्वरः मलाम्बिमेत्र करतिष्य हरीदुर्भेद्युपोष्टमोत्तरे दवपु
 नर्वसुवासवेषु वारेषु भूमितनयार्कजवारवर्जिता बलन्तनफलाद्यशानं हिताय
 अथ होमेऽर्पितपातः ज्योतिषे तरणिविष्णुगुभास्करिचंद्रमाकुजसरे ज्यविधु
 तंदकेतवः रविभक्तो दिनभंगार्थे क्रमात् प्रतिरवगं व्रितयं व्रितयं न्यसेत् दिनकरा
 किंतमः कुजकेतवा कृतभुजानमभास्वितरेभ्यः दहनचक्रमिदं प्रविहोत्तौ हवन

कर्मणि सर्वसम्बद्धये अत्रांतिरुक्ता विष्णुधर्म कुरगहमुरवे चैव संजाते हवने अ
भैरांति विधाय गंधाद्यास्त्राण्यकुटुंबिने आयसी प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेताम
धोमुरवी गोमूत्रमधुगंधाद्यै रचितं प्रतिमां ततः स्वस्थानि धाय संपूज्य तत्र होमो वि
धीयते अत्रापवादः क्रियासारे नित्येनै मितिके दुर्गाहोमादौ न विचारयेत् अथ ज्व
रादौ फलं श्रीयतिः स्वात्पञ्चैषारौ इरवास राक्रे रोगोत्पत्तिर्जायते यस्य पुंसः तद्वैष
ज्या व्याकृतो निप्रयत्नः स्यादुगधाश्चैलं भुजनापिवेद्यः व्याध्युत्पत्तिर्यस्य पौष्टे समिते
प्राणजालं जायते तस्य कृच्छ्रात् वैश्वेसोम्ये रोगमुक्ति र्तिमासा ईशत्यास्याद्वा सराणामघा
स पक्षादस्तेवासवे सद्दिदैवे मलाश्विनो रग्निधि ह्येन वाहात् याम्येत्वाष्टे वैष्णवे वा
रुणे वै नैरुज्ये स्यान्न न मेका दशाहात् ज्योतिषे ह्येन आहिर्बुध्न्ये तिष्य संज्ञे र्थमाख्ये
प्राजापत्यादिभ्योः सप्तरात्रात् ज्योतिषे राकाहा निधनं दिशा ह्यमनिलाः वाणा वि
पत्यर्वताः सप्तांका विलयश्च मासयुगलं मासो मृतिः पक्षकः द्वौ मासवयविंशतिर्द्व
पानिरीः पक्षांतपक्षानरवामासौ पक्षनरवां दशांतपक्षककुभः पीडादिना न्यश्चि
भात् दैवज्ञः उर्वारु रारो द्वावासवेदं त्रिद्वयमदहत विरारवा पापवारेण युक्ता
तिथिषु नवमिष्वष्टी द्वादशी वाचतर्षी भवति मरणयोगो रोगांगकालहेतुः १
कुं अत्र कुं भैरौ मीनक्षत्रदेवता प्रतिमा सं पूज्य द्वादशदलेषु संकथ्य एतादि द्वादशमा

226-A

तिः द्वादशादित्यान्वासेयं द्वासाक्षितिलक्ष्मीराज्येः गायत्र्या तद्देवताये म्रष्टोत्तरेण
तं कृत्वा दध्योदनं वल्लिंदत्वा चार्घ्याय गं प्रतिमां च दत्त्वा विप्रान् भोजयेदिति संक्षेपः विशेष
वस्तु व्रतहेमाद्रौ यदार्घ्यादर्शे चक्षेयः अथ भेषजं चंडेश्वरः मस्तानुराधमृगतिष्यपु
नर्वसौ च योष्माग्निनीश्रवणराक्रकरजये च वारेषु वा कपतिसिंहे इदिने प्रशास
नैष्वज्यभक्षणमभीष्टुदितेन राणां अथारोग्यस्तानं श्रीयतिः इंडो वारे भार्गवे च
ध्रुवे सुसार्धादित्यस्यातिपुक्तेषु भेषु मैत्रेयांश्चैवापि कुर्यात्कादचिन्नैवस्तानं रोग
निर्मुक्तजंतुः चरे विलोतेन रविभौमवासरे रिते तिथौ स्याद्भुले च पक्षे धिष्मे च
रे रोगानि पीडितानां स्नानं नराणां नित्तजत्वकारि अथ दंतधावनं पृष्ठी चंद्रोदये विष्णुः
प्रतिपदशीर्षाष्टीषु चतुर्दश्यष्टमीषु च नवम्यां भातुवारे च दंतकाष्ठं विवर्जयेत् ना
रदः चतुर्दश्यष्टमीयोर्णिमासी संक्रमणेषु च न द्वादस्य च नवम्यां च दंतकाष्ठं विवर्जये
त् अष्टम्ये च नियमेन या प्रोषितभार्लका व्यतीपाते च संक्रांत्यां न द्वादश्यां च पर्व
स ते लक्ष्मीरतिमांसे दंतकाष्ठं च जयेत् वशिष्ठः शतयुक् मृकवारेषु कुजाक्षेत्रे व
सरे जन्मादिप्राद्विसे दंतकाष्ठं विवर्जयेत् हेमाद्रौ स्कान्दे अभ्यंगे जलाधिसनाने दंत
धावनं मैथुने जाते च निधने चैव तत्कालव्यापिनी तिथिः संवत्तैः रेवो विवाहे श्री

शौचे वर्जयेदंतधावनं व्यासः प्रलाभेदंतकाष्ठानानि विद्धायांतयातिथौ अपरा
द्वादशी गंडधौ विदध्यादंतधावनं अथ मलकस्नानं व्यासः श्रीकामः सर्वदा स्नानं कु
र्वीतामलकैर्बरः सप्तमी नवमी चैव पर्वकालं विवर्जयेत् चंद्रसूर्योपरागे च स्नान
मामलकैस्त्यजेत् ऋतुः षष्ठी च सप्तमी चैव नवमी च त्रयोदशी संक्रांतौ रविवारे च स्नान
मामलकैस्त्यजेत् यत्र नवमी दशमी चैव तृतीया च त्रयोदशी प्रतिपदा दशमी कृष्णमासा
स्नानं तासु विवर्जयेत् यच्च दश स्नानं न कुर्वीत मातापित्रोस्तु जीवतोः पुत्रः कुर्वन्नेराच
ष्टे पित्रोस्तु त्रिजीवते इति कणावयमाद्यैः स्नानमात्रं निषिद्धं तद्गोमार्गस्नानपरं न नि
त्यनैर्मितिकपरमिति हेमाद्रिः अथ तैलनिषेधः कात्यायनः पक्ष्मादौ चरवो षष्पारि
क्षायां च तयातिथौ तैलेनाभ्यमग्नस्तु चतुर्भिः पारिदीयते गर्गः पंचदश्यां चतुर्दश्या
मष्टम्यां रविसंक्रमे द्वादशी सप्तमी षष्ठी तैलस्य शौचवर्जयेत् न च कुर्यात्तृतीयायां त्रयो
दशीतिथौ तथा साप्तमी गतिमन्दिनं दशम्यामपि पण्डितः तत्रैवायुर्वेदे षष्ठीदि
नक्षत्रे षष्ठ्यामेकादश्यां च पर्वसु द्वादश्यां च चतुर्दश्यां च चमपां प्रतिपत्तिथौ व्रते श्राद्ध
दिने जन्मत्रितये अवरागदीयाः ज्येष्ठानरा फाल्गुने बुधपक्षे तीयां च वैधृतौ विष्टियोगे
च संक्रांतौ मन्वादिषु पुष्यादिषु नाभ्यंगं तत्र बालानां हृद्धानां तु न दोषस्तु इति व्यवस
रतचि संक्रांतिमद्रावति यात वैधृती षष्ठी षष्ठी पर्वसु नार्कभस्तुते स्नाने द्वितीया।

११७-१ च२

दशमीचगर्हिताचषष्मादिमाघारादधावनेधमाः अस्यापवादमाह तत्रैवप्रचेत्ताः ।
साधपंगंधतैलंयज्ञैलंयुध्यवासितं अन्यद्रव्ययुतं तैलं न दुष्यति कदाचन आधुर्वेदे नि
विद्धं निविवारक्षं गृह्णोष्यपिरात्रिषु किंचिद्देष्टुं तदुक्तं प्रयादरजान्वितं भानौ इवा
न्यितं भौमभयुक्तं पुष्ययुग्गुरो सर्वेषां सर्वदा तैलं भ्यं गेयं न दुष्यति संगलेष्वप्यदोषः ॥
मंगलं विद्यते स्नानं हृदि पूर्वोक्तं वेद्युचं स्नेहमात्रसमायुक्तं मध्याह्नात् प्राकृतदिष्यते इति
मदनपारिजाते कात्यायनाग्नेः हेमाद्रौ हृदन्मनुः तैलाभ्यंगो नार्कचारे न भौमे नो संक्रां
तौ वैधृतौ विष्टिष्वयोः पर्वस्वच्छम्यां चैष्टः प्रोक्तान्मुक्तावासरे सर्पस्तनौः तिलास्त्राननि
षेधस्तः बट्टिशान्मते तथा सप्तम्यमावास्या संक्रांतिग्रहजन्मसुधनपुत्रकलत्रार्थी तिल
पिष्टं न संस्पृशेत् अथ गृहारंभः ज्योतिर्निवंधे वादरायणः वैशाखे फाल्गुने यौषे आ
वर्णो मार्गशीर्षके सत्रारंभः शिलान्यासः संभारंभः प्रशस्यते नारदः सौम्यफाल्गुने चै
शारवमाघश्रावणकार्तिकाः मासास्तुर्गृहनिर्माणेषु शरीरगंधनगृहाः ॥ ज्योतिस्तत्वे
पूर्वापरस्येत्तु न भौत्य यौषेयाम्योत्तरास्य सहसिद्धिर्लोये कार्यं गृहे जीवबुधर्क्षगार्कनी
चास्तगौ जीवसितौ चादित्या रत्नमालायां कर्कनक्रहरिकंभगतैर्के पूर्वपश्चिमसुरवा
निगृहाणि तौ लिमेखलपक्षश्चिकयाते दक्षिणोत्तरसुरवानिवदंति देवतवत्त्वभ रौ
कोधान्यपेचतानिः यस्तु तं स्वाग्निनैः स्वं संगरे भृत्यनशं स्वं श्रीप्राप्तिवद्भिभीतिचलक्ष्मी

कर्षुश्चैत्राघागहारंभकाले गर्गः श्रुतरामगरोहिएपायुष्ये मैत्रेकरत्रये धनिष्ठा
 द्वितीयेयौछेगहारंभः प्रशस्यतेरोहिएपायुष्येदितिपुत्रोहस्तत्रयेमलकेरे
 वत्पुत्ररफालुसीसुरगंभे मैत्रेतराषाढयोः शस्तवास्तुकुजाकिंवर्जितदिनेगोकुंभसिं
 हेसुखेकन्यायांमिषुनेनभः शुचिसहोराधोर्जकेफालुने व्यवहारसारे शिलान्यासः
 प्रकृतेयोगहारणंश्रवणोमृगे यौछेहस्तेचरोहिएपायुष्याश्रिन्युतरात्रये वास्तुप्रदी
 पे प्रधोमुरैवैर्विंदधीतरवानंशिलान्तथैवोर्द्धमुरैवैश्रपटं तिर्यग्मुरैवैद्वारकपाट
 पानेगृहप्रवेशोमृदुभिर्ध्रुवैश्च लक्षः स्नानंचपाकंशयनंचभोज्यंगजालपंचाजिगहं
 धनस्यदेवस्यसर्वादिदिशिक्रमेणामध्येसमाभस्यनिवैरानायशाल्पिरासे कन्यासिं
 हेतुलायांभुजगयतिमुखंशंभुकोणोभिरवानं वायव्येस्यात्तदास्यंचलिधनमकरेशशखा
 तंवदंति कुंभेमीनेचमेवे निर्वृतिदिशिमुखंख्यातवायव्यकोणे चाग्नेकोणमु
 खंवेत्तमिषुनगतेकर्कटेरक्षरवानं तत्त्वचिंतामणेण यज्जैर्धर्मगृहादीनाद्यात्रिशद्व
 स्ततोधिकं नतत्रचितयेद्दीमान् गुणानायमपादिकान् राजमातैः आयम्यौ।
 मासशुद्धिंनरागारेननाचिंतयेत् शिलान्यासादिनो कुर्यात्तथागारेपुरातने व्यव
 हारतत्वे निषिद्धेवधिकालेमुस्वानुकूलेशुभेदिने तृणाकाष्ठगृहरेभेमासदोषोन
 विद्यते चंडेश्वरः परागदित्वष्टमीयावत्पूर्वास्थंवर्जयेत्तगृहं उत्तरास्थंकुर्वीनवम्यादि

228-A

चतुर्दशं त्रिमासावास्याष्टमीयावत्पश्चिमास्यं विचर्जयेत् नवम्यादौ तथा याम्यं यावत्क
 द्माचतुर्दशी ध्रुवं दृष्ट्वा यवास्मत्त्वा कर्त्तव्यं वास्करोपणं सायाह्नवर्जं दिवसरात्रौ तत्का
 महा निशा वराहः दक्षिणपूर्वकोणे कृत्वा यज्ञं शिला न्यसेत् प्रथमात्रेणः प्रदक्षि
 णेत संभ्राष्ट्रैव समुधायाः अथ ग्रहप्रवेशः स हस्यतिः नक्षत्रां दक्षिणद्वारं भद्रायां प
 श्चिमेन तु जयायामुत्तरद्वारं दूर्गायां पूर्वतो विरोत्त वशिष्ठः कृत्वा शुकं पृथुतो वा
 मतौर्कं विप्रान् यज्यान् गतः दूर्गाकुंभं हर्ष्य रभ्यं तोरणं खगितानैः स्त्रीभिः स्रग्वीगी
 तवाद्यैर्विरोच्य व्यव हरतत्वे सौम्यायने श्रावणमार्गं पौषे जन्मर्क्षलग्ने पचयोरौ
 वामगतेर्के गृह्णवास्तु यज्ञं कृत्वा विरोदरे मभक्तुं वास्करासे लग्ना आगादितो
 दिस्तु द्वौ द्वौ राशी नियोजयेत् एकमेकं न्यसेत् कोणे सूर्यवामं विचिंतयेत् विरोदः च
 द्रुजार्थं सितवासरेषु तृतीकरां सुतमहार्थं लाभदं सूर्यस्तु दिवसे स्थिरपुंदां किंतु चौरं भ
 यमत्र निर्दिशेत् रत्नकोशे पुष्ये धनिष्ठ्या मृदुवा सुगोषु स्वायं भुवर्क्षेत्रिषु चोत्तरासु
 अक्षीणं चंद्रं भुमे दो न्यस्यति या विरिक्ते च ग्रहप्रवेशः नारदः प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः
 सौम्यकार्तिकमासपोतमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासेषु शोभनः अथ कथाटमनाध
 न्रमदन्नचलिभोजनं गृहं न प्रविरोद्धीमाना पदार्थं करं हिनत प्रवेशाश्च वास्तु यज्ञा कृत्वा
 कार्यः जीर्णोद्वारे तथोद्याने तथा गृहनिवेशे न नवप्रासादभवने प्रासदने नवप्रासाद

परिवर्तने दाराभिवर्तने दाराभिवर्तनेतद्वत्प्रासादेष्टुगृहेषु च वास्तूपरामनं कुर्यात्
 सर्वमेव विचक्षण इति मात्स्योक्तेः तत्रैव कृत्वा गतादिजवरात्तथा दुराकुंभं दधत्ताम्
 दलपुष्पफलोपरोभ दत्त्वा हिरण्यवसनानि तथा द्विजेभ्यो मंगल्यं शान्तिं नित्यं स
 गृहं विरोच्य गृहोक्त होमविधिनावलिकर्म कुर्यात्प्रासादवाशमने च विधिर्य उक्तः
 संतर्पयेद्विजानयमभ्यभोज्यैः शुक्लान्वरः स्वभवनं प्रविशेत्स्वरूपं श्रय कालिवर्ज्यानि
 ब्रह्मनारदीये समुद्रनारदीये समुद्रयातुः स्वीकारः कमंडलुविधारणं द्विजानामस
 वर्णसुकन्यासपयमस्तथा देवराच्च सतोत्पत्तिर्मधुपर्कं परोर्वधः मांसदायनंतर्प
 श्राद्धेवानप्रस्याश्रमस्तथा दत्ताक्षतायाः पुनर्दानं परस्परादीर्घकालं ब्रह्मचर्यं नरमे
 धाश्रमे धर्मो महाप्रस्थानगमनं गोमेधश्च तथा मरुतः इमान् धर्मान् कलियुगे नर्ज्या
 नाङ्गुर्मनीषिणः कमंडलुः सोदकं च कमंडलुमिच्छन्तः मन्मथावदन्ता ऊढा उढायाः पुन
 रुद्वाहं ज्येष्ठांशं गोवधस्तथा कलौ पंचनक्रवीतभातजायां कमंडलुमिति हेमाद्रौ
 वचनात् ऊढायाः पुरा पुरुषसंयोगान्तरैर्देयेति केचनेत्यादिभिर्विवाह्यतोक्ताः
 हेमाद्रौ ब्राह्मे गोजात्मात्स्येण्डाच्च विवाहो गोवधस्थस्तथा नराश्रमे धौमद्ये च वर्ज्यं द्वि
 जातिभिः गोजात्मात्स्यजायाः पितृव्यसुः मातृत्वं सपिंडात्मात्स्यजायाः कन्याया विवाहः
 कलौ न कार्यः तेन पाणिना विधाय कानि तानि युगांतरं विषयाणि तथा च व्यासः

१२१-१

तृतीयो मातृतः कन्यात्वं यापित तस्तथा ऋक्तेन वोददित्यति विप्राः विपापविमो
 हिताः इतो कलौ तन्निदामाह मातृस्तृतीयो मातृलकन्यामिति उक्तं चेतत्पाक मद्यं
 स्त्रीभ्यश्च सुरामाचाममित्यादिना विहितमपि बर्ज्यं अथ देमाद्रौ आदिपुराणे
 विधवायां प्रजोत्पन्नो देवस्य नियोजनं बालायाः सतयो न्यास्तु वरेणान्येन संस्कारि
 कन्यानामसवर्णिनां विवाहश्च द्विजन्मभिः प्रातर्नापि द्विजा न्याणां दुर्मयुक्तेन
 हिंसने द्विजस्याद्योतनो यातुः शोधितस्यापि संश्रद्धः सत्रदीक्षा च सर्वेषां कर्मणु
 लविधारणं महाप्रस्थानगमनं गोसंतापि श्वगोसवे सौत्रामण्यामपि सुराग्रहण
 स्पचसंग्रहः अग्निहोत्रहवण्या ऋक्षोहोलीढापरिग्रहः सत्रस्याध्यायसापेक्षमद्यसं
 क्रोचनेन तथा प्रायश्चित्तविधानंच विप्राणां मरणं तिकं संसर्गदोषक्षेपान्यमहापा
 तकनिःकृतिः वरातिथिपितृभ्यश्च पक्षपाकरा क्रिया दत्तोरसेषां तपुजत्वेन परि
 ग्रहः सवर्णान्यागणादुष्टैः संसर्गः शोधितैरपि अयो नो संग्रहे तत्रैपरित्यागो गुरु
 स्त्रियाः परोक्षेण तसंस्वाग उदित्यपि वर्जने प्रतिमाभ्यर्चनार्थं यसंकल्पश्च
 सधर्मकः अस्थिसंचयनादूर्ध्वमंगस्य रीतमेव च शामित्रं चैव विप्राणां स्मृति
 क्रयणं तथा षड्भक्त्या नशने चाभरणां हीनकर्मणः साधवीयेष्टधीचंद्रो
 दये च ऋद्धेष्टुदासगोपालकुलमिजार्धसीरिणः भोज्यान्नतागृहस्थस्यती

र्थसेवातिदूरतः शिष्यस्य गुरुदारेषु गुरुवद्वतिरीलता आपदतिर्दिजाग्राणामश्वस्त
 निकतानया प्रतापे उद्धिजाग्राणां प्रजारणिपरिगदः ब्राह्मणानां प्रवासित्वं सुरवाग्नि
 धमनक्रिया वलात्कारादिदुष्टसौ संग्रहो विधिचोदितः यतेष्वसर्ववर्णेषु भिक्षाचर्या
 विधानतः नवोदके दशाहं च दक्षिणा गुरुस्वेदिता ब्राह्मणादिषु मृदुस्य पचनादिक्रिया
 यिच भृगवग्निपतनेनैवैवसद्वादिमरणानया गोनृप्रिशिष्येयसि शिष्येराचमनक्रि
 या धितापुत्रविरोधेषु साक्षिणां दंडकल्पनां यते सायंगदत्तं स्वरभिस्तत्पर्यभिः
 एतानिलो कमप्रार्थकलोरादौ मदात्मभिः निवर्तिता निविद्विष्यवस्था पूर्वस्थाप
 र्वकंबुधैः सुराग्रहणस्य तत्कर्तुः संग्रहो व्यवहारः न च मद्यं चेति सामान्येन नि
 विद्वस्यानेनोपसंहार इति वाच्यं निषेधस्य निवृत्तिमात्रफलत्वेन विशेषा
 नपेक्षत्यात् न हि सादित्यस्य न ब्राह्मणं हन्यादित्यनेनोपसंहारे हिंसांतरस्यादे
 श्च तावत्तेषु निरूपितं वै बद्धे माद्रिणान्यतेत्युपस्यते च तेति एकादा द्वात्रिंशः शुद्धे
 द्वाग्निवेदसमान्वित इत्युक्तः शुद्धस्य शोचस्य संकोचः न तस्यानिष्कृतिर्दद्यात्
 ग्निपतनादित्युक्तस्य प्रायश्चित्तस्य विधानं उपदेशः क्तलोकैर्ते वलिप्यते इति व्या
 सोक्तेः पतितसंसर्गो दोषसत्त्वेऽपि पानित्वं नेत्यर्थः अन्यथा संसर्गः शोधिने रपीति

230-17

विरोधायत्तेः तैयतिनेमहापापेरहस्यकृते प्रायश्चित्तनेत्यर्थः सवर्णान्याम्रसवर्णानां
 त्रयादिस्तथा दुष्टैः अथानेोशिष्यादौ चतुक्तपरिज्याशिष्यगागुरुगाचतुक्तस्यागः
 परोद्देशेनत्राहणार्थम्यात्मत्यागः यद्वापरोद्देशात्मात्मयोगदानंमनसापात्रमुदिरये
 त्युक्तं उदिष्टस्यक्तस्यवर्जनं प्रतिग्रहसमर्थोपीत्युक्तं चैतनग्रहणेन प्रतिमापृजा स्वा
 र्थोचकालादिज्ञेयंस्पर्शनं त्रिभागतइत्युक्तः स्पर्शः षडिति उपोषितस्त्राहंस्थित्वा
 धान्यमन्त्रीहृणादरेदित्युक्तमन्त्रेचौर्ध्वम्रापादिजादेवतिः मुखेनैवधमेदामिमित्युक्तं
 धमनं दशादेनैवमुध्येत भूमिस्थचनवोदकमित्युक्तादशाह गुरवेतुवरंदत्वेत्युक्तादक्षि
 णाश्रुदेमुदास गापालेति कंडूयकस्त्रेहपक्वं यच्चडुधेनपात्रेन एताम्यश्रुद्रात्रभुजोभो
 ज्यानिमनुरन्नवीदित्यपराकेंसुमंतुक्ताश्रुद्रस्यपाकाक्रियायितापुत्रविवादेतुसाभि
 हां त्रियणोदमइत्युक्तः सायंगृहत्वेविधमेसन्नमुसलेइत्युक्तं पृथ्वीचंद्रेणानु अटंति
 वसुधांविष्ठाः पृथिवीदर्शनायच अतिकेतायनाहारायजसोयंगृहास्तुतेइति विष्णुपु
 राणां कौनिषिद्धः तेनाज्ञानशीलयांयादेः श्राद्धादौ विनियोगेनकार्यः कालावित्यर्थउक्तः
 एतानिबर्ज्यानीत्यर्थः निगमः अग्निहोत्रं गवालंभं संन्यासं पलपैतकं देचराच्चसुता
 त्यतिः कलौपंचविचर्जयेत् अग्निहोत्रं तदर्थमाधान एतच्चसर्वाधानपरंमूर्धाधानं स्म
 र्ते श्रोतस्मान्ताम्योक्तपृथक्कृतिः सर्वाधानेतयोरेवचकृतिः सर्वयुगाश्रितेतिलोगा

क्षिचचनादिति स्मृतिचंद्रिकायां एतेन चत्वार्यहसंस्त्राणि चत्वार्यहशतानि च क
लेर्घदागमिष्यंति तदा जेतापरिग्रहः संन्यासश्च न कर्तव्यो ब्राह्मणेन विजानतेति व्या
सवचने व्याख्यातां सर्वाधानेपि विशेखमाह देवलः यावद्वर्णविज्ञागोस्ति यावद्वेदः प्र
वर्तते संन्यासं चाग्निहोत्रं च तावत् कुर्यात्कलौ युगे इति संन्यासस्त्रिदेः ॥ इति श्रीमत्रा
रायणभट्टसुरिस्तु रामकृष्णभट्टात्मजदिनकरभट्टानुजकसलाकरभट्टकृते निर्णय
सिंधौ तृतीयपरिच्छेदे कलिवर्ज्यानि ॥ नानानि बंधवैमत्यभ्रान्तचितोदिधीर्षया क
मलाकरसंज्ञेन क्रियते श्राद्धनिर्णयः तत्स्वरूपमाह पृथ्वीचंद्रोदये मरीचिः प्रेतेपितृ
श्रानिर्दिश्य भोज्ययत्प्रियमात्मनः श्रद्धया दीयते यत्र तच्छ्राद्धं परिकीर्त्तितं ब्राह्मणस्वीका
रं तः चतुर्थ्यंतपदो यतीत पित्राद्युद्देश्यकस्यागः श्राद्धमित्यर्थः तत्र यद्यपि होमपि
उभोजनानि प्रधानमिति हेमाद्रिहोमश्रुतिं उदानं च तथा ब्राह्मणभोजनं श्राद्धशब्दाभि
धेयं स्यादेकस्मिन्नौपचारक इति श्रीधरश्च तथापि क्वचिद्विशेषं प्रवक्ष्यामः निमि
त्रैर्देवभोजनस्य पिंडानां चानिषेधो न प्राधान्ये विरुद्धादि अस्मा मया जिनोदधिययो
पणवत् यच्च श्रुत्वाणिः नित्यश्राद्धमदैववे स्यादर्घ्यपिंडविचर्जितमिति सारीतीये
नित्यश्राद्धमद्यादौ पिंडनिषेधोस्ति न च प्राप्तिं विना सः न चाविदेशं विना प्राप्तिः न चो गत्वे
विना तिदेराः प्रधानस्यानतिदेरात् सप्तमेऽप्यकारकत्वेनातिदेशात्तेः तेन भोजनं प्राधा

231-A

नंयिंजोगं पिंडदानमात्रविधिसंगभूतानत्कर्मोत्तरमेव प्रकरणांतरन्यायादिति तत्र
 जानश्राद्धेन दद्यात्पुत्रांश्चैव त्रासुरेष्टपीतिनपुत्रं भोजयेद्विप्रान् सधूद्रोपिकदाचनेत्या
 धैर्जातश्राद्धश्राद्धादौ भोजनस्य निषेधेनांगत्वायत्तेः न त्वोपशोको करोतीव दुयतीत्य
 विरोधेन विकल्पापत्तेः अत्र न श्राद्धश्राद्धाभिधेयत्वेनोभयप्राप्तौ निषेधयुक्तासावाना
 सौमयाजीसंनयेदितिवत् इति तत्त्व धर्मप्रदीपे यजुर्वेदं पिंडदानं तु वक्ष्यानाद्विजा
 र्चनं श्राद्धश्राद्धाभिधेयं स्यादुभयं सामवेदिनो तच्च पितृन्ययजते पितृभ्यो दद्यादित्युभ
 यप्रयोगदरीनायागदानोभयात्मकं पितरो देवता इति पित्रुद्देश्यकत्वाद्यागत्य विप्र
 येक्षया च दानत्वं मित्यविरुद्धं एतेन नायं यागः देवतोद्देशेन त्यागो यागः यागोद्देश्या च
 देवतोत्पात्ता श्राद्धादिति गोउमत्तमयास्तं वैधव्यशब्दविशेषोद्देश्यत्वस्य तस्येदमिति ।
 स्वत्वारोपप्रतियोगित्वस्य वा देवतात्वात् तत्रैव समंतः श्राद्धात्परतरं नान्येष्वस्करमुदा
 हृतं श्राद्धिपुराणं न संति पितरश्चेति कत्वा मतस्योनरः श्राद्धं न कुरुते तत्र तत्परकं पि
 तृति तं तद्देवानां हविषमित्रः नित्यं नैमित्तिकं काम्यं ब्रह्मि श्राद्धं संपिंडनं पार्वणं चेति ।
 विज्ञेयं गोव्याशुधर्ममष्टमं कर्मांगनवमं प्रोक्तं देवकंदशमं स्मृतं यात्राश्वेकदशं
 प्रोक्तं पुष्ट्यर्थं द्वादशं स्मृतमिति एषां लक्षणानि भविष्ये अहम्यह नित्यश्राद्धं तन्नित्यं
 मितिकीर्तितं वैश्वदेवविहीनं तदशक्ता बुद्धकेन तु एकोद्विंशत्यश्राद्धं तत्रैव नित्यकाम्ये

239

ते तदप्यदैवं कर्तव्यमयुग्मान् भोजयेद्विज्ञान् कामाय विहितं काम्यमभिप्रेतार्थं
 श्रद्धये ह्यद्वैतयते आहुं ह्यद्वैतयते गंधोदकतिलैर्घृतं कुर्यात्पात्रचतुष्टयं
 अर्घ्यार्थं पितृपात्रेषु प्रेतपात्रं प्रसेचयेत् ये समाना रतिहाभ्यो मे तदुक्तं सपिंडं न नित्येन
 तल्पं शेषं स्यादेको दिष्टं सिद्यामपि एतदुभयमेव सिद्याः तेन स्त्री कर्तृकं स्त्री संप्रदानं कर्तृ
 त्वमुभयनियम इति कल्पतरुः अमावास्यायां क्रियते तत्पार्वाणामिति स्मृतं क्रियते चापार्वाणि
 यत्तत्पार्वाणामिति स्थितिः अजयर्चं चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पौर्णमासी च पार्वाण्ये
 तानि राजैर्द्रवि संक्रमणं तथेति विष्णुपुराणोक्तं संक्रांत्यादि गोष्ठ्यां य क्रियते आहुं गो
 ष्ठी आहुं तदुच्यते बहूनां विडुषां सपत्न्युत्तरार्थं पितृ तृप्तये क्रियते अर्द्धये यत्तु ब्राह्मणानां
 तद्भोजनं अर्द्धयमिति तत्प्राक्तं चैनं ते यमनी विभिः तिथे कर्तुं ते सोमे च स्त्री संतोत्रयने य
 था ज्ञेयं पुंसवने चैव आहुं कर्मांगमेव च देवानुदिश्य यद्वाहुं तत्तद्देविकमुच्यते गधर्देशां
 तरं यस्तु आहुं कुर्यात्तु सार्धं यागार्थमिति प्राक्तं प्रवेशे च न शंसयः शरीरोपचये आहुं
 मर्षोपचय एव च पुष्पार्थमेतद्विज्ञेयमोपचापिकमुच्यते गोष्ठ्यां आहुं कर्तुं समुदाये
 संभयसा मग्री संपादनेन युगयतीत्यादि प्राप्ते विडुषां आहुं संपदा सुरार्थं भिन्नयाका
 लौ बहु पितृक आहुं मेकः कुर्यादिकल्पतरुः शंखधरश्च अहुि आहुं प्रायश्चित्तांगमिति
 मैथिलाः अत्र पार्वाणो को दिष्टं त्रिदि सपिंडं करणं त्र्यं चतुर्विधमेव मुख्यं तस्येवायं

239-A

प्रपंचः अथ आह देशः मनुः अविदेशवि विस्तृतगोमयेनोपलेपयेत् दक्षिणाप्रव
 एंचेवप्रयत्नेनोपपादयेत् यच्चिचंद्रोदये विष्णुधर्मदक्षिणाप्रवणेदेशे तीर्थादौ च
 हे पिचाभसंस्कारादिसंपुक्तोऽप्राहं कुर्यात्प्रयत्नतः तत्रैव प्रभासखंडे तीर्थादौ च
 गंगुण्यस्वर्गदेदतः शुभे भारते तस्य देशः कुरुक्षेत्रं यागंगा सरस्वती प्रभासं पृष्
 रंचेति तेषु प्राहं महाफलं स्कंदे तु लसीकाननहाया यत्र यत्र भवेद्दिजतजप्राहं प्र
 दातव्यं पितृणां तु मिहेतवे माधवीये प्राहो यक्रमे व्यासः महोदधौ प्रयागे च का
 र्या च कुरुजागले शंखः गंगा यमुनयोस्तीरे यथोष्म मरकटके नर्मदा वा ऊदानी
 रेभ्यः सुलिङ्गे हिमालये गंगाद्वारे प्रयागे च नैमिषे पृष्करे तथा सैनिहत्या गवायां
 च दत्तमक्षयतो ब्रजेत अपि जायत सोऽस्माकं कुले काश्चिन्नरोत्तमः गयाशीर्षे वटेश्रा
 हं यो नो दद्यात्समाहितः एष व्यवह्वः पुत्रायेच्छेको पिगयां ब्रजेत यजेत वाश्वमेधे
 न नीलं वा ह्यवसुत्सजेत आदिपुराणे पंचकोशं गवाक्षं कोशं रामेकं गयाशिरः
 मस्तनद्याः पश्चिमेन यावद्भूधरो गिरिः उत्तरे ब्रह्मपयस्य यावद्दक्षिणमा
 नसं गतं द्याशिरोनाम विष्णुलोके विष्णुर्नामिति प्रलापा एते ह्यस्यतिः
 गयायां धर्मपदं च सरासि ब्रह्मणा कृतं गयाशीर्षे क्षयवटे पितृणां दत्तमक्षयं
 धर्मारण्यं धर्मपदं धेनुकारण्यमेव च दृष्टे तानि धितं आर्चनं वंशान्विशतिमु

उदरे त्रिस्थलीसेतौ वायवीये शमीपत्रप्रमाणेन पिंडं दद्याद्वा शिरे उदरे सप्तगो
त्राणि कुलमेकोतरं शतं सप्तगोणितं पितामाता च भार्या च भगिनी दुहिता तथा
पितृमातृसप्तसा चैव सप्तगोत्राणि वै विदुरिति एकांगोत्राणां मेकोतरं शतं कुलं पु
रुषा इत्यर्थः तोचेत्तास्तत्रैव तत्त्वानि विंशतिन्या द्वादश पर्वी द्वां शायराः एवम
ग्रेषु प्रयोगपारिजातपात्रे शालग्राममयी मुद्रा संस्थिता यत्र कुत्रचित् वाराणां
स्यायवाधिकं समं ताद्योजनं यं तथा यत्किंचित्पैतृकं कुर्यात्स पिंडं चाने
दंति के विष्णु लोकं स गच्छेत्तु लभते शाश्वतं पदं तज्जैव वाराहं चक्रां क
स्पृश्यानि ध्ययत्कर्म त्रियते नरैः स्नानं दानं तपः श्राद्धं सर्वं मक्षयतां ब्रजेत् शुभ
निषिद्धदेशाः यद्योचं द्वायस्कां दे त्रिशंकोर्वर्जयेद्देशं सर्वं द्वादश योजनं उत्तरेण
महानद्यादक्षिणेन तु कीकटात् देशं त्रैशं कवो नाम श्राद्धकर्मणि वर्जितः प्रनष्टा
श्रमधर्माश्च देशवर्ज्याः प्रयत्नतः यमरूपं कर्म हतं क्लिप्तं संवती रोगनिष्ठं गंधिकं
देशं च निष्ठं शक्रं च वर्जयेच्छ्राद्धकर्मणि तत्रैव शंखः गोगजाश्वाजुष्टेष्टुक्त्रिमा
सं तथा भुवि न कुर्याच्छ्राद्धमेतेषु पारकासु च भूमिषु यमः परकीयप्रदेशेषु
पितृणां निर्वयेत्तु यः तद्भूमि पितृभिः तत्तु श्राद्धकर्म विहन्यते त्रासभारतयोरीष

द

रम
२३३

233-A

परकीयगृहेयस्तस्वामित्वं सपर्यवेद्यदि तद्भूमिस्वामिनस्तस्यहरंतिपि-तरोबलात्
 अग्रभागततस्तेभ्योदद्यान्मूल्यंचजीवितं आह्लादीणमग्रभागंश्राद्धं तदनर्हाणं
 श्राद्धाणांमुल्यमिति केचित् वाडशीयिडेज्वांधवानामपिपिं डोक्तेर्येवांधवाऽ
 बांधकावेत्यादितदर्थगवाधापत्तेः अनागोत्रयर्बंश्राद्धनिषेधोनान्यत्रेतिगोडाः वि
 प्रासतस्यश्राद्धपुत्रश्राद्धनिषेधोनाच्यत्र अग्रदानंचान्नत्यागात्पूर्वंकार्यमितिमैथि
 लाः तत्रा अग्रभागस्यश्राद्धपरत्वेमानाभावात् अन्नदानेचनिषेधाभावात् त्यागात्
 वंकरणेऽनंगेनव्यवधानपतेरंगत्वेचभानाभावात् इदंचस्याम्यनुज्ञाभावे तडक्तंतत्रै
 वब्राह्मे स्वनुलिपेष्ठुगेहेषुस्वेष्टनज्ञापितेषुच श्राद्धमेतेषुदानव्यं वर्ज्यमेतेषुनोच्य
 ते किरातेषुकलिंगेषुकौंकारेषुखस्वेष्टपि सिंधोरुत्तरकूलेषुनर्मदायाश्राद्धाभिशे
 पूर्वैराकरतोयायानदेयंश्राद्धमुच्यते इदंकाश्चविषयं अन्यथातत्रत्यानां सर्वंश्राद्धा
 करणायतेः नर्मदादक्षिणेयवादः स्कादे सत्यस्यचोद्भवोयत्रयत्रगोदावरीनदी पृथिव्या
 मपिक्तत्वायांसप्रदेशेरातिपावनः परिकीयत्वायवादश्रादित्यपुराणे अटवीयवताः पु
 ण्यानदीतीराणियानिच सर्वाण्यस्वामिकान्याहुर्नाहिनेषुपरिग्रहः वनानिगिरयो
 नद्यस्तीर्थान्यायननानिचवरवीर्तमगतीअनस्वाम्येतेषुचिद्यते स्मृतिसारे नैकदास
 न्वद्वीपेनांतरिक्षेकदाचन श्रुतिस्मृतीत्युदितं कर्मनकार्योदशुचिः क्वचित् दिवोदासी

ये ह्येधदेशेनपारात्रोसंध्यायांविप्रवर्जिते नम्राद्धमाचरोद्विहान्नवंशोकथंचन अथप्रा
द्धकालाः तैचसंक्रांतियुगादिमहालयादयः प्रायेणसर्वपरिधेदहयेउक्ताएवकेचित्
तुच्यंते यद्यीचंद्रोदयेतद्वपरारारः प्राद्धसद्धावचंद्रोदयायाग्रहणसंक्रमेनवादकेनवा
नैवनवध्वैतयागृहे नचैक्षवेसुचेहंतेपितरोहिमघास्वपि पितरः स्यह्येत्यन्नमद्धका
समघासचेतिशातातपयाठः नवादकेनवक्त्रयवाप्यादावितिकेचित् वर्षोपक्रमे
मेऽप्राद्रोप्रवेशे इतिगोशः नवान्नम्राद्धेविशेषो ज्योतिषे ज्येष्ठारोषार्धगेस्तर्धमृगने
जानिशात्मके नवान्नैभोजनम्राद्धंजन्मचंद्रतियोनच मृष्टेवाक्तिकाज्येष्ठामस्ताज
पदकेसुच भृगुभोमदिनेरित्तोतिथौनाष्टान्नवादने तत्रैव हासिके मृक्तयक्षेत्तुनवा
न्नशस्यतेवुधोः अतः कृष्णपक्षेनेतिगोशः मैथिलास्त अस्तताग्रयणंनैवधा
न्यजातंनरात्तमेति वाराहोक्तेः प्रतिधान्यम्राद्धमाहुः तन्नजानयदस्यम्राद्धयोग्यस
महपरत्वात् हेमाद्रौजान्तरुकरणः शंखे प्राकुरमावास्याक्षीणचंद्रोद्विजोत्तमाः
अथकालुभवेत्तत्रदत्तथाभयं तथैवशंखः यदाविष्टिव्यतीयातोभानुवार
स्तथैवच यमकं नामतत्प्रोक्तमपनाचचतुर्गुणं यातवल्कपः अमावास्या
काहदिः कृष्णपक्षेयनद्वयं द्रव्यंजाला संपित्तिर्विषुवत्तर्धसंक्रमः व्यतीयातो
गजघायाघायाग्रहणं चंद्रस्तर्धयोः म्राद्धं प्रतिरुचिमेवम्राद्धकालाः प्रकीर्ति

234-17

ताः कृष्णपक्षः सर्वोपि राकेनाप्यपरपक्षेनातिक्रमेन्मासिमासिवोऽश्विनमि
 ति श्रुतिः ऊर्ध्ववाचतुर्थ्यायदहः संघटते क्षतेचतुर्दशीमिति कात्यायनोक्तेः मा
 सिमासिकार्यमपरपक्षस्यापराहः श्रेयानित्यायस्तंबोक्तं अत्र प्रमहं यच्च
 म्यादियदहः संघटति चेति त्रयः पक्षाः यदैकदिने प्राहुंतदादारीययगेव यात
 वल्येनामावास्यायाः यथाङ्गिः देशात् एतेन कृष्णपक्षेयदहः संघटतेऽमावास्या
 यातुविशेषेणेति निगमोक्तं गुणोपरपक्षश्चाद्रस्यामालास्येति श्रुत्याणि
 मतमयास्तं प्रशक्तौदारीनाधिमासिमासिद्रुसिद्धिरिति नारायणहृतिः निरगतीनां
 कस्मिंश्चिदिने प्राहिताग्रेस्तदरी एव नदरी न विना प्राहुमाहिताग्रेर्दिजन्मन
 इति मनुक्तेः कृष्णपक्षेच्यपिमहालयस्य श्रेष्ठत्वं तद्योक्तं प्राक् व्यतीघातेविशे
 यमाह हेमाद्रौशंखैः फललक्ष्यमत्यंतोभ्रमणोकोटिरुच्यते पतनेशतकोट्य
 स्तपते वैदत्तमक्षयं ज्योतिः शास्त्रे द्वाविंशतिस्तयेत्यंतोभ्रमणोवैकविंशतिः प
 ततेदशनाड्यस्तपतिनेसप्तनाडिकाः हेमाद्रौमार्कंडेयः यदाचश्रात्रियोभ्येति
 गृहं वैदविदग्निचित्र तेनैकेनापिकर्तव्ये प्राहुंचविषुवच्छुभं इदं वाऽपिंडका
 र्यमिति हेमाद्रिः एतज्जीवव्यतिरक्तोपिकुर्यात् उद्वादे पुत्रजननेपित्रेष्टरासो
 मि केमरेव तीर्थव्रात्तण आयातेषते जीवतः पितुरिति मैत्रायणीयपरिशिष्टे

= वाहमासि
 कपक्षे =

क्लेः तिथिविशेषे फलविशेषः याज्ञवल्क्येनोक्तः कन्याकन्यावेदिनश्चपश्चै
 सत्सत्तानपि द्युतं कथंचित्वाणिज्यं द्विशकैकशकैस्तथा ब्रह्मचर्यं स्त्रिनः पुत्रान्स्वर्ग
 रोप्ये सकुप्यते ज्ञातिश्रेष्ठं सर्वकामानाम्प्रोतिश्राद्धदः सदा प्रतिपत्प्रभृतिद्येकां व
 र्जयित्वा चतुर्दशी एताः कृष्णपक्षस्याएव महा लयेतु फलभूतेति पृथ्वीचंदः पौर्णि
 मास्यां हेमाद्रौ पितामहः शुभावास्या अतीयात पौर्णिमा स्पष्टकासुच विद्वान्श्राद्धम
 कुर्वीत नरकं प्रतिपद्यते एतन्माध्यादिपरं त्रीहिपाके च कर्त्तव्यं यवपाके च पार्थि
 व पौर्णिमा सीतयामाघीश्रावणी च नृपोन्नम प्रोष्टपद्या मतीतायां तथा कृष्णमात्र
 योदशी एतां कृष्णमात्रकालान्येति न्यानाह प्रजापतिरिति विष्णुधर्मोक्तेः विष्णुः ।
 माघी प्रोष्टमष्टमं कृष्णमात्रयोदशीति शुभमाघी पौर्णिमेति कल्पतरुः श्रावणार्ध
 मपि मघायोगसंभवात्तु योदशी विशेषणमिति गौडः नक्षत्रेष्वपि याज्ञवल्क्यः
 स्वर्गः स्यपत्न्यभोजनशौचं क्षेत्रचलं तथा पुत्रान् श्रेष्ठं च सोभाग्यं समृद्धिं मुख्यतां
 शुभं प्रसन्नवक्रतावापि वाणिज्यप्रभृतीनापि अशुभानि च यशो कर्त्ता परमां गतिं ध
 नं वेदनभिषक् सार्द्धं कुप्यंगामप्यजाविकं अशुभानाद्युश्रुचि विबुधः श्राद्धं संप्रयच्छ
 त्ति कृतिकादिभिरांपितं सकामान् प्राप्नुयादित्यन् फलान्तराण्यपि भारतकोर्मो देह
 यानि माघवीये मरीचिः कृतिकादिषु अरसेषु श्राद्धे यत्फलमोरितं विष्णुभादिषु

235-A

गेष्टुतेदेवपलमिष्यते हहस्पतिः आरोग्यं चैव सौभाग्यं शतृणां च पाराजयं सर्वा
 न्कामाप्तिं च विद्याधनमायुष्यं चाक्रमं सूर्यादिदिवसेष्वेतन्मृदुल्लभते फलं ववादि
 करणेनैतन्मृदुल्लभते फलं अन्यानि धनवति आद्यादीनि प्रागुक्तानि मार्कंडेयपु
 राणे आद्याहं द्रव्यसंयतो तथा उः स्वप्नदर्शने जन्मक्षेत्ररूपीडास आदं कुर्वीत चेदया अ
 यश्चाद्याधिकारिणः चंद्रिकायां सुमंतुः मातुः पितुः प्रकुर्वीत संस्थितस्योरसः सुतः पैतृ
 मेधिकं संस्कारं मंत्रपूर्वकमाहृतः तजैव हेमाद्रौ च रावः पितुः पुत्रेण कर्त्तव्या पिंदानो
 दकक्रिया पुत्राभावे तु यत्नी स्यात्तदभावे तु सौदरः अत्र यद्यपि पुत्रे यदक्षेत्रजादि द्वा
 दशविधपुत्रपतिच द्वादशपुत्रा याज्ञवल्क्येनोक्ताः औरसो धर्मपत्नीजास्तत्समः पुत्रिका
 सुतः क्षेत्रजोऽक्षेत्रजा तस्तस्योत्रेणोत्तरेण वा गृहे प्रवृत्त उत्पन्नो गृहे जस्तसुतः स्मृतः
 कान्तीनः कन्यका जातो महा महसुतः स्मृतः अक्षतायां क्षतायां वा जनः पौनर्भवस्त
 यादद्यान्मातापितावायं सपुत्रो दत्तको भवेत् जीतश्रुताभ्यां विहीतः कृत्तिमः स्यात्स्वयं
 कृतः दत्तात्मा तु स्वयंदत्तो गर्भविन्नः सहोदजः उत्सृष्टो गृह्यते यस्तस्योपविष्टो भवेत्सु
 तः पिंडदंशरश्चेष्टापूर्वाभावे परः इति तथापि दत्तौ रसेतरे वा तु पुत्रत्वेन परिगृह्य इति हे
 माद्रावादिपुराणे कलावितरे वा पुत्रत्वं निषेधादौ रसदत्तकपरमेव यद्यपि पिंडदंशरहर
 श्चैष्टापूर्वाभावे परः पर इति याज्ञवल्क्येनोक्तैरोत्तोरसाभावे दत्तकश्चैमिस्तथाप्यौ र

साभावैषोत्रं देभावे प्रयोत्रसदभावे दत्तकादय इति ज्ञेयं पुत्रेण लोकां जायति योजेणा
 नंत्य मन्त्रे अथ पुत्रस्य योजेया विप्रः प्राप्नोति विष्टया मिति जीमूतवाहनधृतवशिष्ट
 सारीतशंखलिरिव ते लोकाः लोकान्नेत्यादि प्राप्तिः पुत्रयोत्रप्रयोत्रैरिति याज्ञवल्क्योक्तेः पुत्रः
 योजसुतपुत्रः पुत्रिकापुत्र एव च यत्नीभ्राता च तज्जम्भयिता माता स्तुषा तथा तथा
 भगिनी भगिनेयश्च सपिंडः सोदकस्तथा असन्निधाने पूर्वेषामुत्तरे पिंडाः स्मृता
 इति स्मृतिसंग्रहे प्रयोत्रानंतरं पुत्रिकापुत्रोक्तेस्तत्समाख्या दत्तकस्य यद्यपि हस्तस्यतिना
 प्रोत्रश्च पुत्रिकापुत्रः स्वर्गप्राप्तिकरा बुभोरि क्येवापिंडदाने च समो तो परिकीर्तिता वि
 ति योजसाम्यमुक्ते याज्ञवल्क्येन च औरसो धर्मयत्नी जस्तत्समः पुत्रेकासुतः इत्यौरस
 साम्यं तथा पिलोर्के राजसमो मंत्री त्यादौ किंचिन्न न समश्च प्रयोगात् गौरा
 मुख्यायोः साम्यायोगाच्च स्तुत्यर्थं तत्तन्न न समविकल्प इति भूमित्वं पुत्रः योजो
 प्रयोत्रो वा भ्राता वा भ्रातृ संततिः सपिंडसंततिर्वापि क्रियार्हान्न यजायते तेषां मभा
 वे सर्वेषां समानोदक संततिः मातृपक्षसपिंडेन संबद्धो योजलेन वा कुलद्वये पि
 बोधने स्त्रीभिः कार्यं क्रियान्न तसंधात गते वापित द्विक्रयात्कारयेन्न य इति चि
 द्मुपुत्राणाञ्च प्रयोत्रानंतरं दत्तकापरतिष्ठत्येवं मदनरत्नकालादृशादय मदनपारि
 जातेष्वेवं वीर्यदेवरुद्रधरादयस्तु पुत्रेषु विद्यमानेषु नान्येवैकारयेत्स्वधामि

236-A

ता

निसुमंतु तौपिमहः पितुः यश्चात्पंचत्वेयदि गधति योत्रेणोक्तदशाहादिकर्तव्यं
 आह षोडशं नैतत्पौत्रेण कर्तव्यं पुत्रवांश्चेत्तपितामह इति छंदोगपरिशिष्टे च पुत्ररा
 स्य द्वादशविधसुतस्य रत्वात्पूर्वाभावे परः परस्य स्यात्तत्परत्वाद्वा दत्तकाद्यभावे पौत्रा
 दीनामधिकारः औरसश्चानुपनीतोऽपि कुर्यादित्याह पृथ्वीचंद्रोदये सुमंतुः आहं कुर्याद
 वरं पंतु प्रमीत पितृ कौटिलः व्रतस्थो वा व्रतस्थो वा राकाव भवेद्यति स्रुमनुः कुर्याद
 उपनीतोऽपि आह मे कौटिलः सुतः पितृ यज्ञाद्गुती पाणौ जुहुयाद्वा ह्यस्य सः मनुः न स
 स्मिन्मुज्यते कर्तव्यं किंचिदामौ जीवधनात् नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्य धानि नयनादृते
 ब्रह्मवेदः सुमंतुरपि नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मयावन्मौ जीनिवेधयेत् मंत्राननुपनीतोऽपि य
 ठेदेवैक औरसः अयं मंत्रपाठस्त्रिवर्षे कृतश्च उत्येव अनुपेतोऽपि कुर्वीत मंत्रवत्येतमे
 धिकं यद्यसौ कृतश्च उः स्याद्यदिस्याच्च त्रिवत्सर इति सुमंतुः क्लैः यत्तु व्याघ्रः क्ल
 तश्च उक्त कुर्वीत उदकं पिंडमेव च स्वधाकारं प्रयुज्जीत वेदोच्चारं न कारयेदि
 ति यच्च स्मृतिसंग्रहे कृतश्च उः नयेत् अपि त्रैः आहं समाचरेत् उदाहरेत् स्वधाकारं
 न तु वेदाक्षराण्यसाविति तत्प्रथमवर्षे चूडाविषयमिति माघे च मदनरत्ने पृथ्वीचं
 द्राः त्रिवर्षार्धं मंत्रवत्त्वस्य विकल्प इति चंद्रिकावायदेव मदनरत्ने स्कांदे यज्ञे

सुमंत्रवत्कर्मपत्नीकुर्याद्यथान्तप तथोर्ध्वदैहिकं कर्मकुर्यात्साधर्मसंस्कृता अथा
 तौलुकात्पायनः अमुं संस्कृते पत्न्या च ग्रामिदानं समंत्रकं कर्त्तव्यमितरत्सर्वकारयेदम
 मेव हि पुत्रश्च न जन्मैर्तोधिकारी किंतु चर्यांतरमित्याह कालादरीः चौलादाद्यादिका
 दवाङ्मनकुर्यात्पेतमेधिकं मदनरत्ने समंतरपि पुत्रश्चात्यतिमात्रेण संस्कुर्यादृण
 मेव ज्ञातृ पितरं नादिका चौलात्पेतमेधेन कर्मणा एताच्चौरस्येव दत्तकादीनां तृपनी
 तानमेवाधिकार इति कालादरीः यथीचंद्रोदये पिस्कादे पित्रोरनुपनीतो पिचिदध्या
 दौरसः सुतः और्ध्वकददिकमन्येत्संस्कृताः प्रादुकारिण इति अन्यत्रापि दर्शमहा
 लयादावनुपनीतस्याधिकारोऽस्माभिः पूर्वमुक्तः प्रयोत्राभावे दत्तकादायराकादशपुत्राः
 तदभावे भर्तुः पत्नी तस्याश्रयः अपुत्राशयने भर्तुः पालयंती ब्रूते स्थिता यत्पेव दयात्त
 त्पिंडं कृतं स मंशं लभेति वेति स इमनूक्तेः भार्या पिंडं पतिर्दद्याद्भर्तुः भार्या तथैव च स
 स्त्रादेश्च स्तुत्या चैव तदभावे स पिंडका इति पुत्राभावे तु पत्नी स्यात्पत्यभावे तु सोदर इति च हेमा
 द्रौशं रेवाक्तेः यथीद्रुस्तकानीन गृहसहज पुनर्भूत नयाश्रये पत्यभावे धिक्कुर्युस्ते अ
 प्रशस्ता स्मृता हिते इति स्मृतिसंग्रहात्पत्यभावे कानीनादय इत्याह पत्नुरपि सपत्नी
 जज्ञेत्रजाद्यास्तथाहता तेषामभावे तु पतिस्तदभावे स पिंडका इति मदनरत्ने कात्याय
 नोक्तेः अपराकं येष तेन यच्छुद्धिविवेको उक्तः सत्यपि सपत्नी पुत्रे पत्नुरधिकार

237-A

इति तत्रिरस्तं यच्च तत्रैव कात्यायनः न भार्यायाः यतिर्दद्यादपुत्राया अपि क्वचित् यच्च
विष्णुपुराणं कुलद्वयेपि दत्तस्त्रीभिः कार्यक्रियान्तयेति यच्च मार्कंडेयपुराणं
सर्वाभावेऽपि यः कुर्युः स्वभरणममंत्रकमिति तदासुरादिविवाहोटाविषयं धर्म्यं
विवाहैस्तदायासापत्नीपरिकीर्तिता कथ्यन्तीता तु यानारीनसापत्न्याभिधीयते न सा
दैवेन वापि ज्ञेयासीतां मुनयो विदुरिति माधवीयेशानात्तपोक्तेः यत्तु क्षिरत्नाकरः श्रुत्वा
पाणिश्रुत्वा पुत्रस्य च यापुत्री सापि पिंडप्रदा भवेत् तस्य पिंडान्दशैकं वा एका देवैर्निक्षिपेदि
ति जावालोक्तेः भर्तुर्धनहरापत्नीतां विना दुहिता स्मृता अंगादंगात्संभवति पुत्रवत्तु दुहिता
नार्यामिति वदस्यतिः नादुहितुर्धनहारित्वाक्तेः अपुत्राभावे कन्या तदभावे सपत्नी पुत्रस्या
स्तुः तत्पूर्वविरोधान् मातुर्दुहितरं शेषमरणान्ताभ्यां ज्ञेयं यत्ति दुहितर्मातुर्धनग्राहिनि
नपुत्रस्य तच्छास्त्रानधिकाराय तेऽप्येवं वचनं तन्मातृपुत्राद्यभावविषयं यत्तु भावेऽपि
भक्तस्य सादरः पूर्वोक्तशंखवचनात् विभक्तस्य तु दुहिता धनहारित्वात्पूर्वोक्तजावालि
वचनाच्च तत्राद्युदाहृतसमये ऊढेव दुहितापुत्रवत्कार्यान्मातापित्रोस्तु संस्कृता अप्राणा
चमुदकं पिंडमेकोद्विष्टं सदा तपोरिति भरद्वाजोक्तेः तदभावे दोहितः धनहारित्वात्
मातापित्रो रूपाध्यायाचार्ययोरोर्ध्वदेहिकं कुर्वन्मातामहस्यापि व्रती न भूरयते
व्रतादिति चंद्रिकायां वदमन्तुक्तेः यथा व्रतस्थोऽपि सतः पितुः कुर्यात्क्रियान्तप उदक्य

घांमहावाहोदोहित्रोपितथार्हतीत्यपराकैभविष्यात्तेश्च एतद्धृतहारिणाऽप्रावस्यकं
 नान्यस्येत्याह तत्रैवस्कांदः प्रादंमातामहानां तु अवश्यं धनहारिणादोहित्रेणार्घ्यनिःक
 तैकैर्नैव्यं सर्वमुत्तरमिति तैर्नदोहित्रौ पुत्रीकृतइति देवयाज्ञवल्कीतिः परास्ता अत्र
 पत्नीदोहित्रसमवापेशहरत्वात्पत्नैवकुर्यात्त दोहित्रभ्रातृपुत्रसत्त्वेविभक्तस्यदोहित्रम्
 विभागोभ्रातृपुत्रः भ्रातृतत्पुत्रसत्त्वेकनिष्प्रेतव ज्येष्ठप्रेततत्पुत्रः कुर्यादिति दाक्षि
 ण्यत्पुंश्याः हारलतादौ तु भ्रातृभ्रातास्वयंचक्रेतद्रार्थाचेन्नविद्यते तस्यभ्रातृसुतप्रेत
 यस्यनास्तिसदरइति ब्राह्मोक्तैः पत्नीकुर्यात्सुताभावेपत्न्यभावेसहोदरइतिकौर्मी
 ज्ञेयभ्रातैवकुर्यान्नतत्पुत्रः यत्तु नानुजस्यतथाग्रजइति तत्कनिष्ठभ्रातृसत्त्ववि
 षयं यच्चमनुः सर्वेषामेकजातानामेकप्रेतपुत्रावान्भवेत् सर्वांस्तोस्तेतपुत्रेणपु
 त्रिणोमनुरव्वीदिति तत्सौदराभावविषयमित्युक्तं मदनरत्नेस्मृतिसंग्रहे पुत्रः कु
 र्यात्पितुः प्रादंपत्नी चत सन्निधौ धनहार्यथदोहित्रस्तनाभ्राताचतत्सुतः भर्त्रोः स
 होदरोभ्राताकुर्यादाहादितत्सुतः ततस्त्वसौदरोभ्रातातदभावेचतत्सुतइतिभ्रातृपुत्रा
 वेवक्रमेणपितृमातृस्तृषास्वसृतापुत्रादयः धनहारित्यात् भगिनीतत्सुतयोर्विशेष
 माहमदनरत्नेकात्यायनः अनुजाअग्रजावापिभ्रातृः कुर्वीतसंस्तुयां ततस्त्वसौद
 रातद्वत्क्रमेणतनयस्तयोः अपराकैकार्धमाजिनिः पुत्रः शिष्योपवापत्नीपि

238-A

ताभ्रातास्तथागुरुः स्त्रीसारीधनसारीच कुर्यात्पिंडोदकक्रियां मार्कंडेयपुराणे १
 पुत्रोभाताचतसुत्रः पत्नीमातातयापितां वितोभावेपिशिष्यश्च कुर्वीत्यत्रोर्ध्वदैक्षि
 कं तेन धनसारी एतद्विन्नरतिकालादरीः उप्रयावक्रमेन विवक्षितः पूर्ववाक्येषु
 ततः शब्दादिभिश्चैतक्रमोक्तेः उप्रयजिज्ञाया अथवक्षस इति वत् पृथ्वीचंद्रोदये ह्य
 मनुः सुखास्वस्त्रीयतमुत्रजातिसंवधिबंधवाः पुत्राभावेतु कुर्वीरन्सपिंडांतं य
 याविधिः मार्कंडेयपुराणे पुत्राद्युत्सन्नबंधोऽस्य सरवापि अश्वरस्य च जामाता
 स्त्रैहवत् कुर्याद रिवलंयेत्तमेधिकं चंडिकायां ह्यदृशात्तपः मातुलोभाग्निने
 यस्य स्वस्त्रीयो मातुलस्य च अश्वरस्य गुरोश्चैव सख्यर्मातामहस्य च पुत्रेषांचैव
 भार्यां स्वसुमातुः पितृस्तथा आह मेवांतु कर्तव्यमिति वेदविदो विदुः शुद्धि
 वेकैश्च पृथ्वीचंद्रोदये च ब्राह्मे दत्तानां चाप्यदत्तानां कुरुतेपिता चतुर्थे ह्यभिज्ञाते
 षां कुर्वीरन्समाहिताः दत्तावाग्दत्ताः मातामहानां दौहित्राः कुर्वन्त्यहनि चापरे
 तेपितृषां प्रकुर्वन्ति द्वितीये हनि सर्वदा जामातुः स्वसुराश्च क्रसोवांतेपि च संयताः
 मित्राणां तदपत्यानां श्रोत्रियाणां गुरुस्तथा भाग्निनेयसुतानां च सर्वेषां त्वपरे
 हनि राक्षसांसपिंडेन निरपत्योपुरोहितः मंजीवातदणौ चंतुरावीर्त्वा करोतिसः
 अत्र द्वितीयाह दौहित्राद्विधानमस्थिसंक्षयपरं कालादरी दाहादिमंजवापिजो

स

नि.सिं.
२३५

239

विदध्यादौरसः सुतः तदभावे तु यौगप्रयोत्रः पुत्रिकासुतः दौहित्रो धनहारी च भ्राता
तत्पुत्र एव च पिता माता स्त्रिया चैव स्वसातत्पुत्र एव च सपिंडः सोदको मातुः सपिंडः
असोदकः स्त्री च शिष्यार्तिगाचार्या माता च सर्वापि च उत्तन्नसंधोरिकेन कार
दवनीयतिः गौतमः पुराभावे सपिंडा मातुः सपिंडः शिष्यश्च दछस्तदभावे ऋ
विगाचार्यो यत्तु चंद्रिकायां सद्धरातातपः प्रीत्याश्च दंप्रकर्तव्यं सर्वेषां चर्कलिंगिना
मिति तत्सर्वं विष्णुं ब्राह्मणस्त्वन्यवर्णानां न कुर्यात्कर्म किंचन कामाक्षो भाद्रयान्ते
हात्कृत्वा तज्जातिर्ताम्रजेति ब्राह्मणेः न ब्राह्मणेन कर्तव्यं ऋदस्या व्योर्ध्वं देहिकं
ऋद्रेण वा ब्राह्मणस्याविना पारसवात्कविदिति पारस्करोक्तेः पारसच ऊढः ऋद्रायु
त्रः ऋत्रे दंतत्वं सर्वत्र पुत्रादेः पूर्वस्याभावे यत्प्रादेरधिकार उक्तः तत्राभावोऽस
न्निधिर्नासश्चाच्यते अत एव पूर्वत्रः असन्निधाने सर्वेषां मित्युक्तं तत्रासन्निधौ य
यादेः सर्वत्राधिकारे प्राप्ते प्रोषिता वसिते पुत्रः कालादतिचिरादपि एकादशाद्याः
क्रमशो ज्येष्ठस्य विप्रियाः ज्येष्ठे नैव तु यत्कृतमिति न्याये देशांतरे यथा दात्पुत्र
नाशे एव पत्यादेः सपिंडमादावधिकारः असन्निधौ तु तत्सर्वमेव नोर्ध्वं अतो नधि
कारणा भ्रात्रादिना कृतमप्यक्तमेवेति पुनरावर्तनीयं मासिका कर्षा प्यावर्तनी
नीयः एकादशाह मासिका निना ततो तज्ज्यापसापि कर्तव्यं सपिंडीकराण्युनरिति

राम
२३५

239-A

नदाज्ञतिविधानाभावादितिकेचित् तत्र अस्मिन्निर्मलत्वात् अतस्तदधिकनिष्ठक
तमावर्तते हृदिश्रोतपिंडयितृयत्तार्थितुक्तं नावर्तते नासपिंड्याग्निमान्युत्रः पितृ
यज्ञसमाचरेत् नपर्वणं नाभ्युदयंकुर्वन्नलभतेफलमिति हृद्युत्तरनिषेनादितिभाता
भ्रातृपुत्रोवत्यादिप्राजापत्यादिवचोभ्यः कनिष्ठादेरप्यधिकारात् यथात्रयेष्टकर्तृ
कत्वबाधास्तथापुत्रकर्तृकत्वस्यापिबाधः सपिंडनेतुवद्वक्तव्यं तन्निर्णयेवक्ष्या
मः अधिकारिविशेषेणाक्रियाव्यवस्थाक्ताविष्णुपुराणे पूर्वाः क्रियामध्यमाश्चत
थाचैवोत्तराः क्रियाः त्रिप्रकाराः क्रियाद्येतास्तासांभेदान्मृण्मृच्छमे आदाहादादरा
स्तच्चमध्येयाः स्युः क्रियान्यपताः पूर्वामध्यमासिसाम्येकोदिष्टसंज्ञिताः प्रेतेपितृ
त्वमायज्ञेसपिंडीकरणादनुक्रियंतेयाः क्रियापुत्रप्रेत्यंतेतान्न्योत्तराः पितृमातृस
पिंडेष्टसमानसलिलेस्तथा तत्संघातगतैश्चैवराज्ञाबाधहारिणा पूर्वामध्याश्र
कर्तव्याः पुत्राद्येरेवचोत्तराः दौहित्रैर्वज्रश्रेष्ठकार्यास्तजनयेस्तथा मृताहनिनु
कर्तव्याः स्त्रीणामप्युत्तराः क्रियाः दौहित्रतत्पुत्रयोर्धनुहारिणोरिदं एवमन्यस्यधन
हर्तुः पश्चार्थहरः सपिंडीत्यापसंबोक्तेः प्रेतस्यप्रेतकार्याणि अकृत्वाधनहारकः व
र्णनायद्वधेष्टोक्तं नहुतंप्रयतश्चरेदिति पृथ्वीचंद्रोदयेव्यायादोक्तेः मदनरत्निस्का
देयिमलमेतन्मनुष्याणां द्रविणं यत्प्रकीर्तिमित्युक्ताः अविभिस्तस्य निर्दिष्टानि

स्मृतिः पावनीयरा आदेहयतनात्तस्य कुर्यात्पिंडोदकक्रियांश्च कृते क्रियानिवंधे
 कात्यायनः न च मातान च पिता कुर्यात्पुत्रस्य पैतृकं नाग्रजश्च न तथा भ्राता भ्रातराणां
 तु कनीयसां पृथ्वीचंद्रोदयेवौ धायनः पित्रा आर्द्रं न कर्त्तव्यं पुत्राणां तु कथंचन भ्रात्रा
 चैव न कर्त्तव्यं भ्रातराणां च कनीयसां यदि श्रेहेन कुर्यात् उत्सन्न बाधवंप्रेतं पिता भ्राताप्य
 वाग्रतः जननीवापि संस्क्रुयान्महदेनोन्यथा भवेति तिसु मंत्रैः ब्रह्मचारिणां तु मुद्धि
 विवेके पृथ्वीचंद्रोदये च ब्राह्मे असमाप्रव्रतस्यैपि कर्त्तव्यं ब्रह्मचारिणः आर्द्रं तु मातापितृ
 भिर्न तु तेष्वां करोतिसः आर्द्रं मासिकादिकादि सर्वं कार्यमित्यर्थः नातिनिविधेन न्यस
 त्वेयत्तदं दोगपरिशिष्टे न त्यजेत्सतके कर्म ब्रह्मचारी स्वक कचित् न दीक्षणात्परय
 सेक्तृषु दिनपश्चरन् पितर्यति मृते नैष्ठां दोषो भवति कर्हिचित् आशौचं कर्मणोते
 स्या अहं वा ब्रह्मचारिणां यच्च याज्ञवल्क्यः न ब्रह्मचारिणः कुर्येदं कं पतितास्तथे
 ति न दप्यन्यसत्वे अन्याभावे तु ब्रह्मचारिणापि कार्यं पूर्वोक्तं सद्धमनुवचनात्
 आचार्यपितृपाध्यायान्निर्हत्यापि ब्रती ब्रती सकटात्र च नाश्रीयात्र च तोः सह संवसे
 दिति तेनैवोक्तेः ब्रह्मचारिणः शयकर्मिणो ब्रतान्निवृत्तिरन्यत्र मातापित्रो रिति वसि
 ष्ठोक्तेः अत्र शौचमेकाहं वक्ष्यामः प्राग्गुपनयनात् मृतस्य पंचवर्षात्तरं सपिंडीकरणं च
 र्जं वोऽश्वि आद्वादिसर्वं कार्यमित्युक्तं देवजानीये असंस्कृतानां भूमौ पिंडं दद्यात्संस्कृता

240-A

नां कुरोश्चिप्रचेतोवचनाच्चाग्नेन दक्षामः अविभक्तानां विशेषमाह यस्त्रीचंद्रोदये
मरीचिः बहवः सूर्यदापुत्राः पितुरेकत्रचासिनः सर्वेषां तु मते कृत्वा ज्येष्ठे नैव तु य
कृते द्रव्येण चाभक्तेन सर्वेरेव कृतं भवेत् ज्येष्ठस्य कर्तृत्वेऽपि सर्वे फलभागिन
इत्यर्थः तेन ये ब्रह्मचर्यपरान्नववादयः पलिसंस्कारास्ते सर्वेषां भवन्तीति सिद्धं संस
दिनामयेव तुल्यवात् विभक्तानां विशेषमाहोशनाः नवश्राद्धं सपिंडत्वं श्राद्धान
पिचषोडशः एकेनैव तत्कार्याणि संविभक्तधनेनैव लघुहारीतः सपिंडीकरणं
तानि यानि श्राद्धानि षोडश यथैकैव सतः कुर्युः यथगद्रव्यामृषिकचित् ऊर्ध्वसे
पिंडीकरणात् सर्वे कुर्युः यथैक यथैक मदनरत्ने विभक्तास्तथैक कुर्युः प्रति
संवत्सरादिकं एकेनैवाविभक्तेषु कृते सर्वेस्तत्कृते एतेनादिकादिष्वविभक्तानां
मनियम इति वदन् श्रुत्याणि परास्ताः दत्तकस्तजनकस्य पुत्राद्यभावे दद्यान्न तत्
त्वे गोत्ररिक्ते जनपितुर्न भजेदत्रिमः सुतः गोत्ररिक्त्या न गः पिंडाद्येति ददतः स्व
धेति मन्त्रैः इदं जनकस्य पुत्रसत्त्वं विषयं एतच्च प्रवरमंजरीकात्यायनलोगा
दिभ्यां स्पष्टमुक्तं अथ ये दत्तजीतस्तत्रिसपुत्रिकापुत्राः परंपरिग्रहेणानार्थयाजा
स्तस्यामुष्यायणमवन्ति यथाशौगंशोशिराणां यानि चान्यान्येवं समुत्पत्तीनि कला
नि भवन्तीत्यादिना ह्यपि प्रजोः प्रवरानुत्कीर्णं अथ यद्येषां स्वास्तुभार्या स्वपत्येन स्यात्

नि. सिं.
२४१

241

रिक्चं हरेयुः पिंडं चैभ्यस्त्रिषु रुचं दद्युर्धुभयोर्न स्यादुभाभ्यामेव दद्युरेकस्मिन् प्रा
द्वेष्टयगुदिरयेक पिंडे द्वावनुकीर्तयेत्परिगृहीतारं चोत्पादयित्वा तत्र तीयात्पुरुषा
दिति हेमाद्रौ कार्धमाजिनिः पावंतः पितृवर्ग्याः सुस्तावद्भिर्दत्तकादयः चतुर्थपुरु
षेष्टं दत्तस्मादेषात्रिषु रुचौ साधारणेषु कालेषु विशेषेणास्ति वर्गिणाम् अस्यापि मा
ह हेमाद्रिः दत्तकादयः जनकवपालकयोः कुले प्रेतानां स्ववर्गारिभ्यः सपिंडं न कुर्युः
दत्तकानां पुत्रास्तु पितृदत्तकस्य पितृभ्यां जनकपालकाभ्यां स्वपितामहाभ्यां सपिंडं
न कुर्युः तेषां प्रपौत्रस्तु दत्तकस्य प्रपितामहस्य पालककुलस्थं चतुर्थयो जयेन्न वा छंद
श्छादरी महो लपादौ तद्वयोः पित्रोः पितामहयोः प्रपितामहयोर्वी श्राद्धं देयं तत्र द्वयोः
पित्राद्योः पृथक् पिंडदानं द्वयोर्देशेनैकोवेति अत्र केचित् आवयोरयमिति परिभाष्य
यो दत्तस्तस्येदं द्वयोः पित्रोश्चाद्धं पत्न्यपरिभाष्य दत्तः सगृहीतरेव स पालकतायेव दद्यादि
त्याहुः अत्र मूलं तत्रैव प्रष्टव्याः वस्तुतस्तु जनकस्य पुत्रपत्न्याद्यभावे दत्तको द्वयोर्दद्या
दत्यया पालकताये च प्रागुक्तकान्यायनवचनात् मानवीयमप्येतद्विषयमेव गोत्रं तत्रा
द्वे पालकस्यै विवाहदोत्तमयो रित्यादि मूलतः प्रवरदर्थलोत्तेयं यस्तु मूल्यं क्रीतायां
पर भार्यायां दास्यां वोत्पन्नः सवीजिने एव दद्यात् मूल्यं विना स्वयमुपनतायां तदो
त्रिणो एव तदुक्तं पृथ्वीचंद्रोदये कौर्मि अग्नियोगात्सुतो यस्तु मूल्यं ततो जायतेति

राम
२४१

241-A

हि प्रदद्यादीतिनेपिंडं सेत्रिणोत्ततोम्यथेति क्षेत्रजादेविशेषस्तुक्कलोत्तदभा
वान्नोच्यतेइतिदिक् जारजातांविशेषमास्तपराकेनारदः जायतेत्विनियुक्ताया
मेकेनचद्रुभिस्तथा अरिक्थभाजतेसर्वेवीजिनामेवतेसताः दद्युसेवीजिनेपिंडं
माताचेक्षुस्ततोहता अशुक्लोपस्ततोत्तपिंडदावोडरेवते धर्मार्थंश्राद्धकरणेफ
फलमाह चंद्रिकायांरातातयः श्रीत्याश्राद्धंतुकर्तव्यं सर्वेषां वर्णलिङ्गिनां एवंकुर्व
न्नरः सम्यक्कमहतींश्रियमाप्नुयात् गयायामपितत्रैवन्नसवेवर्ते आत्मजोवापिवा
न्योपिगयाशीर्षेयदातदा यन्नाश्रापातयेत्पिंडं तयेद्रुसश्राप्तं एतच्चयदाफलभूमा
थिनदिसिर्वाक्रियतेतदाप्रेतशिलाश्राद्धवर्जं कुर्यात्तस्यप्रेतत्वविमोक्षार्थत्वात्तस्य
चजातत्वादितिचेत् वस्तुतस्तु सन्यासिश्राद्धवदत्रापिसर्वकार्यं संगोधिकारा
दितियुक्तंप्रतीमः सन्यस्तपित्रादिस्तुपितः पित्रादिभ्यः सर्वश्राद्धेषुदद्यादित्युक्तं
प्राक्बध्यतेचजीवपितृश्राद्धे अत्रसीश्राद्वाणंश्राद्धंमंत्रवर्जंनृक्षीभवति सीणा
ममंत्रकंश्राद्धंतथाश्राद्वासुतस्यच प्रादिजाश्राव्रतादेशात्तेचकुर्तुस्तथैवतदिति
हेमाद्रौमरीचिवचनात् अयमेवविधिः प्रोक्तःश्राद्वाणंमंत्रवर्जितः अमंत्रस्य
तुश्राद्धस्यविप्रोमंत्रेणगृह्यतेइतिज्ञासोक्तेश्च गृह्यतेसंबध्यते अस्यश्राद्ध
करणं पाठेपिपरिभाषात्वात्प्रकरणेन संबोध्योयुक्तः तेनश्राद्धस्य १

स्नानादावपि विप्रेण मंत्रपाठः कार्यः प्रमंजस्येति विशेषणं त्रिपाश्रयीति श्रु-
त्यपाणिः यत्तु तेनोक्तं मंत्रजन्यनियमादृष्टसिद्धिस्तु नमस्कारेण अनुमतोऽस्य
नमस्कारो मंत्रः इति गौतमोक्तैरिति तत्र उच्यते वतः प्राप्तिर्न स्वातंत्र्येण अन्यथा ते
वारयतेष्ववघाते जन्यादृष्टार्थसोपि क्रियेतित्यक्तिं चिदेतत् तेन पितृणां नाम गो-
त्रादौ यत्र द्विजानामपि नाम मंत्रोक्तस्तत्र प्रतिप्रसवमात्रार्थयुक्तं नतिलावपाना-
दावपि अत्र केचित् वैदिकमंत्रो विप्रस्य पौराणस्तु श्रद्धैः पठनीयः न हि वेदेऽधिक-
कारः कश्चिद्दृष्ट्यविद्यते पुराणेष्वधिकारो मे दर्शितो ब्राह्मणैरिति तेनैव पादो-
क्तैरित्याहुः मंत्राश्च येन तत्र नाध्येतव्यमिदं शास्त्रं बलस्य तत्र सन्निधाविति कौर्म-
पुराणानि धेनवेदस्य दूरायास्तत्वात् अध्येतव्यं ब्राह्मणेन वैश्येन क्षत्रियेन च श्रौत-
व्यमेव श्रद्धेना नाध्येतव्यं कदाचन श्रौतस्मार्तं च वैधर्म्ये प्रोक्तमस्मिन्नपोतम तस्मा-
च्छ्रद्धैर्विना विप्रं न श्रौतव्यं कदाचनेति तत्रैव पुराणाधिकारे भविष्योक्तेः एतेन
नाध्येतव्यमिति निषेधो मंत्रेतरपुराणपर इति श्रीदत्तादिमतमयास्तं तेन पौराणमं-
त्रमेव विप्रेण पाठेन वैदिकानामिति सिद्धं द्विजास्त्रियस्तु संकल्पमात्रं स्वयं क्त-
त्वा वैदिकमंत्रयुक्तं सर्वं ब्राह्मणद्वारा कारयेयुरिति प्रयोगपारिजातः अतएव स्त्री-
णामित्यक्तं तद्विवाहस्त्रीपरमिति हेमाद्रिमाह अनुयनीतस्तु वैदिकमंत्रयुक्तं स

242-A

वैस्वयमेव कुर्यादित्युक्तं प्राक् यत्तु प्राग्दिजाश्च ब्रतादेशादिति न दशाक्तविषयम् ।
क्षुडविषयं चेति दिक् ऋद्रस्य तु सदा मन्त्रादमेव सदा चैव तु ऋद्राणामामन्त्रादं विधी-
यत इति सुमंतुक्तेः पृथ्वीचंद्रोदये मात्स्येऽपि एवं ऋद्रोऽपि समान्यं हृदि श्राद्धं च सर्वदा ।
नमस्कारेण मंत्रोक्तं कुर्यादामात्रवत्सदा तत्रैव सद्यः शरः श्रामान्येन तु ऋद्रस्य तु हृदि ।
तु द्विजयजनं कृत्वा श्राद्धं तु निर्वीर्यसजातीनाशयेदथ स एव श्रामान्त्रं ऋद्रस्य यक्त्वा
त्रैपक्षमुच्छिष्टमुच्यते हेमाद्रौ भविष्ये धर्मशास्त्रे वस्तु धर्मजायदि ऋद्राः प्रकुर्वते ।
अग्नौ करणमंत्रं नमस्कारो विधीयते श्रावणादिकर्तव्यं यथा ऋद्रोऽपि तच्छ्रुत्वा उदे-
वानां देवानां श्रांतु पितॄणां नाम गोत्रतः पिंडादीनिर्वयेद्दीरनामतो गोत्राजतस्तथा ।
ऋद्राणां गोत्राभावेऽपि काश्यपं गोत्रं ज्ञेयं तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यपा इति श्रुतेः
गोत्रनाशोऽतः काश्यप इति व्याघ्रयादोक्तेः श्रुतिहेमाद्रिः एव मन्यत्र गोत्राज्ञाने एवं तर्प-
णादियुक्तं तत्रैव भविष्ये ऋद्रस्तु गृहपाकेन तत्पिंडान्निर्वयेत्तथा सक्तुः फलं
तस्य पापसंवाभवेत्स्मृतं गोत्रमः अनुमतोऽस्य नमस्कारो मंत्र इति देवताभ्यं श्रुत्य
यं नमस्कारमंत्र इति केचित् विज्ञाने श्वरोऽप्येवमाह हेमाद्रिस्तु ऋद्रोऽप्यमंत्रवत् कुर्या-
दमेन विधिना बुध इति मात्स्ये मंत्रनिषेधान्नाम मंत्रोक्त्याह पृथ्वीचंद्रोदये स्कां दे रा-
जकार्ये नियुक्तस्य बंधनिग्रहवर्तिनः व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं विधेयं कारयेत् यत्तु

नि. सिं.
२४३

२५३-

भारते राजधर्मेषु यवनाः किराताः गंधाराश्चीनाः शबरवर्षाः काशस्तवाराः कंका
श्रयः कृष्णाश्चाद्रमद्रका इत्युक्ता ब्रह्मक्षत्रप्रसूताश्च वैश्याः शूद्रप्रमानवाः कथं धर्मोऽत्र
रिष्यति सर्वे विषये वासिन इति चोक्ता वेदधर्मक्रियाश्चैव तेषां धर्मो विधीयते यित्
यज्ञास्तथा कृपाः प्रयाश्च ययनानि च दानानि च यथा कालं हि जेभ्ये विसृजेत्सदा तथा
दक्षिणा सर्वयज्ञानां दातव्या भूतिमिधता पाकयज्ञा महार्हाश्च कर्त्तव्याः सर्वदा स्युमि
रिति तैत्तिरीयादीनां श्राद्धविधाने तदपि सजातीयभाजन इव दानादियरं न तु श्राद्धपरमिति
इति श्रीजगद्गुरु नारायण भट्टसुत रामकृष्णभट्टात्मज कमलाकरभट्टकृते निर्ण
सिंधोऽधिकारि निर्णयः अध्यायितरः हेमाद्रौ सात्त्विके देवलो नाम गोत्रं पितृणां तु प्रा
पकं हव्यकवयोः अग्निश्चात्र दयस्तेषां माधियत्येव स्थिताः नाम मंत्रास्तदादेशाम
वातरगतानपि प्राणिनः प्रीणयन्त्येव तदाहारत्वमागतान् देवो यदि पिता जातः शुभक
मानुषो जातः तस्यान्नमृतं भूत्वा देवत्वेऽप्यनुगच्छति गंधर्वभोगरूपेण यश्च चतु
रां भवेत् श्राद्धानं वायुरूपेण नाम त्वेयुपतिष्ठति पानं भवति यस्तत्त्वे राक्षसत्वे तयोमि
षं तदनुजत्वे तथा मधंप्रेतत्वे रुधिरादकं मनुष्यत्वे नृपानादिना भोगकरं भवेत् अ
त्र पित्राश्चैर्जनकादीनामेव पितात्वमुच्यते न वरचादीनां असाचेतन इति ब्रजमानस्य
पित्रो इति शतपथश्रुतेः यस्य पिता प्रेतः स्यात्स पित्रे पिंडं निधायेति विश्वादिस्मृतौ

राम
२४३

243-18

अ यत्तुमनुदैवलैः वसवः पितरो ज्ञेयारुद्रा ज्ञेयाः पितामहाः प्रपितामहास्तथा ।
 दित्याः ऋतिरेवासनातनी यच्चयाज्ञवल्क्यः वसुरुद्रादिति सताः पितरः प्रादु देव
 ता इति तदभेदध्यानाय ध्यानि तस्मादोनेदिपुराणे विष्णुः पितामहजगतो दिव्यो
 ज्ञः स एव च ब्रह्मा पितामहो ज्ञेयो रुद्रश्च प्रपितामहा इति यच्च भविष्ये अ
 नुरुद्रः स्वयं ज्ञेयः प्रह्लादः पितामहः संकर्षणस्तज्जनको वासुदेवस्तथा
 पिता स्वयं कर्ता यत्तु तत्रैव प्रथमो वसुरो ज्ञेयः प्रजापत्यस्तथा परः तृतीये गीः
 स्मृतः पिंडे ह्येष पिंडविधिः स्मृतः यच्चादित्यपुराणे मासाश्च पितरो ज्ञेयाश्च त
 वस्य पितामहा संवत्सरः पूजानां च समेधः पितामहः यच्च नदिपुराणे अग्निव्या
 ना ब्राह्मणानां पितरः परिकीर्तिताः रातां बर्हिषदो नाम विरोका व्याहृक्कीर्तिताः स
 कालिनस्तस्मद्राणां व्यामास्ते धांत्यजातिषु इति अत्राह तादिषु पित्रादयः समुच्चैः
 येन चिकल्पेन वाययाचारं तत्तदेव तारूपेण वाच्या इति हेमाद्र्यादयः हेमाद्र्या
 हे पार्वणं कुरुते यस्तु केवलं पितृहेतुकं मातामहं न कुरुते पितृहासप्रजायते ।
 धौम्याः पितरो यत्र यज्यंते तत्र मातामहा ध्रुवं अविरोधेण कर्तव्यं विरोधात्त
 रकं व्रजेत् अस्यापवादमाह कात्यायनः कर्तुं समान्वितं सुत्कातयाद्यप्रादु बो
 उवा प्रत्यादि कंच रोयेषु पिंडाः स्युः षडिति स्थितिः दर्शादो सपत्नीकानामेव देव ।

नि.सि.
२४४

२५५

मात्वं स्वेन भद्रासमं प्रादं माता भुङ्क्ते सुधासमं पिता मही च स्वेनैव तथैव तथैव प्रपि
तामहीति तत्रैवोक्तेः चेद्विकायां चतुर्विंशति मते क्षयादं वर्जयित्वैकं स्त्रीणां ना
स्ति यथ कृत्रिया केचिदिदंति नारीणां एव कृत्र्यादं महर्षयः अन्यथा सप्तद्वौ च
गयायां च क्षये हनि अत्र मातुः पृथक् प्रादं मन्यत्र पिता सहेतिकात्प्रायनात्
अत्र अस्मिन्मूलतावदंतौ गौडास्त्वत्ता एव अत्र भोग इत्यध्याहारः अन्यथा सपति
कापे मात्रे इति प्रयोगायतेः अत्र मातृशब्दो जानन्यामेव मुख्यः तेन सपत्नमातृ
भ्योनदघात एव पितामहादिशब्दे पितृजनन्यादयगवोच्यं त इति तत्सपत्नीभ्यो
न देयमिति हेमाद्रिः करुण्येन तु महालयादौ देवमिति सगव अथ विश्वेदेवाः हेमा
द्रौ राख हस्यती इष्टिप्रादे कर्तृदक्षौ सत्यौ नांदीमुखे बसू नैमिषिके कामकालौ
काम्ये वधुरिलोचनौ पुरुषाखश्चाद्वयार्वाणे समुदाहृतौ तत्रैव उत्पत्तिनाम
चैतेषां न विदुर्देहिजातयः अथ मुच्यारणीय सैः श्लोकः प्रादसमन्वितेः प्रागधं
तु महाभागा विश्वेदेवामहावलाः ये यत्र विहिताः प्रादे सावधाना भवंतु त इति
इष्टिप्रादं प्रति रुचिरित्युक्तमिति कल्पतरुः प्राधानादिकर्मागमित्यन्ये नैमिषि
कमेवोदितं एकोदितं तु यथादंतत्रैमिषिकमुच्यते इति भविष्योक्तेः यद्यपि ए
कोदितं देवहीनमिति तत्र विश्वेदेव निषेधा तथापि न वप्रादे द्वादशमासिके च

राम
२४४

244-A

कामकालौ ज्ञेयो नवश्राद्धं दशहोतमिति वक्तव्यं अतएव पुराणं वैत्रि
विधं श्राद्धमुच्यते यस्मिन्नेवे पुराणे वा विधेदेवानलेभिरेव श्राद्धं तद्वेद्या
दंतबलं संवर्जिमिति वक्तव्यं परिशिष्टात् एतच्च वक्तव्यानामेव तेषामेवोक्तैः
अन्येषां तत्र विधेदेवा इति कात्यायनोक्तैस्तान्निषेध एवेति स्पष्टीचंद्रोदयः
अन्ये तु नैमित्तिकं सपिंडीकरणमाहुः भविष्येयश्च योकोद्विष्टं तच्छब्देनोक्तं
तथापि तदप्यदेवं कर्तव्यमप्युगमाः भोजयेद्विज्ञानितं तत्रैव विधेदेव निषेधात् य
द्यपि सपिंडीकरणं शतश्रौतं तत्रापि सपिंडीकरणं श्राद्धं देवपूर्वं नियोजयेदिति
वचनात् तत्परत्वं हेमाद्रौ दित्यपुराणे विधेदेवोक्तं तद्वत्तः सर्वस्विष्टिभुक्तीर्त्तितो नित्यं
नांदीमुखे श्राद्धे वससत्यौ च प्रैतकेन वान्नलभते देवो कालकामो सदैव हि अयि क
न्यागते सूर्यकाम्ये च धुरिलोचनौ पुरुरवा इवौ चैव विधेदेवोक्तं त्र्यार्वणे क्वचित्
विधेदेवापवादमाह हेमाद्रौ शान्तातपः नित्यं श्राद्धमदेवं स्यादेकोद्विष्टं तथैव च
मातृश्राद्धं च पुत्रैः स्याददेवं प्राङ्मुखैः पृथक् योजयेद्देवपूर्वकारिणः श्राद्धान्यन्यानि
यत्नतः नांदीश्राद्धे भिन्नप्रयोगक्षेमात् श्राद्धमदेवमिति हेमाद्रिः अप्यविप्राः
ज्ञेयो नममध्यमाधमभेदेन त्रिविधाः तजाद्याः अत्र मदीयाः श्लोकाः जिनाविकेता
स्त्रिमधुश्च वक्तव्यो व्याथर्वणे याजुषसामगौ च षडंगविद्यत्रिसपर्णावेः ताव्यथर्वणि

छोध्यपनेरतश्च शतायुवेदार्थविदोप्रवक्तास्याद्सचारीचतयागिचिच्चसी
ददृतिः सत्यवाक्पुरुषैः स्यैमातापित्रोः पंचभिः रव्यातवंशः पत्नीयुक्तो ज्येष्ठसामा
पुराणवेत्तापुत्रीचेतिहासेष्टभिः योगीभिः सप्तमगोत्रसत्तेनापंचागिश्चैत्रिय
स्तत्सुतोवा शंभुध्यायीश्रीशयादा ब्रुसेवीयां यश्चैतेनृत्तमाः संप्रदिष्टमः भिक्षुर्योगी
पांथरातेतलभ्याभाग्याल्लक्ष्मिश्चैतदाभोजनीयाः आद्वेविप्रक्षयविष्टेयश्चात्सं प्रा
प्राश्नेद्विप्रयज्ञोत्तमोज्याः अत्रमूलं हेमाद्रौ ज्ञेयं तत्रैव नारदः यो वै यतीननादृत्यभो
जयेदितरान् द्विजान् विजानन्वसतो ग्रामेकं यंतद्यातिराक्षसान् दीपकलिका
यांदनः विनामांसेनमधुनादक्षिणया शिष्यापरिपूर्णा भवेच्छ्राद्धं यतिषु श्राद्धभोजि
षु एतच्च ज्ञानविषयं त्रिणाविकेतत्रिसुपर्णीयजुर्वेदेकदेशो तद्वृत्तेन तदध्यायिनो
यस्य संप्रपद्वै सामयाः सस्त्रिसुपर्णी इति वोपदेवः त्रिमधुः ऋग्वेदेकदेशः तदध्या
यी कैचिन्नाचिकेन वयनं त्रिः कृतं तर्जनित्यर्थमाहुस्तद्धेमाद्रिविरुद्धं हेमाद्रौ गोतमः
युवभ्योदानं प्रथमं पितृवय इत्येके मात्स्यमाने यश्च व्याकुरुवाच यश्च सीमां सते
ध्वरं सामस्वरविधितश्च यद्विः क्रियावनया वनाः कौर्मैः असमानप्रवरकोष्ठसगो
त्रसथैव च असंवेधैश्च विज्ञेया ब्राह्मणः श्राद्धसिद्धये गारुडे श्राद्धेषु विनियोज्या
स्ते ब्राह्मणब्रह्मवित्तमाः ये योनिगोत्रमंत्रांतेवासिसंवेधवर्जिताः मनुः न

245-A

मित्रं भोजयेच्छादे धनैः कार्ये स्य संग्रहः नारिं न मित्रं यं विद्यान्तु आदे निमत्रयेत् द्वयोः
भ्रात्रोः आदे भोजन निषिद्धं पितृ पुत्रौ भ्रातरौ द्वौ निरग्निगुर्विणीयति सगोत्रप्र
वरं चैव आदेष्टु परैवर्जयेदिति आदुदीपकलिकायां जातक एषोक्तः अथ मध्यमाः
हेमाद्रौ कौर्मगाज्ये नैकगोजेद्विदं द्यात्तयचाकन्यातया रुचिः अभावे ह्यन्यगोत्रासामे
कगोत्रांस्तु भोजयत् अत्र केचित्स्वशास्त्रीयान् मुखान्याहुः पठंति वानि मंत्रयौ पूर्वद्युः स्व
शास्त्रीयान् द्विजोत्तमान् स्वशास्त्रीयद्विजाभावो द्विजानां न्यात्रि मंत्रयेदिति इदं तु निर्मल
त्वादेमाद्रिणा ह्यितित्वाच्चोपदं अत्र मामकश्लोकः मातामहो मातुलभा गिनेपदौ द्विज
मातृगुरुस्वशिष्याः अत्तिकूचयाज्यस्वसुरौ स्वबंधुर्यालागुणाद्यास्त्वनकल्पभरताः
बंधवो मातृस्वसृपितृस्वसृमातुलपुत्रा इति वीर्यदेवः अत्र मूलं हेमाद्रौ ज्ञेयं स्वगुणा
स्वस्त्रीयाद्यतिक्रमेदोषराव सप्तवीन्सप्तपरान् पुरुषानात्मना सह अतिक्रम्य द्विजा नैता
न्नरके पातयेत्तु वर्ग संवंधिनस्तथा सर्वान्दोहित्रं विद्वपति तथा भागितेयं विरोधेणा
तथा बंधुरवगाधियेति मदनरत्ने भविष्योक्तेः अपरार्कं अत्रिः वक्ष्यस्तु पुरुषेभ्यो वै
ग आदेयास्तु गोत्रिणः वक्ष्यस्तु परतो भोज्याः आदेस्युर्गोत्रजा अपि एतच्च ब्राह्मणा
न्नाभे अपि राक्षसात् असंभवे हेमाद्रौ गोतमः शिष्यांश्चैकं सगोत्रां प्रभोजयेद्द्व्यं त्रिभ्यो
गणावतः आपस्तंबः ब्राह्मणान् भोजयेद्यो निगोत्रमंत्रांते वास्य संवंधान् गुरासत्या

नि.सिं.
२४६

२५६

नृपरेषां समुदितः सोदर्योपि भोजयितव्य एतेनां तेवासिनो व्याख्याताः इति अत्र वि
शेषमादात्रिः पिता पितामहो भ्राता पुत्रो वाचस्पतिः नपरस्य रमर्थाः स्युर्नम्रादे
ऋत्विजस्तथा ऋत्विक् पुत्रादयो ये ते सकृत्प्राप्ताः स्मृताः वैश्वदेवेनियोक्तव्या
यद्येते गुणवन्तराः संगोजाननियोक्तव्याः स्त्रियश्चैव विशेषतः अथ वर्ज्याः अत्र मामकाः
वर्ज्या न प्रवक्ष्ये त्वयरो गिवैरिहीना धिकां गान् कितवान् कृतघ्नान् नक्षत्रशास्त्रेण च जीव
मानान् भैषज्यवृत्त्या पिचराजभृत्यान् संगीतकथस्थकुत्सीदहृत्या वेदकथे शापिकवि
त्तवृत्त्या देवार्चनेनापि च जीवमानान् स्वाध्यायदाराग्निसुतो रुकाणान् दुर्वात्तरवत्स्वा
दृक्कनरव्यधर्मिनं टां श्रयोने भवत्कथमदन्तान् आगारादाही गरदः समुद्रपापी च कुं
डाशयथ कूटकारी वालांश्च यो ध्याययते स्य पुत्रान् दवासविद्यत्त्वय कुड्गोलो अग्नेदि
धिर्वाः पतिरस्रवर्त्ता सोमक्रयौ तैलिककेकराक्षौ पुडाचार्यः पक्षिणा पायकश्च
स्रोतोभेत्ता सक्षसंरोपकश्चा मेघाणां वामदिवाणां च युष्यास्त्रीयस्त्रीषु प्रहितैर्यश्च
जारेः जीवत्यधेनुश्च दत्तानुयोगाद्रव्यप्राप्तौ वेदमुद्घाटयन्तः ग्रामयाजिपशुकेशवि
ऋयितेन शिल्पिपितृवादकारकान् अर्थकामरतश्च द्रव्यजनकमश्रुहीनजटिल
मुंडनिर्हता यस्य चैव गृह्णीत रजस्वलास्वार्थया करतशायदायकान् ह्रीवकुधति
विलोहितैर्दण्डान् कुञ्जवामनमृद्याभिशायिनः पुत्रहीनमकूटसाक्षिणं प्रातिहा

राम
२४६

246-A

हादिकमयाज्यपाजकं स्वात्मदातृपरिवेत्तयाजकस्ते नहिंस्रकमुरवान्विवर्जयेत् ॥
 जम्बूलं हेमाद्रोपृष्टीं द्रोदये च तेषां भारते दानधर्मे सुप्राद्वे चर्जविप्राधिकारे कित
 वोभू एहापक्ष्मीय उपालोतिराकृतिः ग्रामप्रव्यावाधुषिको गायनः सर्वविजया सम
 द्विको राजभृतसैलिकः कटकारकः पित्रा विवदमानश्च यस्य चोपपत्तिर्दृष्टे ॥
 भिरास्तुतयास्तेनः शिल्प्यपश्चोपजीवति पर्वकारश्चस्तचीचमित्रध्रुक् परदारिकः
 प्रव्रतानामुपाध्यायः कांडस्य शरं वान्यत्कायरशारवया उपनीतः तदध्यायी यदध
 स्तथैव च अभिप्रयः परिकामेद्यः मुना दृष्ट्वा च परिवितिस्तथास्ते नो दुष्प्रमा
 गुरुतल्यगः कशीलवो देवको नक्षत्रैर्यश्च जीवति ईदृशा ब्राह्मणा ज्ञेयः प्रपाते पा
 धुषिष्ठिर तथा अष्टाकर्ता च यो राजन् पश्चवाधुषिको नरः अन्ये पि हेमाद्रो मात्से
 त्रिशंकु नववैरानंध्रान् चीनद्विडको कर्णान् कर्णाटकांस्तथा भीरान् कालि
 गाश्च विवर्जयेत् तत्रैव सौरपुराणे अंगवंगकलिंगाश्च सौराष्ट्रान् गजरास्तथा
 आभीरान् कोंकणश्चैव द्रावडान् दक्षिणायनान् आचंत्यान्मांध्रान् चैव ब्राह्मणास्त
 विवर्जयेत् चंडिकायायमः काणाः कुब्राश्च वांडाश्च कृतधरा गुरुतल्यगः मानकटा
 स्तलाकूटाः शिल्पिनो ग्रामयाजका राजभृत्या धवाधिरस्तकरवल्चाटपंगवः

वणिजो मधुहर्तारो गरदावनदाहकाः समयानां च मेतारः प्रदाने ये निवारकाः प्रबोय
 निहताश्च यथा प्रसूतिनाशये यश्च प्रसूतिना ज्ञातः प्रब्रज्यावसितमयः श्रवकीणि च वी
 रधोगुरुपुत्रः पितृदूषकः श्राद्धकारिकायां कात्यायनः द्विर्नगरः कीलडुश्च मीश्रातिक
 पिलस्तथा द्वित्राष्टास्त्रिंशत्लिंगश्च नेव केतनमर्हति द्विर्नगरः पित्रोर्वैरो त्रिपुरस्य विधि
 त्रदेवार्ति हेमाद्रो मरीचिः अविद्वकर्णः कृष्णश्च लंबकर्णस्तथैव च वर्जनीयाः प्रयत्ने
 न ब्राह्मणाः श्राद्धकर्मणि ब्राह्मे मृकश्च पुनिना सश्च चित्रांगश्च अधिकंगुलिः गलेशगीच
 गडुमान् स्फुटितांगश्च सज्वरा घटतुषरमंदाश्च श्राद्धे नान्विवर्जयेत् लंबकर्णश्च
 ह तत्रैव गोभिलः हनुमलदधः कर्णो लंबोत्तपरि कीर्तिनौ दंगुलो अंगुलो रास्ता
 वितिशातानयो ब्रवीत् चंद्रिकायां यमः दंगुलातीतकर्णस्य भुजते पितरो न तु
 घटश्चात्र चंद्रिकोक्तः सप्तविधोग्राहः यथा घटको वातजः घटपंडुः क्लीबो न पुंसकश्चेति स
 सैव क्लीबभेदाः प्रकीर्तिताः परासरमाधवीयेत चतुर्दशविधोक्तः तेषां स्वरूपाणि तत्रैव ज्ञेया
 नि चंद्रिकायां शातानपः अग्निहोमादिभिर्यज्ञैर्यजंत्यल्पदक्षिणैः तेषामन्नं न भोक्तव्यं
 मयां तास्तैः प्रकीर्तिताः एतच्च शक्तौ सत्या अपरा कर्कभारते अत्र तीर्कितवः सेनः प्राणिवि
 क्रयकोपि वा पश्चाच्चैत्यो न दान्तो मंसोधिके तनमर्हति श्राद्धदीपकलिकायां यमः अ
 पत्नीकश्च वर्ज्यः स्यात्सपत्नीकोप्यनृतिकः तत्रैवाशुलायनः प्रतिमाविक्रयः

५३

राम
२४६

247-17

यो वै करोति यति तस्मै सः जीवन्मर्त्यपरास्त्री धृत्वा तान्तीर्थप्रयातियः मातापित्रोर्विना
 सापि यतिः परिकीर्तितः तत्रैव जातु कार्यः यत्र मातुलजो द्वाही यत्र बाह्वली पतिः ।
 आहं न मद्ये न द्विराः कृतं यच्च निरामिषं पितृपुत्रौ भ्रातरौ द्वौ निरग्निगुर्विणीयति संगोत्रप्र
 वरं चैव आदेष्टुं परिवर्जयेत् बह्वारदीये शरंवचक्रं मृदायस्तु कुर्यात्तत्राप्यसेनवा स्मृत
 इव दहिः कार्यः सर्वस्मादिजकर्मणाः शरवचक्राद्यं कनं च गीत नृत्यादिकं तथा एकजनेर
 यंधर्मान जातु स्याद्विजन्मनः तेन येन प्रमुद्रादिविधयस्ते श्रद्धा विषया इति पृथ्वी चंद्रोदयः ।
 शिवकेशवयोरंकान् शूलचक्रादिकान् द्विजः न धारयेत्तमतिमान् वैदिकेवर्त्मनि स्थिते
 इत्याश्वालायनोक्तेः नृत्यं चोदराद्यर्थं निषिद्धमिति श्रीधरस्वामी अन्येपि निषिद्धानि वै
 धेयुस्तेया इति दिक् अत्र त्रिपाणां ग्राह्यत्वे तेष्वेव तदज्ञानं निषेधो सिद्धे पुनर्वर्ज्यपरिगण
 नं निषिद्धवर्जनिर्गुणप्राप्त्यर्थमिति विज्ञाने श्वरः कष्टिकाणां देववादो हेमाद्रौ वसिष्ठः
 अपि चेन्नमत्र विद्युक्तः शारीरैः पद्भिः दृषणैः श्रद्धां तं यमः प्रादुर्पद्भिः पावन एव सः ।
 क्वचिद्विप्राणी जातिमात्रेण ग्राह्यत्वं मुक्तं चेद्वि कायामग्रेये यदि पुत्रो गयां गच्छेत्तत्कदा
 चित्कालपर्ययात् तानेव भोजयेद्विप्रान् ब्रह्मणा ये प्रकल्पिताः ब्रह्मणा कृतसंस्थाः ।
 नाविप्रान् ब्रह्मसमाः स्मृताः अमानुषा गयाविप्रान् ब्रह्मणा ये प्रकल्पिताः तेषु तुष्टेषु
 संतुष्टैर्देवाः सपितृगुह्यकाः गयायां निर्गुणा अपि त एव भोज्या इति हेमाद्रिः ।

*१ पितृभिः सह देवताः तत्रैवानविचार्यं कुलं शीलं विद्या च तप एव च पूजितैस्तैस्तुष्टा *१

अक्षयवट आदौ एव तन्नियमानान्यत्रेति त्रिस्थलीसेतोपितामहचरणाः पृथ्वीचंद्रो
 दयेपियाग्रे तीर्थेषु ब्राह्मणं नैव परीक्षेत कदाचन अन्नार्थिनमनुप्राप्तं भोज्यं तं म
 नुरब्रवीत् स्कांदेपि ब्राह्मणं न परीक्षेत तीर्थक्षेत्रनिवासिनः मनुः न ब्राह्मणं प
 रीक्षेत देवेवर्मणि धर्मवित् पित्र्ये कर्मणि तु प्राप्ते परीक्षेत प्रयत्नतः असंभवपरमे
 तदिति मेधातिथिः हेमाद्रौ व्यासः गायत्रीसारमात्रोपिवरं विप्रसुयंत्रितः नायं त्रि
 तश्चतुर्वेदी सर्वाणी सर्वविजयी कारणाः कृताश्च कुत्राश्च दरिद्रा व्याधितास्तथा स
 र्वे आदौ नियोक्तव्या मिश्रिता चेदप्यारगोः अथ विप्रनिमंत्रणं चंद्रिकायां वाराहे
 वसुशौचादिकर्तव्यं श्रः कर्त्ता स्मृतिजानता स्थानोपलेपनं कृत्वा ततो विप्रान्निमंत्रये
 त् दंतकाष्ठं च विस्मृतं दूतं चारीशुचिर्भवेत् तत्रैव प्रचेताः दक्षिणं चरणं विप्रः सव्यं
 वैक्षत्रियस्य पादावादाय वैश्यो द्वौ शूद्रः प्रणतिपूर्वकं हस्त्यतिः उपवीचीतीत
 तो भूत्या देवा र्थं तु द्विजोत्तमान् अपसव्येन पित्र्ये स्वयं शिष्यो यवासुतः प्रचेताः
 सव्यं प्रेषयेदाहं द्विजानां तु निमंत्रणे पृथ्वीचंद्रोदये स्कांदे राजकार्ये नियुक्त
 स्य च धनिगृहवर्तिनः व्यसनैष्वयसर्वेषु आहं विप्रेण कारयेत् चंद्रिकायां यमः ।
 अभोज्यं ब्राह्मणस्यान्नं तद्वृत्तेन निमंत्रितं तत्रैव पैठीनसि सप्तयं च द्वौ वास्त्रात्रियां त्रि
 मंत्रयेत् आश्वलायनसूत्रे एकैकमेकैकस्य द्वौ द्वौ जीस्त्रीचावृद्धौ फलभूयस्त्व

248-17

दात्रिति हृदि श्राद्धे गौतमः नवावरान्न भोजयेत् अथ जोवाय योत्साहं याज्ञव
 ल्क्यः दौर्देवे प्राकृत्यः पित्रो उदक एवैकमेव च मातामहानामप्येवं तत्र वा वै
 श्वदेविकं दिय कलिकायां पराशरः संपन्नावर्थं याजाणामेकैकस्य जयस्यः
 पित्रा देवांस्तान् प्रोक्ता श्रुत्वा रोचैश्च देवके हृदयात्तव ल्वयः दशैकं पंच वा विप्रा
 न पाचं नित्यं नियोजयेत् अत्र वैश्वदेवे दौ चतुरो बोधयेत् पित्रा दीनामेकैक
 स्य स्थाने एकं जीनं पंच सप्त नव वा बोधयेत् यदि तन्निक्षणार्थः मनुः दौर्देवे पितृ
 कृत्ये जीने एकैकं भुजयेत् अथ भोजयेत् सप्त द्वौ पितृ प्रसज्जो न विस्तरे सक्रियां दे
 शकालौ च रोचं ब्राह्मणं संपदं पंचैतान् विस्तरो हंति तस्मान्नेहेत विस्तरे ८।
 धी चंद्रोदये रातातपः दौर्देवे यवैर्लो विप्राश्चुरव बुधवेशयेत् पित्रो हृदंश्च रंस्त्री
 श्रवणं वा धर्षु सामगात् अथ रातौ हेमाद्रौ वलः एकेनापि हि विप्रेण अथ पिंड
 श्राद्धमाचरेत् बड्ध्या न दापयेत् अथ अयो दद्यात्तथा हविः गोभिलः यद्येकं भो
 जयेच्छ्राद्धे धंदोगं तत्र भोजयेत् अथ चायजं वि सामानि जितं पंतत्र विद्यते अत्र
 वैश्वदेवे विशेषमाह तत्र विसिष्टः यद्येकं भोजयेच्छ्राद्धे देवं तत्र कथं भवेत् अ
 त्रं पात्रे समुहं सर्वस्य प्रकृतस्य च देवतायतने कृत्या ततः श्राद्धं समाचरेत्
 प्राग्देवगौतमं दत्तं दद्याद्वा द्याह्नचारिणो एतच्च सपिंडीकरणं वर्ज्यं न त्वेवै

कंसर्वेषां काममनाद्ये इत्यास्रलायनोक्तेः अस्मार्थउक्तो नारायणसुतो आद्यंसपि
 शीकरां तद्वर्जेषु सर्वश्राद्धेषु कामं जयाणा मेकं भोजयेत् सपिंडीकरणोत्तनिय
 तं त्रिभिर्भविष्यमिति अनाद्ये पार्वणवर्जिते वा अभोजने ग्रामस्मश्राद्धादौ वा
 अत्राभावेवेति व्याख्यातं तत्रैव त्रैयं कारकापि देवेपि ये यवेकैकं सपिंडीकर
 णं विनेति अत्रैकविप्रेसागे विंशोष्माह यच्चोचंद्रोदये प्रचेताः एकास्मिन् ब्रा
 ह्मणे देवे रग्निर्भवैत सदा अन्नमेः कुरामुष्टिस्याद्वा इकस्मिन् सवतः सर्वथा वि
 प्रालाभे तत्रैव हेमाद्रौ च सत्यव्रतः निधाय दर्भं निचयमासनेषु समाहितः प्रैषा
 न प्रैषसंयुक्तं सर्वश्राद्धं प्रकल्पयेत् अत्रानन्यभावात् सत्रेऽवऋत्तिककार्यं यज
 माने विधौ न दक्षिणेति केचित् अदृष्टार्थायाः प्राप्तेः सर्वतत्रिजटे तु भ्यं यज्ञश्राद्धम
 दक्षिणामिति यास्मात् विदध्यादौ त्रमन्यश्रेद्दक्षिणाईहरो भवेत् स्वयंचेडुभयं
 कुर्यादयस्मै प्रतिपादयेदिति धंदोगपरिशिष्टाच्च एवं प्रतिश्राद्धे पिकात्याय
 नः यत्तवस्तु निपुष्टौ चस्तं मे दर्भं वदोत्थादन् संख्यान् विहिता विष्टरास्तराणां
 पुत्रं मातृश्राद्धे त्रिप्राणामस्तं मे यजयेदपि पतिपुत्रा न्यिता भव्यापो
 धितोऽष्टौ कुलो ज्ञेया इति श्रुत्या विति वृद्धिश्राद्धं विषयं पाप्मोऽन्तरद्वे
 सक्तदभ्यर्चितं लिङ्गं शालग्रामशिलाद्यैः पाठे संख्यापयित्वा त्रिश्राद्धं
 मातृश्राद्धे त्रिप्राणामस्तं मे सुवा न्यापि भोजनीय इत्यह र्शर्कं सद्रूपि सिद्धः ३४

249-17

च कुरुते नरः पितरस्तस्य तिष्ठन्तिकल्पकोटिशतं दिवि चंद्रिकायां मात्स्ये ।
षट् निमंत्रयन्निमान् प्रावयेत्येव कान् बुधः शक्रो धनैः शौचपरैः सततैः ।
ब्रह्मचारिभिः भावितव्यं भवद्भिश्च मया च श्राद्धकारिणा । यत्नमनुः सर्वायास
विनिर्मुक्तैः कामक्रोधविवर्जितैः भावितव्यं भवद्भिर्नः शोभते श्राद्धकर्म
णीति सर्वे पुनिमंत्रणाय रं न तदहः तजैव देवलः असंभवे परे धृवा ब्राह्म
णां स्तान्निमंत्रयेत् श्रुतानीन् समानार्थान् पुगयानात्मशक्तिनः कात्या
यनः प्रतिधेनामंत्रितो नायकमेत केतनेन गृह्यसक्तः अथ श्राद्धकर्तृ
भोक्तुं नियमाः तत्र निमंत्रितविप्रत्यागे परार्कं यमः केतनेन कारयित्वा त
द्योतियाति यतिदितं ब्रह्महत्यामवाप्नोति शूद्रयो नोच जायते श्रामं अत्रा
स्रगं यस्तु यथा न्यायन एजयेत् अतिस्तुष्टासु घोरासु तिर्थग्योनिषु जा
यते प्रमादत्यागे नृहारीतः प्रमादाद्विस्मृतं ज्ञात्वा प्रसाद्यै नं प्रयत्नतः तर्प
यित्वा यथा न्यायं सर्वैतत्फलमश्नुते प्रमादाभावे नारायणः एतेस्मिन्नेत
सि प्राप्ते ब्रह्मणे नियतः श्रुतिः पतिचांद्रायणं हृत्वा तस्मात्प्रायात्प्रमुच्यते
यमः श्रामे त्रितसु यो विप्रो भोक्तुमन्यत्र गच्छति नरकाणां शतं गत्वा चंश

नि.सिं.
२५.

250

* स्थानं याति ईर्ष्यति भवति ४४

लेख्यभिजायते तत्रैव देवतः पूर्वनिमंत्रितो न्येन कुर्यादन्यप्रतिग्रहं भुक्ता ह
हारो यथाभुक्षे सक्तं तस्य नरयति यदि विप्रो लंबते तदोक्तमादित्यपुराणे आमे
त्रितम्रिरनैव कुर्याद्विप्रः कदाचन देवातानां पितृणां च दातृ रत्नस्य चैव हि चि
रकारी भवेदोक्ष्यते नरकाग्निना यद्यी चंद्रोदये यमः निमंत्रितस्तु यो विप्रो
वृत्ति कुल हं द्विज भवति पितरस्तस्य तं मासं संभोजनाः निमंत्रितस्तु यो विप्र
वीर्य कुल हं द्विज भवति पितरस्तस्य तं मासं मलभोजनाः आमंत्रितस्तु यो विप्र
भारमुद्धते द्विजः पितरस्तस्य तं मासं भवेति स्वेदभोजनाः आमंत्रितस्तु यो विप्र
हिंसां वै कुरुते द्विजः तं मासं पितरस्तस्य भवति रुधिराशनाः शंखः निमंत्रितस्तु
यः आद्वैतं पुनं सेवते द्विजः आहं दत्त्वा च भुक्ता च युक्तस्यान्म हतेन सामेयुनं
च ऋतु कालं नियुक्तौ वानेव गच्छेत्तु यं कचित् तत्र गच्छन्वाप्नोति ह्यनिष्टानि
फलानि चिति तत्रैव माधवीये हृदमन्त्रैः आहं करिष्यन् कृत्या वा भुक्ता वा
पि निमंत्रितः उद्येद्य च तथा भुक्त्वा नोपेयाच्च ऋताविति भोक्ष्यन् करिष्यन् श्वः
आहं पूर्वरात्रौ प्रयत्नतः व्यवयं भोजनं वापि ऋतावपि विवर्जं दिति तत्रैवाश्वला
यनोक्तैश्च विज्ञाने श्वरेण तु आहं ऋतौ गच्छेत्तु यिन दोष इत्युक्तं तत्त्वगतिकत्वे

राम
२५०

250-A

ज्ञेयं वदस्यति: दिनशंखसचारीस्यैव कृत्वा सारोः सह अन्यर्षवर्तमानौ
 स्यातां निरपगामिनौ पुनर्भोजनमध्यानेभारमायासमेषुनं आहृत्य कृत्वा भुक्ते च
 सर्वमेतद्विवर्जयेत् स्वाध्यायंकलहं चैव दिवा स्वप्नं तथैव च यत्न आहृत्वा शिकाया
 यापुराणसमन्वये कृत्वा तत्सुधिरश्वनविद्वान् आहृत्वा चरेत् एकंदेत्रीणि वा विद्वान्
 न दिवा नियमिर्वर्जयेदिति तन्निर्मूलं पृथ्वीचंद्रोदयेयमः पुनर्भोजनमध्यानेभार
 ध्ययनमेषुनं संध्याप्रतिग्रहं होमं आहृत्वा भोक्ताष्टवर्जयेत् संध्यानिबंधः प्रायस्मि
 त्तत्सर्वज्ञेयः यथा हि उशनाः दशकृत्यः पिवेदायोगाय आहृत्वा भुग्विजः ततः संध्या
 मुपसीत जपेच्च जुहुयादपि गोडास्तसायं संध्याय रानं च छेदनं च वनस्यतेः आमा
 वास्यानकुर्वीतरात्रिभोजनमेव च द्युतं च कलहं चैव सायं संध्यादिवाशयं आहृ
 कृत्वा च भोक्ता च पुनर्भुक्तिं च वर्जयेदिति कामधेनौ वाराहाद्युक्तेः कर्तारपिसायं संध्यानि
 बंधमाहुः शिष्टास्तु निर्मूलत्वमाहुः होमनिषेधस्तु स्वविषयः स्तुतकेच प्रवासेच श्र
 राक्तौ आहृत्वा भोजने एवमादिनिमित्तेषु हावयेन्न तहाययेदिति दं दोगपरिशिष्टान् ।
 तत्रैवादिपुराणे निमंत्रितस्तु न आहृत्वा कुर्यात् प्रायश्चित्तात्तं चंद्रिकायां प्रचेताः आहृ
 भुक् प्रातस्तयाय प्रकुर्यात्तदंतधावनं आहृत्वा कर्तानकुर्वीत दंतानां धावनं बुधः होमादौ
 जावालाः दंतधावनं तत्कालं तैलाभ्यंगमभोजनं रात्रौ यथपरात्र च आहृत्वा स्नात्वा

नि.सि.
२५१

२५१

जयेत विष्णुरस्ये आद्योपवासदिवसे स्वादित्यादंतधावनं गायत्र्या रातसंयुतमंबु
प्राणविमुध्यति पुनर्भोजनमध्यानं यानमायासमैषु न दानं प्रतिग्रहो होमः आहुतं
क्वचिजयेत सोमोत्पन्नो वनस्यतिगते सोमे यस्तु हिंसाद्व्यतिघोराया भृणह
त्याया पुज्यते नात्र संशयः एतद्धिहिते ध्यादिव्यतिरेकेण वनस्यतिगतेः सोमेन दुहो
यस्तु वासयेत नाश्रंति पितरस्तस्य दशवर्षाणि यंच वनं पथानं यस्तु कारयेत् गावः
स्तस्य पुनरंयति चिरकालमुपस्थिताः वनस्यतिगतः स्वरूपमाह पृथ्वी चंद्रोदये व्या
सः त्रिमुहूर्तं वसेदर्के त्रिमुहूर्तं जले वसेत् त्रिमुहूर्तं वसेद्गोष्ठे त्रिमुहूर्तं वनस्यतो
कालिकायां तद्वदनः निमंज्य विप्रांस्ततस्त्वर्जयेन्मेषु नंदुरं प्रमत्तना च स्वाध्यायं
जोधरो चेत्तथा न तं केचित् निमंत्रणात् सर्वे मुध्यर्षे पूर्वद्विद्वोरं कुर्वन्ति तत्र
मूलं मृगं मरीचिः बर्षा यवस्य पक्षान्ते द्वोरिक्ता भद्रानि पिब्य धाते आहुते व्रता दे
चक्षोरं वर्ज्य निशास च यदा कर्तुं शक्नोति तत्र शिष्यादिः आहुं रोति तदा कर्त्ता प्र
तिनिधिना च प्रागुक्तनियमाः कार्याः न शक्नोति स्वयं कर्तुं यदा त्यक्तवकाशतः आहुं
शिष्येण पुत्रेण तदा न्येनापि कारयेत् नियमानाचरेत् सापि नियतांशवसंधरे यजमा
नोपिता स्वर्वा नचरेत् स समाहित इति हेमाद्रौ वारहोक्तैः स्त्रियाः त्रया ये मुक्तक धाते
यानारी मुक्तकेशा तथैव च हसते वदते चैव निराशाः पितरोगताः आश्रलायनः आ

राम
२५१

251-A

देहिमौजयेदासोनवासानपियन्नतः प्राकृषिं दानाङ्गधाद्येलंकुष्यात्स्वविग्रहं वासो
 गृहे अथप्राद्वत्तनि तत्रादौ कृशाः पृथ्वीचंद्रोदये दक्षः समितुष्य कृशादीनां द्वितीयः प
 रिकीर्तितः अथ धामत्ते दिने द्वितीयो भाग इत्यर्थः तत्रैव यमः समस्तस्तमवेदमर्थि
 त्तरां प्राद्वत्तनि मूलो न लोका न जयति राक्षस्य सुमहात्मनः व्यासः तर्थादादीनि
 कार्याणि पितृणां यादृजदमैः पितृक्रिया सविंटी करणादूर्ध्वो द्विगुणैर्विधिबद्धवेत्
 रास्यः अत्र न तर्माभिंसां सांकोरां द्विदत्तमेव च प्रादेशमात्रं विज्ञेयं पवित्रं यत्र कु
 र्वन्ति सारीतः पवित्रं वा स्यात्स्येव च तुर्मिर्दमं पिंजुलेः एकैकन्यूनसुद्विष्टवर्गो वर्ण
 यथाक्रमं स्मृत्यर्थसारे सर्वेषां वा भवेद्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं न च रत्नवत्त्वं ह्येतास्त
 पर्वरागमंध्ये पवित्रं धारयेदुधः हेमाद्रौ स्कादे अनामिका धत्तादर्भा ह्येकानामिकायापि
 व द्वाभ्यामनामकाभ्यां त्र्यधार्थे दर्भपवित्रके पवित्राभावे तत्रैव समंतः समस्तग्राविगर्भो
 तु कुर्यादौ दक्षिणे करे सव्ये चैव तथा जीनै विभयात्सर्वकर्मसु बोधापनः हस्तयो रु
 भयोर्द्वौ द्वावासनेषितथैव च दर्भग्रहणे मंत्रमाह शंखः विरिचिना स हो त्वन्न परंष्टि मे
 निसर्गजमुदसर्वाणि यापानि दर्भस्वस्तिकरो भव स्मृत्यर्थसारं कुंफट्कारेण सह
 दित्वा समुद्धरेत् भद्रं वाजः प्रेतक्रियार्थं पित्र्यमभिचारार्थमेव च दक्षिणाभिमुख
 ष्ठिव्यात्प्राचीनावीतिको द्विजः कृशाभावे परार्के समंतः कृशाः काशः शरो गुंडो

नि.सिं.
२५२

252

पवाइवायवल्चजाः गोके शंजकुंदास्य सर्वाभावे परः परः काशादौ विरोध
माह शंखः काशास्तस्तनाचामेत्कदाचिद्विधिं शंकाया प्रायश्चित्तेन युज्येत इवा
स्तस्तथैव च पृथ्वी चंदोदये यमः मासि मास्युद्धतादर्भा मासि मास्येव चोदिताः
षड्विंशत्यने मासेन स्यादमावास्यादर्भा ग्राह्या नवः स्मृतः गृह्यपरिशिष्टे ये च
विंशतिमासि तादर्भा येः कृतं पितृ तर्पणं अग्नेध्यासुचिलिप्ता ये ते वा त्यागादि धीयते
लाघुतरीतः पश्चिदर्भा श्रितौ दर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु स्तरणा सनधिंडेषु कुर्यान्
परिवर्जयेत् व्रतयज्ञे च ये दर्भा ये दर्भाः पितृ तर्पणे हता मृजपुरीषाभ्यां ते वा त्या
गादि धीयते हेमाद्रौ अन्यानि च पवित्राणि कुराद्वीर्यका निच हेमात्मक पवित्र
स्य हेमात्मा न हंति वै कल्पं अथ हविः हेमाद्रौ प्रचेताः कृष्णमावास्तिला श्वेता श्वेता
स्युर्ध्वराजयः पवावृत्तीयवास्तथैव च मधूलिकाः कृष्णाः श्वेता श्वेता श्वेता श्वेता
स्याः स्युः श्राद्धकर्माणि मधूलिकाः यावन्नाला इति हेमाद्रिः कल्पतरुश्च भारते वर्ध
मानतिलं श्राद्धमक्षय्यं मनुर्व्रवीत् सर्वकामैः सपजने पतिलैर्पिजेत् पितृन् चंदि
कायां देवदेवलः प्रकाशं ते मृता हे च दर्श हृद्यष्टकासु च पात्रेभ्यस्त्वेषु कालेषु दे
ये नैव कुभोजनं सादयामीत्ये अगोष्ठं मंचयच्छादं माघं सुभिक्षं विजितं तैलपक्वं न
रहितं कृतमप्यकृतं भवेत् हेमाद्रवजिः श्राद्धं मंचयच्छादं कृतमप्यकृतं भ

राम
२५२

259-11

वेत नत्रैव ब्राह्मे यद्वैत्री हितिले माधेर्गोधर्मे श्राणकैस्तथा सतर्पयेत्पितृन्मुनेः
 एषामाकैः सर्वपद्वैः नोवारैर्हरिषामाकैः प्रियंगुभिरपार्चयेत् हेमाद्रौ कार्मा
 जिनिः यदि वं जीवतश्चासीत्तदद्यात्तस्य पत्नतः सत्तप्तोऽस्तरं मार्गं नतोपतिनसंश
 यः कलिकायामाश्रयायनः कदल्यादिफलेः शस्तैर्मूलैराद्रादिकैरपि गोरसेर्मधुना
 दध्नाश्राद्धे संतर्पयेत्पितृन् कदल्याम्रफलादीनि श्राद्धे संपादयेत्सुधीः हेमाद्रौ पृथ्वीचं
 द्रोदये च मार्कंडेयः गोधर्मे रिक्तुभिर्मुनेः सतीने श्राणकैरपि श्राद्धेषु दत्तैः प्रीयते मा
 समेकं पितामहाः विदार्थाचभरुंडैश्चित्तिलैः शृंगाटकैस्तथा केचुकैश्च नथा कंदैः क
 र्कधुवदरैरपि पाले च तैरारुके श्राप्य कोटैः पानसेस्तथा काकोल्याक्षीरकाकोल्या
 तथा पिंडालकैः शुभैः लाजाभिश्च सधा नाभिः पुसेर्वा रुचिर्भटैः सर्वपाराजशाकाभ्या
 मिर्गुंदैराजाजंबुभिः प्रियालामलकैर्मुरैः फल्गुभिश्च तिलकटैः वेजांकुरैस्तालकं
 दैश्चक्रिकाक्षीरकावचैः लोचैः समोच्चैर्लंकुवैस्तावैर्वीजपरकैः मुंजातकैः पद्मफ
 लैर्भक्ष्यभोजैश्च संस्कृतैः रागरवाडवचोव्यैश्च त्रिजातकसमन्वितैः दूतैस्तमासंप्री
 यते श्राद्धेषु पितरो नृणां राधां कोराहेमाद्र्यादिव्याख्या वेधनसारेण मध्यदेश
 भाषणानामानुज्यते सतीनेः कालाधैः कलायस्तु सतीनक इत्यमरः चटरी इति
 प्रासिद्धैः विदार्थानां कंदेन भरुंडं जवजमरव्याणा इति श्राद्धमंजया भरुकृष्णाऽमि

त्यन्ते श्रृंगारकं सिंघारके बुकः कंबनारः कंदः सरणः प्ररीष्टः सरणः कंद इत्य
मरः कर्कधुर्वन्यं स्रक्षं वदं पा लेवतं कोरातकी आरुकं अरुद्रं प्रभोटं प्रवरोट
काकोलीभीरकाकोल्पोगोडेयु प्रसिद्धे पिंडालकं सुयनी महाराष्ट्राणां सोदलकंद
इति प्रसिद्धः त्रयुसादयस्तु या कर्कटो भेदाः चिर्भटं रवर्जं सख्येति दीर्घं श्रृंगारदसः प्रि
या लं चिरोजी फल उडुंबरं तिलं टकं पटोलं तलकंद विशेषः चक्रिका ति ति ति ति ति
वीवाभीरिका रिबरणी माचं कदली फलं लकृचं बडहरं संजातं गोडदेशे पदफ
लं गदा राग स्वाडवः पान विशेषः त्रिजातं लवं गेलायत्र कारिण मदनरत्ने कोर्मका
लरा कंच वस्तु कं मूल कं कृष्णनालिका पुरास्तानीति शेषः हेमाद्रौष्ट्यी चंद्रोद
येच वायु पुराणे कालराकं महाराकं डोणप्राकं तथाद्रैकं वित्त्वामलकमृद्धी
कायनसाम्नातदाडिमं च तं पालिवताक्षौट खर्जरंचकसेरुकं कोविदार अकंदम
पटोल हहती फलं पिप्पली मरिचं चैव एला संठी च सैंधवं शर्करा गुड कर्पूरव
दरी डोणपत्रकं तथा मधुकं रामठं चैव कर्पूरं गुडं मेव च आद्रकर्मणि रास्तानि
सैंधवं त्रयुसं तथा रासठं हिंसं कसेतुः कोविदार अतालकंद रत्नस्तथा विसं त
मालं रातकंदम्र तथा वैशीतकंदकं कालेय कालराकं च मुनिषाणं सुबच्चिलं
मांसराकं दधिभीरं चांबुवे शं कुरस्तथा कइ फलं कोकणी डासाला कुचं मो

253-A

चमेव अलावु ग्रीवकं चारं कर्कं धुर्मधुसाकूपं वैकं कतेनारिकेलं अंगारकपल्लव
 कं पिथ्यली मरिचं चैव यगलं वृहतीफलं एवमादीनि चान्यानि स्वादूनि मधुराणि च ।
 नागरं चार्द्रकंदं देयं दीर्घमूलकमेव चेति द्रोणशंका गृहमाहृदिका द्रोक्षा आम्नाते आवा
 गवक्षः । स्तक्यलं च तं जंवीरं कसेरुः जलजः कंदः किंविदारः कंचनारसदृशः तालकंदः
 तालमल्ली विसंभसी शतकंदः शतावरी शीतकंदः शालूकं मेरुः कीर्तिप्रसिद्धकाले
 यं करालसंज्ञकः दारुहरिद्रावेति यष्टीचंद्रः सुनिषण्णकं कटीसदृशसुवर्चलं शाक
 विशेषः कटुफलं श्रीपरी वृक्षफलं कोकाणि मसूरसा द्रोक्षा तिडुकं डिंडिसमिति कैदेवः
 तिडुफलं वा ग्रीवकं फलविशेषः चारं भुद्रतालं मधुसाकूपं मधुकपुष्पं फलं वापरुवकं
 फरुसमिति प्रसिद्धं नागरशुंठी यष्टीचंद्रोदये ब्राह्मे आम्रमांसातकं विल्वं दाडिमं बीजफ
 रकं प्राचीनामलकं क्षारं नारिकेलं परुषकं नारंगकं चरवर्जरं द्रोक्षानीलकपित्थकं ।
 एतानि फलजातानि आद्वेदेयानि यत्नतः अन्नं तस्य दधिकीरी गोघृतं शर्करा चित्तं मांसं
 द्रोणाति सर्वा नैपित्थनित्याह केशवः पात्रवल्क्यः रुचिष्या नैव मांसं पापसेन तु वत्स
 रं मांसप्रहारिण कौरभ्राक न छागपार्थितैः रोण रो रव वाराह शाशोमी सैर्यथाक्रमे
 मांसवद्वा भित्तिर्यति दत्तैरिह पितामहाः रवदुमिधं महाशक्तं मधुमुन्यतमेव च लो
 हा मिधं कालशाकं मांसं बाध्नीणस्य च प्रादुर्दत्तस्य मांसस्य भाक्षतो दोषमाह मनुः
 नि युक्तं क्लृपया त्पायो यो मोसेनातिमानवः स प्रेत्य पशुतायाति सेनवानेकचिं शति

३५

अत्रवद्वयवचनेषु आदेमांसमधुनोः प्राशस्योक्तेः विनामांसं न यच्छादं कृतमप्य
 कृतं भवेदिति हेमाद्रौ देवलोक्तेः यच्छादं मधुना हीनं तद्रसैः सकलैरपि मिष्टानै
 रपि संयुक्तं पितृणां नैव तृप्तये अत्रमात्रमपि आदेयदिनस्याश्च मासिकं नामा
 पिकीर्तनीये स्यात्पितृणां प्रीतये तत्र हेमाद्रौ ब्रह्मलोके मांसमधुनोः आदेनि
 यत्तत्त्वंगमने गोष्ठं निबन्धे मत्स्यस्तुक्ते मध्वभावे गुदेयः क्षीरस्य च तथा दधि न ल
 भ्यंते दृष्टं यत्र कुर्यात्तद्वत्तवती जयं त्रिपिबभिक्षि यक्षीणां श्वेतं तद्वत्तमजापतिं व्याध्री
 ण संतु तं प्रादुर्ग्राहिकाः आद्वक मरीण आद्वक लिकायां नागरखंडे कथंचिद्यपि
 प्रेभ्यो न दत्तं भोजने मधुः पिंशस्तु नैव दर्शय्याः कदाचिन्मधुना विना तद्वत्पराशरस्तु
 मांसं निषेधयति यस्तु प्राणिवधं कृत्वा मांसं स्तर्पयते पितृन् सचिदांश्च दनद
 ग्धा कुर्यादंगारविग्रहं सिद्धा कुर्यादयथा किंचिद्दाल आदाता मिधति पतत्यज्ञानतः
 सापि मांसं न आद्वक तया सराव सर्वथा न्नं यदानस्या न्नदेवा मिषमाश्रयेत् ब्राह्म
 ण आश्रयं नाद्यात्तच्च आदिह तं यदि भागवतेपि न दद्यादामिषं आदेन वाद्याद्वर्मा
 नत्वं विदुः सत्यत्रैः स्वात्परा प्रीतिर्यथानयश्रुहिसया तथेति शेषः अत्र केचित् म
 त्यन्त्रं ब्रह्मणस्योत्था व्यवस्था माह यत्प्रीचंद्रोदयस्तु अक्षता गोपशुश्रूव आदे
 मांसं तथा मधु देवराच्च सतोत्यतिः कलौ पंच विवर्जयेदिति निगमोक्तेः वरा

राम
२५४

254-A

निधिपितृभ्यश्चपशपाकरणक्रियेतिकलिवर्जेषु हेमाद्रावादिपुराणात् मा
सदानं तथाप्राद्वान प्रस्थाप्यमस्तथेतुत्कारमानधर्मानकलिषुगेवर्ज्यानाह
मन्तीविण्णति हस्तारदीयेभिधानाच्च मांसविधिः कलिष्वनिरिक्तविशयः क
लोमांसनिषेधोनां च देशाचारात् व्यवस्था तथा च हस्तारदीयेप्राद्वं प्रकृत्य य
याचारप्रदेयेतमधुमासादिकतथा देशाचाराः परिग्राह्यास्तत्र देशीयजनैः अ
न्यथापत्तिनो ज्ञेयः सर्वधर्मवहिसूतत्रितियस्मिन्देशेपुरेग्रामेत्रैविद्येनगरेपिवा
योयजविहितो धर्मस्तं धर्मं न विचारयेदिति भृगुत्रैश्वर्याहुः तन्नाहोलाकाधिक
रागन्यायेन देशविशेषव्यवस्था एकपदकव्यनायोगात् निरूपितं चैतत्पितामह
चरणौ मांसमीमांसायामिति दिक् मनः संवत्सरंतु गयेन ययसायायसेन वाध्रीण
स्य मांसेन तृप्तिर्द्वादशाचार्यिकी त्रिपिबं चिद्रियक्षीणां स्वतंत हृद मजापतिं वाध्री
ण संतुलं प्राद्वयाजिकाः प्राद्वकर्मणि क्षीरादौ विशेषमाह हेमाद्रौ समंतुः पयो
दाधिधृतं चैव गवां प्राद्वेषु पावनं महिषीणां घृतं प्राद्वश्रेष्ठं न तु पयः क्वचित्
याज्ञवल्क्यः संधिन्यनिर्देशावत्सागोपयः परिवर्जयेत् श्रोष्ट्रमेकशकं सौ
णमारण्यकमथाविकं हेमाद्रौ हारीतः न वस्तुतायाः सप्तरात्रादित्येकेशरा
दित्यपरे मासेनोपेष्टुं भवतीति धर्मविदः एतद्रजोभवपरं देवलः अजाविम

हिदीर्गानुपयः आद्वेषवर्जयेत् विकारान् ययसमैव माद्विषं तु धृतं हितं
तत्रैव ब्राह्मे माद्विषं चासरं मार्गः प्राविक्तैक राफोद्वं स्रुणमौष्टं याचितं यदधि
कीरेत्यजे धृतं सगुडं मरिचाक्तं तु तथा पर्यति तं दधि दीर्गं तत्र मये तं च न द्या स्वादं
च फेनवत्त मदिषापर्वी दोपराकं ब्राह्मे आरण्यमाद्विषीक्षीरं राकं राकुं संयुतं
माध्वक्तं तु हितं चैव दद्यात्तदमृतं यतः यद्यपि याज्ञवल्केन अन्नं यदुचितं भोज्यं ते
हाक्तं विरसं स्थितं अस्त्रे हा अयि गोधूपय च गोरसं विज्रिया इति यं सुचितं दध्यादिभ्यो
ज्वमुक्तं तथापि गुडमरिचाक्तं स्पष्टं यदुचितं दोषो ज्ञेयते इति हेमाद्रिः तत्रैव ब्राह्मे का
लाशकं तं दुलीयं वास्तु कं मलकं तथा शाकमारण्यकं चैव दद्याच्छाद्वेषु नित्यराः
तं दुलीयं सूक्ष्मपत्रमिति हेमाद्रिः महाराष्ट्राणामाठ इति प्रसिद्धं आरण्यकं फाजी चंबो
दि तत्रैव दाडिमं मागधी चैव नागराद्री कतिं निहारी आमातकं जीरकं च कुंवरं चैव माज
येत् मागधी पिप्पली नागरं सुंठी कुंवरं कुंस्तव वरं धाति गियां इति प्रसिद्धं वापवीये
अगस्त्य शिरवास्ताम्राः कथायाः सर्व एव च शिरवाः नवपलावाः प्रभासरं वडे आ
वपलावाः कोर्म तमावं राकं दं च मध्वालं रीतकं दली मध्वालः मोहलकंदः रीतकं
दली राजाल इति प्रसिद्धं अथ वडं माकंडेयपुराणे यद्योक्तो चादिना प्राप्यति ताद्य

255-A

उपार्जितं अन्यायकन्याशुक्लार्थेद्रव्यं चात्रविगर्हितं पित्रर्थमेष्टयधस्वेत्युक्तायद्यप्य
 पादतं चंदोदयेरात्रः भस्त्राणं सरसंशिरं गुयालं वद्यामचुकं तथा कृष्णं डालावुवात्ता
 ककोविदारंश्रवर्जयेत् पिय्यलीमारेचंचैव तथा वैपिंडमूलकं कृतंचलवणं सर्वव
 शांश्चविवर्जयेत् राजमायां न सराश्रकोडवानकोरदृषकान् लोहितां नृक्षनिर्घासा
 नश्राद्धकर्मणि वर्जयेत् भस्त्राणं कारमीरदेशप्रसिद्धं सरसाभिर्गुडीति माधवः तल
 सीतिष्टस्त्रीचंद्रः पालंकीपालशतिप्रसिद्धा मृचुकं जलजः शाकः समुकामिति पाठे
 रचदिरशाकशतिहेमाद्रिः मरिचान्याड्डीणीतिहेमाद्रिः राजमायाः रसराशतिप्रसिद्धाः
 कोरदृषकः वनकोडवः चंडिकां रवः पिंडालकंच तं गीरं करमांडं चनालिकं कृष्ण
 डंवदुवीजानि श्राद्धे दत्वा ब्रजत्यधः पिंडालकं महाराष्ट्रेष्टपेडरमिति प्रसिद्धं तुडीरं
 विंवीफलमिति कैदेवः करमंदं करवंदमिति प्रसिद्धं तत्रैव विंडालेष्टिष्टमाघातं
 श्राद्धे यत्ने वर्जयेत् कृष्णं डं महिषीक्षीरमांठक्यो राजसर्वपाः चराकाराजमायाश्र
 घ्नंति श्राद्धं न संशयः तदुपरारः करीरफलपुष्पाणि विंडं गं मरिचानि च जं भारि
 कासजं कीरास्यपकं वीजपरकं जं घलाह पिय्यल्याः पटोलं पिंडमूलकं मस्त्रांज
 नपुष्पं च श्राद्धे दत्वा पतत्यधः जंबुसूक्ष्मं माधवीये च तं विराति मते यावनाला
 कृष्णं श्रवर्जयेति विपश्चितः पावनाला जोरुलाः श्रत्रयानि चराकानि विहितं

निषिद्धानि तेष्वाविकल्पः अन्यथा रयामाके श्राणकैः शाकैर्नीचारे श्रप्रियंगुभिः
गाधमे श्रतिलैर्मुद्गैः मांसप्रीणयते पितृ निनि गाधमे रिक्षाभिर्मुद्गैः सतीने श्राण
कैरपीति चेद्देमाद्रौ कोर्मविधमधर्मादिविरोधः स्यात् पिष्यली मरिचादेस्तु प्रत्यक्षो
स्थनिषेधो न च द्रव्य मिश्रस्य सौवीरतिक्तैर्लवणादिभिस्तपाकसिद्धिर्मेहनीहयेस्तु त
तर्हीजयरात्ररिचादियोगात्सिद्धं प्रदेयं न तडव्यतीहेति पृथ्वीचंद्रोदयेतद्रूपराशयोक्तेः तत्रे
व दातु श्रपस्मिन्मनसोभिलाषः श्रद्धा भवेत् यत्र च दीपमाने श्राद्धेषु देयं विधिवत्तदेव
तदन्नमक्षय्यमिति ब्रवंति एतन्निषिद्धेतरविषयं चंद्रिकायां कृष्णधाम्यानि सर्वाणि
वर्जयेच्छ्राद्धकर्मणि न वर्जयेत्तिलं श्रेष्ठं वसुद्रमांस्तथैव च मात्स्ये मत्सरशान्तिष्या
वराजमाषकसंभिकाः पद्मा विल्वार्कधत्तरपारिभद्राटरुषकाः न देयाः पितृकार्ये
सुययश्चाजाचिकेतया कोद्रवोदारककपिस्यमधुकासती एता न्यधिरदेयानि
पितृभ्यः श्राद्धमिच्छति निष्यावाः वल्गा विल्वचरक्तं निषिद्धं जंबीरं रक्तचिल्वं च रा
लस्यापि फलं त्यजेदिति ब्राह्मणेः पारिभद्रेति वतरु रित्यमरः रक्तमंदार इति हेमा
द्रिः श्राद्धरुषो वासातनुष्य उदारः मधुकं ज्येष्ठीमाध्विति चंद्रिका चरकावनमुद्रा
हेमाद्रौ ब्राह्मण्डे आसना रुद्रामत्राघं पादोपहृतमेव च अमेध्ये जौगमैः स्पृष्टं श्रु
कंपर्युषितं च यत् द्विदिवन्नपरिदग्धं च तथेवाग्रावलेहितं शार्कराकीटपाषाणैः

256-A

कैशोर्ध्वायुष्युयतं पिण्याकं मयितं चैव तया तिलवणं च यत् सिद्धाः कृताश्च ये
 भक्ताः प्रत्यक्षलवणीकृताः वाससाचावधत्तानि वर्ज्यानि श्रद्धाः कर्मणि द्विस्विन्नं
 यत्सक्तशाकेन भक्ष्यमपि हिंजीरकादि संस्कारार्थं पुनः पच्यते तदुच्यते यत्तुलिका
 कान्तविकादिभिः पाकेन नैव भक्षणार्थं तन्न निषिद्धं अग्रावलेहितमास्वादितम्
 पूर्वं यदुचितं सदा निषेधेऽपि पुनर्वचनं अस्याश्च करभाश्च धनाचटकसक्त
 वः शाकं मांसमयुषं च सयुक्तसरमेव च यवागूः पायसं चैव यद्योन्यस्त्रेहसंयुतं
 सर्वं यदुचितं सज्यं शुक्तं चेत्यारिर्बर्जयेदिति माधवीये यमाक्तवटकोदेरपि यदु
 चितं सति निषेधार्थं चंद्रिकापदयः वर्ज्यं च विश्वामित्रः कपित्थं कुरुकं चैव नालि
 केरं च येनिकं जंक्कफलादिपक्वं च पिण्याकं तंडुलायकं हेमाद्रौ वडूत्रिंशन्मत्त
 वर्ज्यामर्ककाः आर्दे राजमाषास्तथैव च कर्मटाः लंकाः पैठीनसिः हंता कनलिकायो
 तकुसुंभारं तक्तानि शाकानां मभक्ष्या इति योनेरिति प्रसिद्धं कुसुंभं करंड इति महा
 रथप्रसिद्धं मार्कंडेये वर्ज्याश्चाभिषवानित्यंशतपुष्यागवेधुकोः जंवीरकं फ
 लं वर्ज्यं कोविदारश्च नित्यशः अमिषवः शुक्लमिति चंद्रिकाः संधामकमि
 ति यदुच्यते चंद्रः शतपुष्यासोम इति प्रसिद्धं शाय्यायनः मारिचं नालिका चैव रक्ता
 माच कलं चिका असुरान्मिदं सर्वं पितृणां नोपतिष्ठते मारिचं मध्यदेशं मरुता

मि.सि.
२५७

257

इतिमायाष्टे चराजरिरातिप्रसिद्धः कलंबिकावे एवाकृतिपत्रा तत्रैव गंधारिकाप
टोलानिप्राद्धकर्मणिगवर्जयेत् गंधारिकातंडलायतिचंद्रका जवासारव्याडरलिभे
तिकैदेवः भारते हिं गंडव्येष्टराकेष्ट अलाबुलसनंतया ककुंडका लालाबुनिस्त
संलवणमेवच पुनरालाबुगुह्यामभयालाबुनिषेधार्थमिति पृथ्वीचंद्रः कंकुंड
कंवबुलधजाकं तत्रैव कुस्तंस्केलिंगोत्थवर्जयेदमृतेतसं हमाद्रौ ब्राह्मे वताकं
पंचशिवंचलोपशानिफलानिचकालिंगरत्नचवीणाकंधतवारकं कपालंकाचमा
रीचेकरंजंयिंडमूलकं गजने बुक्तिकांचैवगाजरंजीवकं तथा संताकंसेतं कंडरांमे
तहंताकं कुंभांडचविचर्जयेत् इति देवलोकेः तेन कृष्णमास्यानिषेध इति चेद्रिकामा
थर्वो वस्तुतस्तु सदासेतनिषेधात्पुनः प्राद्वे निषेधोव्यर्थः तेन भक्ष्यस्य कृष्णसंता
कस्यापि निषिधार्थमिति वयं कंडराकपिकछः कुंभांडसंतालाबुः पंचशिवंचलभम
सूरराजमाधमठः कुलम्याः लोमशानिकपिम्य निरक्तचारलोहितचारफलं वीणा
कं तीर्थकृष्णकं दीधतैचारकंचिरस्थितचारफलं वारोलीनिप्रसिद्धं कपालं नारि
केलेकाचं ककुबुधफलं मारीचं आमरिचानि गजनेपलांडुभेदः यस्मिन्दिशि
प्रसिद्धः नतगाजरं तस्य पृथग्गुत्तैः हेमाद्रिणा त गजनेगाजरमेवोक्तं तच्चि

राम
२५७

257-A

त्वं वृत्तिकाचिरकालमुत्कृष्टपानकं चंद्रिकायां सारीतः नवटल्लक्षोडुवं रशेलुदाधिस्य
 नीयमानसिंगानिभक्षयेत् रोलः श्लेष्मातकः भोकरसंतः दधिस्य कपिस्य स्मृति
 सारे क्षीरे तुल्यवर्णं दत्वा उद्विष्टे पिचय दूतं स्नानं रजकतीर्थे बुतामे गव्यं सुरासमंगोड
 निबंधं स्मृति सागरे स्मृतिना लिके रोदकं कां स्येताम्रपात्रे स्थितं मधु गव्यं च ताम्रपा
 त्रस्थं मधु तुल्यं घृतं विना ताम्रपात्रे कृतं मांसं यच्च गव्यं घृतं नरत् प्राप्तिं तु गव्यं मांसं
 दधिमद्यं पयो रजः इव्यांतरयुतं मांसं ययसा संयुतं दधि पयो तु हृतसारं च ताम्रपात्रे न दु
 ष्यति अथ जलं पात्रवत्पः सुचि गोतृ प्रित्तं तोय प्रकृतिस्थं महीगतं स्रज्जं जल
 मुक्तं हेमाद्रौ वा स्रोत्रो उर्गंधिके निलंक्षारं पकिलं पल्लोदकं न भवेद्यत्र गोतृ प्रित्तं
 यच्च म्रुपातु तं यत्र सर्वार्थं मुत्सृष्टं यच्च भोज्यनिपानजं तद्वर्ज्यं सलिलं तान सदेष्टुम्
 इकमं गि निपानो जलाशयः शुद्धितत्त्वै रशवः स्नानसा च मनं दानं देवता पितृ तर्पणं
 म्रुद्रोक्तैर्न कुर्वीत तथा मेघादि निःसृतैः हेमाद्रा वादित्यपुराणे चिरयर्दुष्टितं वा पिष्ट
 इत्यष्टमथापि वा जाह्नवाः स्नानदानादौ पुनात्येव सदापयः कात्यायनः प्रायोनिशि
 नगद्वीपास्यपिवेच्च कदाचन उधृत्याग्निमुपयजेत् धाम्ना धाम्ना रतीरयेत् रजो दोषा तु
 प्रागुक्तं नारदीये त्यजेत् पृथितं युष्यं त्यजेत् पृथितं जलं न त्यजेत् जाह्नवी तोयं तुलसी
 पक्षविल्वकं अन्यान्यपि पृथी चंद्रोदये मानये मध्याह्नः खड्गपात्रं च तथा नेपालकं

बलः शैव्यदर्भास्तिलागावोदोहित्रश्चाष्टमः स्मृतः पापं कृत्स्नमित्याहुः स्तस्य संता
प्रकारिणः प्रष्टावेनेयतस्तस्मात्कृतया इति विष्कृताः त्रास्ते यतिः सिंदः करणारा
जतं पात्रमेव च दौहित्रं कुतपः कालश्चागः कृष्णजिनंतथा रास्तीनीति शेषः दौहित्र
खड्गपात्रमिति कल्पतरुः अथ राके स्मृत्यंतरम् अपत्यं दुहितुश्चैव खड्गपात्रं तथैव च घ
तंच कपिलाया गोर्दोहित्रमिति कीर्तितं ब्रह्मांडे अमावास्या गते सोमे यातु रवादिगोसु
रांतस्यागोर्दोहित्रेन क्षीरतदौहित्रमुदाहृतं स्मृतिसंगेहे उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वांतं च म
तक र्पटं प्राद्वे सप्रपवित्राणि दौहित्रं कुतयास्तिलाः उच्छिष्टं वत्सस्य दुग्धे मित्यर्थः शि
वनिर्माल्यं गेगोदकं वांतं मधु मृतक र्पटं तसरीयदं तिलेषु प्रापस्तं वः अटकाये समुत्प
न्ना ग्राह्य फलितास्तथा तैवै प्राद्वे य वित्राः स्युस्तिलाक्ते च तिलास्तिलाः अभावे ग्रा
म्याः गौराः कृष्णास्तथा राण्यास्तथैव त्रिविधास्तिला इति ब्राह्मणेः अथ वर्ज्यानि चंद्रिका
योयमः कुक्कुटो विडुरा हस्त्रका कश्चाप विडालकः ह्यवलीपतिश्च ह्यवलः खंडो वीरारज
स्वला एते त्रिधाः काले वै वर्जनीयाः प्रयत्नतः खजः काणः कुरिणः श्रुज्जी दातुः
प्रेष्य कारस्तथान्यन्या गोप्यति रिक्तो गस्त्यमप्ययनयेत्ततः चायवीये अत्र
पर्येयुरेते त्रयदि वै ह्य क मयोः उत्तरं च प्रधानार्थं संस्कारस्तथा यदि स्मृतः
समेतः चंडालादि वीक्षितमन्नमभोज्यमन्यत्र न इत्स्म हेराण्यादकस्य रीति १

तत्रैवजमदग्निः श्रद्धवत्योयक क्वांज्यः यावमान्यस्तरत्समाः सूतेनवा
 रिण्यदभैरन्नदोषमयानुदन् चंद्रोदयेपादुकोपानहौ छत्रचित्ररक्तांचरंतथा
 रक्तपुष्पचर्मजारंश्रद्धभूतोविचर्जयेत् निर्णयदीपे घंटानिनादोह्यसन्नि
 धानं शंखकंशखौ कदलीदलंच उन्मत्तजात्यर्कहृपारिजानि श्राद्धस्यवेगुग्रायक
 राण्यमृनि हृपारिजमहिषीभीरादि अथश्राद्धदिनकृत्यं चंद्रोदयेउशानाः गोमये
 दक्षैर्भूमिभाजनंरैचि कुर्यात् पराशरः कांजिकंदधितक्रंचधत्तंचाश्रतमेवच
 पूर्वमेवनदातव्यमेकोदिष्टेयपार्वतो हेमाद्रौपराशरः गृहग्निशिश्रुदेवानांघ्र
 स्तचारितपस्विना तावन्नदीयते किंचिद्वावत्पिंडान्नानिचयेत् कौर्मितिलानवकि
 रैत्रत्रसर्वतोबंधयेदजान् तत्रैवदेवलः तथैवयंजितोदात्ताश्रातः स्नात्वा सहंवरः
 आरभेत नवैः पात्रैरन्नारंभंचवांधवैः श्रात्मनेयदात्स्यमेवपाकः कार्यः अश
 नोपत्या तदभावे ततस्तानिययात्वाससाताजनकनंदिनीतिपात्रा लिंगादिति
 हेमाद्रिः श्राद्धदीपकालिकायाश्चलापनः समानप्रवरैर्भिजैः सायेंडैश्चगुणा
 न्वितै कृत्येयकारिभिश्चैवपाककार्यं प्रशस्यते व्यासः गृहगार्ग्यैवसुस्नानोपा
 कं कुर्यात्प्रयत्नतः निष्पन्नेषु चपाकेषु पुनः स्नानं समाचरेत् पृथ्वीचंद्रोदयेत्रा

नि.सिं.
२५५

259

ते रजस्वलां च पारवंशं पुंश्रुलीपतितां तथा न्यजेच्छूद्रां तथा वंध्यां विधवां च
न्यगोत्रजा वंगकर्णी च तर्थाहः स्नाता मयिरजस्वलां वर्जयेच्छ्राश्रया कोऽर्थममा
त पितृवंशजां मातृ पितृवंशजभिन्नां न्यजेदित्यर्थः स्मृतिसारे नपाकं का
रयेत्पुत्रीमन्यां चाप्यन्यगोत्रजं मृतवंध्यां च गर्भघ्नीं गर्भाणि चैव दुर्भरं वा
कभंडानि तु हेमाद्रौ नागरवंशे सौवर्णन्यायरो व्याणि कां स्यताम्रा इवानि च
मार्तिका न्यपि भव्यानि नृतनानि दृढानि च तत्रैवादिपुत्राणे यचेदज्ञानि स
स्नातः पात्रेषु चिषु स्वयं स्वर्णदिधातुजातेषु मन्मथेषु पिबार्द्रिजः अर्घ्येषु पि
लिप्तेषु तथा नृपहतेषु च नायसेषु नभिन्नेषु दूषितेषु पिबार्द्रिचिन् सर्वे कृतोप
योगेषु मन्मथेषु नलकचित् तापुपुराणे न कदाचित्पचेदन्नमयस्थालीषु ये
न कं श्रयसो दर्शनादेव पितरो विद्वन्ति हि कालाय संचिरो वेषाणि दंति पि
तृकर्मणि फलानां चैव शाकानां घेदनाथानि यानि तु महान सै पिरा स्वाणि
तेषां मेव हि संनिधिः इत्यनेनैतत्पर्यायं न दर्शनं तत्रैव यच्च मानस्तु भण्डेषु भ
क्त्या ता म्रमयेषु च समुद्धरति वैधोरात्पितृन्दुः खमहा र्णवात् तैजसानां मभा
वेतु पिठरे मन्मथेपि न वैश्रच्यो प्रकुर्की तथा कं पिजर्षमादरात् तत्रैवादिपुत्राणे

राम
२५५

959-A

पक्वान्नस्यायनार्थेन रास्येतेदासजान्यपि दद्याद्दीन्याधिकार्थाणि यज्ञिये रपिदा
 रुभिः यमः विवाहे प्रेतकार्ये च माता पित्रोः क्षये हनि नवभंडानि कुर्वीत यज्ञका
 ले विरोधतः अथ पावाग्निः हेमाद्रौ पुजायतिः श्रौयासनेनाक्षसिद्धिरग्नौ करणमे
 व च पृथ्वी चंद्रोदये गिराः शालाग्नौ तु पचेदन्नं लौकिके वापि नित्यराः यस्मिन्नेग्नौ
 पचेदन्नं तस्मिन्नेग्नौ विधीयते मनुः वैवाहिके ग्नौ कुर्वीत गृह्यं कर्म यथा विधि प
 चयज्ञविधानं च पक्विं चान्याहिकी द्विजः आहस्य गृह्यं चोक्तमपराकै एण अत्र वि
 रोधः कर्तव्यं प्रदीये शान्ते हीमंतु निवर्त्य समुह्य कृता शानात् रोधं महान संस्कृत्वा तज
 पाकं समाचरेत् पाकांते ग्निं तमाहृत्य गृह्याग्नौ तु पुनः क्षिपेत् ततोऽस्मिन्वाश्रयावा
 दि कर्म कुर्यादन्तर्दितः तदभावे लौकिके ततः पचेयुरत्नानि निर्वापातनं रंशनेः वै
 वाहिके ग्नावन्यत्र लौकिके वापि संयत इति कालिकायां संग्रहोक्तेः पित्रार्थं निर्वापं
 कृत्वेत्यर्थः अतएव हेमाद्रौ वायुपुराणं पित्रर्थं निर्वयेद्गमौ कर्त्तव्यं वादभं संस्कृते इ
 ति तत्रैव पापमात्मयोः अग्निमात्रिर्वयेत्येजं चरुं चा समपुष्टिभिः पितृभ्यो नि
 र्वापामीति सर्वदक्षिणतो न्यसेत् चरुग्रहणा न्नराकादा विनिर्देमादिः पिंडपितृ
 यज्ञार्थपाक विरायोऽं निर्वाय इति तु युक्तं अयं चेत्तरेषामग्निः अप्राशलायनं तु
 गुरुणो भिस्तु अन्यतो वापक्षीयमाणं अमावास्यायां रांति कर्म कुर्वीरति

त्यादिस्त्रेण पचनाग्ने स्यागमत्का इहेवायमितरो जातवेदा इत्यर्थं च न शमी मयी
 भासराणीभ्यामग्निं मयेत्स यचनाग्निर्भवतीति स्त्रेव तौ चोक्तेः पचनाग्नावेव पाकः
 बोधायनेनाप्युक्तं आह तपचनाग्निर्भोपासने वाभिप्रव्रजंतीति स्मार्त्तौ गौपाकस्त्व
 न्यशारवाविषयः इति चेत्तत्र वस्तुतस्तु पूर्वोक्तस्य सर्वाधानि विषयत्वमुक्तं शिष्टा
 चारेपिन पचनोदश्यते अं विलापामपि सर्वाधान पक्षे वै स देवं प्राद्वं च पचने कु
 र्यादप्यथोपासने इत्युक्तं अग्नौ करणं प्रयोगपारिजाताभिरादिकादिसर्वं प्राद्वं
 पिंडं पितृयज्ञव्यतिषंगोक्तेर्लौकिके पचते वा पाके कृतेपि गृह्याग्नौ पक्वचरुणौ
 वकार्य इति प्रातिभाति मदनरत्नेष्वेवं विधुरोहित्राग्न्यादेस्तुष्टौ दिवि विधानेना
 ग्निसंयादनमित्युक्तं हरिहरभाष्ये इति पाकाग्निः चंद्रिकायां मार्कंडेयः अरुः व
 स्तुमुद्रंतेषु गतेषु प्रपतान् द्विजान् प्रत्येकं प्रेषयेत्तेषां प्रदायामलोदकं देवलः
 ततोऽग्निं हस्ते मध्याह्ने कृत्तरो मनस्वान् द्विजान् अभिगम्य यथान्यायं प्रयच्छेत्त
 धावनं तैलमभ्यजनं स्नानं स्नानीयं च यथाविधं पात्रैरौदुंबरैर्दद्यादप्यदेविक
 सर्वकं औदुंबरैः ताम्रमयेः अत्र सोरामलकस्नानादिनिषिद्धं निष्यादिमति
 रिक्तविषयमिति हेमाद्रिर्माधवश्च यत्तु चंद्रिकायां प्रचेताः तैलमुद्रंते स्नानं द
 द्यात्पूर्वोद्गृह्यवचनं प्राद्वं भुक्भ्यो नखरश्मश्च ददनं तु नकारयेदिति तन्निषिद्धं

260 - A

वसुएवच नग्नः काष्ठायासाः स्यान्नग्नश्चाद्रपटस्मृतः नग्नोऽङ्गुण ६४

निष्ठादिविषयं निविद्धानिष्ठादिनुप्रागुक्तं अभ्यागतकलिकायां कात्यायनः
 तैलमुद्वर्तनं देयं ब्राह्मणेभ्यः प्रयत्नतः तैरभ्यग्नकर्मैवोवर्ज्यं कालनचिंतयेत्
 अपरार्कप्रचेताः स्नातोधिकारीभवति देवेपि अत्रैव कर्मणि आह कृत्तुं वासाः स्या
 न्मोनी च विजितेन्द्रियः हेमाद्रौ जावत्तः तां वलं दंतकाष्ठे च स्नेहस्तानमभोजनं
 रत्येषधपरात्तानि आह कर्त्ता विवर्जयेत् वर्षे विशेषमाह तत्रैव भृगुः नग्नः स्या
 न्नलवकासानग्नः कोपीनके वलः द्विकषोऽनुत्तरीयश्च अत्र कर्त्तव्यं वसुः स्यान्नग्नो
 रक्तपटः स्मृतः नग्नोऽङ्गुण ६४ वसुः स्यान्नग्नः स्मृतपटस्तथा ततः कर्त्ता ऊर्ध्वं पुंडुं
 कर्त्तव्यं जपहोमेनयादाने स्वाध्याये पितृकर्मणि तत्सर्वं नश्यति क्षिप्रं मर्त्ये
 देविना कृतमिति हेमाद्रौ बुक्तेः यज्ञोदानं जपो होमः स्वाध्यायः पितृकर्म च
 कथा भवति विप्रेन्द्रा ऊर्ध्वं पुंडुं विना कृतमिति हस्तनारदीयात् ऊर्ध्वं च हस्तकं
 कर्त्ता देवेपि अत्रैव कर्मणि पराशरोक्तेः अन्ये तु ऊर्ध्वं पुंडुं द्विजातीनां मग्निहोत्रं
 समो विधिः आह काले तसंप्राप्ते कर्त्ता भोक्ता च तत्प्रजेत वामहस्ते च दक्षिणहस्ते रंग
 चलिं तथा हस्तौ तिलकं दृष्ट्वा निराशाः पितरोगता इति संग्रहोक्तेः ऊर्ध्वं पुंडुं
 त्रिपुंडुं वा चंद्राकारमपि वा आह कर्त्ता न कुर्वीत यावत्पिंडानि वीयेदिति वि
 श्वप्रकारेव च नाश्चनकार्यमित्याहुः अत्राचारा ह्यवस्था अत्राचारा हस्तनारदीये

ऊर्ध्वपुंड्रचतुलसीश्राद्धेनेधंति केचिन्नेति ऊर्ध्वपुंड्रविधिचिप्रविषयः निषेधः
 कर्तृपर इति पृथीचंद्रः यत्तस्मादौ देवसः ललाटे पुंड्रकं दृष्ट्वा स्कंधे मातुं तथैव
 च निषेराशाः पितरौ यांति दृष्ट्वा च तत्र लीयति तद्धंधेन त्रिपुंड्रविषयं प्राक् पिंडदान
 द्रंधाधैर्नालं कुर्यात्स्वविग्रहमित्याश्रुलायनोक्तेः पुंड्रवर्त्तुलमित्यराकेति मदनरत्ने
 च पृथीचंद्रस्तु पुंड्रत्रिपुंड्र ऊर्ध्वचतिलकं कुर्यात् न कुर्याद् द्वे त्रिपुंड्रकं निराशाः पितरो
 यांति दृष्ट्वा चैव पुंड्रकं मिति स द्वयराशोक्तेः भोक्तृस्तिर्धग्लयो भवत्येव वर्जयेतिल
 केभाले श्राद्धकाले च सर्वदा तिर्यग्य ऊर्ध्वपुंड्रवाधारयेत् प्रयत्नत इति व्याकैरि
 त्याह पृथीचंद्रोदये त्रासे सदर्थेण तु हस्तेन यः कुर्यात्तिलंबुकः अचम्य स वि
 मुध्येत दर्भेत्यागेन चैव हि श्राद्धारंभकालमाह परार्कगोतमः श्राद्धं भक्तये श्रा
 द्धं कुर्यादौरोहिणंबुधः विधिज्ञो विधिमास्यापरोहिणं तु न लघयेत् एतदेकोद्विष्ट
 पार्वणे तु तं मास्ये ऊर्ध्वमूर्त्तौ कृतपाद्यमूर्त्तं चतुष्टयं मूर्त्तं पंचके होतत्त्वं
 धाभवनमिष्यते तथा मध्याह्ने सर्वदा यस्मान्मदी भवति भास्करः तस्मादनंत
 फलदस्तत्रारंभो विरिष्य अथ श्राद्धपरिभाषा चंद्रिकायां कात्यायनः दक्षिणं पा
 तयेज्जानु देवान् पारिचरन्सदा पातयेदितरं जानु दर्भैः पितृणां द्विगणस्तथा
 पृथी चंद्रोदये शंखः श्रावाह नार्घ्यं संकल्पे पिंडदानाच्च दानयोः पिंडाभ्यंजन

261-A

काले लुप्तये वांजनकर्मणि अक्षय्यासनयोः पाद्योगोत्रं नाम प्रकाशयेत् तत्रैव परिरिति
 वे क्षणे च पिंडदाने च गंधधूपार्क्षये तथा संकल्पे वासने दीपे अंजनाभ्याजने तथा
 अन्नार्घ्यदानाद्यंतेषु गोत्रं नाम च कीर्तयेत् कालिकायां संग्रहे आसनावाहने पाद्ये
 अन्नदाने तथैव च अक्षय्ये पिंडदाने च षट् नामानि कीर्तयेत् मत्स्यः संबंध प्रथमं ब्रू
 याद्गोत्रं नाम तथैव च पश्चाद्भूयं विजानीयो क्रम एव सनातनः तत्रैव सकारेण तु व
 क्तव्यं गोत्रं सर्वत्र धीमता सकारः कृतयो ज्ञेयस्तस्माद्यज्ञेन तं वदेत् यथा कार्ष्णसंगो
 त्रेति पराशरसंगो त्रस्य ह्यद्रुस्य तु महात्मनः भिक्षोः पंचशिरवस्याहं शिष्यः परमद्या
 मि कश्चिन्नोक्षधर्मेषु प्रयोगाच्च तेन गोत्रसंगोत्रयोः पर्यायत्वाच्छाखाभेदाद्यवेत्ये
 ति श्रुत्या गीः एतद्येव सामानांतरेषामेव हेमाद्रौ हस्तप्रचेताः गोत्रं स्वरांतं सर्वं
 जगोजस्याक्षयकर्मणि गोत्रं स्तुतर्पणो प्रोक्तः एवं दत्तानमुद्यति सर्वत्रैव पितः
 प्रोक्तं पिता तर्पणकर्मणि धितुरक्षय्यकालोत्पित्रे संल्यने तथा शर्मन्त्रर्घ्यादि
 के कार्ये शर्मन्तर्पणकर्मणि शर्मणोक्षयकालोत्पितृणां दत्तमक्षय स्वरांतं
 संबुध्यंतमिति हेमोद्रिः तत्रैव चंद्रिकायां च स्मृत्यंतरे गोत्रस्य त्वपरिज्ञाने का
 रण्यं गोत्रमुच्यते यस्मादाह स्मृतिः सर्वा प्रजाः कारापसंभवाः पत्नसत्यावाह
 अध्यानाज्ञानबंधोः पुरोहितगोत्रेणाचार्यगोत्रं चेति तद्विवाहपरं नामोच्चारणे

विशेषमाह हेमाद्रौ वौ धायनः शर्मन्तं ब्राह्मणस्योक्तं वामान्तं क्षत्रियस्य तु गुप्ता
 तंचैव वैश्यस्य दासांतं मूढजन्मनः पित्रादिनामाजाने तत्रैव यथि वीर्यापिता
 वाव्यस्तपिता चानरिक्षसत् अभिधानापरिज्ञानेदिविषयपितामहः पित्रादीनां
 नाम यदा पुत्रेन ज्ञायते तदा प्रायस्तवस्तु ज्ञेयं एतदन्यथा रवापरं प्राप्नुयायना
 नां तत्तत्तत्तु ज्ञेयं यदि नामान्यविद्वान् ततपितामहप्रपितामहेति ब्रूयात् तत्कारिका
 पिनामानि चैन्न जानीयात् तत्तेत्यादि वदेक्रमात् तनेति संबंधमात्रपरं न पितृव्यादाव
 पितृयेति गोडाः श्रीगंगादांतं नाम ज्ञेयं दांतं नाम स्त्रीणां मिति पृथ्वी चंदोदयेभिलोक्तैः
 केचिद्देवीशब्दांतमाह अन्ये तु देविदा इति द्वयोः समुच्चयमाहः हेमाद्रौ नारायणाः
 विभक्तिभिस्तु यत्किंचिद्दीयते पितृदेवते तत्सर्वं सफलं ज्ञेयं विपरीतं निरर्थकं चंदि
 कास्तु त्वयं सारथो नारदीये च अक्षय्यासनयोः बह्वीदित्तीयावाहने तथा अन्नदाने
 चतुर्थी वृषोवाः संबुद्धयः स्मृताः यत्तु व्यासः चतुर्थीवासने नित्यं संकल्पे च विधी
 यते पूषमातर्पणे प्रोक्ता संबुद्धिमापरे जगुरिति अत्र शारवाभेदा व्यवस्थेति
 हेमाद्रिः हेमाद्रौ भृगुः अर्ध्यावने जने पिंडुमन्त्रं प्रत्यवनं संबुद्धिं तत्र बुद्धिं तत्र कु
 वीतशेषे बह्वी विधीयते तत्रैवामातुर्विशेषो नागरवंडे मातर्मात्रतथा मातु

262-A

रासनेकल्पनेक्षये गोत्रे गोत्रायाः प्रथमाद्याविभक्तयः हेमाद्रौ प्रभासरं वडे यज्ञोप
वीतिना कार्यं दैवं कर्म प्रदक्षिणं प्राचीना वीतिना कार्यं पितृ कर्मा प्रदक्षिणं अनुपनीत
स्त्री ऋद्धा देस्तृतीये शौचसव्यापसव्ये श्रेये तस्याप वीतस्यानीयत्वात् अयसव्यं क्रमा
द्वसं कृत्वा कश्चित्संगोत्रज इति ब्राह्मणं श्रेतिवाचस्पतिः यत्तु केचित् सदोषवी
तिनाभाव्यमितस्य पुरुषार्थत्वात् श्रीचीतकाले युपवीतांतरेणान्यत्कार्यमेवेति तत्रा
विशेषेण बाधात् जमदग्निः सूत्रस्तोत्रजयंत्यत्कापिंशध्याणं च दक्षिणं आकृतं
स्यागतं चार्घ्यं विना च परिब्रूयणं विसर्जनं सौमनस्यमासिषा प्रार्थनं तथा विप्रदक्षि
णां चैव स्वस्तिवाचनं कं विना पितृनुदिस्य कर्त्तव्यं प्राचीना वीना सदा हेमाद्रौ संग्रहे आ
दौ विप्राधिरौ चोत्तैभ्यर्चने विकिरेकृते पिंशान् न्युप्यार्चयित्वा च विसर्ज्य ब्राह्मणं
स्तथा आचामेष्टाद्व कर्त्ता च स्थानेष्टेष्टेष्टसप्तसु अर्घ्यंतयोर्द्विराचामेष्टेष्टेष्टसप्त
तसक्तत्वं तत्रैव आहारं भेषजाने च पादशौचार्चनं तयोः विकरे पिंशदाने च षट्स्वा
चमानमिच्छाते आशुलायनः दानाध्ययनदेवा वीजय होमव्रतादिकान् नक्तु
र्थाश्चादिवसे प्राग्विप्राणां विसर्जनान् एतन्नित्यचर्जमिति वोपदेवः इदं विष्णुभि
न्नदेवपरं विष्णोर्निवेदितात्रेन यष्टव्यं देवतां वरं पितृभ्यश्चापि तद्देयं तदानं त्याप
कल्पने पितृ शौचं त्रयोदयाद्वरये परमात्मनोरेतौ ध्याः पितरस्तस्य भवेति लोकाभा

गिनइति स्तोत्रादात्पितरः सर्वमनुष्याचिह्मुनाशितमश्रुतीति श्रुतेः यः श्राद्धकाले हरिभु
 क्तशेषं ददाति भक्त्या पितृदेवतानां तेनैव पिंडोक्तस्तुलासी विमिश्रानाकल्पकोटिं पितरस्तु
 त्प्राशति त्रासोक्तैश्चेति श्रीधरस्वामिन् सिंह परिचर्यादयः एतत्सर्वं निबन्धविरोधा
 त्त्रिंशत् अत्र विशेषो हेमाद्रौ विष्णुधर्मे श्राद्धाद्विस्तृतसमभ्यर्च्य न वराहजनादनं शिव
 पुराणे प्रजयित्वा शिवे भक्त्या पितृश्राद्धं प्रकल्पयेत् पूर्वनिषेधस्तु विहितभिन्नपरः ।
 तथा हेमाद्रौ देवर्चादक्षिणांगगादिः पादजान्वसमर्धसु शिरोसंजानुपादेष्टु चामांगादि
 चपैत्रके कालिकायां स्मृत्यन्तरे श्राद्धारंभे तु येदर्भाः पादशौचे विवर्जयेत् अत्र
 चैनादौ तु येदर्भा उद्धिष्टान्ते विसर्जयेत् मार्जनादौ तु येदर्भाः पिंडोत्थाने विसर्ज
 येत् उत्तानादौ तु येदर्भा दक्षिणांगान्ते विसर्जयेत् प्रार्थनादौ तु येदर्भा नमस्कारे विसर्जये
 त् ऊहमाह विष्णुः मातामहनामयो वंश्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः मंत्रो ह्येन यथान्यामं शेषा
 णामंत्रवर्जितं यथान्यायमिति यत्र वद्वचनं ताः पितृशब्दस्तत्र सर्वं पितृवाचित्वा
 न्नो ह तत्रापि भुंक्तं पितर इत्यत्रोद्भाव सर्वं पितृवाचित्वे उत्तरं मंत्रद्वयवैयर्थ्यात्
 वद्वचनं तु नो ह्यने प्रकृतावसमर्पित्वा त्यागानि ति वत् ऋगाते च नो हः तस्माद्वचं
 नो हेति निनिषेधात् एको दिष्टे ये वं प्रेतैको वृत्ते कवन्मंत्रान् हेनैका दिष्टे इति वि
 ष्णुक्तैस्तुः अत्र वद्वचनस्याप्यहो वचनात् तृध्यादौ तु विशेषं चक्ष्मा मः शेषाणा

मिति पितृव्याद्येकोदिव्ये आवाहनादिमंत्रवर्जं कार्यमिति कल्पतरुः ऊहयोग्यपितृप
 दवान्मंत्रा एव तत्र न प्रयोज्यः न तस्य न नापि पितृपदहितः प्रयोज्य इति अल्लपाणिः अर्थो त
 रं चोक्तं प्राक् वक्तुं चकारिकापि अर्थप्रदानमंत्रे तु मात्रादिपदमाचयेत् सुधंतामिति पि
 तृदो मात्रादिपदमाचयेत् मात्राद्वापि इदानीं ये च त्वामात्रान्वित्यत्र नो ह इति ह त्रिस्त
 तथा मात्राः प्राद्व्यन्तरेन कुर्यात्पिंडानुमंत्रां दशादानमुपस्थानं तद्वत्कार्यमि
 ति स्थितिः प्रवाहणमनुदेन तद्वत्प्राशनमिष्यते तथा आयेत नस्ति लोसीति उरांतस्ते
 तिर्यानि तु अनुस्यः पितृराजो जपितृ सामान्यवाचकः आपस्तवानां तु च त्पते हे मा
 द्रो मार्कंडेयः स्नातः स्नानात्समाहूता न्यागतेनार्चयेत्पृथक् कालिकायां नारदीये
 प्रायश्चित्तविशुद्धात्मा तेभ्यो नुजां प्रगृह्य च दद्याद्देवहूतं दंडार्घ्यं हिरण्यं कुरामेव च
 तत्रैव संग्रहेति विवारादिकं ज्ञात्वा संकल्प्य च यथाविधि प्राचीनो वीतिना कार्यं स
 र्वं सकल्पनादिकं संबंधं प्रथमं ब्रूयात्तमगोजेतथैव च वस्त्रादिरूपतां चापि स्वपि
 तृणां मनुजमात्रं चंद्रोदयेनारदीये आर्द्रार्घ्यं समुद्रप्राप्तान् विप्रान् भूयो निमंत्रयेत्
 आपस्तवं वस्तुपूर्वेष्टु निमंत्रां परेष्टु द्वितीयं तृतीयमा मंत्रा मित्याह ययं मयानि
 मंत्राणीया इति निवेदनरूपमाद्यं तद्विधिमाह रौतकः गृहीत्वा मुकं संजस्या मुकं गो
 त्रस्य चा मुकं प्राद्वेत्तु वैश्वदेवार्थं करणीयः क्षाणस्त्वया इत्येवं प्राद्वत्तु ब्रूयादंतथे

वदेत्तसः आद्यस्य कर्त्ता स ब्रूयात्तं प्राप्नोत भवानिति सवदेत्याप्रवानीति शतरसं प्रतिदि
जः देवौ पार्वणोदरुवा ईवौ वाचो पित्रादेरप्यनेनेव तृणीत विधिना द्विजान् ततः
कर्त्ता वदुचो नादिताग्निः पिंडपितृयज्ञे परिस्तरणा दीधमाधानां तं कुर्यात् अर्धधा नि
नोप्येवमिति प्रयोगयारिजाते परिशिष्टे च भाष्यकारमते आदिकेप्येव हत्तिका
मतेनेदं हेमाद्रौ शंभुः संमार्जितोपालिप्रेतद्वारिकुर्वीत मंडले उदकप्लवमदीच्यं स्या
दक्षिणां दक्षिणापूर्वं व्याघ्रः उत्तरे क्षतसंयुक्तान्पूर्वाग्रान् विन्यसेत्कुर्यान् दक्षिणे दक्षि
णाग्रोक्त सतिला निसेत्कुर्यान् तत्रैव वौधायनः चतुरस्रं त्रिकोणं च वर्तुलं चार्धं च
इकं कर्त्तव्यमानुष्येण ब्राह्मणादिषु मंडलं तत्रैव लौगाक्षिः हस्तद्वयमिति कार्यं
वैश्वदेविकं मंडलं तदक्षिणे चतुर्दशं पितृणां मंथिरोधने कलिकायां संग्रहेतु
प्रादेशमाजं देवानां चतुरस्रं तं मंडलं त्यत्वा षडंगुलं तस्मादक्षिणे वर्तुले तथेत्तुक्तं
यत्तस्मत्पुनरेव तस्मत्पुनरेव गतेः पांचांगुलो विप्रेजान्मात्रो महीभुजः प्रादेशमात्रो वै
श्ये च साधकः सत्तुष्टकेति रेगुर्धुप्रमाणेन व्याख्यातो देवपिशयोः चतुरस्रं व
र्तुलं च कथितं गते लक्षणं पादप्रक्षालने प्रोक्तमुपवेश्यासने द्विजान् तिष्ठंश्चेत्क्ष
लने कुर्यान्निराशाः पितरोगताश्रान् तत्समलत्वे मंडलाग्रे पृथक् ज्ञेयं तत्र गौ मये
हेमाद्रौ भृगुः अत्यंतजीर्णदेहाया वंध्यायाश्च विरोधतः आर्त्ता यानवसुताया

नगोर्गेमयमाहरेत् मात्स्ये अक्षताभिः सपुष्पाभिस्तक्षभ्यर्ज्यापसव्यवत् वि
 प्राणाक्षालयेत्यादानभिवंधापुनः पुनः प्रत्यङ्मुखः स्थितः कुर्यादिप्रपादाभिषेच
 नं तत्रैव भविष्ये प्रक्षालयेदिप्रपादान् शन्नोदेवीरितित्वा यष्टीचंद्रोदये तद्
 वशिष्ठः नक्षत्राग्रं हि हस्तस्तपाद्यं दद्यादिचक्षणः कलिकायां संग्रहे ततः प्रक्ष
 लयेत्यादौ भार्यास्त्राविति वारिणा तथा श्राद्धकाले यदा पत्नी वामे नीरप्रदा भवेत्
 आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितृणां नोपतिष्ठते तत्रैव नाधः प्रक्षालयेत्यादौ कक्षा पित्रादि
 कर्मसुपाद्यानेतरमपि दद्यादिति हेमाद्रिः तत्रैव लौगाक्षिः मंडलादुत्तरे देशे दद्या
 दावमनीयकं तत्रैव विधाय क्षालनं तेषां हिराचमनमिष्यते स्वयंचापि हिराचा
 मेदिविज्ञः श्रद्धयान्वितः हेमाद्रौ नारदीये यत्राचमनचारीणि पादप्रक्षालनोद
 कैः संग्रहेते बुधाः श्राद्धमासुरं तत्प्रचक्षते हेमाद्रौ व्यासः सव्येनैवासनं धत्वा
 दक्षिणे दक्षिणं करं व्याहृतीभिः समस्ताभिरासनेषु पवेशयेत् समाध्वमिति चै
 वोक्ता दक्षिणं जानुसंस्थान् आस्यतामिति तान् प्रपादासनं संस्थान् अपि हेमा
 द्रौ शान्ततपः द्वौ देवैर्वर्णैर्विप्रौ प्राञ्जुरवावुपवेशयेत् पित्र्ये तद्दञ्जुरवास्त्रीं प्रव
 रुचाध्वं सामगान् याजवल्क्यः द्वौ देवौ प्राक्त्रयः पित्र्ये उदगे कैंकमेव वा यत्
 हेमाद्रौ हारीतः दक्षिणं गृध्रं प्रोवाञ्जुरवान् भोजयेत् उदञ्जुरवानित्येके इति त

नैत्रायणीषविषयं प्राप्नुवन्भोजयेदुदञ्चुरवानित्येक इति तत्परिशिष्टा
त विकल्प इति हेमाद्रिः माधवीये यमः भिक्षको ब्रह्मचारी वा भोजनार्थमुपस्थि
तः उपविष्टे अनुप्राप्तः कामं तमपि भोजयेत् कोर्मि अतिथिर्घस्यनाश्नाति न तद्वाहं
प्रचक्षते विप्रनियमामाधवीये पत्रिजपाणयः सर्वे ते च मौनव्रतान्विताः उद्दिष्टादि
वसंस्पर्शवर्जयेत परस्परं तत्रासनानि पृथ्वी चंद्रोदये यमः आसनं कुतपंदद्यादितर
द्वापवित्रं हेमाद्रौ च मत्कारखंडे पितामहं घटितं हेमराजतं वा पिचासनं येन ताम्र
मयं दत्तमासनं पितृकर्मणि सर्वे दिव्यासनास्तु न हि प्रच्यवने दिवः हेमाद्रौ नाग
रखंडे अथाशकमयं पीठं प्रदेयं नोपवेशने कलिकायां संग्रहे क्षौमं डकुलं मेघा
लमाविकं दारुजं तथा तार्णीयाणी तशीचैव विष्टरादिचिन्त्यसेत अग्निदग्धान्ये
यसानि भग्नानि च विवर्जयेत् हेमाद्रौ छागलेयः पश्चाद्भागादुपक्रम्य प्राच्यां यदूर्ध्व
था भवेत् दक्षिणां संस्थिता ह्येषा पितृणां श्राद्धकर्मणि पुलस्त्यः श्रीपणी वासणी
क्षीरी जंबुकासकदंबकं सप्तमं वा कुलं पीठं पितृणां दत्तमक्षयं संग्रहे शमी चकारम
रीशोलुः कदंबो वरणस्तथा पंचासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा कारिका
द्वौ देवैः प्राप्नुवैवापि त्रेत्रीन्विष्टान् दग्धानान् चैठी नसिः कुतुयः श्राद्धवेलायां श्राद्धि
वायदि दृश्यते आश्वलायनः नीवी वा सोदशानेन स्वरक्षार्थं प्रबंधयेत् तद्वया

जव ल्वनस्तदक्षिणो कटिदेशो तिलैः सह कुशत्रयं यत्र कातीयं नीवी कार्या
 दरागुमिधो मकुक्षौ कुशैः सह तिलद्विष्ट्राङ्के पितृणां दक्षिणो पार्श्वे नियरीतात्
 दैविक इति स्मृत्यन्तरात् वामे दक्षिणे चेत्याचारात् व्यवस्थेति मदनपारिजातेऽप्य
 चार्थः प्राणायामत्रयं कृत्वा गायत्री स्मरणं तथा श्राद्धं कर्त्तव्यं स्मीति वदेत्तु विप्रैः
 वाच्यं कुरु स्रच ब्राह्मे तनस्तिलान्नदत्ते तास्मिन् विकिरेच्छाप्रदक्षिणं श्राद्धं पा
 यरया पुक्तो जपेदपस्तना इति स्मृत्यर्थसारे अपस्तना इति तिलान्चिकीर्ष्य उदीर
 तामित्यचाप्नोते पराशरः तद्विष्णोरिति मंत्रेण गायत्र्या च प्रयत्नतः प्रोक्षयेद
 न्न जातान् शुद्धं शुद्धादि शुद्धये हेमाद्रौ ब्रह्मांडे श्राद्धं भूमौ गायत्र्या च जपेत् देव
 ताभ्यः पितृभ्यः अमहायोगिभ्यश्च नमः स्वाहायै स्वाधायै नित्यमेव नमो नमः
 आदिमध्यावसानेषु त्रिरात्रं जपेद्बुधः पितरः क्षिप्रमायां तिराक्षसाः प्रद्वेति च
 तत्रैव स्कादे तिलारक्षत्वरान् दर्भारक्षतिराक्षसान् पद्मि वै श्रात्रियोरक्षेदतिथिः
 सर्वरक्षकः वसिष्ठः शुद्धवतीभिः कुष्मांडीभिः पावमानीभिः श्रायाकादिप्रोक्षेत्
 यदेवाद्या तत्र प्रत्युपचारमाद्यंतयोरयो दद्यादित्युक्तं वृत्तौ स्मृत्यर्थसारे च हेमाद्रौ
 ब्राह्मे आसने आसने दद्यात् वामे दक्षिणे पितृ कर्मणि वामे च देवे दद्यात् दक्षि
 णे प्रचेताः आसने आसने दद्यात् तत्पाणौ कदाचन धर्मो स्मृत्यर्थमंत्रेण गृहीतु

सोऽतान्नुशान् धर्मेऽस्मिन्विशिराजाप्रतिष्ठित इति मंत्रः गालवः दर्शनादा-
यसस्तभ्यां गृहीत्वा दक्षिणे करे देवे क्षाणः क्रिया तां तु निरंगुष्ठं करंततः ॐ तथे-
ति द्विजान्ब्रूयुस्ते प्राप्नोतु भवति कनौ ब्रूयात् ततो विप्रः प्राभवानीति वैवदेत् य-
ष्टी चंद्रोदये तद्वज्रादीये यवैर्दभैश्च विश्वे वा देवानामिदमासनं दत्तेति भूयो द-
या द्वैर्देवे क्षाण इति क्षाणं तच्च वक्ष्याचमर्थ्या वा कार्यमिति स एव ततो ध्येयं कल्पयेद-
ति मन्त्रदयः शौनक जयंताभ्यामर्घ्यं रक्षितस्य देवार्चनस्योक्तेराश्रुत्वा प्रनानां देवे ध्येयानि
तेति वौषट् देवः तत्र परिशिष्टप्रयोगपरिजातविरोधात् वृद्धिप्राप्ते तु देवे ध्येयं दद्यात्
देवेभ्योऽपि पृथुकं दद्यादि हा ध्येयं श्रुतिचोदनादिति शौनकोक्तेः अप्यार्घ्यं पात्रे य-
ष्टी चंद्रोदये मात्स्यपात्रयोः पात्रं वनस्येति मयं तथा परीमयं पुनः जलजं बाष्पिक-
यौत तथा सागरसंभवं ब्राह्मे सौवर्णीतमुरो य्वा रमस्फटिकं शंखं शुक्लं यः भिन्ना-
न्यपि हि येषां ज्ञानियात्राणि पितृकर्मणि देमादौ प्रजापतिः सौवर्णीराजतं ताम्रं चाङ्ग-
मणिमयं तथा यज्ञियं चमसं वापि अर्घ्यां च पर्येदुधः अत्र विप्रैकत्वं द्वित्वं चतुष्टयादावप्य-
र्घ्यपात्रे द्वैर्देवैर्दद्यादित्युक्तं एव मानवस्तत्र तु द्वैर्देवैश्च देवैकै जातिपि ज्येष्ठैकैकं मुनयत्र-
येत्स्त्वं तदेकं विप्रपरं यात्रालाभपरं चेति देमादिः मदनरत्नैस्तु देवैकपात्रमुवेत्याह-
वद्वं चानां तु देवैर्विप्रद्वित्वे चमर्घ्यपात्रमर्घ्यं दद्यादित्युक्तं परिशिष्टे प्रयोगपरिजा-
ते च कलिकायां हारीतः दत्तमक्षय्यतां याति यद्देनार्घ्यं तु यत्स्नोतं वृद्धमनुः मन्मथं दा-

रुजं पात्रमयपात्रं च यद्भवेत् राजतं देविके कार्ये शिल्पपात्रं च वर्जयेत् पुराणा समुच्चये
 मृद्या भवेत्पात्रं पितृणां राजतं शुभं दशगुलं तु देवानां सौवर्णं शक्तिनः कृत्तः स्थापयेत्
 धर्मपात्रेण पवित्रे द्वादशे तु ये औषधीं मन्तरे कृत्वा अंगुष्ठं गुलियर्वणः स्येन काष्ठे
 न लोहेन न मृत्कृत्वा परिपत्रिके द्वेन्युज्जैतत्र कुशापरिद्वे द्वे पवित्रे विधिवत्पात्रयोश्च
 परिक्षिपेत् यज्ञपात्रैः पवित्रे स्थिति मन्त्रेण पवित्रे द्वादशे तु ये औषधीं मन्तरे कृत्वा अं
 गुष्ठं गुलियर्वणः स्येन काष्ठे न लोहेन न मृत्पात्रेन स्वादिभिः वसिष्ठः तृष्णी प्रोक्ष्य
 भसा पात्रे कुर्वा इधुं विलेततः परयेत्पात्रयुग्मं तु कृत्वा परिपत्रिके त्रिद्विपाराशरः
 पात्रद्वयमया ध्यायेत् तैजसं चैकवस्तुतः प्राञ्जुरेवामरतीर्थे न शत्रौ देव्योदकं क्षि
 पेत् यवोसीति पंचास्तत्र तृष्णी पुष्याणि च दत्तं मानवस्त्रे सुमनसः प्रक्षिप्यो
 स्रययवान् प्रक्षिप्येति यवोसीति मन्त्र पाद्यैः यवो सिधान्यराजो सिवारुणो म
 धुमिश्रतः निर्णोदः सर्वपापानां पवित्रमृद्धिभिः स्मृतराजो वा वारुणो मधुसंयु
 त इति परिशिष्टे पाठः गोभिलेन तु यवोसिसोमदेवत्य इति तिलमन्त्रोत्रं स्वाहा यु
 क्त उक्तः हेमाद्रौ यमः यवहस्ततो देवान् विज्ञाया वरुने प्रति आवाहयेदनुज्ञातो
 विष्टे देवास इत्येव तद्वयराशरः ततः सव्यकरं न्यस्य विप्रदक्षिजानुनि देवानां
 वाहयिष्ये इमिति वाचमदीरयेत् आवाहयेत्पुनस्ततो विष्टे देवास आगता विष्टे

देवाः ऋण्युतेममिति मंत्रद्वयं पठेत् आहुविशेषे विष्टे देवा नामाज्ञाने हेमाद्रौ व
हस्यतिः उत्पत्तिनामचैतेषां न विदुर्ये हि जातयः अयमुच्चारणीयसौ मंत्रः अद्वास
मन्त्रितैः आगच्छतु महाभागा विष्टे देवा महाबलाः ये यत्र विहिताः आहुसावधाना
भवन्तु ते इदं वावाहनमर्घ्यपात्रासादनात् प्राक् हेमादिणोक्तं तत्र कार्त्तिके प्राक् कार्त्तिके
तथैव तत्सूत्रात् अन्येस्तु उत्तरं षष्ठीचंद्रोदये शंखः सयवंपुष्पमादाय चरणादिशि
रोतकं अर्चते तर्पणं कर्त्तव्यं दंतरेचोदकं तथा पित्र्ये तु मूर्द्धादिपादांते पादप्रभृतिस्तु
तंदैविके एजने भवेत् शिरः प्रभृतिपादांते नमो वदति ये त्वके इति मदनरत्ने प्रचेसौ
क्तेः कलिकायां संग्रहे तिष्ठन् कृतांजलिर्भूत्वा पठेन्मंत्रो समाहितः विष्टे देवाः ऋ
ण्युतेत्यागधत्तं परंततः हेमाद्रौ ज्ञातुं कार्यः ततोर्घ्यपात्रं संपत्तिं वाचयित्वा द्विजो
त्तमान् तदग्रे चार्घ्यपात्रं तस्याहार्घ्या इति विन्यसेत् गार्ग्यः दत्त्वा हस्ते पवित्रं च कृत्वा
एजां च पादतः यादिव्या इति मंत्रेण हस्ते चर्घ्यं विनिक्षिपेत् संग्रहे विष्टे देवा इदं वा
र्घ्यमिति दानं समादिशेत् तदंते स्वाहानमः इति वाच्यं यादिव्या इति मंत्रेण स्वाहा
कारनमोक्तं कृमिति हेमाद्रौ नागरखंडात् अथ वर्णसंज्ञे लपाद्यमर्घ्यमाचमावनी
यमिति द्विजकरे नितये दित्यस्यैव त्रयमुक्तं गभस्ति स्तिः अर्घ्यं पिंडप्रदानं च स्वस्त्यक्ष
ये तथैव च गंधपुष्पादिकं सर्वं हस्ते नैव चतुदापयेत् प्रतिविप्रं यादिव्येत्याहुतिः ।

267-A

वक्षुचानां त्वनेन दत्ताध्यानुमंत्रणं ततः पात्रं दक्षिणे देवेभ्यः स्नानमसीति न्यु
 त्रमुत्तानं वा कार्यमिति गारुडे उक्ते एतदायस्तं वानां नियतमन्येषां न हेमाद्रौ
 विष्णुधर्मं गंधैः पुष्पैश्च धूपैश्च वस्त्रैश्च स्नाय्य च भस्मैः शोः अर्चयेद्वा स्नानं शक्त्या
 अदधानः समाहितः पृथ्वी चंद्रोदये मार्कंडेयः चंदना गुरु कर्पूर कुंकुमानि
 प्रदाय येन विष्णुः चंदन कुंकुम कर्पूर गुरु पद्म कन्येनुलेपनायेति व्यासः अप
 वित्रकरो गंधैर्गंधद्वारेति एजयेत् कलिकायां स्मृतिः गंधद्वारेति वै गंधमाश्र
 नेते च पुष्पकं धूरसीत्यमुता धूपं उदीप्य स्वति दीपकं पुवं वस्त्राणि मंत्रेण वसुं
 दद्यात्प्रयत्नतः आसने स्वासनं ब्रूयादध्यात्स्वर्घ्यं द्विजोत्तमैः सुगंधश्च पुष्पाणि सु
 माल्यानि सुधूपकः स ज्योतिश्चैव दीपेन स्वाघादनमिति क्रमः विप्राणां गंधेन व
 र्त्तले त्रिपुंड्रं वानध्यायं हेमाद्रौ देवलः ललाटे पुंड्रं वर्त्तलमित्यपरा कर्म दनरत्ने
 च पुंड्रं त्रिपुंड्रं वर्त्तलमर्धचंद्रं च ऊर्ध्वं च तिलकं कुर्यान्न कुर्याद्दे त्रिपुंड्रं ऊर्ध्वं च
 तिलकं कुर्यान्न कुर्याद्दे त्रिपुंड्रं ऊर्ध्वं च तिलकं कुर्याद्देवोपि ज्येष्ठं कर्मणि नि
 राशाः पितरो यांति दृष्ट्वा चैव त्रिपुंड्रं कर्मणि त्रिपुंड्रं पराशरोक्तेः वर्जयेत्तिलकं भा
 लेष्वाह काले च सर्वदातिर्यग्यध्वं पुंड्रं वा धारयेत्प्रयत्नतः इति व्यासोक्तेरिति
 x4 पुंड्रं दृष्ट्वा स्कंधे मालां तथैव च निराशाः पितरो यांति दृष्ट्वा च त्रिपुंड्रं पतिं ५५

४३

यत्तु वहन्नारदीये ऊर्ध्वपुंड्रं चतुलसीश्राद्धेनेधंति किंचनेति तत्कर्मपरं हेमाद्रौ
ब्राह्मे पतिके मृगनाभिचुनारक्तचंदनं कालेयकं तृग्रगंधं तुरुष्कं चापि न
येत् कस्तूर्यो विकल्प इति हेमाद्रिः वदशातातपः पवित्रं तु करे कृत्वा यः समा
लभेद्विजान राक्षसानां भवेच्छ्राद्धं निराशैः पितृभिर्गतेः पुष्पं तु ब्राह्मे जातीचंप
कलोधांश्च मल्लिकाबाणवर्वरी कृताशोकादरूचं चतुलसीशतपत्रकं कुज्रकं
तगरंचैव भृंगमारण्यकेतकी पृथिकामतिमुक्तं च श्राद्धे योग्यानि भोद्विजाः
कमलं कुसुमं दं पंच पुंडरीकं त्वयत्नतः इंदीवरं कोकनदं कङ्कारं च निवेदयेत् हेमा
द्रौ वयुभविष्ययोः कुमारैः किसलयैर्घृणैर्वृक्षैः कुरैरपि संयोजनीयाः पितरः श्रे
यः कामेन सर्वदा स्तुतं दे जातिश्रसर्वादातव्यामल्लिकाश्वेतपृथिकाजलोद्भू
वानिसर्वाणि कुसुमनिचंचपकं तत्रैव सप्तद्वयमनुः न नियुक्तः शिखावर्जं माल्यं
शिरसिधारयेत् वर्ज्यानि पृथ्वीचेद्रोदये भविष्ये केतवो चतुलसीपत्रं चित्त्वप
त्रं च वर्जयेत् द्रोणं च करवीरं च धत्तरं किंशुकं तथा माधवीये स्मृत्यर्थं सार्व
तुलसीनिषिद्धा तुलसीनिषिद्धः निर्माल इति हेमाद्रिः पिंडपरः तुलसीगंधमा
घ्राय पितरस्तृप्तमानसाः प्रयाति गरुडा रुढास्तत्पदं च क्रूपाणि न इति प्रयोगाया
रिजाने पाशोक्तेति वोपदेवः तद्वपराशरः न जानी कुसुमेर्विद्वान्चित्त्वपत्रे

राम
२६८

अनार्चयेत् जयादिकुसुमं किं रीतिरूपिका सकुं टिका पुष्पाणि वर्जनीयानि प्रा
 क्त कर्मणि नित्यशः हेमाद्रेशं रविः उग्रगंधी न्यगंधी निचेत्यह्नौ इवानि च पुष्पा
 णि वर्जनीयानि रत्नवर्णानि यानि च जलोद्भवानि देयानि रत्नान्यपि विशेषतः अं
 गिराः न जानी कुसुमानि दद्यान्न कदलीपत्रमिति जात्या विकल्प इति हेमाद्रि निधि
 धः पिंडविषयः कुंदं शंभौ च नो दद्यात्तौ नम्रंगरुडध्वजे पिंडे जानी च नो दद्याद्दद्याद्देवीम
 केणानार्चयेदिति हृदि पातवल्क्योक्तेरिति वोपदेवः स्मृतिसारे अगस्त्यभंगराजं
 च तलसीरातपूजिका चंपकं तिलपुष्पं च षडेते पितृ कलभाः केतकी करवीरं च व
 कुलं कुंदं केतया पाटलां चैव जानी च प्राद्वेयत्वेन वर्जयेत् केचिपिंडे पितृ लसीमा
 रुः पितृ पिंडार्चनं प्राद्वेयैः कृतं तलसीदलैः प्रीणिताः पितरस्तेन यावच्चंद्रार्कमे
 दिनीति मार्कंडेयोक्तेः धूपस्तत्रैव विष्णुः धर्ममधूपस्तं गुग्गुलुं दयस्तथा च दनसार
 जः आगरुश्च सकर्षरक्त रक्ताचकृतं येव च विष्णुः घृतमधुपुक्तं गुग्गुलुं श्रीरवं
 देवदारुं सरलादि दद्यादिति तत्रैव देवलः ये हि प्रणयं गजाध्रुपा हस्ता वाताहता अहता
 अये न ते प्राद्वेयि योक्तव्या ये च केचो गंधयः घृतं न केवलं दद्याद्दुष्टं वा तृणं गुग्गु
 लुं दयमाह विष्णुः घृतेन दीपो दानव्यस्तिलोत्तैलेन वा पुनः वसामेदाद्बंदीये प्रयत्ने
 न विवर्जयेत् वस्तुनास्ते कोशे यं भोमे कार्यं संडकूलमहंतं तथा प्राद्वेयेनानियोदद्या

त्कामानाप्रोतिचोत्तमान् हेमाद्रौ ब्रह्मवैवर्ते यतोपवीतदानव्यं च स्वाभावे विज्ञानता
 पितृभ्यो वसुदानेन सफलं तेनास्मिन्नेव तत्रैव याये निष्कृत्यो वा यथाशक्ति वस्त्रा
 भावे प्रदीयते अन्यान्यपि देयानि तत्रैव कालिकापुराणे धात्वादिनिर्मितारम्यादीपि
 काः श्राद्धकर्मणि पितृभ्यो दद्यात्समवेद्भाजिनं श्रियः यो धत्तपदानपात्रं त्रिपात्रमारा
 त्रिकस्य च दद्यात्पितृभ्यः प्रयत्नस्तस्य स्वर्गोक्षयागतिः विष्णुधर्मयः कंचुकं तपो
 मूर्ध्नि पितृभ्यः प्रतिपादयेत् ज्वरोद्भवादिनिदुःखानि सकदाचि न पश्यति स्त्रीणां श्रा
 द्धे तु सिंहदंष्ट्राश्राद्धात्तत्काले च निमंजिताभ्यः स्त्रीभ्यो येनेत्युक्तं सौभाग्यसंयुताः हेमाद्रौ
 श्रादित्यपुराणे नक्षत्रमवर्णादातव्यं नापि कार्यासंभवं पितृभ्यो नापि मलिनं नो
 पभुक्तं कदाचन न हि द्रितं नापदर्शनघोतं कारुण्यं च कार्यासंनिधेः धो न्यसंभ
 वे तत्रैव पितृभ्यो वसुदानेन सफलं तेनास्मिन्नेव तत्रैव याये निष्कृत्यो वा यथाशक्ति वस्त्रा
 भावे प्रदीयते अन्यान्यपि देयानि तत्रैव कालिकापुराणे धात्वादिनिर्मितारम्यादीपि
 काः श्राद्धकर्मणि पितृभ्यो दद्यात्समवेद्भाजिनं श्रियः यो धत्तपदानपात्रं त्रिपात्रमारा
 त्रिकस्य च दद्यात्पितृभ्यः प्रयत्नस्तस्य स्वर्गोक्षयागतिः विष्णुधर्मयः कंचुकं तपो
 मूर्ध्नि पितृभ्यः प्रतिपादयेत् ज्वरोद्भवादिनिदुःखानि सकदाचि न पश्यति स्त्रीणां श्रा
 द्धे तु सिंहदंष्ट्राश्राद्धात्तत्काले च निमंजिताभ्यः स्त्रीभ्यो येनेत्युक्तं सौभाग्यसंयुताः हेमाद्रौ
 श्रादित्यपुराणे नक्षत्रमवर्णादातव्यं नापि कार्यासंभवं पितृभ्यो नापि मलिनं नो
 पभुक्तं कदाचन न हि द्रितं नापदर्शनघोतं कारुण्यं च कार्यासंनिधेः धो न्यसंभ
 वे तत्रैव पितृभ्यो वसुदानेन सफलं तेनास्मिन्नेव तत्रैव याये निष्कृत्यो वा यथाशक्ति वस्त्रा
 भावे प्रदीयते अन्यान्यपि देयानि तत्रैव कालिकापुराणे धात्वादिनिर्मितारम्यादीपि
 काः श्राद्धकर्मणि पितृभ्यो दद्यात्समवेद्भाजिनं श्रियः यो धत्तपदानपात्रं त्रिपात्रमारा
 त्रिकस्य च दद्यात्पितृभ्यः प्रयत्नस्तस्य स्वर्गोक्षयागतिः विष्णुधर्मयः कंचुकं तपो
 मूर्ध्नि पितृभ्यः प्रतिपादयेत् ज्वरोद्भवादिनिदुःखानि सकदाचि न पश्यति स्त्रीणां श्रा
 द्धे तु सिंहदंष्ट्राश्राद्धात्तत्काले च निमंजिताभ्यः स्त्रीभ्यो येनेत्युक्तं सौभाग्यसंयुताः हेमाद्रौ
 श्रादित्यपुराणे नक्षत्रमवर्णादातव्यं नापि कार्यासंभवं पितृभ्यो नापि मलिनं नो
 पभुक्तं कदाचन न हि द्रितं नापदर्शनघोतं कारुण्यं च कार्यासंनिधेः धो न्यसंभ

त्रैलोक्यं संस्कृतं गंधास्तं चूलं दीपमाचामरे पितृभ्यो यः प्रयच्छेत् त्रिदशुलोकं
 स गच्छति सौरपुराणे चामरे तालवृक्षं तं मेघचक्षेत्रं च दक्षिणं दत्त्वा पितृभ्यो मे
 नानिभूमिपालो भवेदिह तत्रैव वने दिपुराणे अलंकाराः प्रदातव्या यथा प्रा
 न्तिहिरगमयाः केयूरहारकटकमुद्रिकाकुंडलादयः स्त्रीप्राद्वेषप्रदेयाः स्फुरलं
 कारास्तथेष्टितां मंजीरमेखलादामकर्णिकाकंकाणादयः तथा आदर्शव्यज
 नधत्रशयनासनपादुकाः मनोज्ञाः पटवासोम्रसुगंधोष्णसुख्यः अंगारधा
 निकाः शित्तियोगटाश्च पृष्ठयः कटिस्त्राणि रौप्याणि मेखलाश्चैव कंबलाः क
 र्पूरादेः श्रभांशानि तांबूलापतनं तथा भोजनाधारपत्राणि पतद्भासास्तथैव च
 तयां जनशालीकश्रक्केरानां च प्रसाधनं रातान्दद्यात्तु यः सम्यक् सोऽश्वमेध
 फलं लभेत् स्वर्गादे सोऽर्वा राजतं वापि कंस्थेनाप्यनिर्मितं दत्त्वा भोजनपात्रं तु
 सम्राट् भवति भूतले वामनपुराणे वंदीकृतास्तथेके चित्तचयं वायदिवायुरैः
 येन केनाप्युपायेन यस्तान् मोचयते नरः पितरस्तस्य गच्छति शाश्वतं पदमव्य
 यं परारारः वाचयेत्परिपूर्णं च वा सो दत्त्वा विधानतः नारदीये देवेभ्यः समन्त
 तातोपज्ञे पितृगणं च तथा तत्र पित्र्येभ्यः आसनाद्यशेषमर्चनकंठं चैव देविकं रो
 यं विशेषस्तु च तत्रासने द्विगुणभुग्नाः कुराः अत्रावाहनमासनात्स

वैवाध्यपरिणामं न चेत्यस्मृतिषु पक्षोऽुक्ताः एवांशारवाभेदेन व्यवस्था द्वितीय
 पक्षे एव बहुसमतः तत्रार्थमाहाश्रयाय नः तैजसाय मय मन्मथेषु त्रिषु पा
 त्रेष्वेकद्वयेषु वादभोजनदिते स्वयः प्रसिच्य शत्रो देवीरित्यनुमं अतिलाना च यतिति
 लोसिसो मदेवत्यो गोसो देवनिर्मितः पुत्रवद्धिः पुत्रः स्वध्यापितृनिमान् लोक्त
 श्रीगयादिनः स्वधानमश्रुति अश्रममयं स्फाटिकादिमृन्मयं हस्तकृतं मयकुलाल
 चक्रनिष्पन्नमासुरदैविकं न तत् तदेव हस्तघटितं देविकं केवलं न येति हं दोग
 परिशिष्टात् अग्न्यायधियात्राणि पूर्वमुक्तानि मनः अत्राभावे द्विजा भावे यद्ये
 को ब्राह्मणो भवेत् पात्राण्यासादये त्रीणि न तत्रास्त्राण संख्या दत्तकादेः कर्तुं दि
 पितृत्वादावपि वचना त्रीणि ति हरिहरः माधवीये वैजवायः अर्घ्ये पितृणां त्री
 ण्येव कुर्यात् मंत्राणि धर्मवित् एकस्मिन् वा बहुषु वा त्रास्त्रेणैषु यथाविधि हेमा
 द्रावप्येवं मंत्रान् मंत्राणं सकृत् तिलोत्सृज्य स्य प्रतिष्ठात्रमाहतिः पितृशब्दस्या
 नृहस्त्रेति वृत्तिकात् दर्भश्च त्रिगुणं पवित्रं तिस्रस्तिस्रः शलाकास्तु पितृया
 त्रेषु पार्थिवेण एको दिव्ये शलाकैकानि धायोदकमाहरेदिति हेमाद्रौ चतुर्विंशति
 तिमतात् तत्रैव विष्णुः दक्षिणाग्रदर्भेषु दक्षिणपवर्गचमसेषु पवित्रां तस्मिन्
 चपः आसिंचेत् त्रयो देवीरिति मंत्रेण जलासेचनं बहुचभिन्नविषयं अस्मिन्
 पक्षे प्रतिपात्रं मंत्राहतिः कारिकायां गंधपुष्पाणि चैतेषु पात्रेषु प्रक्षिपेद

य ब्राह्मे जलं क्षीरं दधि घृतं तिल तण्डुल सर्षपान् कुराग्न मधु पुष्पाणि दत्वा
 वामे ततः स्वयं जातू कर्णैः ततोर्ध्वपात्रं संपत्तिं वाचयित्वा द्विजोत्तमान् तदग्नौ
 चार्घ्यपात्राणि स्वधार्घ्या इति विन्यसेत् ततस्तिलहस्तो विप्रसम्य जानो दक्षिणक
 रं मृत्स्यावाहनं यच्छेत् अत्र गोत्रसंबंधनामानि द्वितीयोत्तमं च प्रागुक्तं वैजवाप्य
 गृह्ये तिष्ठ न्यित्नावाहयिष्यामीत्यामंत्र्य कोर्म्यं उपसम्यं ततः कृत्वा पितृणां
 दक्षिणामुखः प्रावाहनं ततः कुर्यादुरांतस्त्वेतुं कचाबुधः प्रावाह्यतदनुज्ञातो जये
 दयेतु नस्ततः अत्र सम्यस्यापि प्रागुक्तं विवर्त्यः अत्राद्यमंत्रावत्यास्मत्पितरं ममु
 कर्माणाममुकगोत्रं वसुरुपमावाहयामीत्याद्युक्तामर्द्धादिपादं तं तिलान्चिकी
 र्वायंतु न इति सर्वांते सक्तं जयेदिति निबन्धाः अत्राप्यवेशनरां वेशनपाद्याद्यां च
 मनीषान्यपि हेमादिनोक्ता निनाम्यथर्ववेदिनां नियतानि नान्येषां तेषां च प्रपिता
 महादिविप्रं तं प्रातिलाम्येन सर्वः प्रयोगः वाराहे गंधपुष्पाद्येन कृत्वा दद्याद्भस्तेति
 लोदकं गार्ग्यः शिरस्तः पादं तो वापि सम्यगभ्यर्चयेत्ततः ततस्वधार्घ्या इति पितृपि
 तामहादिविप्रं गृह्ये कं निवेदयेदिति कारकायां हतौ च आश्रयायनः प्रसवे
 नेतरपाण्यगुह्यं नेरणोपवीतित्वा दक्षिणेन वासव्योपगृहीतेनापितरि दत्तेर्घ्यं
 प्रपितामहे दत्तेर्घ्यं प्रपितामहे दत्तेर्घ्यं नित्यं सर्वताः प्रतिग्राहयिष्यन्सक्तसक

नि.सिं.

२७९

271

स्वधा र्घ्या इति पृथग्विस्व नृणां स्व नृमंत्रपीतया दिव्या आधः पृथिव्यां संवत्सु बुधा
अंतरिक्ष्या उत्पत्तिर्वीर्याः हिरण्यवर्णा यक्षिणास्तान् आपां संस्थानां भवत्विति अ
र्घ्यादि प्रागंधादि र्घ्यानां वीतमेव अर्घ्यदानात् प्रागन्या अयो दद्यात् यद्यप्यत्र स
नदक्षिणेन वा र्घ्यं दद्यादित्युक्तं तथापि दक्षिणेनेत्यभिमतोर्थः कारिकायां हतौ च
वं पिनादेस्त्रिभिः पात्रैर्दद्यात् पितुः स्थाने विप्रत्रयं चेदेका र्घ्यं विभज्य दद्यात् त्रया
णां स्वधा र्घ्या इति स ह्युक्तः एवं पिता महादा वपि अन्यजलदानमर्घ्यं मंत्रा
प्रतिविप्रमावर्तते तु गंधादेस्तु प्रतिविप्रं पदार्थानुसमयः कांडानुसमयो वा पित्रा
दित्रयाणामेकविप्रं पक्षेत्रिभिः पात्रैरेकस्यैवा र्घ्यं दद्यादिति हतिः कारिकापि
स्वधा र्घ्या इत्ययो र्घ्यास्ता उपवीची निवेदयेत् निवेदनात् प्राक् प्राचीना वीतमेव
त्यर्थः अर्घ्यं सरोषमादाय दक्षिणेन तु पाणिना सव्यहस्तं गृहीतेन निनयेत्पि
तृतीयेनः दत्त्वा दत्त्वा निनीतास्ता या दिव्या र्घ्यं नृमंत्रयेत् यत्न या दिव्या इति मंत्रेण
हस्तैश्च र्घ्यं विनिक्षिपेदिति यच्च बाराहे तिलांबुना चापसव्यं दद्याद र्घ्यादिकं हि
जश्रित्यच्च आसः गोत्रसंवधनामानि पितृणां मनुकीर्तयन् एकेकस्यैकविप्र
स्य अर्घ्यपात्रं विनिक्षिपेदिति तद्वद्वातिरिक्तविषयं तत् आचामेत् एवं मा
तामहेत्यपि आश्रयलायनैः संस्रवान्समवनीयताभिरङ्गिः पुत्रकामो मरुतः

राम
२७९

नक्ति संस्रवः शेषसंस्रवो हि परिशिष्टो भवतीति शतपथश्रुतेः केचिन्नृहस्तगालि
 तां वृद्धंति समवनीयांत्ये द्वे पात्रे पितृपात्रे आसिं चेत्यतिः प्रथमे पात्रे संस्रवान्स
 मवनीयेति कार्तीयस्तत्राच्च ब्राह्मेत्प्रतिविंवावलोकनमुक्तं स्कांदेत्यायुः कामस्य
 नेत्रासेचनमुक्तं पित्र्यविप्रेषाञ्जुरवस्य कर्तुरभिः श्वेकः कार्य इति केचित् आश्रित्याय
 नः नोदरेत्यथ मपात्रे पितृणां मर्घ्यपातितं आहृतास्तत्र तिष्ठति पितरः शौनको
 ब्रवीत् यावद्विप्रविसर्जनमिति तृतीयापादेयमीयः पाठः अत्र हर्तिः पितृपात्रं समव
 नयनं देवान् चालयेदाश्चाद्वसमाप्तेः यस्मात्तत्र तृतीयपात्रेण हृता इति यद्वा प्रथम
 पात्रमेव न्यग्विलंकुर्यादिति कामाभावे पीदमेव शेषप्रतिपादनं हेमाद्रौ कौर्मे सं
 स्रवांश्च ततः सर्वान् पात्रे कुर्यात्समाहितः पितृभ्यः स्थानमसीतां न्युज्ज्वापात्रं निधा
 ययेत् अल्लपाणौ यमस्तु पात्रे कुर्यात्समाहितैस्तृकं प्रथमे पात्रे तस्मिन्नेतामहं न्य
 सेत् प्रपितामहं ततो न्यस्यन्नेदरेन च चालयेदित्याहुः अथ संस्रवानानीय तृतीये
 नाद्याद्यन्युज्जीकुर्यादिति सर्वैकवाक्यतयार्थ इति केचित् अत्रिगंधादिभिस्तद
 न्यर्ची तृतीयेनाधिनापयेत् पितृभ्यः स्थानमसीति श्रुचोदेशोर्चितैर्चयेत् अर्चने न्यु
 ज्जीकृते पितृह्यं न्युज्ज्वापतृतीयेन्यसेदिति प्रचेतसोक्तेः सर्वविप्रोत्तरतो न्यसेदिति
 हेमाद्रिकल्पतरु विप्रवामे इति हलायुधः कर्तृवामे इति अल्लपारिणः उताजं वि
 वृतं वापि पितृपात्रं रत इवेदित्तरानसोक्तेः न्युज्ज्वातैव साधुः मातामहादिसंस्रवान

पिपित्वात्रैव गृहीत्या प्रयाजयन्तं त्रेणान्युद्धीक्यादिति श्रुत्याणिः एको
 दिष्टेन हेनम्युत्तेनेति पिपित्वा भक्तौ श्रीदत्तः यमोपि स्पष्टमृतानमन्यनीतमुद्धा
 रितं तथा पात्रं दृष्ट्वा ब्रजं त्वा मुपितरस्तं शमयति च वैश्वदेवे उन्नानमिति मृद
 नपारजातः वैजवायः तस्योपरिकुरा न्यत्वा प्रदद्याद्देवपर्वकं गंधपुष्पाणि
 धूपं च दीपं च स्त्रोपवीतके अत्र गंधादेर्देवे पित्रे च पदार्थानुसमयस्य याजव
 ल्क्ष्योक्तं काण्डानुसमयेन विकल्पो ज्ञेयः बहुचानां तु सत्रे देवानुक्तेः काण्डानुसम
 एव अत्र प्राचीना कीर्तना मगात्रसंबुध्या युक्तं प्राक् अन्यदेववत् तदन्ते आच
 मन्तं च हेमाद्रौ कालिकापुराणे निर्वर्त्य ब्राह्मणादेशा क्रियामेवं यथाविधि भो
 जनानि ततो दद्याद्दत्तशौचं पुनः क्रमात् आदेशा त्याज्याणि दद्यादित्यन्वयः त
 नत्रापि प्रश्नानुत्तरे तत्रैव ब्राह्मे मंडलानि च कार्याणि नैवारैश्चैव श्रौतिकैश्च भैः गो
 रमृत्तिकया वापि भस्मना गोमयेन वा भृगुः भस्मान्नोवारिणा वापि कारयेत्
 मंडलं ततः चतुःकोणं द्विजाग्रस्य त्रिकोणं क्षत्रियस्य त्र्यंशं मंडलं कृतं वैश्यस्य
 ऋद्ध्याभ्युक्षणं स्मृतं बहुचपरिशिष्टं तद्देवचतुरस्रं पित्रे हतं मंडलं कृत्वा
 क्रमैः सयवान् सतिलांश्च दर्भान् दद्यादित्युक्तं मार्कंडेयः पातु धाना पिशा
 चाश्च कुराये चैव राक्षसा हरंति रसमन्नस्य मंडलेन विवर्जितं हेमाद्रौ हारीतः
 भस्मा चैव निदध्यान्नेपरिपात्राणीति तन्नितु हेमाद्रौ च त्रिराह भोजने हेमरौ

प्याणिदैवेपित्रेययाक्रमं हारीतः राजतपारीतामृकांस्यपात्राणिभोजनेऽ
 ति तत्रैववाराहे सौवर्णिनीहोप्याणिकांस्यानितदसंभवे अन्यान्यपिदि कार्या
 णिदारुजान्यपिजानता नापसान्यपि कार्याणिपेत्रलानिनतुक्कचित् नवसौसमः
 यानीहस्यतेत्रयुजान्यपि अत्रिः पंचाशत्यलिकंकांस्यंअधिकंभोजनायवे गृहस्थे
 स्तु सदाकार्यमवैभावेहेमारौष्ययोः पालाशेभ्योविनानस्युः पारिपात्राणिभोजने
 पृथ्वीचंद्रस्तु कांस्यपात्रेहविदृष्टानिरोगापितरोगताइतिब्राह्मणैः कांस्यपात्र
 निषेधमाह वोपदेवस्तुस्मृतिसंग्रहमुदाजहार आद्वेपलाशयत्राणिमध्रकौंडुव
 राणिच पारिकाकुटकप्रक्षककचानिजमाज्जुः कदलीचूतपनसजैवुपुंन्नागचं
 पकाः अलाभेमुख्यपत्राणांग्राह्यास्यः पित्तकर्मणीति हेमाद्रौतु कदलीपत्रनिषे
 धमादांगिराः नजातीकुसुमानिदधान्नकदलीयत्रमिति जतुः असुराणांकुलेजा
 रंभापूर्वपरिग्रहे तस्यादर्शनमात्रेणनिराशाः पितरोगताः एवंपात्राण्यासाद्यभस्म
 मर्धादां कृत्वाविप्रहस्तरोधनं कुर्यात् तत्रपिशंगंरक्षणेणइतिमंत्रद्वयंकेचित्पठं
 ति मातस्य अकृत्वाभस्ममर्धादायः कुर्यात्पारिशोधनं आसुरेतद्भवेच्छादं पि
 तृणांनोपतिष्ठति तत्रैवब्रह्मांडे प्रक्षाल्यहस्तपात्रादिपश्चादङ्गिर्विधानवत् प्र
 क्षालनजलंदर्भेस्ति लोमिश्रक्षिपेष्टुचौ मंडलोपरीतिहेमाद्रिः अथाग्नौकार

वि.सि.
२७३

२७३

ग

एतद्देमादौ मार्केडेयः आहिताग्निस्तज्जुयादक्षिणाग्नेौ समाहितः अनाहिता
ग्निश्चोपदेशे अग्न्यभावे द्विजेऽप्युवा वायवीये आहृत्य दक्षिणाग्निं तद्देमांश्चै
प्रयत्नतः अग्न्यर्थं लौकिकं वापि जुहुयात्कर्मसिद्धये आहिताग्निः सर्वाधानी
अर्धाधानी तु गृध्रावैति चेद्विकापरार्कमिताक्षरमाधवा दयः तस्यापि दक्षिणा
ग्नेौ लौकिके गृध्रा इति हेमाद्रिः कल्पतरुश्च आद्यपक्ष एव त्रयुक्तः बहुसंमतश्च।
यद्यपि स्मार्तमग्नौ करणं श्रौते दक्षिणाग्नेौ न युक्तं तथापि वचनाद्भवतीति हेमाद्रिचं
द्रकादयः इदं दर्शयन् आदेराव आदिकादिषु त्र्यसर्वाधानीपारणे अर्धाधानी गृध्रे कुर्या
दिति हेमाद्रिमाधवश्च यक्षांतं कर्म निर्वर्त्य वैश्वदेवं च साग्निकः पिंडयज्ञं ततः कुर्या
न्नतोच्चाहृत्य कंबुध इति लोकादयादिभिः क्रमात्तैः विद्वत्तदक्षिणाग्निसत्त्वात् अ
त्राववाचवचने साग्निकः आहिताग्निरुक्तो हेमाद्रिणा एतदापस्तंबादीनामेव।
आश्वलायनस्य त्वाहिताग्नेः प्राणावेद्येति वृत्तिः अर्धाधानिनः गृध्रावैति षंगोणे
ति प्रयोगपारजाते परिशिष्टे च वोपदेवस्त्वाह होमराव्यः पिंडयित्तयज्ञपरः पि
तयज्ञे त्र्युहुयादक्षिणाग्नेौ समाहितः आदेत्तौ पासनाग्नेौ तु निरग्निर्लौकिके
नले अग्निरूर्भार्याश्रपार्वणे समुपस्थिते संधायान्निततः कुर्याद्दोममग्निं
समुत्सृजेत् इति कांडमंडनोक्तैः आदेगृध्राग्नेौ वेवेति लौकिकाग्न्यादि विधा

राम

२७३

न व तैतिरीयादिविषयं बहुचस्पत्वनजेरपि पाणि होम एव अग्निपाणी विनास
 त्रैविधांतरानुक्तेः अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणावेवोपपादयेदिति मन्त्रे अत्रैव तत्राप्ये
 वं चैतिसाजेरपि पाणि होम उक्ते गृह्ये परिशिष्टे आन्वष्टक्यं च पूर्वधुमांसि मास्य
 पयवर्णं कर्म्यमभ्युदयेष्टम्यामेकोद्विष्टमथाष्टम चतुर्धाष्टेषु सागरीनां वक्षो हो
 मो विधीयते पित्रा ब्राह्मणहस्ते स्यादुत्तरेषु चतुर्ध्वपीति एकोद्विष्टसपिंडीकरणे
 अद्वैतनिषेधान् बहुचभाष्यकारास्तु सर्वेकोद्विष्टेषु पाणि होममाहुः इदं बहु
 चानामेव अत्रेदंतत्त्वं स्थालीपाकेन सह पिंडार्थमुद्धृत्येति सूत्रेनात्रापूर्वः स्था
 लीपाकश्चाद्यते सर्वश्चाद्वैष्टप्रसंगान्नेनानुवादेयमिति त्वनिकारोक्तेः पार्श्वेणोऽग्रा
 र्थिकस्यान्तंगस्य अतिधंगस्य वार्थिकादिष्वनतिदेशादधीधानि मनोपि पाणि
 होम एवेति त्वतिस्वरसः एवं मासिकादावपि योऽशे मासिके चाद्वैष्टसपिंडीकरणे
 तथा पाणावेव तद्दोतव्यमन्यत्राग्रेनाहूयते इति बोधे देवोदाहृतवचनाच्च भाष्ये
 कारमते तु सूत्रे स्थालीपाकेनेति करणत्वात् नित्यवच्छ्रवणाच्च पार्श्वेणोऽंशं अतः
 काम्यादिषु तदभावे कार्यस्य पिंडदानस्याप्यभावः एव देवानुसृत्य विकृतावपि
 वार्थिकादौ अतिधंग उक्तः प्रयोगपारिजाते परिशिष्टे च तेनैतन्मतेर्धीधानि
 नो ग्रावेव वस्तुतस्तु स्थालीपाके सहसा अयाप्रस्तरं प्रहरतीति वत्त सहभाव

मात्रश्रुतेः पात्रीचतेत्वष्टुरुपलक्षणमिचनां गत्वं तत्त्वेवानां गानुरोधेन प्र
धानभूतयिंदानत्यागोयुक्तः तेन व्यतिषंगभावेऽप्यग्नौ होमो भवतीति ।
वोयदेवः अनाहिताग्नेरग्निरिति मतस्तु सर्वमतेगनामेव वार्षिकोदोहमिति म
ते व्यतिषंगेन अन्यमतेत्यस्ति अत्र यथाचारमनुष्ठेयं आश्रयलायनः उद्धृत्य
धत्ताक्रममनुज्ञायपत्यग्नौ करिष्ये करवे करवाणीति वा प्रत्यनुज्ञा क्रियतां
कुरुष्व कुर्वित्यथारोगाजु होतियथोक्तं पुरस्तादिति व्यतिषंगपक्षे इदमिति हतिः
करवे करवाणीत्यत्राग्नौ वित्यनुषंगः पुरस्तात्पिं डयिं डयित्यत्र तच्चैव मेक्षणो
नावदायावदानसंघदाजुहुयात्सोमायापित्तमते स्वधानमोग्नये कव्यवाहनाय
स्वधानमिति स्वाहाकारेण वारिन् पूर्वयज्ञोपवीती मेक्षणं मनुप्रहृत्येति अवदान
संघदा उपस्तरणाय येत्यर्थः व्यतिषंगपक्षेति प्राणीतेय होमो न्यथा मुखे अतिप्र
णीते ग्न्याविध्यमुपसमाधायेति बह्वचपरिशिष्टात् केचित्तस्य रक्षे निवर्हणार्थः ।
त्वान्मुखे वदंति तदेतद्विरोधाच्चित्यं प्रयोगयारिजातोप्येवं शौनकः स्वाहाकारेण
होमेन भवेद्यज्ञोपवीतवान् तत्र प्रागग्रये हुत्वापश्चात्सोमाय हुयते अग्नौ यज्ञो
पवीत्येव प्रक्षिपेत्तमेक्षणं ततः छंदोगपरिशिष्टे अग्नौ करणहोमश्च कर्त्तव्य उप
वीतेना अप्रसवेन वा कार्योदक्षिणाभिमुखेन च कातीयानां नु अप्रसवमे

व पिंडपितृयज्ञवद्धेति सर्वातिदेशात् सव्यं च दोगा यरांगे भिले नैतदुत्तर।
 मेवापसव्योक्तेः धंदोगा जुहुयुः सव्येनापसव्येन यजुषा इति हविषा जवल्वेयांतेः
 अथ पाणिहोमः अश्वलायनः अभ्यनुज्ञायां पाणिहोमवेति पिंडपितृयज्ञकल्या
 भावेनागमेभावे काम्यादिष्वित्यर्थः पाणिहोमविवक्षितवचनात् सर्वविप्रपाणिहोम
 इति हतिः एवंमातामहपियौ नकोपि सर्वेषामुपविष्टानां विप्रारामयपाणिहोम
 विभज्य जुहुयात्सर्वसोमायेत्यादिमंत्रतः यज्ञहेमाद्रौ कात्यायनः पित्र्येयः यद्रिम
 र्थन्यस्तस्य पाणावानग्निकः जुत्वामंत्रवदन्येषां तृष्णी पात्रेषु निक्षिपेत् इति तत्र वरु
 चातिरिक्तानां यज्ञतत्रैव मास्ये अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणो वायजले पिवा अजक
 र्णैश्च कार्णैश्च गोष्ठे वा यशिरांतके इति तत्रैव प्राद्विषयं तद्यदाऽयं समीधे स्यात्
 प्राद्वं ज्यो विधिस्तदेति तत्रैव कात्यायनोक्ते निजले जकार्णो दी यज्ञचंद्रोदये यमः दे
 वविप्रकरे नग्निः कृत्वा गौ करारं द्विज इति तदभार्यपरं अपत्नी को यदा विप्रप्राद्वं कुर्वी
 तपावरां पितृविप्रेरनुज्ञातो विप्रदेवेषु हूयते इति तत्रैव कात्यायनोक्तेः हूयते इति।
 धंदसाव्यत्ययः हेमाद्रौ वायवे विधुरो देवकै कुर्याच्छेषं पित्रे निवेदयेत् देवविप्रा
 ने कत्वे तत्रैव वैश्वदेवे यदे कस्मिन् भवेद्युद्धादयो द्विजाः तदेकपाणो होतव्यं स्या
 द्विधिर्विहितस्तदा साव्यायः प्रथमं वा त्रिनियम्येतेति न्यायात् तेन मृतभार्यस्यैव
 पास्मेस्तत्वं देवे होमः अनुपनीतवत्सर्वादेस्तपि अग्न्यभावः स्मृतिस्तव

घावद्धार्यानविंदति इति हेमाद्रौ जातृकार्ण्योक्तेः सभाधानद्याग्नेरपि पित्र्यकरे इति
 पृथ्वीचंद्रः उपवीतत्वे देवे होमः प्राचीनावीतेन पित्र्ये यद्वा सर्वत्र देव पित्र्यविप्रभेद
 सदा भेदेन पाणि होम इत्यपरा कंचंद्रकादयः यदा तु देवं तं त्रं तदा तं त्रं एण सकृदेव पा
 णि होम इति केचित् हेमाद्रिस्तु मातामहस्य भेदे पित्र्ये तं त्रं च साग्नेक इति कात्तरी
 यस्मृते भेदमाह एवं पित्र्ये पि माधवीये व्येवं एवं साग्नेरपि विदेशादो पाणि होमो ज्ञे
 यः पत्न्युर्कैर्वाग्नेविना आहुमेव नास्तीत्युक्तं तत्संविदीकराणां वाधिकाद्युकराणां
 पत्न्युर्वाधिकां चिदेव यत्तु हस्तारदीये अग्निर्दूरभायं श्रेत्यावरो समुपस्थिते भान्तिभिः
 कारयेच्छादं साग्नेकैर्विधिवत् द्विजाः क्षयाद्दिवसे प्राप्ते स्वस्याग्निर्दूरगोयदि तथैव
 भान्तरस्युश्चैलौ किकाग्नाविति स्थितिः श्रोत्रासनाग्नेो दूरस्थे समीपे भान्तरि स्थिते
 यद्यग्नेो युद्धया द्यापि पाणो वा सह्यातकीः श्रोत्रासनाग्नेो दूरस्थे केचिदिदं निसृजमाः
 पाणो वेव त्तु होतव्यमिति नैतत्समंजसे तद्दक्षानादरादुपेक्षं हेमाद्रौ यमः अग्नेो करण
 वत्तत्र होमो विप्रकरे भवेत् यद्युक्ष्यदर्भानास्तीर्य यतो ह्ययतो ह्यग्निं समो द्विजः मे दन
 एन करेण वा होमः मेक्षणप्रदराग्ने निति हतिः स्मृतिरत्रा बल्या ननु ज्ञायाणि होमो
 स्यान्तः यद्युक्ष्यदर्भानाग्ने तमयादिति च तस्यान्तामि ममेक्षणे कर्काचोर्वा व्येव
 माह माधवीये चंद्रिकायां चानुज्ञादिसर्वं भवतीत्युक्तं पाणि होमेषु आद्याह्यपरां र्के रौ
 नकः अग्निश्चेदाज्यं गृहीत्वा भवत्सेवाग्ने करणमिति पूर्ववत्तथास्त्विति आश्रयायनः

275-A

यादिपाणिचाचोतेष्वन्यदत्तमनुदिशत्यनमने स्रष्टुदत्तमधुकमिति पाणिद्रुतं पात्रे
निधाय विप्रेराचमय्यद्रुतशेषं प्रदद्यादित्यर्थः स्रष्टुप्रभृतं नैमित्तिकं चेदमाचमनं
द्रुतमक्षणनिमित्तं अन्नं पाणिनलोदत्तं पूर्वमश्रुत्यबुद्धयः पितरस्तनतृप्यंति शेषाच्च
ननु भवति ते यच्च पाणिनलोदत्तं पश्चान्यदुपकल्पितं शकीभावेन भोक्तव्यं यथग्भा
वानविद्यते इति वदन्त्यपरिशिष्टात् हेमाद्रावय्याचमने हत्वर्थवाद उक्तः पाण्या
स्योद्दिष्टः स्रष्टु इति भाव्येत्वावातेषु भक्षतेषु च समक्षणे भक्षणोत्तरं चनाचमनं
आग्निसाम्यात् पूर्वनिषेधस्तु सपिंडीकरणे ज्ञेयः ददाति चादितत्वात् न तत्र जुहो
ति चादितत्वादित्युक्तं न त्वेतद्वत्संमते यत्तु वौधायनेन तस्मिन् प्राशिते दद्याच्च
दन्नं प्राकृतं भवेदिति भक्षणमुक्तं तत्र छारवीयानामेवेति हेमाद्रिः तत्रैव यमः
पिअपाणिद्रुतात् शेषं पिबन्त्युपात्रेषु निक्षिपेत् अग्नौ करणशेषं तु न घाद्वैश्व
देविके एतदग्निहोमेषु समं कर्कस्तु सूत्रे द्रुतशेषं दत्त्वेत्यविशेषात् सर्वविषेषु
दद्यादित्याह तत्रैव तद्विनिर्दिष्टः पिअविप्रकरे द्रुत्वा शेषं पात्रेषु निक्षिपेत् पि
डेभ्यः शेषं यत्किंचिन्न दद्याद्वैश्वदेविके अथापस्तवानां सूत्रे उद्ध्रियतामग्नौ च
क्रियतामित्यामंत्रयते काममुद्ध्रियतां काममग्नौ च क्रियतामित्यते स्रष्टु उद्धरे
जुहुयाच्च नष्टाग्निनिधुरादेर्विशेषो हस्तारदीये नष्टाग्निर्हरभार्यश्रपावो

समुपस्थिते संधारणनिर्गतो होमं कृत्वा तं विस्तरेत्पुनः अयाश्रेति तत्काले ग्निं सं
धाय दत्त्वा त्यजेदित्यर्थः एतदापस्तंबानामेव पाणि होमस्तु चंदोगादीनां विप्रप्र
काशेऽपि साग्निरोपासनेन गिरिगेनो कुर्यात्तल्लौकिके पाणे होमं प्रशंसन्ति न त्वाप
स्तं दशारिचनां स्वातका विधुरा वास्युर्यदि वा ब्रह्मचारिणः अग्नेो करण होमं तु कुरु
युक्ते लौकिके न हो अयाश्रेति मने ज्योतिरुद्धुधव्याहृती कुनेत ततो नु ज्ञातो गंभीर
नाद्यात्य भागां ते यन्मे मातेत्याद्यैर्जुहुयात् तत्रासप्तान्नाहुनयः षडाज्यस्येति त्रयोद
व्यत्ययो वा यथा यन्मे मातो प्रलुलोभत मेरेतः पिता ह्यहं अंतर्दधे इति तत्राह्मा पिता
यास्ति हंतीति द्वाभ्यां प्रसुभ्यो स्वाहेतुं पितृन्नाम्ना हो होमो यन्मे पितामही प्रलुलोभवन्मे
पितामहो ह्यहं अंतर्दधे इति तत्राह्मा पितामहाय हो यन्मे प्रपितामही तन्मे तेतः प्र
पितामहो ह्यहं अंतर्दधे अतुभिरेति तन्वाह्मा प्रपितामहाय हो मातामहेषु तहः
यन्मे मातामही तन्मे मातामहो ह्यहं अन्यमातामहा हृदि मित्याद्यो यन्मे मातुः पिताही म
प्रलुलोभरेतो मातुः प्रपितामहो ह्यहं अन्यमातुः प्रपितामहा हृदं सर्वत्रा मुष्मा इत्य
उक्ते तत तत्र नाम योज्यां नहुय संग्रहे योज्यः पित्रादि शब्दानां स्थाने मातामहादिकः अ
न होमे तथा स्पर्शजलपिंडादिदानके यन्मे मातामहीत्यादितत्रोदाहरणं भवेत् ततो
मेवेदेत्येकात्राहुतिः ततः स्वाहा पित्र्ये इत्याद्यैराज्यं कृत्वा स्विष्टकृतं कृत्वा सर्वं भक्षं
किंचिदादायो दग्धं भस्मा यो ह्यतत्र हृद्यो स्वाहाकारेण जुहोति परिवेष्यतां त

276-A

स्थालीयाकवत् अयमग्नौ करणहोमो मासि श्रद्धा एव तच्च स्मार्तगम्य भावेन कार्यमि
 तिकेचित् कार्यभावेति वदवः अतएव सर्वाधाने नो होमवर्जं मासि श्राद्धमुक्तं सु
 दर्शनभाष्ये महालयेतद्धदित्येके प्रकरणान्तरत्वात् कर्मांतरत्वेन स्मार्तपावणव
 त्कार्यमितित्वस्मद्भुवः प्रादिकादिषु तस्मार्तपावणविधिरेव एवं मातृवा वि
 कादिषु मसि श्राद्धविकृतावष्टकायां मातृश्राद्धे वैकृतहोमेन प्राकृतहोमवाधः
 अन्वष्टकासु मातृश्राद्धं नेति भाष्ये तत्रापि श्राद्धान्तरवक्तृयमाणे तु यन्मे मातेत्या
 दौ गुणत्वेपि मातुः प्रधान्ये विवक्षितं मासि श्राद्धेन कल्याणव्याख्यात इति सूत्रात् आ
 गतेष्वेव च मनोता कार्येति वचनादग्निशब्दस्यैव वैकृतदेवताभिधापित्वेनामुष्मा
 इत्यत्रासु कर्षमभ्यापित्वाभ्यामित्याहः कार्यः तच्च मासि श्राद्धं जीवत्यत्रादिना
 व्युक्तमस्तपि जादिना च कार्यमित्युक्तं सुदर्शनभाष्ये तत्प्रकारस्तवक्ष्यते मातापि
 जादित्वा दौ तनोहः तस्माद्वचने हेदिति निवेधात्प्रकृता चक्षुभावाच्च पत्नी संनयेति
 वत् उपदेशो मतेहः यथा यन्मे मातरौ प्रलुलुभतश्च रत्यावननुव्रते इत्याद्यस्मात्
 पितृकृतमासि श्राद्धं निर्णये होयमिति दिक् अन्यत्र प्राग्वत् अयवेव वेवणं तच्चो
 पवीत्येवाज्येन देवपूर्वं आमासु यकृमिति पात्राण्युपसीर्य कुर्यादिति हेमाद्रिः त
 जैवशौनकः विधिना देवपूर्वं तु परिवेषणमाचरे तत्रैव धर्मः पत्नस्यानंतताप्रा

कास्वयंचपरिवेषणे तत्रैव वायुभवेव्ययोः भार्ययाश्चाद्काले तु प्रशस्तं परिवे-
षणं ब्रह्मांडे नाप्यवित्रेण तैकेन हस्तेन न विना कशं नाप्यसेनायसेनैव श्राद्धे तु प-
रिवे वयेत् वशिष्ठः श्रायसेन तु पत्रेण यदन्नं संप्रदीयते भोक्ता विद्या समं भुंक्ते दा-
ता च नरकं व्रजेत् पैठीनि सः सीसकायसरीति यात्रा एष यज्ञिया नि तत्रैव सा-
रीतः सौवर्गाराजताभ्यां च रवेरुनौ दुर्वरेण च दत्तमक्षय्यतां याति फलमुपाजे-
एवायुनः कौर्क्षाजिनिः दर्व्यादेयं घृतं चान्नं समस्त व्यंजनानि च उदकं चैव प-
क्वान्नं नोदर्व्यात्कदाचन यमः पप्ता विषमदा तु श्रुतिः कृतिः नैव विद्यते घृ-
ष्टी चंद्रोदये पराशरः सर्वदा च तिलाग्राद्याः पितृकृत्ये विशेषः भोज्यपात्रे तिला-
न दृष्टानिराशाः पितरोगात्ताः चंद्रिकायां वृद्धि रता तपः हस्तदत्तास्तपे स्नेहा लव-
ण व्यंजनादयः पितृणां नोपतिष्ठति भोक्ता भुंजीता किलिखं घृतपात्रे विशेषो ग-
यांतरे उदने परमान्ने च पात्रमासाद्य मुग्धधीः घृतेन पूरयेत्पात्रं तत्तु घृतं रुधिरं
भवेत् घृतादि पात्राणि भूमौ स्थापयेन्न भोजनपात्रे इति मदनरत्ने संग्रहे हस्तदत्ते
तु नास्तीत्याल्लवण व्यंजनादिकं अप्येकं तैलपक्वं च हस्तेनैव प्रदीयते पात्रालंभनमु-
क्तं च त्रिविंशत्तमते उत्तानंद क्षिरं समं नीचं पात्राण्युप स्पृशेत् याज्ञवल्क्यः दत्त्वा-
न्नं पृथिवी पात्रमिति पात्राभिर्मंत्रेण कृत्वेदं विष्णुरित्यन्ने हि जां गुह्यं निवेशयेत् वो-
धायनः विष्णुं मुखेनानरेवेनानुदिशति पृथिवी ते पात्रं धारयिधानं ब्राह्मणस्य

277-A

मुरे मते मते जु होमि ब्राह्मणानां त्वा विद्यावतां प्राणायानयोर्जु होम्याक्षितम।
 सिमामेपितृणां देव्या अमजामुष्मिन् लोके इति अघा जु होम्यग्ने स्वाहा शब्दः का
 तीयस्तत्रै उक्तः मैत्रैः स्वधा शब्दः जंगुष्टे विशेषमाह हेमाद्रौ धोम्यः परित्यनचांगु
 ष्टं द्विजस्यात्रै निवेशयेत् तथा उतानेन तु हस्तेन द्विजांगुष्टं निवेशनं यः करोति द्विजो
 मोहात्तद्वै रक्षांसि भुजते तत्रैव यमः विष्मो हव्यं च कव्यं च ब्रूयात् रक्षस्व चक्रं यात् दे
 विः वेपि ज्येत्तर्यः तत्रैव विः संवंधनाम गोत्राणि इदमन्नं ततः स्वधा पितृकमा दुदीर्ये म५
 तिस्वसन्ना विनिवर्त्तयेत् हस्तेनामुक्तमन्त्राथ मिदमन्नमुदीरयन् अन्नान्नदानेन
 चतुर्थी स्यादित्यादि विशेषाः पूर्वमुक्ताः अत्र पूर्वोक्तांतेऽत्र युरुरवा मा इव च संज्ञ
 का विष्णो देवा देवता इदमन्नं स परिकरं हविरयं ब्राह्मणस्त्वा हवनीयार्थे दत्तं दस्यमानं
 चातप्रेः गयेयं भूः गदाधरोयं भोक्ता इदमन्नं ब्रह्मसौवर्णिपात्रस्य मन्त्रमक्षयवटछाया
 स्थममुकेभ्यो विष्णो देवेभ्यः इदमन्नं तत्पुं परिनिष्पं परिनेक्ष्यमाणं चातप्रेः स्वाहा
 नमो नमसेति वक्तुं च परिशिष्यहेमाद्रि अनुमतः प्रयोगः एवं पित्रे मुक्तोत्रवत्स रूपार्थे
 तन्नन्नामज्ञेयं ततोपेदेवास इति देवे ये वेह पितर इति पित्रे केचिज्जायेति ततो अग्निं वा
 चयेत् तत्रैव प्रचेताः अयो एतान् करे विप्रैः संकल्यादिद्रव्याणां निराशाः पितरो या
 ति देवैः सह न संशयः पारस्करः संकल्य पितृ देवेभ्यः सा वित्री मधुमज्जायः आ

द्वं निवेद्यापोरानयुष्यैवोद्यभोजनं निवेद्येति ब्रह्मार्पणं कृत्येत्यर्थः अतएव तदभार
 दीयेन त्यागमुत्कोक्तं दत्तं हविष्मत्तत्कर्म विष्मत्तत्कर्म विष्मत्तत्कर्म विष्मत्तत्कर्म विष्मत्तत्कर्म
 र्क्षातिनिः अयस्येन कर्त्तव्यं पित्र्यं कृत्यमशेषतः अन्नदानादन्ते सर्वमेवं माताम
 हे स्रयीति तदप्येतत्परं तच्च ब्रह्मार्पणं हरिदाता च तर्हि श्रेयसि केचित्पठन्ति धर्मपु
 दीयेततो नृपितृदेवेभ्यः संकल्प्य च यथाविधिः दत्तं यद्वा स्यमानं च आत्मेन म
 मेति च तथा आह्वानं स्यत्तु संकल्पो भूमावेव प्रदीयते हस्तेषु दीयमानं तु पितृणां
 नोपतिष्ठते वैश्वदेवस्य वा मेतु पितृपात्रस्य दक्षिणे संकल्पो दत्तदानं स्यान्नित्यम्
 द्वेयथारुचि प्रचेताः अयोशानं प्रदायाथासा विज्रीजयेदथ मधुवाता इति ऋचं माध्वि
 त्येतच्चिके तथा याज्ञवल्क्यः सव्याहृति कां गायत्री मधुवाता इति ऋचं जुषायथासुरं
 वचं भुञ्जीरस्तेपि वाग्यताः यथासुरं जुषध्वमिति वाचं अत्रिः अयसं कल्पितमन्त्रा
 द्य पाणिभ्यां यद्यप्यस्य शतं अभोज्यं न द्रवेत् अन्नं पितृणां नोपतिष्ठते अन्नं दत्तं न गृही
 याद्या च त्रयोऽनसं पिबेत् अयोशाने विशेषः स्मृतिसमुच्चये अयोशानं वामभागे सुराणां
 नसं संभवेत् दक्षभागे नृयः कुर्यात्सोमपानफलं लभेत् तथा पुनरायुर्वापोशानं सुरा
 पानसं संभवेत् हेमाद्रावत्रिः दत्तं वाप्ययवा दत्तं भूमो यो निक्षिपेद्वलिं तदन्नं निःफलं याति
 निराशः पितृभिर्गन्तैः केचिदाज्येन कुर्वन्ति तन्न पायसेन तथा ज्येन माषाग्नेन तथैव च
 न कुर्याद्वलिदानं तु श्रोदनेन प्रकल्पयेदिति स्मृतिसारे निषेधात् शंखः श्राद्धे निषु

278-A

कान्ते ज्ञानात्रपदेष्ववगादिषु उद्धिष्टः पितरोयांतिपृथतोनात्रसंशयः कात्या
 यनः अस्मन्सुजयेत्सव्याहृतिकां गायत्रीं सक्तं त्रिवाराक्षो घृहीः योरुषसत्रमप्रतिर
 यमिति हेमाद्रौ सोपुराणे रौद्रचयोरुषसक्तं प्राचयेद्वा स्नातनतः मात्स्यायनयोः
 ब्रह्मविष्णुर्वक्त्रुद्राणां स्तोत्राणि विविधानि च इंद्रेण सामसूक्तानि पावमानीश्वरा
 क्तितः मंडलब्राह्मणतद्वाप्रीति कारिचयत्पुनः अभावे सर्वविद्यानां गायत्री जपमा
 चरेत् पृथ्वी चंद्रोदये ब्राह्मे बीराणां वंशध्वनिं चाथ विप्रेभ्यः सन्निवेदयेत् जयेच्च योरु
 षं सक्तं नाचिकेन त्रयं तथा त्रिमधु त्रिसुपर्णं च पावमानीयं जह्विच हेमाद्रौ अत्रिः
 हुंकारेण पिप्यो ब्रूयाद्भस्तेनापि वदेद्गुणान् भूतलाद्वा हरेत्याजं मंचेद्भस्तेन वापि
 वेत् प्रोटपादो वहिः कक्षो वहिर्जिह्वुकरा पिबा अंगुष्ठेन विनाश्रान्तिं मुखरावेन वा पु
 नः पीतावशिष्टं तापानि पुनरुच्यते वापि वेत् रवादिना ध्यात्पुनः रवादेन्मादकानि
 फलानि च मुखेन वा धमेदन्नं निष्ठीवेद्वा जने पिबा इत्यमश्रुन द्विजः श्राद्धं हत्वा गध
 त्यधोगतिं जीवालिः इष्टमुष्मं हविष्यं च दद्यादन्नं शनैः शनैः सद्गुणान्नतपः अ
 पेक्षितं वाचितं वंश्राद्धार्थं मय कल्पितं नयाचने द्विजो मूढः स भवेत् पितृघातकः
 पशुयमः श्राद्धे द्विजो नैव दद्यान्नया वन्न च दाययेदिति तदसंयादितवस्तु विषयमि
 ति हेमाद्रिः हारीतः ऊर्ध्वपाणिश्च विहसन्सक्रोधो विस्मयान्वितः भग्नपृष्ठश्च यदु

कैनतत्प्रीणातिवैपित् न प्रचेताः न स्पृशेद्वामहस्तेन भुजानोन्नकदाचन नपादौ
 नशिरोवस्तिनपदाभाजनं स्पृशेत् शंखः श्राद्धपत्रं च भुजानो ब्राह्मणो ब्रह्मणो स्पृ
 शेत् तदन्नमन्यजन भुक्त्वा गायम्यष्टशतं जपेत् उशानाः भोजनं तु नतिः शेषं कुर्यात् प्रा
 तः कथंचनः अन्यत्र दधुः क्षीराद्वंक्षौद्रात्सक्तुभ्य एव च ब्राह्मे न चाश्रापानयेज्जातु न
 शुष्कांगीरमीयेत् न चोद्दीक्षेत भुजानान्नचकुर्वीत मत्सरं यमः स्वाध्यायं श्रावयेत् स
 म्यग्धर्मशास्त्राणि चैव हि प्रचेताः भुजाने सुतु विप्रेषु जगत्पुत्रः सामेलक्षणां
 जयेदभिमुखं वा भुक्त्वा पित्र्यं चैव विशेषतः यजुषि चैव सितं च राक्षोघ्नीं च एव
 च राक्षोघ्नीं कण्डूश्चरक्षोद्दण्डमित्याद्याः तत्रैव निगमः भुजत्सु जपेत्पावमानीरुदी
 रतामध्वन्नवीतीश्वरं न वत्यः पितृन्तु स्तोत्रमिति यश्चैव चंद्रोदये भरद्वाजः भुजा
 ने सुतु विप्रेषु प्रमादात् प्रवते गुदं पादकृच्छ्रं ततः कृत्वा अन्यविप्रं नियोजयेत्
 क्षणपाद्यादिदत्तेत्यर्थः विप्रवमने तत्रैव दक्षः निमंत्रितस्तपः श्राद्धे भोजने मुखं
 निसृजेत्तदेव क्षेमं कुर्वीत स्वागतो विप्रः समाहितः प्राणादिपंचभिर्मंत्रैर्पीवद्वा त्रिं
 शं सरव्याः ब्राह्मणस्तु ततः कृत्वा घृतप्राशनमाचरेत् अष्टविधाने तु इद्राय
 सामस्तु कैनं श्राद्धं विप्रो यदा भवेत् अग्न्यादिभिर्भोजने न श्राद्धं संपूर्वमेव हीत्सु
 तं अग्न्यादिभिरिति लोकि काग्निस्याप न चरुनिर्वापायाज्यभागान्तेनामगोत्र

279-A

पूर्वमग्नेोपितृनावाद्यसंयुज्यान्नत्यागं कृत्वा प्राणादिभिर्द्वात्रिंशदाहुतीर्हुते
दित्यर्थः भोजनेन पुनः श्राद्धेन तेन होमः पुनः श्राद्धं चेति पक्षद्वयमुक्तं सक्तज
पक्षभयानुगतः स्मृतिसंग्रहे प्राधान्यं पिंडदानस्य भोजनस्य तदंगता अतो मुक्ति
क्रिया हनौ श्राद्धात्तत्तिनमन्वते पिंडदानोत्तरं वा तौ होम एव नाहतिः पिंडदाना
त्प्राग्वान्तौ तद्दिने उपवासं कृत्वा परेद्युः पुनः श्राद्धं कार्यमित्यर्थः तत्रैव श्राद्धं
कौतुभुजानो ब्राह्मणो वमने यदि नौ किकारिने प्रतिष्ठाप्य अर्चयेच्च हुताशनं
तथा एक एव यदा विप्रो भोजने हर्दितो यदि तद्देवाग्निं समाधाय होमं कुर्याद्यथा
विधि द्वितीयपक्षो ऋग्विधाने स्मृतिसंग्रहे अस्मत्ते पिंडदाने तु पिता यदि वमेत
दा पुनः पाकं प्रकुर्वीत श्राद्धं कुर्याद्यथा विधीति तत्रैवोक्तेः तथा पित्रर्थाणां त्र
याणां हि पिता वमने यदि तद्दिने चोपवासः स्यात्पुनः श्राद्धं परे हनि तथा ब्राम्णे
चाविरे के वा तद्दिने परिवर्ज्येत इदं मासिकादिका विषयं दर्शादौ तु वांता वा
मेन तद्देव कार्यं श्राद्धं विद्वेद्विजानीना मामश्राद्धं प्रकीर्तितं अमावास्या नियतं मा
सं संवत्सराहते इति मरीचि स्मृतेः श्राद्धं पिंडदानमेव प्रधानमिति कर्काचार्याः
तन्मते दक्षोक्तो होम एव नाहतिः विप्रभोजनमिति मेधातिथिः भोजनं पिंडदा
नागौ करणानीति कपर्दि धर्तृस्वामिहे माद्यादयः तन्मते पूर्वोक्तो निर्णयः

नि.सिं.

२८.

280

अन्नत्यागमात्रं प्राधानं भोजनं तत्प्रतिपत्तिरूपमंग अतोवांतोतद्वानेपि नाव
निरिति गोउमेपिलादयः आहस्ययागदानोभयस्यत्वात्संपूर्णदानाभावात् भो
जनस्यांगत्वेपिसोमवमने इव युक्तं नैमिकविधानमिति युक्तं प्रतीमः अत्रेदंतत्वं
वैश्वदेविकस्य वमने होमएवनाहतिः अंगत्वात् तच्चरक्षार्थत्वादिद्विष्टे कृते
रक्षावित्यादि स्मृतेश्च तत्र जयान् जुहुयादिति वत् पितामहादेरपि तथा पितेत्यु
क्तेरितिकेचित्तस्यापि प्रधानत्वापित्ववदिनित्ययुक्तं सपिंडीकरणादौ वार्षिक
वत् सपिंडीकरणादीनियानि आशानि षोडश तत्र पिंडप्रधानत्वं प्रेतत्वं विनिवर्ति
कमिति स्मृतेः महैकोदिष्टादौ त्वभयप्रधान्यादावतिरेव एकएव द्विजोभोज्यः
पिंडोप्येको विधीयत इति स्मृतेः वृद्धिसंकल्पनित्य आहोतुभोजनप्रधान्यादौ
तौ आहतिरेव वृद्धिश्चैविकस्येत्यपि प्रधानं बुधैः स्मृतं नित्य आहु मंदेव स्यात्
पिंडदानविवर्तिन इति स्मृति भुक्ति क्रियायाः प्रधान्यं आहु संकल्पसंज्ञके तत्रैव
यित्त्विप्रस्यत् प्रधानेषुनः क्रियेत संग्रहोक्तेश्च माघादावप्येवं तीर्थमहाज्ञयादौ
दशैवदित्यादित्याशार्कालोचनेन प्रतीमः आश्रलायनः तृपानज्ञात्वामधुम
नीः आवयेक्षत्तमीमदोतेति च संपन्ना - द्वायधदन्नसुयभुक्तं ततः स्थालीपाके
न सह पिंडार्थमुष्ट्यशेषनिवेदयेदभिमेतनुमते चेति सूत्रगयत्रीमाधिति

राम

२८.

विक्रयपोजेयः तत्प्राप्त बुद्ध्याप्रमादायसतिलंघ्यवज्रयेदिति प्रचेतसोक्तेः व्यासः
 तत्प्राः स्थितिः तदुपस्थास्ते ब्रह्मसूत्रप्राः स्मृत्यर्थः अभिमते विप्रैः स्वीकर्तुं मिष्टे शौ
 नकेऽपि अन्नरोधेऽपि किं कार्यमिति पृष्ठे तत्तस्तनः तैः पृष्ठैः सद्भोक्तव्यमिति प्रमु
 क्तपर्वकं प्रदत्तः सकलं तस्मै स्वीकृत्युर्वापयारुचिश्चाह चिरोक्षप्रश्नमेदमाह हेमा
 द्रौ विष्णुः पित्र्ये स्वदितमिति गाव्यं ससुश्रुतं संपन्नमित्यभ्युदये देवैरोचन इति श्रा
 युष्यमिति स्वैरिष्टुरेवैरमिष्टाश्चाह याज्ञवल्क्यः अन्नमादाय तत्प्रास्थारोधं चैवा
 तुमाय च तदन्नं प्रतिरेद्धुमोदघाचापः सकलं सकलं इदं चात्र विकारयन् मन्य शा
 रितं अश्वलायनानां तं पिंडं त एव सत्कृतोक्तं कात्यायनस्तु विकारोत्तरंगाद्य
 आदिजपंत मिप्रश्नं वाह हेमाद्रौ देवलः ततः सर्वाशानं पात्रे गृहीत्वा विविधं बुधः
 तेष्वा मुखे वाणस्थाने विकिरं भुवि निक्षिपेत् माधवीये प्रचेताः सर्ववर्णिकमादा
 यये अवतीति भुवि निक्षिपेत् सचकुरो कार्यः दर्भेषु विकारश्च य इत्युक्तेः मंत्रः काती
 यः अग्निदग्धाश्रये जीवायेष्य दग्धाकुले सम भूमौ दत्तेन तद्व्यं तु तत्प्रायां तु प
 रांगतिमिति अन्ये तु असौ मपाश्रये देवाय जगता विवर्जिताः तेष्वा मंत्रं प्रदास्या
 मि विकारं वैश्विदेविकं इति हेमाद्रौ गोमिलोक्तेन देवैः असंसक्तं प्रमीतायेत्यादि
 नोयाकुलस्त्रियः दास्यामि तेभ्यो विकारमन्नं ताभ्यश्चैतर्कमित्यग्निपुराणोक्तेन
 पित्र्येन्नं विकीर्यये अग्निदग्धा इत्युचिष्ट पिंडं कुर्यात्परिपृष्ट्या दद्यादित्याहुः यथै

चंद्रोदये ये वं ब्राह्मे नतः प्रक्षाल्य हस्तौ च द्विराचम्य हरिं स्मरेत् साधवो ये गौतमाः वि
 करमुद्धिष्टे प्रतियोदयेत् हेमाद्रौ व्यासः उद्धिष्टैरेव विकिरं सदैव प्रतियोदेत् भृगुः
 पिंडवत्प्रतियतिः स्याद्विकरस्येति तौ ल्वलिः श्राद्धकारि कृतयो यज्ञमानस्य दासादीन्
 दिश्यं द्विजसत्तम तस्मादन्नं त्यजेद्भूमौ वा मभागेषु येन के मनुः तच्छेवरां भूमिगत
 मतिस्तस्याशवस्य च दासवर्गस्य नत्पि मे भागधेयं प्रचक्षते विष्णुः उदङ्मुखे स्थावरा
 नमादौ दद्यान्नतः प्राङ्मुखेषु पिमेदैवेत्यर्थः रातातपः विश्वेदेव निविष्टानां वरं म
 हस्तधावने हेमाद्रौ वाराहे हस्तप्रक्षाल्य मयापः विवेदुः क्त्वा द्विजः सदा तदन्नमसु
 रैर्भुक्तं निराशाः पितरोगताः मरीचिः हस्तं प्रक्षाल्य गंडूषं यंपः पिवेद्विचक्षाणाः
 आसुरंतद्वाचे क्त्वा द्विजः पितृणां नोपनिषति तत्रैव संग्रहे पवित्रं ग्रंथमुत्सृज्य मंडु
 ले भुवि निक्षिपेत् हस्तौ दीनक्षालये द्विद्वान् शराबादौ तु कुत्रचित् व्यासः तां ब्रूता
 द्विरां चैव गंडूषो द्विरां तथा कांश्यपात्रे तथा ताम्रेन कुर्वीत कदाचन उध्मोद
 कैर्धान्यचूर्णैः करोरमश्रुं शिरोधयेत् अथ पिंडदानं तच्चार्चनोत्तरमन्नोकरणे
 न्नं विवरोत्तरं स्वधावाचनोत्तरं विप्रचिसर्जनोत्तरं वेति हेमाद्रौ स्मृतिषु पक्षा उ
 क्ताः तेषां शराबाभेदेन व्यवस्थाप्रेतश्राद्धेषु पूर्वमन्येषु भोजनोत्तरमिति चंद्रि
 कमाधवौ सर्वत्र भोजनोत्तरमिति बाहवः आश्रलायनः भुक्तवत्स्वनाचां

281-A

तेषु पिंडान्निदध्यादाचांते स्रक्के भुक्तवत् स्वेतिष्वर्धनिषेधार्थः साग्निरतिप्रणीत
समीयेनग्निर्दिजसमीये हेमादौजातुकार्यः व्याममात्रं समुत्सृज्य पिंडांस्तत्र प्रदा
ययेत् प्रसारितभुजोत्तरं व्यासः संकटे तु व्यासः अरतिमात्रमुत्सृज्येति यत्तु तत्रैव
सिक्ताभिर्मुदावापिवेदीदक्षिणानिमृगेति तदन्यथा रिवपरं देवलः ततस्तैराभ्यनुज्ञातो द
क्षिणादिशिमेत्येव चंद्रिकायां पिंडनिर्वाणं कार्यं कुराभावे विचक्षणैः काशेषुराज इवा स
पवित्रे परमेहिते आश्रयायनः केन लेखा मुहुरेव दयस्ता अस्तरारक्षां सिवेदव इति नाम
भ्युक्ष्य सक्तदाक्षिणैर्देवस्तीर्थप्राचीनावीती लेखां त्रिरुदके नोपनयेत् ऋधं तां पितरः ऋधं
तां पितामहा इति तस्यां पिंडान्निप्रणीया न्यराचीनेन पारिणापित्रे पितामहाय प्रपिता
महाये तत्रे सौये वत्ता मद्यान विनि हेमादौ पारस्करः करभ्यामुहुरेव स्फेन कुशैर्वा
पिमंही द्विज वरुचानां करोणे व लेखा चाग्नेय्यभिमुखे वति हतिः दक्षिणा प्राचीवेदमु
हुरेत्यन्यायस्तं वाक्ते अ देवलः आवाहयित्वा दग्धे स्तेषां स्थानानि कल्पयेत् ते व्या
सिनेषु पत्रेण प्रयच्छेत् सतिलोदकं परावीनेन - मृषितर्पणं वायवीये मधुसर्पिस्ति
लमुत्तां स्त्रीन् पिंडान्निर्वपेद्दधः त्रिस्थली सेतो तिलमंत्रं च पानीयं धूपं दीपं ययस्तथा
मधुसर्पिः खंडयुक्तं पिंडमष्टांगमुच्यते याज्ञवल्क्यः सर्वमन्नमुयादाय सतिलं द
क्षिणाभिमुखः उद्धिष्ट सन्निधौ पिंडान् दद्याद्दे पितृ यज्ञवत् केचित् पिंडेषु मायान्

वर्जयेति मायाः आदेशवैग्राद्यावर्ज्याश्चैवाग्निपिंडयोः ब्राह्मणोपयामद्यंतयामा
 योग्निपिंडयोः इति स्मृतिसारात् मायान्सर्वत्रवैदद्यात्पिंडे ग्नौ च विवर्जयेत इति
 स्मृतेश्च अत्र मूलं चित्तं हेमाद्रौ वापि शर्वशब्दस्य प्रकृतार्थत्वात्सर्वान्नग्राह्यं सुकृतं
 अत्र शेषमत्र मनः तावत्सर्वमन्नमेकत्रोद्धृत्योद्धृत्य समीपे धर्मेषु जीसीत्पिंडान् द
 द्यादिति गोभिलसूत्रे सर्वस्मान्प्रकृतादन्नात्पिंडान्मधुतिलान्वितानिति च शाखनिय
 मात्तदभावे पिंडनिवृत्तिरिति मेथलवाचस्यतिः तन्न उद्योपवायवत् परयुक्तद्र
 व्यरव्यर्थकमेतत्वाद्गुणानुरोधेन प्रधानत्यागाच्च शेषलोपेऽपि द्रव्योत्तरेण कार्य
 ज्ञानेनैव प्रतिपत्तिः किंतु प्रधानमित्युक्तं प्राक् अन्यथा सपिंडीकरणे दोषो
 जनादेः प्रधानस्य लोपापत्तेरिति दिक् अथ पिंडप्रमाणं हेमाद्रौ च गिराः कापि
 स्य विल्यमात्रात्वापिंडान्दद्यादिधानतः कुर्कुटां प्रमाणं चामरकैर्वैद
 रैः समानिति तत्रैव धर्मः कपित्थस्य प्रमाणेन पिंडान्दद्यात्समाहितः तत्स
 मविकरं दद्यात्पिंडान्तेषु षडंगुले अंत्येष्टियद्वितीये भद्रास्तु राको दिष्टे सपिंडे च
 कपित्थं तद्विधीयते नालकेरप्रमाणं तु प्रत्यक्षे मांसिके तथा तीर्थदर्शे च संप्रा
 प्ते कुरुकुटां प्रमाणतः महालये गया आदि कुर्याद्दामलके यमपित्याहुः क
 लिकाया माचार्यः यत्र स्युर्चंद्रवः पिंडास्तत्र विल्यपलोपमाः यत्र चैको भवे

282-A

पिंडस्तत्र वर्ज्यं सन्निभः प्रेतपिंडस्तु देर्घ्याद्वा दशांगुल उच्यते इति वायवीये य
 नी पिंडास्तु मृद्वीया त्रिवर्गस्य सहायिनी हेमाद्रौ लोकाक्षिः महालये गयायां च प्रेत
 प्राद्वे दशाहिके पिंडशब्द प्रयोगः स्यादत्र मन्यवर्कतेत्येत शब्दाय निः प्रसावेत
 ते इत्युक्ता तदन्ते च स्वधानमः प्रसावित्यत्र संबंधरूपगोत्रादिविशिष्टं पित्रादि
 नाम संबुध्यंत मुक्ता पुनश्च तृथ्यं ततदन्ते यं पिंड इदं मन्त्रं वा स्वधानमेति वदेदिति
 हेमाद्रिः पित्रादिनामा ज्ञानेत्वा पस्तवः यदि नामानि न विद्यात् स्वधापितृभ्यः पृथि
 विष्य इति प्रथमं पिंडं दद्यात् स्वधापितृभ्यो न तरेक्ष्य इति द्वितीयः स्वधापि
 तृभ्यो दि विष्य इति तृतीयं एवं मातामहेषु मातृषु च वरुचानो तृक्तं प्राक् क
 लिकायां स्मृतिः यावदेवोच्चरेन्नंत्रं तावत्प्राणानि रोधयेत् येष्वात्तु गृह्ये दर्शे मा
 तृप्राद्वं पृथग् उक्तं तेषां पितृभ्यः पश्चिमे मातृभ्यः सत्यश्चिमे मातामहेभ्यः पिंडादि
 देयमिति शंखायनः अस्मिन्पक्षे तत्पश्चिमे मातामहीभ्यो पिदद्यादिति हेमाद्रिः
 पूर्वोत्पितृभ्यो दद्यादपरासुसूत्रेभ्य इति सूत्राच्च एवं यत्र तीर्थं महालयां दौ केचि
 दिदंति नारीणां पृथक् प्राद्वे मर्षय इति चतुर्विंशति मतात् पित्रादिनवदेवत्वं
 तथा द्वादशदेवतमित्यादि मुरारिणाञ्च मातृणां पृथक् उक्तं यन्न वा आचर्य गु
 रुशिष्येभ्यः सारिव्रजानिभ्य राधवा तत्पत्नीभ्यश्च सर्वेभ्य तथैव च जलं ज

लीन पिङ्गस्तेभ्यः सदा दद्यात्पृथक् तादृशदेनरः तीर्थेषु चैव सर्वेषु माघमासे
 मया सुच्येति चतुर्विंशतिमते दौहित्रपुत्रराराश्रये कनिष्ठाः सद्गोदराः निःसंताना
 म् ताये च तेभ्योऽप्यत्र प्रदीयते इति भविष्ये चैको दिष्टान्युक्ता नितत्रापितत्यसि
 मे पिङ्गुदानं त्रेयं तेषां न पृथक् तैः सपत्नीकाः पित्रादयो वाच्याः श्रुत्वष्टका गयामा
 तृश्राद्धं चैव मृतैः सन्नि राको दिष्टं तथा मुक्ता स्त्रीषु नान्यत् यथा गमावो देति शंखो
 क्तैश्च मनुः तेषु दर्भेषु तं हस्तं निमज्जेत् यथा गमावो देति शंखो
 ज्यादेवेति मेध्यतिथिः विष्णुः अत्र पितरो मादयध्वमिति दर्भे मूले करवर्धे
 णं कालिकायां सुमंतुः एष्टा दिष्टेष्टुवर्षा सुदर्भे लेपो न विद्यते सपिंडीकरणा
 दौ तु लेपः सर्वत्रास्यते मनुः आचम्योदकपराक्षयत्रिरायम्यशनैरस्तनूषड्
 तंश्च नमस्कुर्यात्तपितृनेव च मंत्रवत् उदकं निनयेद्वेष्टं शनैः पिङ्गान्ते केषु नः त्रिः प्रा
 णायामं हृत्वेति मेधातिथिः अमंत्रं प्राणं निरुद्धेति कर्काद्याः मंत्रवत् वसंताय
 नमः नमो वः पितर इत्याद्यैः शेषं पूर्वाचनयनशेषं आश्रुलाघनः निमित्ताननुमं
 त्रयेतात्र पितरो मादयध्वं यथा भागमाह्वयध्वमिति सव्याह दुदगाह त्वयथा
 राक्षसाणां त्रासित्वा भिययीहत्यामीमदांतपितरो यथा भागमाह्वययीषते पितरोः
 प्राणभक्ष्यं भक्षयन् नित्यं नित्यं निमित्तं नित्यं गृह्णं शेषाभावेऽपि कुर्यादित्य

283-A

र्थः शौनकः अयेषामत्र पितर इत्याद्येनानुमंत्राणं अमीमदंतेत्याद्येतमंत्रेणाप्य
 तुमम्रतानपिंडशिष्टाचरोरत्रं किंचिदाध्यायतत्पजेत प्रक्षाल्याचम्यमुध्वनामि
 माद्येरेवपर्ववत कृत्वावनेजनं कुर्यात्पिंडपात्रमधोमुखं एतत्कातीयादीनां
 आचार्यः ततः सम्यग्विद्वराचम्यनीवी विसंस्पवायतः आश्वलायनः असावभ्यं
 द्वासावेक्षेतिपिंडेष्टभ्यं जनां जनेवासोदद्यादशा मूर्तान्स्तुकांवाचाशद्वर्धताया
 ऊध्वं लोमेतद्वः पितरोवा सोमानीतो न्यत्पितरोयुडः कुमितिप्राहुं चित्तमलोवा
 से एतद्वः पितरोवास इति जल्पनपृथक्पृथक् अमुकामुकगोत्रेतन्नुभ्यवासः पठेत्
 बुधः इदंकायानं एतद्व इति सत्राणि प्रतिपिंडमिति तत्सत्रात्तद्देमादौ ब्राह्मे अष्ट
 माहुः अष्टककुदमं जनं नित्यमेवाहि नैलं कृत्वा तिलेभ्यश्च दद्यादभ्यं जनं हिततत्रैक
 कुदं इति प्रसिद्धं अंजनप्राप्य मयमायस्तं वादिविषयं तत्रैव व्याधुः गंधपुष्पाणि
 धूपं च दीपं च विनिविदयेत् देवलः दक्षिणं सर्वभोगां प्रतिपिंडं प्रदापयेत् न
 द्याण्यप्यजानि क्षं प्रव्यं जनान्यशानानि च तत्रैव शंखः यत्किंचित्पच्यते गोदे
 भक्ष्यं भोज्यमगर्हितं आनिवेद्य जभोक्तव्यं पिंडमल्लेकयंचन एतत्सव्येनेति
 केचित् युक्तं चापसव्येन मनुः अवजिघ्रेष्टतान्पिंडान् यथान्युसान्ममाहि
 तः ततो नमो वः पितर इत्ये इत्यादिनोपस्थानं मातये अथाचां भेषुवाचम्यवा

284

रिदधात्सक्तसक्तनानिलपुष्पाक्षतान्यश्नादक्षय्योदकमेवच अत्रदेवैसव्यं पि
 अत्रयसव्यमिति कर्कः यरिभाषोक्तवचनात् सव्यमिति युक्तं अत्र शिवाग्ना
 यः शान्तसौमनस्यमस्तुत्यादिप्रयोगो ज्ञेयः मात्स्ये दत्वा रीः पुनिगृहीयाद्भिजेभ्यः
 प्राप्नोवुधः अघोराः पितरः संतु संत्वित्युक्ते पुनर्द्विजैः गोत्रतथा वर्धताने सैवेत्युक्तः
 सतेः पुनः दातारो नो भिवर्धतामत्र चेत्रचालनं कार्यं हेमाद्रौ हृदस्यतिः भाजने
 शुचिनिष्ठस्वस्ति कर्वाति ये द्विजाः तदन्नमसुरैर्मुक्ते निराशैः पितृभिर्गतेः जा
 तृक एषः पात्राणि चालयेद्वा देस्यं शिष्योश्च वासुतः नस्त्रीभर्तृचालेन नास
 त्त्या कथं च न जातवल्वयः स्वस्तिवाच्येततः कुर्यादक्षय्योदकमेवच तत्रैव
 ब्रह्मिणा तातयः पितृणां नाम गोत्रेण करे देयं तिलोदकं प्रत्येकं पितृतीर्थेन अक्ष
 यमिति मास्त्विति अत्र यच्छी प्रागुक्ता तत्रैव नागररवंडे उक्तानमर्घ्यः पात्रं तु कृत्वा दद्या
 दक्षिणं क्षिणं देवतानां च पितृणां रजतं तथा हृदस्यतिः तस्मात्प्राणं का कि
 नीवाफलं पुष्पमथापि वा प्रदद्यादक्षिणाय तैतया स सफलो भवेत् अत्र पितृदेशे
 न दक्षिणादानेऽप्यसव्यं विप्रो देशे तु सव्यमिति माधवः कलिकायामाचार्यः द
 द्यात्तयज्ञोपवीत्येवतां बलं दक्षिणां तथा अत्रिः वदेच्चतांस्ततो विप्रान्पित्रादिभ्यः
 स्वधोभ्यतां गोभिलः अघोरापितरः संत्वित्युक्ते स्वधां वाचयिष्यति पृच्छ

राम
२८४

284-A

तिष्ठितभ्यः स्वधोऽयमामित्युक्तेस्तु स्वधेऽप्युच्यमाने धारां दद्याद्देवहंतीति श्राप
 संवेन तु पुत्रान्नयोजानभितर्पयंतीरित्यपि परित्यजेते मंत्रउक्तः श्राप्सलायेनः उग्र
 येनोत्प्लावयेत्यरेतनापितरः सोपासो गंभीरेभिः पथिभिः पूर्वितोभिः दत्वा यास्म
 भ्य इविणे ह भद्रं पिबनः सर्ववीरेनियच्छतेति मात्स्ये वाजे वाजे इति जयनकुशा
 ग्रेण विस्मर्जयेत् प्रचेताः स्वस्तिवाच्यं ततः कृत्वा पितृष्वेव विसर्जयेत् श्राप्स
 लायेनः अन्नं प्रकीर्ष्यापवीर्या स्वधेति सृजेदस्तु स्वधेति वा ब्रह्मवेवर्ते श्राप्स
 जेति मंत्रं तु पठित्वा च प्रदक्षिणं द्वारोपाते ततः कृत्वा संयतः प्रविशेद्दृष्ट्वा जलिं
 ततः प्रास्तान् विप्रान् सत्यवादिनः दातारो नो भिवर्धंता मन्त्रं च नृणां वदित्वा एव म
 स्तिविति ते वं कथयंति समाहिताः एतन्मंडलदेशे कार्यमिति हेमाद्रिः मनुः दातारो
 नो भिवर्धंता वेदाः संततिरेव च श्रद्धा च नो माय्यरामद्वन्द्वं देयं च नो स्तिविति वौधाप
 नः अन्नं च नो वदुर्भवे दातिष्वीश्वरं मे महिषा चितारस्वनः संतुमाचया विष्य कंच
 नेति अत्र दातारो वो भिवर्धंता मन्त्रं ध्यात्वा चित्वा विप्रैः प्रतिव
 चनं कार्यमिति सुदर्शनभाष्ये रवाडुखं सदः इति अत्र प्रकीर्ष्या ब्राह्मणसः पित
 र इति मंत्रं द्वयं च पठंति शौनकः ब्राह्मणान्यथा दातारो नृणां त्रिः प्रदक्षिणं सस्त्री
 कः स्वजनैः सार्द्धं प्राणमेदयित्वा जलिः कैनिष्ठप्रथमा ज्येष्ठत्वरमाः स्युः प्रदक्षिणं
 हेमाद्रौ ह हस्यतिः अथ मे सक फलं जन्म भवत्यादा ब्रह्मवन्दनात् अथ मे वंशजाः

सर्वपाताबोत्तग्रहादिवं यत्रशाकादिकानेनल्लेशितायमीदृशाः तत्तल्लेशजातं
विज्ञानुविस्मृत्यक्षंतमर्हथ प्रचेताः विसृजेद्भाक्तिसंयुक्त सामातेचाय्यनुव्रजेत्
अथपिंडप्रतिपत्तिः हेमाद्रौब्रह्मांडे पिंडमर्गेन सदादद्याद्भोगार्थीप्रथमानरः पञ्चमे
जार्थीदद्याद्द्वैमध्यमं मंत्रपूर्वकं उत्तमं गतिमत्तिश्च न गोषु नित्यं प्रयच्छति आ
ज्ञाप्रजायराः कीर्तिमशुपिंडप्रवेशयेत् प्रार्थयन्दीर्घमायुष्यं वायसेभ्यः प्रयच्छ
ति आर्कशंगमयेदसुस्थितो वा दक्षिणासुरवः आश्रयायनः वीरमेदत्तपितर
इतिपिंडानां मध्यमं यत्रीप्राशयेदाधत्तपितरोगर्भकुमारं पुष्करस्रजं यथायसर
या अस्मदिति भर्त्ता दित्तस्य आद्येनादाय दित्तेन प्राशानं अपस्तंस्तु दाने मंत्रमा
हस्रयात्वा षधीनारं संप्राशयामि भूतकृतगर्भधत्तचेति मध्यमं यत्ये प्रयच्छती
ति प्राशनेपिययेदपुभरुवो अस्मदिति तदीयः पावः अन्येषां तत्त्वघारवायाज्ञेयः
तत्तैव शंखः पत्रीवाम मध्यमं पिंडं मश्रीयादात्तं वा त्विता कलिकायां छागलेयः
प्राचीजावीतमा मंत्रयत्नी पिंडोचिभज्यते प्रतिपत्तस्य मंत्रस्य कर्तव्यास्तेति
रत्रलु माधवीये विष्णुधर्मे तीर्थश्राद्धे सदापिंडानुक्षिपेतीर्थे समाहितः याज्ञव
ल्क्यः पिंडास्तु गोजाविप्रेभ्यो दद्यादग्नौ जलेपि वा हस्तस्यतिः अन्यदेशगताप
त्रीरोगिणीगर्भिणी तथा तदात्तं जीर्णं सवभस्यागोवाभोक्तुमर्हति अथपिंडो

285-A

पद्याते हेमाद्रौ प्रायश्चित्तकोडे देवलः श्रृंगालरव पिंडः स्यष्टोभिन्नः प्रमादतः
कर्तुरापुष्यनाशः स्यात्पुनस्तेनोपसर्धति जातृकार्ण्यः पूर्वश्लोकांते तदोषपरि
हारार्थं प्रजापत्यं कल्पयेत् पुनः स्नात्वा तदा कर्त्रा पिंडं कुर्याद्यथाविधि काकस्य री
तुनदोषः पिंडोपयातं प्रक्रम्य धनस्य त्वविनाशः स्यात्काकस्य रीतिं विनेति तत्रै
व श्लोकगोतमोक्तेः स्मृतिर्दधरोत्रिः मार्जारमुखकस्य रीतिं विदेचविदलीकृते पुनः
पिंडप्रदानव्याप्तेन पाकेन तत्तदाणात् वौधायनः श्रृंगालादिभिः स्पृशः पिंडोपयु
यहन्यते प्राजापत्यं चरित्वाथ पुनः पिंडं समाचरेत् वापदेवोप्यवमाह दिनांतरे तु
प्राजापत्यमात्रं शेषप्रतिपत्तिनेन पिंडात्तत्रौमानाभावादिति मैथिलः तत्र सपि
ंडीकरणदौ शेषमासे जासंजनादिलोपापत्तेः तेन वचनाद्दमने श्वात्रापितन्मा
त्रपिंडदानावतिः अतएव न च नक्तं श्राद्धं कुर्वीत आरब्धे चा भोजनसमापनादि
त्यापस्तवसूत्रं राज्ञो भोजनमात्रं पूर्वेषुः कार्यं श्राद्धसमाप्तिस्तु परादिने एव
समाप्तिपर्यंतं कर्तुं स्य वा सश्रेति हरदत्तेन व्याख्यातं तस्मात्प्राक्कांतरेण
पिंडदानमात्रं कार्यं अथ पिंडनिष्ठिकालः सच प्रयोर्लोमहा लयादिनिर्णये
पूर्वमुक्तः हेमाद्रौ हस्तस्य निपराशरः युगादिषु मघीयां च विष्णुवत्ययने तथा
भरणीषु च कुर्वीत पिंडनिर्वपणं नहि स्मृतिरन्नावल्यां पुत्रजाते व्यतीपाते

गृहलोचंद्रसूर्ययोः श्राद्धकुर्यात्प्रयत्नेनपिंडनिर्वपणमृते तत्रैवकात्यायनः व
 देरनंतरं चैवयावन्मासः समाप्यते तावत्पिंडं कौवदधान्नकुर्यान्निलतर्पणं तौ
 धायनः संस्कारेषु तथा न्येष्टुमासमासार्धमेव च तथा भानोभोमेत्रयोदश्या
 नंदाभृगुमघासु च पिंडदानं मृदास्तानं कुर्यान्निलतर्पणं त्रिस्थलीसेतो का
 र्माजिनः विवाहव्रतवृत्तासवर्षमर्धतदर्थकं उत्तरार्धं प्राग्वत् सद्धिमात्रे
 तथा न्यत्र पिंडदानानि रात्रि या कृता गार्गादिभिर्भृत्यैर्मासमेकं तु कर्मिणां ह
 माद्रौ ज्योतिः पराशरः विवाहे विहिते मासास्त्यजेष्टुद्वादशे वदि सपिंडनिर्वापेनो
 जीवंधेषडे वदि तत्रैव महालयगयाश्राद्धे मातापित्रोः क्षये हनि यस्य कस्यापि
 मर्त्यस्य सपिंडीकरणे तथा कृतोद्वाहोपिकुर्वीतपिंडनिर्वपणं सदेति मातापि
 त्रोरिति क्षयाहविशेषणं हविरुभयत्र च दवित्रक्षितं तेन भ्रातृपितृव्यादि वार्षि
 केपि पिंडदानं कार्यमिति केचित् सपिंडीकरणं न वश्राद्धयोः श्राद्धोपलक्ष
 णार्थमिति निर्णयामृते उक्तं क्षयाहविशेषः संग्रहे मातापित्रोरादिके तु विवा
 हादिषु सर्वदा तिलेष्टपिंडं प्रदातव्यं अन्यश्राद्धे विवर्ज्येत अत्र मूलं चित्यं रा
 मकौतुके नंदाश्रकामरव्यारभृगवनिर्पितकालने गंडवैधृतिपाते च पि
 ङ्गस्याज्याः सतेष्टुभिः विश्वरूपनिबन्धे तिथिवारप्रयुक्तौ योदोषो वै समु

दाहताः सप्रादेन निमित्ते स्यात्तन्नामप्रादेकदाचन अन्यत्र कं प्राक् उद्धिष्टो दास
 नमाह हेमाद्रौ वशिष्ठः प्रादेनो दासनीयानि उद्धिष्टान्यादिनक्षयात् श्रोतंते वै सु
 धा धारास्ताः पितृन्त्यक्तौ दकः व्यासः उद्धिष्टं न प्रमज्ज्यात्तुयात्तास्तमितेरवि
 दंगहोतरसत्वे एकगृहे तु मनः उद्धेयं तां तु न निवेद्या बद्धिप्राप्तिसंज्ञिताः ततो ग
 हवलिं कुर्यादिति धर्मा व्यवस्थितः बलिं वै श्वदेवादि नित्यकर्मणि मेधातिथिः ब्रह्मा
 उ श्रद्धाय चतुषेताय श्रद्धोद्धिष्टं न दापयेत् तथा कामं दधाच्च सर्वं तु शिष्याय च सता
 यच भोक्तुरिति शेषः जातकर्ण्यः द्विजभुक्ता वशिष्टं तमुचि भूमौ निरवानयेत् अथ
 वैश्वदेवादिः अत्र मासकः श्लोकः प्रादेनानिक कर्तृको गतिकरणान्यप्राजुहोति व
 लिस्त्वं ते स्यादयवा भवेद्धि करतः पश्चात्पृथक्ते यचेः प्राजांते त्वय वा महालय वि
 धावूर्ध्वं भुजे स्यात्तुक्षयेत्वं ते मास च मध्यतः शुभविधावा दौ तथा साग्निके अस्या
 र्थः साग्नियथ कपाके सर्वत्रादौ वैश्वदेवः यक्षांतं कर्म निर्वर्त्य वैश्वदेवं च साग्निकः
 पित्र्यं जंतुः कुर्यात्ततो न्वाहय कं वधः पित्र्यं निर्वयेत्याकं वैश्वदेवार्थमेव च वैश्व
 देवं न पित्र्यं न दार्शं वैश्वदेविकं मितिलो गाक्षि स्मृतेः अत्र साग्निकः प्राहितार्गि निरि
 ति हेमाद्रिः प्राक्षात्प्रागेव कुर्यात्तवैश्वदेवं तु साग्निकः एकादशाहिकं मुक्ता तत्र द्योते
 विधीयत इति हेमाद्रौ शालं कायना क्तं अतत्रैव परिरिच्छे संप्राप्ते पार्वणा प्रादे एको दि
 शे तथैव च अगता वैश्वदेवः स्यात्पश्चादेकादशे हनि स्मार्त्ताग्निमतां तद्रहितानां वारंते

करणोन्नरं विकरोत्तरं वा होममात्रं पृथक् पाकेन भूतज्जादितु आहुता एव अत्र
 मूलं हेमाद्रिचंद्रिकादौ स्पष्टं सर्वेषां आहुते वा तत्पाकेन वैश्वदेव नित्य आहुतौ
 नित्य तीर्थः आहुं निर्वर्त्य विधिवद् वैश्वदेवादि कं ततः कुर्याद्दिक्षान्तोदद्यादंतकारा
 दिकं तथेति पौठी न सिस्मतेः ततः आहुशेषान् आहुद्रिश्च आहुशेषेण वैश्वदेवं समाचरे
 दिति चतुर्विंशतिमातास्वा एव वैश्वदेव कालत्रयस्य आशुर्केशां स्वायनपरिशिष्टमुदा
 हृत्यैवं व्यवस्थोक्ता आदौ ह्यदौ क्षये चान्ते दर्शे मध्याह्ना लये एकोदिष्टे नित्ये तेष्वैश्व
 देवो विधीयते इति बहुस्मृत्युक्तत्वात् सर्वेषां आहुते एवेति मेधातिस्मृतिरन्वावत्या
 दयो बहवः वौषट्कस्तद्विधिको रणविसर्जनं तं आहुमुक्ता उच्छेष्टं एतद्विधिसूत्रात्
 मनुवाक्योदाहरणं कुरुचोनां आहुता एव मध्यपक्षस्तु न्यशाखवापर इत्याह हेमाद्रि
 स्मृत्युदाहरणं तेष्वैश्वदेवमाह कातीयानां तु स्मार्त्तौ श्रौताग्निमतामादावेकैने
 व पाकेनेति कर्कः अन्येषामंते तैत्तिरीयाणां तु सागरीनां सर्वत्रादौ वैश्वदेवः पंच
 मज्ञाश्च अंते चेति सुदर्शनभाष्ये उक्तं अस्पृक्षद्वयस्य पूर्ववद्वाच्यं हेमाद्रौ मा
 कंडेयः ततो नित्यक्रियां कुर्याद्भोजयेद्युततो नित्यीन ततस्तदन्ते भुंजीत सहभृत्या
 दिभिर्नरः ततः आहुशेषान् नित्यक्रियां नित्य आहुं तत्र अथ कृपाकेन नैत्यकमिति
 तेनैवैकमिति नैवोक्तैः पाके वा विकल्पः अथ नित्य आहुं हेमाद्रौ वा सः एक
 मय्याशये द्विप्रवणामप्यत्यहं गृहीतुं पीत्यनुकल्पः प्रचेताः नाश्रं ज्ञानं न होमं

चनाहूननविसर्जनं नपिउदानं विकिरं नदद्यादत्र दक्षिणं अत्र निक्षिप्य भोजयि
 त्वात् किंचिद्वत्वाल विसर्जयेदिति तेनैवोक्ते दक्षिणा विकल्पः यन्नित्य
 श्राद्धं देवहीनं नियमादिवर्जितं दक्षिणागरहितं चेवदात् भोक्तृजनैर्हितमि
 तिकाशीरवन्तद्विशभावपरमिति पृथ्वीचंद्रमविष्टे श्राद्धाहूनस्य धाकापेडोना
 करणादिकं ब्रह्मचर्यादिनियमाविष्टे देवान्चेवहि एतद्दिना संभवे राजावपि
 कार्ये दिवादिना निकर्माणप्रमादिदक्तानि वै यामिन्याप्रहरं पावतावत्क
 माणिकारयेदिति तदन्तारदीये रात्रौ प्रहरययेते दिवा कृत्या नि कारयेत् ब्र
 ह्मयज्ञे च सोरंच वर्जयिष्या विशेषतः इति पृथ्वीचंद्र धृतसंज्ञाहोक्ते अनदार्श
 कादिकाद्यपिरात्रौ स्यादिनिवाच्यं दृष्टापत्तेः तथा च माधवेन यत्प्रकरणे
 स्य स्पष्टमुक्तं वयं चाग्रे वक्ष्यामः अस्य दिने करणे लोपरावरात्रौ श्राद्धं न कुर्वी
 तिति निषेधादिति पृथ्वीचंद्रः पात्राभावे कोमे उड्यवो यथा रात्रि किंचिदन्नं
 प्रकल्पयेत् तत्प्रतिपत्तिमाह विष्णुः भिक्षुभावेन गोभ्यो दद्यादौचाप्रक्षिपेदि
 ति हेमाद्रौ नागरवंशे नित्यश्राद्धं न कुर्वीत प्रसंगाद्यत्र सिद्धानि श्राद्धानिरेकते
 न्यत्र नित्यत्वात् तत्र साययेत् यजुर्देवदेपथ्ये न्यर्थः मास्ये ततस्तु वैश्वदेवोत्तरे
 सम्यत्यसुतवांधवः भुंजीतातिथिसंयुक्तेः सर्वपितृनिषेवितं सर्वपर्वसि

विधमां समावाद्यपीत्यर्थः मात्स्ये ततस्तदा वेकृष्टैकादश्यादौ गृहीतेषु
 भोजनं अस्य वैधत्वेन निषेधाप्रवृत्तेः एवं गृहणावेधेऽपि यत्तन्नाहिताग्ने
 रमाद्यममांसं व्रतयेदित्युक्तं तदेवमेवाश्रितत्वेन तस्य बलवत्त्वात् देवलः प्रा
 द्देकृत्वाहुयोमत्यानभुंतेत्येकदाचन दिवा हव्यं न गृह्णाति कव्यानिधितरस्तथा
 शिवरात्रौ कादश्यादौ त्ववधारणमेवेत्युक्तं प्राक् यत्र रूपवासोनावश्यकस्तत्रैक
 भक्तमयाचितं वा कार्यमिति हेमाद्रिः जातकर्माः अह्नये वनभोक्तव्यं कृतेश्च
 दौर्देजन्मभिः अन्यथा सासुराश्च परपाके च सेविते आह शेषभोजनस्य
 अकेचिन्निषेधमाह हेमाद्रौ प्रायश्चित्त्यकांशे माकंडेयः पित्रादीनामप्यान्येषां प्रा
 क्षरोषात्रभोजनं व्रतिनां विधवानां च जतीनां च विगृहीतं अत्रैभिन्नगोत्राः व्र
 तिनो ब्रह्मचारिणः प्राक्षावशिष्टभोक्तारस्ते वै निरयगामिनः सगोत्राणां सकु
 ल्यानां ज्ञातीनां च न दोषकृदिति तत्रैवोक्तेः तत्रैव जावलिः विप्रस्त्वन्यगृहे प्रा
 क्षशिष्टान्नं भोजनं चरेत् प्राजापत्यं विशुद्धिः स्यात् ज्ञातिगोत्रेभ्यो दोषकृत् यतीनां
 च यनं हस्तप्रणवजयश्चेति तत्रैवोक्तं अस्यायवादमाह स एव अश्वुरस्य गुरुं वा
 पि मातुस्य महात्मनः ज्येष्ठभ्रातृश्वपुत्रस्य ब्रह्मनिष्ठस्य योगिनः एतेषां प्राक्ष
 शिष्टान्नं भुक्त्वा दोषो न विद्यते इति केचित् प्रशंसन्ति मुनयस्तदसांप्रतं विरोधो

न

तरंतत्रैव ज्ञेयं हेमाद्रौ जावालः तां हलं दंतका ह्यं च सेहस्मानमभोजनं रत्यौ
 षधयरात्रानि प्रादुर्कर्त्ता विवर्जयेत् पृथ्वी चंद्रोदये आचार्यः तस्मै भोजयेत्
 स्मिन्नगृहे पत्रेन तदिने प्रादुर्शेषं तस्मै देभ्यः प्रदद्यादखिलेष्वपि इति जगामुरु
 नारायणभट्टस्तदितकरभट्टानुजकमलकरभट्टकृतैर्निर्णीतसिद्धौषा चंरा
 प्रादुः ॥ ॥ अथाकुरु कल्पः तत्र विप्रालाभे भोजयेदथवाप्येकं ब्राह्मणं पक्व
 पावनं देवकृत्वा तन्नैवेद्यं पश्चात्तस्य तु निर्वयेदिति शंखवाक्त्रेरेको विप्रः पूर्वमुक्तः
 विप्रभावेदर्भवदुः निधाय वा दर्भवदुः नासनेषु समाहितः प्रेषान् प्रेषसंयुक्तं
 विधानं प्रतिपादयेत्तिदिति देवलोक्तेः अशक्ता वामप्रादं आयद्य न गतोतीर्थे
 च प्रवासे पुत्रजन्मानि ग्रामप्रादं प्रकुर्वीत भार्या रजसि संक्रमे इति कात्यायनोक्तेः
 पृथ्वी चंद्रोदये जमदग्निः पावस्यान्नाग्निसंयुक्त उत्सन्नाग्निरथापि वा ग्रामप्रादं
 तदा कुर्यादस्तेनो करणं भवेत् कौर्म अग्निरधनो वापितयेव वसना न्वि
 त ग्रामप्रादं द्विजः कुर्यादुत्सन्नसुसदेव हि प्राहिताग्निौ प्रवासस्येतत्प
 त्तिगृहे दारौ अचिगादिना कारयेत् अमावास्यादिनियतं योषिते धर्मचारि
 णी यत्नोत्तकारयेन्नित्यमन्येनाप्याचिगादिने तिलधुहारीतोक्तेरिति पृथ्वी
 चंद्रोदयः आदियदमाविकादिसर्वपार्वण्यारमिति श्रुतं यथा हि

सुमंतुः पाकाभावेधिकारः स्याद्विषादीनां नराधिपमुंतीनां महाबाहो वि
 देशगमनादिभिः सदा चैव तस्मै द्राणामामश्राद्धं विदुर्बुधाः प्रचेताः स्त्रीशू
 दः स्वयंच श्रैव जातकर्मणि चाप्यप्य आमश्राद्धं सदा कुर्याद्विधिना पार्वणेन
 न स्वयंच चेतीति स्वयंच विधिरानसौ आत्मनो देशकलाभ्या विधवे समुप
 स्थिते आपद्यतगैतीर्ष्यं च प्रवासे पत्युसंभवे चंद्रसूर्यग्रहे चैव दद्यादमं वि
 शेषत नपक्वं भोजयेद्विद्वान् सधृष्टोपिकदाचन भोजयेत्पत्यवायी स्यान्न च न
 स्य फलं लभेत् अत्र प्रवासतीर्थग्रहणादाद्यामहेमश्राद्धमेव पाकश्राद्धं तु न भवे
 त्येवेति हेमाद्रितत्त्ववल्यादयः अप्येकं विज्ञाने श्रवादयस्तु पाकाभावे द्विजातीनामा
 मश्राद्धं विधीयते इति सुमंतुः कैंः साग्निकैर्निराग्निकैश्च प्रवासादौ सर्वत्र पाकाभा
 वे आमादिकार्यपाकसंभवे तत्रैवेत्याहुः अतएव पाकश्राद्धमुक्त्वा एतच्चानुप
 नीतोपिकुर्यात्सर्वेषु पर्वसु भार्याविरहितो येन तत्प्रवारा स्यादिति तत्प्रशंसति मातुष्य
 निरग्नैरपि पाकेनोक्तमिति श्रुत्वा पाणि कल्पतन् एतच्छ्रुत्वा श्राद्धमात्रपर इत्यन्ये
 एकोदिष्टं कर्तव्यं पाकेनैव सदा स्वयमिति लघुदारी तीर्थमपि सोमग्रेरेव निरग्नैर्म
 हैकोदिष्टं मय्यामेन शूद्रस्य तु दरादपि शायामेनेति हलायुधः उत्सन्नाग्नीनां त्वा
 मश्राद्धमेवा सर्वोक्तं जमदग्निवाक्यात् मरीचिः श्राद्धविधौ द्विजातीनामश्राद्धं

कीर्त्तिनं अमावास्यादिनियतं माससंबत्सराहते स्मृतिदर्पणे मृताहं च सपिंडं च
 मया श्राद्धं महालयं प्रापन्नोपिन कुर्वीत श्राद्धमात्रेण कर्हिचित् हेमाद्रौ व्यासः आ
 मंदउत कोत्तय दद्यादमं चतुर्गुणं द्विगुणं त्रिगुणं वापिनत्वे क गुणमर्थयेत् सिद्धा
 त्रेतुविधिर्यः स्यादामश्राद्धेऽप्यसौ विधिः प्रावाहनादिसर्वस्यापिंडदानं च भारतदद्या
 धवधिजानिभ्यः श्रुतं वा श्रुतमेव वा तेनाग्नौ करणं कुर्यात्पिंडोस्तेनैव निर्वयेत् ।
 सराव आसंददद्वि कौं तेयतदानं द्विगुणं चरेत् त्रिगुणं चतुर्गुणं वापिनत्वे क गु
 णमर्थयेत् स्मृत्यर्थसारे समय्युक्तांश्च श्रान्तं आमश्राद्धं यदा कुर्यात्पिंडदानं क
 थं भवेत् गृह्यकात्सम्यक्त्यसक्तभिः पायसेन वा पिंडान् दद्याद्यथा लाभं निलैः
 सह विमत्सरः पृथ्वी चंद्रोदये व्यासः आमश्राद्धं यदा कुर्याद्विधितः श्राद्धदः सदा ह
 स्ते ग्नौ करणं कुर्याद्वा स एव विधितः एतस्मात्तः निरग्रेः सदान्त्सन्वातयतुः
 आमेन पिंडं दद्याद्देहि प्राणपक्वेन भोजयेत् पक्वेन कुरुते पिंडमात्रं यः पुष्यति ता
 वुभौ मनुजप्रोक्तौ नरकाहौ न संशय इति तदस्मादिपरं देशचारादाववस्योति पुक्तं
 मरीचिः प्रावाहने सधाकारे मंत्रा उत्पायि सज्जेते अन्यकर्मण्यनृथाः स्युराम
 श्राद्धविधिः स्मृतः प्रावाहने हविषे अन्नवस्त्रस्य त्रिंशत् कर्त्तव्यं चेत्समूहः स्वधाका

नि.सिं.

२६०

२१०

रेनमोवः पितरश्चेत्यत्र श्वेपदस्थाने आमद्रव्यायेत्यरुः विसर्जने वाजे वाजे
इत्यत्र तत्प्राप्तिस्थाने तर्प्यत तर्प्यतेति चारुः यद्यपि तस्माद्वनोद्देदिति अरुः
हानिषस्तथापि वचनाद्भवति तत्प्रिप्रश्नावगा ह्रस्वजुषमश्राययासुखं आ।
मश्राद्धे भवेन्नैतदपौराणं च पंचमं अये चानुवादः खले वाल्या छेदनादीनामि
वायी भावा लोपसिद्धेः धर्मप्रदीयेतु आमंचतुर्गुणं दद्यादथवा द्वेगुणं तथा
हेमवा छगुणं तद्दामे हेमयसौ विधिः आमहेमे तथा नित्येनां दीश्राद्धे तथे
वच व्यतीपातिदिक्श्राद्धे नियमान्परिवर्जयेत् गृहपाकास्तमुहृत्य सक्तु
भिः पार्ष्णेन वा पिंडदानं प्रकुर्वीत आमहेमे कृते सति आमश्राद्धे च ह्येव
प्रेतश्राद्धे तथैव च विकरं नैव कुर्वीत मुनिः कात्यायनो ब्रवीत् आमश्राद्धमंतं गु
ष्टममोकराणवर्जितं तत्प्रिप्रश्नविहीनं तत्कर्त्तव्यं मानवैधुवं आवाहनादनो क
राणं विकरं पात्रपराणं तत्प्रपुष्टं न कुर्वीत आमहेमे कदाचने तत्तुक्तं एतच्च आवाह
नं भवेत्तत्कार्यमर्घ्यदानं तथैव चेति हेमाद्रौ भाविष्यादिविरोधाच्चित्यं शारवातरवि
षयं वास्तु विक्ते रोप्यामेनेति हेमाद्रिः ऋद्रस्य तत्तत्रैवोक्तं अग्नौ करणमंत्रश्च न
मस्कारो विधीयते अग्नये कव्यवाहनाय नमः सोमायितुमते नमः इत्ययं मंत्रः ३
मात्स्ये मंत्रवर्जो ऋद्रस्य सर्वमेवाविधीयते एवं ऋद्रोपि सामान्यं ह्यदिश्राद्धे

राम

२६०

290-A

च सर्वदा नमस्कारेण मंत्रेण कुर्यादामान्यबुधः तच्च पूर्वोक्ते कार्यं ग्रामश्राद्धं
तवाङ्गे एकोद्विंशं च मध्यतः पार्वणं चापराहेतुर्द्विंशं प्रातर्द्विनिमित्तमिति हारंति
तैः एते द्विजविषयं श्रद्धकर्तृकं त्वेयराङ्गे एव मध्याह्नान्तरतोयस्तु कृतपः समुदा
हृतः ग्रामश्राद्धं तत्रैव पित्राणां क्षत्रमक्षयमिति सुमंतुं तैरिति अपराकैर्हेमदौ चोक्तं
तद्भावे हेमश्राद्धमाह हेमादौ मीरीचिः ग्रामात्रस्याथमावेतुश्राद्धं कुर्वीत बुद्धिमा
न धान्याच्चतुर्गुणेनैव हिरण्येन सरो विषाधर्मं ग्रामं तु द्विगुणं प्रेतं हेमन द्वाचतुर्गु
णं स्मृत्यर्थं सारैरिहण्यमष्टगुणं चतुर्गुणं समं वा दद्यात् हेमादौ भविष्ये अजाभा
वे द्विजाभावे प्रवासे पुत्रजन्मनि हेमश्राद्धं सगृहे च तथा स्त्रीश्रद्धयोरपि षड्जिंशान्मते
तु यथा देवर्जित्या वाक्ष्ये हनीति पाठः यस्य भार्या रजस्वलेति व्यासपाठः पुत्रौ तप
तौ तु हेमनियममाह संवर्तः पुत्रजन्मनिकुर्वीत श्राद्धं ह्रस्वैव बुद्धिमान् नयकेन वामे
न कल्पाणाव्यतिकामयन् भविष्ये गृहपाकात्समुद्भूत्यशक्तुभिः पायसेन वा
पिण्डदानं प्रकुर्वीत हेमश्राद्धे कृते सति श्रद्धस्तु गृहपाकेन तत्पिण्डान्निर्वमेत्तथा सक्तु
मूलं फलं तस्य पायसं वा भवेत्स्मृतं हेमश्राद्धे पिण्डदानं नेति दिवोदासः स्मृत्यर्थ
सारं तु विकल्प उक्तः तदाशयं न विद्मः षड्जिंशान्मते नामंत्राणां ग्राहराणं विक
राचनं दीयते तस्मिन् - श्रोथिनैवात्र कर्तव्यः केन चिद्भवेत् अत्र मरीचिना ग्रामाभा
वे हेमविधानेन स्थानापत्याधर्मश्राद्धेः पूर्ववन्मंत्रोहः पूर्वोक्तकालनाचने येति

दिक् सर्वोक्तधर्मप्रदीयेतेऽस्य व्यासः हिरण्यमासं प्राद्वेयं लब्धं यत्तत्रात्रियादिनः
 यथेष्टं विनियोगं स्यादंतीयाद्वास्यात्स्वयं विप्रालब्धं मुंतीयात् सत्रादिलब्धे तु य
 थेष्टं विनियोगः तेनापि श्रद्धावेष्टदेवादिनकार्यं देवोद्देशेन त्यक्तस्य देवतांतराय
 त्यागायोगादिदेवयाज्ञिकः श्रद्धालब्धे तु तत्रैव षट्त्रिंशन्मते आमंश्रद्धस्य य
 त्किंचिच्छ्राद्धिकं प्रतिगृह्यते तत्सर्वं भोजनया लां नित्येनैमिति केन चेति श्रद्ध
 तत्वे गिरा श्रद्धेश्च मनि विप्रेण क्षीरं वा यद्विवाध निवृत्तेन तत्र भोक्तव्यं श्रद्धा न्नत
 दपि स्मृतं श्रद्धादिप्रगृहे श्रद्धे प्रविष्टं तु सदा श्रुति पराशरः नावद्वति श्रद्धात्तं
 यावन्न स्य राति द्विजः द्विजातिकरसंस्थं सर्वं तत्र विरुध्यते विष्णुपुराणे सं
 प्रोक्तं पितृगृहीया श्रद्धा न्नं गृह्णीयात् अंगिराः पात्रांतरगतं ग्राह्यं दुग्धं च गृह्य
 मागतं सपिंडी श्रद्धा शतावाह हेमाद्रौ संवर्तः समग्रं यस्तु राक्रोतिकर्तुं नैव ह्यार्च
 णं अपि संकल्पविधिना कालेन तस्य विधीयते पात्रे भोज्यस्य चान्नस्य त्यागः संक
 ल्प उच्यते व्यासः सांकल्यं तु यदा कुर्यान्न कुर्यात्पात्रपूरणं नावाहनाग्नौ करणेपि
 उांश्वेव न दापयेत् पात्रमर्घ्यस्य समंजस्य कावाहनस्य निषेधः तद्धर्मी तु भवेत्त
 वेति हेमाद्रिस्मृत्यन्तरे विकरंतु न दातव्यं मिति तृतीयपादे पादे पाठः स्मृत्यन्तरे
 तज्येदावाहनं चार्घ्यमग्नौ करणमेव च पिंडांश्च विकाराप्ये श्रद्धे सांकल्य

२९१-१७

संज्ञके हेमाद्रौ च देशात्तातपस्तपिऽनिर्वापरहितं यत्तु आहुविधीयते स्वधा
वाचनलोपोऽत्र विकारस्तु न लुप्यते इत्याह षष्ठीचंद्रोदये च शिष्यः आवाहने
स्वधाराव्यपिंशान्नोकराणं तथा विकारं पिंशदानं च सां कल्पेयादिवर्जयेत्
विकारे विकल्पः स्मृत्यंतरे अंगानि पितृयज्ञस्य यदाकर्त्तुं न कुर्यात् सतदा वा
चयेद्विप्रान् संकल्पात्सिद्धिदात्विति छांसेयः पिंशायत्र निवर्त्तयेत्तयादिषुकथं च
न सां कल्पेत्तदा कार्यं नियमादुसवादिभिः कार्त्तमाजिनि मोंजीवंधाक्ष
राद्वत्सरं पाणिपीठिनात् पिंशान् पिंशानोदयः प्रेतपिंशं चिनात्रतुः अस्याप
वादपित्रोरादि कादौ सर्वमुक्तः त्यक्ता नैरपि सां कल्प मुक्तं यऽत्रिंशत्माने
अनग्निकोपदाविप्रउत्सत्राग्निस्तथैव च तथा हृदिषु सर्वास्तु संकल्प आह्मा
वरेत् अशक्तो लुप्यस्त्रीचंद्रोदये हृदना रदीये इव्याभावे हृदिजाभावे अन्नमात्रं
तदा चयेत् पैतृकेण तस्य त्रेण होमं कुर्याद्विचक्षण देवलः पिंशमात्रं प्रदातव्यम
भावेद्रव्यविप्रयोः आह्वीयाह निसंप्राप्ते भवेत्त्रिराशोपि वा बर्द्धशिष्यः किंचि
द्व्यादशक्तस्तु उदकुंभादिकं हृदिजे तृणानि वा गवेदद्यात्पिंशान्वाप्ययनिर्वये
त्त तिलदर्भैः पितृत्वापितृपयेन्नानपूर्वकं हेमाद्रौ भविष्य अग्निना वा दहेत्
कथं आहुकाले समागते तस्मिन्वायवदे से हि जपेद्वा आहुसंहितं आहुसंहिता

व

२५२

२९२

समन्त्राश्चकल्पः विष्णुवाराहपुराणयोः असमर्थेनदानस्य धान्यं मांसं स्त्र
 राक्षितः प्रदास्याति तिलान्वापि स्वल्पं वापि दक्षिणं सर्वाभावे वने गत्वा क
 क्षामलप्रदर्शकः सूर्यादिलोकपालानामिदमुचैः पठिष्यति न मे स्ति वित्तं न ध
 नं न वान्छा छोपयोगि स्वपितृभ्योऽस्मि नृप्ये तु भक्त्या पितरो मये तो भूस्तौ व
 र्त्तानि मारुतस्य इत्येतत्पितृभिर्गीतं भावाभावप्रयोजनं यः करोति कृतं तेन श्रा
 द्धं भवति भारत प्रभासरवो गत्वा राण्यममानुष्यमूर्ध्ववाङ्मविरो सदः निरन्त्रो
 तिर्धनो देवाः पितरो मान्वाणं कथाः न मे स्ति वित्तं न धनं न भार्यो श्राद्धं कथं च
 पितरः करोमि वने प्रविश्ये ह नृत्तमयोचैर्भुजौ कृतौ वत्सनि मारुतस्य श्रा
 द्धं वर्णमतद्रवत्तं प्रदत्तं मम दयध्वं पितृदेवतायाः श्राद्धाय चोक्षिष्य भुजौ ततो
 वैदिवाचरात्रिसमुद्योष्यति छेत्त भवेत्संघैतेन तेषामरणेन मुक्तः पितृदेवता
 नां इत्यनुकल्पः अथ श्राद्धभोजने प्रायश्चित्तं दारिद्र्यदूषाणायामः तद्वैत्रयः
 संस्कारेषु तु जातकर्मादि चूडंतेषु सांतपनं श्राद्धं चांद्रं वा अन्यसंस्कारेषु
 यवासः सीमंते चांद्रमिति विज्ञाने श्वरः श्रापदिनवश्राद्धैकादशाहं भुजो
 जने काषः द्वादशाहं उनमासे च पादोनः द्विमासे त्रिपक्षे नुषनखोनाकयो
 श्राद्धं कथुः त्रिमासाद्यादिको तेषु सपिंडने च पादकथुः उपवासो वा गुरुद्रव्या

जो ४

राम

२५२

292-17

ये भोजनेर्धं जपशीलेतदर्धं अनायादितु अन्नमासोतेषु चोदकाये चंद्रिमासादौ
पादोने त्रिमासादावर्धं कायः आदिके पादो न कायः पुनरादिके एकाह दो त्रि
पादि आदेषु द्विचित्रगुणानि ज्ञेयानि चेडालसर्ध आदि हत पतित ल्हीवादि न
व आधे चोदं अष्टमासिकोते चोदेष सक्क अ दशराहोदो पराकः द्विमासादाव
तित्तधुः त्रिमासादो कायः आदिके पादः अस्यासे सर्व द्विगुणं आमहे मसं कस्य
आदेषु ततदर्धनि यति ब्रह्मचारी चोक्त प्रापि अतस्तत्वाजी नुपवासानु प्राणायामा
नष्टतशनं चाधिकं कृत्वा जतरो व समापयेत् अनायादि द्विगुणं दशोदो दशगायत्री
मंत्रिताम्रपः पिवेत् षडप्राणायामावा संस्कारेषु चोले क्तधुः सीमंते चोदं अन्ये
ष्वपवास इति दिक् अत्र माधव मिताक्षरादौ क्वचि द्विरोधो विषय भेदान् परिहार्यः
एकादशाहे चोदं पुन संस्कारश्चेति हेमाद्रिः यत्नशनाः दशकृत्यः पिवेदायो गा
या आ आ द भु गि द ज इति त दु लु क्त प्राप अत्रि त्रि आ द परमिति ज्ञाने श्वरः अथ क्षया
द आ दं तत्स्वरूपमाह हेमाद्रो व्यासः मासपक्षतिथि स्पष्टयो तस्मिन् प्रियते ह
नि प्रत्यक्षं तु तया भ तं क्षया हंत स्पते विदुः नारदीय पारणे मरणे नू णं तिथि
सात्कालिकी स्मृताः अत्र चोदं मानं तेयं आदिके पित्त कार्य व चंद्रो मासः प्रश
स्यते इति गंगा क्तैः मलमास मृत स्य तु सोरं मालमास मृतानां तु सोरं मानं स

नि.सिं.
२५३

२९३

न

माश्रयेदिनिहेमाद्रावृत्तेः एतन्मतिमासस्यैवाधिक्येनेयं ब्रह्मे प्रतिसंवत्सरं
कार्यमातापित्रोर्मृतेहनि पितृव्याप्यपुत्रस्यभ्रातृज्यैश्चैवहि उपपुत्रस्य
तिभ्राजाप्यन्वयः ज्यैष्ठ्येति कनिष्ठस्यानावश्यकत्वात् मदनरत्नेभविष्ये
सर्वेषामिवश्राद्धानां श्रेष्ठं संवत्सरं मतं तथा भोजकोयस्तु वैश्राद्धन करोति
स्वगाधिय मातापितृभ्यां सततं वर्षे वर्षे मृतेहनि सघान्निरकंधोरंतामिश्रं
नामनामतः तच्चनानास्मृतिष्वेकोदिष्टं पार्वणं चोक्तं आद्यमाह यमः सपिंडी
कराणामूर्ध्वं प्रतिसंवत्सरं सतैः मातापित्रोर्मृत्पुत्रकार्यमेकोदिष्टं मृतेहनि व्यासः
एकोदिष्टं तत्तत्तं पित्रोश्चैव मृतेहनि एकोदिष्टं परित्यपार्वणं कुरुते नरः उपकृतं
तद्धिजानीयाद्भवेच्च पितृघातकः अंत्यमाह शातातपः सपिंडीकराणामूर्ध्वं
कुर्यात्पार्वणवत्सदा प्रतिसंवत्सरं श्राद्धं छागलोयोदितो विधिः यः सपिंडीकृतं
पृथक् पिंडेनियोजयेत् विधिगस्तेन भवति पितृहाचोपजायते उपत्रोरसक्षेत्र
जयोः पार्वणं दत्तकादीनामेकोदिष्टमित्येकः पक्षः साग्नेः पार्वणं निरग्नेरेको
दिष्टमित्यपरः तद्व्याख्यानं मिताक्षरादौ ज्ञेयं कल्पनरुस्तु साग्न्योरसक्षेत्रजयोः
पार्वणं निरग्निकयोस्तुकोदिष्टमित्याह अथ राक्षस्येवं दत्तकादयो दशपुजाः
स्तु साग्न्यो निरग्नयश्चैकोदिष्टमेव कुर्युः प्रत्यक्षं पार्वणेनैव विधिना क्षेत्रज्ञो

राम
२५३

नि.सि.
२५४

२१५

को

ज्येष्ठो भ्राताऽनाद्यगर्भज तथा च तज्जैव शतातपः अनाद्यगर्भज्येष्ठोऽपि भ्राता स
द्विर्निगद्यते अतः सपिंडना तस्य नैव पार्वणमाचरेत् आद्यगर्भे तपार्वणमेको
दिष्टवत्यर्थः मातुस्तु हेमाद्रौ कात्यायनः प्रत्यक्षं यो यथा कुर्यात्पुत्रः पित्रे सदा हि
जः तथैव मातुः कर्त्तव्यं पार्वणं वात्यदेव वा यत्नते नैवोक्तं सपिंडीकरणार्द्धं पित्रो
रेव हि पार्वणं पितृव्य भ्रातृमातृणामेव दिष्टं सदैवोचितं तत्सपत्नमातृपरं यत्न
वृद्धिपराशरः अपुत्रस्य पितृव्यस्य तत्पुत्रो भ्रातृजो भवेत् स एव तस्य कुर्वीत पि
उदानादिका क्रिया पार्वणं तेन कार्यं स्यात्पुत्रवद्भातृजेन तु पितृस्थाने तु तं कृत्यापो
सं पूर्ववदुच्यते इति तत्र पितृवदंशाचाराद्यावस्थितं तेनैव मिति मन्त्रिके वक्तुं पृथ्वी चंद्रः
आइ दीपकलिकायां चतुर्विंशतिमते तु पितृव्य भ्रातृव्या नृणां ज्येष्ठानां पार्वणं
भवेत् एको दिष्टं कनिष्ठानां दंपत्योः पार्वणं मिथः पुत्रपुत्रस्य पितृव्यस्य भ्रातृज्ये
वाग्रजन्मतः मातामहस्य तत्पत्न्याः आहुं पार्वणं वद्वेदितुं पत्न्या कर्त्तव्यं क्व
पि पार्वणमेव सर्वाभावे स्वयंपत्न्यः स्वभ्रातृणामेव पुत्रकं सपिंडीकरणं कुर्यात्स्ततः
पार्वणमेव चेति लौगाक्षिस्मृतेः तत्र पत्न्यापि कुर्वीत सपिंडं पार्वणं त्वयेति सु
मंत्तुं चेति निर्णयाम् ते उक्तं अन्ये चेतस्यादिक पार्वणपरमाहुः अतएव भ
तुः आहुं तु यानारी मोहात् पार्वणमाचरे न तेन नृप्यते भर्ता कृत्या तु नरकं व्रजेदि
ति वचनं क्षयाह पादिकै को दिष्टं प्रशंसार्थं न पार्वणं निषेधार्थं मित्युक्तं त्रिस्थ

राम
२५४

लीसेतोभट्टचरणैः स्वभर्तृ प्रभृतिभिः इत्यनेन विरोधाच्च अपुत्राणां त्वाद्
 हेमाद्रौ श्रायस्तं व अपुत्राये मृताकेचित्स्थियो वा पुरुषाश्च ते वा मपि च देव
 स्यादेकोदिष्टं न पार्वणं मित्रवंधुसंयिडेभ्यः स्त्रीकुमारीभ्यश्च दद्याद्दे
 मासिकं श्राद्धं सांवत्सरमतेन्यथा पारिजाते तु अन्यथा पार्वणमित्युक्ता
 सर्वत्र पार्वणमुक्तं एकोदिष्टवाक्यानि तु तीर्थमहाक्षयपराणीत्युक्तं पृथ्वी
 चंद्रोदये ह्यङ्गार्थः मातुः सहोदरायाच पितुः सह भवावधा तयोश्च नैव कु
 र्वीत पार्वणं पिंशनादृते प्रचेताः सपिंडीकरणं हृद्भ्यमेकोदिष्टं विधीयते अपु
 पुत्राणां च सर्वेषामपत्नीनां तथैव च अपत्नीनां ब्रह्मचार्यादीनां मार्कंडेय
 पुराणे प्रति संवत्सरं कार्यमेकोदिष्टं निरस्त्रियाः मृतादेरनियमान्यापं
 नृणां यद्वादि होदितं नृणामिति दृष्टं ताद्रो विप्रस्तया रवंश्रादीनां सपिं
 डनां भावेपि सांवत्सरमेकोदिष्टं कार्यमेवेति श्रुत्या गणः अत्रिहृद्विशिष्टो
 सपिंडीकरणं हृद्भ्यश्च प्रदीयते भ्रात्रे भगिन्ये पुत्राय स्यामिने मातुलाया च
 पितृव्यगुरवे श्राद्धमेकोदिष्टं न पार्वणं यत्तु यातृकार्यः पितृव्यभ्रातृ
 मातृणां मपुत्राणां तथैव च मातामहस्यासुतस्य श्राद्धादि पितृव्यवदेति
 ति तदावश्यकत्वात् ननु पार्वणार्थमिति हेमाद्रिः युक्तं त्वेवं मातुः पितरमा

भयत्रयोमातामहास्मृताः तेषां तु पितृवच्छ्राद्धं कुर्युर्द्विह स न वशति पुत्रस्योक्तं
 मातामहस्यपार्वणमेव तसाहचर्यापितृव्यादौ तथा पितृव्यभ्रातृमातृणामेकोदि
 छं च पार्वणं दक्षया होपक्रमेष्टुपुत्रस्योक्तं अवि कल्पः केचित्त्वापसंवादिवाक्यं नि
 व्युक्तमाद्यपुमीतानां नैव कार्या सपिंडं तेन्यस्य पितृव्यादिपरत्वादकृतसपिंडेन
 पितृव्यादिपरणीयाद्गुः मातासपत्नमाताएकोदि छं तु कनिष्ठपरमिति पृथ्वी
 चंद्रोदयेष्वेवं विशेषस्त्वधिकारिनिर्णयप्रागुक्तः केचित् पुत्रांतराभावेपिताम
 हवार्षिकमय्यावश्यकं पुत्राभावे च तत्पुत्रपत्नीमाता तथा पिता विनाभावेपिस
 छिष्यः कुर्युत्तस्योर्ध्वदेहिकमिति साकं डेयपुराणादित्याहुः तत्र योत्रेणोको
 दशादादिकर्तव्यं श्राद्धघोऽरामितिकातीये विशेषोक्तेः अथ क्षयाहर्द्धे निर्णयः
 तत्रैकोदि छं मध्याह्ने कार्यं मध्याह्ने पंचधा भक्ते दिने तृतीयभागाः इति माध
 वः ग्रामश्राद्धं तु पर्वह्ने एकोदि छं तु मध्यतः पार्वणं चापराह्ने तु प्रातर्
 द्विनिमित्तकमिति हारीतोक्तो प्रातःश्राद्धसाहचर्यात् तत्राधिकृतपादिमुहूर्तं द
 येतेयं प्रारभ्य कृतये श्राद्धं कुर्यादौहिणं बुधः विधितो विधिस्थापरोहिणं
 तु नलंघयेदिति श्रौकगौतमोक्तेरेतत्परत्वात् रोहिणो नवमो मुहूर्तः मैथि
 लाः श्राद्धको मुदीचैवं अन्यथा ऊर्ध्वमुहूर्ता च तुष्टये मुहूर्तपंचकं ह्येतत्त्वधा
 वमनमिष्यते इत्यादि विरोधात् दीपिकापि एकोदि छं मुपक्रमेत् श्रावर्तनसमी

295-17

पेवातत्रैवनिमिष्यतेइत्यादिविरोधात् दीपिकापिराकोदिष्टमुपक्रमेतकुतयेति
 माधवीयेव्यासोपिकृतपप्रथमेर्भोगोकोदिष्टमुपक्रमेत आचर्त्तनसमीयेवा
 तत्रैवनियतात्मवान् तेनकुतपादिरोहिणोतोमुख्यः कालः पृथ्वीचंद्रोदयेष्वे
 वं दिनद्वयेनद्यासोअंरोसमव्याप्तौचपूर्वाविषमप्राप्तावाधिक्येननिर्णयः आख्याप्तौ
 पूर्वैवपरविद्यायानिषेधात् सचवक्ष्यतेपूर्वदिनेग्रहणोरोहिणालंघनापत्तेः परैवे
 तिगोडाः शुक्लकृष्णवशात्तुर्वर्दयाधैवावस्थायत्ये तन्न परविधिनिषेधप्रावत्या
 त अत्रमूलकालमाधवीज्ञेयं पार्वणान्तपराणैकार्थं पूर्वोक्तवचनात् मध्याह्न्या
 पिनीयास्यात्सैकोदिष्टेतिथिर्भवेत् अपराह्न्यापिनीयापार्वणोसातिथिर्भवेत्
 इतिपृथ्वीचंद्रोदयेतद्वगोतमोक्तेअपूर्वधुरेवपरेधुरेववा पराह्न्याप्तौसेवग्राह्या
 दिनद्वयेनद्याप्तौतदस्यैरीशतः समव्याप्तौवापूर्वैवविषमव्याप्तौचधिकाग्राह्या
 पराह्न्यापिनीस्याद्विकस्यपदतिथिः महतीपञ्चतद्विद्वांशंसेतिमहर्षयइतिमरी
 चिस्मृतेः दशीचपराणमासंचपितः संवत्सरंदिनं पूर्वविद्धिमकुर्वाणोनरकेप्रतिप
 द्यतेइत्यराकेनारदोक्तेः अदेव्यापिनीचेत्स्यात् मृताहस्ययदितिथिः पूर्ववि
 द्वाप्रकृतेव्याजिभुहृतीभवेद्यदिइतिसंमत्तः पूर्वस्यान्निर्वयेत्पिंडानित्योगि
 नि रसभाषितमिहमाद्रौपाठः तत्रैवतद्वमनः नह्यह्न्यापिनीचेत्स्यात् मृता

नि.सिं.

२५६

296

हस्यचयातिथिः पूर्वविद्धेवकर्तव्यात्रिमुहूर्ताचयाभवेत् मदनरत्नेष्वेवयत्तुका
र्थातिनिव्यासो अहोसमयेवेलायां कलासात्रायदानिथिः सैव प्रत्यादिकेतेया
नायरायुत्रहानिदेति तत्रिमुहूर्तस्तुतिः पूर्वमुः सार्धत्रिमुहूर्ताभावेत्तुपरैव त्रि
मुहूर्तानचेद्वापरावत्तुनयेदित्येति कालादर्शगोभिलोक्तेष्वकालादर्शेपि प्र
त्यादिकेयेवमेवतिथिग्राह्यापराह्मिकी उभयत्रतथात्वेत्तुमहत्त्वेनचिनिर्णयः अ
त्राधि सायंतन्यपरत्रचेन्मतिथिः सैवादिकेमासिकेग्राह्या सासाद्यपराह
योयदितदायत्राधिकासामतात्तुल्याचेदुभयापराह्मसमयेपूर्वानचत्तुद्वयेपूर्वैव
त्रिमुहूर्तास्तसमयेनोचेत्परैवोचिताः माधवपृष्ठीचंद्रौतुदिनद्वयेपराह्म्याप्राचे
रातः समव्याप्तौक्षयेचपूर्वाक्षद्वौपरा खर्वद्वयेपरोपज्यावित्युक्तेः अपराह्मद्वय
व्यापिन्यनीतस्यचयातिथिः सयैपूर्वाचकर्तव्याबद्धोकार्यातपोत्तरेति बोधाय
नोक्तेः क्षयाहस्यतिथिर्थात् अपराह्मद्वयेपदि पूर्वाक्षयेत्तुकर्तव्याबद्धोकार्यात
पोत्तरेति त्वत्तारदीयाच्चेत्याहमनुः सद्धिक्षयोचात्रपरतिथेनतुग्राह्यतिथेः त
स्याक्षयेपराह्मद्वयव्याप्तेरसंभावात् तदामाधवः नग्राह्यतिथिगोसद्धिक्षयाबद्ध
तिथेस्तुतौइति यत्तुपृष्ठीचंद्रः पूर्वोक्तवचनेषुयत्रमायाद्रास्तमययोगिनीति
थिरुक्तातत्रापराह्मव्यापिनीज्ञेया सायादस्त्रिमुहूर्तः स्यात्तत्रप्रादुर्गनकारयेदिति

राम
२५६

११६-१७

मत्स्यादौ सायकृन्निषेधात् यच्च गिरुहृतीदिग्रहणं तच्चादाहीयराकृत्यस
हृत्परमित्याह तद्धमादिमदनरत्नकालादरीदिग्रंथाविरोधात्साक्षात्
तैश्चयितं तस्मात् पूर्वोक्तमेव साधु यदाचिवसादिनेसांवत्सरं श्राद्धं नक्त
तं तदाराजावपिकार्यं मृताहसमतिक्रम्यचंडालेष्टाभिजायते इति मरीचिना
मृताहातिक्रमेदोषात्तैः नचनक्तं श्राद्धं कुर्वीतारेचवाभोजनसमानमित्यायत्तं
वेनगौराकालोक्तैश्चेतिमाधवः श्रारध्ये श्राद्धे विधुवरा प्राविषाते भोजनस
मानं अंत्यंतं रात्रौ कार्यं शेषसमाप्तिः परदिने एवेति हरदत्तः त्रयोदशे त्वातीत
त्यर्थः तेन यत्र द्वादशमासिकं शुद्धमासे भवति तत्र त्रयोदशे अधिके एव श्राद्धादिकं
कार्यं यत्र अधिकमध्ये द्वादशमासिकं तत्र तस्यार्धराहति कृत्वा चतुर्दशे शुद्धे
एव प्रथमादिकमिति त्रिचर्चः ग्रहणादिने चार्धिक प्राप्तेन दिन एवात्रेनामि
न हेमन्तावाक्येनोत्तरदिने इत्युक्तं प्राग्रहणानिर्णये तच्च प्रथमादिकं त्रयोदशे
मलमासे कार्यमन्यथान प्रत्येकं द्वादशे मासिकार्यापि इक्रियासुतैः क्वचिज्ज
योदशेपि स्यादाप्युक्ता तु वत्सरमितिलघुहारीतोक्तैः इदमत्याधिमासपरं द्वा
दशे माधवीये हेमाद्रौ चैवादितीयादिकं तु शुद्धमास एव नाधिके नाप्यभ
योः मलमास मृतानां तु यादास एवाधिकः स्यात्तदा तत्रैव कार्यमन्यदा शु

नि.सिं.
२५७

२९७

हेरावेति प्रागुक्तं दर्शयार्थिके चेत्तदा पूर्ववार्थिकं कृत्वा ततः पिंडपितृयज्ञो दर्शश्चा-
दंतेति निर्णयदीपेकमउक्तं स्मृतिसारेपि दर्शक्षयाहेसंप्राप्ते कथं कुर्वन्ति याज्ञि-
काः आदौ क्षयाहे निर्वृत्य पश्चादर्शविधीते इति युक्तं त्वेवं तद्वचने मन्त्राभावात्
पिंडयज्ञततः कुर्यान्न नोत्वा हार्थिकं बुधा इति दर्शश्चाहे पिंडपितृयज्ञानंतर्यात्
स्यादिके स्पृतिदेशात्प्राप्तेः पितृयज्ञानंतरवार्थिकं ततो दर्शश्चाहुमिति व्यति-
षंगस्तन्न भवति तस्यार्थिकत्वात् कालदर्शपि निमित्तानियतिश्चात्र पूर्वा-
नुष्ठानकारणमिति सर्वान्प्रत्येकरूप्याभावाक्षयाहनि तस्यानियतत्वं देवता-
नीयेत्येवं एवंमाकादिष्वपि ज्ञेयं प्रत्यब्दयो यथा कुर्यात्तथा कुर्यात् सतान्यपी-
ति सर्वातिदेशात् मन्त्राहे ह्यष्टोत्सर्गोक्तो हेमाद्रौ विष्णुधर्मे ऽपुन यद्विज्ञेयं चेवम-
न्त्राहे वांधवस्य च उत्सर्जनील ह्यष्टमं कौमुद्याः समुपागमे कौमुदी कार्तिकी-
श्रृयमुद्विष्टाद्विद्वोदासीये सपिंडीकरणादूर्ध्वं यावदब्दत्रयं भवेत् तावदेव
न भोक्तव्यं क्षये हनिकदा च वर्धते सपिंडेनैतत्तुल्यं मन्त्राहनि तसंप्राप्ते याव-
दब्दचतुष्टयं बहिः श्राद्धं प्रकुर्वीत न कुर्याच्छ्राद्धभोजनं प्रथमे स्थीनि मज्जा च द्विती-
ये मांसमक्षणां तृतीये रुधिरं प्रोक्तं श्राद्धं चतुर्थे कमिति श्राद्धकारिकोक्तेः
श्राद्धं किंचिदिति ज्ञेयं स्मृत्यंतरे सप्तविंशत्यो मासान् श्राद्धं भुक्ते ततो हतः स य-

राम
२५७

297-17

क्रिद्विधितः पापः प्रतारिचभवेत्तुसः तत्र प्रथमेके वर्षातसपिंडनपक्षे मृताहात्सर्वे
सपिंडनमदपूर्तिश्राद्धं च कृत्वा परे पुर्वार्थिकं कुर्यादिति स्मृत्यर्थसारे उक्तं हेमाद्रिस्त
मृताहं सपिंडीकरणेनैव वार्धिकसिद्धिः सरे संवत्सरे पिंडोऽशः परिकीर्तितः
तेनैव च सपिंडं च तेनैवाधिकमिष्यतेति वचनादित्याह इदमेव च उक्तं अथ क्षया
हाज्ञाने मरीचिः श्राद्धविघ्ने समुत्पन्ने अविज्ञाने मृते हनि एकादश्यां तु कर्त्तव्यं कृत्वा
यक्षविशेषतः विशेषत इत्युक्तेः सुक्तैकादश्यामपि ह्यहस्यतिः न ज्ञायते मृताहं
तृप्तीति प्रोक्षिते सति मासश्चेति प्रतिविज्ञानस्तद्वरी स्यादथाधिकं दिनमासौ च वि
ज्ञातौ मरणस्य यदा पुनः प्रस्थानमादिसंवसौ ग्राह्यौ पूर्वोक्तयादिशा मदनरत्ने भवि
ष्ये मृताहं योनजानातिमानवो विनितात्मज तेन कार्यममावास्यां श्राद्धं संवत्सरं
सदा दिनमेव तु जानाति मासं नैव तु योनरः मार्गशीर्षे वा भाद्रे माघे वा तदिने भ
वेत् निर्णयामृते तु यदा मासो न विज्ञाते दिनमेव तु तदा चाष्टादशे मासि माघे वा त
दिने भवेदिति स्मृतेराष्टादश्यामुक्तः कालाद्वरीयि मासाज्ञाने दिनज्ञाने कार्यमावाह
माघयोरित्युक्तं हेमाद्रौ प्रभासरवंडे मृताहं योनजानाति मासं वापि कथंचन ते
न कार्यममायां स्याच्छ्राद्धं माघे यमार्गिके भविष्ये मृतवार्त्ताश्रुते ग्राह्यौ तौ पूर्वो
क्तक्रमेण तु पूर्वोक्तेति प्रस्थानदिनाज्ञाने मासज्ञाने च तद्वरी मासाज्ञाने दिन

ज्ञानेच मार्गादविति वत श्रवणदिनेपित्तयेमित्यर्थः श्रवणदिनमासाज्ञानेमाघमा
 गिदोकार्ये पूर्वोक्तप्रभासरंजत अतोत्रलोपइतिश्रुत्याण्युक्तंहेयं तिथितत्वेयमः
 गतस्यनभवेक्षात्रीयावद्वादशवार्षिकी प्रेतावधारणंतस्यकत्रैक्यसुतवांधवैः यन्मा
 सियदिहर्षातस्तन्मासितदहःक्रियादिनाज्ञानेकुडूस्तस्यआघाटस्याथवाकुडूः
 अथआहुविद्येनिर्णयः तत्रविप्रस्यनिमंत्रणोत्तरंस्तकस्तकैवारोचाभावः नि
 मंत्रितेषुविप्रेषुप्रारध्वेआहुकर्मणि निमंत्रणोद्विप्रस्यस्वाध्यायादिस्यच देह
 पितृषुनिष्ठत्सुनारोचंविद्यतेकचिदिति ब्राह्मणैः कर्तुंस्तुविप्रस्यस्वाध्यायादिस्य
 स्पचदिहपितृषुनिष्ठत्सुनारोचंविद्येष्मराहजनयतविवाहेषुआहुदोमेचनेजयेआ
 रध्वेस्तकंस्यादनारध्वेस्तकं आहुप्रारंभस्तेनैवाहुः प्रारंभोवरणंयत्संकल्पो
 व्रतसत्रयोः नोदीमुखंविवाहोदोआहुपाकपरिक्रियेति माधवीयेब्राह्मणेपि आहु
 दोपितृयज्ञेचकन्यादानेचनोभवेत् मिताक्षरायां स्मृत्यंतरेसद्यः रौचप्रकृत्याप
 त्तसंभृतसंभारेचिवाहेआहुकर्मणिति तिथितत्वादिकोऽग्रथास्तु निमंत्रणोत्तरं
 कर्तुंभोक्तुमनारोचं निमंत्रणोत्तरंआहुप्रारंभः स्यादिस्रुतिरिति विष्णुः यत्तुआहु
 पाकपरिक्रियेति तदृशंआहुविषयमित्याहुः दातृगृहेमरणोदोवासेउक्तं भोजना
 र्धत्संभुक्तेविप्रेदीतुर्विद्यते गृहेइतिशेषः यदाकश्चित्तदोधिष्ठंरोचंत्यत्कासमाहि

298-17

ताः आचम्यपरकायेन जलेन शुचयोद्धिता इति अस्य आहुविषयत्वं हेमाद्रिगोक्तं
 पृथ्वीचंद्रोदयेष्वेवं समलप्रतिभाति इदं विवाहादिविषयं न तु आहुविषयं तत्पदा
 भावात् विवाहोत्सवयज्ञेष्ठित्युपक्रम्य भुजानेष्ठुत्विष्येष्टुत्वं तस्मात्तत्सतकेः अ
 न्यगोहोदकावांताः सर्वे ते शुचयः स्मृताः इति षड्विंशान्मते कक्षावात् निमंत्रितेषु
 विष्येष्टुप्रारब्धे आहुकर्मणि पूर्वोक्तविरोधाच्च आहुतेषु यद्यपि विष्णुतायाको
 त्ररमाशौचाभव उक्तस्तथापि कर्तुरेव सः भोक्तुस्तदोषोऽस्यैव उपपिदात्तग्र
 हाजोऽस्य सतके सतके तथा अविज्ञाते न दोषः स्याच्छ्राद्धादिषु कथंचन विज्ञाते
 भोक्तुरेव स्यात्प्रायश्चित्तादिकं क्रमादिति माधवीये ब्राह्मणेः आदिशब्देनाक्षौच
 मुच्यते तच्चाह विष्णुः ब्राह्मणं दीनामाचौचेयसक्तदेवान् नम्रमप्राति तस्य ताव
 दशौचं यावन्नैषामाशौचमप्यगमे प्रायश्चित्तं कुर्यादिति यत्तु देहेऽपि तदुत्तिष्ठत्तुना
 शौचं विद्यते क्वचिदिति ब्रह्मांत आहुकालीनस्य निषेधकं न तद्वत्तवकालीनस्य शुद्धि
 दायकं निमंत्रितेष्ठित्याम आहुपरं भोजनार्थं चित्यादित्वन्न आहुपरमित्याह प्रायश्चि
 त्त्याह मार्कंडेयः भुक्ता तु ब्राह्मणशौचे चरेत्सां तयनं द्विजः पतत्कामतः अभ्यासे
 शंखः ब्राह्मणस्य तथा भुक्ता सा समेकं व्रती भवेदिति अज्ञाना तु द्वागलेयः एकाहं च
 अहं च सप्तदात्रमभोजनं ततः शुचिर्भवेद्विप्रः पंचगव्यं पिवन्नरति वरी क्रमेण

दं अभ्यासेन द्वे गुणयमित्यादिमिताक्षरमाधवाद्यौ तु श्राद्धे कर्तुं भोक्तुं असर्व
 पादोवाभाव उक्तः श्राद्धे च मध्ये श्राद्धदिनप्राप्ते तु मावीये कालादरीं च ऋष्य
 श्रृंगः देयेपितृणां श्राद्धे तु श्राद्धे च जायते पदा श्राद्धे तु व्यतिजाने तेभ्यः श्राद्धे
 विधीयते श्राद्धचिन्तमणोर्ज्योतिषे प्रति संवत्सरश्राद्धमाशौचान्ननिर्नयन
 मलमासेपितृकार्यमिति भागुरि भाषितं श्राद्धे चान्यदिनत्वेन निमित्तत्वादित्य
 र्थः एतन्मासिकादिकपरं न दार्शिकादौ श्रुता एव सदरीनभाव्यः परपक्षोपीत्या
 एति नियमात्कथमपक्षश्राद्धलोपे प्रायश्चित्तमेव न तु गौणकाले करणं तच्चोप
 वासः वेदोदितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे स्वातन्त्र्येन लोपे च प्रायश्चित्त
 मभोजनमिति मन्त्रैरित्युक्तं श्राद्धे च तु प्रायश्चित्तमपि न मुरवकालेनाधिकारा
 त् श्राद्धे चाने संभवे तु व्यासः श्राद्धविधेः समुत्पन्ने अंतराष्टनस्तनके प्रमावा
 स्यात्प्रकुर्यादश्राद्धाच्चैके मनीषिणा हेमाद्रौषड्विंशन्मतेति मासिके चादिके कापि
 संश्रामेष्टनस्तनके वदन्त्यश्राद्धोत्तत्कार्यदर्शवापि विचक्षणाः गोभिलः देयं प्रत्या
 दिके श्राद्धे अंतराष्टनस्तनके श्राद्धे चानंतरं कुर्यात्तन्मासे दुक्षयेपि वा मरीचिः
 श्राद्धविधेः समुत्पन्ने व्यविज्ञाते मते हनि एकादश्यां तु कर्तव्यं कथमपक्षे विशेषतः
 विशेषत इत्युक्तेः श्रुत्या यामपि श्राद्धे चान्तरविधेः एतदिति माधवः पृथ्वीचंद्रो

दयेत्वजिः तदहश्चेत्पुदुष्येत केनचित्सूतकादिना सतकानांतरं कुर्यात्पुनस्त
 दहरेवचेतितत्पर्वकालाभावे ज्ञेयं एतदवके आह परं यच्च देवलः एवकोदित्येतु
 संप्राप्तेयदिविघ्नः प्रजायते मासेन्यस्मिन्निधौ तस्मिन् आहं कुर्यात्प्रयत्नतः इतितदा
 पिमासिकपरमितिमदनरुत्ने हेमाद्रौ च इदमपि पूर्वकादासं भवेव्याध्यादौ विस्म
 रणे चैवं ज्ञेयं अथ भार्यारजोदर्शने तत्र मासिकमासेन कार्यं आह विधेदिजातीनां
 मासमाहं प्रकीर्तितं अमावास्यादि नियतं माससंवत्सराहते इति हेमाद्रौ हारीतो
 तैः व्याघ्रपादोपि आर्त्तवेदेशकालानां विप्रवे समुपस्थिते अममाहं द्विजैः
 कार्यं पूदः कुर्यात्संदेवहि दीपिकापि दर्शितुं भार्यैवेथामममद्विधिं प्रवासवि
 धुराद्याश्चाचरेषु द्विजाः बरुतस्तस्याकाभावे द्विजातीनां माममाहं विधीय
 त इति सुमंतु तैः पाककर्त्तृतरस्य तनात्ययामेनेति युक्तं मासिकानिस
 थिगानि अमावास्या तथादिकं अन्नेनैव तु कर्त्तव्यं यस्य भार्यारजसुलोति का
 लि कायो वचनाच्च कालादर्शितुं स्त्रियारजोदर्शने पितृदिने एव कार्यं पुष्य
 वत्सपि दारेषु विदेशस्थायनानि कः अन्नेनैवादिकं कुर्याद्देवायामेन न क
 चिदिति माधवीये लौगाक्षिस्मृतैः मरीचिरपि अग्निस्रप्रवासी च यस्य भा

रजस्वला आमश्राद्धं प्रकुर्वीत न तत्कुर्यात्स्मृते हनि कार्त्तमाजिनिः आपन्नो
 आदिकं नैव कुर्यादामेन कुत्रचित् अन्नेन दमायात् कृष्णे वा हरि वासरे प्रयो
 गपारजाते रजस्वलायां भार्यायां स्यादंयः परित्यजेत् सवेन रक्तामाश्रयेति या
 वदाहूतसंप्लवं मासिकानि सपिंडे च अमावास्या तथादिकं अन्नेनैव तत्क
 र्त्तव्यं यस्य रजस्वला देवयासिकनिबंधेऽपि भर्तुः श्राद्धे पंचमेहिकुर्याद्वापि
 रजस्वला पुत्रः पित्रोः प्रकुर्वीत मृता हनिमुचिर्धनः बालादशेऽपि रजस्वला
 गनो न निर्विदेशस्योऽथवादिके दर्शादा विवनामेन वा न्नैव श्राद्धमाचरेत् अ
 न्यत्रापि विदेशगोवापि गताग्निं को वा रजस्वलायामपि धर्मपत्न्या श्राद्धं मृ
 ताहे विदधीत पात्रैर्नामेन हेमनतु पंचमेहिकुर्यात्संप्लवं मासिकेऽपि यत्नमरीचिः
 आदिके समनुप्राप्ते यस्य भार्या रजस्वला पंचमेहनि तच्छ्राद्धं न तत्कुर्यात्स्मृते
 हनि माधवीये श्राद्धं तदानकर्त्तव्यं कर्त्तव्यं पंचमेहनीत्युत्तरार्धात्तदपुत्रसू
 कर्त्तव्यं श्राद्धविषयं अष्टुत्रात्तदभायां संप्राप्ते भर्तुरादिके रजस्वला भवे
 त्सात्कुर्यात्पंचमेहनीति श्लोके गौतमो नैः दैवे कर्मणि पित्रे च पंचमेह
 निमुध्यतीति प्रभासरं वडाच्च न च मुविच देवतत्र पंचमेहमर्थान् श्राद्धं

300-17

प्राप्तमिति वचनं व्यर्थं मैवं गर्भिणीस्तनकादिभ्यः कुमारी वा परोरिणी
यदाश्रुता न दान्येन कारयेत्पुनस्तस्य मिति हेमाद्रौ भाविष्योक्तेः अनुपनी
तासींश्रुताश्रुतामात्रे जाकारयेयुः स्वयं वा अमंत्रकं कुर्यादिति स्मृत्यर्थं सारा
चोत्पदा राकरणनिवृत्त्यर्थं च तस्यात्वं दुक्तं दिशा आशौचानंतराश्रुतकर्तव्यतावे
दकवाक्यवैयर्थ्याच्च अतः पत्नीपंचमेहनीति युक्तं यत्तु सप्ताहात्पितृदेवानां भ
वेद्योग्यान्नतावते इति तद्भेदे निवृत्त्यपरं इति हेमाद्रिभिन्नसर्वनिबंधासिद्धांतः हेमा
द्रिस्तु आद्यादौ स्त्रियासं हे वाधिकारात्तस्यारजोदुष्टायां न निवृत्तेरेकभावेण पंचमेह
निकार्यं प्रागुक्तमरीच्युक्तेः भार्यांतरसत्वे पुष्यवत्स्वपिशितिवचनात्तदिने मते स्या
हभायैतां सति पंचमेहदिवसे स्याद्वार्षिकं मासिकं पक्षत्रैर्विदुर्भाषा कस्तु धिक्
तेपत्त्यंतरेति वृत्ति कुर्यान्न हि तयं स्वमुख्यदिवसे इति तच्चिंत्यं सहाधिकारः स
हचक्रत्यावाकफलभक्तेन वापाककृत्त्वेन वा तद्यः तदभावात् पाणि
ग्रहणादिसहत्वकर्मस्थित्यस्याग्निसाध्यकर्मविषयत्वात् आदिकस्य च नि
रग्नेरपि पाकेनैवोक्तेः स्मार्ताग्नि साध्यत्वा नियमान् ताम्यपरुध्येति तत्पूर्वाक्त
वचनसत्वाच्च कथंच भार्यांतरसत्वे अधिकारः ज्येष्ठपातचित्तेन तरेति निय
मात् ज्येष्ठापरत्वे च नैव सिद्धे च न वैयर्थ्यात् न द्वितीयं अविभक्तभ्रातृप्येक

नि.सिं.

३०२

301

७४

स्यामुचितेन स्यात् न सिकारायते न तृतीयः प्रवासनिर्देशास्तुति कोरोगिणपादिष्व
य्यकरणापतेः प्रारभेत्तनवैपात्रैरन्तारंभचवांधवैरिति देवलोक्तावात्मनेयदात्
स्वस्यवांधवानांचपाककर्त्तव्योत्पादिविरोधाच्च अथतत्तत्तानियथाचाप्सुसीता
जनकनंदनीतिपाद्यादिस्निगात्याशस्सभाधापाकस्याच्चेतनतत्कस्याप्यनिवृत्ते
नेन हृदयनयुक्ताद्यभावात् पूर्वोक्तवचोविरोधाच्चयत्किंचिदेव पदपि आक्षेपाह
निसंप्राप्तेयस्यभार्यारजस्यला आहुतत्रैककर्त्तव्यं कर्त्तव्यं पंचमेहनीति श्लोकगोतम
पाठान्यथादर्शितः माधवीयेचतद्वशान्नक्षान्तरयुक्तं तेनापिनाभिपुनार्थसिद्धः
यस्यप्रेतस्येत्यर्थात् तेनात्रहेमादिर्विभ्रामेति वक्रवक्तव्यापिनोच्यते अथान्वारोणे
निर्णयः लोगाक्षिः मृताह्निसमासेन पिंडनिर्वपणं पृथक् नवश्राद्धं च दंपत्यार
न्वारोहण एव तु समासेन पिंडत्रेणादिपलकश्राद्धवद्धयोरेकः पिंडो विप्र
अपिंडशब्दः श्राद्धपरः नवश्राद्धं पृथ्वीचंद्रो अत्रमृताह्नित्येकवादिनभेदेदिनेकेवा
मृतनिधेरेकत्वेकालेक्यकर्त्तव्यं चाकचित्पथिरोहेतुतिथिरेकैव जायते एकपा
केन पिंडे केद्वयो गृहीतनामनीति स्मृत्यंतराम्च अत्येव्यिपक्षितौ भट्टैरप्युदाहृतं
अन्वारोहेतुनारीणामप्यनुश्रैवोदकक्रिया पिंडदानानक्रियातद्वश्राद्धं प्रत्यादि कं
तथा नवश्राद्धानि सर्वाणि सपिंडीकरणं पृथक् एकएववक्तव्यं सौगौरेकान्त

राम

三〇九

301-A तेऽति तिथिभेदेन वार्धिके पृथगेव १+

तत्र दीपं पृथक् कृते मासेन नवश्राद्धमेव पृथग्मिति तथा वार्धिके समासविधानाद
न्यत्र सर्वत्र पृथक् कृते मासेन नवश्राद्धमेव पृथग्मिति परिसंख्यान्यत्र पृथक् कृते पिका
र्थिकवोऽशश्राद्धतीर्थसंपिंडनात्त्वष्टक्यादिषु समासपवेति मदनपारजातनिर्ण
याम्नादयः अतः समासविधिवलाज्येष्टपुत्रस्य कर्तृत्वे सपत्न्या मातरचारोद्दे
तत्पुत्रे सत्यपितृवार्धिकादिकमाचिभक्तः सापत्न्यपुत्र एव ज्येष्ठः कुर्यात्त्रोरसः
वभ्यमागपृथ्वीचंद्रादिमतेन औरस एव मातुः पृथक् कुर्यात् वहीष्वपि सत्
२७ तेयं नृस्यलीसेनोपितामहचरणौप्यवमुक्तं यत्तु गार्ग्यः एकचिंत्या समाकृतौ
देयतीनिधनं गतो पृथक् श्राद्धं तयोः कुर्यादोदनं च पृथक् पृथक् ओदनं पिंडः तत्र
वश्राद्धविषयं यत्तु भृगुः मासमारोहणं कुर्यात् भर्तृश्रित्यापत्तिव्रता तांमृताहनि
संप्राप्ते पृथक् पिंडेनियोजयेत् प्रत्यक् च नवश्राद्धं ज्येष्ठसमापयेत् तद्येषां वार्धिक
मेकादिषु मुक्तं न द्विषयं प्रत्यक् मृताहनीत्यन्वयः नवश्राद्धपुगपदि तिदशीवर्गद्वय
वदेकतत्रेण पृथगित्यर्थमाह माद्रिः एतन्मृततिथिभेदविषयमिति पृथ्वीचंद्रनिर्ण
याम्नाद्याः देवयाज्ञिकेभ्यो व पाराशरसाधवस्तु गार्ग्यभृगवादिवचना लोमाक्षिवाको
समासेन पाक्नादितेभ्यो केन दशीवर्गद्वयवत् पृथक् श्राद्धं कुर्यात् नवश्राद्धं च तथेत्याह पृ
थ्वीचंद्रचंद्रिकादयस्तु ह्योरेकपिंडदानं लोमाक्षिवचनं चापदिषयं पृथक् पिंडदानं

नि.सिं.
३०२

302

तमुरव्यः कल्पः तदाह स्रष्टु पाराशरः आरुद्यमर्तुश्चितिमंगनापाश्रोतिमत्तुंरवत्
सत्त्वयुक्ता एकादशाहेतुतयोर्विधेयं प्रादुंष्टयकस्वर्गमापेक्ष्यसद्भिः एकत्वमिच्छं
ति यतिगृहीता एकादशाहादिषु येन ज्ञायंते तैस्वर्गमार्गविनिर्हृत्य कर्तुं सत्त्व
पाताञ्जराधिवासं भर्तृसहस्रतायात्तनाकलोकसमीपसती सार्हं द्वा द्वष्टयकृषि
गसैकत्वं तस्मिन् तयोः पृथगेव द्विकर्तव्यं प्रादुमेकादशाहिकं यानि प्रादुनि
सर्वाणि तान्युक्तानि पृथक् पृथगेति विश्वादेरीपि मातृगयावकासद्विमताहे
षु महालये प्रादुं कुर्यात् पृथक् देवं तं जंवानुगतावपि एकचित्यां समारुद्य तयोरे
कवर्हिषिपितरोपि ज्ञानं पृथग्दद्यात्पिदंत्वापत्तुतत्तन इत्यादि तस्मिन्ने रित्याहुः य
नुषङ्गिणाम्ने एकत्वं सागताभर्तुः पिंडे गोत्रे च सत्तके न पृथक् पिंडदानं तस्मा
त्पत्तायुविद्यते शतितद्वर्षादिपरं चंद्रप्रकाशेपि एकचित्यां समारुढौ दंयनी प्रम
नोपदि पृथक् प्रादुं प्रकुर्वीत पत्तुरेव क्षेपेहनि सर्वकर्मसु तस्मिन्ने सत्तानाम
विभक्त्या नोभार्याणां पतिना सह तं त्रेण श्रयणं कृत्वा प्रादुं स्वामि क्षेपेहनि सर्व
कर्मसु तस्यादो द्वितीयस्य ततः पुनः तृतीयस्या ततः कुर्यात्त्रिपातेष्वयं क्रम इति
सहगमने सर्वत्र प्रादुं मेकपाक इत्याह मदनरत्ने प्रचेताः एकचित्यां समारुढौ
म्रियते दंयनी यदि तं त्रेण श्रयणं कुर्यात् पृथक् पिंडं समाचरेत् पृथ्वी चंद्रोदयेषु

राम
३०२

वे अत्र भर्तृ रशौच मध्ये न्यदिने स्त्री मरणोपति मरणदिन गणया शौच पिंडदाने
 कादशादिकार्यानां त्रयाक्षणी सद्धिः स ते पतिमनुवेत्यपत्नीवेदनं संगत नत
 त्रयक्षणी कार्यापेक्षकादेव मध्यति युजेन्यो चाग्निदः तस्या स्तावदेवा सुविस्त
 योः नवश्राद्धं सपिंडं च युगपत्समापयेत् इति षडशीति मतात् यदा नारी विशेष
 निप्रियस्य प्रियवाद्यया तदा शौचं विधातव्यं भर्तृ शौचक्रमेण हीतिलच्छहारीतोक्तेषु भर्तृ
 शौचोत्तरमन्वारोद्गोतु अहमाशौचं ऋग्वेदवादात्साध्वी स्त्री न वेदात्मधातिनी ज्वाह
 शौचेन निर्वृते श्राद्धं प्राप्नोति शास्त्रत इति ब्राह्मोक्तैरिति पृथ्वी चंद्रायराकौ एतदन्वारो
 दगो एव न त्वेकटितौ ऋग्वेदवाद् ॥ इशानारविधयेत्यादि एतदसर्वार्णयराभित्यन्ये स्मा
 तगोडास्तदेसां न स्मृते पत्यो साध्वी तस्या दुकाद्वयमित्युपक्रम्य ब्रह्मे अहं शौचेन निवृत्ते
 इत्युक्ते भर्तृ शौचोत्तरमन्वारोद्गो अहः स ह गमने तु पृथिदशादि पिंडास्तदशापि स
 व तथा वज्रिकन मूलपाणि मुद्दिन त्वधृत व्यासः संस्थितपंतिमालिङ्ग्य प्रविशेद्याहुताश
 नं तस्या पिंडादिकं देयं क्रमशः पतिपिंडवान् अचिन्वा पिंडदानं तु यथा भर्तृ दिने दिने तदप्या
 रादिकार्यस्या तस्मात्सनात्मधातिनीति विष्णुक्ते अथ क्वितौ त भर्तृ शौच मध्ये तद
 ध्वं वत्या अहं दश पिंडाः अन्वितयाः प्रदातव्या दश पिंडास्तदहं त्वा स्ताम्य शौचे व्यती
 ते तु तस्याः श्राद्धं प्रदीयते इति तत्रैव पैठीनसि स्मृतिः भर्तृ शौचोत्तरमन्तोत्तु चतुर्थदिन श्रा
 द्धं मूलपाणिना त्विदमग्निपुराणीयत्वेनोक्तः युद्धस्तस्य सद्यः शौचे त्वारोद्गो त्रिरात्रं ।

एकचित्तौत्तसंस्थितयतिमिति प्रागुक्तव्यासोक्तेः सद्यः शौचमित्याहुः अन्यसपिंडशौचमध्ये
 न्वारो ह्यंगत्वनारां वयमेव च अचिताद्यां गत्वा न अन्येतरजो वत्याः सनिकाया अगम
 ननिवेधादिततराशौचस्यानिवेधमाहुः तन्मूलवचनं चिनाचित्यमेव स्मृत्यर्थसारे सह
 गमने सर्वत्र आहुपिंडादोपाकैक्यं कालैक्यं कर्तैक्यं चेति या तु यतिमुद्दिश्यान्वकालेन्यति
 यावन्वारुटातस्या आहुतं तत्क्षयतिथौ कार्यं न भर्ततिथौ पारणे मरणे दण्डातिथिस्ता का
 लिकी स्मृतेति स्कांटे तिथौ कैच जायते इत्यादिवचना चेति मदनपारिजात एष्वी चंद्रा
 दयः अन्येतु न स्याः यतिमरणे न मृतप्रापत्वात् सहागतः एष तो वात इतीत्यनेन यदि न
 स्या आहुं प्रदानं व्यप्य कृपत्युः क्षये ह निश्चिस्मृत्यंतरात् अगतः एष तो वापित इती
 मियते यदि न स्या आहुं प्रयुते कार्यं यत्पुरेव क्षये ह नीति पुराणसमञ्जसा च भर्तति
 यावेवेत्याहुः अत्र मूलचित्यं अत्र विशेषेदेमाद्रो स्मृत्यंतरे माता मंगलसूत्रेण स्थिते
 यदि न द्विने उद्दिश्य विप्रयत्नैः तां भोजयेच्च सुवासनी अथ आहुसंयति निर्णयः तत्र पित्रो
 र्मृततिथौ काले मरणं क्रमेण दर्शयतीत्यवज्ञेयं आहुं कुर्यात्तौ ययो ज्ञाने तु पितृ पूर्व
 कुर्यादिति हेमाद्रिः माधवादयस्तु पित्रो आहुं समं प्राप्तेन वेपथुधिते पिवापितृ पूर्व
 सतः कुर्यादन्यत्रासतियोगत इति काष्मीतिनः स्मृतेः सर्वत्र पितृ पूर्वभिन्नप्रयोग
 माहुः पार्वणौ कोदिष्टं सपाते माधवीये जावालः यद्येकत्र भवेयानामेकोदिष्टं च पा
 र्वणं पार्वणं त्वभिनिर्वर्त्य एकोदिष्टं समाचरेत् गृहदाहादिनियुगयन्मरणे तु भृगुः

मि

राम

३०३

एक को लेगतास्तत्तांवाहनामयवाहयोः तंत्रेण श्रयाणं कृत्वा कुर्यात्प्राङ्मध्यकपयक (
 पूर्वकस्य मृतस्योदो द्वितीयस्य तत पुनः तृतीयस्य तत कुर्यात्संनियानोद्ययक्रमः ऋष्य
 ऋगभगः भवेद्यदि पिंडानां पुगयत्तरां तदा संवधासति मामालोच्य तक्रमाद्वाहमाच
 रेत् गर्भे एकेनेव त्रपाकेन श्राद्धानि कुरुते न हि विकरं त्येकत कुर्यात्पिंडान् दद्यात्त ए
 यकपयक श्रानुगमने वहाससपिंडनादौ विरोधं वक्ष्यामः श्रुतिः वहुनामयवाह्या
 भ्यां प्राङ्मदेपात्तमयते हति तंत्रेण श्रयाणं कृत्वा प्राङ्म कुर्यात्पयकपयक इदं च पयक
 पाकेन भिन्न श्राद्धांशकौ पयकपाकेन संवधासत्या श्राद्धभेदस्तु मुरमः यक्षः एकत्रैव
 दिने श्राद्धद्वयं प्राप्तेयदा तदा वरेदेव पुरावर्ध्यात्पितुर्मातुश्च तत्ततः एकस्मिन्नयः करोत्या
 क्रिद्वयोः श्राद्धपदा द्विजः तदा पूर्वमृतस्योदो कृत्वा स्वात्वा यथाविधिः पश्चात्पश्चात्
 मृतस्यैव पयकपाके समाचरेत् नैकस्मिन् दिवसे श्राद्धे त्रयाणां कुत्रचिद्विजः एकः
 कुर्यात्तथा प्राप्ते अन्ये भ्राता समाचरेत् भ्रातृव्यविद्यमाने तत्तत्परे हि समाचरेत् अन्य
 श्राद्धादहंता स्यात्प्राद्धसर्करकद्रवेत् इत्याश्रलायनोक्तेरिति पृथ्वीचंद्रः कृत्याय
 नः देवहूनिमित्तानि जायेरत्नेकयासरो नैमिषिकानि कार्याणि निमित्तानि तत्पु
 नुक्रमात् जावालिः प्राङ्म कृत्वा तस्यैव पुनः प्राङ्म न तदिने नैमिषिकं तत्क तै
 व्यं निमित्तानुक्रमोदये कालादशै नित्यदार्शिकयोश्चैव कुंभमासिकयोरपि स

रिक्तस्य युगादेः श्रुतिरिक्तकालभ्ययोगयोः दार्ष्टिकस्य च मन्वादेः संयातेः श्राद्धकर्मणाः
 प्रसंगादि निरस्यापि सिद्धे रत्नरमाचरेत् अस्य देवताभेदे वा दमाह स एव नित्यस्य चो
 दकं भस्य नित्यमासिकयोरपि दर्शस्य चोदकं भस्य दार्ष्टिकमासिकयोरपि नित्यस्य वा
 द्विकस्य वा द्विकस्यापि दार्ष्टिकद्विकयोरपि युगाद्याद्विकयोरपि युगाद्याद्विकयो
 स्तथा प्रत्याद्विकस्य वा लभ्ययोगेषु विहितस्य च संयाते देवताभेदाद्वा दस्युगमंसमा
 चरेत् निमित्तानि गतिश्राद्धपूर्वा नुष्ठानकारणं पित्रोस्तु पित्र्यपूर्वत्वं सर्वत्र श्राद्ध
 कर्मणि माधवीये स्मृतिसंग्रहे काम्यतंत्रेण नित्यस्य तत्र श्राद्धस्य सिद्धिर्नि अथ श्रा
 द्वांगतर्पणं पारिजाते पृथ्वीचंद्रोदये गर्गः पूर्वतिलोदकं दत्त्वा ग्रामश्राद्धं त्र्यंकारयेत् पु
 त्र्यदेन भवेत् पूर्वपरे हनि तिलोदकं पक्षश्राद्धे हिरण्ये च अष्टोत्तुष्टये तिलोदकं न च नित्यत
 र्पणस्यैवाप्यपरे हन्युत्कर्षः न त्र्यंश्राद्वांगतर्पणमस्तीति वाच्यं यस्तर्पयति तिलान्चिप्रः श्राद्धं
 कृत्वा परे हनि पितरस्ते न तृप्यन्ति न चैतृप्यन्ति वै भृशमित्यादि गर्गेण फलनिर्दायवादाभ्या
 गलोक्तेः श्राद्धं प्रक्रममाहार्थिकं सहस्रत्रारदीयेष्व्यादिकं प्रक्रम्यापरे छुः श्राद्धं कृत्वा त्र्यंश्रा
 नतर्पयेत् पितरन् तस्य ते पितरकुट्टाः श्राप्य दत्त्वा जजंति हि पितृशब्दश्रुत्वा श्राद्धेऽप्यवर्गीयतः
 तेन तर्प्यार्थस्य यश्च पुरोडाशवागवत्प्रसरप्रहरणवच्चैष्ट देवतासंस्कारकतातेत्यादि
 कदिने नित्यं स्वपित्रादितर्पणं कार्यमेव श्राद्वांगभूतस्यैव परे छुरुक्तेः तदुक्तं पूर्व
 द्वांगतिलं दद्यन्निषिद्धेऽपि परे हनि वर्गेकस्य वचोयेषामन्येषां नुविवर्जयेत् कचि

304-A

विशेषमाह गरीः कृष्णे भाद्रपदे मासि श्राद्धं प्रतिदिनं भवेत् पितृणां प्रत्यहं कार्यं निधि
डाहे पितृणां तिलतर्पणं निधिडाहे पीत्युक्तैः सकृन्महलये श्राद्धादश्राद्धात्तत्र
हि श्राद्धसप्तमी निर्देशादं गिता स्फुटं वतत्र जायन्ति इत्यत्र मद्रं प्रातः सवने इत्यादि
तत्र श्राद्धावा दोषद्वयं नारदीये वदति श्राद्धे सपिंडो च प्रेत श्राद्धे नृमासिके संवत्सरवि
मोके च न कुर्यात् तिलतर्पणं तदयमर्थः दर्शविप्रनिमंत्रणोत्तरं पाकारं भोत्तरं वा
श्राद्धप्रयोगस्यारघत्वात् त्रस्य यज्ञोत्तरं नित्यं तर्पणेनैव श्राद्धो गतर्पणस्य नंत्रेण प्रसं
गेन वा सिद्धिः ततः पूर्वैश्च देवा च नरं वा त्रस्य यज्ञकेरणे श्राद्धागतर्पणे प्रथमं कार्यं
पित्रोर्वीर्यैकैस्तिलतर्पणं तिलवर्जं तिलकार्यं नैव श्राद्धदिने कुर्यात् तिलैस्तु पितृत
र्पणं श्राद्धे कृत्वा पराद्धे च तर्पणं तिलैस्तु सदेति वचनात् सप्तम्या भानुवारे च माता पित्रो
र्यज्ञैस्तु तिलैस्तु तर्पणं कुर्यात्संभवेत् पितृघातक इति स्मृतिरत्रावल्यां वदति मन्त्र
कैश्च श्राद्धं नित्यं तर्पणं तिलमात्रं निषेधः न तु तर्पणं स्य तिलैस्तु तर्पणमाचरेदिति तत्परे
छुः श्राद्धागतर्पणं विषयमिति केचित् श्राद्धाशक्तस्य तस्यानायत्र तर्पणं विषयमि
ति युक्तं सकृन्महलये परे छुस्तर्पणं श्राद्धका सत्सप्तम्यष्टमी श्राद्धयोरंते न देवर्ग
द्वयस्य श्राद्धे च कथं तु महावर्गस्यापि तीर्थश्राद्धे दर्शवता मायावर्षादिष्टका
वदंते अनेक श्राद्धसंभवेऽप्येवमपि नित्यं संगतिं सिद्धिस्तदा तदायमेव तर्पणं तत्र
चित्तु श्राद्धसमसंख्यत्वे आदावंते या विषमसंख्यायां वदन्तरोच्यते तस्माच्छु

डांगत्रयं सिसुं तिद्विधिः संग्रहोस्तात्वातीरं समागत्य उपविश्य कुरासने सतर्पये
 त्पित्तं सर्वान्स्त्रात्वा वसुंधारयेत् तर्पणोत्तरं नित्यस्नानं कृत्येत्यर्थः अथ सव्यंततः
 कृत्वा सव्यं स्नात्वा व्यस्ततो नाम गोत्रस्य धाकारैर्द्वितीयं तेन तर्पयेत् अत्र वस्त्रादि
 रूपतो ज्ञात्वा तर्पणसारे वसुंधादितिसुतान् प्राद्वर्ष्य तर्पयेत्पितृन् तच्च वरुचानां
 दक्षिणेनैव अनादेशे दक्षिणे प्रतीयादितिसुतान् अत्र प्रत्यंजलिमंत्रादितिः केचित्तु
 निर्वापवत्संध्या र्थदानवच्चद्रव्यभेदात् अवघाते वेदिप्रोक्षणादौ तु द्व्येकत्वात् न मंत्रादितिः
 केचित्तु परिग्रहमंत्रवाक्यमाणां नुवादित्वेन करणत्वाभावात् सक्तदिधितिं त
 न्नतत्र यूपद्रव्यैकात्परि वीरसीति करणीभूतमंत्रान्तरसत्त्वादन्वातरेण व्यवधना
 यपत्याभयोः करत्वा योगात्कृत्य भेदेन विकल्पायोगाच्च क्रियमाणानुवादित्वेन
 तत्र तथेति वौधायनादिवचनात् करत्वमेव तेनाहतिरेव युक्ता एवं नित्येपियत्संग्र
 हनाम्नापठन्ति पित्रोः क्षयाहेसंप्राप्तेयः कुर्यान्नित्यतर्पणं आसुरैतद्भवेत्कृदं तत्रोच्य
 रुधिरं भवेत् सर्वदानर्पणं कुर्यात् ब्रह्मयज्ञपुरःसरं मृताहेनैव कर्तव्यं कृते चेन्निष्क
 लं भवेदिति तत्समस्तत्वे सति लविषयं यच्च पठन्ति कपिलः मन्वादिषु युगाद्यासु द
 र्शसंक्रमणे च पौर्णिमास्यो व्यतीयाते दद्यात्सर्वं तिलोदकं अर्घ्यादयेगजघ्रायेष्वष्टौषु
 च महालये भरण्यो च मघाश्चादृतं तेन तर्पणं विदुः शो नकः मातापित्रोर्मृताहे

उपरेह निति लोदकं कारुण्यप्राद्विषये सधा तिलोदकं एतन्निर्मलं अथ तिलतर्प
 णानिवेधः गार्ग्यः भानोभोमेत्रयोदरणानंदभृगुमघासुच पिंडदाने मृदास्नानं न कुर्यात्ति
 लतर्पणं स्मृत्यर्थसारे विवाहव्रतकृडासुवर्धमर्धतदर्थकं अर्धतदेव त्रयोसत्यां च
 तन्मासिनेत्याहुः तिलतर्पणं हेमाद्रौ मरीचिः सप्तम्यारविचारे च गृहे जन्मदिने तथा ।
 भरणं भानुवारे च गजघाया ह्येतथा अनयद्वितीये चैव मन्वादिषु पुगादिषु पिंडदानं
 मृदास्नानं न कुर्यात्तिलतर्पणमिति तच्चित्यं मानीयमप्यत्र तिले विमिश्रं दद्यात्पितृभ्यः
 प्रयत्नो मनुष्य इत्यादि विरोधात् अत्र अपवादः पृथ्वी चंद्रोदये तीर्थेति पितृविशेषेषु गंगा
 योपेतपक्षके निषिद्धे यदि दिने कुर्यात्तर्पणं तिलमिश्रितं स्मृत्यर्थसारेपि तिथितीर्थविशे
 षेषु कार्यप्रेतपक्षके निषिद्धे यदि दिने कुर्यात्तर्पणं तिलमिश्रितं स्मृत्यर्थसारेपि तिथितीर्थ
 विशेषेषु कार्यप्रेते च सर्वदेति गोभिलः तिलाभावे निषिद्धाहे सवर्णरजतान्वितं तदभा
 वे निषिद्धे च तदभ्रं मंत्रेण वा पुनः पतितस्य तिलोदकं चक्ष्यामः अथ तद्विप्राद्वंतन्निमित्तं
 पृथ्वी चंद्रोदये ब्राह्मे जन्मन्यथापनयने विवाहे पुत्रकस्य पितृन्नांदी मुखानामतर्पद्विधि
 पूर्वकं वेदव्रह्मेषु चाधानाय त्रपुंसवनेषु च नवात्रभोजने स्नाने डोपाठप्रथमात्रे वेदेवारा
 मतडागादिप्रतिष्ठास्तसवेष्टुचराजाभिषेके वालात्रभोजने वृद्धिसंततकान् वनस्थाद्या
 अनगध्नं सर्वेषुः सद्यएव च पितृस्वीकृतिविधिना तर्पयेत्कर्मसिद्धये विष्णुपुराणे यज्ञो

द्वारप्रतिष्ठासमेखलबंधमोक्षयोः पुत्रजनमहयोत्सर्गवृद्धिआहुंसमाचरेत् तत्रेवनामकर्मणि
 बालानां कृशकर्मदितये तु क्ते निष्क्रमात्रप्राशन्नयोर्न आहुमिति मेयिलाः तन्नपूर्वोक्तवि
 रोधात् नानवेति निषेधात्सुतोत्पत्तौ तस्या आहुमन्नप्राशनिकेति राजमानेडाच्च यत्रुद्धदोग
 परिशिष्टं सूर्येदोः कर्मणि गियेतु तयोः आहुं न विद्यत इति तत्रेवामेवेति कल्पतरुवद्वच
 कारिकायां स्यादभ्युदधिकं आहुं प्रकुर्वेति द्विजाहृदि निमित्तकं अन्यैः बोधरासंस्कारा
 वणादिष्वपीष्यते वाय्याद्युद्यायनादीतुकुटुः पूर्वनिमित्तकं बोधदेवकालादशौ सी
 मंतन्नतचौ लनामकरणान्नप्राशनोपायनस्नानाधानविवाहयज्ञतनयात्यत्रिप्रतिष्ठासु
 च पुंसुत्यावसथप्रवेशेन सुताप्रास्यावलोकाश्रमस्वीकारादि निमित्तमिषेकदयिताद्य
 नोबनादीमुखं यत्रुकामधेनो जलारायप्रतिष्ठायां हयोत्सर्गदिकर्मसु वत्सराभ्य
 तरेषिजोहंषस्योत्सर्गकर्मणि वृद्धिआहुं न कुर्वीत तदन्यत्र समाचरेदिति तत्रजलाराये
 वृद्धिआहुस्य निषेधो न तु कर्मिण्येति केचित् अन्येत्यस्य निर्मूलतामाहः आहुकोमुद्या
 निर्णयामते च मास्ये अन्नप्राशे च सीमंते पुत्रात्यतिनिमित्तके पुंसवचन निषेधे च न व
 वेरमप्रवेशने देवब्रह्मजलादीनां प्रतिष्ठासु विशेषतः तीर्थयात्राहयोत्सर्गे वृद्धिआहुं
 प्रकीर्तितं इदं चावश्यं कं हृदौ न तर्पिताये वैपितरो ये र्हस्थभिः तद्वत्तमफलं ते यु
 मासुरो विधिरेव स इति शान्तातपोक्तेः अत्र आहुजपं स एवाहमाह आहुतसर्वस्या
 न्यितृणां तदंतरं न तो मातामहानां च हृदौ आहुजपं सृते तत्रकालमाह पृथ्वीचंद्रो

306-19

दयेगार्ग्यः मातृश्राद्धं तु पूर्वेषुः कर्माहनिर्तुं पितृकं स्मृतं ततो मातामहानां च तदोश्रा
द्वयं स्मृतं अशक्तौ ह्यदिशानातयः पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धं मध्याह्ने पितृकं स्मृतं ततो
मातामहानां च तदोश्राद्धयं स्मृतं अत्राव्याशक्तौ स एव पृथक् दिने च रात्रौ
देकस्मिन् सर्ववासरे श्राद्धं त्रयं प्रकुर्वीत वेदेषु देवतुतां त्रिकमिति ह्यदिमनुरति अत्रा
भेभिन्नकालानां नादीश्राद्धत्रयं बुधः पूर्वद्युर्वे प्रकुर्वीत पूर्वाह्ने मातृ पूर्वकं अत्रम
हत्सु पूर्वद्युस्तदहस्येष्टिनिगृह्य परिशिष्टाद्यावस्था ज्ञेयाः तच्च प्रातरेव पार्वणं चा
पराह्ने तु प्रातिहृदि निमित्तकमिति शानातयोक्तैः अत्र प्रातः रात्रिः सार्धं प्रहरपरः प्रहरा
ध्यर्धसंयुक्तं प्रातदित्यभिधीयत इति गर्गिरिति पृथ्वी चंद्रः इदं च पुत्रजन्मातिरिक्तवि
षयं तदाह त्रिः पूर्वाह्ने भवेत्तद्विनिना जन्म निमित्तकं पुत्रजन्म निषकुर्वीत आ
हं तत्कालिकं बुध इति एतदनियतनिमित्तपरं नियतेषु निमित्तेषु प्रातस्तद्विनिमित्त
कं तेषां मनियतत्वे तु तदानंतयमिष्यते इति लौगाक्षि स्मृतैः आधानां गानां दीश्राद्धं
तु पराह्णव आमश्राद्धं तु पूर्वाह्ने सिद्धान्तेन तु मध्यतः पार्वणं चापराह्णं तु ह्यदिश्राद्धं
तथाग्निकमिति निर्णयान्ते गालं वाकं नादीमुखवाक्यं प्रोतराग्निकत्वं पराह्णं
इति विष्णुः कृते अ इदं मातृ पितृ मातृ मातामहादिक्रमेण न वदेव्यकार्यं तत्र माताम
हादिक्रमेण सपत्नीकाः ह्यदिप्रमातामहानां सपत्नीकमिति पृथ्वी चंद्रोदयेगारुडे
नक्त्यगाधरूपेण पाठान् हेमाद्रौ शंखः नादीमुखोभयोदेवेभ्यः प्रदक्षिणं कुशास

नं पितृभ्यस्तन्मुखेभ्यश्च प्रदक्षिणामिति स्मृतिः यत्तद्विधिविशिष्टः नादीमुखे विवाहे
 च प्रपितामहस्य सर्वकं नाम संकीर्तयेद्विधानेन न्यत्रापि तस्य सर्वकं यच्च स्मृत्यर्थं सारोक्तं
 द्विमुख्यास्तु पितरो ह्यद्विष्टा द्वेष्टुभंजने इति यच्च गार्हपत्येन क्रमप्रतपादनं तद्वारं
 तद्विषयं पितृभ्यः पितामहेभ्यः प्रपितामहेभ्य इति बह्वचपरिशिष्टकान्यायने
 चानुलोम्यामानात् पृथ्वीचंद्रोदये व्येवं यत्तु केचिद्वद्वपदं पित्रादिषु प्राजुंजने त
 त्र अन्यस्मद्वद्वसादानामरूपाणामगोत्रिणं अनुमामाति लाघेऽनुनादी आहुतस
 मवदिति पृथ्वीचंद्रोदये संग्रहोक्तेः नेच निषेधादेव विधिः कल्प्यत इति व्यावाच्यं प्रोक्षापदी
 आहुते प्रपितामहात्परेषां बह्वपित्रादीनां देवतात्वात् नानादी आहुतसाम्येनेहा पितृशोभेति
 धेधात् गोत्रनामादि निषेधस्तु शुभाधी प्रथमांतेन बह्वो संकल्पमाचरेदिति उपक्रम्य
 नस्मद्वद्विराजानामित्युक्तेः संकल्प आहुत परः सपिंडकेतु सर्वं भवतीति प्रयोगपारिजातः
 गोत्रनामभिरामं अपितृभ्योर्ह्यप्रदापयेदिति धंदोगपरिशिष्टे तद्विधानात् यत्तु त्रा
 ह्ये पितापितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः त्रयोऽयं सुरवाद्येते पितरः परिकीर्तित्वा जे
 भ्यः पृथ्वरायेव पुजावंतः सुरैवेधिताः ते तु नादी मुखानां दी समृद्धिरिति कथ्यते इति
 यच्च मार्कंडेयपुराणे येस्युः पितामहा इर्धुते तु नादी मुखवास्मृता इति तज्जीवपित्रादि
 त्रिककर्तृकवद्विविषयं तेन तस्येदं मा वरपकं यत्तु विष्णुः पितरि पितामहे प्रपिता
 महे च जीवजितेव कुर्यादिति तदुशीदिविषयतिकल्पनरुः सदनपारजाते व्येवं है

माद्रिक्तनादीसुखानांश्राद्धंतु कन्याराशिगतेरवो योर्णिमास्यांतु कर्तव्यं च राह्वचने
 यथेति प्रोक्ष्यपदीश्राद्धे कवाक्यत्वात्तत्रैव पूर्वेषां देवतात्वमित्याह यत्तु शातातयः १
 मातृश्राद्धंतु युगेः स्याददेवं प्राप्नुवेः यथेति तद्विन्नप्रयोगमातृश्राद्धद्वयेदेवविक
 ल्यां प्रयोगे कंचेत्तदेव नियमरतिहेमाद्रिः एतच्च मातृपुत्राएवैकं कार्यं अकार्यं
 कृत्वा मातृपुत्रांतु यः श्राद्धपरिवेषयेत् तस्य क्रोधसमाविष्टादिसामिधंतिमातर
 इति शातातयोक्तेः कैर्मिपि पुष्टेर्धैः सनैवेद्ये भूषणैरपि यजयित्वा मातृगणं
 कुर्याच्छ्राद्धत्रयं बुधः छंदोगपरिशिष्टे कर्मादिषु सर्वेषु मातरः सगणाधियाः यजे
 नीयाप्रयत्नेन यजिता यजयंति ताः प्रतिप्राप्तुं च शुद्धासुलारिवताचापठादिषु अपि
 वासतपुंजेषु नैवेद्ये अर्पयं विधेः कुडालगनावसोर्धारां सप्रधरांधतेन तु कारयेत्येव
 धारां वानातिनीचानचोद्धितां आपुष्याणि च्छरांत्यर्थं जप्त्वा तत्र समाहितः यज्यः
 पितृभ्यस्तनुश्राद्धदानमुपक्रमेत् अत्र सर्वे धितिग्रहणाद्गृह्यततद्विकारेष्टपि
 नित्यं श्राद्धं नानिदं तपितृनुश्राद्धे कर्म किंचित्समाचरेदिति शातातयो अत्रैव च
 सोधारात्तद्वारवीयानां नियता अन्येषां चिनि यतावरुण्य वारवगृहोक्तमित्युक्तेः
 करणोत्तमुदयः यन्नामोतं स्वराववायामित्युक्तेः आपुष्याणि आनोभद्रा इत्या
 दीनिषेज्य इति मात्रादित्रिकोपन्नलक्षणमिति यद्यीचंद्रः छंदोगानां बद्धेवत्यमन्ये
 षानच देवत्यमित्याशार्कः मम तु मते को किल मत्तानुसारिण मातृमात्रामहप्र

मातामहा इति माता सहेवमातामहा आहुकराणां द्विषयमिदं वदन्ति मातरः
 सत्रैवोक्ताः गौरीयया राचीमेधासावित्रीविजयाजया देवसेनास्वधास्वहामातरो
 लोकमातर द्युतिपुष्टिस्तथातुष्टिरात्मदेवतया सह गणेशेनाधिकायेता ह द्वौ पूज्या
 आतुर्दश मातरो लोकमातर इति सर्वविशेषणं तेन चतुर्दशात्वं यदा बोधोति याठस्तदा
 देवतांतरं चेदकायं चतुर्विंशतिमत्वेत्यन्या उक्ताः त्रिस्रः पूज्या पितुः पक्षेति सौ माताम
 हैतथा इत्येतामातरः प्रोक्ताः पितुर्मातृस्य साष्टमी आसां जीवने प्रत्यक्षं पूजनं मृतानां
 मृतानां त्यक्ततपुं जेष्टि ति हेमादिः ब्रह्माण्डाद्यास्तथा सप्तदुर्गा दोत्रगणगधिया त ह द्या
 दौ पूजयित्वा तु पश्चान्नां दीप्तु रवान्पितृन् मान्त्पूर्वान् पूजतो मातामहानपि मातमहा
 स्ततः केचिद्युगमाभोज्यादिजातय इति अत्र ह्यदशदेवतस्य देशाचारतो व्यवस्था ब्रह्मा
 ण्डाद्याः ब्राह्मीमाहेश्वरी चैव कोमारी वैष्णवी तथा वाराही च तथैंद्राणी चामंडा सप्तमा
 तरः इत्यपरा क उक्ताः अत्र चैलीदीनां योगयधेतंत्रतोक्ता धंदो गपरिशिष्टे गणेशः क्रिय
 माणां स्तान्भ्यः पूजनं सक्तं सक्तदेवभवेद्ब्रह्मादौ न पृथमादिषु मातृभ्य इति वक्ष्य
 र्थं चतुर्थी गणेशः एकानेकपुत्राणां संस्कारेष्वेक दिने एकं देशकालकर्मैक्यादित्यर्थः त
 था असक्तघानिकर्माणि क्रियेरन् कर्मकारिभिः प्रतिप्रयोगेनैव स्युर्मातरः स गणगधियाः
 कमश्चित्रावपिकुत्र आहुं कार्यकुत्र नेत्रनेत्युक्तं तत्रैव आधाने होमयोश्चैव वैश्वदेवो
 तथैव च बलि कर्मणि दरी च पूर्णया सतथैव च नवयज्ञे वज्रज्ञावदंत्ये वं मनीषिणः

एकमेव भवेद्वाङ्मेतेषु नय पक पयक एषु प्रतिप्रयोगं नावर्त्तते किंचिदो एतद्विन्नेसोमया
 गादौ तु प्रतिप्रतियोगमावर्त्तत एवम्वाङ्मित्यर्थः क्वचिदादावपि निषेधमाह स एवानाएका
 सुभवेद्वाङ्मेति न सोऽतीतातकर्मशेषितागतकर्मसु विवाहादिः कर्मगणाय उक्ते
 गर्भाधानमुभयस्य वाते विवाहावेकमेवात्र कुर्याद्वाङ्नादौ कर्मणः स्यात् सौख्यं तीमभ्यु
 दयेत्युक्तं कर्म कात्यायनोक्तस्य वाङ्मयाक प्राधान्यात् तस्य च जातस्याङ्गे तदद्यात्तु यकात्रं ब्रह्म
 रोष्टृतिनिषेधात् जातकर्मणि नां दीप्ताङ्गं आमानेन वा कार्यमित्याशङ्कः गोडास्तु जातकर्म
 एव निषेधः पुत्रजन्मनिमित्तं तु कार्यमेव जन्मन्यथोपनयने इत्युक्तेः नैमित्तिकमथोक्ते
 श्राद्धमभ्युदयात्मकं पुत्रजन्मन्यथोपनयने इत्युक्तं नित्यकार्यं जातकर्मसमं नैरिति मार्कंडे
 यपुराणाच्चेत्याहुः सारलतायां श्राद्धविवेके चैवं एतेन जातकर्मणि कालान्तरे श्राद्ध
 निषेधो न जन्मदिने इति वाचस्पतिमतं परात् अत्र निषेककाले इति वचनात् गर्भाधा
 नो न निषेधो प्रोक्षितति प्रोक्ष्येत्तद्वदनुपतिष्ठते पुत्रं दृष्ट्वा जपतीति विहितं कर्म वि
 वाहादिर्गर्भाधानां तो योगद्वयप्रवेशादतिहोमचतुर्थी कर्मादिः कर्मसम्पत्तुः सत्त्वं
 कारेण तत्रापि प्रतिकर्मनेत्यर्थः अन्येपि हलाभियोगादयोऽप्यावादविषयास्तत्रैव
 तेया अप्रचारा नोच्यंते अथात्राधिकारिणः विष्णुपुराणे जातस्य जातकर्मक्रिया
 कांडमशेषतः पितापुत्रस्य कुर्वीत श्राद्धं मभ्युदयात्मकं अत्रैकेचित् जीवत्पितुः साने
 रेव ह्यदिश्राद्धेधिकारः न तु निरगतः न न जीवत्पितृक कुर्याद्वाङ्मग्निमृतो द्विजः ये

भ्यएवपितादद्यान्नेभ्यः कुर्वीतसाग्निकः पितामहेभ्योवकुर्याज्जीवतिसाग्निकः साग्निको
पिकुर्वीतजीवतिप्रपितामहेइतिचंडिकायांसुमंतुक्तेरित्याहुः प्रयोगपारजातेव्यनाहिता
ग्निर्नकुर्यादितोदव्याख्याते तत्र अनाग्निकोपिकुर्वीतजन्मादोहृदिकर्मप्रभ्यएवपिता
दद्यात्तानेवोदिरपतर्पयेदितिहारीतोक्तेः सोमंतवंतुहृदश्राद्धंभिन्नश्राद्धपरमितिउक्तं
दनरात्रे पिंडपितृयज्ञपरमितियष्टीचंद्रः निर्णयामतेतु हारीतीयेनाग्निकोनाहिताग्निः
रभिप्रेतः पूर्ववचनेतुसाग्निः श्रोताग्निस्माग्नीग्निश्चोच्यते तेनोभयाग्निर्हानस्यनेत्युक्तं
तत्रयद्विक्तदिशगतिर्संभवेऽनाग्नियदस्यस्माग्नीग्निश्चोपरत्वेमानाभावात् वश्यमा
णानित्यसंयोगविरोधात् पितरोजनकस्येज्यायादृतमनाहितेसमाहितः ब्रतः यश्चा
त्स्वानयतेतपितामहानितियष्टीचंडोदयेयमवचोविरोधाच्च अथराकोपिसमावर्तते
स्वचारीस्वयमेवनादोश्राद्धंकुर्यादित्याह अतः पूर्वमेवसाधुवापदेवोप्येवमाह यत्सुमंत
जीवत्यितुः पुतनामकर्मोदोहृदश्राद्धं हारीतीये जन्मादोऽत्यादिशब्देनतत्प्राप्तावपि
उदाहेपुत्रजननेपित्रेष्मांसोमिकेमरेव तीर्थेब्रह्मण आयातेवडेतेजीवितः पितुरि
तिमेत्रपरिशिष्टे उदाहेएवतस्योपसंहारात् एवंयत्रसुतसंस्कारादिपदंतदप्युदाहा
दिपरमेवेति तत्र उदाहपदस्यस्वविवाहपरत्वस्यापिसंभवात्पुत्रविवाहपरत्वेमानाभा
वात् अतो जन्मादिविति सर्वसंस्कारसंग्रहः तथाकात्यायनः स्वपितृभ्यः पितादद्या
त्सुतसंस्कारकर्मसपिंडानोदहनात्तेषां तस्यात्तावेतु तक्रमात् सुतानांचोलादिसंस्का

राम
३०५

309-A

रेयुपितापितृभ्यः पिंङ्गात्प्राङ् पिंङ्गोरादरश्चैवामिति दर्शनात् औदहनादिव्याप्यते
दद्यात् विवाहप्रथमः नादीप्राङ् पिता कुर्यादघोषाणि गृहे बुधः अत ऊर्ध्वं प्रकुर्वी
तत्त्वयमेव तनादिकमिति स्मृतिः तस्य पितरभावे तक्रमात् असंस्कृतास्तसंस्कार्या
भ्रातृभिः पूर्वसंस्कृतैरित्यः कर्तृक्रमः तेन क्रमेण ज्येष्ठभ्रात्रादि दद्यात् इति चंद्रकाद
यः हेमाद्रिस्तु तस्य पितरभावे यः पितृव्यमातुलादिः संस्कुर्यात् स तक्रमात् संस्कार्या
तक्रमाद्यान्तस्तपितृभ्य इति व्याचरव्यो समावर्तनस्थापि विवाहप्राचीनसुतसंस्का
रत्वाप्येते च नादीप्राङ् कुर्यात् तदभावे ज्येष्ठभ्रात्रादिः तदभावे स्वयमेव कुर्यात् उपन
यनेन कर्माधिकारस्य जातत्वात् एवमाद्यविवाहपीति पृथ्वी चंद्र चंद्रकादयः यदा तु पि
तरिसन्त्यस्ते प्रोषिते पतिते बाधमौर्ध्वं तत्पुत्रमन्यः संस्कुर्यात् तदा संस्कार्य पितुः पित्रादिभ्यो
दद्यात् पितरो जनकस्ये ज्याया वदुतमना हितं समाहितं समाहितव्रतः यश्चात्त्वानयजे
तपितामहानिति पृथ्वी चंद्रोदये यनोक्तेः जीवत्पितृकस्य विशेषमाह कात्यायनः ह
द्वौ तीर्थे च सन्त्यस्ते ताते च पतिते सति येभ्य एव पिता दद्यात् तेभ्यो दद्यात् स्वयं सुतः यजुर्व
हच परिशिष्टे जीवत्पिता सुतसंस्कारमात्रमात्रमाह यो कुर्यात् तस्या जीवत्या माता
महस्येवेति तत्र दारवीयानामेवेति दिक् स्मृति तत्त्वादिगोऽग्रं येषु जीवन्मातृकः पि
तामाद्यादिभ्यो दद्यात् जीवन्तमति दद्याद्वाप्रेता यत्रोदके द्विज इति कात्यायनोक्ते श्रु
ते तस्मिन् भर्तुरिदं शिष्टायास्तु पूर्वोक्तस्य सपिंङ्गकरणादिविषयत्वात् जीवेत्तु यदि

नि.सिं.
३१०

310

ति

वर्गाद्यस्तं वर्गं न परित्यजेदिति वचनं तद्वर्गस्य लोपादेत्याहुः यत्तु चंद्रिकायां पारस्करः
 रः निषेककाले सोमं च सीमं चैत्रं यने तथा ज्ञेयं पुंसवने आहुं कर्मो गं हृदिवच्चतदिति तत्र
 गर्भाधानादौ कर्मो गं जातकर्मो दवृत्तं त्वं हृदि आहुं पृथगेव हृदिवदित्युक्तेः गोऽनिबंधे
 मात्स्ये अन्नप्राशे च सीमं च पुत्रोत्पत्तिनिमित्तके पुंसवचने च निषेके च न च वेदमप्रवेशने
 देवव्रतजलादीनां प्रतिष्ठायां न चैव च तीर्थयात्रास्योत्सर्गे हृदि आहुं प्रकीर्तितं अत्र
 भूतनिमित्तानां हृदित्वं भाविनिमित्तानां मंगल्यां हृदि शब्दस्तद्धर्मातिदेशार्थ इति गोऽः
 अन्ये तु निषेकादौ कर्मो गं हृदि आहुयोः समुच्चयमाहुः नो दी आहु संज्ञात् भयानुगता अ
 र्थे कर्मव्यतापृथ्वी चंद्रोदये हृदि पराशरः मालत्याशतपत्या वामस्त्रिकाकुज्वयोरपि
 केतव्यापाटलायावादेयामालानलोहिताः आहु माला निषेधस्यायमपवादः तथा
 सुवेद्यभयणौस्तत्र सालंकारैस्तथानरैः कुंकुमाद्यनुलिप्रांगैः भावंतुर्वस्तुतैः स
 ह स्त्रियोपि स्फुटतया भूतागीतनृत्यादिदृष्टिताः हेमाद्रौ ब्रह्मांडे कशस्थाने च हृदी
 स्फुर्मंगलस्याभितद्वये कुरापि वक्ष्यते हं दोगपरिशिष्टे प्रातरामंत्रितान् विप्रा
 न् पुग्मान् भयस्तथा उभयतः पित्र्ये देवे च वैष्णवे देवो द्वौ विप्रौ पित्रादीनामेकैकस्य
 द्वौ द्वाविति विंशतिः त्रिके वा द्वावित्यष्टौ विप्रांश्च विप्रास्ताभोस्त्रियोऽथ भोज्या इत्याह
 सार्कं हृदिवशिष्टः मान् आहुं विप्राणामलाभे स जयेदपि पतिपुत्रा चिता भृत्या
 यो धितो द्वौ कुलोद्भवाः मान् त्रिके च तसौ मातामही त्रिके चेति चेत्पृष्टाविति हेमाद्रिः

राम
३१०

अत्रापि जे प्राञ्जलवाचिषाः पद्येपि जे चतुरस्रं डलमिति जपेत्तः हेमाद्रौ त्रासोपि विप्रा
 न्प्रदाक्षिणावर्त्तप्राञ्जलवानुपवेशयेत् छंदोगपरिशिष्टे गोत्रनामभिरामं अपितु
 भ्यो प्रवायेत् नात्रापसव्यकरणं न पितृभ्यो प्रतापयेत् नात्रापसव्यकरणं न मित्रं ती
 र्यमिष्यते ज्येष्ठोत्तरकरानयुग्मात्कराग्राग्रपवित्रकान् कृत्वा र्घ्यं संप्रदानं व्यंने कैक
 स्यान्न दीयत पित्रादेर्द्वौ द्वौ विप्रो तयोदाक्षिणा हस्तौ संजाप्य प्रथमोपवेशितविप्रकरोपरिते
 त्रेण द्वयोरर्घ्यं दद्यादित्यर्थः वरुचकारिकायां तु दत्तार्घ्यादेर्कदेशः स्यादर्घ्यदानं प्रतिदिजं मा
 वृत्तिरपि मंत्रस्य प्रतिब्राह्मणमिष्यते प्रतिदिजं पृथक् कुर्यान्नित्यर्घ्यान् मंत्राणामित्युक्तं मधु
 मन्विनि यस्तत्र त्रिजपो रितुमिच्छति गायत्र्यनंतरं सोममधुमंत्रविवर्जितेः नवाश्रत्सुज
 येदत्र कदाचिपितृसूक्तं तथा संपन्नमिति तृप्ताः स्थप्रस्त्रस्थाने विधीयते तु संपन्नमिति
 प्राक्तेज्ञावमन्त्रं निवेदयेत् अक्षय्यादकदानं च अर्घ्यदानं वा दिव्यते षष्ठ्येव नियतं कुर्या
 न्नचतुर्थ्या कदाचनः चंद्रोदये ब्राह्मे पठेत् कुनिसूक्तं तु स्यस्तिसूक्तं शुभं तथा नोदीमु
 खान्यितु न भक्त्या सांजलिं समाहूयेत् तथा शाल्यत्रंदधिमध्यं च दराणि बवांस्तथा
 मिश्रीकृत्वा चतुरः पिंडान् श्रीफलसंनिभान् दद्यान् नोदीमुखेभ्यश्च पितृभ्यो विधियुर्व
 कं द्रक्षामलकमूलानियवोश्च विनियोजयेत् तान्येव दाक्षिणां र्घ्यं तु दद्याद्विप्रेभ्यः सर्व
 दातत्रैव चतुर्विंशतिमते द्वौ द्वौ वाभ्युदये पिंडावेकैकस्ये विनिक्षिपेत् एकं नाम्नाप
 रं तस्मीदद्यात् पिंडान् पृथक् पृथक् वशिष्ठः प्राञ्जलवादेव तीर्थेन प्राक्काले शुक्

शेषं च दत्वा पिंडान्न कुर्वीत पिंडमात्रमधोमुखं नादीमुखं भ्यः पितृभ्यः स्वाहेति वा पिंडं
दानमंत्र इति ह्यति अत्र पिंडा कृता कृता इत्युक्तं तत्रैव भविष्य पिंडनिर्वपणं कुर्यान्न वा कु
र्याद्विचक्षणः हृदि श्राद्धे महाबाहो कलधर्मानवस्थित छागलेयः श्रुतीकरणम
र्घ्यं वा वाहनं वा वने ननं पिंडश्राद्धे प्रकुर्वीत पिंडं हीने निवर्त्तते तेनात्र भोजनस्येव प्र
धानत्वाद्यदिविप्रस्य च मनं तदा तस्येव पार्वणस्य पुनराकृतिरिति सिद्धं अत्र संकल्पे वि
शेषः प्रयोगपारजाते संग्रहे शुभाधी प्रयमो तेन त्वद्वै सांकल्पमाचरेत् नष्टक्यापदि
वा कुर्यात्तस्मादोषो भिजायते नाम गोजादिनिषेधोऽप्यत्रैव न त्वसं पिंडकश्राद्धे इति स
एव अत्रायंक्रमः नादीश्राद्धे दैवेक्षणः क्रियतां मिति द्वौ युग्मनिर्मंज्य उतयेति विप्रा
भ्यां युगपदुक्तं श्राद्धतां भवेतो प्रमुवानेति वैश्वदेववत्पितृवैवद्विवचनां तेन विप्रद्वयेषु
योगं कुर्यात् श्राद्धितारने स्तुहेमाद्रौ ब्राह्मे योगेनोत्विष्टमाने पितृद्वौ पिंडान्ननिर्वयेत्
पतेति पितरस्तस्य नरके सच पचते बह्वचपरिशिष्टे द्वौ दर्भौ पवित्रे पवित्रे पवित्राणि च
त्वारित्यनुमंत्रितास्तयवानवप्रतियवांसिसोमदेवत्यागोसवो देवानि मितः प्रयत्नमग्निः
पृक्तः पुष्ट्या नादीमुखान्पितृनिमान् प्रीणयाद्दिनः स्वाहेति स्वाहाध्या इति पृष्ठति विष्टे देवा
इदं वोर्ध्वनादीमुखान्पितर इति यथा लिङ्गमर्घदानं गंधादिदानं द्विद्विः पाणो होमो ग्न
ये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमते स्वाहेत्यतो देवाः श्रायंतु न इत्यंगुष्ठ
ग्रहणं यावमावीः शां वती रेंद्रैरप्रतिरथं च श्रावयेन्मधुवाताजश्च स्थाने उपासेता

राम
३११

311-A

यतेनिपंचमधुमार्त्तः श्रवणेदक्षानमीमदंतेतिचषकीभुक्तरोषेणैकैकस्यद्वौद्वौपिंशे
दद्यादिति चंद्रिकायां ह्रस्वशिष्टः नृसिप्रश्नेतुसंपन्नं देवेरुचितमितिपिदधिकर्कंधु
मिश्राश्रयिंशकार्यायथाक्रमं कात्यायनः त्वमस्ववाजिनमिति विप्रांश्चिरज्ञे
त नान्दीमुरवाः पितरः प्रीयतामिषक्षय्यस्यानेस्वधांवाचपिष्यइत्यस्यानेनां दीमुरवा
नपितृन्वाचपिष्यइतिनस्वधांप्रभुजीतेति श्रुत्वासाग्निरनग्निर्वादेवैश्वदेवं कुर्या
त् आदौहोक्षयेचांतेमध्ये श्राद्धेत्तुपार्वर्णि राकोदिष्टेत्तुहतेत्तुवैश्वदेवोविधीयते
इत्याशार्केशोरायनपरिशिष्टात् देमाद्रौत्तुशेषमन्नमतुजाय्यवैश्वदेवक्रियांततः श्रा
द्धादिश्राद्धशेषेणवैश्वदेवंसमाचरेत्इतिचतुर्विंशतिमतानां दीश्राद्धेप्यवैश्वदेवंउ
क्तः बह्वचानामपिचत्प्यालोचनात्तथैवपूर्वाक्तेतुयेषांपरिशिष्टं तद्विषयमन्यविष
यंवाज्ञेयं श्रुत्वाश्राद्धंवातर्क्येणेतुक्तंयाव ॥ ॥ इति श्री जगद्गुरुनारायणप्रदात्म
जसामस्तमभट्टसत्तुकमलाकरभट्टकृतेनिरुपिधिसिंधौ ब्रह्मिष्वाहं ॥ ॥ अथजी
वत्पितृकश्राद्धं तजानेकेपक्षादृश्यते जीवंतंपितरंभोजयित्वापरयोः श्राद्धं कुर्या
दित्येकः सोमांतमेव कुर्यादित्यनः सोमांतः पितृयुतः स्याज्जीवैपितरिजान
तः पितरंभोजयित्वावायिंशोवाण्युत्परोइतियज्ञपाशैः क्तैः यदिजीवैपितानदद्या
दाहोमात्तुक्त्वाविरमोदित्यापस्तंबोक्तैश्च जीवतां पिंशन्नानौकृत्वापरभ्योदे

यमित्यपरः जीवनामजीवतां बाधेयमेवेति हि रायकेनुरिति निगमात् न
 साज्जीवयिता कुर्याद्वाभ्यां एव न संशय इति भविष्योक्तेर्द्वाभ्यामेवेत्यन्यः एते
 पक्षाः कलौ निषिद्धाः प्रत्यक्षमर्थनंश्रद्धे निषिद्धमनुरव्रवीत् पिडतिर्वपणं वापि
 महापातकसंमितामिति पृथ्वीचंद्रोदये भविष्योक्तेः चंद्रिकायेवं तस्मान्पितरि जी-
 वतिश्राद्धानारंभरावेत्येकः पक्षः सपितृपितृकृत्येषु अधिकारो न विद्यत इति का-
 त्यायनोक्तेः जीवेपितरिवे पुत्रः श्राद्धकालं विवर्जयेदिति हारीतोक्तेः अथैवदुसं-
 मतः पक्षः अन्ये शारवाभेदेन ज्ञेयाः एवं जीवन्मातामहेनाप्यहेनकार्यं माताम-
 हानामप्येव श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः मंत्रोद्देशे मयद्यान्यायं शेषाणामंत्रवर्जितमिति वि-
 ष्वक्ते एवमात्रादिकस्यापितृमातामहादिके इति पृथ्वीचंद्रोदये गिरिमुरारिश्च
 पितरि जीवति तत्स्वमातरि मृतायामपि पितुरेव मातृमातामहयोः कुर्यात् येभ्यो एव
 पितादद्यादिति ब्रह्ममाणवचनादिति पितामहचरणः मदनरत्ने तु जीवयितास्व-
 मातृमातामहयोर्दद्यादित्युक्तं कालादरीयेवं मृते तु पितृवर्गमातृकः पितामहा-
 दिभ्यो ह्यद्वौ दद्यादिति स्मृतितत्त्वादिगोडगंध्याः दाक्षिणास्तु पितृवर्गमातृवर्गं त-
 यामातामहस्य च जीवे तु यादिवर्गाद्यस्तदवर्गपरित्यजेत्तदिति वचनात्तद्वरीत्याग-
 एवेत्याहुः एवं पितृसम्यस्तपितृकादेरपि ज्ञेयं ह्यद्वौ तीर्थसम्यक्ते ताते च पातिते स

312-17

नि येभ्य एव पिता दद्यात्तभ्यो दद्यात्तचयं सत इति षड् त्रिंशन्मतात् सन्यस्ते जीवतीत्यर्थः स
 तेन सन्यस्तेन दाद्येव देयं सतेपि परेभ्य एवेति गौडः कान्यायनेपि ब्राह्मणादिह तेना
 तेयति ते संगवर्जिते ऋक्मं च मते दैयं येभ्य एव दद्यात्तसौ अयं च सन्यस्तपि त्रादेर
 विरोधात् सर्वश्राद्धधिकारः एतद्विदं उपरं एकादशाह्यावर्णवार्षिकाद्यपिनस्येव
 अह्नयेकादशप्राप्तेयावर्णानुविधीयत इत्युक्तात्रिदंशं ग्राहणं दवप्रेतत्वेनेव जायतः
 इत्युक्तानसाविरोधेनैः ब्रह्मणादिह ते इत्यादि निषेधस्त्येकदंशोदपरः अतः परमहंसा
 नां वार्षिकादिकमपिन कार्यमिति मूलापारिभाषितत्वादयो गौडग्रन्थाः इदमेव युक्तं
 सैष नृहेमाद्रोकोऽन्यः दरीश्राद्धं गयाश्राद्धं श्राद्धं चापरपक्षिकं न जीवत्यित्युक्तः कुर्या
 तिलैस्तर्पणमेव चेति तत्सन्यस्तपि त्राद्यतिरिक्तविषयं मैत्रायणीपरिशिष्टे उक्ताह
 पुत्रजननेपि त्रेषां सोमिके मत्वे तीर्थे वा स एवायाते षडेते जीवतः पितृस्तत्रैव स
 हानदीषु सर्वासु तीर्थेषु च गयाम् ते जीवत्यितापि कुर्वीत श्राद्धं पार्वणधर्मवत् गयासु
 ते इति मातृव्यतिरिक्तविषयं आन्वष्टव्यं गयाश्राद्धं सत्यायस्य मते हानि मातुः श्राद्धं स
 तः कुर्यात्पितृव्यार्थि च जीवतीति तत्रैवोक्तेः गयाश्राद्धं सत्यायस्य गव्याप्रसंगतो
 गत्वामातुः श्राद्धं समाचरेदिति वचनात् तेन न मातृको गयायां तत्पार्वणमात्रं कुर्या
 त् तज्जीवतेतु तीर्थश्राद्धमपि तेन कालादरीस्मृतिदर्पणादयः अन्येति गत्वा श्राद्धं नेति
 निषेधार्थः सामान्यतः प्राप्ततीर्थश्राद्धं भवत्येव गयायामित्याहुः यः दातुं पितुः प्रति

निधित्वेन गायं पति तदा यजमानस्य पितृपितामहप्रपितामहाः इत्येवं श्राद्धं तत्र स्वमातुः
पितृपत्नीत्वेनैको द्विष्टं कृत्वा मातृत्वेन पुनः पार्वणं कुर्यादिति त्रिस्थली सेतो
तच्च फलं विष्णुपदास्य वदेष्टेवेति केचित् अद्यान्त्ये एवेत्यन्ये मध्यमांत्ये इत्य
परेस्तं को वदेत्तु भावात्तत्र त्वसर्वश्राद्धानि मातुः कार्या एरिति युक्तं प्रतिभाति यत्
मदनपारजाते न जीवत्यित्युक्तः कुर्यात्प्रादुर्गमनमृते द्विजः येभ्य एव पिता दद्या
तेभ्यः कुर्वीत सान्निक इति सुमंत्रकैः सागरेव जीवत्यित्युक्तं स्यतीत्यादिश्राद्ध
मुक्तं सागरेरपि मैत्रायणो वराहवायस्येव नान्येषां धडेते जीवतः पितुरिति त
त्परिरिष्टे एवोक्तेरिति रत्नावलीदिवोदासाद्याः तदयुक्तं सोमं तवेपिंडं पितृय
त्तविषयं संन्यस्तपि जायति रितं विषयं वेति यद्वा चंद्रोदयोक्तेः सद्धोतीर्ये च
त्यादेः साधारण्येनास्यापितयात्वाच्च तथा निरग्रेरपि नादीश्राद्धमुक्तं प्राक् एव
पितामहजीवने पित्रेयं विशेषः पितृकृतजीवत्यित्युक्तं निरीयेतेयः अथ पितामहे
जीवति मृते च पितरियद्यपि पितामहो वा तद्वाङ्मं जीतेत्यब्रवीन्मनुरिति म
नुना जीवतः पितामहस्य भोजनमुक्तं तथा प्रत्यक्षार्चनस्य पूर्वनिधिधित्वात्पि
तामहं विहाय पितृप्रापितामहस्य द्विप्रपितामहेभ्यो देयं पितायस्य तृतः स्यात्
जीवे चापि पितामहः पितुः सनातनसंकीर्णकीर्तयेत्यपि पितामहमिति मन्त्रकैः अ
यमेव सर्वसंमतः पक्षः यत्तु ह्येदो गायत्री शिष्टे पितामहे ध्रियमा लोपितुः प्रेतस्य

313-17

निर्वयेत् पितृस्तस्य च तत्तस्य जीवे चापि पितामहः इत्येकपुरुषं द्विपुरुषं वा
वापार्वणमाह तर्तीयपितृयज्ञपरं वक्ष्ये पूर्वोक्तमेव एवं पूर्वयोर्मृतयोः प्रपिता
महे जीवति पितृमात्रे मृते परयोः जीवतो अत्राह प्रपितामहेभ्यो ज्ञेयं जीवन्तमिति
दद्याद्वाप्रेतायात्रोदकेऽर्धज इति कात्यायनोक्तेः एतत् सर्वमनभिरुक्त्याह हेमा
द्रोविष्णुः पितरि जीवति यः श्राद्धं कुर्याद्येषां पिता कुर्यात्तेषां कुर्यात्पितरि पिता
महे च जीवति येषां पितामहः पितरि पितामहे प्रपितामहे च जीवति नैव कुर्यात् य
स्य पिताप्रेतः स्यात्सपित्रेऽपिऽनिधाय पितामहात्पराभ्यां दद्यात् यस्य पिता
पितामहश्चप्रेतो स्यातां सताभ्यां पिऽोदत्वा पितामहं प्रपितामहाय दद्यात् यस्य पिता
महः प्रेतः स्यात्सतस्मैऽपिऽनिधाय प्रपितामहात्परद्वाभ्यां दद्यात् मातामहानामप्ये
वं श्राद्धं कुर्याद्विचक्षणः मंत्रो हेनयथान्यायशेषाणां मंत्रवर्जितमिति अत्र पितृ
वत् मातामहे जीवति यत्पित्रादिभ्यः यथा तत्र त्रिषु जीवत्सु नैव कुर्यात्तथा त्रयी
त्यादिसर्वमग्निदेस्य एवं मातृजीवनेऽपि त्रिषु लयाग्निकालादरौतनेभ्यः
एवेत्यादौ षड्वादेर्व्यक्तिविशेषवाचित्वेन तदप्रसगादिनिदिक् उत्तरार्धव्याख्यातं
प्राक् यत्तत्र विज्ञाने सरेणां कृत्वा पित्रेऽपिऽनिधायेति पितरो कोद्विष्टविधिना श्राद्धं कृ
त्वा प्रपितामहादिभ्यः पूर्वरां कुर्यात् यद्युक्तममृतसपिंडीकुराणाभावपक्षे सपिंडीक
राण्यस्यानापत्रहेयं युक्तमाह प्रसीतानं मानैव कार्या सपिंडीतेति वचनात् दर्शादौ

इत्याहुः एषविधिर्निषेधरूपः जिष्णुजीवसु विष्णुराह विष्णुजीवसु नैव कुर्यादिति एतद्वरीदिवि
 ३१४ ययं ५४

तु पितुरेकोदिष्टमेव कार्यं न जीवंतमतिददातीति श्रुतेः जीवेत्पितामहो यस्य पिता वा
 तरितो भवेत् पितुरेकस्य दातव्यमेव मादुर्मनिषिण इति यज्ञपास्वाक्तेः पितामहे जीव
 तिवे पितर्जेव समा ययेदिति हारीतोक्तेः शिष्टास्तु क्रमात् प्रमातानां नैव कार्यासीति
 उता यदियाताय दियिता भोजनैव विधिः स्मृत इति माधवीये स्कांदोक्तेः क्रममृतसंयि
 करणभावः पितृव्यादिविषयं नास्ति श्राद्धं तु परेभ्यस्त्रिभ्यो भवत्येवेति कल्पतरुः पृथ्वी चं
 द्रादयस्तदद्यात्रिभ्यः परेभ्यस्त जीवेद्येवितयं यदीति मन्त्रेः सर्वत्र विकल्पः सच देशा चा
 राद्यवतिष्ठते इत्याहुः सुदर्शनं चाष्टौ मासि श्राद्धं जीवत्पित्रादिना व्यक्रममृतपित्रा
 दिना च कार्यमेवेत्युक्तं मदनरत्ने क्रतुः श्रद्धादिषु संक्रांतौ मन्वादिषु युगादिषु चंद्र
 सूर्यग्राहे याते स्वेधयाप्ययोगतः जीवत्पितानेव कुर्याद्वा द्वे काम्ये तथा रितं अन्ये
 विरोधाः श्रीपितृकृत जीवत्पितृकनिर्णये मदक्त तत्रिस्थली संतोच ज्ञेयाः ॥ ॥
 इति श्रीमदृकमलाकरकृते निर्णयसिंधौ जीवत्पित्रादि श्राद्धं ॥ ॥ प्रथमविभ
 क्तविभक्त निर्णयः पृथ्वी चंद्रादये मरीचिः बहवः सूर्यदायुजाः पितुरेकत्रवासिनः
 सर्वेषां तु मंत्रं कृत्वा ज्येष्ठे नैव नृपत्कृतं द्रव्याणां विभक्तेन सर्वैरेव कृतं भवेत् ज्ये
 ष्ठस्य कृतत्वेऽपि सर्वे फलभागिन इत्यर्थः तेन ये व्रतचर्यादि नियमास्ते फलितं स्वर
 त्यात्सर्वैः कार्याः एवं सखिनामा पितु ल्यत्वात् मिताक्षरायां तु नारदः भ्रातृणां माविभ
 क्तानामेको धर्मः प्रवर्तते विभागो सति धर्मापि भवेत्तेषां पृथक् पृथक् स हस्यतिरपि ।

एकपाकेन वसतां पितृदेवद्विजा र्चने एकं भवेद्विभक्तानां तदेव स्याद्दुहे गृहे अत्र यद्य
 व्यविशेषश्च प्राणात् ब्रह्मयज्ञसंख्यादिष्वप्यविभक्तानां पृथक् निषेधः प्राप्नोति तथा
 पिद्रव्यसाध्यं प्राहुर्वैश्वदेवादिष्वेव सः इव स्यान्नेकस्याधिकत्वेनेकस्य व्ययेन अधिका
 रान् यानि तु द्रव्यसाध्यानि मंत्रजपोपवाससंख्या ब्रह्मयज्ञपरायणादीनि नित्येनेमि
 त्तिककाम्यानि तेष्टुपथकृत्वाधिकारः इव यथाभावेऽनुमत्या नयेदप्राणात् द्रव्येण वा
 विभक्तेनेत्यस्याविषयत्वात् पृथगप्येकपाकानां ब्रह्मयज्ञोद्विजातिनो अग्निहोत्रेऽसु
 रार्ची च संध्या नित्यं भवेत्तथेति प्रयोगपारिजाते आश्रयाय न स्मृतेऽपि अग्निहोत्रेऽसु
 कोऽग्नि साध्यं नो तस्मात्तन् नित्यं कर्म परः तेष्वप्यथानुमत्यैवाधिकारेण व्यायसाभ्याम्
 पितृप्राक्षादिषु लक्ष्मणफलैश्च नित्येऽनुमतिविनाप्येकस्याधिकारः एकोऽपि स्या
 वरे कुर्यादनां धमनविक्रयं आपत्काले कुंडं वा र्थधर्मार्थे च विशेषत इति वचनात्
 धर्मार्थेऽप्यवरयकृतेऽप्येव पितृप्राक्षादिविति ज्ञानेऽप्यरः केचित्त्वविभक्तानामपि पृथ
 कपाकत्वे देशान्तरे च दार्शिकादिक्रयोऽप्युक्ता माह भ्रातरणामविभक्तानां पृथक्
 पाको भवेद्यदि वैश्वदेवादिकं प्राहुं कुर्युस्तो वै पृथक् पृथगिति हारीतोक्तैः अवि
 भक्तेन पुत्रेण पितृमेधो मृतो हनिदेशान्तरे पृथक् कार्योदरी प्राहुं तथैव चेति यमो
 क्तोऽप्येति अत्र मूलं चिंत्य तदयमर्थः पंचमहायज्ञमध्ये देवभूतपितृमनुष्य
 यज्ञानन्यानुमत्या ज्येष्ठ एव कुर्यात् होमाग्नदानरहितं भोक्तव्यं कदाचन अविभ

नैष संसृष्टेष्टे केनापि कृतं कृतमिति व्यासोक्तेश्चाप्यस्य नृज्येष्टेना कृतं ते वैश्वदेवे । न
सिध्येतेन नृछरीमार्गेनो किंचिद्विशिष्टा भोक्तव्यं यस्य त्वेवामग्नौ नृसिध्येत्सानियुक्त
मग्नौ कृत्यामंत्रास्त्राण्यदत्त्वा भुंजीतेत्यविभक्ताधिकारेष्ट्यं चंद्रोदये गोभिलोक्तैः
श्राश्रुलायनस्तृपाकपार्थक्येष्टं कृतं देवत्वेत्यथ कृत्वा माह वसनामेकपाकेन वि
भक्तानामपि प्रभुः एकस्तचुरायत्तान् भोजमात्रं प्राकृदिनेदिने इति कुर्याद्वाग्यज्ञपूर्व
कान् अविभक्ताविभक्तावाप्यकृत्वा काहिजानयः कुर्युः एथक् एथक् यत्तान् भोज
नान् प्राकृदिनेदिने इति ब्रह्मयज्ञासंध्यास्नाननर्पणदिलकृतेतोः एथगेव देवयज्ञा
नृक्तवचनद्वयादेकत्र एथग्वा दर्शगृह्णन् प्राद्धादित्वेकस्यैव तीर्थप्राद्धाद्यपियुग
पत्सर्वेषामविभक्तानां प्राप्तावेकस्यैव भेदेन प्राप्नोभिन्नं गयाप्राद्धेय्येवं प्रष्टव्या वाह
वः पुत्राः शीलवंतो गुणाचिताः तेषां नृसमवेतानां यद्येकोपि गंधां ब्रजेत् तारिताः सा
वयं तेन सयाति परमां गतिमिति हेमाद्रिकोर्मोक्तैः काप्यपि दानहोमाद्यवत्यानुमत्ये
वाधिकारः इत्यासाध्यजपादौ ताविनापि अपरा केषीनसिः विभक्तैस्तृप्यकृत्य
प्रतिसंवत्सरादिकं एकेनैव विभक्तैश्च कृतं सर्वैस्तत्कृतं सांवत्सरात्पूर्वाणि मासि
कान्येकत्रैव नदाहलघुहारीतः सपिंडीकरणं तानियानि प्राधानि घोऽरा एथदेवस
ताकुर्युः एथक् इत्याश्रुचिन् सपिंडं मासिकोपलक्षणं अर्वाक् संवत्सराज्येष्टः
प्राहुं कुर्यात्समेत्यनृ ऊर्ध्वं सपिंडीकरणात्सर्वे कुर्युः एथक् एथक् इति व्यासोक्तैः

उरानाः नवश्राद्धं सपिंडं त्वं श्राधान्मपि च षोडश एकेनैव तु कार्याणि संधिभक्तधने
 सपि मघात्रये दशीश्राद्धं त्वं विभक्तानामपि यद्यगितिष्ठते प्राक् यत्तु सद्धिवरिषः
 मासिकं च दशोत्सर्गं सपिंडीकरणं तथा ज्येष्ठे नैव प्रकर्तव्यमादिकं प्रथमं तथेति
 तन्निर्मूलं बहुचयैरेवे नवश्राद्धं सह दद्युः श्रयतीर्थश्राद्धं तत्र यद्यप्यस्मात्पितामह
 कृतसिस्थलीसेतुरेव जागर्तितयापि किंचिदुच्यते तत्र यात्रायां सहानिवासे पत्नी को
 गच्छेतीर्थानि संयतः प्रायश्चित्तीज्जते तीर्थपत्नी विरहितोपि वा यजेन्न अधिकारी वा यश्च
 वामं त्रसाधक इति कौर्मदिवचनात्सामेः सपत्नीकस्येवाधिकारः भारते ब्राह्मणः
 क्षत्रियो वैश्यः शूद्रो वाराजसतमनवियोगिनिं व्रजेत्येते यातास्तीर्थमहात्मनः स्कांदे विधिवा
 धर्मेष्ु स्नानं दानं तीर्थयात्रां विष्णोर्नामग्रहं मुहुः एतत्पुत्राद्यनुमत्यैव सधवायापत्यास
 देवेति प्रभुत्वं कारीरवंडे मातुः पितुः क्षेममनास्तयास्थिसुतस्तु कुर्यात्तु त्वत्तीर्थयात्रा
 तद्धिधिः स्कांदे तीर्थयात्राचिकीर्षुः प्राग्विधायेषोषांगदेगणेशं च पितृन् विप्रान् सा
 धनराक्ताप्रयज्य च कृतपारणकोद्दृष्ट्या गच्छेन्नियममध्यकपुनः अर्पित्याभ्यर्च्य च पितृ
 न्ययोक्तफलभागभवेत् उपवासात्प्रायदुर्नचकार्यं प्रयोगे तीर्थयात्रायां पितृमातृवि
 योगतः कच्चानां वपनं कुर्यात्तत्तथानविकचो भवेत् इति विष्णुस्मृत्यः प्राधित्वा र्थयात्रायां
 गयायांचैतदित्येकैकेचिन्नुद्देशमाद्रौ महाभारते केशमश्रुनरवादीनां वपनं न च शस्यते
 श्रुतानकार्यं वपनं गयाश्राद्धार्थिना सदो ये भारते स्मिन् पितृकर्मतत्परासंधार्य केशान

निभक्तिभाविताः क्षयार्थं पितृतीर्थमागतास्तोषाम्णं संक्षयमेव्यति ध्रुवमिति नि
 वेधात् गयायात्रां गवयननकार्यमित्याहुः वस्तुतस्तु गयाधिकरणकस्येवायं निवे
 धः ननु यात्रां गस्य आह्वयिनेत्युक्तेः विशालं विरजंगयामिष्यनेनेकवाक्यत्वाच्च आहं
 च वएनवद्वादशदेवतं वा घृतेन कार्यं गच्छेदंशान्तरं यस्तु आहं कुर्यात्सर्पिषेति विदुषु
 राणात् यात्रां गच्छेद्विआहोक्तेः आहं च पाराणं दिने एव उपेक्ष्य रजनी मेकां प्रातः आहं
 विधाय च गंगेशं ब्राह्मणान्त्वाभुक्ता प्रास्थितवान् सुधारिति स्कादलिंगात् गौडनिवे
 धे गौतमः तीर्थयात्रासमारंभे तीर्थयात्रायागमेपि च वद्विआहं प्रकुर्वीत वदुसर्पिः
 समन्वितं वद्विपदंतद्वर्माहं आहोतरं यात्रासंकल्प इति भद्राः वायवीये उद्यंतस्तु गयो
 गंतं आहं कृत्वा विधानतः विधाय कार्यं दीवेष्टं ग्रामं कृत्वा प्रदक्षिणं ततो ग्रामांतरं गत्वा
 आहं शेषस्य भोजनं तच्च क्रोशमध्ये आहोतरं क्रोशगमनं निवेधात् ततः प्रतिदिनं
 गच्छेत्प्रतिग्रहं विवाहं जितः गयायामेवेतन्नात्यत्रेति केचित् हेमाद्रिस्तु गयायां आ
 हं दिने एव प्रस्थानं तीर्थान्तरे तु आहोतरं दिने इत्याह प्रभासं त्वं यश्चाप्यकारयेद्यत्रा
 तीर्थयात्रां नरेक्षरः स्वकीयद्रव्यपानाभ्यां तस्य पुण्यं चतुर्गुणं यात्रामध्ये आशौचं रजसि
 वासुद्विपर्यंतं स्थितं तदंते गच्छेत् मार्गवेष्टम्यत्वे दाघः पात्रामध्ये तीर्थान्तरं प्राप्नोति आहं
 दि कार्यमेव वाणिज्याद्यर्थं गतेन तु मुंडनोपवासादिनकार्यमिति प्रयागं सेतो भद्राः व
 स्तुतस्तु तत्रापि मुंडनोपवास आहं दि कार्यं अर्धं तीर्थफलं तस्य यः प्रसंगेन गच्छतीति

316- A

ब्राह्मणेः स्कांदे द्विर्भोजनं तृतीयांशं हरेतीर्थफलस्य च वाणिज्यं त्रीस्तया भागानहंति
सर्वे प्रतिग्रहः यानमर्धं चतुर्थी शंखत्रोपानहमेव चेत्पुत्रार्थं पातं तं अत्र न दीयुः वि
शेषः मार्गेतरानदीप्रोक्षे स्नानादिपरपारतः अर्वागेव सरस्वत्या एष मार्गगतो विधिः
यत्पितृनतर्पयित्वा तु नदीस्तरतियोनरः तस्यास्त्वयानकामास्ते भवेति भृशः रिवताः इति
तत्सरस्वतीपरं शंखः तीर्थं प्राप्या नुषंगान् स्नानं तीर्थं समाचरेत् स्नानं फलमाप्नोति ती
र्थं यात्रा कृतं न तु साव न सुवती मतिः क्रामेदन वशिष्ठ्य तीर्थं प्राप्नोतु प्रभासरं वडे याना
नि वृत्तिपरित्यज्य भाव्यं पादचरैर्नरैः लुटित्वा लोटनीतं जलं कृत्वा कार्यं कृत्वा कृत्वा कृत्वा कृत्वा
हानिर्गमसमयेऽकरणे इदं प्रथमं चालयेत् तीर्थं प्राप्नोतु न त्रलं शुचि अवगातः ततः स्नाया
द्यथा वन्मंत्रयोगतः मंत्रं प्रभासरं वडे न मोदे वदे वा यशितिकं ठायं दंडिने रुद्राय
वायु रुद्राय च क्रितो वेधसे नमः सरस्वती च सा वित्री वेदमाता गिरियसी सन्निधा त्रीभ
वत्तत्र तीर्थं पापप्रणोशनीति मंत्रवत्स्नानं च पनोत्तरं कार्यं पूर्वसंवाहनं तीर्थी मुंडनं
तदनंतरं ततः स्नानादिकं कुर्यात्पुष्पं समाचरेत् इत्युक्तेः यत्तु गत्वा स्नानं प्रकुर्वीत
वपनं तदनंतरं मितितन्मृगालस्नानादिपरं कारीरं वडे तीर्थं पावासः कर्तव्यः शिरसा
मुंडनं तथा उपवासं तत्रैवोक्तं यदग्नितीर्थं प्राप्तिः स्यात्तदहः पूर्ववासरे उपवासः प्र
कर्तव्यः प्राप्ते द्विश्चाह दो भवेत् अत्र उपवासं ततः कुर्यात्तस्मिन्नहनि सुव्रत इति प्राप्ति
दिने वृषवासोक्तेर्विकल्पः मुंडने तु स्कांददेवलो मुंडनं चापवासश्च सर्वतीर्थेषु

स्नानम
कृत्य

सि

पंचविधिः वस्त्रेयित्वा कुरुक्षेत्रं विषालं विरजंगयां विरजं लोणारं प्रसिद्धं महातीर्थपरः
 सर्वतीर्थशकः अत्र विशेषः स्मृत्यन्तरे ऊर्ध्वमद्यात् द्विमासो नात्युनस्तीर्थं व्रजे धृतिः । य
 मुंडनं चोपवासं च न तोयत्वेन कारयेत् तदा तद्वायुतं शस्त्रं प्राश्नित्वा मृते तद्देवेति वाया
 ४ः प्रयागे प्रतिपात्रं तु योगनत्रय इष्यते क्षौरं कृत्वा तु विधिवत् तस्मादासितासिते
 अपरा कंस्कां दे उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा वपनं कारयेत् सुधीः केशरमञ्जलो मनरवाभ्यु
 र्द्वक् संस्थानि वापयेत् इदं प्रयागे सध्वाना मपि समलमवति इति भट्टः युक्तं तु स
 वानकेशान्समुदृत्य छेदयेद्दं गुलं हृदयमेव दिनारीणां शस्यते वपनक्रियेति न
 च कृतं च डानां न कार्यमिति केचित् तत्त्वं तु नेमिकत्वात् पित्रादिमृतिवत् कार्यमे
 वेति तदपि प्रयागे निष्पन्ना मत्र तद्यथा निमित्तिर्येषि च तसंधिष्वेव कार्यं नान्यदा
 कक्षेयस्य शिरसा वंजितं तसंधिष्ववापयेदिति स्मृतेः इदं जीवत्पितृकेणाप्यतीर्थं
 कार्यं न च मुंडनं पिंडदानं चेति दक्षवचनेन निषेधः विना तीर्थं विना यज्ञं मातापित्रो
 र्मृतिं विना यो वाययतिलोमानि सपुत्रः पितृघातक इति स्मृत्या तत्संकोचात् त
 दापि प्रयागे प्रतिपात्रं मत्पतीर्थं प्राप्नुयात्त्रायामेवेति शिष्टाः ततः स्नानं परार्थं तु मा
 र्कंडेयपुराणे मातरं पितरं जायां भ्रातरं सह दंगुलं यमुदिश्य निमज्जेत अथ मांसं लभे
 तसः पैठीनेसिः प्रतिकृतं कुरामयी तीर्थं वारिणो मज्जयेत् मज्जयेच्च अथ मुदि

रयसोष्टभागाफलं लभेत् ततस्तर्पणं श्राद्धे यद्वा चंद्रोदये ब्रह्मदेवीपुराणकारो रं
 जदिष्ठ प्रकालमयवाकाले तीर्थं श्राद्धं च तर्पणं अविंशेन कर्त्तव्यं नैव विष्टं समा
 चरेत् मत्स्ये पितृणां चैव तर्पणमिति तर्पणं तत्र देवताः महालयनिर्णये प्रागुक्ताः
 शंखदेवलौ तीर्थद्वयोपयतो च न कालमवधारयेत् पात्रं च ज्ञात्वा श्राद्धं प्राप्य सद्यः श्राद्धं
 समाचरेत् हारीतः दिवा वा यदि वारात्रौ भुक्तौ वा योषितो यिवा न कालानियमस्तत्र गं
 गां प्राप्य सरद्वरां भारते भुक्तौ वाप्यथवा भुक्तौ रात्रौ वा यदि वा दिवा पर्वकाले यवाका
 ले शुचि वाप्यथवा शुचिः यदैकदृश्यते तत्र नदी चित्रायथा प्रिय प्रमाणं दर्शने तस्या
 न कालस्तत्र काराणं श्राद्धं चेपि कार्या विवाहदुर्गापक्षेष्टयात्रायां तीर्थं कर्मणि न तत्र
 सतत्कं न हत्कर्म यतो दिक्कारयेदिति पेरीनसि स्मृतेः तदानीमकरणेन शौचोत्ते एव
 कुर्यात् प्रभासरवंडे नवारं न च नक्षत्रं न कालस्तत्र काराणं यदैव दृश्यते तीर्थं तदा प
 र्वसहस्रकं मलमासेपि कार्यं नित्यनैमित्तिके कुर्यात्प्रयतः सन्मलिनमुचे तीर्थं श्राद्धं
 गजछायां प्रेतश्राद्धं तथैव चेति सहस्यति स्मृतेः एतच्चाशौचे क्ततभोजनस्य रात्रौ वा स्ना
 नश्राद्धादिकमाकस्मिकतीर्थप्राप्तौ वा हेमश्राद्धावैष्यंग्रहाणादिवत् न तु बुद्धिपूर्वमा
 शौचादौ तीर्थं प्राप्तिः कार्या मलमासे तु मासद्वये तीर्थं श्राद्धं कार्यमिति चंद्रिकायां देवी
 पुराणे श्राद्धं च तत्र कर्त्तव्यमर्घ्यावाहनवर्जितं ~~नदिष्ठं~~ श्राद्धं वाहनं विस्मृष्टं तत्र तेष्वा
 हेमादौ मर्घ्यमावाहनं विस्मृष्टं ~~नदिष्ठं~~ श्राद्धं वाहनं विस्मृष्टं तत्र तेष्वा

यथा द्वे विवर्जयेत् भविष्ये आवाहनं विसृष्टिश्च तत्र ते वा न विघ्नते आवहनं न तीर्थे स्या
 नार्घदानं तथा भवेत् आहूता पितरस्तीर्थे कृतार्था संतिवेद्यतः अग्नौ करणं चनेति रत्ना
 वत्या अत्र खड्गे बने आहूये पिमात्रादीनां पिंडमात्रं देयं हविः शेषं ततो मुष्टिमादाये कै क
 माहतः क्रमशः पितृपत्नीनां पिंडनिर्घरणं चरोदिति तीर्थोपक्रमे देवलोक्तैरिति यथी
 चेद्रः ततः सामान्यपिंडं दद्यात् ततः पिंडमुयादाय हविषः संस्कृतस्य च ज्ञातिवर्गस्य स
 वैस्य सामान्यं पिंडं मुत्तरे जेदिति तेनैवाक्तेः पात्रे तीर्थं प्रादं प्रकुर्वीत पक्वान्नै न विशेषतः ।
 आमात्रे न हिरण्येन कंदमूलफलैरापि पिंडं दद्यात् देवीपुराणे हेमाद्रौ ग्राह्ये च शक्तुभिः
 पिंडदानं च संयावेपायसेन वा कर्तव्यमिति विभिः प्रोक्तं पिण्या केन गृडेन वा पिंडानां ती
 र्थे प्रक्षेप एव नाग्याप्रतिपत्तिरित्युक्तं प्राक् एतच्च विधवया पुत्रया कार्येन सपुत्रयेत्यु
 क्तं प्राक् सपुत्रयान कर्तव्यं भर्तुः आहूकदा चनेति स्मृतं अमुपनीतेनापिका
 र्ये एतच्चानुपनीतोपिकर्या सर्वेषु पर्वस्विति पात्रे तीर्थं प्रादं मुपक्रम्याक्तेः एतज्जीवमि
 त्तकैरुपपिकार्यमित्युक्तं प्राक् यतिना तु नाकार्यं न कुर्यात्सतकं भिक्षुप्रादं पिंडो द
 कक्रिया इत्युक्तं संन्यासयोगेन गृहधर्मादिकं व्रतं गात्रादिवरणं सर्वं पितृमातृकु
 लंधनमिति स्मृतं गद्यायां कृतं वायवीये दंडं प्रदरीयेद्भिः ३ गयोगान् पिंडः दंड
 स्पृष्ट्वा विष्णुपदे पितृभिः सह मुच्यते गद्यायां मुंडयेच्च कूपे पश्येत्तथा दंडं प्रद
 शयनं भिक्षुः पितृभिः सह मुच्यते मन्त्रायाम् नृत्तं च कृत्य रत्नं प्रभासरं वेडं तीर्थे चेत्य

निगृह्णाति ब्रह्मणो हति दुर्बलः दशांशमर्जितं दद्यादेवं कुर्वन् नृहीयते इति वि।
 शेषांतराणि भट्टकृतत्रिस्थलीसेतो ज्ञेयानीति दिक् इति श्रीकमलाकरभट्टक
 ते निर्णीयसिधौ तीर्थयात्राविधिः ॥ ११ ॥ अथ शौचं नारायणोत्तमजश्रीमद्राम
 कृष्णमस्मत्सनुना कमलाकरसंज्ञेनारोचनिर्णीयते ध्वनो मरीचिः प्राचु
 त्थ्याद्भवेत्स्रावः पातः पंचमस्रष्टयोः अत ऊर्ध्वं प्रसूतिः स्याद्दृशादंस्तवं भ
 वेत् स्रावे गमात् सिरात्रं स्यात्सपिंडांशो च वर्जनं पाते मातृर्धया मासं सपिं
 डांशं दिनत्रयं अत्र सर्वं जमलं मिताक्षरायां ज्ञेयं अजमासत्रये गिरात्रस्यानु
 वादः रजस्वलात्वेनैव तत्सिद्धः यद्यप्यनेन चतुर्थमासपितृरात्रं प्रोति तथा
 पिषाणमासाभ्यंतरपावद्गर्भस्रावो भवेद्यदि तदा माससंस्तसां दिवसेः शु
 दिरिष्यते इत्यादि पुराणातरात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्रावे विप्रुध्यतीति मन्
 त्रैः गर्भस्रावे यथा मासमचिरेत्तमे भयं इति मरीच्युक्तेष्वचत्तरात्रं ज्ञेयं अचिरे
 त्रिमासमध्ये उत्तमे ब्रह्मणे अजसपिंडांशानां सद्यः शौचं सपिंडांशं गर्भस्य प
 तने सतीति तत्रैवोक्तेः यथा तदा चतुर्थमासात् पाते शिदिनस्योक्तेः सद्यः पदं स्नानं
 परं एवमग्रेऽपि गर्भस्रावे स्नानमात्रं पुरुषस्येति ह्यद्विविशिष्टोक्तेः पुरुषस्येति पिं
 डापलक्षणं सर्वो वचनात् आतृर्धमासं सपिंडांशं न स्नानं किंतु पुंस एव माते जि

३१९

दिने निर्मुक्त्यर्थं गुणवत्सु अजातदंतेन नये शिशोर्गर्भमुते तथा सपिंडानां तु सर्वे
 यामेक रात्रे मरौ च कर्मिणि यथोक्तेरेकाह इति मदनपारजातः सप्तममासादिदर्शहं
 तत्सर्वं वर्णविषयं तु स्य वयसि सर्वं वामति क्रांतेन तथैव चेति व्याघातः पराशरः जातौ
 विप्रोदशाहेन द्वादशाहेन नमिषः वैश्यः पंचदशाहेन शूद्रो मासेन शुद्धति संवत्तः जातेषु
 त्रेषु पितुः स्नानं सचैलं तु विधीयते माता शुद्धदशाहेन स्नानात्तु स्पर्शं न पितुः पुत्रपदात्क
 न्यात्पत्नौ न पितुः स्नानमिति हारलतायां तत्र पुत्रपदस्य यौग्रीमाता महस्तेनेति कन्याया
 मपि प्रयोगात् यच्च तत्रैवोक्तं स्नतकैतुमुखं दृष्ट्वा जातस्य जनकस्ततः कृत्वा सचैलं
 स्नानं तु शुद्धो भवति लक्षणदित्यादिपुराणान्मुखदर्शिनोतरमेव पितुः स्नानमिति त
 न्न मूलैवेन ज्ञानमात्रपरत्वात् इदं सर्वं वर्णसमं सति का सर्वं वर्णेषु दशरात्रेण शुद्धति
 ऋतौ च नष्टयकुरौ च सर्वं वर्णेषु यं विधिरिति हारलतायां प्रचतसोक्तेः यत्तु ब्राह्मे ब्राह्म
 णी क्षत्रियौ वैश्या प्रसतादशभिर्दिनेः गते शूद्रा वसंस्पृष्ट्या त्रयोदशभिरेव चेति प्रयो
 गपारजाते पारस्करः द्विजातेः सति कर्कषा स्यात्सादशाहेन शुद्धति त्रियोदशे हि संप्रतिशु
 द्वाशुध्यत्यसंशयमिति तदस्य त्वयं अंगिराः सति के सति का वज्रं संस्पृशाननिविध्य
 ते संस्पृशे सति का यास्तु स्नानमेव विधीयते नाशौ च सति के पुंसः संसर्गं चेन्न गच्छति
 रजस्तत्राशुचि ज्ञेयं यच्च पुंसि न विद्यते संसर्गं मे पुनं स्पर्श इत्यत्रे मातरे वस्तुतः कंतां
 स्पृशतश्चेति हारलतायां सुमंतुक्तेरिति तत्र संस्पृशे सति मास्तु स्नानमेव विधीय

 राम
 ३१५

ते इति स्नानमाजोक्तेः सौमंतवश्यस्नानपर्यंतमस्य संप्रतिमात्रबोधकत्वात् रावका
 रोवालस्यत्वायः माधवस्तु यस्तैः सह सपिंडोपि प्रकुर्याद्यथासनं बांधवोवापरो
 वापि सहशास्त्रेन मुद्राति इति ह्यस्यति स्मृतेः रायनासनादिरूपं ससर्गमाह पाराशरः
 यदि पञ्चाप्रसतायां द्विजः संपर्कमृत्तिस्तत्कंतु भवेत्तस्य यदि विप्रः षडंगवित् पि
 तृवत्सापत्नमातुः प्राक्स्नानादस्य संप्रतिमात्रबोधकत्वात् रावका रोवालस्यत्वायः
 स्तद्धृदं न ब्रजं ति चेदिति ब्राह्मोक्तेरिति तत्र तद्धृदं गत्वा स्तिकां यदि न स्पृशति त
 दास्य स्याः अन्यथा नेति तस्यार्थः कर्मानाधिकारमाह पैठीनिसिः स्तिकां पुत्रवतीं
 विंशतिरात्रेण कर्माणि कारयेत्तमासे स्त्रीजननी इदमाशौचोत्रं अन्यथा मृद्याः सपिंडा
 नां मासाशौचेन दभावः स्यात् विध्यनुवादविरोधश्च एतच्च सोमयागादि श्रोतभिः
 नपरं प्रजापितायाश्च दशरात्राद्धृदं स्नानादीति कात्यायनोक्तेः व्यासः प्रथमे दिव
 से षष्ठे दशमे चैव सर्वदा त्रिष्टोतेषु न कुर्यात्तत्कंतु पुत्रजनानि पुत्रशब्दोत्पन्नमात्र
 परः ब्राह्मे देवाश्च पितरश्चैव पुत्रे जाते द्विजन्मनां आयांति तस्मात्तदहः पुण्यं च
 वृंच सर्वदा जनने विरोधः प्रागुक्तः अत्र प्रयोगपारजातः पुं प्रसवे दशाहः अथ
 न्येतु मृदः पुं जन्मनि सपिंडानां दशाहं च धुध्यरेष्यते मृदादेकोदकानां च ए
 काहं स्तके क्वचित् स्त्रीजन्मानि सपिंडानां सोदकानां मृदा छुचिः स्त्रीषु पियु

सर्वज्ञेयं संपिंडत्वं हि ज्ञोत्तमा इत्यादि निस्मृतेरित्याह मेधातिथिरपि अष्टतानां
तस्त्रीणां त्रिपुरुषा विज्ञायते इति विशिष्टमुक्ताः शौचेणैव तद्विवाहे तु विधि
दर्शित एवेत्याह अन्ये तु त्रिपुरुषसंपिंडास्य कानीन कन्या परत्वमाहः अप्रज्ञानां
तथा स्त्रीणां संपिंडास्य संप्रपौरुषं प्रज्ञानां भर्तृसंपिंडां प्राह देवः प्रजापतिरिति कौ
र्मचिरो धातु च अत्रेदं तत्वं पंचमान्सप्तमाक्षीनां यः कन्यामुद्धरेद्भिजः गुरुयत्नी स विज्ञे
य इत्यादि विरोधान्न त्रिपुरुषप्रकरणात् न्मरणशौचपरं वसिष्ठेन दत्ते उदकदानो
क्तैः तेन कन्याप्रसवे पिसाप्रपरं दशरात्रमेव न च कन्यापुत्रप्रसवे वलावलंक्षा युकं
अग्निस्मृतिस्त्वनुकल्पो विगीता चेति सिद्धान्तः अन्यथा त्रिपुरुषसंपिंडानां अष्टमादि
सोदकानां च अहसा म्यायोगात् चतुर्थ्यादिसप्रमां जानां च किमपि न स्यात् किंच
स्त्रीजन्मादेशेन त्रिपुरुषस्यापि ज्ञेयत्वं च त्रिरात्रमित्यने कार्यविधिः कथं स्यात्
वाक्यभेदापत्तेः न च चतुर्थ्यादीनां सोदकत्वं क्वापि सिद्धं तेन त्रिपुरुषचतुर्थ्यादीनां च स्त्री
जन्मनि सोदकत्वं विधाय पुनस्तेषां त्रिराराशौ च विधौ विध्यनुवादविरोधे वाक्यभेद
यंचेत्यसंबन्धार्थानि स्मृतिर्ह्यया अथ मृताशौचं हारीतः जातमृते मृतजाने वा संपिंडा
नां दशाहमिति दशाहमिति त्वाशौचपरं जातमृतेनाल्लघे दोर्ध्वं वा वन्न छिद्यतेनालंता
वत्रा प्रीतिस्तनकं छिन्नेनाले जतः पश्चात्स्तनकं तु विधीयते इति जैमिन्युक्तेः नाज्या
छिन्नाया मारौ चमिति हारीतोक्तैः अनाडी छेदान् प्राकृष्यातः स्पर्शपिनदोषः इति

320-11

शुद्धितत्त्वोक्तिः परास्तानाभिधादात्तुः अतौ स हन्मनः जीवनजातो यदि ततो मृतः स तत्
कएव तत्सतकं सकलं मातुः पित्रादीनां त्रिरात्रकं इदं च प्रसवाशौचमेव शावनिमित्तं
स्नानमात्रं प्रक्षामकराणां सद्यः शौचमिति शंखोक्तैः अत्र कश्चिदाह नामकरणमाशौचात्
तकालोपलक्षणं प्राशौचव्ययगमे नामधेयमिति विष्णुः अत्र शौचे व्यत्युक्तांतेना
मध्येयविधीयते इति मन्त्रकैश्च नामो नियतकालतात् न च नामधेयं दश्यानुद्वाद्या
चापि कारयेत् पुण्येति चैव मुहूर्तवानक्षत्रवागुगान्विते इति मन्त्रकैरनियतकालत्वं द
शम्यामतीताया विषुः द्वादश्यामतीतायां क्षत्रियः वैश्यः क्षोडशेः शूद्रः एकत्रिंशे इत्यपि ज्ञेयं
पुण्य इत्याद्यनुकल्पः तेन नाम्नाः कालोपलक्षणं एवं दंतजनने धि दंतजन्मसमये मासीत्
पनिषदि नियतकालत्वात् चैलितुनकालोपलक्षणं प्रथमे वै तृतीये वा कर्तव्यं स्मृति
चोदनादिति मन्त्रकैः ततः संवत्सरे परेण च डा कर्म विधीयते द्वितीये वा तृतीये वा कर्त
व्यं स्मृतिदर्शनादिति यमोक्तैश्च तस्मान् नियतकालत्वादिति तन्मदं चैलवन्नमदंत
जननयो रपि स्वरूपेण नियतत्वात्पपत्तेस्तद्विशिष्टकालो नुवादे वा कथं भेदान् सप्त
ममासादवाक् दंष्ट्रजन्मनेतदभावप्रसंगाच्च यस्तपनिषद्दर्शनेन निर्णयं क
र्तुं सन्ननं शतायुः पुरुष इति श्रुतेरवाक्पितृमरणेन दंतकर्मणि न्यजेत ननु
कालानुपलक्षणेनामेतदर्थं न दभावे वा स्नानमात्राशुद्धिः स्यात् ततः किं श्रु
त्तं अतएवात्र अदंतजन्मतः सद्य इति सा च विष्णुवचनात्वासाभावविषय

येतिवक्ष्यामः त्रिवर्षादावपि स्यादिति चेत् दाहदंतादिनिमित्तेर्विशेषाशौचेः पूर्वापचा
 धात तदुक्तं पूर्वावाधेनोत्पत्तिरुत्तरस्यादिसिध्यतीति जननादशरात्रे व्युत्पन्नरात्रे संव
 त्तरे चेति परिशिष्टे द्वादश्यामयरात्रं मास्योर्गन्तयापरे अष्टादशान्तिन्यावदन्त्यन्ये म
 नी धिगा इति भविष्ये च नाम्नः कालानियमाच्च न च प्रायस्यादशरात्रे नीते इति मुख्यः का
 लः अन्यस्तनुकल्प इति वाच्यं चोलेपितया यत्नेः न च दंतजननकालानुपलक्षणो सदंतजा
 तमृतस्य दोहे काह प्रसंगः दशाहेन वाधात् नामकरणोत्तरमेव हाह प्रवृत्तेः दशाभ्यन्तरे वा
 ले प्रमीते तस्य बाधवैः शाचाशौचं न कर्तव्यं सत्याशौचं विधीयते इति वृत्तमनूक्तेः अशौ
 चे दाहोपलक्षणं सतकवदिति पारस्करोक्तेः यत्र विष्मक्तेः अनिष्टतिः दशाहे तु पंचत्वे य
 दि गच्छति सद्य एव विष्मक्तेः स्थाने प्रेतो नोदकक्रियेति तदपि प्रेताशौचं निषेधार्थं न तस
 यस्त्वपरं वाक्यभेदान् किंच नामकालात् किंच नामकालात् प्राक् मृतस्य स्नानं तदुक्तं
 रत्वे काहादि नामकाले त्वेकादशाहे मृतस्य न किमपि स्यात् अथ शंखवचनेत्यवलो
 पे च मी तदा प्रणतिनोपपद्येत नाम्नि वापि कृते सतीति मन्वादि विराधात् कृतममृत
 तिमाधवमिताक्षरादिविराधात् च न कालोपलक्षणं कर्त्तव्येति दिक् नामांतरं दंतोत्प
 त्तेः प्राक् दाहे सत्यहः अदंतजाते तनयेशिरोगभङ्गुते तथा सपिंडानां सर्वेषामहारात्रम
 शौचकं इति यमोक्तेः दाहाभावे तु स्नानमात्रं अदंतजाते प्रेते सद्य एव ना स्यादिति संस्का
 र इति विष्णुना दाहाभावे तदुक्तेः अदंतजन्मनः सद्य इति याज्ञवल्कीयाच्च तदाह विकल्प

391-A

वाहलौगाक्षिः तृष्णीमेवोक्तदकं कुर्यात्तृष्णीसंस्कारमेव च सर्वेषां कृतचूडाणां यमि
नि मेधातिथिहरदत्तौमनुरपि नात्रिवर्षस्य कर्त्तव्यं वाधवेरुदकक्रिया जातदंतस्य वा
कुर्युः नाग्नियापि कृते सतीति उदकं दाहोपलक्षणं दंतोत्पत्त्यनेतरं प्राक्त्रिचर्यानाम् न तैः
दंतजातेष्य कृतचूडे त्वहोरात्रेण शुद्धिरिति विष्णुः त्रिवर्षाध्वं कृतचूडे कृतचूडे वा
प्रागुपनयनाग्रहः यद्यप्य कृतचूडे वैजातदंतस्तु संस्थितः तथापि दाहयित्वेन मार्गो
चंद्रमाचरेदित्यंगिरसां तैः अत्र जातदंतत्वमुद्देश्य विरोध एवात्वादविवक्षितं दाहयि
त्वस्य स्पनुवादः उभयविधौ वाक्यभेदान् त्रिवर्षात्प्राक् चूडाभावे निदाने अहस्त
दभावे विष्णुः तैरेकाह इति माधवः मय प्रवर्षादौ कृतचूडस्य सदाग्रहः निर्वृत्तिश्च
उक्तानां त्रिरात्राधुदिरिष्यते इति मन्त्रं तैः शुद्धितत्वादयो गोडास्तु अजातदंतम
रणेष्टिनि शिशोराकाहमिष्यते दंतजाते त्रिरात्रं स्याद्यदि स्यात्तां त्रिगुणो इति कोमा
त्कारणं अद्वयं अन्तर्गतानां कन्यानां तथा अद्रजन्मामिति आहान्तुतोरं रेवतिः
त्रिरात्रं भवद्देष्टव्यमासेपिशिशोमते इति मत्स्यसंज्ञा दंतजाते अद्रे त्र्येचाहः यथा
हंगिराः अद्रे त्रिवर्षा न्यनेतुमते अद्रिस्तु पंचभिः अत ऊर्ध्वमते अद्रे द्वादशाहो विधी
यते अद्रवर्षातमतीतोयः अद्रः संम्रियते यदि मासिकं त्रिभवेद्ये च मित्यांगिरसभाधि
तं इति यत्तु अन्तर्भायः अद्रस्तु निशं रेवतिं मासां रोचं नत्तगुणं अद्रपरं त्रिगुणं
त्वन्तर्भायं अद्रे त्रिवर्षार्धं द्वादशाहः अद्रवर्षं मासः अद्रवर्षात्प्रागपि कृतो दाहः

मासस्याहुः। न तत्र लंघयसि सर्वेषामिति विरोधाद्विषयवर्गात्तान्नादत्तव्यमिति विज्ञा
 नेऽपराधयः दक्षिणान्यानां तपे वच अन्यदेशेनागुक्तमिति गोडाः। एवं कन्यास्वपि
 तास्वप्यज्ञातदंतासु पित्रोरेक राज्ञमिति साधवः यत्र विज्ञानेऽपरेणेते अनद्विषय
 उभयोः सत्तकं मातुरेव हीनियान्नवत्त्वः गर्भस्थेऽपेतमातुर्दशाहं जात उभयोः कृतेना
 मिसोदराणां चेति पेंगोक्तेः अपि त्रैसोदराणां च दशाहमस्य शतवृत्तितन्नेदानीं प्रचर
 ति अतएव स्मृत्यर्थसारे तन्नाह तं कन्यासु चोलातप्राक् मृतोऽस्त्रानं अचूडायां तु।
 कन्यायां सद्यः शौचं विधीयते इत्यापस्तंबोक्तेः इदं त्रिपुरुषं मध्ये अप्रपन्नानां तु स्त्रीणां
 त्रिपुरुषां विनायते इति शिष्टोक्तेः इदं वाग्दानेतरमिति गोडाः अप्रपन्नानां तु स्त्रीणां विधिं
 उपसाप्रयोक्तुमिति वचनात्तन्मोलात्तरं वाग्दानात्पश्चेतां स्येकाहः अविशेषोऽप्येवार्था
 नामवाक्यं स्कारकर्मणः त्रिरात्रात्तु भवेद्युद्धिः कन्यास्वप्ना विधीयते इत्यगिरसा त्रिरा
 त्रिष्येहो विधानात् अतः श्रुदस्योपनयनस्यानीया विवाहात्सर्वत्रिरात्रं विवाहात्क
 र्त्तुं वाग्दानमध्यो त्रिरात्रमेव न्यपराकाद्या श्रुदः निर्गुणेत्येवार्थं वाहः षड्वेदार्थं वि
 वाहाभावे द्वादशाह इति गोडाः सगुणानां वाग्दानार्थं तु विवाहाभावेऽपि पितृशौचं वक्ष्यते।
 तदुत्तरं प्राग्विवाहाद्भूतकुले पितृकुले च सप्तपुरुषावधि त्रिरात्रं अगारिष्वेव पुनस्तथा
 नैव प्रतियादि असंस्कृतात्साज्ञेया त्रिरात्रमुभयोः सत्तमिति मरीचुक्तेः रत्नाकरेऽपि तत्वे
 च शंखः पितृवेश्मनियानारीरजः पश्यत्यसंस्कृता तस्यां मृतायां नारी च कदाच दपिशाम्य
 ति यावज्जीवमशौचमिति मिश्राः अथानुपनीते किंचिदुच्यते नाम्नः पूर्ववत्तनणमेव त

322-17

हर्ध्ववर्धययात्सर्वचोत्ताभावेमुदकदानविकल्पः नात्रिवर्धस्यकर्तव्यावाधवैरुदकाक्रिया
जातदंतस्यवाकुर्ध्वनामिवापि कृततेसतीतिमन्त्रैः उदकक्रियासाहचर्याद्दोषोपलक्षणं स्व
ननेतुनान्यदोर्ध्वदेहिकंऊनद्विवाधिकंप्रेतंएताकैर्निरवनेदुविषमगाथागायमानोयुस
स्तक्तमनुस्मरन् माधवीयेब्राह्मेपि स्त्रीणांनुयतितागर्भः सद्योजातोमृतोथवा अजातदत्ता
मासेवामृतःषड्विगितेवर्धः वस्त्राद्येभ्यश्चित्तुत्वा निक्षिपेत्तुकाष्टवत् स्वनिश्वाशनकै
भूमौसद्यःशोचंविधायते अलंकरणमपिवक्ष्यते कृतचूडस्यनुत्रिवर्धान्प्रागर्ध्वंउयन
यनात्सर्वंचतुष्ठीमग्न्युदकदानं तृष्ठीमेवादकंकुर्यात् तृष्ठीसंस्कारमेववेतिपूर्वाक्तौ
गाक्षिस्मृतेःपिंडदानमधिकार्योअसंस्कृतानांभूमौपिंडदद्यात्संस्कृतानांकुरोच्छितिप्रचेतसो
क्तैः उदकदानंसापिंडः कृतचूडस्येतिगोतमोक्तैः उदकग्राहणमोर्ध्वदेहिकपरमितिहरदत्तः
द्वादशाहत्सरादवाकुपोगंडमरणोसति सापिंडीकराणंनस्यादिकोदिष्टानिकारयेदितिहरद
त्तधृतदेवलोक्तैश्च मरीचिरपि प्रेतपिंडवर्धदद्याद्भूमौत्रिविवर्जितमिति एतदनुयनीत
परमिति विज्ञानेश्वरः अत्रचूडचपवावधिः पूर्ववाकोष्ठतद्ग्राहणं उदकग्राहणस्योपलक्षणं
त्वाद्वादःपूर्वावधिरिति केचित् द्वादशाहत्सरादित्वनुयनीतद्विज्ञानदाम्पदविषयं अहो
चेपिंडदानविधिमाहपारस्कारः प्रथमेदिवसेदयासुयःपिंडाःसमाहितैः द्वितीये चतुरादद्या
दस्थिसंचयनंतया त्रीस्तदद्या तृतीये द्विवस्त्रादिक्षालयेत्तत्रति अत्रदेवयाजिकनिबन्धे वि
शेषः शिशुरादंतजननादालःस्याद्यावदाशिरवः कथ्यन्ते सर्वरासेषुकुमारोमौजबंधनात् आ
धंचवर्धोक्तोमारंयौगंडानवहायनः तथागर्भेनष्टैः क्रियातास्तिदुग्धंदेयेशिशोमृते परंच

यायसेहीरंदद्याद्वालविषयितः एकादशद्वादशद्वात्रयोत्सर्गविधिविना तथा यत्र प्रसीय
तेवालस्तत्र प्रायः किंचित्समानवयसांसकृत्वा त्रयथाविधि भक्ष्यं भोज्यं च दातव्यं त
थाच सखभक्षिकाः तद्वत्प्राणिप्रदेयानि सोपानत्कानितस्मै कुमारोणां च वालानां
भोजनं वसुवृष्टनं यथाय जीवते वालस्तत्र द्विप्रायदीयते तथा भूमिनिक्षेपणं बाले
प्रावर्षद्वयमाशिरवंततः परं रवगम्रेष्टदेहदाहो यथाविधि अर्चयेत्तर्ध्वं रवनननिक्षेप
र्धमावर्षद्वयमिति प्रागपि कृतं च इत्यननिक्षेप्यर्धमाशिरवमिति तथा चूडाकर्मणि सं
जाते विपत्तिस्तदा भवेत् सज्जकं ते प्रकृतं व्यं ह्येव स्यात्सर्जनं तदा तत्र दाहः प्रकृतं व्यु
दकं तत्र निष्प्रितं आह्वानिषोडशापिस्युः सपिंडीकरणं विना इदं पंचवर्षांतरं जन्मतः पंच
वर्षाणि भुंक्ते दत्तमसंस्कृतं पंचवर्षाधिकं बाले विषमर्धदिताय ते ह्येव तसर्गादिकं कर्म
कर्मव्यमुदकं ततः अन्यदनि संप्राप्ते कुर्याच्च द्वादशानिषोडश यायसेनगुडेनैव पिंडं दद्या
इयथाक्रमं उदकं भद्रदानं च यददानानि यानि च दीयदानादियत्किंचित्यं च वर्षाधिकं स
दा कर्त्तव्यं तत्र रवगम्रेष्टज्जातं वा कप्रेतत् प्रयेत्वा हाकारेणैव कार्योपकोदिष्टानिषोड
श ऋतुदमैस्तिलैः सुक्तेः प्राचीनाचीतिना तथेति तत्रैवाक्तेः अत्र मूलं चित्यं वार्षिका
दिभुनभवत्येव सपिंडनाभावे पितृत्वायोगान् वचनाभावाच्च दिवोदासीये अर्चते
निधने प्राप्ते विप्रोदोऽदयातिवत् क्रियासर्वः समुद्दिष्टाः सपिंडीकरणं विना उदकं पि
डदानं च कृतं चूडविधीयते इति स्त्रीणां तद्वा हास्माग्दकपिंडदानविकस्य स्त्रीणां चैके

323-17

प्रतामितिगोतमोक्तेः स्त्रीश्च इमसधर्माणश्चित्चनान्प्रदेय्येवं एतद्वयोनिमित्ताशौ
 चंसर्ववर्णसमं तुल्यं वयसि सर्वेषामिति ज्ञाते तथेव चेति व्याघ्रपादोक्तेः यानितुः कि
 त्तत्र च उक्ते विप्रैश्चिराज्जातमुद्धिस्तु पंचभिः अत ऊर्ध्वं सृतेषु देहादशाहो विधीयन्ते य
 इवर्षांतमतीते तुष्टे देमासमशौचकमित्यागिरसादीनि तानि शिष्टविगीतान्नादत्त
 व्यानीति विज्ञाने प्ररमदनपारजातादयः तेनैतदशाचध्द्राणां व्यवस्था प्रागुक्तं हेयवत्
 ल्यं वयसि सर्वेषामिति दाक्षिणात्यपरं अन्यदेशे कौर्मात्काव्यवस्थेति मुद्धितत्वे मुथजात्मा
 शौचं तच्च द्विजपुंसामुपनयनोर्ध्वं प्रवर्तते त्रिरात्रमात्रनादेशादशारात्रमतः परं क्षेत्रस्य
 द्वादशाहानि विंशः पंचदशे वतः त्रिंशदिनानि ऋदस्य तदूर्ध्वं न्यायवर्तिन इति याज्ञवल्क्यो
 क्तैः यत्तु स एव त्रिरात्रं दशारात्रं वा शावमाशौचमिष्यते इत्याह तत्र दशाहे त्रिरात्रमस्य
 शात्वं एकदिनोत्पन्ने शौचद्वये दशाहमस्य श्यत्वं मराण्यदितुल्यं स्यात् मराणेन कं
 पचनं अस्थिर्यंतु भवेद्वात्रं सर्वमेव सवाधवमित्यंगिरसोक्तेः दशाहशौचपरत्वे दशारा
 त्रमतः परमित्यनेन न पौनऋत्यापन्नेरिति मुद्धि विवेकादयः तत्र स्मृतिभेदान्न त्रिरात्रं द
 शारात्रं चेति किं कल्यायोगाच्च यस्तु पुत्राणां वेदानध्याप्य सति विदधाति तत्राह आ
 म्नायनः द्वादशारात्रं महागुरुमुदानाध्ययने वर्जयेत् त्रिरात्रं प्रजया च दुक्त निषेधो वा
 अस्थिर्यत्वं मात्रं वा न तु कर्मानधिकारः एकादशाहे अंते वैश्वदेवोक्तेः एकादशादि
 मुक्ता तत्र संते विधीयन्ते इति मुद्धितत्वे तु त्रयः पुरुषस्यतिगुरवो भवंति माता

नि.सिं.
३२४

324

पिताचार्यप्रेति विष्णु क्लेः पित्रादयो महागुरुवः भर्ताप्युक्ते रामायणे पतिर्वधुगति
भरतीदेवतंगुरुरेव च शातातयः पतिरेको गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः एकपद
मूढानां पितृमातृ निषेधार्थं सोदकानां त्रिरात्रं जपेत्तदा चिन्तयति मन्त्रैः शुभिन्यु
राणे सपिंडतात्पुरुषे सप्रमेविनिवर्तते समानोदकभावस्तु निवर्तते चतुदशे जन्म
नामस्मृते चैको तत्परंगोत्रमुच्यते तदस्यतिः दशाहेन सपिंडास्तु मुध्यति प्रेतस्तत्के
त्रिरात्रेण सकृत्प्राप्तत्वा मुध्यति गोत्रजाः स्त्रीश्च द्रव्योक्त विवाहोर्ध्वं जात्या रौचं
वैवाहिके विधिः स्त्रीणां मोषनाय निकः स्मृत इति मुक्तेः दत्तानां भर्तुरवदि स्वजात्युक्तमारो
चं स्यात्तत्के जातके तथेति माधवीये ब्राह्मणे अद्रस्य विवाहाभावे पित्रोऽप्येवैर्ध्वं मा
सः अत्र नृभार्यः अद्रस्य स्तुष्टोऽशादुत्तरोत्तरं मृत्युसमधिगच्छेन्मासात्तस्यापि बाधवाः
अद्रिंसमधिगच्छति नात्र कार्यं विचारणेति अथ राक्षसं शरवाक्तेः निर्णीयामृतमदनपारजा
तादौ त्वन्यथेक्तेः शरीतः आमो जीवधनादि प्रः क्षत्रिय अधनुग्रहात् आप्रतोदग्रहाद्वरयः
अद्रो वसुद्वयग्रहात् धनुः प्रतोदावष्टमे वै दशो वसुद्वयमिति तिथिस्तु रात्रमात्रनादे
रादित्रयतेकांशोपलक्षणार्थं सचकालः स्वस्तीयः सर्वेषां चाष्टमवर्षरूपः तेन चतुर्णा
मपि वार्णानां मुपनयनाभावे प्यष्टमादूर्ध्वं पूर्णमेवाशौचं तत्रापि प्रागाधमादिशवः प्रो
क्ता इति स्मृत्यन्तरादूर्ध्वसंपूर्णमवर्षं कृत्रिरात्रं ये प्याषोऽशाद्वेदाल इत्याहुस्तेषां मध्यष्ट
मादूर्ध्वं अद्रमासाव ऊर्ध्वमष्टम्योवर्षेभ्यः शुद्धिः अद्रस्य मासकीति वचनादित्या

राम
३२४

324-17

द्वारलताशुद्धितत्वादिगोडुगंथेषु क्तं अनुपनीतो विप्रश्च्युक्ताः म्रियते यत्र तत्र स्यादशौ
चैव हमेव हि द्विजन्तनामयं कालस्य यागांतुषडाधिक इत्यादि पुराणोक्तैरुपनयनं का
लोपलक्षणं षडव्ययमासत्रयाधिकपरं गर्भोष्ठमेष्टमेवाव इत्युक्ते यत्र जावालः
व्रतच्छडादिजानांच प्रतीतियु र्थाक्रमदशाहज्यहाकाहेः म्रुध्यं त्यपि हि निर्गुणा
इति द्विजादताः इदं प्रतीत्युक्तः यचाकोपनीतपरमिति तदेतन्नाद्रियं ते वृद्धाः योनि
नु पराशरः एकाहाहाहाः म्रुध्येत यो गिनेवेद समन्वितः ज्यहात्केवलवेदस्तु द्वि
हीनो दशभिर्दिनैः केवलश्रौताग्नरयुषलक्षणं ज्यसंकोचोद्दामाध्यायनपरावन
नुसंध्यादाविनिहारलतायं ज्यगिराः सर्वेषामेव वर्णानां सतके मृतके तथा दशाहा
द्विरेते यामिति शातातयो ब्रवीत देवलः आमुद्धं दशरात्रं तु सर्वेषामपरे विदुः निधने प्र
सवे चैव परंपतः कर्माणः क्षयः ज्यत्येतोक्तस्य कर्महानौ पीडावतो विप्रपरिचर्यपरं प्र
इदशरात्रमिति हारलतायां दक्षः सद्यः शौचं ते ये काहस्महस्मन्तरहस्तथा षट्दशाहादशाह्म
यक्षो मासस्तथैव च मराणां ते तथा चान्यदशपक्षास्तु सतके मितक्षरायां म्रुत्येनरं चतु
र्थे दशरात्रं स्यात्समिश्राः पुंसि पंचमे षष्ठे चतुराधुद्धिः सप्तमे त्वदरे वतुः इत्यादीनि नान्यप
दनायद्गुणवदगुणवद्विषयाणि देशावाभेदाद्दाने यानि सद्यः शौचादिषडंशताः यक्षाया
यावरादिपराः ज्यमराणां ते जननादिनिमित्ताद्भिन्ने शिष्टविमानाच्चादत्तव्यानीति विज्ञा
नेश्वरः ज्यस्त्राचाचाप्यद्वाचमदत्वास्त्रस्तथा द्विजः एवं विधस्य विप्रस्य सर्वदा सतके

भवेदिति दक्षोक्त्या अन्यपर्यायस्य गेहे भार्या स्यात्तस्य नित्यशः आशौचं सर्वकार्येषु देहे भ
 वति सर्वदेति ब्राह्मणवशाद्यवस्थेऽप्यपरार्कमदनपारिजातादयः माधवस्तु तत्र स्नाध्याय
 साधेऽप्यमघसंकोचनंत्येति कालवर्ज्यैः कृतेः दशाहावविप्रस्य सपिंडमरणे सति कल्यांतराणि
 कुर्वाणः कलौ भवति किलिषीति हारीतोक्तेश्च अन्यनारोचयदायुगांतरविशयाः मरणांता
 दियदास्तु निदार्थवादं अन्यथानामधारके विप्रस्तु दशाहस्तनकी भवेदिति विरोधः स्यादित्याह
 यत्र देवलः दशाहादि त्रिभागेन कृते सं चयने क्रमात् अंगस्यरी नमिधंति वर्णानां तत्त्वदर्शनः
 तिपर्णेशोच्येऽप्यपतामाह यच्चानुपनीतानि क्राताशोचेत्रात्रादौ तेनैवेकं स्वापोच्यकालादि
 त्रैयं स्यरी नंतु त्रिभागत इति तदपि युगांतरेषु अस्थिसंचयता इध्वं मंगस्यरी नमेव चेति
 माधवीय कलौ तन्निषेधात् यत्र हारलतायां चतुर्थह निकर्तव्यः संस्यरी ब्राह्मणस्य त्वि
 ति प्रचेतसोक्तेश्च हे कशोचैपि चतुर्थाह गवांगस्यरी इति तत्र देवलादिविशेनास्य दशा
 हगोचरत्वात् येन वर्णशंकरं नाम र्धाचसिक्ता घास्तेषामाशौचविशेषः कलौ नोपयुक्त इ
 तिनोच्यते प्रतिलोमजानां शौचं मलायकघातानां तस्मान्मात्रमिति विज्ञानेश्वरः माधवस्तु
 शौचाशौचे प्रकुर्वीरनश्रुद्वर्णसंकरा इति ब्राह्मणोक्तेश्च अत्र दशाह हारलतायेवं दत्तकीत
 कृजिमादियुत्रेषु अस्ति न वर्णगासु स्त्रीषु चपिंडत्वेऽपि प्रसवे मरणोचयदा परपित्रोर्भर्तृश्र
 त्रिरात्रमेव न दशाहादि अन्यैरसेषु युत्रेषु जातेषु च मृतेषु च परस्ववासु भार्यासु पुस्तता
 सु मृतासु चेति त्रिरात्रानुवृत्तौ विधत्तेः सपिंडानां त्वेकाहः परस्ववासु भार्यासु युत्रेषु कृ
 तकेषु च भर्तृपित्रोर्भिरात्रं स्यादेकाहस्तस्य सपिंडत इति माधवीय हारीतोक्तेश्च सनके

मृतकेषु पुत्रेषु भार्या स्वन्यगतासु च परस्वर्वासु च स्त्रीषु त्रिरात्रं चैवात्रिरात्रं परस्वर्गयोः
 एकाहस्तपिंशानां त्रिरात्रं पञ्चवेपितुरिति मरीच्युक्तेः शंखः अनौरसेषु पुत्रेषु भार्या
 स्वन्यगतासु च स्त्रीषु त्रिरात्राधुद्विरिष्यते परस्वर्गा पुनर्हः इदं सर्वाणि सु हीनवर्णास्तु शं
 रवत्तिरिव तौ परस्वर्गासु भार्यासु पुत्रेषु कृतकेषु च नानध्यायो भवेत्तस्य नाशो चेन्नोदकक्रि
 या त्राप्तेऽपि आशौ च त्रिरात्रं स्यात्समवर्गेषु निश्चितं यत्तु यदुपरीतो अन्यस्वर्गवत्सु त्रि
 दिनाधुद्विरिष्यते तासेवानन्यस्वर्गासु यंचाहोभिर्विशुध्यतीति तत्रियेचाहोमस्तु चिन्त्यं ह
 यत्तु याज्ञवल्क्यः अनौरसेषु पुत्रेषु भार्या स्वन्यगतासु चेत्येकांमाह तदसन्निधौ ज्ञेयं यदापितु
 ककाहस्तदासपिंशानां स्नानं अन्यामिनेषु दारेषु परपत्नीसु वा गोत्रिणः स्नानमुद्धाः स्युस्त्रि
 रात्रेणोचतप्यतेति प्रजापत्युक्तेः पितेति चोदुपलक्षणं तथोपक्रमान् यत्तु दत्तकेपालकप्र
 तियोगिकपुत्रत्वात्पुत्रवैपितुर्न त्रिरात्रं पूर्वसंबंधानि ज्ञेयं अनदशाहानि कश्चित् तत्राज्ञाने
 पितृवैजिकादपि संबंधादनुरुद्धादधेयमिति वाचनिकारोचस्यानिवर्त्यत्वात् पितृभारो
 पि दत्तकादीनां त्रिरात्रं मुद्वितत्वे ब्राह्मं दत्तकप्रसूयं दत्तः कृत्रिकीत एव चेत्पुत्रकर्म स्तु
 तके मृतके चैव महीरोचस्य भागिन इत्युक्तेः दत्तोरस्यो भागोस्तु पुत्रयोश्च स्मृतिको मुद्या
 हरलतायां चैवं दत्तकस्य पुत्रयोत्राणां जनने मरणो वा सपिंशानामेकाहः वीजिनश्चेति गोत
 मेन साधनयो रथसापिंशोक्तैः सपिंशानां चैकाहस्योक्तत्वात्सपिंशे तु पुत्री कृतदशाह एव तत्रा
 कांशभावात्सापिंशेन दशाह प्रावल्याच्च परस्वर्गपरमर्हं रुत्यत्रयोः पुत्रयोस्त्वाह माधवीये

मरीचिः मातुरैवशाद्विपित्तकौभूतराचन्यगोत्रजौ एकाहंस्तनकेतत्रिरात्रंमृतकेतयो
 रितिदिक्ऊढकन्यानांनुविष्णुगह संस्कृतासुस्त्रीषुनारोचंयित्तपक्षेतत्प्रसवमरणेचे
 त्पित्तगहस्यात्तदेकरात्रंत्रिरात्रंचेतिप्रसवेएकरात्रंमरणेत्रिरात्रमिति विज्ञानेप्ररा
 पराक्तौ माधवस्तुप्रसवेपित्तत्रिरात्रंयित्रोःएकरात्रंभ्राज्यादिवंधुवर्गदत्तानारीपित्तगहंस्
 येताथम्रियेतवा तदंधुवर्गस्त्वेकेनशुचिस्तज्जनकस्त्रिभिरितिज्ञासोक्तैरित्याह यत्तु क
 म्रिदाह पक्षगण्डेनभ्रातरोगद्व्यते वाक्यांतराणभगिनीमृतौत्रिरात्रोक्तैरिति तच्चित्यं तद्वा
 वोदेतद्विरोधाच्च भ्रातःप्रसवेएकाहःमृतौत्रिरात्रमिति केचित् युक्तात्पक्षिणी भूतमि
 त्त्राणामेकाहः वर्गोक्तैः इतरेषां यथाविधीतिवक्ष्यमाणवचनाच्च यत्तु प्रधानगहंमृतौ
 पित्तोःप्रांति भ्रातुस्तद्विरितिकाम्रित्सानिर्मलत्वानारोचंयित्तपक्षेतत्त्येतद्विरोधाच्च भ्रातद
 ज्ञानारीपित्तगहं प्रधानेस्यतेयदा म्रियतेवातदानस्याः पित्तशुद्धेस्त्रिभिर्दिनैरिति कल्प
 तरोशुद्धितत्वेच पित्तगहं प्रसवेतुपित्रादीनामारोचंनास्तिमृतौपित्तोस्त्रिरात्रमस्त्येव प्र
 त्प्रतत्सुयोषित्तुसंस्कृतासुच मातापित्तोःत्रिरात्रंस्यादितिरेषां यथाविधि म्रजानदंता
 सुपित्तोरेकरात्रमितिमाधवीयेशंरवकार्क्षमाजिनस्मृतेः चैजिकादभिसंवंधादिन्युक्तेप्रस
 त्पर्यसारेष्वेवमाधवस्तु इदंत्रिरात्रंज्ञानदंतपरं दौतोत्पत्ते प्रागेकरात्रंयित्रोः सद्यस्तुप्रोटक
 न्यायांप्रोटायंवसराशुचिः प्रदत्तायांत्रिरात्रेणज्ञायांपक्षिणीभवेदिति युक्तस्योक्तैरन्यत्र
 कन्यामृतौपित्तोःपक्षिणीत्याह षडशीतावधि पित्तगहंमृतौत्पत्त्यदिपुत्राप्रमीयते

326-11 रु३

पक्षिणी तत्र पित्रोः स्यान्त्रान्येषामिति निश्चय इति गामो नरे इयमिति स्मृत्यर्थसारे भ्रातृस्तु
पक्षिणी अमुं रमो भगिन्यो च मातुला न्यो च मातुले पित्रोः स्वसरितद्वय पक्षिणी कथं येति
गामिति वदितं स्थितिस्मृतेः मुक्तिं न त्वेदोर्मि आदत्ता सोदरे सधमाच्छेदकरात्रकं आप्रदाना
त्रिरात्रं स्याद्दशरात्रमतः परं पित्रोर्मतौ स्त्रीणां त्रिरात्रं पित्रोरुपरमे स्त्रीणां मृदावंतु कथं
भवेत् त्रिरात्रेणेव मुक्तिः स्यादित्याह भगवन् यम इति माधवीये वदितं मनस्तेः इति दशा
हंतः ऊर्ध्वंतु पक्षिणी भ्रातृभगिनी गृहे न स्यात्वा तद्गृहे न तौ त्रिरात्रमन्यत्र तु पक्षिणीति
प्रउशीतावुक्ते त्रास्तेपि परस्परं मृतौ भ्रातृभगिन्योः पक्षिणी भवेत् मातुलाणो ववत्तु मा
पितृव्याशौचमिष्यत इति शिष्टात् तस्य निर्मूलत्वात् पितृव्ये स्नानमात्रमाहुः त्रिशतश्री
कथां प्रेतैश्चार्चयमातामहदुहितृसुतप्रेतत्रिपत्तिक स्वयज्यस्वस्त्रीयेषु त्रिरात्रं त्रिदिव
सममुचिः सोदकस्तु भयत्र पक्षिण्यशौचमृत्पिण्डुहितृसुतमदाध्याप्य बंधुत्रयांते वा
सिस्मस्रसुस्मभगिनीकाभा गिनेयप्रयागे मातामह्यां च पित्रोः स्वसारिचविरते मालेमा
तुलान्यावाप्यां सज्यातिरेव स्वविषयनृपते गामनाये च नष्टे शिष्योपाध्याय बंधुत्रयगु
रुतनयाचार्यासंगो ज्ञानवानप्रात्रियेषु स्वगृहपरमृतौ मातुले चैकरात्रं रात्रिं सन्नस्य च
रिण्ययत्तु कथमपि स्वल्पसंबंधयुक्ते स्नानवासायुते स्यादिदमपि सकलं सर्ववर्गेषु
तुल्यमिति अत्र मूलं मिताक्षरादौ स्पष्टं दोहत्रे भागिनेययोः रुनीतयोस्त्रिरात्रं अमुं
पनीतयोः पक्षिणी संस्थिते पक्षिणी रात्रिदोहत्रे भागिनीसुते संस्तुते तु त्रिरात्रं स्या

नि.सिं.
३२६

३२७

दिति धर्मो अवास्थित इति स्रमन्तः संस्तुते दाहेन ते तदा हे त्रिरात्रं नान्यथेति गेडाः
तत्र विशेषवैयर्थ्यात् मानुलादौ सन्निधिविदेशाभ्यामपि काह्योक्त्या मनुः
त्रिरात्रमादुराणोचमाचर्षे संस्थिते सति तस्य पुत्रे च यत्न्यं चेदि वारात्रमिति स्थितिः ।
श्रात्रिये स्वर्गदे त्रिरात्रं श्रात्रिये तस्य संयत्ने त्रिरात्रमशुचिर्भवेदिति स्मृतं ते रिति माधवः
एकाग्रमीरणत्वे काहः अस्ति शुक्लकालश्रातस्मात्तया जनपदे त्रिरात्रे ज्ञेये धर्मिक
मकुर्वन्त रात्रिवाककः शब्दो भवतीति रात्रिवाच्यैः कर्ममध्ये अस्ति कृतं तथापि क
मरायाणोचनिषेधात् तदुरमवेत तत्रैव गेडास्तु समानोदकाणां श्रातो गेडा ज्ञानामहः
स्मृतं मानुवंधो गुरोर्मित्रे मंडलाधिपानौ तथेति ज्ञावालोक्ते मात्रवंधुस्ते काहमाहुः शि
ष्ये सोपनीते अहः शिष्यसतीर्थसत्रस्य चारिषु क्रमेण त्रिरात्रमहोरात्रमकाहमिति माध
वीये वीधापनाक्तेः अन्यत्र मनुः मानुलेयक्षिणीरात्रिशिष्यार्त्विग्वंधवेषु चेति वंधु
त्रयं श्रातपितृसु मातृसु मातृलपुत्राश्चेति विज्ञाने श्वरः अत्र पक्षिणी पितृश्वसादि
कन्यानामहानां त्वेकाहः तद्वंधुवर्गस्ते केनेति पूर्वोक्तव्रह्मात् यत्तु अदृशीत्या एव
पित्रो भगिन्यो रेये पितामहयोस्तथा ये मातामहयोश्चैव भगिन्यो तत्र जाश्रयाः मातृ
लाः स्वस्य पित्रोश्च यत्न्यं श्रापुत्राश्रयाः यामातृश्रमेति सर्वेषु पक्षिणी स्वर्गदे अ
हं एवं श्रमुरयामातृदोहि त्रिविधस्मृतं यच्च यमः यामातरि मृत्युदिति त्रिरात्रिणो न
योः स्मृता पक्षिणी शालकानां स्यादित्यात्तयो ब्रवीत् इति तन्निर्मलत्वात् मिताक्ष

त्रैकरा ५

राम
३२६

327-A

यदि विरोधोच्येयं मदनपारजाते विष्णुः असुपिंडे स्ववेशमनिमते राकराजं म्र
 त्तरदंनोतः शवेचेत्यापस्तवस्तुं जंतः शवेग्रामे धनुः शताद्वीगन्ममो ज्यदीयमु
 दकुंभं चोपनिधाय लुभं जीतयदिसमानवरां न गृहमेव सति का मित्याह प्रधान
 गृहमंतो ल गृहे यस्य मृतः कश्चिदसि पिंडः कथंचन तस्याप्यशौचं विज्ञेयं त्रिरात्रं
 नात्र संशय इत्यंगिरसोक्तमिति माधवः एतेन त्रिरात्रमसि पिंडे शुक्ल गृहे संस्थिते
 युचेति कोमिव्याख्याने अद्वितत्वे त्वह्मनुः अश्वद्रपतिताश्वा सामन्ताश्वादिजमे
 दिरे शौचं तत्र प्रवक्ष्यामि मंतुना भाषितं यथा दशरात्रात्पुनर्मृते मासात् अद्दे म
 वेच्छुचिः द्वाभ्यां नृपतितेरोहमन्ये मास चतुष्टयात् अन्ये ते बर्ज्ये ये केहमित्येवं मनुर
 ब्रवीत् अन्वो ह्येधः मन्त्यतः श्रपा क इति वाचस्पति यमः द्विजस्य मरणे वेशमविशु
 ध्यति दिनत्रयात् संवत्तः गृहशुद्धिं प्रवक्ष्यामि अंतस्थ शव इव तो प्रास्त ज्यमन्सायं गो
 ऽंसिद्धिमन्तयेव च गोमयेनोपलिप्ता यद्वा गोना घ्राययेत्पुनः ब्राह्मणैः मंत्रयंतैश्च
 हिरण्यकरावारिभिः सर्वमभ्युक्षयेद्देशमन्ततः शुद्धयन्त्यंशयं त्वहदिष्णुः ग्रामगतो या
 वच्छवसिष्ठतिकस्यचित् ग्रामस्य तावदांशौचं निर्गते शुचितामियात् गृहे यश्चादौ
 मृते यो वं यत्तु माधवीये प्रचेत सामातश्च स्रादिषु त्रिरात्रमूर्ते मातु सप्तमातु सप्तयोः
 अश्वश्च मुरयोर्गुरोः मृते चान्तिजिया ज्ये च त्रिरात्रेण विप्रुध्यति इति गुरुराचार्यः ऋ

राम
३२८

विप्रमुपयेमृतवतितुदिनं युद्धविद्धेचसद्यः अजमलमाकरेस्यं युद्धमदा
 मृतस्यत्तानं नृपतेराहवेरासैक्षत्रधर्महतस्यच सद्यः सतिष्ठतेयज्ञस्तथाशौचमि
 तिस्मितिभित्तमनूक्तेः यज्ञोत्तमसंवेतदैवेत्यर्थः यस्तुभारतेराजधर्मेषु अशौच्यो
 दिहतः श्वरः स्वर्गलोकेमहीयते नष्टनृमुदकं नस्यनत्तानं नाप्यशौचकमितिप्रा
 दादिनिषेधः सपुत्राद्यभावपरः अतएवतत्रकणिदीनांश्राद्धमुक्तं अन्येतुदशपिंड
 निषेधमाहुर्यतिवत् यत्तुपराशरः आहवेयिहतानां च एकत्रमंशौचकमिति नष्ट
 दक्षतेन कालांतरमते ज्ञेयं असन्निधौत्तानमितिमाधवः शुद्धितत्वे ग्निपुराणे दं
 क्षुभिः शृंगिभिर्वापिहतास्तेष्वेष्टतस्करैः येस्वाम्यर्थे हतायांतिराजन्तर्गनसंशयः
 सर्वेषामेव वर्णानां क्षत्रयस्य विरोधतः यत्तुहस्त्यतिः हिंसाहवेविद्युताचरात्ता
 गोविप्रपालने सद्यः शौचं मृतस्याहस्यं चान्यमहर्षयः तस्मिन् विनायरासुखह
 तेच चिराजं राजावधेयहतेसद्यः शौचमन्यत्र चिराजं तत्रैव व्याधुः क्षते धियते यस्तु
 तस्याशौचं भवेद्विधा आसन्नाह चिराजं स्यादरात्रमतः परं रात्र्याघाते अहादूर्ध्वं
 यदि कश्चित्पुमीयते अशौचं प्राक्तनं तत्र सर्ववर्णेषु नित्यतः रात्र्याघाते क्षतं विना रा
 त्रस्य शौचं हारीतः शवस्य शौचं ग्रामेन प्रविशेपुरा नक्षत्रदरीनां प्राज्ञे चेदादित्यस्य यत्तु
 मनुः अद्वाचैकेन रात्र्या च चिरात्रैरेव च त्रिभिः शवस्य शौचं विप्रुध्यंति अहात्तदकदा
 यिन इति अद्वाहाराभावेत्यहोरात्रमुक्तं त्रिभिस्तिस्रात्रैरिति नवरात्रमेवं दशरात्र

मित्यर्थः तत्र दत्ताशने तद्गृहवासे नैव दिवस्तेषां अनन्तरा मर्त्ये वनचेत्तेषां गृहे च शोदि
तितनैवोक्तेः अंगिराः आशोचं यस्य संसर्गादापतेद्गृहमेधिनः क्रियास्तस्य न लुप्यं
ते गृहाणां च न तद्भवेत् अथ निहरीयशोचं खेदेन सवर्गानिर्हरेत्तदन्तानेन तद्गृहवासे
च दशाहः तदन्तानेन तद्गृहवासे अहः गृहवासे न भक्षणे चैकाहः मतिगृहाणि निर्हा
रे दाहे च तज्जात्यशोचं यदि निरहरति प्रेतं प्रलोभात्कृतमानसः दशाहेन द्विजः शुद्ध
दादशाहेन भूमियः मासार्धेन तु वैश्यस्तुष्टा मासेन सुध्यतीति कौर्मोक्तेः विजा
तीयनिर्हारे तु शवजातीयशोचं अत्र भूमतिगृहे द्विगुणा अवरश्वेदं वारि वरावा
प्यवरं यदि बहे ध्वं तदशोचं दृष्टार्थं द्विगुणं भवेदिति व्याघोक्तेः कौर्ममेतदिति गो
जदाहेष्यं यत्तु ब्राह्मे घोवाणि तु मूलेन नीत्वा चैव दहेन्नरः आशोचं तु भवेत्तस्य प्र
तज्जातस्मिन् नृपो दकनिर्हारे तु दशाह इति माधवः अलंकरणे तु शंखः कृध्यादौ स
पिंश्येतालंकरणे कृते अज्ञानादपवासः स्यादराक्तौ स्नानमिष्यते धर्मार्थं मुना
य सवर्गान्हरणे क्रियाकरणे च द्विजस्थानं तपस्तपस्संस्नानं प्राणायामोऽग्निस्पर्शश्च
तिमाधवीये अग्निदेव्ये च पुनस्तस्य संस्कारे ब्राह्मणेनैव दृष्ट्याति वीर्यं चैवाग्निदात्वा
च सद्यः स्नात्वा विमुच्यते इति परार्कं ह्युपायशोचोक्तेः रात्रामिति पौर्णमासी सिद्धतेः
गौतममिताक्षरायां ह्युक्तिः सतकादिगुणं शवरावादिगुणं मार्तवं मार्तद्विगु
णं सति स्नानोपि शवदाहकः अत्र पूर्वैराज्ञेन निवृत्तिरित्यर्थः विष्णुः स तद्विजं
नष्टदेणुहारयेत्तद्विजेन देवलः ब्रह्मचारी न कुर्वीत शववाहादिकक्रिया ।

329-11

यदिकुर्यात्तरेत्तच्छुनः संस्कारमेव च याज्ञवल्क्यः आचार्ययितु पाध्यायान्निर्त्यापि
 त्रतीक्ष्णी अनुगमनेन संपिंडेन दोषः विहिते हि संपिंडांतेन निर्हरणादिकं ते च संक
 रोति यः कश्चित्स्याधिकं न विद्यते शतिदेव लोकेः दोषः स्यात्संपिंडस्य तत्रानाथ
 क्रियाविनेति हारीते क्लेशसमात्कष्टवर्णनमाधवीयेकारव अनुगम्य शब्दे
 ध्यात्वा स्यात्सुताशानं संपिंडः प्रायश्चित्तः स्यात्वा प्राणायामे विमुच्यति हीनव
 र्णनत्रयेः वैश्ये पक्षिणी ऋद्धि रात्रे क्षत्रियस्य वैश्येः ऋद्धे पक्षिणी वैश्य ऋद्धे
 रिति विज्ञाने श्वरः माधवस्तु विप्रस्य वैश्येः ऋद्धेः क्षत्रियस्य ऋद्धेः वैश्यस्य ऋद्धेः
 स्नानाग्निस्पर्श चर्तनानि सर्वत्रेत्याह हीनवर्णस्य दाहोर्ध्वदैहिककरणेन ब्राह्मे
 ब्राह्मणे हीनवर्णस्य न कुर्यादोर्ध्वदैहिकं कामाक्षीभात्रया मोहात्कृत्वा त्रिज्ञातिनां
 ब्रजेत मनः ब्राह्मणां याज्ञनं कृत्वा परेषां मन्त्रकर्म च अभिचारमहीने च त्रिभिस्त
 द्वे व्ययो हति परेषां सर्ववर्णानां हीनेषु तद्देगुण्यत्रे गुण्यचातुर्गुण्यद्यत् अप्यरो
 दने समोत्रमवर्णयोः संचयनात्सर्वे संचैलस्ताने मूर्ध्वमाचमनं हीनवर्णेषु न संच
 यात्वा संचैलमूर्ध्वं स्नानमात्रं विप्रस्य क्षत्रवेश्यविश्यविषये तु ब्राह्मे आस्थिसं
 चयने विप्रो रीति चैक्षत्रवेश्ययोः न दास्नातः संचैलस्तान् द्वितीये हनिमुच्यति स्नाने
 तु संचये विप्रः स्नाने नैव मुचिर्भवेत् सत्रस्य वैश्येऽप्येवं ऋद्धे तु संचयात्वा क विप्रस्य
 त्रिरात्रे क्षत्रवेश्ययोर्द्विरात्रे ऊर्ध्वं तु द्विज्ञानां मेकाहः ऋद्धेऽस्य ऋद्धेऽस्य शिविनासं

चयात्पूर्वमेकाह ऊर्ध्वं सज्योतिरिति माधवीये ज्ञेयं मुद्रितं चैषारस्करे तु अस्थिसंचय
 नाहूर्ध्वं मासं यावद्विज्ञातयः दिवसे नैव शुभं तिवासां क्षालनेन च सज्जातेर्दिवसे
 नैव पहाक्षत्रियवैश्ययोरित्युक्तं सपिण्डानां रादन निर्हाव दोष इत्युक्तं प्राक् विज्ञाने स
 रक्तमृतस्य बाधवैः सार्धं कृत्वा तपरिदेव नैव जयेत्तरहोरात्रदान आद्यादिकमचे
 त्तियारस्करोक्तैः सर्वज्ञैक राजमाह अथारौच्यत्रयभक्षणं विष्णुः ज्ञात्वा एतानां मा
 शौचेयः सक्तदेवान् नमस्नाति तस्य तावदाशौचं यावत्तेषामाशौचं कथं गमैषा यश्चित्रमि
 ति मुज्ञाने त्वेगिराः अंतर्दशाहे भुक्तान् सक्तकर्मतके पिका अस्याशौचं भवेत्ताद्या
 वदन्नैव जेदधः प्रायश्चित्तं त्वमत्या विप्रस्य वर्णक्रमेणैकाह अहायं च हसप्राहोपवा
 साः दशविंशतिः षष्टिं शतं च प्राणायामायं च गव्याशनं च अभ्यासे द्विगुणं प्राप
 दित्त प्राणार्थमः शतं पंचशतमष्टसहस्रं गायत्री जपश्च मत्या यदि तु सवर्णशौचे वि
 रघमर्षिणां गाय अष्टसहस्रं च क्षत्रियाशौचे उपवासस्तत्र वैश्याशौचे त्रिगुणोपवास
 श्च शूद्राशौचे कृष्णः क्षत्रवैश्ययोः पंचशतमष्टशतं गायत्री जप उत्तमैश्च शूद्रस्य सर्व
 ज्ञास्नानं मत्याना यदि विप्रस्य वर्णक्रमेणैकाह अहायं च हसप्राहोपवा
 साः दशविंशतिः षष्टिं शतं च प्राणायामायं च गव्याशनं च अभ्यासे द्विगुणं प्राप
 दित्त प्राणार्थमः शतं पंचशतमष्टसहस्रं गायत्री जपश्च मत्या यदि तु सवर्णशौचे वि
 रघमर्षिणां गाय अष्टसहस्रं च क्षत्रियाशौचे उपवासस्तत्र वैश्याशौचे त्रिगुणोपवास
 श्च शूद्राशौचे कृष्णः क्षत्रवैश्ययोः पंचशतमष्टशतं गायत्री जप उत्तमैश्च शूद्रस्य सर्व
 ज्ञास्नानं मत्याना यदि विप्रस्य वर्णक्रमेणैकाह अहायं च हसप्राहोपवा
 साः दशविंशतिः षष्टिं शतं च प्राणायामायं च गव्याशनं च अभ्यासे द्विगुणं प्राप
 दित्त प्राणार्थमः शतं पंचशतमष्टसहस्रं गायत्री जपश्च मत्या यदि तु सवर्णशौचे वि
 रघमर्षिणां गाय अष्टसहस्रं च क्षत्रियाशौचे उपवासस्तत्र वैश्याशौचे त्रिगुणोपवास
 श्च शूद्राशौचे कृष्णः क्षत्रवैश्ययोः पंचशतमष्टशतं गायत्री जप उत्तमैश्च शूद्रस्य सर्व

330-A

दासीदासास्तथैव वा साने शरीर संस्कारे गृह कर्मण्य इष्टिता इति गानातयोक्तेषु एतच्चान
 न्यसाध्यतत्कार्यमात्रे अन्यत्र मासाद्यारोचमत्पेच एव दास्यामपि सूतिकायास्तस्याश्रु
 त्यप्यत्र मासमात्रे दासीदाससंकीर्तये यस्य वर्णस्य भवेत् तद्वर्णस्य भवेच्छौचं दास्या
 नासक्तस्ततकमित्यंगिरसोक्तेः अडाशितावपि स्वामिरोचनदासाद्याः स्यस्यामासात्रक
 मिसुयोग्याः स्युर्मासतो दासीसती चेत्स्वयतामियात् दत्तदासीदीनां स्वप्रपिंडमरणोदोस्वस्या
 शाचसमसंख्यदिनार्धसत्यपि मासाद्यारोचस्वामिकार्ये स्यस्येति हरदत्तः दासीते वासि
 भृतकाः शिरवाम्भेकत्रवासिनः स्वामितुल्यनरोचनमुक्तांति मृतस्ततके इति हस्त्यति
 स्मृतेः दासश्चात्र गृहजातस्तथा क्रीतो लब्धो दाव्यादुपागतः अत्राकालभृतस्तद्वदहितः स्वा
 मिनाच मोक्षितो मदनश्चाण्ड्रप्रप्रायः यणेजितः तवाहमित्युपगतः प्रवज्यावसितः कृतः भक्त
 दासश्च विज्ञेयस्तथैव वडवाहृतः विक्रेता वा अन्नः शास्त्रे दासायं च दशः स्मृताः इति नारदोक्तोऽपि
 गर्भभक्तदासो विनाज्ञेयः वडवादासी तथा हृतः ताडहाद्यदासो जातः इत्यर्थः अने वास्यपि
 तेनैवाक्तः स्वमित्यमिषवाहृतं वाधवानामनुज्ञया आचार्यस्य वसेदंते साता कलं सुनिमि
 तं आचार्यः शिष्ये देनं स्वदत्तं दत्तभोजनमिति शिष्यास्तनुल्यो विद्यार्थी दासादेः स्वामितस्य
 पिंडमरणोत्तुविष्णुः पत्नीनां दासानामानुलोम्येन स्वामितुल्यमाणोचं मते स्या मन्यामीयेमि
 ति प्रतिलोमदासानामारोचभावः वर्णानामानुलोम्येन दास्येन प्रति लोमजज्ञातव
 ल्योक्तेः अथराश्रोजननेमाणे कगत्रित भागां कृत्वा यभागद्वये चैत्स्वैदिने अनेत्स्वर्गमिति
 मितासरायां यत्तु प्रागर्थरात्रात्यावास्त्वं पीदयान् पूर्वदिनमित्युक्तं तत्र देशाचारतो

राम
३२

अवस्था सर्वे वा शौचमादिताग्नेर्दीहन्तः तद्दिनस्य मरणमारभ्य त्रेपं मुनस्मिन्मंतउक्तंते
राशौ चाहि द्विजातिषु दाहादग्निमतो विद्यादिशस्य मते सतीति पेटिनसिस्मृतेः साग्निराहि
ताग्नेः आहिताग्निश्चेत्युक्तं वसनमयेतमुनः संस्कारं कृत्वा राववदारौ। वृमिति वारिष्टे
विरोधोक्तेः दाहादेवतु कर्त्तव्यं यस्य वैतानिर्का विधिरिति ब्राह्मण्य यत्तद्धर्तस्वामिनाराणां
उत्तराणोक्तं आहिताग्नेरपि मरणदेवदशान्त्रमाशौचं दशाहं राववमारौ तमिति मरण
निमित्तत्वात्तस्य यत्तदाहादेवतस्याशौचमुक्तं तत्संस्कारनिमित्ताशौचं यथैवेति नगद्यग्नेः
संस्कारांशं त्रिरात्रं स्नातानेस्तदशान्त्रं मरणनिमित्तं भयोर्दशाहं दाहात्त्रागपीनितद्वच
नविरोधात्पूर्वैरेवात्कर्त्तव्यं न कल्पनालाघववच्चिंत्यं अथातिर्क्रान्ताशौचं तत्राशौचमध्ये
जननाद्येकानेतेकेषां शुद्धिः विगते तु विदेशस्य श्रृणुयाद्योस्वनिर्देशं यद्येवं दशारात्रस्य ताव
देवाशुचिर्भवेदिति मन्त्रकेः अत्र केचिदेतत्पुत्रातिरिक्त विषयं ते वा त्वाशौचमध्ये अवरोपे
तदापेव दशाहमादि पितरोच्चेन्मृतौ स्यात्तौ ह्यस्योपि हि पुत्रकः श्रुत्वा तद्दिनमारभ्य दशाहं स्ना
तकी भवेदित्यस्य सर्वापवादत्वादित्याहुः तत्र ज्ञानमरणस्यानिमित्तत्वात् मुनस्मिन्मंतउक्तंते
रित्यादिविरोधश्चास्मत्पर्यसारोपि जनने मरणे वा प्रथमादिना दूर्ध्वं ज्ञाने पुत्रादीनां शौचं
शुद्धिरिति वदन्तीतावपरार्थेनैवं दशाहं दूर्ध्वं ज्ञाने तु द्वयशेषः आसन्नये त्रिरात्रं स्यात्तद्यु
त्तमासे पादानीतया अहस्तनववारं दूर्ध्वं सानेन नुसिद्धति जननेत्युक्तिर्क्रान्ताशौचेनास्य
वेनाशुद्धिः प्रसवशौचे व्यतीते शुद्धिर्वैद्यपीति देवलोक्तेः धितुः स्नानेन जापिभवत्येव निर्द
शताति मरणं श्रुत्वा पुत्रस्य जन्म च सर्वासाजलमाशुत्यमुद्धे भवति मानव इति मन्त्रकेः

तत्राति क्रान्ता रोचं दशादाह जात्या रोच विषयेन त्वन्यनी तादि निमित्तं रात्रादौ उपनी
 तेन विषये तस्मिन्नेवाति काल जमिति व्याप्तेः निर्देशात्तन्मराणं अति क्रान्ते दशादे
 विति मन्त्रे माधवीये देवसक्त आत्रियक्षात्रिरात्रं स्यात् षणमासात्पक्षिणीततः प
 रमेकाहमावर्षा इध्वं स्रातो विमुक्तनीत्याह तत्रापदनायाद्विषयत्वेन व्यवस्था इदं चै
 कदेशे देशान्तरे न स्नानमात्रं देशान्तरमन्त्रं प्रत्यात्ती वेवैरवानमेयतो मन्त्रे स्नानेन मध्य
 तिगर्भस्त्रावेव गोत्रिणा इति पराशरोक्तेरिति विज्ञाने श्वरः स्नानं वत्सरांते अर्वाकृत्रियक्षा
 त्रिनिरोधमासाच्च दिवानिशं अग्रहः संवत्सरादर्वाग्देशान्तरमन्त्रे व्यपीति विष्मक्तेरि
 ति माधवः इदं सपिंडानां देशान्तरे स्नानं सोदकानामित्युक्तं तद्वादाणां त्वाहस्यस्यतिः
 महान्तरे पत्रगिरिवो व्यवधायकः वाचोयत्रस्त्रिभङ्गे न देशान्तरमुच्यते देशान्तरं
 वदन्त्येके षष्ठियोजनमायते सत्वारिंशददन्त्ये त्रिंशदन्ये तथैव चेति एतत्संवेमात्ता
 पितृमित्रविषये नयोस्तु पितरौ चेदिति परेष्वेष्टी न सिवा कयात्सदायत्तमे च दशा
 हादि स्मृत्यर्थे सारेषु मातापितृमराणोद्देशेपि संवत्सरोर्ध्वमपि पुत्रोदरादादिकं प
 र्णमाराणंच कुर्यात् स्त्रीपुंसयोः परस्परं सयत्नीयुं चैवमिति शुद्धितत्वादयो गौडास्त ऊ
 र्ध्वसंवत्सराद्यहंधुश्रेष्ठ्यते मन्त्रः भवेदेकाहमेवात्र तच्च संन्यासिनां न त्विति देवलो
 कैः पित्रोरब्धमध्ये त्रिरात्रमर्धमेकाहः वंधुमातापितामही च यत्कीकृदशाहस्तकालि
 गादिदेशपरश्रव्याहः त्वंधुपदस्य पित्रादि परत्वे मानाभावाद्दयस्याः सयत्नमात्रस्तदक्षः

नि.सि.
३३२

332

धितयत्तामयेतायां मातृवर्जं द्विजोत्तमः संवत्सरे व्यतीतेष्विदिरात्रिमं शुचिर्भवेत् क्षीनः
वर्गमातृवुसपत्नीषु चैव भित्तिस्मृत्यर्थसरे केचिन्पितुः पत्न्या प्रमीतामाभोरसेतनयेत
येति ब्राह्मणे रोरेसेपीदमाहुः षडशीतावप्येवं एतत्सर्ववर्गितुल्यं तुल्यं वयसि सर्वेषां
मतिक्रान्तेतथैव चेति व्याधेयैः अथारोचसं पाते उच्यते तत्र शावेषां वं सूतके सूतकं शा
वे सूतकं सूतकं शावं वा तत्राप्युत्तरं कालं तं पूर्वरासं न्यूनमधिकं चेति द्वादशार्भेदः
यदि कदिने स संन्यूनमधिकं आरोचद्वयं तत्र तत्रेणान्यस्मिन्दिः द्वयोरेका कालत्वात् य
दा तु द्वितीयादिने सूत्रं सज्जातीये शवे जनने वा समकालं न्यूनकालं वा परस्य तदा षड्दिश
त्यक्षेण पूर्वशेषेण शुद्धिः अंतरात्तन्ममरोगो रोगादो भिर्विशुध्यतीति याज्ञवल्क्यैः अं
तरात्तानि इत्यर्थः ज्ञातस्यैव जननादेर्निमित्तत्वात् पूर्वाशौचं तत्तत्तन्ममानं लघुत्वानि
मितं तत्कालादुपरि श्रुतं स्यात् शौचं हेतुरेव अज्ञातं तु न श्रुतिज्ञानेन दोषः स्याद्वाद्वादि
षुकं यच्च नेत्यस्याशौचसं कार्ये पि प्रवृत्तेः तेनाज्ञानादुत्थात्सरीदोक्तं तेषामज्ञानेपि
नाहन्निरिति माधवीये यमोपि जनने जनने चैतस्यात्तमरोगमरणं तथा पूर्वशेषेण
शुद्धिः स्यादुत्तराशौचवर्जितं अत्र केचिदंतर्दशाहे स्यात्तं चेत्पुनर्मरणजननी वाचित्स्या
दशुचिचिप्रोयावत्तस्यादनिर्दशमिति मनुष्यराशराद्ये दशाहं ग्रहणं स्यात् शौचं वप
वं शेषशुद्धिः आहाद्यत्यारोचसं पाते तत्र रोणे व शुद्धिरित्याहुः हरदत्तौ व्येवं माह गोडाश्र
येव तत्र याज्ञवल्क्यादिवशेन दशेन दशाहस्य तुल्यकालाशौचोपलक्षणत्वात् समा

राम

३३२

332-11

नारोचसं पाते प्रथमेन स शययेत् असमानं द्वितीयेन धर्मराजवचो ययेति साधवी
 ये शरैवाक्तैः अपरार्कमिताक्षरादिविरोधाच्च यदा तु सतके शावे समन्यूनमधिकं वा
 तदानसर्वशेषा रुद्धिः तदा हारागिराः सतके मृतकं चेत्स्यात् मृतकं च यत्सतकं ।
 तत्राधिक्यमृतकं शोचं कुर्यान्न सतकं यद्भ्रंशान्मते शावा शोचे समुत्पन्ने सत
 कं न यदा भवेत् शावेन मुध्यते सति न सतिः शाव शोधिना चतुर्विंशतिमते पि मृतेन
 मुध्यते जातं न मृतं जातं केन तु अतो यदा दशाहजननमध्ये तदंते वा अहादि शोचं तदा
 पूर्वोक्तमुद्रावपितं मित्रस्य स्यात् भवत्येव मरणोत्पत्तिव्योगे तु गरीयो मरणं भव
 दिति कौमात्रं तोतमव्याख्यायां ह्यत्रिरयि सतको द्विगुणं शावं शावा द्विगुणमात्रं
 वं आनं वा द्विगुणं सति सतो पि शवदाहकः अत्र पूर्वोक्तो मरो न्नरानिहतिरस्य शत्वा
 धिक्यादित्यर्थः यदशीना च पि स्वभाववद्भूतं सति सन्मृतं शावविशोधिनीति रात्रि शोषो
 वर्धिति द्वित्रिदिनैराशुतकैः सतवद्भूतं न स्वभावेन अतस्तत्र न्यूनं शावस्यापि न पूर्वोक्त
 मुद्धिरिति वक्तुं स्वभावेन मुक्तं ब्राह्मेयिनां तत्कैरघाहोभिराशौचमपनुद्यतेन च पातनि
 पत्तेन शावस्यास्य शोधतमिति एवं नवपक्षाः यदा तु महाघृताशौचमस्य मध्ये स जा
 तीयं वा दीर्घकालमुत्तरं तदा पुनरंशुत्कार्येन पूर्वमुद्धिः स्वल्पाशौचस्य मध्ये तु दीर्घा
 शौचं भवेद्यदि न पूर्वोक्तविमुद्धिः स्यात्स्वकालेनेव मुद्धीतीति उशनसोक्तैः तेन अहादि
 शावमध्ये दशाहसतके पि न पूर्वोक्तमुद्धिरित्यपरार्कः शावनिमित्तमस्य त्वं च भवत्य
 व मुद्धि विवेकं न शावेन मुध्यते सति विनिष्ठा मुक्तं सत्राप्युत्तराशौचनिवृत्तिरुक्ता ।

रा४

तत्र उतरस्य कालाधिक्येन वलवत्तात् माधवीयेयमोयि अर्थे तद्विषयदोषोचं पात्रिमेन समा
 ययेत यथात्रिरात्रे प्रजाते दशाहं प्रविरोधे अर्थोचं पुनरागच्छेत्तत्तमाय विमुधातीति हा
 हातोपि गुरुणालघ्यमुद्धोतु लघुनाते च द गुरुर्विति गुरुत्वं लघुपुत्वं च कालकृतमेवा
 पूर्वानुरोधान्न एतच्च हस्तत्रेन स्पष्टं भूतं मिताक्षरायेवं यत्तु आघातायोगपक्षे तत्रेया
 शुद्धिर्नरीयसा मरणोत्पत्तिर्योगेन गरीयो मरणं भवेदिति हारीति कोमादिन जास्य
 एतन्नाभिप्रायं शावस्य गुरुत्वं ज्ञेयं कचिदल्पकालेनापि दीर्घकाला रौचं निवृत्तमाह
 देवलः परतः परतो शुद्धिरथ हृदो विधीयते स्याच्चेत्यं च द मादं गः पूर्वैरेवात्र शिष्यते
 अर्थः अथ हृदो दीर्घा रौचं परतो शुद्धिः परमा रौचं यदि दीर्घा रौचं च मुतरस्य पंचम
 दिनात्परतो न वृत्ते तदा पूर्वैरेव शुद्धिः पूर्वस्थानरा रौचा दीर्घाधिककालमापित्वैव
 रौचा शुद्धिरित्यर्थः यथा यष्टमासे गर्भपातः निमित्तं षड्दश रौचं मध्ये दशाह पाते पर
 वैरेवात्र निवृत्तिः यथा वा अहमद्ये सावपात निमित्तं चतुरद्वयं चाह योरिति कश्चि
 त् तत्र दशावधि पूर्वशेषमुत्पादे कवात्तविरोधान्न षष्ठादिदिने पूर्ण रौचं सं
 त्यरात्रौ न द्वादशत्य नोचित्यात् अस्मद्गुरुत्वं च नुमादह्मन्नातनो न्यूनं अहादिचे
 त्यादत्ता सिद्धिर्वाये पूर्वैरेवात्र शुद्धिः शिष्यते दशाहदि रात्रिशेषे अहादिपाते अहा
 यत्पारौ चानोपात्य रौचं संपाते च न द्वादहादि तद्विदित्यर्थमाहः कचिद्वर्षे शेषेण
 शुद्धिरपवादमाह गौतमः रात्रिशेषे सति द्वादशं प्रभातेति सति रिति प्रभातेत्ययामे
 रात्रिशेषे द्वादहा शुद्धिरौचं शुद्धिरिति शातानयोक्तैः उदं रौचं ते सतकया ते स

जातेयेवातुल्यं अत्र केचित् रात्रिशब्दः अहोरात्रिपरः अहोरोधेद्वाभ्यां प्रभातेति स्थमिरि
 निरांखलितोक्तेः अथ यदिदशरात्राः सन्निपाते पुरा धंदशरात्रमाशौचमानवमादिवसाद
 त ऊर्ध्वं द्विरात्रेण व्युत्थानां त्रिरात्रेणोतिवौ धायनोक्तेः पुनः पाते दशरात्राकूपेर्वेण ससु
 राधति दशमे द्वियने घस्याहर्दयात्सविष्णुद्वानि प्रभाते त्रिरात्रेण दशरात्रे स्वयं
 विधिरिति देवलो अत्र नवमदशमरात्रौ बोधायनात्पद्यदिनयरो तेन क्षत्रियादावपित
 येत्याहुः माधवीयेष्वेवं अन्यत्वाहुः अंतर्दशाहस्यात्तावेत्युनर्मिराण तन्मनी ताव
 स्यादशुचिर्विशेषावत्तस्यादनिर्देशमिति मनुपरांराद्येर्दशमदिनेनोत्तरस्य सद्धेसुक्ते
 त्वाहिरोधः स्पष्ट एव विरोधे च यद्दे किंचन मनुरवदत्तद्वेषजे कलोपाराशरस्मृतिः
 रित्यनेन पूर्ववचसो बाधः अतएव वाचस्यति नामेकं मनाकरत्वं मुक्तं साकरत्वेष्टि
 ज्ञातिमात्रविप्रादिविशयं देशांतरविषयं वास्तु तेन गौतमीये रात्रिशब्देनाहो
 रात्रिपरः रात्रिमात्रावशिष्टे इति मित्तासरोक्तेः अनक कचित् कतेरिवाभ्यां व्याख्यायुक्ताः
 माधवस्तु अतिगंतदशाहमिति पूर्वस्वगुं धविरोधादुपेक्ष्यति अस्मत्पितृचरः
 एणस्तु बोधायनीये मानवमादिवसादिति द्वितीय शौचस्य नवमं दिनं प्रथमस्य दश
 ममेवाह असादित्वेः पूर्वशेषापवादत्वात्तस्य च न्यायतो द्वितीयदितादेव पुत्रतेः अ
 त ऊर्ध्वमिति दशरात्रपरं शंखलिरिवनोक्तेः देवलोक्तेः वासाशेषे दशमे द्विवातीनेरा
 त्रौ यतेदित्यर्थः दशमं पिताना मकुर्यादिति वत् तेन नमन्वाद्ये विरोधो नापिमित्ता

क्षराद्यैरित्याह अपराक निर्णयानुत्तरसोप्येवं यत्तु तत्रैव सर्वे आद्यभागद्वयं या
वत्सतकस्य तत्सतके द्वितीयेपतिते चाद्यात्सतका दुद्विरिष्यते अत ऊर्ध्वं द्वितीयात्
सतकांतामुचिस्म तः एवमेव विचार्यस्य सतकं सतकांतरे सतकस्यांतरे यत्स
तकं प्रतिपद्यते सतकस्यांतरे वाथ सतकं यत्र विद्यते सतकांतरे भवेत्तत्र शुद्धिर्वर्तते
सर्वशः इति अस्यार्थस्तत्रैवोक्तः पराशोचवरमाहोरात्रस्य दिनरूपे आद्यभागद्वयेनारोच
याने पूर्वोक्तशुद्धिः भागद्वयोर्ध्वं रात्रौ सतकांतरे द्वितीयात्सतकांतांताद्यहादि
रूपादुद्विरिति अपराकं च शोचकालं त्रधा विभज्य निर्गुणविषयत्वेनेदमुक्तं अस्पष्टवचनस्य
निर्मलत्वात्किरतोक्तिरेव अतः पराशोचान्यरात्रावप्यारोचोहोरात्रद्वयमधिके रात्रेरंत्यपामे
तुर्दिनेत्रयमिति भट्टचरणोपदिष्टः यथाः एतत्संपूर्णशोचसंयाने एव रात्रिरोचे त्रिरात्रादि
संयाने तु पूर्वशेषेणैव शुद्धिः द्विरात्रादिहृदः पूर्ववाक्ये दर्शाद् विषयत्वादपचादाभावे
शेषशुद्धेरेव सामान्यतः प्रसूतेः अशरीनोत्तरांतांते अहपातेपि द्वित्रिदिनहृदिरुक्ता रा
त्रिशेषपराशोचं सर्वानधिकमायतेत् ऊर्ध्वं दिनद्वयं सवाद्यामशेषे दिनत्रयमिति अनधि
कंसमं न्यूनं वा तत्तुर्ध्वं निर्मलत्वादंतेयक्षिण्यादिपातेपि द्विरात्रादिहृद्यापतेषु पर्या
शोचान्तर्वर्धितद्वित्रिदिनमध्ये धिकाशोचांतरयातेनुवर्धितस्याल्पत्वादधिकेनेव शु
द्धिः नयवर्धितस्य सर्वशेषचंशकनीयं रात्रिशेषे पूर्वशेषशुद्धयपचादेनेपिनिकाहति
न्यायोजीवनात् अपचादाभावे उत्सर्गस्य प्राप्तेः अपचादांतरमाह शंखः मातर्धो

334-A

प्रतीतायामशुद्धौ मयते पिता पितृशेषेण शुद्धिः स्यान्मातुः कुर्यात्तु पक्षिणी पादत्रयं स्प
 र्ष्टं तु यं स्पृश्य मर्त्यः पिता शौचमध्ये मातृमृतौ पित्रा शौचांते मातुः पक्षिणी माधिकां कु
 र्यादिति अत्राशुद्धावितुक्तैरात्मसादे पितृशौचाभावात् मरणेन पक्षिणी किं तु
 पूर्णमेवाशौचं इयं च पक्षिणी तृतीयादि दिनपरान्ताद्यदि न ह्ये प्रतिनिमित्तनैमित्तकात्
 त्रिन्यापाद्यवादपूर्वशेषापवादत्वादिति पितृचरणः सपिंडांशो चेन्न माता पित्रोराशौचापरा
 मो नारथेव एवं भर्तृरपि इयं च पक्षिणी दशमादिनाम्नर्वं मातृमरणे ज्ञेया दशम्यारात्रौ तत्प्रभाते
 वामातृमरणे ह्यहमहसमुच्चिता पक्षिणीति कश्चित् तत्र संख्यां नरोपजनतावस्थाज्यहादि
 श्रुतिबाधायतेः अतएवैकज्ञेयावदेया इत्यादौ श्रुतिसंख्या बाधायतेः समुच्चयो निरस्ता
 द्वादशे गुरुणि लघोरंतरगते गुरुणि लघुशुद्धेदित्युक्तेषु मातृरन्वारो ह्येकं न पक्षिणी य
 दान्तरिविशेदनिप्रियस्य प्रियवांध्या तदाशौचं विधानं भर्तृशौचक्रमेण हीति यद्यौचं
 द्वादशे लघुहारीतोक्तैः तत्रैव वदति मतेपि मतेपतिमनुब्रज्यपत्नी चेदनलंगता नतत्रप
 क्षिणी कार्यायेन कादेव शुध्यति पुत्रो न्योवाग्निदत्तस्यास्तावदेवाशुचित्तयोः नवश्राद्धं
 च पुत्राय नुसमाययेत् गृहीताशौचानां पुत्राणां पितुः संस्कारे मातुः सपिंडस्य चामरणे ना
 येनिरण्यः अतिज्ञांतकालाद्विद्यमाननिमित्तस्य वलावत्वात् द्वादशवर्षांतरं संस्कारा
 शौचमध्ये सपिंडमरणे व्येवं यत्तु अपराक्तं ब्राह्मे ऋग्वेदवादान्ताध्वीसूत्रेन भवेदात्म
 घातिनी असाशौचेन निहते श्राद्धं प्राप्नोति शासुवदितितद्ब्रह्मशौचांतरमन्वारो ह्येकं त्रि

राशौ शौचपरमिति पृथ्वीचंद्रः ब्राह्मणादेः क्षत्रयाद्यणुगमनेत्याशौचपरमित्यपराकः
 शुद्धितत्वाद्योगोडाः भूतशौचोत्तरमन्वारो हरे त्रिरात्रं सप्तगमनेतुसंयती युद्धरत
 स्पष्टशौचोत्तरो हरे प्रसोक्ते त्रिरात्रत्वाद्भूरापि महेण पिंडदाने एकचित्तोत्तुसंयः शौ
 चमित्याहुः अन्यप्रागुक्तं पर्वशौचेण शुद्धेरयवादांतरमुक्तेषु शीत्यां पर्वशौचेन याव
 द्विः सत के मृत के च सा सत कामापि दं हित्वा प्रेतस्य च सतानपि निर्णीयामृते स्मृतिसंज्ञा
 द्वेपि इयं विमुक्तिरुदिता सति कामाग्निदं विना इदं सत्येन दाहकरणे मातृत्वादि संबंधे
 दाहमात्रकरणे तत्र त्रिरात्रमेवेत्युक्तं प्राक् ब्रह्माग्निः सत काहिगुणं शावशावाहि
 गुणमात्रं च आर्त्तवाहिगुणं सति स्तौति शवदाहकः तथा शौचसंपाते पिर्शवजनमि
 मित्रकार्यप्रतिबंधः प्राशौचे तु समुत्पन्ने पुत्रजनयदाभवेत् कर्तुं स्तात्कालिकाशु
 द्विः पूर्वाणे वेन शुध्यतीति प्रजापतिस्मृतेः प्राशौचे द्विविधे पिर्शितातयः अंतर्दशा
 हे जननात् पश्चात्स्यान्मराण्यदि प्रेतमुद्दिश्य कर्तव्यं पिंडदानं तथा विधि परध्वे प्रेत
 पिंडे तु मध्ये चेज्जननं भवेत् तथेवाशौचापि डांस्तु शेषान्दद्याथथाविधि मातुः पक्षि
 रागी मध्ये पितुरेकादशाहं कुर्यात् माघं प्रादं मशुद्धोपि कुर्यादेकादशहनीति स्मृतेः के
 पितृदं क्षत्रियादिपरे विप्रादे त्वशौचांतरे एकादशाहं प्रादं नेत्याहुः अतएव विज्ञा
 ने मरे एकादशमं पिंडमुत्पृज्या त्रिशोखे शुचिर्भवेदिति शुचित्वं महैको दिव्यांगविप्र
 निमंत्रणपरमिति वदता नत्रशुद्धेरंगत्वं दर्शितं एवं ह्येषां सगं शय्यादावपि देवया

तिकेनाचारोचान्तरेपिभवत्येवेत्युक्तं अथारोचापवादःसंप्रवधा कृततकर्मतः
 द्रव्यतःमृतदोषतःविधानाद्वा आद्योब्रह्मचारियन्यादिषु नैष्ठिकानांवनस्थानांयती
 नांब्रह्मचारिणां नारोच्यंकीर्तितंसद्भिःपतितेचतयामृतेति कोर्मात्तेः तुर्यपादेशावे
 चापितथेष्टचेतिदेवलोक्तः आरौचमन्त्यकर्मोपलक्षणंब्रह्मचारीनकुर्वीतशब्द
 दाहादिकक्रियाःयदिकुर्याच्चरेत्कथं पुनः संस्कारमेवेतिदेवलोक्तः एतन्पिजाघ
 तिरिक्तविशये आचार्यस्वमुपाध्यायंमातरं त्यितरंगुरुं निर्हृत्यतुब्रतीप्रेतंनवृतेन
 विद्युज्यते इतिमन्त्रकैः निर्हरणमन्त्यकर्मपरं एवंमातामहस्ययथाव्रतस्थोपि सु
 तःपितुःकुर्यात्क्रियां नृप तयामातामहस्यापिब्रह्मदोहितःकर्तुमर्हतीतिअपरा
 र्कभविष्योक्तेः मातापित्रोरुपाध्यायाचार्ययोरोर्ध्वदेहिकं कुर्वन्मातामहस्यापिब्रह्म
 भूरपतेव्रतादितिकालादरीत्य तज्जातकर्मनिमित्तस्मृत्पत्वंदशाहमस्त्वैवसगोत्रोवा
 सगोत्रोवायोनिंदद्यात्सारवेनरः सापिकुर्यान्नवश्राद्धंशुभेतेदशमेदनीति दिवोदासोक्त
 यचनात् अतएवब्रह्मचारिणः शवकर्मिणोव्रतानिब्रतितिरन्यत्रमातापित्रोगुरुसंश्रुतिगो
 तमीयेव्रतनिवृत्तेरेवपर्युदासोनाशोचम्ये संध्यादिकर्मलोपस्तनास्ति नत्यजेत्सुतके
 कर्मब्रह्मचारीस्वकं क्वचिदिति द्वादशपरिशिष्टात् पित्रोगुरुर्विपन्नोतुब्रह्मचार्यपि
 यः सुतः पुत्रतश्चापिकुर्वीत अग्निपिंडोदकक्रियां तेनारोचनकर्तव्यं संध्याचैव न
 लुप्यते अग्निकार्यचकर्तव्यं सायंप्रातश्चतित्यशः इतिचंद्रिकायां संवर्तते अत्रकर्म

नधिकाररूपारोचनिधेधाएव अथवाकमाधवादयस्तु एकाहशौचमाहुः आचार्यवायु
 पाध्यायंगुरुवापितरंचवा मानरंवात्यंदाधान्नतस्यस्तत्रभोजने कृत्वापततिनेतस्मा
 तेनानां तत्रभक्षयेत् अन्यत्रभोजनेकुर्यान्नचनेः सहसंवसेत् एकाहमशुचिर्भूत्वादि
 तीयेहनिशुध्यतीतिब्राह्मोक्तेः तदन्नभोजनेतु प्रायश्चित्तं पुनरुपनयनमाशौचं वा दि
 वोदासादयस्तुब्राह्मोक्तेः प्रथमेद्विसंध्यादिलोपश्च त्रस्रचारीयदाकुर्यात्पिंडनिर्घषांपि
 ण्डः तावत्कालमशौचंस्यापुनः स्नात्वाविशुध्यतीतिप्रजापतिवचनाद्वितीयाहोरो
 पिंडदानकालेएवस्यश्रयत्वंमात्रंनान्यदेत्याहुः दशाहमस्यश्रयत्वेपिकर्मांगस्त्रानवि
 धानार्थमेतदितियुक्तं अंत्यकर्मकरणेतुब्रह्मचारिणः पित्रादिमरणोपशौचाभा
 वाएव सापिब्रह्मचर्यकालाएवसमावर्तनोत्तरांतुसर्वमतानांअहारीचंभवत्येव आदि
 क्षीनोदकंकुर्यादात्रतस्यसमापनात् समाप्तेनूदकंदत्वात्रिरात्रिमशुचिर्भवेदितिमनू
 क्तैः तत्रापिविकल्पः पितर्ययिमृतेनैवांदोषोभवतिकर्हिचिन् आशौचंकर्मणेतस्यात्
 अहंवाब्रह्मचारिणामितिधंदोगपरिशिष्टान् तथाकृतजीवच्छ्रद्धेन किमप्याशौचं
 नकार्यमितिहेमाद्रिः शुद्धितत्वेकौर्म्यं सद्यः शौचं समाख्यातं दुर्भिक्षेवायुषद्वे
 ऽर्द्धाहवहृतानांअविशुत्तापार्थवेद्विजैः उपद्रवेत्यंतमरके उपसर्गमृतेचैवसद्यःशौ
 चंविधीयते इतिपराशरोक्तेः उपसर्गात्यंतमरकइतिश्रुत्याएवनिरुद्धमहादयः प्रा
 त्तवल्कोपि आपद्यपिचकष्टायांसद्यःशौचंविधीयते इतिमरणसमयेपिनाशौचं त

पाचमदस्ताकरेदक्षः स्वस्य काले त्विदं सर्वस्तनकं परिकीर्तितं आपकृतस्य सर्वस्य स
 तकेयिनस्तनकं अतः सति वेराग्ये संन्यासो व्याप्तुरस्य भवतीति केचित् अथ कर्मतः
 त्रिंशद्भूयः तत्तत्कार्येषु सत्रिचरित्यन्यत्तु यवदीक्षितत्विक् स्वदेशभ्रशापत्तय्यते
 कश्चन पठनभिषक्तारुशिल्पाभराणां संप्रारब्धेषु दानेषु नयनजनश्राद्धयुद्धप्रतिष्ठा
 चूडानीर्धार्ययात्राजपपरिणयनायुसवेद्येतदर्थे नारोचमिति शेषः सत्री अन्नस
 त्रवान् मुखस्य सत्रस्य दीक्षितयदा तिस्रः व्रती अनेन व्रतादि नियमवान्न व्रतिनां व्र
 तेषु विधिरक्तः प्रचेताः कारवः शिल्पिनो वैद्या दासी दासास्तथैव च राजानो राजभक्ष्या
 असद्यः शौचाप्रकीर्तिताः कारवः सपकाराद्याः शिल्पिनश्चैलनिर्णयकाद्याः आतुरस्य
 व्याधिनशार्थदानादौ तु लादानादेः प्रारंभो नां दीश्राद्धं संकल्यो वा यजनेन तडागात्सर्गको
 टिहोमादिलघुविधं व्रतयत्तु विवाहेषु श्राद्धे होमे चैते जये आरब्धेस्तनकं न स्यादना
 रब्धे तुस्तनकं प्रारंभवरणं यजे संकल्यो व्रतसत्रयोः नां दीश्राद्धं विवाहादौ श्राद्धे पाक
 परिक्रियेति पाकस्य परिसंज्ञात्तत्क्रियायाकप्रोक्षणमिति श्रुदिप्रदयः तन्मदं स्तुटे
 दोगाह्नवत्वात्तीर्थेति आशौचे आकस्मिकतीर्थे प्राप्नो विवाहदुर्गयज्ञेषु यात्रायां
 तीर्थकर्मणि न तत्रस्तनकं तद्वत्कर्म यज्ञादिकरयेदिति पैठीनि सिसृक्षतेः अत्र विशेषः
 प्रागुक्तः जपः पुरश्चरणादिः स्तात्रपाठः अविधेदेन संकल्पितहरिवंशप्रवरणादिप्र

अतएवोक्तं ब्राह्मे गृहीतनियमस्यापि तस्यादन्यस्य कस्यचिदिति एवं देवपूजादिम
दनपारजातेयमोपि शिवविद्यार्चनेन दीक्षायस्य चाग्निपरिग्रहः श्रौतकर्मादिकुर्वीत
स्तानः शुद्धिमवाप्नुयात् गोडशुद्धिजलमंजमुक्तावल्यां जपो देवार्चनविधिः कार्यो दी
क्षाचित्तेनैरैः नास्ति पापं यतस्तैर्वास्तुतकं चापतात्मनं राघवभट्टियेनारदः अथ सू
तकिं नः पूजावध्याम्यागमचोदितं स्नात्वानित्यं चानिर्वृत्यमानस्याजिघायाया तु वे
वाद्यपूजापूजाक्रमेणैव ध्यानयोगेन पूजयेत् यदि कामी न चेत्कामौ नित्यं पूर्ववदा
चरेत् यत्तु नृसिंहकल्पे सदा मंजु जपं मुक्तायदि स्यादशुचिर्नरः मनसा वह्नितस्तत्र
स्मरेत् मंजु न चरेत् तन्मन्त्राद्या शौचपरं रामार्चनं चेद्विधायं अशुचिर्वाशुचिर्वापि ग
हं स्तिष्ठन्धूपत्रपि मंत्रैकस्मरणेन विद्वान् मनसेव सदाभ्यसेत् कालनियमाभावे तु स्तो
त्रहरिवंशादिहेयमेव उत्सवो रथयात्रादिः एषु नाशौचं अथैवाशौचाभावो न न्यगतित्वे
यात्रौ च ज्ञेयः अत्र मूलमाकरे स्पृष्ट्वा अत्र दीक्षितस्यावभृथान् पूर्वमेवाचशौचाभावः
तदादित्वा शौचमस्यैव तेन वैतानोयासनाः कार्या इति वैतानत्वेऽप्यस्य दिनमवश्ये
व अतएवोक्तं माधवीये ब्राह्मे तदवगृहीतदीक्षस्य जेविद्यस्य महामरेव स्नानं त्ववभृथे
यावत्तावत्तस्य नस्तुतकमिति वैतानोयासना कार्या इति वैतानत्वेऽप्यवभृथादिनमव
श्येव अतएवोक्तं माधवीये ब्राह्मे तदवगृहीतदीक्षस्य जेविद्यस्य महामरेव स्नानं त्व

वभये यावत्तावत्तस्य नस्तत्कमिति वेतानोपासनाकार्या इत्यनेनैव सिद्धेन सचिन्तादी
 क्षितानां चेति पुनर्दीक्षितग्रहणं प्राजमाने स्वयं कर्तृत्वायै स्नानप्राप्त्यर्थं दीक्षितग्रहणं
 तेन ततः पूर्वनिषेधात् यत्प्रारंभो वराण्यज्ञेति तद्विष्णुपरं तथा च छंदोगपरिशिष्टे
 नदीक्षिण्याः परयज्ञेन कृत्वा दित्यश्वरान्तिष्ठति शुद्धितत्वेऽप्येवं ऋत्विजां च मधुपर्कान्तरमा
 शौचाभावः गृहीतमधुपर्कस्य यजमानान्तरं ऋत्विजः यश्चादशो चेय तितेन भवेदिति नि
 श्रय इति ब्राह्मणं अतएव रामांडारः चतुर्णां वराण्यज्ञेन्येषामाशौचेन प्रागमयितव्या इ
 त्याह एवं स्मार्त्तेऽपि तुलाकोटिहेमाद्रौ मधुपर्कसति दोषाभावो ज्ञेयः यत्प्रारंभो वराण्य
 यज्ञ इति तत्रापि मधुपर्कान्तरं तेनैनाधानेऽपि पशुबंधादौ तदभावादप्येव भवतीति सिद्धं अ
 तएवादांतरमाह याज्ञवल्क्यः वेतानोपासनाकार्याः क्रियास्तु चिन्तादेनात् तत्रत्यागमा
 त्रैसानोतरं स्वयं कर्तृत्वं श्रौते कर्मणि तत्कालं प्रातः शुद्धिं मवाप्नुयान्ति स्म तेः त्यागाति
 रिक्ते तु श्रौते स्मार्त्ते चार्थे च कर्तृत्वं सतके मृतके चैव अशक्तौ प्रादुर्भोजने प्रवासादि
 निमित्तेषु दावयेन तु साययेदिति हहस्यत्युक्तेः नित्यानि निवर्त्तेरन्येता नवर्त्ते शालाग्नौ चे
 केन्य एतानि कुर्युरिति पेठिनसि स्मृते तवेत विज्ञानेऽश्वरः एकग्रहणं पूजार्थं तेन स्मार्त्ते
 कार्यमेवेति हारलतायां दाक्षिणात्यास्तुलिकल्पमाहुः उपरार्कादिनिबंधास्तु श्रौतं स
 र्वे स्वयं कार्ये स्मार्त्ते तु त्यागातिरिक्ते न्यस्येव कर्तृत्वं त्यागमात्रं तु स्वस्य कर्मवेतानिकं कार
 यं स्नानोपस्यरीनात् स्वयं मेति हारीतोक्तेः दर्शचरस्य मासं च कर्मवेतानिकं च यत् स्त

तकेपिन्यजनमोहात्प्रायश्चित्तोयतेद्विजाइतिमरीच्युक्तेः यन्महान्योर्चितानस्यकर्मन्यागो
नविद्यते शास्त्रमौकवलोहोमः कार्यएवान्यगोत्रजैरितिजावालोक्तेः श्रुत्याहुः अपराक
येवं यातिकाप्रयेवं सूनकेलसमुत्पन्नेस्मान्नेकर्मकथंभवेत् पिंडयज्ञं चरुं होममस
गोत्रेण कार्ययेदिति यावत् कार्योपात्तेः चरुः स्मार्त्तस्यलीयाकः प्रवणकर्मदिश्रुतिवि
लानेश्वरः प्रारब्धं तु संपिंडेनापिकार्यं न च तत्कर्मकुर्वाणः सनाभ्योप्यशुचिर्भवदिति म
नूक्तेः छंदोगपरिशिष्टेपि होमः श्रौतेन कर्तव्यः शुक्लान्नैर्न फलेन वा अक्तं तावयेत्स्मा
नैतदभावे कृताकृतं अक्तं त्रीह्मादेकृतं तं दुग्नादिस्मान्ने होमादौ तद्विकल्पे ज्ञेयः शालागे
चैकै इति प्रागुक्तेः यदा करणं तदन्यद्वाराः अन्ने दंतं च येषां च हृचादीनां द्वादशरात्र
महोमेपि जागृतिविच्छेदः तैर्न कार्यं तैर्न रीयाद्यैः कार्यं गिराजमभूयमानेऽग्निर्लोकि कः
संपद्यत इति सदृशेन भाष्ये वचनात् समासु टत्वे गौनेनापिन कार्यं किंतु पुनराधान
मेव समाशेषप्रत्यवरोह्योराशौ चापवादाभावादनन्यककर्तृकत्वाच्च अन्यथा पु
नराधानमपि स्यात् यत्ता श्रुत्या यनः तौ चापि सूनकेशावेसायं च जुहुयाद्विजः श्रौ
ताग्निस्तु सक्तं कृत्वा मसाप्रेवास्वयं जुहोति नदापि समासु टपरंतदाहस एव स्मार्त्ताग्नि
रात्मनो न्येवोमभावे सूनकादिषु समारोप्य तदंतेन तद्विद्वत्पुत्रास्त्वयमितितया मनुः
प्रत्यहं नाग्निं शुक्रिया इति वैश्वदेवस्य त्वविसाध्यत्वेपि वचनात् तन्निति विप्रोदशाह
मासीत् वैश्वदेवविवर्जित इति संवत्तोक्तेः पूर्वनिषेधो व्यर्थस्तथाप्यापस्तवादीनां वै
x१x यद्यपि ये च यत्नविधानं न कुर्यात्समुज्ज्वलितेनेकोक्तेः x

देवस्य यंच यत्तमिन्नत्वात्पृथग्निवेधः हरदत्तस्त्वारो चेपि व द्वावैर्वैश्वदेवकार्यः त
 स्पृहावनध्यामौयदात्माशुचिर्यदेशरतिव्रतस्य तस्यैवारो चेपि शिष्यनिषेधात् संध्यादी
 नामप्यपवादमाहापराकैपुलस्त्यः संध्यामिष्टिचरुं होमं यावज्जीवं समाचरेत् न तज्जे
 त्सतकैचापिन्यजनगधदधोद्विजः सतकैस्तकैचैव संध्याकर्म समाचरेत् मनसो
 चारणो मंत्राग्राणायामैर्मृतैर्द्विजः यत्तु चंद्रिकायां जावालिः संध्यापंचमहायज्ञा
 नैत्यकं स्मृति कर्म च तन्मध्ये द्वापयेत्तेषां दशाहंते पुनः क्रियोति यच्च संवत्तैः सत
 कैकर्मसंज्ञा न्यागः संध्यादीनां विधीयते यच्च विष्णुपुराणं सर्वकालमुपासीत सं
 ध्ययोः पार्थिवे व्यते अन्यत्र सतकारो च विमानुरभीतित इति तत्सूक्तं संध्यापरं
 अर्घ्यानामानसी संध्या कुरावा रीवि वजिंतेति शुद्धि दीये च नोक्तेः ये हीनसित्त्व
 र्थं मंत्राचारणमाह सतकैसा विज्ञां जलिं प्रक्षिप्य सर्वंध्यायन्नमस्कुर्यात् प्रयोग
 पारजाते भरद्वाजेऽपि सतकैस्तकै कुर्यात्प्राणायामममंत्रकं तथा मार्जनमंत्रा
 स्तु मनसो ध्यायमानं येन गायत्री सम्यगुच्चार्य सूर्यापार्थं निवेदयेत् मार्जनं तु न
 चाकार्यमुपस्थानं न चैव हि गरुडोऽप्राद्विदावप्यारोचापवादमाह व्याधुः स्मार्त्त
 कर्मपरित्यागो राहो रन्यत्र सतकै इति लोकोपि सतकैस्तकैचैव न दोषो राहुदरीने
 तावदेव न चेत् शुद्धि वा च नृत्ति दृश्यते प्रयोगपारिजाते हस्त्यतिः कं न्यावि वा
 हे संज्ञा नो सतकै न कदाचन ह्यदृशा तातयः यदा भोजनकाले तु अशुचिर्भवति

तव ल्योक्तेः शुद्धि तत्वे कोर्म सद्यः शोचं समाख्यातं शापादिमरणे तथा आदि यदादभि
 चारहते भवितुं स्वच्छयामरणं विप्राधं गिदंष्ट्रि शरीरस्यैः अंत्यान्त्यजविषो दंघैरात्मना
 चैवताडनैः पारं समाश्रिताश्चैव महापातकिनस्तथा स्त्रियश्च मिचारिण्य आरुह्यति
 तास्तथा नतेषां स्नानसंस्कारेण प्रादुर्भास्यं गौतमः प्रायेणाशकरोस्त्राग्निविषो
 दको दंघनप्रयत्नेनैव ता मिति नारोचमिति शेषः अंगिरा चंडाला उदकात्सर्पाद्वा स
 र्गाद्वैद्युतादपि दंष्ट्रिभ्यश्च यश्च मरणं पापकर्मणां उदकं पिंडदानं च प्रेतेभ्यो यच्च दीय
 ते नोपतिष्ठति तत्सर्वं मंतरिक्षे विनश्यति धार्मिकान्मतेष्वेव ब्राह्मेयि अंगिदंष्ट्रि नरिव्या
 लविरवबह्नि क्रिया जलेः व्यालागतः स इरात्यरिहर्त्रव्यः कर्कशं जीडां मृतस्तुयः नागानां वि
 प्रियं कुर्वन् कृतप्राप्य विद्युता निगृहीतः स्वयेराज्ञाचोर्ध्वं दोषेणा कुत्रचित् परदारं हारं
 तं प्रेष्टव्या कुर्यात्तिभिर्हताः असमानैश्च संकीर्णैश्चंडालाद्यैश्च विगृह्य कृत्या नैर्निहतास्तद्वंश
 लादीन् समाश्रिताः शस्त्राग्निगरदाश्चैव पारं वंशः कूरबुद्धयः जीधात्प्राप्य विस्ववह्निं शस्त्रमुदंघ
 नं जलं गिरिसंक्षेपपातं च ये कुर्वन्ति नराधमाः कुसिल्यजीविनो ये च सनातनं कारधारिणः
 मुखं भगवत्सत्येके चित् क्लीवप्रायानपुंसकाः ब्रह्मदंडहता ये च ये चापि ब्राह्मणेर्हताः महोपा
 तकिनो ये च पतितास्तैश्च कीर्तिताः पतितानां न हस्यान्नांत्येष्टिनां स्थि संचयः न चाश्रुपातः
 पिंडो वा कार्यश्चादिकं क्वचित् एतानि पतितानां तु यः करोति विमोहितः तप्तस्तु
 दयेनैव तस्य शुद्धिर्नैवा न्यथा एतदुद्धि सर्वं सर्वेषां करणं तु माधवीयेव सिद्धः यश्चात्म

नि. लि.

३४१

३५१
मनेदधाद्वयमवससंयुतं शकटेन हते दद्यात्सोवर्णवसंसंयुतं श्रुतिगणानि हते दद्यात् १५
प्रदद्याद्वा न्यपर्वतं अग्निना निहते कार्यमुदयानं स्वशक्तिः दारुणानि हते चै
कत्र व्यासदने सभा शस्त्राणि हते दद्यान्महिषी दक्षिणा चित्तं अस्मना निहते दद्या
त्सवत्सांगा ययस्विनी विवेका च मने दद्यान्महिषी हेम निर्मिता उद्धधनेन च मने क
पिकतक निर्मितं मने जलेन वरुणं हेमं दद्याद्दिनि कृजं चिस्त्रि कामने स्वाडुभोज
ये च शतं द्विजान् घृतधेनुः प्रदाते व्याकदन्नकवले मने कासरो गेण च मने अथ
कृधु व्रतं चरेत् अतिसार मने लक्षगायत्र्याः प्रायतोजयेत् शाकिन्यादिग्रहग्रस्तो
जयेद्दुद्रययो दितं विधुत्या तेन निहते विद्यादानं समाचरेत् अंतरिक्ष मने कार्ये वै
दयाराधनां तथा सद्यासु पुस्तकं दद्यादस्य शयस्पर्शतो मने पतिते च मने कुर्यात्प्राजा
पत्यांस्तुष्टौ इति मने चापत्यरहिते कृष्णारंगनवतिं चरेत् एवं कृते विधाने तु विद
ध्यादौर्ध्वदेहिकं तथा विधमराणेपि न दोषः ततः तदा हतुर्मनु तद्गगार्यौ हतः शौच
स्तत्तेर्लुप्यत्पारव्यातमिषक क्रियः आत्मानं घातयेद्यस्तु भगवन्मनशानां नृभिः
तस्य त्रिरात्रमारोचं द्वितीये त्वस्थि संचयः तृतीये स्तनकं कृत्वा चतुर्थे आङ्गमाचरे
दिति हेमाद्रौ विष्णुधर्मपि नरस्तु व्याधिरहितो न तप्यजेदात्मनस्तनुं अस्त्यो नामने
लोका अंधेन तमसा हताः ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये चैवात्मनो जनाः अरिष्टरात्मनो हा
ता मृत्युकालमुपस्थिते व्याधितो भिषजा न्यक्तः पार्श्वे वा युधि चात्मनः पश्चाद्युगानु

राम

३४१

ति४

सत्त्वे सत्यजेदात्मनस्तत्तं तस्मिन्काले तनुत्यागाद्यथेष्टं फलमाप्नुयात् आयुषस्तु
 राह्यं मरणं ब्राह्मणस्य च नेति गौडानामयं पाठः उत्तरार्धः संगतेः सत्रयस्य तु संगमे
 नेभर्तुरियोधितः अथ राके वस्त्रगर्भः योजी चित्तं न शक्नोति महाव्याध्युपपीडितः सो
 ग्मुदकं महापात्रं कुर्वन्नामुत्र दुष्यं अत्रोक्तं च क्षमाणवचोति च यास्य यागातिरिक्तं चि
 कित्सस्य रोगाद्युपहृतानामधिकारः सोऽपि जीर्णवानप्रस्थस्यैवेति विज्ञानेऽप्यरदेव
 यातिकादयः एते एव मिताक्षरादौ भृगुपातानशनादिकं वानप्रस्थस्यैवोक्तं मनुरपि
 आसामहर्षिचर्षाणां त्यक्तान्यतर्पणं त्यक्तान्यतर्पणतनुं वीतराकभयो विप्रो ब्रह्मभ
 यायकत्वं तदिति तेनान्यत्रापि तद्विषयतैव मूलैक्यादितिकेचित् तत्र वानप्रस्थम
 रणेऽप्यारोच्य निषेधात् तेन गृहस्थादिपरमेवेदं तेन यत्तेनाधिकारः काम्येनाधिकाराच्च
 नेति निमित्तं करणोदोषो नित्यता च स्यात् प्रयोगे रोगीणां च यत्तुः सद्राक्षत्रियावेश्यां
 त्यजाश्रुतयाधमाः एतेत्यजेयुषाणां नैवैवर्जयित्वा हि जन्त्यप्यतित्वात् ब्राह्मणस्तजव्र
 त्स्वहावात्महा भवेदिति तन्निर्मूलमिति भट्टान्तत्वे तु हेमाद्रौ व्रतकांडलिरवन्निर्मूलत्वं
 चित्यमेव प्रक्रमानुमत्तित्वेति भृगुपातमाजयरं युक्तं ब्राह्मणस्याप्यनुज्ञातमिति व
 क्ष्यमाणविरोधाच्च यत्त्वादित्यपुराणे आब्राह्मणे वा स्वर्गादि महाफलजिगीषया
 प्रविशेत्तुलजंतो यं करोत्यनशान्तं तथेति तत्प्रयागातिरिक्तपरमिति केचित् हेमाद्रौ
 चित्तं न प्रयागवदशारवाद्यादित्युक्ते ब्राह्मणस्य प्रयागेऽपि न प्रतीयते माधवीये

परार्कचादिपुराणे दुष्प्रकित्तयेर्महारोगैः प्रीडतस्तु पुमानपि प्रविरोज्ज्वलनं दीप्तं करो
त्यनसनेन तथा प्रमत्तः परार्कचमृगैः पतनमेव च गच्छेन्महायथं वाधितुं कारणी
रिमादरात् प्रयागवटपारवाम्नादेहत्यागं करोति च स्वयंदेहविनाशस्य काले प्राप्ते महा
मतिः उत्तमात्मा प्रयासो काचात्मघाती भवेत्कचित् एतेषामधिकारस्तु सर्वेषां सर्वजत
सु नराणां मय नारीणां सर्ववर्णेषु सर्वदा ईदृशं मरणं येषां जीवितं कुत्रचिद्भवेत् आरोग्येण
न अहंतेषां वज्रानलहतेन तथा वाराणस्यां म्रियेयस्तु प्रत्याख्यातमिषकृत्क्रियः काष्ठपा
मालामध्यस्थो जाह्नवीजलमध्यगः अविमुक्तो न्मुखस्तस्य कर्णमूलगतो हरः प्राणवं
तारकंदत्तेनान्यथा कुत्रचित्कचित् हेमाद्रौ चैवं अत्र प्राप्ते काले प्रत्युक्तेरप्रापमरणका
लयाः स्त्रिया अन्वारोहणे संयत्नीमेव शौचं यथौचं चंद्रस्तजापि ज्येष्ठमाह शुद्धितत्वा
दिगौऽग्रं येष्येवं एतच्च तद्वादिमरणं कलौ निषिद्धं भगवति पतने श्रेयं तद्वादि
मरणं तथेति माधवेन यथौचं चंद्रसूचकलिवर्ज्यं सूक्तः न चात्र यावदुक्तनिषेधः वि
शिष्टो ईशो वाक्यभेदात् न च कलौ वानप्रस्थाश्रमनिष्ठे धर्मदेवसिद्धे मरणनिषेधे
व्यर्थ इति वाच्यं सर्ववर्णेषु स्त्रियादिभिस्तद्भिन्नस्यापि प्राप्ते काम्यं भवत्येव ये चैतमे
विसृजंतीति श्रुतेः स्मृत्या संकोचयोगात् न च यं स्वाभाविकं कष्टं तु पराधोर
यदोक्ते मातृभारतादिषु न लोकवचनानां न वेदवचनापि मतिरुक्तमणी
पाते प्रयागमरणं प्रतिश्रुतेः अनएव विधुधर्मराज्ञादिमरणमुक्तोक्तं यथापु

नानुसरेण संत्यजेदात्मनस्तनुमिति कास्मामयुक्तं मात्स्येऽग्निप्रवेशेऽप्येक
 पुरविमुक्तैर्विधानतः प्रविशन्ति मरुतैर्मेनिः संदिग्धं वरानने हेमाद्रौ विष
 स्थानं सर्वेन्द्रियवियुक्तस्य स्वव्यापाराभमस्य च प्रायश्चित्त्यमनुज्ञातमग्नि
 पातो महापथः धर्मजिना समर्थस्य कर्तुः पायां किं न स्य च ब्राह्मणस्याप्यनु
 ज्ञातं तैर्ये प्राणविमोक्षणां श्रयणार्थं चैवं सहगमनं कलौ नान्यागतिस्तीर्णा
 सहानुगमनोदने इति न स वैवर्त्तान तेन मरुगांति क प्रयाश्चित्त्यकारी खंडा
 दोचातुर्वर्ण्यस्य तनुत्यागविधयस्तु युगांतरपरायणेति युक्तं प्रयागेऽपि
 त्रिस्थलीसेतोस्कांदे यथा कथंचिन्नीर्थे सिन प्राणत्यागं करोति यः त
 स्मात्मघातसोचो न प्राप्नुयाद्दीप्तिता न्यथ पाप्मे विष्णुः देहत्यागं तथा वीराः कुर्वन्ति
 मम सिंनिधौ मत्र तं प्रविशत्येव न पुनर्जन्मिनो नराः कौर्म व्याधितो यदि वा दानः कु
 द्रोवापि भवेन्नरः गंगायमुनमासद्यस्तु प्राणानपरित्यजेत् शिषितानलभते का
 मान् वदन्ति मुनिपुंगवाः तथा यागतिर्द्योगयुक्तस्य सत्यस्य स्पमनीधि राः साग
 तिस्य जतः प्राणान् गंगायमुनसंगमे वाराहे तत्र यो मुंचति प्राणान् वरमूलेषु
 सुंदरि सर्वलोकानति क्रम्य मम लोकं प्रयसुन संगमे वाराहे तत्र यो मुंचते त
 था श्रुत्वा मोनासकामो वा वटमूलेषु सुंदरि शीघ्रं प्राणान् मुंचेत् यदीधेत्य

रमांगतिं तथा पंचयोजनविस्तीर्णप्रयागस्य तु मंडले व्यतीतान् पुरुषान् सप्तमारवि
 ष्यांश्च तदंशः नरस्मारयते सर्वान् यस्तन्वागान् परित्यजेत् ब्राह्मेध्यात्वा वि
 ष्णुपदं भोजे प्रयागे विष्णुनत्परः तन्मंजुर्जतिवैमाघेतस्य मुक्तिर्न शस्यः ३ः कृतो
 विडराचारो ब्रह्महत्यादिपातकी हरिध्यात्वा त्यजनदेहं प्रायशः मुक्तिमान् भवेत् ।
 भविष्योत्तरे समासहस्राणि तस्य वेजस्ते देशे कमनोयतने च षोडशायहा हवे
 षष्टिरशोतिगो गृहे मृनाशकं भावतचोक्षया गतिरिति मासान्यतोऽपि फलं ए
 व मन्येति धयो ज्ञेयाः यत्तु गोडाः प्रयागादिमरणं ब्राह्मणभिन्नविषयमित्याहुः
 तत्तद्वृत्तं पितृमहचरणे प्रयागविधौ कृतमिति नात्रोच्यते अत्र दशाहमशौचं
 त्रिरात्रस्य प्राप्तकालगोचरत्वात् इति भयः युक्तं तत्रिरात्रं दिवोदारीये व्येवं अ
 दितत्वेऽपि कार्ययः मृतरानमृतानामरातिहृतानामग्निजलप्रविष्टानां भृगुसंग्रा
 मदेशां नरमृतानां जातदंतानां च त्रिरात्रमिति एवं मरणान् प्रायश्चित्तेऽपि सर्वोक्त
 आत्महादेहीहोहासोचादिनिषेधस्तदानीमेव वत्सरान्ते तु सर्वमोर्ध्वदेहिकं कुर्या
 त् गोब्राह्मणहृतानां च पतितानां तथेव च ऊर्ध्वं संवत्सरात्कुर्यात् सर्वमेवोर्ध्वदेहि
 कमिति हेमाद्रौ वड्जिंशन्मतान् एवं मूर्ध्वोक्तानामपि गयाश्राद्धमपि कार्यं ब्र
 ह्महाचकृतघ्नश्च गोघाती पंचपातकी सर्वे ते निःकृतिं याति गयायां विडया तना
 दिन्यग्निपुराणान् ब्राह्मेयि क्रियातेयतिनारिनात्तु गते संवत्सरे क्वचित् देश

धर्मप्रमाणत्वाद्वाक्येस्त्वबंधुभिः मां त्रिंशदपादमूलेवाश्राद्धं हरिहरोस्मरन् सूर्यपदेऽ
 त्थः तत्र वर्षमध्ये कृत्यमुक्तं सघराकं वायुपुराणे शुक्लयज्ञे तद्वा दश्यां कुर्यात् त्रिंशद
 त्तरं द्वादशांतिचाकुर्याच्छुक्ले च प्रथमे हनि घागलः यः नारायणवलिः कार्यो लोक
 गद्गभयानरैः तथा तेष्वां भवेच्छौचं नान्यथेत्यब्रवीत्तयमः व्यासः नारायणसमुदिरयणि
 वकायत्प्रदीयते तस्य शुद्धि करं कर्म तद्भवेन्नैतदन्यथेति सत्त्वात्मघातादिप्रायश्चित्तं
 कृत्वा कार्यः तदुक्तं हेमाद्रौषड्त्रिंशत्तमे कृत्वा चंद्रायणं पूर्वं क्रिया कर्तव्या यथाविधि
 नारायणवलिकार्यो लोकगद्गभयानरैः पिंडोदकक्रियाः पश्चाद्दुष्योत्सर्गादिकं च य
 त् एकोदश्यानि कुर्वीत स पिंडीकरणं तथा दिवा दारणीये ब्रह्मशातातयस्तु पतिते च
 मृते शुद्धौ प्राजायत्यास्तुषोडश मृते चापत्परहिते कृच्छ्राणां नव तिचरेदित्याह ।
 इदं प्रायश्चित्तार्हं पित्रादिविषयं इंदियेरपरित्यक्ता ये च मृदा विषादिनः घातयन्ति
 स्वमात्मजं चंडालादिहताश्रये तेषां युत्रास्वपौत्राश्च दयमासमभिष्मृताः यथाश्राद्धं
 प्रोक्तं ज विष्मृता म प्रतिष्ठिता तथा ते संप्रवक्ष्यामि नमस्तु स्य यं भुवे इति हेमा
 द्रौ ते नैवेत्तेः तत्रैव बोधायनोपि नारायणवलिं व्याख्यास्यामो भिशस्तपतितसु
 रायात्मत्यागिनां ब्राह्मणदत्तानां च द्वादशवर्षाणि जीवांरं कुर्वीतेति गृह्यपरिशिष्टे
 ति चंडालादित्याद्युक्ता दद्यात्तरीरं प्रेतस्य संस्काराया स्थी नियत्नतः प्रायश्चित्तं तु क

नैवं पुत्रे प्राप्ताय एव यमिभ्युक्तं मदनरत्ने ब्राह्मणरुतानां च द्वादशवर्षाणि जीणि चाकु
 र्वीतेति मदनरत्ने ब्राह्मे प्रमादादापि निःशंकस्त कस्माद्विचोदितः चंडालो ब्रह्म
 णे श्वोरे निहितो यत्र कुत्रचित् तस्य दाहादिकं कार्यं यस्मान्नपत्तिस्तसः चांद्रायणं
 तदा कथं द्वयं तस्य विष्णुद्वये यद्वा कथं ज्यं च दशकृत्या त्रि विधिना दहेत् वृद्धिपूर्वम्
 तानां त्रिंशत् कथं समाचरेदित्युक्तं स्मृतिरत्नावल्यां तु द्विगुणं प्रायश्चित्तं कृत्वा
 श्रीगणपत्यसर्वकार्यमित्युक्तं आत्मनो घातमुद्धृत्य चरेच्चंद्रायणं द्वयं तत्र कथं चतु
 र्विंशत् कृत्वा वा पुनः श्रुत्वा कसं वत्सरात्कथं दहनादियद्योदितं कृत्वा नारायण
 बलिमनित्यत्वात् नदायुषः इति इदं चात्मवधमिति तं न जातिवधं प्रायश्चित्तं न समुच्चिन्नं
 कार्यं अतएव बौधायनेनाक्तं द्वादशवर्षाणि जीणि वेति मदनयारिजाते स्मृत्यर्थसा
 रे च ब्राह्मसदीनां तद्योग्यप्रायश्चित्तं कृत्वा नारायणबलिः कार्य इत्युक्तः एवमेव
 कृतानामपि यत्तु कश्चिदाह पुत्रकृतेन प्रायश्चित्तेनापि तः पापनाशो मानाभावः आ
 त्मघाते तु च चनादस्तमहापातके तु कथं स्यादिति सत्यमेवात्मवधप्रयश्चित्तस्य
 जातिवधमिति न समुच्यं च दत्तहृदयमून्या एव तर्हि जातिवधमिति न पुत्रैः
 कार्यमिति वचनमस्ति पुत्रकृत् कसं प्रायश्चित्तादिविधमवापत्तेः प्रागुक्तबौधाय
 नवचनाच्चेति दिक् इदं प्रायश्चित्ताहं एव प्रायश्चित्ताहं एव प्रायश्चित्तानहं एव
 नृपतिनोदकमात्रं कार्यमिति केचित् मदनयारिजातादिस्वरसोप्येवं वस्तुतः

तदहं न ह्यो वचनेऽनुयादनादविरोधान्नदजायिनारायणवलिर्गयाश्रुः।
 इंचेति युक्तं यत्तितोदकविधिस्तु यिज्राद्यतिरिक्तविषय इत्ययं स यथा हेमाद्रौ
 ब्राह्मे यत्तिततनां नुक्ता रूपा घस्तु प्रिकर्तुमिच्छति सहिदासीं समाह्वय सर्वगंदर्तचैत
 नां श्रुश्रुदघटस्तुतां यथा हस्तं ब्रवीत्यपि हेदासिगधमलेन निलानानघसत्त्वं
 रं तोययत्तं घटे चैवं सतिलं दक्षिणामुखी उपविष्टान्त्वामेन चरणेन ततः क्षियन्
 कीर्तयेः पातं किं नं तां च पिबेति मुहुर्वदः निशम्य तस्य वाक्यं सालक्ष्ममुल्या करोति
 तन्ना रवं कृते धनेन तृप्तिः यत्तिनामानं चाप्येति इदं च मत्ता हे कर्तुं यत्तितस्य दासो मत्ता
 क्षियदाघटमपवर्जयेदेतावता यमुपचरितो भवतीति मदनरत्ने विष्णुर्क्तेः इदं चात्म
 त्यागि विषयं आत्मत्यागिनः यत्तितास्ते नारोचोदकधाजः स्फुरित्युपक्रम्य विष्णु
 ना रानस्याभिधानादिति गौडाः यन्नु कश्चिदाह यः यत्तितो घटस्फोटनं बंधवे वै हिः
 कतस्तद्विषयाणि क्रियानिषेधवात्मानि जीवत्येव तस्मिन् न्यकर्मण कृतत्वात्
 तः कारणभावादिति संबधुत्यागेन जातवैराग्यस्य प्रायश्चित्तस्य करणाय तैः
 मिताक्षरादेविरोधमयस्य नृत्वि इत्युपेक्षणीयैः न च कृतघटस्फोटस्य संग्रहवि
 धिर्नैति वाच्यं मनुनाक्षतघटस्फोटस्य त्यागमुत्वा प्रायश्चित्ते नुचरिते पुराणिकं
 भूमयान्तवं तेनैव सार्धं प्रास्येयुः स्वात्मा पुण्ये जन्ता राये इत्युक्तेः अन्यथा प्रायश्चि
 त्तमात्रेण तत्संगतं श्रुतीघटस्फोटनवहिः कृतस्यापि यिज्रादेरकानेनारायणव

लिः निषेधास्तु पितृव्यादिपरादतितत्वं केचिन्नारायणवलोकने व्यत्यक्रमसिद्धिं
नवर्जकार्यं गोत्रास्मादहतानांच पतितानां तथैव मुक्तमात्रं प्रसीतानां नैव कार्या
सिद्धिं तेतिवचनात् त्रास्मादिह तेतानेध्यानिर्मलत्वा आह प्रकाशस्य च हृद्विष्णु
विषयत्वादुपेक्षाः नारायणवलित्तु हेमाद्राद्यनुसारेणोच्यते तत्रादौ क्रिया निवंधे
गारुडं तर्पमुक्तां कार्यपुरुषस्तत्तेन मंत्रेणो वैष्णवैरपि दक्षिणाभिमुखो भूत्वा प्रेतं वि
ष्णुस्मरन् अनादिनिधनो देवः शंखचक्रगदाधरः अव्ययः पुंडरीकाक्षः प्रेतमोक्षप्रदा
भवेति मुक्तैकादश्यादेशकालौ संकीर्तिं प्रमुक्तगोत्रस्यास्य कस्य दुर्मरागात्मघातज
दोषनारायणं त्वं दक्षिणे संप्रदानं योग्यता सिध्यर्थं नारायणवलित्करिष्ये इति संकल्प
त्रास्मादं विष्णुं शिबं यमं प्रेतं पंचसंकुं भेषु विष्णुः स्वर्णमयः कार्यारुद्रस्त्रामयस्त
था त्रिशूलो यमस्तत्रयमो लोहमयो भवेत् प्रेतो दर्भमयः कार्य इति गारुडाक्तास्तस
र्वासु हेमिषु वा प्रतिमासु योऽरो यचारैः पुरुषस्तत्तेनाभ्यर्च्यं प्रतिष्ठाप्य चक्रं पुरु
षस्तत्तेन प्रत्यर्च्यं नारायणपेदमिति हुत्वा देवानां मगेदक्षिणाग्रदभ्यर्च्यं विष्णुरुपं
प्रेतं स्मरन् नामगोत्राभ्यां मधुघृततिलयुतान्दरापिंडान्यहोपवीत्येवं प्रमुक्तगोत्रा
मुक्तार्मन् प्रेतं विष्णुरुपायने पिंडं उपतिष्ठतामिति दत्त्वा पुरुषस्तत्तेनाभि मंत्रं परां
रवादकेनाभि विच्य भ्यर्च्यं मुक्तार्माणं मुक्तगोत्रं विष्णुरुपं प्रेतं तर्पयामीति पुरु
षस्तत्तेन प्रत्यर्च्यं तर्पयित्वा एक एकमात्रं ब्रह्मादिपंचभ्यो दद्यात् मंत्रस्तु ब्रह्म

विष्णुमहादेवायमञ्जैवसकिंकरः बलिं गृहीत्वा कुर्वतु प्रेतस्येवं शुभागतिमिति मि
 ताक्षरायां तु होमवत्स्यादिनोक्तं ततः प्रतिदेवतं च विधिं फलं सर्वरामधुग्धतानि च
 निवेद्य पिंडानभ्यर्च्य नद्याक्षि मारात्रौ नवपंचधा करिष्ये शतुक्ता विष्णुयमं प्रेतान् स्मर
 त्विष्टानुपवेश्य प्रेतस्थाने चैकं विष्णुस्मरन् पाद्यावाहनाध्यायुते नृसिप्रश्नातं कृत्वा
 लेखनादि कृत्वाऽन्नरोषेण ब्रह्मणे विष्णवे शिवाय यमाय सपरिवाराय चतुरः पिंडान्
 दत्वा प्रेतनामगे त्रे स्मृत्वा विष्णुनाम्नामं च मंदत्वाभ्यर्च्य चांतेभ्यो दक्षिणं दत्तैकं
 द्विजं प्रेत रूपं स्मृत्वा विरोधतः संतोष्य विप्रेः प्रेतायेदं तिलोदकमुपतिष्ठतामिति स्म
 तिलमुदकं दापयित्वा स्नात्वा भुङ्गीतेति संक्षेपः अत्र विरोधांतरं भट्टकृतां न्येष्टियदुता
 जेयं सर्वहृते वर्षययंतं पूर्वद्येकभक्त्युर्वं मुक्तपंचम्यामुपवासनं कृत्वा कृत्वा पिष्ट
 मयनागमनंतवा सुकिंशं रवययकं चलककैटकास्वतरधृतराष्ट्रारवपालका
 लियतक्षककपिलेति नामभिः प्रतिमासं संपूज्य यायसेनविप्रान् संभोज्य वत्सरांते
 हेमं नागं गां वदत्वा नारायणबलिं कुर्यात् मूलं तु हेमाद्रौ जेयं बोधायनस्तत्रै सर्व
 मृतानां नमोस्तु सर्वभ्य इति तिष्ठन् प्राकृतीं कृत्वा दके मृतानां समुद्रा एव युतायेति
 कृत्वेति क्रियां कुर्यादिति रोषः आसः सौवर्णभारनिव्यं जतांगं कृत्वा तथैव गां
 व्यासं यदत्वा विधिवत्सितरान्तरायमाप्रवान् हेमाद्रौ भविष्योपंचम्यापन्नगं हेमं
 स्वर्णेन केन कारयेत् क्षीराज्यपात्रमध्यस्थं पूज्य विप्राय दापयेत् प्रायश्चित्तमि

दं प्रोक्तं नागदष्टस्य संभूतेति अथ राक्षसं त्वं नरो न देवमुध्यति प्रेते नारायण क्लो
 क्तते यो ददाति क्रियायिं न तस्मै प्रेताय वै स तः तस्मै वारो च सुद्विष्टः अहमेव न संश
 यः विष्णुश्चाह समाप्तौ तु त्रयोदश्यां दिनत्रयं श्राद्धं चोपि ददः कुर्यान्न तं तादृङ्धुगोत्रजाः
 यस्य वै मृत्युकाले तु विधिना संततिर्भवेत् स वसेन्नरके नित्यं यं कर्म गतः कुर्यात्
 मृत्युपक्रम्या बलिं नारायणं कुर्यात्तस्यो देरो भक्तिमानिति गारुडोक्तेरपुत्रस्यापि
 यत्पाद्यैः कार्यमित्युक्तं देवयासिकेन अथ विधानादशौचाभावः यथा यत्तु द्रव्य
 नादिषु त्रयाणामाश्रमाणां च कुर्यादाहो देवक्रियाः यतेः किंचिन्न कर्त्तव्यं न वा
 ज्येष्ठां कुर्यात्तिस इति ब्राह्मणं इत्यादि एकोदशं न कुर्यात्तयतीनां स्वेव सर्वदा अहम्ये
 कादशे प्राप्ते पार्वणं तु विधीयते सायं ङीकरणं तेषां न कर्त्तव्यं सुतादिभिः त्रिदंष्ट्रा
 ह्मणो देवप्रेतत्वं नैव जायते न संस्कारं वक्ष्यामः दजात्रव्यः एकोदशं जलं पिं डं श्राद्धं
 चैव प्रेतसक्रियां न कुर्याद्दार्ष्टिकादन्यत्र ब्राह्मणभूता यमिदं चैव दार्ष्टिकादिति पूर्वभा
 विमासकादिनिषेधो ननु दार्ष्टिकैः सन्यासिनो व्यादिकादिषु त्रः कुर्यात्तथा विधी
 ति बाधवायोक्तं पृथ्वी चंद्रादयः प्रजायति अहम्येकादशे प्राप्ते पार्वणं तु विधीयते सा
 यं ङीकरणं तस्य न कर्त्तव्यं सुतादिभिः एषु सायं ङनादिनिषेधानुवादेन पावणेनैव
 तत्स्यानायत्र च पार्वणस्य गम्यते नागिरागिरेमिदं यादेरं कृत्यो देयमिति वत्त इदं वा
 र्ष्टिकादि विधानं च त्रिदंष्ट्रानामेव एकदंष्ट्रिष्वहंसादीनां तु ना किमपि कार्ये

राम

३४६

पूर्वोक्तो शनो वाको त्रिदं डिग्रहणादिति श्रुत्या गणयादयो गोशः त्रिदं डिशवेन मनोदं
 आदिदं न्नयोक्तेः यस्येते नियता दंशः स त्रिदं डि ति चोच्यते इति स्मृतेः बोधायनः नाराय
 णवलिश्चास्य कर्त्तव्यो द्वादशो हनि अस्य पावणेन समुच्चयो ज्ञेयः संचसरावाह कृत्वा
 विष्णो महायज्ञायाय संविनिवेद्येत् अग्नौ हुत्वा तु घेयं व्यादजीभिः समाहितः यती
 गृहस्था न्साधत्वा निमंजि द्वादशा वरान् अभ्यर्च्य गंधपुष्पाद्यैर्मन्त्रैश्चादशानामपि सं
 भोज्य हव्येनान्नेन दक्षिणां च निवेद्येत् त्रयोदशं द्विजश्रेष्ठमात्महंसं संयतेन्द्रियं विष्णु
 यथा तथा अभ्यर्चयाद्याद्यैश्च विधानतः दद्यात्पुरुषस्तुक्तेन गंधपुष्पादिकं क्रमात् व
 त्वात्तंकारणादीनि यथाशक्ति प्रदापयेत् उद्धिष्ट सन्निधौ तस्य दर्भो नास्तीर्य भूतले न
 भुवः स्वः स्वधा युक्तैस्तस्मै दद्यात् वलित्रयं अश्वमेधसहस्रस्य वा जयेय शतस्य च यत्फलं
 त्वभेदे वंशः करोति पतिं क्रियां शौनकास्तु शौचकोहं प्रवक्ष्यामि नारायणवलिपरं च
 उल्लाडदक्षात्सर्पाज्जास्मरणाद्वैद्यतादपि दंष्ट्रिभ्यश्च यशुभ्यश्च रजरासु विचारमभिः दशां
 तरमृत्तानां च मृत्तानां चान्यसाधनैः जीवश्राद्धमृत्तानां च कनिष्ठानां तथैव च यतीनां
 योगिनां पुंसामन्येषां मोक्षिकां क्षिणां पुण्याया ह्यक्षयार्थाय द्वादशो हनिकारयेत् ईदं दशा
 प्रवर्णो दंति पंचम्यां पर्वणोस्तु वेत्युक्ता पूर्वोक्तं सर्वविधिमुक्त्वा नतो देवेति पुरुषस्तु
 क्तेन च प्रत्यचं याय सहत्वा केशवादि द्वादशानां सभिस्तद्द्विरोपि त्रै द्वादश विप्रान्संभो
 जतैरवद्वादशपिंडान् दद्यादित्यधिकमाह युद्धमतेन प्रागुक्तै कृतजीवघ्राद्धिमते सपि

उरारोचादिक्तां यनवा तडक्तं हेमाद्रौ लोमो मृते कुर्यान्न कुर्याद्वा जीवन्मुक्तो यतः स्वयं
 कालं गते द्विजे भूमौ रवने द्वापि दहेतवा पुत्रस्तन्यमतशेषं च कृत्वा दोषानविद्यते जीवन्म
 यि विरोधस्तत्रैवोक्तः नित्यं नैमिषक यत्तु कुर्याद्वासं त्यजेतवा वाधयेधि मृते तस्य ने
 आरोचं विधीयते स्तनकं च न संदेहः स्नानमात्रेण म्रियते एतद्योगि विषयं योगमार्ग
 रतो यिवेति तस्याप्युक्तैः तया हिताग्नेयौ धित मृते तदस्थिहा सर्वपुत्रादीनामारोचं सं
 ध्यादिकर्म लोपप्रलाप्तिः अनर्निमत उक्तं ते रारोचादि द्विजातिषु दाहादनिमतो विधा
 द्विदेशस्य मृते सतीति स्मृतेः आहिताग्ने दोहात्प्रागपि दशाहः संस्कारोचमिन्नोदशाह
 ति धर्तृस्वाम्यारोऽरस्य तद्धितं मूलैव वा द्वयोर्विरोधाच्च एतत्प्रागुक्तं अत्र देहस्येव संभवे
 दाहः आहिताग्ने विदेशस्य मृते शक्तिक्लेवरं निधेयं नाग्निमिर्यावत्तदीयेरपि दद्यते
 इति ब्राह्मोक्तेः तदभावे धंदोगपरिसिद्धे विदेशमरतो स्थीनि म्राड् न्याभ्यज्य सपिष्टा
 दाहयेद्द्विषास्य घयात्रमासादि पूर्ववत् अस्या मलाभे पार्श्वे निशकलान्युक्तया सताः दा
 हयेदास्थिसंख्यानिततः प्रभृतिस्तनकं हेमाद्रौ षड्त्रिंशन्मते कुर्याद्भूमयंप्रेतं दर्भस्त्रिरात
 वष्टिभिः पालाशीभिः समिद्धिवा संख्याचैव प्रकीर्तिता भविष्ये चत्वारिंशद्विरस्याने ग्री
 वायांचदशोचत्तुर्वाहोश्चैव शतं दद्याद्विंशतिं च तयोरसि उदरे विंशतिं दद्यात्त्रिंशतं कोटि
 शयोः हंवाश्चैव शतं दद्यात्त्रिंशतं जंघयोः द्वयोः पादौ गुलीषु दशवैमृषाचप्रेतकल्पना मद
 नरत्ने यत्पास्वः शिरस्य शीत्यर्धं दद्यात्ग्रीवायां तदशौचत्तुर्वाहोश्चैव शतं दद्यादशचैव
 गुलीषु च उरसि त्रिंशतं दद्याद्विंशतिं जठरोदरे द्वादशार्धं सघणयोरष्टार्धं शिष्टे एवत् २

उर्वीश्वैकशतं दद्याद्विंशतं जंघयोर्द्वयोः पादांगुलीषु द्वे दद्यादेतत्त्रे तस्य कल्प्यते मस्तके ना
 निकेरं तु अस्त्रावन्तालुके तथा यं वरत्नं सुरेव तस्य जिह्वायां कदलीफलं चक्षुषोस्तकप
 दौ द्वौ नासिकायां तु कालकं कर्णयोर्ब्राह्मण्यत्राणि के शो वटप्ररोहकाः नालकं कमला
 नां तु अत्र स्थाने विनिक्षिपेत् मृत्तिका तु वसाधानुद्हरिता लक गंधके शुक्रं तु पादं दद्यात्
 पुरीषे पित्रले तथा संधीषु तिलपिष्टं त्र्यंशं सस्याद्यवपिष्टकं मधुस्य लोहितस्थाने त्वचः स्या
 ने मृगतवा सनयोर्जर्जके दये नासायां शतपत्रकं कमलं नाभिदेशे स्याद्दंताके त्र्यश्वराश्विने
 लिंगे चरत्तमलं तु परिधानं दुकूलकं गोमूत्रं गोमयं गंधं सर्वेषां ध्यादिसर्वज इति इदं निर
 नेरपि तत्रैव तद्वः मनुः प्रोषितस्य तथा कालो गतश्चेद्वा दशादिकः प्राप्ते त्रयोदशो वर्ये प्रेत
 कार्याणि कारयेत् तदस्यति यस्य न श्रूयते वार्ताया वद्वादशा वत्सरान् कुशपुत्रले दहेन तस्य
 स्यादवधारणं भविष्योपि जरी प्रोषिते यस्य न वार्ता नेव वागमः ऊर्ध्वं पंचदशा वधीत्कालान् श्रू
 तिरूपकं कुर्यात्तस्य तु संस्कारं यथोक्तविधिना तता जहादीन्येव सर्वाणि प्रेतकर्माणि का
 रयेत् द्वादशाब्दप्रतीभापितं न विषयेति मदनरत्ने उक्तं गृह्यकारिकायां तु तस्य सर्वं च य
 स्तस्य विंशत्यब्दे र्यतः क्रियाः ऊर्ध्वं पंचदशाब्दान् मध्यमे वयसि स्मृता द्वादशाब्दत्तरा
 दूर्ध्वं मुनरे वयसि स्मृता चांद्रायणत्रयं कृत्वा त्रिशत्तुष्टाणि दासुतेः कुरौः प्रति कृत्तिं दग्धा
 कार्या शो वादिकाः क्रियाः अथुक्तं पराशरः देशान्तरः देशान्तरगतो नष्टास्तिथिर्न ता यते यदि
 त्र्यश्वराश्विने मेषमावास्यास्तुष्टावेकादशी च या उदकं पिं उदाने च तत्र श्राद्धं च कारयेत् इदं वा
 सृजाने तत्राहिताग्नेः सृजाने रोचं श्रानाहिताग्नेस्तु त्रिशत्रं श्रानाहिताग्ने देहस्तदास्वो गृह्या

नि.सिं.
२४८

348

निनास्वयं नदन्नामेयलाणानां वृत्तेः कार्यः पुमानपिवेष्टितव्यस्तयाग्नलाक्ष्मसासस्य
चर्मणा अर्णास्तत्रेणवध्यात्पुलेप्रयोपवैस्तया सुपिष्टेजलसंमिश्रैर्दग्धव्यश्रतया
निना असौख्यगय लोकायस्वाहेत्युक्तासंवाधवेः एवंपणशरं दधात्रिरात्रमरुवि
भवेदिति ब्राह्मोक्तेः इदं त्रिरात्रं नदशाहमध्ये दाहेतत्र प्रोक्षिते कालशेषः स्यादित्युक्तेः
किंतु न दधीतत्र पत्नी पुत्रयोः सर्वमग्रहीतासौ वयोदशाहाधेव ग्रहीता शौचयोस्तु त्रिरात्रं
पत्नी मृतो भर्तुं श्रैवं सपत्न्यो श्रैवमिति स्मृत्यर्थसारे प्रत्यसपिठानां तु सर्वत्रयणं सारदाहेषि
रात्रं नदाहं गिराः देशांतरमृतं श्रुत्वा शौचं चेत्कथंचन कालात्ययेपि कुर्वीत दाहकालो दिन
त्रयमिति स्मृत्यर्थसारे तु ग्रहीता शौचानां स्नानमात्रं मुक्तं बहुचपरिशिष्टेपि अथातीतसे
स्वरः सवेदंतर्दाहं स्यात्तत्रैव सर्वसमापयेद्दूर्ध्वमाहिता शौचयोः कर्मागं त्रिसरात्रमिति
षडशीतावय्येवं बिस्वादरीत्तु प्रति कृति दहते त्वग्निदेस्या त्रिरात्रमिति मुक्तं द्वादशवर्षादि
प्रतीक्षोत्तरं दाहेतु पुत्रादीनां सर्वेषां त्रिरात्रमिति कल्पतरुदिवोदाशादयः अथ प्रेतसंस्कारे
रेकालः हेमाद्रौ गार्ग्यः प्रत्यक्षरावसंस्कारे दिनं नैव विशेषयेत् आशौचमध्ये संस्कारे
दिनं शौच्ये तु संभवे आशौचविनिवृत्तौ चेत्पुनः संस्क्रियते मृतः संशौध्ये वा दिनं ग्राह्यम्
ध्वं संवत्सराद्यदि प्रेतकार्याणि कुर्वीत श्रेष्ठं तत्रोत्तरायणं कृष्णपक्षस्वतत्रापि वर्जयेत्तु
दिनक्षयं वाराहे चतुथाष्टमगे चंद्रे द्वादशे च विवर्जयेत् प्रेतकृत्यं व्यतीपाते वैधृतौ
परिधेयथा कारणो विधिः संज्ञे च शान्तिश्चरदिने तथा त्रयोदश्यां विशेषेण जन्मतारात्र
ये तथा जन्मदशमैकोनविंशानि जन्मताराः भारते नक्षत्रे न कुर्वीत यस्मि

राम
३४८

नृजातो भवेन्नरः श्रेष्ठपदयोः कार्यतयागेयेचभारतः दारुणेचसर्वेषुप्रतरेवविवर्जयेत्
 कारयः भरण्याग्रामघातेष्वामलंक्षिचरणानिच येनस्त्येतितुष्टानिधनिष्ठां चपंच
 कं फाल्गुनीदितीयेरोहिण्यनुराधापुनर्वसौ आषाढे द्विंशाष्टाचभानिद्विचरणानिच
 ज्योतिर्नारदः चतुर्दशीति कथंनंदंभद्रांशुक्रारवाशोरो सितेज्ययास्तमयंघृष्टिभंवि
 घमांघ्रिभं शुक्लपक्षंचसंत्यज्यपुनदहनमुन्नमं वस्तुत्रार्धजः पंचनक्षत्रेषु त्रिजन्म
 सुषोष्मत्रसर्क्षयोश्चैवदहनात्कुलनाशनं अस्यापवादमाह तत्रैववैजवायः येनस्या
 साभ्यादग्धस्यप्रेत्येकादशोहनि नक्षत्रातिथिवारादिरोधनीयेनकिंचन युगमत्वादि
 संक्रांतिदर्शयेत्क्रियायादि देवादायतिता तत्रनक्षत्रादिनसोधयेत् विश्वप्रकारोपि गु
 रुभार्गवयोमाद्येयोषमासेमलिस्तुवे नातीतः पितृमेधः स्याद्भूयोगोदावरीनिना दान
 मपि तत्रैवोक्तं भद्रायांभूमिदानंस्यात्रियादक्षे हिरण्यदः वारेषुतत्रद्वर्णतुवासादान
 विधीयते धनिष्ठापंचकमृतेपंचरत्नानिदाययेत् एकादशीतिपलंकांस्थंतदंधंवातद
 धं कं तवषुत्रिपलंचापिदद्याविप्रायराक्षितंइत्यलंप्रसंगेन हेमद्रौतद्धमनः अमृतं
 मृतमाकर्णित्तयेयस्योर्ध्वदेहं कं प्रायश्चित्तमसौस्मान् कृत्याग्नीनादग्धीतच जीवनं
 यदि समागच्छेत् छतकंभेनिमज्यनं उद्धृत्यस्नाययित्वास्पृजातकर्मादिकारयेत् द्वाद
 शाहं व्रतवर्षात्रिरात्रमथवास्पृजु स्वात्तोद्धहेतनाभार्यामन्यावातदभावतः अग्नी
 नाभायविधिवद्वात्यसौमिनवाजयेत् अथेद्राग्नेतयशुनागिरिगत्वाचतत्रत इष्टि।

मं सिनीवाल्यापौरा मास्या पंचम्या वापिकारयेत कृतसर्ववधो विप्रः पूर्वजन्म
निवायदिवधं प्रख्यापयेत्यापीचरेत्कष्टाश्च नृदरा विप्रायलोहदं देवतन्मूलं वा
विषदाययेत मूल्यमाह निष्कत्रये निष्कं चानिष्कं कं कनायसं अनुमत्यादिक
तृणां निष्कमर्धतर्धकं इदं स्वर्णरूपयोः शक्नोतेयं संस्कारमाह प्रियंगुव्रीहिगो
धूमतिलविष्टेन वायुनः कृत्वा सपीतनिस्सर्पे निधाय मर्चयेद्दहि एहि सर्वमृतः स
र्प उग्रस्मिन्निष्टे समाविशः संस्काराय महं भक्ता प्रार्थयामि समानजः वसोयवी
जगंधाद्यैः संयज्य च हरेद्दहिः कुर्यात्संस्कारसंवल्यं प्राणायामपुरःसरं यज्ञाय
वीतनाकार्यं सर्पसंस्कारकर्म तल्लोकि कामिं प्रतिस्थाप्य समिदा ध्यानमाचरेत् ततो
निराग्निदिग्मार्गे भूमिं संप्रोक्षवारिभिः चित्तिं कृत्वा यसंस्तीर्य कुत्सैराग्नेष्वकाग्रकैः
पशुभ्योऽग्निपरिस्तीर्य परिषद्य समर्चयेत् कृत्वा ध्यानमाधारचभुवं च यथाविधि सर्पं
नृत्तवायवेन विति मारोययेत्सुधी ऋवेण जुहुयादाज्यमग्नौ व्याकृतिमिति सिभिः स
र्पास्ये जुहुयादाज्यं व्यातृत्वा वसमग्न्या आज्यरोषं कृत्वा रोषं वसर्पदेहे निषेधये
त्तच्च मसस्ये जंलैः सर्पं व्यातृत्वा भुक्ष्ययातिना अग्रे रक्षाण इत्यनया सर्पाया
निं प्रदाय येत उपनिष्टे ध्यमानं नयोक्तुं सर्वमंत्रतः ज्ञानतो ज्ञानतो वापि कृ
तः सर्पवधो मया पूर्वजन्मनि वा सर्वतत्सर्वं क्षंतुमर्हसि क्षीराज्येन ततः क्षामि
प्रोक्ष्या व्याहृतिभिर्जंलैः नास्थि संचयनं कुर्यान्नावाचस्य गृहं जेत ब्रह्मचर्या

दिकं कार्यं त्रिरात्राशौचमिष्यते संचैलंतचतुर्थे हि स्नात्वा विप्रान्समर्चयेत् संपो
 नंतस्तु पारोषः कथिलो नागावच कालिकः शंखपालश्रभश्चरश्चेति यदाभिः
 गंधपुष्पाक्षतीर्ध्र्यदीपाधैरर्चयेद्दिज्ञान धृतपायसभक्ष्यैश्च दिज्ञान द्यौतुभोजयेत्
 एवं धृतविधानेन सूर्यसंस्कारकर्मणि सूर्यहिंसा कृत्वा त्वसावसभक्ष्यैश्च दिज्ञान
 द्यौतुभोजयेत्पुनश्च तेनाजसंशय इति इति सूर्यसंस्कारः क्वचित् जीवतोऽप्यस्य
 कर्मणो चंदानि प्रेतकर्मणि कुर्युरेतदेव शान्त्युदकं सर्वेषु उपपातके स्थिति घटस्फो
 रोन्नरं ब्राह्मणिक प्रायश्चित्तेन मृतरावशुध्यं न तत्र संग्रहविधि अतस्तेन विना विप्रै
 र्त्तकर्म कुर्यादित्यर्थः उपपातके घटपि घटस्फोटे कृते एवं कार्यमित्यर्थः याज्ञवल्क्यः
 चरितव्रतश्रापाने निनयेन्न वेधं जुगुप्सेरन्न वाप्येनं संवसेयुश्च सर्वसः कृतघटस्फो
 टस्यैवायं परिग्रहविधिरिति मिताक्षरायामपरा क्वच अन्यथा प्रायश्चित्तमात्रेणान
 त्यसंगान् मन्त्ररयि घटमुक्ताः निवर्तेरस्तनस्तस्मात्संभावणसहासने इत्युक्ताः
 प्रायश्चित्तेन चरते पार्श्वकं भक्षणं न वे तेनेव सार्धं प्रास्येयुः स्नात्वा पुण्ये जलाशये उ
 त्तिनक्तुं प्रायुः अपरा क्वच सिद्धेयि पतितानां चरितव्रतानां प्रत्युद्धारोऽप्यु
 दाहरंति अग्रेभ्युद्गतां गच्छेत्तत्र निवहसन्निव पश्चात्पानपतां गच्छेत्काचन्नि
 वरुदन्निवेत्याचर्यमात्तपितुं हंतारस्तत्प्रसादादयगत्रपापान्छाने वा प्रत्याप्तिः
 परीहृदात्प्रज्ञानादाकांचनं पात्रं माहेयं चाद्भिः परायित्वा यो हिंसायाभिरेन

मद्विरभिधिं चेषुः सर्वेण वा निधिं कस्य प्रत्युद्धारः पुत्रजन्मना व्याख्यात इति
 प्रत्युद्धारः परिग्रहः तत्रोद्धारतां हसन्निवाग्रसरः स्यात् पातयतां घटस्फोटं कु
 र्वतां शोचन्निवययश्चाद्भुतं मातापित्रादिहन्तृणां परिग्रहो न कार्य एतत्प्रसा
 दे सति चीर्णं प्रतानां कार्यः पुत्रं निर्गारः पुत्रजन्मतेत्यभिधेकोत्तरं जातकर्मह
 यः संस्कारः पुत्राः पुत्रजन्मवत्कार्यं इत्यपरा कौ व्याचरव्यो अतएव मिति ज्ञाने प्ररोः
 घटे पवर्जिते ज्ञातिमध्यस्थो यवसंगो वा प्रद्व्यात्प्रथमंगोभिः सक्तनस्य हिस
 क्रियेत्यत्र गवाभक्षणभावे पुनर्नृतां चरेदित्येतत्प्रकृते एव चरित्रतविधौ विशेष
 योपमिति वदन् घटस्फोटोत्तरं परिग्रह एवेतन्न सर्वत्रेत्याह तस्मात्कृते पिघटस्फो
 टे प्रायश्चित्तं परिग्रहविधिपुनः संस्कारा भवेतीति सिद्धं तथा जीव क्वादेकते हेमा
 दौ बौधायनः तत्राशौचं दशाहं स्यादित्यलं प्रसंगेन एवं सायवादे आशौचं उक्ते प्र
 तिशाखं भिन्नं यन्त्यकर्मणि साधारणं किंचिदुच्यते तत्राधिकारणः प्रागुक्तः स
 र्वभावे धर्मपुत्रो वा कार्यः अपुत्रो एतत्तः कार्यं यादृक् तादृक् मयलतः पिंडोदक
 क्रिया हेतोरणि मम संकीर्त्तनाय चेति व्यासघटनात् गृहपरिसिद्धे असंगो असंगो वा
 यदि स्त्री यदि वा पुमान् प्रथमे हनि यो दद्यात्स दशाहे समापयेत् त्रासिपि प्रथमे हनि
 यो दद्यात्स ताया त्रै समाहितः अन्नं न वसुचान्येषु स एव प्रददाद्यपि केचित्तु तत्प्रणि
 दय्यादिति व्यावक्षते संगोत्रो वा संगोत्रो वा यो र्निदद्यात्स रेवनरः सोऽपि कुर्यात्

वप्राहं मुञ्चोत्तदशमे हनीति वचनाच्च तत्रैव दृष्टास्यानुस्यमासन्त्रमेधोन्मीलि
 तलोचनं भूमिस्थायितरं पुत्रोऽसिद्धिदानं प्रदाययेत् तद्विसिष्टं गयाप्राह्णं दस्यमे
 धशतादपि तानियया मोक्षदेहि दृष्टीकेशमोक्षदेहि जनाईन मोक्षधेनुप्रदा
 नेन मुकुंदः प्रीयतां ममेति मोक्षधेनुमंत्रः एहिकामुक्तिं किं यच्च सप्तजन्मार्जि
 तं त्रयं तत्सर्वं मुद्रमायातु गामेता ददतो ममेति त्रयं एधेनोः श्राजन्मोयार्जि
 नं पापं मनोवाकायकर्मभिः तत्सर्वं नासमायातु गोप्रदानेन केशवे तियायधेनोः
 भारते मुक्तयक्षो दिवाभूमौ गंगायां चोत्तरायणे धन्यास्तान् मरिच्यति इदं स्वज
 नाईने हेमाद्रौ वाराहे व्यतीयांतौ पसंक्रान्तास्तथैव गङ्गां रवेः पुराणकालास्तदास
 र्वं यदा मृत्युस्थितः व्यासः श्रासत्यमृत्युना देवागोः सवत्सरात् सर्ववत् तदभा
 वे यत्तु गौरे वनरकोत्तारणा यवे तदा यदि न शक्नोति दातुं वेतरां तु गं शक्नोत्यारु
 क्तदात्वा दद्यात् प्रयोक्तव्यं मदनरत्ने जाकरायः उक्तात्पादीनि दानानि दशदद्या
 न्न तस्य गोभूतिलहिरण्याज्यवासो धान्यगुडानि च नृप्यलवर्णमित्याहुर्दश
 दानान्यनुक्रमात् एतानि दशदानानि नराणां मृत्युजन्मनोः कुर्यादभ्युदयार्थं तु
 प्रेतैः पितृपरजैः ब्राह्मि ताम्रपात्रं तिलैः परं प्रस्यमात्रं हि जायतु सहिरण्यं च यो
 देयाच्छ्रावितानुसारयिः सर्वपापविमुक्तात्मा लभते गतिमुत्तमा उक्तातिवेतर
 एषा वा दशदानानि चैव हि प्रेतैः पितृभ्यां प्रेतं शाचधर्मेण दाहयेत् तत्रैव परिरिषि

हे मियमाण स्वकर्णे तु पुंमंत्रात् जपेन्नतः क्रियानिवंधे गारुडे त्वद्योदाना न्युक्ता नि
 तलसी सन्निधौ कृत्या शालग्रामशिलानया तिललोहं हिरां पंचकार्या संलवणात्
 या सप्रधान्यं क्षितिर्गोवा के कं पावनं स्मृतमिति दशदानं वैतरणी धेनु क्रीडां धेनु
 दानादिभट्टकृतान्त्योष्टियद्वतौ ज्ञेयं कर्तव्यं कर्माधिकारार्थं श्री कृष्ण कुर्यादिति
 तत्रैवोक्तं अजदेव याज्ञिकेन मुमुक्षुर्मधुपर्कदानमुक्तं चारोहं दृष्ट्वा स विह्वलश्चेन्नय
 ममार्गीतुं सारिणं प्रयाण काले तु नरो मंत्रेण विधिपूर्वकं मधुपर्कं चरनग
 र्यमं मंत्रमुदाहरेत् ओं गृहं चे म मयर्कं माघं रोसारं नानकरं त्वं मृतेन तुल्यं ना
 रायणेन रचितं भगवत्प्रयाणं दाहे च शान्तिकारणं सुरलोकं यज्यं अनेनैव तु मं
 त्रेण दद्याच्च मधुपर्कं न स्य मृत्यु काले तु परलोकं सुखावहं अथ दुर्मराणो दिवो
 दासीये चं जलादिमृते विप्रे त्वं न रिक्षमते पिवा कृधु चो दे स्तु मुदिस्तत्र प्रकीर्तितो देव
 जानीये जाबालिः अद्रेण दग्धा यो विप्रो न लभे का स्वर्गी गतिं प्रायश्चित्तं प्रकुर्वति
 ब्राह्मणः पापमुधये चाज्ञाय गायकं च प्राजापत्यं विशोधनं गृह्यकाया उदक्या
 स्तिका वापियदिप्रेतं स्मृत्यंति हि न स्येध विधिरादिद्योवा त्स्येनेव महात्मना एकः
 सक्तोक्तः मदनरत्ने स्मृत्यं नरे ऊर्ध्वोष्टि धारोष्टिरो भयो नथेव च अस्पृश्यस्य
 रीने चैव रवदादि मरणे पिय अज्ञानक्रयादरां स्पृशेत्कमिकीने हवे पिय एतदोवा न
 सारेण प्रायश्चित्तं समाचरेत् कथं स्त्रियः पंचदशी आं द्रात्रय मया पिया सुधौ तदा

नीसंयाधरावधर्मणदाहयेत गद्यकारिकायां खड्ग्यां मरुते चैवं जीसी कक्षास
 कल्पयेत सप्तान्यजेत्तु संस्पृष्टा मृतो देवात्कथं च न एकत्रिंशः ता कष्टे स्तुष्टु
 कामनीधिभिः कृण्वेत्तु धर्मदग्धे तु चिता स्युः कृत्यान्तयादिभिः ततस्परिनेद्वय
 तुत्रिभिः कष्टे र्हि मृष्टि कृत्यान्तयादिभिः कृत्यान्तयादिभिः धर्ममदीयेतु चंडालस्तति
 कोदक्या स्युः प्रेते तथैव च तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं कृष्ट्यान्तया च दशाक्षरे दित्यु
 क्तं मनः शुखगोपादुतिः सा स्याच्छुद्धसंपर्क इति ता उपजायि कृष्टुं यं अस्म
 र्यस्य र्हि ने चैवेत्युक्तेः तत्रैव कर्मप्रदीये राज्ञो वारात्रि शोबे वा म्रियेते चेद्विजा
 तयः दाहं कचापचा न्यायं द्वौ पिंडौ निर्वयेत्सुतः ॥ राजस्वलागर्भिन्यादि मृतौ
 तु वक्ष्यामः निर्धायामृतै मदन पारिजाते च यमः संध्यायां च तथा राज्ञो दाहः
 पाथेप कर्म च नवश्रद्धं च नो कुर्यात्कृतं निःफलं तत्र जेत एतदिन मृतस्य रात्रि
 निषेधा र्थाय तु स्कां देयदि राज्ञो दहेत स्य समाधिर्दहनस्य तु परे द्दनुदिते सूर्य
 कार्यस्योदक क्रिया दग्धस्य तु न वै कार्या राज्ञो जातु दक क्रियेति तन्निर्मलं रात्रि
 मृतस्य तु तत्रैव संग्रहे राज्ञो दग्धात् पिंडं तत्कृत्वा यवनवर्जितं पवनं ते ध्यते राज्ञो
 स्वस्तनी वपन क्रियेति वपनं तु पातः तच्च सर्वैः पुत्रैः कार्यं गंगायां भास्करक्षेत्रे माता
 पित्रोर्गुरुर्मृतौ आधाने सोमयागे च पवनं तु सप्तसप्ततमिति मिताक्षरायां स्मृतेः म
 राण्यस्थानं गीत्वा त्रैमिक्षिकमिदं तदेव संग्रहवचनेन परे धुरुत्कथ्यते तीर्थवत्

तेन कस्यचिदाहंगत्वा क्रिप्रित्या मदनरत्ने गालवः प्रथमे दमिकर्तव्यं यत्नं चान
नावितां प्रेतस्य के राशमस्वादिवाययित्वा यदाहयेत आशौचं तेने पुनः कार्यं विधिव
त्तात मदनपारिजातेष्वेवं तेन सर्वस्य निर्मलत्वात्किरेव स्मृतिरत्नावल्या रावेराज्य
यितं चेस्तीन कदा कदा दहेत्सुतः मदनरत्ने गिराः उर्ध्वं धिष्टा धरो धिष्टे धंत रित्त
मृतेष्विच कदात्रयं प्रकुर्वीत आशौचं मरणेपिच अथ साग्ने विशेषः कारिकायां
कस्मपक्षे प्रसीयेत यद्यपि प्रातराहुतीः शेषास्तज्जुयादशीययेताः पक्षो मवत्
प्रतिपत्त्या तर्ही मां तद्वर्धः यद्यह्निताग्निपरपक्षे म्रियेताहुतिभिरेनं सर्वपक्षे हरे
युदित्याश्रुत्वा यनोक्तेः तदानीमेव जुहुयात्सायं कालाहुतीरपि सायं म्रियेत्तयत्
सायमाहुतीर्जुहुयादथ तदानीमेव जुहुयात्प्रातः कालाहुतीरपि सकृद्गृहीतमत्रे
व भिन्नं तत्र च होमयोः दाशीचापि प्रकुर्वीत स्यात्तीपाकं न देवत्त धंदोगपरिशि
ष्टे हुतायां सायमाहुत्यां उर्वलश्रेणी भवेत् प्रातर्होमतं दग्धाय वीगिस्तदेवस्या
जीवेत्तेत्स पुनर्नवा इदं शुक्लपक्षयः उर्वला मसृष्टः त्रिकांशमंडनः दर्शयिचत
दा कुर्यादिष्टिर्द्यदि न संभवेत् देवतानां मधानानां मेकैकस्य हुतेत्यथ क पुनः न
वाक्याया जाभ्या चतुरात घृताहुती तथा अग्रावरण्यो राहूट प्रसीयेत यतिर्यदि
प्रेतं स्मृष्ट्या मथित्वाग्निं नत्वा चोपावरो ह्मं घृतं च द्वादशोपा तं तद्वर्धं दुत्वा श
वक्रिया विदिन श्रोताग्ने मृतोत्प्रेताधाने तत्रैवोक्तं प्रेतं च स्वाभ्यालयेति

त्वामयिताग्नानलेरग्निसंनिधायारण्यपंचेष्टस्येतिषड्जघाततः यस्याग्नयोऽज
 हृतो मांसकामाः संकल्पयन्ते यज्ञमानमांसं जायतु जेह विषेत्यादितापस्वर्गलो
 मिषं प्रेतं नयन्ति तमत्रः प्राणीयथावकं नृष्णीद्वादशोपात्रसर्थिषा तृष्णीद्वा
 ततः कुर्यात्प्रेते मात्या इति क्रियां नष्टे शुभ्रिश्चयारण्यो नाशो स्वामी स्तियेत चेत्
 आहरेदरणीद्वद्वमनो ज्योतिर्नैवाततः यज्ञपास्विः यज्ञमाने धिलानुरेयात्रन्या
 सेकृते सतिः वर्षाद्यदि हृते वद्वौ कथं कुर्वन्ति याज्ञिकः जदद्वद्वगधकायेन मथ
 नेतत्र कारयेत् तच्छेद्यालाभलोभेन दग्धशेषेण वा पुनः कृत्वा मंलोकि केव
 होदग्धशेषे दहेत्तु वा अत्राग्निषु सत्सपरिशारेः शरीरोत्पत्तिः शरीरेवासति प्रेताधा
 ने नागमुत्पत्तिः उमपाभावे तु प्रेताधावेन धिकाराद्वाहादिसंस्कारलोपः उदकादा
 नमेव कार्यमिति केशकीकारशतद्वयीप्रभृताः तत्र निषेवतघः रमशानां तास्तौ
 धावे मंजतः क्रियालोपगता ये चेति निषध्यन्नदभावेपलाशानां हतैः कार्यः पुमान्
 मृयीति भावे विध्यनस्य मृग्यभावेऽपि साम्याच्च तेन प्रेतादुत्पभावेपि स्थिष्टकृद्
 व्यातरोक्तेरद्वार्यत्वात्प्रेताधानं दाहोपि भवत्येव मृति कृते रग्नीनां चाप्रेताध्नन
 प्रयोक्तृत्वादातेः पत्न्या मृष्येवं दाहयित्वाग्निहोत्रेणास्त्रियं हतवती पतिरिति
 धातवस्कीर्तः यत्तु द्वितीयां चेव योभायां दहेद्वैतानि कारिभ्यः जीवंत्यां प्रथ
 मायां तु सुराणामसंस्मृतमिति तदाधाने स हानधिकृता विषयमिति विज्ञा

नेष्टरः मदनरत्नेप्रसेपि आदिताग्न्योस्त्वदंयत्योयस्त्वादौमियतेभुवि तस्यदेहः
सपिंडस्वदग्धव्यसिभिरग्निभिः यस्वाग्ने तस्यदेहस्तदग्धव्योलौकिकाग्निना ।
अनाहिताग्निदेहस्तदग्धाग्निनाद्विजेः त्रिकोऽनंदुनस्तुविकल्पमाह ॥ ज्येष्ठया
विष्टमातायाद्वितीययायैत्युयोधितेऽकांशं नित्याग्निहोत्रवानकथंचित्प्रयधति स्त्री
मात्रमचिरोवेत्यादग्धान्येवैदिकादिभिः विवाह्यादधतेयद्वाधानमेवास्तिचेह
धरिति अजैदंतत्वं साग्नेः यत्नीमृत्तौ द्वौ यक्षोऽनं विवाहेद्यायां पूर्वाग्निभिर्दे
हेदिन्येकः यक्षः भार्यायै पूर्वमारितेयेदत्वाग्नीनंत्यकर्मणि पुनर्दारक्रियां कुर्या
त्पुनराधानमेवचेतिमनुक्तेः दाहमपित्याग्निहोत्रेणस्त्रियं हतवन्ती चेतिरिति या
नवत्कोक्तेः पुनर्विवाहाशाक्तो निर्मयेन तादग्धा पूर्वाग्निष्टेवाग्निहोत्रेष्वा
दि कार्यमित्यन्यः आहर्त्याग्नीनादिताग्निपत्नीचेत्याश्रयायनोक्तेः भरद्वाजो
पि निर्मयेनयत्नीमिति पूर्वार्थेकैदेशेनदहेदिति यत्तयास्वदेवयातिक्रमदयः
यानिच तस्मादपत्नीकोव्यग्निहोत्रमाहरेदिति श्रुतिः विष्णुः घेदगापरिशिष्टं च
मृतायामपि भार्यायां धेदिकाग्निन हिन्यजौ न उपाधितापिनात्कर्मयावज्जीव
जीवं समचरेत् उपाधिहेमकुरापत्यादिः अन्येकशमधीयत्नीकृत्वा तृगृहमे
धिनः अग्निहोत्रमुपासंतेयावज्जीवमनुवता इत्यपराकं स्मृत्यंतरान् कान्या
यनोपि रामोपि कृत्वा सौवर्णीसीतां यत्नीय राखनी इति बहुविधैर्यज्ञैः सह

भ्रातृभिरभुतइत्यादीनिनानिपूर्वाग्निष्वग्निहोत्रादिपराग्निनत्वपत्नीक
 स्याधानार्थानि क्रतुविधीनामाधानाप्रयोजनकत्वात् अपत्नीकस्याधाना
 प्रवृत्तिरितिमानवरिशिष्याच्च सोमो न भवेत् अपत्नीकोऽप्यसोमपइतिश्रुतेः यत्
 भरद्वाजापस्तिसत्रं दारकर्मणिपृथक्शक्रात्माथमेव न्याधेयमिति अस्यार्थः
 पुनर्विवाहाशक्तौ यदग्न्याधेयं पूर्वैकतमस्ति तदात्माथमेव न पत्न्यैदद्यादिति
 ब्राह्मणभाष्यापरार्कशार्कशामांशरादितत्त्वमप्येवं त्रिकांशमंडनस्तपश्चद्वय
 माह अनेनपत्नीकस्याधानमाहुस्तदाशयं न विप्रः ब्रह्मयाज्ञवल्क्याः आहि
 ताग्निर्धयानां पदगध्वनिभिः अन्वहितानिरेकेनलौकिकेनापरोजानः क्रतुः
 एवं तनांसवर्णास्त्रिजानिः पूर्वमारिरिंणी दाहयेदग्निहोत्रेण यत्तपाज्ज
 धर्मवित्तव्यापरेकायां पत्नीमपि दहं देवं भर्तुः पूर्वमता यदि अनग्निर्को
 ददेव देवं कर्मालेन हविर्भुजा आरौचप्रकाशे क्रतुः विधुरं विधवाचेव कमलस्या
 ग्निना हते ब्रह्मचारिण्यपतिवैवदहेऽन्नपनाग्निना तुषाग्निना च दग्धमः क
 न्यका बाला एव च अग्निचार्णिकपालंतु कृत्वा तत्र विनिक्षिपेत् करीषादिततो
 वद्विर्जानेयः सकपालजः अनुपनीये यद्यपि जातारण्यग्निर्कोऽग्निदुक्तस्तथा
 धितस्य कलौ निषेद्धत्वात्तेरयमेव ज्ञेयः सत्यंतरे हस्यो ब्रह्मचारी च विधरो वि

धवाः स्त्रियः श्रौयासनश्रोत्रयनस्तुष्टाग्निश्रुकमालनः उत्तयनस्तु दर्भेणा
 ग्निनुपुज्वाल्पपुनर्दभस्तु संयुतः पुनर्दभेत्तृतीयो ग्निरेव उत्तयनः स्मृतः यमः
 यस्यानपतिस्तुष्टो ग्निर्गणकाष्टहंवी धिवप्रेतत्वेव सदानस्य सवाधर्मेण स्त्रिय
 ते देवलः चंडालाग्निरमेध्याग्निः स्तुतिकाग्निश्च कर्हिचित् पतिताग्निश्चिता
 ग्निश्च न शिष्टग्नो विनाः मनुः दाक्षिणेन मृतं श्रद्धं पुरद्वारेण निहरेत् पश्चिमो
 न्नरपूर्वोस्तु यथा संख्यं द्विजातयः मंत्रप्राप्तिलोभ्येन क्रमः पश्चात्पुनरुत्तरे
 तव्यो ब्राह्मणो वांधवैर्गृहात् उत्तराभिमुखो राजा वैश्यः पश्चात्पुनरुत्तरे
 क्षात्राभिमुखः शूद्रो निहन्तव्यः स्ववांधवैरित्यादि पुराणादित्यपराकः तेन
 त्रिंशद्वाक्पुनो नुलोमक्रमो हेयः आशालायनः ज्येष्ठप्रथमाः कृतिष्ठजय
 न्यागर्ह्ययुः श्रुयाधुनोत्तरं द्वितीयविवाहे कते यजमानमरणे श्रोतस्मा
 त्ताग्योः संसर्गः वौधायनस्तुत्रे अथ यद्यादिताग्निर्दभार्ये विदेत प्राक्
 संयोगाग्निरेतौ पासनं परिस्तीर्या ज्यविलाप्य चतुर्गृहीतं गृहीत्वा सधिद्वा
 त्मग्नौ जुहोति समितं संकत्वे घया मिति मिह्रादुतीर्त्या हृतीश्रुत्वा येन म
 ग्निमयं ते योनिं क्षीत्वि य इति समिधिसमारोप्य गार्हपत्ये समिमभ्यादध्मनिभ
 वतं नः समनसा विनिष्कृत्वा गार्हपत्यं आज्यविलाप्य चतुर्गृहीतं गार्हपत्ये जु

होग्ना वग्निप्ररतिप्रविचिष्ट इत्यपरंचतुर्गित्वा विनिः सुगितिसग्वहंनुहो
 त्यथगाह्येयसुवाहुतीर्जुहोति ब्राह्मणमकहोतेति दशभिरथ प्राचीनावी
 त्यन्वाहार्थेयपनेजुहोति घेसमानाये समानाये सजाता इति द्वाभ्यामथत
 त्रैवसुवाहुतिंजुहोति ग्रयेकव्यवाहनायस्विष्टकृतेस्वधानमः स्वाहेत्यथय
 जोयवीता द्वादशगृहीतेनसुवंपूरयित्वास्तुतेनाहवनीयेजुहोत्यथसुवाहुती
 र्जुहोत्यग्रयेविचयेस्वाहाग्रयेव्रतयतयेयवमानायाग्रयेपावकायाग्रयेस्वा
 हाग्रयेपयिस्तुतेस्वाहाग्रयेपयिस्तुतेस्वाहाग्नपतेनमतेग्रयेचैश्वराभरायेत्यथव
 त्तुर्गृहीतानां तिमनो ज्योतिरित्यतजुर्ध्वं पैत्रकंकर्मप्रतिपद्यते आहितानो विदे
 रास्तैपयिस्तुतीर्द्धिर्नानि दोत्रंनदाह पात्रयोजनंच कल्पस्तत्रादिभ्योऽघ्न
 त्तिनामहस्तयद्वतेस्त्रेयमिति वदुवक्तव्येषु परम्यते आत्रेयिक्तमदनरत्ने धं
 दोगपरिष्टेच दुर्वलं स्नापयित्वा तमुद्धतेलाभिसंघतं दक्षिणाशिरसं नमोवर्दि
 आत्मानि विरायेत हिरण्यशकल्यान्यस्य क्षिप्रार्धे देवसप्तसु मुरंभे च यापि धा
 येनं निर्देरे युस्तुतादयः ग्रामपात्रेन मादाय प्रेमतिन पुरस्सरं एकोनगधे तस्या
 र्धमर्धमप्युत्सृजेद्वि ऊर्ध्वसादहनं कार्यमासीनो दक्षिणासुखः सव्यं जान्वा
 च्यरातकैः सतिलं पिंडानवतु मुच्यपुत्रादिराकुर्यादाह चयं महत् तत्रोत्तानं
 निपात्येन दक्षिणाशिरसं मुरंभे अज्यपाणीस्तु वदद्यात् दक्षिणाशिरानसिस्त्रं

पादयोरधरां प्राचीमरणीमुरसीतरा पार्श्वयोः सूर्यवमसौम्यदक्षिणयोः क्रमा
त ससमेतस्य तेजसं तस्यैव रूपां रूपां रूपां चात्रोक्तीलीकमत्रैव अनन्यं रूपां वि
धिः अपसवेन कृत्वा तद्गमयतः पितृदिग्मुखः अधोऽग्निं सव्यमात्रकोदध्यादक्षि
णतः शनैः अस्मात्त्वमधिजातो सित्त्वदये जायतां पुनः असौ स्वर्गाय लोकाय स्वा
हेति परिकीर्तयत् तया एव मेवाहिताग्नेः अयात्र न्यासादिकं भवेत् कृत्वा हि
नादिकं चात्र विरोधो धुर्युचोदितः तत्रैव अनन्ये वा ह्यताना रीदधमवस्थिता
अग्निप्रदानमंत्रोऽस्यानप्रयोज्य इति स्थितिः इदं हं दोगानामेवायात्र न्यासोक्तं
रुद्रानदेहत्वं साग्निपरं निरमिक्तं शुभानधोऽमुखः स्त्रीरुर्त्तनादात्या सगा
त्रजे गृहीत्वा तु चितामारोप्योते शवः अधोऽमुखो दक्षिणादिक् चरणस्तु पु
त्राग्निं उज्जानदेहानारीतु सपिंडेरयिवंधु निरित्यादिपुराणादिभिः अर्द्धितत्वे
रुद्रतादयः उत्तरशिरां च सामगोतरपरं वाराहे च अर्द्धितत्वे सामं त्रः कृत्वा तु दुःक
तकर्म जानता वाप्यजानता मृत्युकात्तवशं प्राप्य नरं च त्वमागतं धर्मसमायु
क्तं लोभमोहसमाहृतं दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् सगच्छन् ज्वलमानं
महावह्निं शिरःस्थाने प्रदापयेत् चतुर्वर्णीषु संस्थानमेवं भवति पुत्रिके अजात्रि
या निवंधे गच्छेत् षड्पिंडदानमुक्तं मृतस्योक्तं तिसमये षड्पिंडान् रात्रिर्तेद
देत् मृतस्थाने तथा द्वारे च त्वरेन तादृश्यं कारणात् विष्मन्तो काष्ठचयने

तथा संचयने च षट् आदौ देयास्तु षट् पिंडादृशद्विकाः स्थाने वा र्द्धययेत्तीते चित्रा
 यां शचस्तुके रमशानवासिभूतेभ्यः षट्संचयने तथा ततः त्वं भूतस्तु जगद्यो
 ने त्वं लोकपरियालकः उक्तः संसारकस्तस्मादेनं स्वर्गं मृतं नय इत्यग्निदंत्वा अस्मा
 त्वमिति मंत्रेणाह उधे आ ज्योतिरुक्ता आ हेताग्नौ पराशरः शम्या शिश्रे विनिर्दि
 यत्पराणी मुक्ते योरपि जुहुवा दक्षिणे हस्ते वामे स्तप मृतं न्यसेत् एवेन लखलंदद्या
 त्वद्वे च मृशालं न्यसे उरसि क्षिप्य हृदयं नंदुला ज्यति लान् मुरवे आत्रे च प्रोक्षणी दद्याद्वा
 ज्यस्थाली वचसुषोः कर्णेनेत्रे मुरवे प्राणे हिरण्यशकलं न्यसेत् अग्नि होत्रोपक
 रणमशेषं तत्र भिक्षयेत् प्रचेताः स्नानं प्रेतस्य पुत्राद्यैर्वस्त्राद्यैः यजनं ततः नग्न देहं द
 हेनैव किंचिदप्येत्यजेत् यमः प्रेतं देहं भुजैर्गंधैः स्त्रापितं स्रगविभूषितं आश्र
 लायनसूत्रं संस्थिते प्रेतालं कान्कुर्वेति के शशमश्रुलोमनरवाभिवाययेति
 नलदेना नुलिपेति नलहमासां प्रतिमुचंतीति माधवीये ब्राह्मे दरिद्रोपिनदाधमो
 नग्नः कस्यां चिदा यदि तथानिः शेषस्तु न दृग्व्यः शेषं किंचिदप्यजेन्नरः दाहका
 लाग्निना शोभमदनरत्ने यज्ञपाशैः यजमाने मृतं कापि चित्तादौ वा प्रवेशिते वा
 र्क्यमिह ते गौतम कथं प्रेतविकल्पना शिष्यं दग्धाप्रदग्धेषु निर्मये वतुकारये
 मयपरिणारादिदक्षिणाग्निना शोयन्नात्र देहलोभे मदनरत्ने ब्राह्मे अथ परीनरे

दग्धर्काद्यानितानिर्मयानंदहेतु यद्यर्धदग्धकाद्यंतु तदीयं वै न लभ्येत तदा तद
स्थिरवदंतु निक्षेपप्रवृत्तिमहाजले इति दंयत्प्योरेकदामतौ विरोधमहायसंवः तथे
वपुते सहैव पितृमेधो दचचनलिगान्मंत्रान्संराधयंति पितृमेधो दाहंतकर्म दाहं
तमेकतंत्रत्वमिति बोधायनोक्तेः अस्थिसंचयनमध्ये के उहकपिंडदानादियथगेव
सहगमनेष्वेवं तदाहमदनरत्ने भीष्मार्यसंग्रहकारः एककालमृतौ भर्त्राचयदिचे
रहयोः तत्रेण दहनं कुर्यात्पिंडं प्रादं पृथक् २ एककालमृतौ जायायती यदि तदा
पितुः विभज्यामिं क्रियां कुर्यादिति यत्र दसो प्रजं दाहंतमेकतंत्रत्वमिति याति क
संमते मृत्येयमि मनुब्रज्ययानारीज्वलनंगता अस्थिसंचयनांतो स्या भर्तुः संस्कर्
रएव हि कीकसानांतु संस्कारायाय सिद्धोपिनो मतः एककालमृत्येयं कीकसा
नां विधिः स्मृतः नवप्रादं सपिंडांतं भिन्नं कालमृतौ यथा कयादि कारिकायि मृत्ये
नैरितदाहात्प्राकपत्नीम्रियते यदि यत्मा वा प्राक् प्रसीताया दाहादवापति मृतः त
त्र तत्रेण दाहः स्यान्मंत्रे बुद्धित्वमद्यते कीकसानांतु संस्कारा यथगेवनयोर्भवेत् ए
काहमृत्यो युगयन्नवप्रादादिकं तयोः मृत्येयमि मनुब्रज्ययती चेदनलंगता तत्रापि दा
हस्तत्रेण प्रथमस्थि क्रिया भवेत् अस्थिसंचयनपृथक् केविकल्पः सहगमने सर्वत्रया
केवमाह प्रचेताः एकचित्त्वा समाहृतौ म्रियते दंयतीयति तत्रेण प्रयत्नां कुर्यात्पृथ
कपिंडं समाचरेत् अथोदकदानं विरोधः शरीरमग्नौ संयोज्यो न वैश्यमाणम्

योभ्यवसंति सव्योत्रराभ्यां पाणिभ्यामुदकक्रियां कुर्वन्त्ययुग्मं आपस्तवः मातृश्र
 योनि संवदेभ्यः पितृश्रासप्रमातृषु वा तयावतां वा संवधो ज्ञायते तेषां प्रेतेश्वर
 कश्चिदेति याज्ञवल्क्यः सप्तमादशमाहायिज्ञानयोभ्युपयंत्ययः अपनः शोशुर
 वदधमनेन पितृविष्णुरवाः सक्तप्रसिंचेत्पुदकं नाम गोत्रेण वाग्यतः सप्तमादश
 माहायिवसादातदंतमिति विज्ञानेश्वरः कातीयास्त सप्तमादशमाहायुरुवादि
 त्पादुः सप्तमापुरुषादशमाहादसमानग्रामवासे यावत्संवंधमवस्मरेयुरिति
 पारकरोक्तेः मंत्रः स्नानांगमेवेति हेमाद्रिः प्रचेताः प्रेतस्य वाधवायथा ह्यदमुद
 कं मवतीर्य तोह्वययपुरुदकंते प्राप्तिवेपुरयसमयतोपवीतवाससो दाक्षिणामु
 रवा ब्राह्मणस्योदह-मुरवाश्वराज्यवैश्ययोः सप्तवनदीकूलंतनो गत्वेत्युक्त्वास
 वेलस्ततः स्नात्वाशुचिः प्रयतमानसं यावा एततः श्रादाय विप्रे दद्यादशं जलीन
 डादशं क्षत्रिये दद्यादैर्यपंचदशं स्मृताः त्रिशं द्रायदातव्यास्ततः संप्रविहृतं त
 तः स्नानं पुनः कार्यं गृहशौचं च कारयेत् प्रेतस्नाने विशेषः शुद्धित्वे आदिपुराणे
 आदौ वसुचप्रक्षाल्यते नैवाद्यादिनैस्ततः कर्तव्यं सचैलं तस्नानं सर्वमलापहं सर्वये
 रहितं वसुचप्रक्षाल्य पुनपरिधाय स्नानादित्यर्थः अपनरतिवामहस्तानामिकया
 जलालोडनः श्रवतरणे ह्यदपुरः सरत्वाक्तेर्यथार्चलंपुरस्कृत्येति बोधायनीयं ज
 ल्याडस्यानपरमिति स्मरलतादयः आश्रलायनः सव्याहृतो ब्रजं त्यनीक्षमाण

यत्रोदकमवहति तत्प्राप्य सक्तदम्भजेकाजलीनस्तज्य तस्य गोत्रं नाम गृही-
त्वेति प्रचेतसान्वहप्रंजलित्रयमप्युक्तं त्रिः प्रसेकं कुर्युः प्रेतस्तप्यविति तथा
दिनेदिने जलीन्यस्मात्प्रदद्यात्तेतकारणान् तावद्विष्णुकर्मव्याप्यवत्पिंडः
समाप्यते एकहस्तिस्त्रिकहस्तिर्वेत्यर्थः मदनरत्नेभारद्वाजगृहीतद्विकसकि-
रप्युक्ता आशौचांतं प्रदद्यात्तु प्रेतपुत्रस्तिलांजलीनं प्रथमं ह्रिसक्तदद्यात् पिंड-
पताहतादिव्यां ग्रीष्मदद्याद्वितीये क्रित्तीये पंच एव च चतुर्थे सप्त संख्यास्त-
पंचमेनवचोत्सजेत षष्ठे द्विचैकादशकाः सप्तमे तु त्रयोदशाः षष्ठ्यमे पंचदश-
कानवमे दशसप्त च एकोनविंशति चामे शतांजलिमतं स्मृतं केचिद्दशांजली-
न्योचुः केचिदाहुः शतांजलीनं पंचाशतं च न्येस्वशारे वा क्तव्यवस्थया छंदोगप-
रिसिद्धेः अथ न वेक्षमेत्यायः सर्वे चैव शावस्पराः गोत्रनामपदाने तु तर्पया-
मीत्यनेतरं दक्षिणाग्रान्कुशान्कृत्वा सतिलंतप्यकप्यक विष्णुपुराणे
सपिंडीकरणं पाहज्जदमेत्येत्यक्रिया सपिंडीकरणं इधं द्विगुणोर्विधिवद्भवेत् ।
रामायणे इदं पुरुषशार्दूलविमलं दिव्यमक्षयं पितृलोकेषु यानीयं मदत्तमुप-
तिष्ठतं दानवाकेयविकल्पः याज्ञवल्क्यः कर्मोदकं सखिवेप्रतास्यस्त्रीयश्च
रत्विजां कामश्छा प्रेतत्प्रीक्षायां देयमन्यथानेत्यर्थः शंखपारस्करौ आचा-
र्ये चैव मातामहयोश्च स्त्रीणां वा प्रजाचां कुर्यात्स्नाश्रुतेषां मिति द्विवचना

लतामयाश्रयि शंखलिरिवितो उदकक्रियाकामंश्चरमानुलयोः शिष्यसहाधा
 यिनराजनिचेति तद्धमनः क्लीवाधानोदकंकुर्धुः सेनाब्राह्म्याविधर्मिणः गर्भभ
 र्त्तुइहश्चैवसुराय्यश्चैवयोधिनः पातवत्क्यः नव्रह्मचारिणः कुर्धुरुदकं पतिता
 स्तयाषडशीतो स्त्रीपावारादधिभूषाः पतितायेचद्विहिताः नकुर्धुरुदकं ते वै तेभ्योऽप्य
 नेनचैवहि मदनरत्नहारीतः पततामयविद्वानीवरनीचकामतः प्रज्ञानांचैवक
 ल ६ न्यानांनिवर्त्तासलिक्रिया अपराकेशंखलिरिवितो अपपात्रितस्यरिक्थपिंडो
 दकानिव्यावर्त्तने अयथात्रितः कृतघटस्योदः तस्यापिसंग्रहावधौकृतने आरौचोद
 कादिकुर्यादेवेत्याशौचप्रकाराः अथाशौचेनियमाः पातवत्क्यः इतिसंस्कृत्यगो
 युगहंवालपुरः सराः विदश्यनिं वयत्राणिनियताहारिवेश्मनः प्राचम्याग्यादिस
 लिलंगोमयंगौरसर्षपान प्रविशेयुः समालभ्य कृत्यारमनियदंशनैः प्रवेशनादिकं
 कर्मप्रेतसंस्पर्शनामपि क्रीतलक्षारानाभूमौस्वयेयुस्तोययकृदितो इदंचाद्येहि वशि
 ष्ठः अथप्रस्तरेऽहमनश्चैव आसीरन् क्रीतौत्पन्नेनवावर्त्तेरन् मुदितत्वेवैजवायः श
 मीमालभंते शमीपापंशमयत्विति अरमानमश्मेवस्थिरोभयासमिति अग्निमग्नि
 र्जः शर्मयद्ध विनिज्योगित्यंतगामजमुपस्य शंतः क्रीत्वा लध्वावाग्यगोहादेकाम
 मलवणमेकरात्रंदिवाभुंजीरन्स्त्रिरात्रंचकर्मपरमाणं क्रीताघशनमुपवासाशक्त
 स्य आश्वलायनस्तनैतस्याराज्यामनंयंचैरंस्त्रिरात्रमक्षारालवणाशिनः स्मृष्टी
 दशरात्रंवैत्याह अशक्तौ रत्नाकरे आयस्तं वः भार्यापरमगुरुसंस्थायांचाकालभोज

नानिकर्षीरन् यदा मृतिपरदिने तावत्कालमित्यर्थः सहस्यतिः अधः शय्याशना
दीनामलिनाभोगवर्जिताः अक्षारलवणान्नासुलध्वकीताशनास्तथा भोगाभ्य
गतां कलादिः क्षाराः परिभाषाया मुक्ताः यत्तु मार्कंडेयपुराणे तैलाभ्यगोवांधवा
नामंगसंवाहनंचयत् तेन चाप्यायते जंतुर्धृष्टाश्रुतिस्त्वबंधवाः प्रथमेऽह्नि तृतीये च
सप्तमे नवमे तथा वसुत्या गंधर्हिः स्नानं कृत्वा दद्यात्तिलोदकमिति तदस्य दिनपरं
आशौचांते तिलकल्केः स्नाता गृहं प्रविशेयुरिति विष्णुक्तेः विष्णुपुराणे त्वस्थिसंच
योर्ध्वं भोगो यमुक् शय्यासनोपभोगस्तस्य पिंडानामपीष्यते अस्थिसंचयनाहूर्ध्वं सं
योगस्तनयो धितां भारते तिलान् ददतया तीर्थं दीपं दत्तवाग्ज तातिभिः सह भोक्त
व्यमेतत्तेषु दुर्लभं मनुः प्रातः शनंचना श्रीयुः शयीरं श्रुय कक्षितौ देवजानीये
कारिकायां लवणक्षीरमाषान्नास्यमांसा नियायसं वर्जयेदाहजाने शुवालहर
दातुरैर्विना उयवा सो गुरोप्रेते पत्या पुत्रस्य वा भवेत् मरीचि प्रथमेऽह्नि तृतीये च
सप्तमे दशमे तथा तातिभिः सह भोक्त व्यमेतत्तेषु दुर्लभं भोजनंच दिवैव दिवा चैव
त भोक्त व्यमांसं मनुजर्षभेति विष्णुपुराणात् कीत्वा वालध्वादिवा त्रमश्रीयुर
तिपारस्कारोक्तेः अ मदनरत्ने दारोतः पाणिमु मयेषु पर्युटकेषु वा श्रीरन् देव
जानीये ब्राह्मे आशौचमध्ये यत्तिन भोजयेच्च स्वगोत्रजान् अंत्यदिनं तु मदनरत्ने ब्रा
ह्मे यस्य यस्य ठवर्गस्य यद्यत्स्यात्पश्चिमं त्वहः सतत्र गृहं शुद्धिं च वसुशुद्धिं करोत्यपि
अंत्यकर्मकालीन वसु योस्तु तत्रैवोक्तं ग्रामाह हिस्ततो गत्वा प्रेतस्थये तु वाससी

359A

अस्यानामाप्रितानां च त्यक्त्वास्नानं करोत्यथेति शंखः दानं प्रतिग्रहो होमः स्नाध्या
यः पितृकर्म पुनर्पिंडक्रिया वर्जमाशौचे विनिवर्तते काठकगृहे यत्र प्रणोक्तं
मास्तत्रान्वहं महावलिकुर्यादिति पारस्करः तदानीमेव वस्त्रं मेण्डलं दीपं कोस्य
भाजनं प्रेताय दद्यात् आशौचप्रकाशे भरद्वाजः वासो न च जलं भद्रदीपं कोस्य
भाजनं नानप्रस्थादने प्राद्वे ब्राह्मणाय निवेदयेत् भृगुः तिलोदकं तथा पिंडा
नग्नप्रस्थादनादिकं राज्ञो न कुर्यात्तंध्यायां यदिकुर्यान्निरर्थकं अथ पुनर्पिंडाः य
द्यपि हेमाद्रौ पारस्करेण प्रासंगे दशपिंडास्तत्क्रियेद्वा दशसूताः वैश्ये पंचदश
प्रोक्ताः शूद्रे त्रिंशत्पुकीर्तिना इत्युक्तं तथापि प्रेतेभ्यः सर्ववर्णभ्यः पिंडदानं दद्या
दशौ च त्रिंशत्पुकीर्तिना इत्युक्तं सर्वेषां दशौ वस्त्रेयाः मदनरत्ने व्येवं तथा च हेमाद्रौ ब्राह्म
णाय योः जात्युक्ता शौचतुल्यास्तु वर्णानां क्वचिदेव हि देशधर्मात् पुरस्कृत्य प्रेते
पिंडान्वयं त्ययोत्युक्ता विप्रान्येषु दशमपिंडे कर्म उक्तः देयस्तु दशमः पिंडो राज्ञां वैद्वा
दशहनि वैश्यानां वै पंचदशो देयस्तु दशमस्तथा शूद्रस्य दशमः पिंडो मासे पर्येति
दीयते इति युद्धमनादेः सद्यः शौचे अहोचते नैवोक्तं सद्यः शौचे प्रदानव्याः सर्वे
पियुगपतथा माहाशौचे प्रदानव्यः प्रथमे श्लोकावहि द्वितीये हनि चत्वारस्तृती
ये पंचचैव हि अहं प्रकाशं तरंगगुक्तं शान्तातपः आशौचस्य च द्वासे पिंडा दद्यात्
दशौ च तत्रैकपात्रे सक्त्युक्ता दशपिंडा दद्यात् उत्तरीया शिलायत्र कर्तव्यं चि

नि. ति.

३६

360

पर्ययोः परं वेदं जलं नदीं दद्यात्सर्वं पिबंस्तथैव चेति गृह्यकारिकायां यथा ।
जघियर्षये दोषोक्तैः शिलाविषये घटस्फोटो देनोत्ततिः अक्षाभ्यं जनादिप
दकर्मणः एकहायनीनयनवदप्रयोजकत्वात् तद्वच्चित्रलौकिकग्रहणं के
चिद्भुनावान्यादायभांशानि आरुके च तथेति प्रचेति सोक्तैः पात्रानेकत्वाभावेः
क्रियाकर्तृनाशेऽन्येन शेषः समापनीयः एकक्रियाप्रवृत्त्यनोपदिक्तांश्चिद्विप्र
द्यते तद्वद्भुनाक्रियाकार्यासर्वैर्वासहकारिभिरिति श्रुतिर्न चैव हस्यति स्मृतेः
पत्न्या कर्तृत्वे रजोदरीने च तदंते कुर्यात् शावाद्दिगुणमार्तवमित्युक्तैः आशौ
चांते आर्तवैकं रजोदरीनां स्थेवा अन्येन क्रियासर्वावर्तनीया कर्तृविपर्ययात्का
लानि क्रमयोगाच्च वारादे स्थांलेपेन भागं तु दद्यात्सर्वं ह्येव तु कर्तृत्वं पिंडं सं
कल्पनामगोत्रेण सुंदरि मरीचिः प्रेतपिंडो वा हिर्दद्यादर्भमंत्रविवर्जितं प्रागुदी
च्यां चरु कृत्वा स्नानः पुनस्तमानसः दर्भवर्जनमनुपनीत परः प्रासंस्कृतानां भस्मा
पिंडं दद्यात्संस्कृतानां कुरोश्चिति प्रचेतसोक्तैः मिताक्षरायां स्मृत्यंतरे भूमौ मास्यं
पिंडं पानीयं मुपलेवा दद्युः शुभः पुष्टः फलमूलैश्च यथाशाकैश्च चण्डिर्नैवति
लमिंशुर्न दर्भेषु पिंडं दक्षिणतो हरेत् तूर्ध्वा प्रसेकं पुष्ट्यं च धूपं दीपं तथैव च शा
लिनाशक्तिभिर्वा पिशाकैर्वा यथानिर्वयेत् प्रथमे ह्यनियतं देवस्याहं राहं
कं मदनरत्ने मास्यं तैजसं मृन्मयं वा यथात्र संशोध्य यत्नतः लौकिकारणावधि

राम
३६०

360A

श्रित्यपचेदत्र घृतयज्ञे स्नात्वा यत्तिलसंमिश्रं यदद्याद् भस्मस्तरे शुद्धितत्त्वे देवजा
नीये च त्राह्ये प्रथमे हनियो दद्यात् त्रेतयां समाहिता अन्नं नवसुचात्रैश्च स एव प्रया
त्यपि मन्मथं भांडमादाय नवं स्नातः सुसंयतः तंडुलप्रसृतिं तत्र त्रिः प्रक्षाल्य पचेत्स्व
ये सपवित्रैस्तिलैर्मिश्रं कृमिकैश्च विवर्जितं द्वारे पाते ततः क्षिप्वा शुद्धावागोरमृति
कां भयच्छेत्तस्तरेर्द्धान् याम्याग्रान् देवांसं स्नात ततो वने जने दद्यात् सांस्मरन्
नो जामामनी तिलपरिमेधुक्षीरौ संशिकृतं तत्र मे वहि दद्यात् येनाय पिंगुं तु दक्षिणे
मिसुरवः स्थितः अर्घ्यं पुष्पैस्तथा धूपैर्दीपैस्तथैश्च शीतलैः ऊर्णां तनुमयेः शुद्धैः वा
सोभिः पिंगुं मर्चयेत् दिवसे दिवसे देयः पिंगुं एवं क्रमेण तु सद्यः शौचे प्रदातव्याः स
र्वपिपुगपत्रथा अक्षरौ चेपि दातव्यास्त्रयः पिंगुं समाहितैः द्वितीये च तुर्ये रो दद्याद्
स्विसं चयने तथा जीर्णं दद्यात् तृतीये द्विवस्त्रादि क्षालयेत्ततः दशाहं पिचदातव्यः
पुष्पमेवं क एव हि एकस्तोत्रं जलस्त्रवं पात्रमेकं च दीयते द्वितीये द्वौ तृतीये त्री
निसाधुक्ता एवं स्युः पंचपंचाशतो यस्यां जलयः क्रमात् तोयपात्राणि तावन्ति सं
युक्तानि तिलादिभिर्दिति पात्रं कुंभः अत्राहः यदमहोरात्रपरं तेन रात्राय पिदेय इ
ति गोडाः दिवसपदादौ नेति मेधिलाः स एवेत्युक्तेः सपिंगुं न दशपिंगुं प्रजांते पुत्रा
गमेपि स न दद्यात् असंगोत्रः संगोत्रो वेति प्रागुक्तेः दाहकर्त्तव्यं दशाहं कुर्यादिति
मिताभरायां शुद्धितत्त्वे वायवीयोपि असंगोत्रः संगोत्रो वा यदि स्त्री यदि वा पुमान्

नि.सि.
३६१

361

यश्चाग्निदाताप्रेतस्यपिंडं दद्यात्स एव हीति तत्रैव परकेण तपिंडेन देहो निष्पद्यते ।
यतः कृतस्य करणयोगान्मुनर्नवर्तयेत्क्रियां शुद्धिपुकारोवायवीयेपि निरवर्तये
त्रियोमोहाक्रियामन्यनिवर्तिनां विधिघ्रातेन भवति पितृरुचापजायते तस्मात्
प्रेतक्रियां येन केनापि च कृता यदि न तानिर्वर्तयेत्प्रातः सतां धर्ममनुस्मरन्निति ।
आदिपुण्ये पितृशब्दं स्य धां चैव न पुण्यं जीतकर्हिचित् अनुशब्दं तथाचाह प्रयत्ने
न विवर्तयेत् उपनिषत्तामयं पिंडः प्रेतायेन समुच्चरेत् क्रियानिवंधे व्यासः प्रेताय
पिंडं दत्त्वा ततो श्रीयादिना त्वये भविष्ये उदनामिषसक्तानां शाकमूलाफलादिषु
पुण्यमेहनियदद्यात्तदद्यादुत्तरेहनि गृहद्वारे समशाने वा तीर्थे देवगृहे पितृयात्रायेदी
यते पिंडस्तत्र सर्वं समाधयेत् ब्राह्मे शिवत्वाद्येन पिंडेन प्रेतस्य क्रियते सदा द्वितीः
येन तु कर्णास्त्रिनासिकाश्रसमा सतः गलांशभुजवक्षोसितृतीयेन यथाक्रमं चतु
र्थेन तु पिंडेन नाभिलिंगमुदानि च जन्तुजं घेतया पादौ पंचमेन तु सर्वदा सर्वमर्मा
णि बध्नेन सप्तमेन तु नाड्यः दंतलोमान्यष्टमेन वीर्यं नवमेन च दशमेन तु
सूरीत्वं तृप्तिना क्षुद्धिपदं य इति पात्रवल्केन तु पिंडं यत्तावता देयं प्रेतायात्रं दि
नत्रयमित्युक्तं अत्र फलतारतम्यं हेयमिति विज्ञाने श्वरः तेन अक्षरौ च परात्वं देव
यातृकोक्तं चित्तं आरौचस्य च द्वासेतु पिंडान् दद्याद्दशैव त्विति वचनाच्च दिनत्रया
वश्यकत्वा र्थमिति सास्त्रतादयः शान्ततपः जलमेकाहमेकाशे स्थाप्यं क्षीरं
च मन्मथोपायस्करं मन्मथेतां रात्रिं क्षीरोदके विहाय सिनिदात्रुः प्रेतात्रास्त्राही

राम
३६१

तदकं पिवचेदमिति क्षीरं इदं राजा वेवेति गोडाः गारुडे तु अयं के मन्मथे पात्रे
 इत्थं दद्यादिनत्रयमित्युक्तं हेमाद्रौ यस्मै तु दशाहमुक्तं तस्मान्निधेयमाकाशे द
 शारात्रं योज्यं सर्वतापो यथा त्वर्थं मध्वं मध्विनाशनं देवजाना ये करि
 कायां तत्र प्रेतो यस्तत्र ये दशारात्रमखंडितकुर्वात्सु दीयन्ते तेन वारिपात्रं च मा
 निंकां भोज्याद्रौ जनकालेन भक्तमुष्टिं च निर्वयेत् नाम गोत्रेण संबुध्या धरिण्या
 पितृयज्ञवत् शातानयः भूलोकात् प्रेतलोके तु गंतुं श्राद्धं समाचरेत् तत्पाथे यदि
 भवति मृतस्य मनुजसु अथ दशाहमध्ये दर्शपाते निर्णीयः भविष्ये पुत्रतारो
 चतंत्रस्तथा यदि दर्शप्रपद्यते समाप्य चोदकं पिंडान् स्नानमात्रं समाचरेत् अथ
 श्रृंगः श्रावणं च मंतरादर्शाय दिस्यात् सर्ववर्णिनां समाप्तिं प्रेतत्रयस्य कुर्यादित्याह
 गोतमः येहीनसिः आदावेव प्रकृते व्याप्रेतपिंडोदकक्रिया द्विरैव चेत्तु कुर्यात्
 पुनरावसमश्नते मातापित्रोस्तु लोकगोतमः अंतर्दशाहदर्शं च तत्र सर्वं समाप
 येत् पित्रोस्तु यावदाशौचं दद्यात् पिंडं जलं जलीन इदमपि मध्यमध्ये दर्शपाते न हर्ष
 दर्शं तु पित्रोरपि तंत्रं समाप्य मेवा पित्रोराशौचमध्ये यदि दर्शः समाप्यते न तावदे
 वात्र तंत्रं पर्यवस्ये मन्मथरमिति गालवोक्तेः अन्येषां तु मध्यमध्ये पिसमाप्ति
 रिति पराराभाधवीये निर्णयामृतं चोक्तं कालादर्शं पि दर्शं दशाहमध्ये स्या
 इत्थं तंत्रं समापयेत् त्रिशजोदतरं पित्रोर्मातवपि विनिश्चयः मदनपारजाते तु

गालवीयमापदनौरसपुत्रादिविषयं अहोर्ध्वमपिपित्रोर्नतंत्रसमाप्तिरित्युक्तं ।
 मदनरत्नेष्वेवं समतदंशाचराद्यवस्थितिप्रतिभाति अथास्थिसंचयः तत्राश्रयाय
 नेन कक्षयस्यैव कक्षदशीत्रयोदशीदर्शेषु आषाढीफाल्गुनीप्रोष्ठपदाभिन्नर्सेउक्तं न
 दशौचमध्येसंभवेत्तद्वर्धं च प्रागव्यातकरणेनेयं आशौचमध्ये तु मदनरत्ने संविनि-
 वर्तः प्रथमे द्वितीये वा सप्तमे नवमे तथा आस्थिसंचयनं कार्यदिने तद्गोत्रजैः सहः
 ह्यंदोगपरिशिष्टे तु अपरे धृत्वा तीये वा आस्थिसंचयनं भवेदिति द्वितीयेषु कृतं वि-
 श्वेकात्यायनो संचयनं चतुर्थ्यामिति माधवीये यमः भौमार्कमंदवारेषु तिथियुग्मे
 विवर्जयेत् तत्र ज्येदे कषादर्श द्विपादर्शे संचयं प्रदातुं जन्मनक्षत्रे त्रिपादक्षेत्रे विशेषतः
 ब्राह्मे चतुर्थ्ये त्रस्तृणां तत्तत्पंचमेहनिभूतं नवमे वैश्यजातीनां अद्राणां दशमा
 त्वरे दशमे हनीयाः शौनकाः पालाशेष्वस्थिदाहे च सद्यः संचयनं भवेत् काम्य
 मरणे तु तस्य त्रिरात्रमाशौचं द्वितीये त्वस्थिसंचय इत्युक्तं अंगिराः प्रेतीभूते
 तयोदिरपद्यः शुचिर्न करोति चेत् देवतानां तत्तत्पञ्चनं तेषां न्ययदेवताः तद्वि-
 धिः स्वस्वसूत्रे भट्टकृतौ च तेषः हेमाद्रौ नागरखंडे अस्थीणां संचयनस्यार्थं
 तानवैश्वर्यसाधनं यत्र स्थाने भवेत्तत्तु तत्र आहुं प्रकल्पयेत् एकोद्विंशत
 तौ मार्गे विश्रामो यत्र कारितः ततः संचयनस्यार्थं तृतीये आहुमिष्यते अपरा
 र्के मदनरत्ने च ब्राह्मे सद्यः शौचे तथैकाहे सद्यः संचयनं भवेत् अहोर्ध्वे द्विती

येनिकर्तव्यस्त्वस्थिसंचयः तत्रैव शमशानदेवतागंचतुर्थेदिवसेचरेत् मन्त्रये
 शुचभोडेभुक्तं भेषुखकेषुवा सपक्वेभक्षभोजेप्रपायसेः पानकेस्तथा मूलैः
 फलैर्वनोमैश्च यज्याः क्रव्यादेवताः धूपोदीपस्तथामाल्यमर्घ्येदेयं त्वराचिंतैः
 तत्रपात्राणि पुराणि शमशानाग्रेः समंततः निवेदयद्रिवेक्तव्यं तैः सर्वैरनहंक्त
 तैः नमः क्रव्यादसुरवेभ्यो देवेभ्य इति सर्वेष्वंशमशाने देवास्तु भगवंत सनातनाः
 तेस्मात्सकाशां कृत्वा वलिमयंगमक्षयं प्रेतस्यास्य शुभानलोका न्ययधंतु च।
 शाश्वतान् अस्माकमायुरारोग्यं सखि च दत्ताचिरं एवं कृत्वा वलिसर्वा नक्षी
 रेणाभ्युदयवाग्यतः एवं दत्ता वलिचैव दद्यात्पि उग्रयंबुधः एकं शमशानवा सिभ्यः
 प्रेतायेव न मध्यमं नृतीयेत तसखिभिश्च दक्षिणा संस्थमादसत् ततो यज्ञियसक्षोः
 त्यां शाखा मादाय वाग्यतः प्रेतस्यास्थीनि गृह्णाति प्रधानां गोड्वानि च पशरसो च
 क्षसः पारुषाः पाश्वीभ्यां चैव पादतः पंचगव्येन संस्त्राय क्षोमचसेण चैव च प्रभि
 य्य मन्त्रये भोडे नवसाक्षादनेभुभे श्रारण्ये वस्त्रमलवाभुभे संस्थापयत्यपि गृ
 हीत्वा स्थीनि तद्गस्मनीत्यातोये विनिक्षिपेत् ततः समाजने भस्मैः कर्तव्यं गोमया
 बुधिं यजत्तु पुष्यध्याये वलिभिः सर्ववक्त्रमात्रं प्रति अथ तीर्थे स्थक्षेपविधिः।
 तत्रैव तस्यानां छनकैर्नीत्वा कदाचि ज्जाद्वीजले कश्चिन्नक्षिपति सत्युत्रो
 दोहि त्रैवसहोदरः मातुः कुलं पितृकुलं विनाये च विनाये च नराधमाः अस्थी
 न्यन्यकुलस्य स्मनीत्वा चांद्रायणं चरेत् तत्रैव त्रसांडपुराणे अस्थीनि मा

तापित्पर्वजानां नयति गंगामपियेकपंचित सदा धवस्यापि दद्यामि नर
 तास्तेषां तु तीर्थानि फलप्रदानि स्नात्वा ततः पंचगव्येन सित्काहिरण्यम
 ध्वाज्यतिलैश्च योज्यं ततस्तु मन्त्रं यिं उपुरे निवापयन् दिशं प्रेतगणोपरुदा
 नमोस्तु धर्माय वदेत्प्रविरपजलं समेप्रीत इति क्षिपेच्च उभयाय भास्वतमवेक्ष्य
 सूर्यं सदक्षिणं विप्रमुरव्यापदयात् एवं कृते प्रेतपुरस्थितस्य स्वर्गो गतिः स्यात्
 महेन्द्रतुल्या यमः गंगानोयेषु यस्यास्थिक्षिप्यते शुभकर्मणः न तस्य पुनरावृ
 त्तिर्ब्रह्मलोकात्सनातनात् तथा अस्ते गते गुरोः शुक्रौ तथा मासे मलिमूचे ।
 गंगामास्थिनिक्षेपे न कुर्यादिति गोतमः दशाहं तनदेषः दशाहं भ्यंतरे यस्य गं
 गानोये स्थिमज्जाति गंगायामरणं यादृक् तादृक् फलमवाप्नुयात् इति मदनरत्ने
 वृद्धमन्त्रैः शौनकः शौनकेहं प्रवक्ष्यामि अस्ति क्षेपविधिः क्रमात् आदौ ग्रामा
 दस्ति गत्वा स्नानं कुर्यात्तसंचेलकं प्रोक्षयेत्पंचगव्येन भुवं मंत्रैर्विचक्षणः गायत्र्याथैः
 पंचगव्यैर्निखातास्थिभूमिप्रोक्षेदित्यर्थः उपसर्गादिभिर्मंत्रैः प्रार्थयेन्नरवनेन त
 या मृत्तिकोद्धरवास्थाग्रहणंच यथाक्रमं स्नात्वा स्थिमुद्धिं कुर्यात्तपतांति
 इति सूक्ततः स्पृष्ट्वा स्पृष्ट्वा पुनः स्नात्वा पंचगव्येन मुञ्चति दशस्नाना कुर्यात्
 ततश्च मंत्रैर्विचक्षणः गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधिसर्पिः कुर्यादकं भस्म मन्त्राध
 वादीनि मंत्रतस्नानि वैदराः कुरोः समार्जयेदस्थीन्यतो देवेति मंत्रतः ए

तो विद्रुं श्रीवेति नतमहंतीति च पावमानी ममाने च रुद्रस्तं मया ज
 ममिति एतेः कुरोर्माजने हेमश्राद्धतः कुर्यात्पितृनुद्दिश्य यत्नतः विद्रुं
 नंप्रकुर्वीत ततश्च निलतपां शुद्धिसेवां चेदं अजने कं वलादभीमो केशा
 शाणमेव च भूर्यपत्रं ताडयत्रं सप्रधावेष्टनं स्मृतं हेमं च मौक्तिकं रूपं प्रवालं
 नीलकं तथा निक्षिपेदास्थिमध्ये तं शुद्धिर्भवति नान्यथा ततः हेमं प्रकुर्वीत ति
 लाज्येन विचक्षणः उदीरते तिसृक्तेन द्रुते दद्येत्तरं शतं ततो गत्वा क्षिपेत्तीर्थे स्पर्श
 दोषान विधत्ते मंत्रं पुनरीषावमनं कुर्वन्नास्थीनिधारयेत् अजदशदाने वैतरणी
 क्षणमोक्तत्वायुषा पधेनुदानमुक्तं दिवोदासीये काशीखंडे धनं जयोपि धर्मत्मा सा
 त्मभक्तिपरायणः आसथास्थीमयो मातुर्गंगासारी स्थितो भवेत् पंचगव्येन संस्ना
 य्य तथा पंचामृतैर्न वै पक्षकर्मलेपेन स्निः स्वापुष्ट्यैः प्रयुज्य च आवेष्ट्य नेत्रवसेना
 ततः पट्टं चण्डे च ततः सुरसवसेना ततो मांजिष्टवाससा नेपालकं च लोभाय मृदा च
 यविशुद्ध्या ताम्रसंयुटके कृत्वा मातुर्गंगान्ययो वदत आसः पट्टं च सुचं कौशेयं मं
 जिष्टं सेतवसुकं कंवलं शाणपट्टं च अजिनं च तयोतरं गंधाधिकल्पः अन्यश्चा
 त्रविशेषसि स्थली सेतो दिवोदासीये च तेयः संचयनोत्तरश्चाह मंसाश्लायनः
 श्राद्धमस्येदधुरीति स्मृत्यर्थे सारे संचयने कृते मनुष्यलोकगदतः पाथेय
 श्राद्धमाजनेन कार्यमिति अनुपनीतस्य न संचरणं अथ नवश्राद्धं यच्छीचंद्रो
 दये अगिराः प्रथमे हितृतीये च पंचमे सप्तमे तथा नवमे कादशे चैव तत्र च श्राद्ध

मुख्ये शिवस्वामी नवश्राद्धानिपंचाङ्गराश्रलायनशारविनः श्रापस्तवाः व
 तित्याहुर्विभाषावितरेषु हिपंचराकादशादिकं विना मराणाद्विषमेषु दिनेषु
 कं नवश्राद्धं वयोदानवमाघदिनवमं विधिद्यौतैकादशेनेकुर्यादिति मदनर
 तेवौ धायनोक्तैः भविष्ये नचसप्तविंशाराज्ञानवश्राद्धं ननुक्रमान् श्राधत्त
 द्यौवर्तियोक्तव्यमित्याहुर्महर्षयः हेमाद्रौ तद्विवरिष्टः अलघ्यात् नवश्राद्धं प्र
 तत्त्वानैव मुख्ये श्राद्धाङ्गदशाहस्पलघातरतिदुःकृतं अतः षडैवः एतान्ये
 वविषमश्राद्धानीत्युच्यंते नारागरखंडे तु पंचमेसप्रमेतद्वदष्टमेनवमेतथा
 दशमेकादशेनैव नवश्राद्धानितानि चेत्पुनः कात्यायनस्तु चतुर्थेपंचमेचैव न
 वमेकादशेनया यदत्र दीयते जतोस्तत्र नवश्राद्धं मुख्ये प्रथमेसप्रमेचैवेत्याध्या
 देव्यासपाठः बहुचानां तु नवश्राद्धं दशाहानि नवमिश्रांतुषट्कृतित्युक्तं नाराय
 णसंतो दीपिकायां अथतनुपादाद्ये चतुर्थे दिने श्राद्धपंचसप्तमाष्टनवदिमुद्देष्टु
 युग्मद्विजैः प्रथमे द्विततीये द्विपंचसप्तवचस्वयि द्वौ द्वौ पिंडो प्रदानव्यो रोक्षकं
 तु विन्यसेत् एको विषमश्राद्धे वयवपिंडं श्रैक इति द्वावित्यर्थः अत्र शारवाभेदा
 त्प्रवस्था अपरार्कं भविष्ये नवश्राद्धं त्रिपक्षं च षण्मासे मासिकानि च नक्त
 रोति सुतोयस्तु तस्याधः पितरो प्रताः वाराहे गतो सिद्धिद्विजोक्तं कृतं तान वि
 हितात्यर्थः मनसा वा युभूतेन विप्रेत्याहं निजो जये यज्ञधिया भिमोगे स्वामि
 वं विप्रेनिमंत्रयेत् श्रावाहने पित जैव इत्युक्तं परित्यज्य गतो सिपरमोगतिं

मानसावायुभूतेनविप्रेत्वाहंनियोजये इति तजैवपरिशिष्टे अनुदकमध्यं
 च गंधमास्यचिवर्जितं नवश्राद्धममंजं च पिंडोद्यकचिवर्जितं उदकम
 ध्यः पिंडोदंश्रुधंतापितरस्यवनेजनादिति एकोदिष्टेषु सर्वेषु न स्वधानाभि
 रम्यता स्वस्यस्तुविस्तृते देवं सकृत्प्राणवचर्जितं एकोदिष्टस्य पिंडोत्पन्नं
 शब्देन विद्यते पितृशब्देन कुर्वीत पितृशब्दोपजायते संपिंडता प्रागिति हे
 मादि तैस्वधांप्रयुंजीत प्रेतश्राद्धे दशाहिके इति श्रुत्य श्रुंगोत्रैः देशाहिके
 तैः एकादशे स्वधाप्रयोगावेति हारलतापरास्तारत्नावल्या आशिक्षोर्दिगु
 णादर्भाजयासी स्वस्तिवाचनोपितृशब्दः स्वसंवधः शर्मशब्दस्तथैव च पाजालं
 भोवगाहश्च नुल्लुकोत्तेरवनादिकं तृप्तिप्रश्नश्च विकिरः शेषप्रश्नस्तथैव च ।
 प्रदक्षिणाविसर्गश्च सीमांतं गमनं तथा श्रुत्यादशयदार्थांश्च प्रेतश्राद्धे चिवर्ज
 येत् श्रुत्स्वधापितृनमः शब्दानां तिलोसीति मंत्रोपेतशब्देन तृष्णीचां तिलाव
 यनं तृष्णीमर्घ्यदानं श्रुत्यैवास्वाहेति प्रेतताभ्यायाणि होमः नाम्ना एकः पिंडः धियम
 मंत्रे ब्रुहः श्रुत्यमंत्राणादित्वमंत्रकं श्रुतिरम्यतामिति विसर्जनं एवं नवश्राद्धव
 र्जोकोदिष्टेषु नवश्राद्धे त्वमंत्रकं सर्वमिति नारायणहृतिः क्रियानिवंधे उता
 नं स्वाययेत्यात्रमेकोदिष्टे सदाबुधः जुज्वंतु यार्बलो कर्षोरूप्योपरिकुशाश्च
 सेतु नवश्राद्धं गृहे कार्यं भार्याय गन्धोपिवा संपिंडीकरणं तानि प्रेतश्राद्धानि

वे तानि स्थूलौकिके वडावित्याहत्वाश्च लायनः इदं संभवेत्नेन कार्येन वशादे
 बुयाद्विषं गृहे येषु धितं च यत्त दं यत्पोर्भुक्तरोषं च न तदं जीत कर्हि चित् दित्यं
 तिरो वचनलिंगात् द्वाभ्यां तदा तत्तद्वाभ्यां शुद्धिः स्यात्तु विवेकिनामिति ब्राह्म
 उक्तं विषे तु निर्णयामते कएव न वशाद्मासिकं च यद्यदंतरितं भवेत् तत्तत्तत्त
 साते आदनुवेयं पुच सते हेमाद्रोगालवः शावेत्तस्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्त
 यथा न वशाद्वा निदेयानि यथा कालं यथा क्रमं निशाया माषांचांते घृहृद्धौ मृना
 रो हरेत्तु न वशाद्वा नि सपिंडीकरणं यत्त एक एव ह्येव तसर्गे गोरे कान्तं दीयते आ
 रौचांचांते दिने कार्यं मुक्तं ब्राह्मेयस्य यस्य सुवर्णं स्पृशेत्तया तया त्रिमं त्वरुः सतत्र व
 स्रमुक्तिं करोत्यपि समाख्यदशमं पिंडुं प्रेतशब्दे तवाससी मृत्यानामाश्रितानां च त्र्य
 त्कास्त्राने करोति च एमश्च लोमनखानां च पत्राण्यं तज्जात्यपि गोरे सर्वेषु कल्के
 न संयुते शिरः स्नाने ततः कालांतोयेनाचम्य वाग्यतः ह्यभंगं सुवर्णं च स्पृष्ट्वा
 अभवेन्नरः क्रियानिवंधे गृहकारिकायां मृत्रपिंडं त्रयं दयस्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्त
 प्रेताय मध्यमेतद्दत्तं तीर्थं वयमाद्ये तथा कर्त्ता त्रपार्थिताः संतो ज्ञानि संवधि
 बांधवाः दयुरभंगतः पूर्वो ज्ञेस्त्रीन् धर्मादकां जलीन् पूर्ववत्त्रामगोत्राभ्यां नि
 यमोने ह्यस्मिन् मदनरत्ने विद्युत्त सारीतौ आशौचांते कृतश्मश्च कर्मणाः
 तिलकल्कैः सर्वेषु कल्कैर्वास्त्रातः शुक्लं चासं गृहं प्रविशेत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्तत्त

385A

कृत्वा ब्राह्मणपूजनं कुरु रिति देवलः दशमे हनि संप्राप्ते स्नानं गर्भाक्षिर्भवेत् न
त्रत्यान्यानि वासांसिकं केशरमश्रुनवानि च अपराकं हस्वति नवमे वाससाया
गोनखरोमं नयंति मे तत्रेव व्यासः आशौचं व्यादिनक्षोरं जनन्या च गुरो मृतो ए
तस्मै तास्य वयनामित्याहायस्तवः अनुभविनि च परिवयनमिति अनुभाविनः
कनिष्ठा इति विज्ञानेश्वर रत्नाकरादयः आशौचमनुभवतां पुंसां सर्वा शौचमु
ञ्जं आनयानरपतिर्द्विजन्मनां दारकर्म मृतसूतकेषु च वं धमाक्षमरवदक्षिणे
हृदि क्षौरमिष्टमखिलेषु वा दुष्ट इति रत्नमालोक्तेर्जननाशौचपीति मुद्रितत्वाद्
यः अजदेशाचारतो व्यवस्थापरिशिखावर्जं केशरमश्रुलोमनखानि वा यवी
ति शिखावर्जमिति गोभिलोक्तेः यत्वापस्तवः नैमासत्राचै पुरन्यत्र विहारादि
त्येके विसारो दर्शादियागः तेन चिना समासत्रागृहस्थानवयेयुरित्यर्थः यच्च हस्या
द्वित्रितयः केसांसमाहुर्ग्रे स्यातिनामिति वत केशरमश्रुधारयतामग्न्याभुवि
तिसंततिरिति दातुधर्मात्कृत्वा मय परं अनुभाविनः पुत्रादय एवेत्येके पुत्रः पत्नी च
वयनं कुर्यादन्ते यथा पिंडदानोचितो न्योपि कुर्यादित्यं समाहित इत्यपराकं व्यासा
क्तेः यत्तु मिताक्षरायां द्वितीये हनिकर्तव्यं हृत् रकर्म प्रयत्नतः तृतीये पंचमे वा
पि दशमे वा पिदानत इति आप्रदानतः इति चतुर्थ्यादीनि ततः प्रथमदिने संभवे
त्रेयं अल्लपू केशायः पूर्वसोजकेशान् प्रवाययेत् द्वितीये द्वि तृतीये द्वि पंचमे

366

सप्तमेयिवा यावत्प्राङ्प्रदीपसतावदित्यपरमात्ममितिमाधवीये मदनरत्नेच
 वौधापनोक्तेः मदनपारजातेजुष्मामेप्रथमेचसम्बन्धउक्तः यत्तुदशमं पिंडं
 त्वज्यरात्रिशेषेषुचिर्भवेदिति तदेकादशाहप्राङ्गाविप्रनिमंत्रणार्थं त्रेयं अ
 थेकादशाहः मनुः विप्रः शुभ्रात्ययं सप्तस्याक्षत्रियोवाहनायुधे वैश्यः प्रतोडुरासी
 न्याय्यश्चिद्भूदः कृतक्रियाः शुद्धितत्वेदेवलः आघातः सनितनेषुसस्त्रातः कृत
 मंगलः आशौचादिप्रमुच्यंते ब्राह्मणान्स्वास्तिवाच्यं यातवल्क्यः आघमे
 कादशहनि क्षत्रियाद्यैराशौचेव्येकादशोहिप्राङ्कार्ये आघं प्राङ्मममृद्धोपि
 कुर्यादेकादशहनि कर्तुं स्तात्कालिकी शुद्धिरभूदः पुनरेव सः इति हेमाद्रौ राशौ
 कौपेठीनसिः एकादशोहि यच्छ्राङ्गं तत्सामान्यमुदाहृतं चतुर्णामतिवर्णनां सत
 कंतु प्रथमकप्रथक यत्तु मरीचिः आशौचांतेततः सम्पकपिंडादाने समाप्यते ततः
 प्राङ्प्रदानं सर्ववर्णेष्वयं विधिरिति तत्सर्ववर्णनां दशाहशौचपरं यत्तु विष्णुः
 अथ शौचापगम इति यच्च गोडंग्रथे दारीनः श्वाभूत एको दिष्टं कुर्यात् यच्च वैज
 बायः उर्ध्वदशम्या अपरेक्षारिते तद्विप्रविषये एतेन दशमपिंडात्कर्षयक्षेव यव
 पिंडासमाप्तौ कथमेकादशाहप्राङ्मिति मृत्तुर्वाक्तिः परास्ता वचनादशौचम
 ध्यश्वतत्राप्यविरोधात् भविष्ये एकादशाहभ्यो विप्रेभ्यो दद्यादेकादशहनि
 भोजनं तत्र चैकस्मै ब्राह्मणाय महात्मने यत्तु मात्स्ये एकादशहनि तथा विप्रो
 नेकादशेवतु क्षत्रादिः स्तुतवांतेतु भोजयेदयुयोदिजा निति तदुद्गणप्रा

राम
३६६

द्वपरमिति मदनपरिजातेः गौडास्वस्माच्चनाक्षत्रियादीनामाराचोत्तरेष्वे-
 त्याहुः यत्ररामायणे समतीतेदशाहेतुस्ततरोचोयथाविधि चक्रे द्वादशिकं प्रा-
 दं त्रयोदशिकमेव च द्वादशिकं द्वादशाहेतुनिवर्त्य त्रयोदशाहं प्रादं त्रियोदशिकं
 चतुर्दशाहे विधेयं सपिंडनर्पययादि क्षत्रियाणां द्वादशाहं रौचि त्रियोदशमेहे
 कोदिष्टं चतुर्दशे सपिंडनं विविधवाक्यादेकादशाहं रौचोत्तयोर्विकल्पिते-
 के सद्यः रौचादौ युद्धरुनादेरेकादशाहः अन्ये त्वामाराचोत्तरेति वयं कौर्म ए-
 कादशे क्रिकुर्वीत प्रेतमुद्दिश्य भावतः द्वादशे वा क्रिकुर्वीत मनिद्येय्यवाहनिद्ये प्र-
 तक्रियाकाले उक्तं एकादशे तु तत्रिषेधस्तुक्तं प्राक् हस्त्यतिः वस्त्रालंकारशा-
 य्यादिपितृय द्वादशादिकं गंधमात्यैः समभ्यर्च्य प्राहुर्भोक्तुतदर्थ्येन श्रोत्रियामो-
 जनीयास्तु नवसप्तत्रयोदशाः ज्ञातयोवांधवानि स्वास्त्यावातिथयोपरे देवयाहि-
 कनिबंधेः एकादशसु विष्टे सुप्रेतमावाह्यमोजयेत् तत्रायायचशय्यादिदयाद्यपि
 निसृजते विष्णुः एकवत्संजानूहेनैकोदिष्टवद्भववचनात्तानेकनेकवचनां-
 तान् चेदित्यर्थः एतद्व्याख्यते अस्य विष्टे गौणकालमाह हेमाद्रौ वैधायनः ए-
 कोदिष्टं प्रादं त्रयोदशाहं निवायुतः अत ऊर्ध्वमयुग्मे युक्वृत्ताहः सुराति-
 तः अर्धमासे यवामासि जृतौ संवत्सरे पितृचेति तत्रैव लघुहारीतः एकोदिष्टं
 तु कुर्वीषाकेनैव सदास्वयं अभावे वा कपात्राणां तदहः समुपोषाणं गोभिलाः

लमेतपरंगतिं सद्योत्सृष्टः पुनस्त्येवदशातीतान्दशापरानिति देवीपुराणभवि
 य्यादौ फलमृतेषु अयं द्वादशाहेषु कौभविष्ये चैवावायितृतीयायां वैशा
 रव्यां द्वादशैति विष्णुधर्मसुम्नताहेषु कः विष्णुवर्धितैवम् ताहेवांध
 वस्य चेति अथैतद्देनकार्यः तद्देन्याचयेत्रीलं कामये पुष्कलं फलमि
 तिकालकापुराणान् कामयेनो वत्सराभ्यंतरे पित्रोर्वर्षस्योत्सर्गकर्मणि
 वृद्धिप्राद्वं न कुर्वीत तदन्यत्र समारभेत् तद्द्वारां तु ब्राह्मे लोहितोयस्त
 वर्णनमुरवेयुधे च पांडुरः श्वेतः खुरविषाणाभ्यां सनीलो वषउच्यते श्वेतवर्ण
 स्य मुरयादीनि रयामानि रयामस्य वाश्वेतमनियस्य सौमिनील उक्ते मात्स्यादौ
 देवीपुराणे चतस्रावसिकाभद्रादेवा संभवोपि वा यत्र पठंति सद्योत्सर्ग
 तवे लायां ह्यथाभावे कथंचना मद्भिः पृथ्वेः प्रदर्भे वा सद्योत्सर्गत्वा विमोचयेत्
 न शक्यते सद्योत्सर्गो होमं वा तत्र कारयेदिति तन्निर्मलं तद्विधिहेमद्रौ भ
 द्दत्तौ च तेषु अत्र देवयानिकेन सद्योत्सर्गात् सर्वं पुरुषसूक्तेन विष्णुसूक्ति
 येनोद्देशे विष्णुतर्पणमुक्तं तत्र मूलं चिंत्य पारस्करः सद्योत्सर्गनापुष्टं स
 मासव्यहस्यतृक्षिणेनाथ आदाय सतिलाः सुकुरास्त्रातः प्रेतगोत्रं समुच्चा
 र्य अमुकस्मै प्रतिब्रूवेत् ह्यएवमथा दत्तं स्तारयन् सर्वदा सहेमसलिलं
 भूषा चितुच्च विनिक्षिपेत् तथा विधारयेन्न तं कश्चित् च कश्चन वा हयेत् न

368A

दोहये स्वताधेनूनककश्चनवेधयेत स्त्रीषु विशेषः संग्रहे यतिपुत्रवतीनारी
 भर्तुरग्रेष्ठतायादि ह्ययोत्सर्गेन कवीतरयादद्याहोमयस्विनी यतिपुत्रयोः सा
 हित्यं विवर्जितं अचोरोहोपि गोदानमेवेत्युक्तं प्राक् आशौचांतरेपि ह्ययोत्सर्गाय
 मासिकशय्यादिदद्यादेवेत्युक्तं किं निवेधे स्मृत्यंतरेस्तत्कर्म नक्तकंचेव हि तीपं
 नक्तकं यदि पिंडदानं प्रकुर्वीत ह्ययोत्सर्गं तथैव च न ह्यन्यामृतकं कर्म द्वादशैकद
 शादिकं श्रद्धोवाचदिवो मुहुः कुर्यादेवा विचारयन्निति अत्र पददानं श्रद्धं वेवता
 नीये गारुडैर्गार्कदशाहं प्रक्रम्य तदह्नी दीयते सर्वं द्वादशाहं विरोषतः पदानि सर्वं
 स्तुतिविरिण्यानि त्रयोदश योददति मृतस्य ह्यजीवतोप्यात्महेतवे स पुवी भूत्वा महा
 मार्गे वै न ते य स गच्छति तथा आसनायानं दोधं मुद्रिका च कर्म मल्लः भाजनं
 भाजनाधारो वस्त्राण्यष्ट विधं पदं तथा भाजनासनदानेन मुद्रिका भाजनेन च
 आज्यपत्तोपवीतेन पदं संपूर्णं तां जजेत् महिषीरथ गोदानात्सुखी भवति नि
 श्रितं सर्वोपस्करयुक्तानि पदानि अत्र योददा योददति मृतस्य ह्यजीवन्नप्यात्म
 हेतवे स गच्छति वरं स्थानं महाकथं विवर्जितं त्रयोदश पदानोत्प्रेतांकादरोह
 नि दातव्यानि यथाशक्ति तेनालोप्रीति ते भवोन् अथैवोदकं चैवोपानदौ च
 कर्म मल्लः द्वादशं तस्याप्यकिं ह्यदं तथाप्युक्तं अग्निष्टिकां च दीपं च तिला
 न् तां दत्तमेव च चंदनं चोपदानं चोपदानानि चतुर्दश यो श्वैरथं गजं वापि वा

ये

नि.सिं.
३६५

369

स्मरणोपनिषादयेन स्वमहिम्नोत्सारेण तन्न सर्वमवाप्नुयादिति अत्र महत्तु चि
त्यं अथ शय्यादीनं हेमाद्रौ भविष्ये तस्माद्यथा समासाधसारदारुमयी हृदा
दन्तपत्रविनो रम्यो हेमपट्टे रत्नकृतो हंसतलीप्रतिध्वजो शुभगंगो यधानिका
प्रधादनयदीयुक्तो गंधधूपधियासितो तस्मात्संस्थापयेद्देमं हरिलक्ष्म्या स
मन्वितं अत्र हरिस्थाने प्रेतं उदीर्य केष्ट तत्तत्कलशं परिकल्पयेत् तां वलंकु
कमक्षोदकपूरगारुचंदनं दीपिकोपानहध्वजचामरासनभाजनं पांसुस्था
पयेद्भक्त्या सप्रधान्यानां चैव हि शयनस्थस्य भवति यदन्यदुपकादकं भृंगारक
रकाद्यंतु पंचवर्णवितानकं मंत्रस्तु यथानुक्रमेण सयुनश्च न्यंसागरयातया रा
य्या ममाप्यमन्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि यस्मादमन्य शयनं केशवस्य शिवस्य
च अर्धतदेव दत्तैव तस्य सकलं प्रणिपत्य विसर्जयेत् एकादशाहं पितृविधिरेव
प्रकीर्तितः विशेषं चात्र राजेन्द्र कथ्यमानं निशामय तेनोपभुक्तं यत् किंचिद्वस्त्रवा
सनभाजनं यद्यदिष्टं च तस्यास्तनं सर्वं परिकल्पयेत् तमेव पुरुषं हेमंतस्यां संस्थाप
यत्तदा यजिषित्वा प्रदानव्याप्तं तस्याप्यधोदिता पादौ मृतकान्ते द्वितीये द्विशय्याद
द्यात्तु तत्क्षणं काचनं पुरुषं तद्वत्फलवत्समन्वितं संयज्य दापयन्नाताभरणाभूषि
तं उपवेश्य तस्य पादौ मधुपर्कं ततो वदेत् रजतस्य तृपात्रेण दधिदुग्धसमन्वितं
अस्थिर्ललाटिकं गृह्यत्सदं मृत्वा सयापतं भोजयेद्द्विजदोषं विधिरेव सना

राम
३६५

तनः रावरावविधिर्दृष्टः पार्वतीयेर्द्विजोत्रमेः एतत्प्रतिग्रहेतत्रैवोक्तं गृहीता
 यां तनस्यावेपुनः संस्कारमर्हति रावरावदानफलं भविष्ये स्वर्गपुरंदरपुरे सूर्य
 पुत्रालये तथा सर्ववसन्त्यसौ जन्तुः रावरावदानप्रभावतः आभूतसंप्लवं
 यावन्निष्ठेत्यातं काविनर्जितं इति अथोदकुम्भः हेमाद्रौ स्मृति संसृष्टये रा
 कादशात्प्रभृति घटोत्तोपान्नसंयुतः दिनेदिने प्रदानमोयावत्संवत्सरसु
 तैः लौगाक्षिः यस्य संवत्सरादद्यात् सपिंडीकरणं भवेत् मासिकं चोदकुम्भं
 च देयं तस्यापि वत्सरं उत्तरार्द्धे तस्याप्यत्र सोदकुम्भं दद्यात्संवत्सरं द्विज इति या
 नवल्क्यपाठः सपिंडीनामकर्षे अस्यापकर्षे प्राग्वाधकमिति मूलपाणि तत्र
 निविकाराभावेन तदंत्यायाविषयत्वात् मास्यं यावदकुं च योदद्यादुदकुं भवि
 मत्सरः प्रेतायात्र समापुक्तं सोममेधफलं लफभवेत् केचिज्जोदशाहमार
 न्याहुस्तन्मूलं अन्नदेवयानिकैः सपिंडनापकर्षे सांवत्सरं यावदुदकुं भमवा
 गेवदद्यात्तार्धं प्रेतलोकगतस्यान्नं सोदकुं भं प्रयच्छतेति गोविंदराजपद्यतवि
 द्मत्तैः अन्नं चैव स्वराज्यात्संख्याकृत्वा विक्रावधिदातव्यं ब्राह्मणैस्त्वं दे
 घटोदो निष्कृत्यं तु वा अथिप्रादं रानेर्दत्तैरुदकुं भं विना नरां दरिद्रा दुःखिताश्चा
 तं मंतिच भवार्तिवे तेनाप्युदकुं दद्यात्तव्यं पुनस्याप्युदकुं भकमिति गोभिलभा
 यैस्त्वं दातव्यं सपिंडनायागे वतस्य विधादूर्ध्वं निधेयादित्याह तत्र उदकुं भं पा

360

370

नानाविधानानुययन्त्रिरेवं व्याख्यायामानाभावस्मिताक्षरादिविरोधाच्च वचनं
 यदि समस्तानदावृत्तव्यकषविधते प्रेतश्राद्धानि सर्वाणि सपिंरीकरणं तथेति
 हेमाद्रौ शरमायनोक्तेः तस्याप्यत्र सोदकुं भमधर्मकं कुर्यात्प्रत्यादिक्काद्या
 संकल्पविधिनान्वहं अधर्मकं ब्रह्मचर्यादिद्वियमहीनं एतन्मासिकवदेको
 वं पार्वणं वा कार्यं अपरार्कस्तु सपिंरीकरणे हनेत्यत्कानोपपद्यते यथत्वे
 तत्कतेपश्चात्तः कार्या सपिंरीतेति लघुहारीनोक्तावपि तस्याप्यत्र सोदकुं भदद्या
 संवत्सरं द्विजे इति यावत्स्वीयेतस्येत्येकत्विकेः सपिंरीनात्तर मध्ये कोदिवं मेवे
 त्याह अत्रापिंडदानं कृत्वा कृतं अहरन्नहरन्न मस्मै ब्राह्मणायोदकुं भवदद्यापिंड
 मध्ये केति वृणोतीति हेमाद्रौ पारस्करोक्तेः आह शतौ पिंडमात्रमिति पितृव्यगो
 शः तन्न अग्निशब्दवाधाय तैः हारीतः मृतेयितरिवैपुत्रः पिंडमवं समाचरेत् अन्नकुं
 भंच विधाय प्रेतनिर्देशधर्मतः प्रेतशब्देच्चारणेनेति हलपुधः यद्वा प्रेतस्य निर्देशो
 यत्र तदेकोदिवं तद्धर्ममित्यर्थः अत्र शौचादिनाद्यव्यंतां यावत्संवत्सरापत्तैः शौ
 चनाधिकारिविरोधणं तेन मृतिदिनमारभ्येतत्कार्यमिति केचित् तत्र हेमाद्रि
 यत्र तव चोचिरोधात् मध्ये आशौचादिनावाधेत्तु लोप एव दारीवत् तथा यथा वैदी
 यदानमुक्तं देवजानीये गार्हो प्रत्यहं दीपको देयो मार्गे तु विषमे नरेः यावत्संवत्सरं
 वापि प्रेतस्य सरवलि सया प्राप्नुरेवा दध्नुदीपं देवागारे द्विजालयो कुर्याद्याम्यमुरं

360

पित्रे अद्रिः संकल्पसु स्थितं अथ मासिकानि तानि च कृत्वेव सपिंडं न कार्यं तथा च
 होमिल्लो गाक्षिः प्राधानिषोऽशान्दत्वा नेव कुर्यात्सपिंडं प्राधानिषोऽशयापर
 विदधीत सपिंडं तानि त्वाह जातु कर्णः द्वादश प्रतिमा स्यान्नि आद्यषण्मासिकै
 तथा त्रैपाक्षिकादिके चेतिः प्राधान्ये तानिषोऽशः आद्यषण्मासिकादिके कशब्दाः
 ऊनमासिकानवष्टोनादिके पराः हेमाद्रौ न सपिंडीकरणं चैव इत्येतद्वा द्वयोऽश
 मित्युत्तरार्धे पाठः तदा आद्यमूनमासिकं द्वादशाहे षण्मासिकं ऊनवष्टोनादिके
 त्वर्थः कान्यापनस्तन्ययाह द्वादश प्रतिमा स्यान्नि आद्यषण्मासिके तथा सपिंडी
 करणं चैव इत्येतद्वा द्वयोऽश एकाहेन तु षण्मासा यदा स्मरपि वा त्रिभिः न्यूनः
 संचत्सरमैव स्यात्तां षण्मासिके तदा द्विवचनादूनवष्टोनादिके त्वर्थमाह पृथ्वी
 चंद्रः व्यासस्त्वन्यथाह द्वादशाहे त्रिपक्षे च षण्मासे मासिकादिके प्राधानिषोऽ
 शौ तानि संस्मृतानि प्रतीचिभिः द्वादशाहपदमूनमासिकपरं तस्य द्वादशाहे प्युक्ते
 रितिकात्मादर्शः मातरत्वेनास्ते त्वन्यथोक्ते न एतन्मत्तदेहानां प्राद्वयोऽश सर्वदा
 चतुर्थ्यं च मे चैव नवमैकादशे तथा ततो द्वादशाभिमासेः प्राद्वयोऽश संख्येति चत
 र्यादानि दिनानि भविष्यन्त्यथोक्ते अस्थिसंचयनं प्राद्वयक्षे मासिकानि तु
 रिक्तयोः अतयातिथ्योः प्रेतप्राधानिषोऽशेति रिक्तयोः स्थित्योरिति न्यूनवष्टोनादि
 कपरमिति अत्र देराकुलराखाभयसूचयेति सर्वनिबंधीः गालवः ऊनषण्मासि

नि.सिं.
३७१

३७१

कं षष्ठे मासे वा यत्नमासिकं त्रैयसिकं त्रिपक्षे स्याद्गुणाद्वद्वा दशो तथा ऊणमासि
के तु गोभिलः मरणद्वादशाहस्यान्मायने वोनमासिकं मदनकालादशौचज्ञाका
गोतमः एकद्वित्रिदिने कने त्रिभागे नोन एव वा आह्वयनादिकारिभिर्यथा दित्या
ह गोतमः क्रिया निवधेऽनुक्तं सार्धं एकादशे मासे सार्धं वैपंचमेतया ऊनाद्वद्भूतव
एमासं भवेत्तां आह्वयकर्मणी इत्युक्ते तत्र मूलं चिंत्ये कुते सुर्वर्त्ये न्याहमरीचिः द्विपु
ष्परे च नंदस सिनीवाल्मेयगो दिने चतुर्दश्यं च नोनो विहृतिकासु त्रिपुष्परे
ज्योतिषे त्रिपादसंतिथिर्भद्राभौमेज्यरविभिः सह तदा त्रिपुष्परो योगो द्वयोर्योगो
द्विपुष्परः गालवः त्रिभिर्वा देवसैतूने त्वेकैत्रद्वितयेन वा आद्यादियुचमासेषु क
माह्वनादिकादिकं राकन्यनपक्षे पंचम्या मृतस्य तृतीयायां त्रिभिर्नक्षत्रैः प्रतिपादि
भूते द्वितीयौ भित्तिकेचित् माधवस्तथा एमाकादिके आह्वे स्यातां एवैधुरेव ते मासि
वत्तद्विनिश्चयीयेत तदिवशे दशौषिवेति ये हीनसिवाक्य ऊनवा एमासिकं मृता
ह्मासर्वेषु कार्यमित्यर्थमाह सर्वेषु मृतास्तदित्यर्थः मासिकानि स्वके ये तु दिवसे
इत्युक्ते इदमेव तु मुक्ते मदनरात्रे ये वया जवल्क्यः मृते ह्नि तु कर्तव्यं प्रतिमासं तु
वत्सरं प्रति सेवत्सरं चैव मासमेकादशे ह्नि आत्राद्यं मासिकमादिकं चैकादशे
ह्नीति निर्णयामृतादयः ब्राह्मणं भोजयेदाद्ये होतव्यमनलेष्यवा पुनश्च भोजये
द्विपुष्पदिवा हतिर्भवेद्वितीति गोभिलीयं चतद्विषयमाहुः अन्ये तु मासपक्षाते

राम
३७१

371A

यिस्येष्टे इत्यादि विरोधादादिकं वर्धते एव मासिकं तु मासादौ द्विराह तत्सु
 कादशाहेकादशमासिकपरा देवयासिको येवमाह लोगाक्षिरपि मासादौ मा
 सिकं कार्ये मादिकं वत्सरे गते आद्यमेकादशे कार्ये माधिके त्वधिकं भवेत् दीपि
 क्तयात् आद्यं रुद्रमिते कं संमितदिने वा स्यादेत्युक्तं गोजस्तमिततिव्यवधि
 के माससंवत्सरयदंगेण पूर्णवेदति इदं समाप्रपरत्वमिति श्रुतपाणिः तेन
 द्वितीयमासादादाद्यमासिकादीनि मौर्यकृतं अशक्तौ न हारीतिः मुख्यं आ
 दं मासियासिचयथासाहसं प्रति द्वादशाहेन वामोज्या एकाहे द्वादशाधिक २
 अतं प्रतिद्वेष्टे इत्यर्थः यदा धितुर्मरणसुयोविंशतिनमेदिने द्वादिवा स्यात्
 द्वादशदिनेषु द्वादशमासिकानि कार्यणीत्यर्थः त्रैपाक्षिकं त्रिपक्षे तीते मृताहे
 कार्ये त्रैपाक्षिकं भवेदन्ने त्रिपक्षे न दनंतरमिति भविष्योक्तं रिति मदनरत्ने उक्तं
 पृथ्वीचंद्रकात्मादरी निर्णयामृतादयस्तज्जना न्यनेषु मासेषु विषमाहे स
 मेयिवा ता त्रैपाक्षिकं त्रिपक्षे स्यात् मृताहे चितिराणि चितिकर्षाजिन
 स्मृतेः पूर्वजहने प्रहने इत्यर्थमाहुः तेन दनंतरराब्दविरोधा त्रैपाक्षिक
 द्वितीयमासिकयोः शंकराय तरेव व्याख्यायां मावाभावाच्चोपेक्ष्याः एवं
 त्रिपक्षसंयुते च वराकाभावादाधिकरणत्वं मेव ज्ञेयं यत्तु क्रियानिवं
 धे गारुडेः त्रैपाक्षिकं त्रिपक्षे तु प्रहने विषमेदिने मासिकान्यपि चेत्तानि श्रु

नि.सिं.

३७२

३७२

द्वाविंशतिमेदिने इति तन्निर्मुले स्मृतिरत्रावल्यां द्वादशाहेयदाकुर्यात्तपितुः पुत्रः
सपिंडने एकादशे द्विकुर्वीतप्रेतश्राद्धानि षोडशे ष्ठीनसिः सपिंडीकरणदत्वा कुर्व
तश्राद्धानि षोडश एकादिष्टविधानेन कुर्यात्सर्वाणि तानितुः सपिंडीकरणे द्वा
हेयदाकुर्यात्तदा पुनः प्रत्ययं वो यथा कुर्यात्तथा कुर्यात्सतान्यपि मदनरत्ने कात्यायि
नः श्राद्धमग्निमतः कार्यं द्वादशाहे कादशे हनि ध्रुवाणि तत्र कुर्वीत प्रमीता हनि सर्व
दा ध्रुवाणि त्रैयसिका हर्षानि क्रियानिवंधर्गास्तु त्रिपदान्पूर्वतः साम्ने भवेत्सं
स्कारवासेरे ऊर्ध्वं मृतदिने नग्नेः सर्वाण्येव सतास्तः एतानि च यदा सपिंडनात्पूर्वं
मुगायत् कुर्यात्तदा कालकर्के कथं जत्वा देकः पाक इति केचित् पाकभेद इति भ
द्वचरणः अत्र केचिदाहुः देशकालादेव नै केयं जत्वा देकः श्राद्धकाज्ञानि क्रमा
पतेर्द्वादशाहेयसर्वाणि संक्षेपेण समापयेत् तान्येव तु पुनः कुर्यात्प्रेतशक्येन कार
येदिति कात्यायनोक्तैर्नैकः श्राद्धद्वयं कुर्यात्समाप्ते हनि कुत्रचिदित्यस्य देवर्तैक्य
परत्वे व्यजतत्सत्वा श्राद्धं कृत्वा तु तस्यैव पुनः श्राद्धं न कारयेदिति यावालोक्तैः
षोडशसंख्यायां श्राद्धाद्ये प्रजापत्ययागसप्तशात्वयसामान्यायागद्वित्येव च
मुगायदनुष्ठाने व्युपयन्नेत्यसिक्का घृणादिकान्तेषु षोडशश्राद्धेषु द्वाणः क्रिय
तामित्येवं प्रयोगे लोकोविप्रः पिंडोर्ध्वमेति विरुद्धविधिविध्वंसेष्येवं तन्नेदं द्वादशा
हेनवाभोज्या एव तद्द्वादशापि चेति हेमाद्रौ हारीतवचो विरोधात् तेन विप्रभेदान्
पिंडाद्यपि भिन्नमिति सिद्धं एतानि द्वादशाहो सपिंडनात्पूर्वं कृतान्यपि हर्षि

राम

३७२

विनायकैषुनः स्वकाले कार्याणि यस्य संवत्सरादवाक्यस्य पिंडीकरणं कृतं मासि
 कंचोदकं भेदं च देवं तस्यापि वत्सरमिति मदनरत्ने गिरसोक्तेः न चोदं मासिकानां
 पक्षैर्विधत्ते किंतु सपिंडो नोर्ध्वस्वालेन ध्यानमेनेति वाच्यं आह्वानिषोऽशादत्ता
 नतु कुर्यात्सपिंडतावभिरोधात् यस्य संवत्सरादवाक्यं विदितानुसपिंडता १
 विधिवत्तानि कुर्यात्तपुनः आह्वानिषोऽशेति माधवीये गोभिलोक्तेः अवाक्यं सं
 वत्सराद्यस्य सपिंडीकरणं कृतं गोऽशानां द्विराह्वानिकुर्यादित्याहुर्गोतम इति तत्रै
 व गालोक्तेः षोऽशान्ते चैकादशाहसपिंडतयक्षे तत्राद्यमासिकस्य कालसंस्वा
 त् अथ पक्षेषु यथा संभवंते येषु दीपिकायां अनुसासिकानि चरेता न्येवसा
 पिंडतः यथा द्वादशे त्वक्ते नूतनानां तपुनः कृतिरित्युक्तं तदेतद्विरोधाच्चिंत्यं यत्तु
 गोऽशः सपिंडीकरणं तातु तेषां प्रेतक्रियाबुधैरपिरातातयोक्ते मासिकानां
 प्रेतत्वविमोक्षात् सपिंडतायकैर्न दंतन्यायेन तेषां मयायकैर्मासिक्या
 नानां तपुनः कृतिः यत्तु मासिकं चोदकं भेदेति लौगाक्ष्यादिवचनं तन्निर्मलं
 समलत्विपियरीयरंचेत्याहुः ते उक्तवक्ष्यमाणवचो निबंधविरोधात् प्रारब्ध
 इत्युपेक्ष्याः यत्तु मिताक्षरायां सपिंडो नोर्ध्वस्वकुले रावकार्याणि अप्यक्यं
 स्यतु कल्पत्युक्तं तदपि पूर्वविरोधाच्चिंतं तेन हृदिविनायकैषुनः कृ
 तिः अवाक्यं संवत्सराद्यस्य सपिंडीकरणं भवेत् प्रेतत्वमिह तस्यापि ज्ञेयं
 संवत्सरं न चेति अग्निपुराणा हृद्विनिमित्तायक्यं तस्यैव तन्निवृत्तिः

अथथाहृदिसंभवादिति ह्यलयाणिः कार्काजितिः सपिंडीकरणादवाक्यं
 पक्षपक्षकतामपि पुनरप्यपकथ्यते सधुत्तरनिषेधनात् निषेधवाहकात्पा
 यतः निवृत्ताहृदितंत्रमासिकानितंत्रयेत् अपापमरणं न भवेत् पुनरस्यात्ति
 हिरनुष्ठानं चोत्तरेषामेव न पूर्वेषां स्वकालकृतानां तदाह माधवीये कार्काजि
 निः अर्वागव्याघ्रयत्र सपिंडीकरणं कृतं तद्धर्मासिकानां स्याद्यथा काल
 मनुष्यितिः हेमाद्रौ रांरव्यायनिः प्रेतश्राद्धानिशिष्टानि सपिंडीकरणं तथा अप
 क्षयाकुर्वीत कुर्वीतां दीमुखं द्विजः तद्धि विनायकं दोषमाहोरात्रः तद्धि श्रा
 द्धानियमारेत् सश्राद्धी नरके घोरे पितृभिः सह मज्जतीति श्राधानेर्धमाह हेमा
 द्रावुशनाः पितृः सपिंडीकरणं कार्किके मतिवासे श्राधानाद्युपसंग्रहावेत्
 त्यागपितृसरात् विशेषस्तत्रैविवाहनिर्णयेकः एव न च श्राद्धं मासिकं च य
 दंतं रितं भवेत् तत्र पुनरसाते श्राद्धं न्येयं प्रवक्ष्यते गार्ग्येऽपि श्रापदाहकृतं तं
 तर्कमाह धर्ममताह नि श्रापदाहसपिंडीकरणं माधवीयेहारीतः यातु पूर्वममावा
 स्यात्तदाह दशमी भवेत् सपिंडीकरणं तस्या कुर्यादेव सतो निमान् मृत्याहाह
 धर्मदशमी एकादशीत्यर्थः सपिंडीकरणं कुर्यात्पूर्ववच्चानिमान् सतः परतो द
 शारात्रे चैत कुरुकोपरीतर इति कार्काजितिः स्मृतेः श्रादिताग्नेस्तेन विनाशोत्त
 पिंडपितृयज्ञासिद्धौ तदाह गालवः सपिंडीकरणं त्रेते येन कं यदमास्थिते
 श्रादिताग्नेः सिनीवाल्या पितृयज्ञः प्रवर्तते मदनरत्ने प्रजापतिः नासपिंज्या

373A

गिनमानपुत्रः पितृयज्ञं समाचरेत् आपराधं कात्यायनः एकादशाहं निरवर्त्य पूर्वद
 र्शाद्यविधिप्रकृतीनां गिनमान् विप्रो मातापित्रोः सपिंडतां आशौचात्तत्र प्रथमदर्शयो
 र्मध्ये कस्मिंश्चिद् दृष्टीत्यर्थः पित्रादीनां सपत्नीकानां देवतात्वेन मातुरपि तत्रानुप्रवे
 शान्न मातुरपि प्रागदर्शात् सपिंडनं युक्तमित्यपराधः एवं पितामहादेरपि सपिंडनं प्राग
 दर्शात् कार्यं तेन विना पार्वाणयोगात् द्वादशाहं वा कार्यं साग्निं कस्त्यदा कर्त्ता प्रेन
 आग्निमान भवेत् द्वादशाहं भवेत् कार्यं सपिंडीकरणं सुतोरिति गोभिलोक्तैः सामे
 प्रेतस्य त्रियक्षे प्रेतश्चेदाहितानिः स्यात् कर्त्तानग्निं ददा भवेत् सपिंडीकरणं तस्य
 कुर्यात् त्रयक्षे तृतीयक्षे इति सुमन्त्रैः मदनरत्ने लघुहारीतोपि अग्निं कस्त्यदा वीरभ
 वेत् कुर्यात् तदा गृही प्रेतश्चेदग्निमांस्तस्य त्रियक्षे वै सपिंडनं द्वयोः साग्निं च द्वादशाहं
 एव साग्निं कस्त्यदा कर्त्ता प्रेतो वाप्यग्निमान भवेत् द्वादशाहं तदा कार्यं सपिंडीकरणं
 पितृरिति तेनेवेति द्वयोरग्निं च तुभविष्ये सपिंडीकरणं कुर्यात् यजमानस्तमग्नि
 मान् अनाहितामैः प्रेतस्य पर्योक्ते भरतर्षभ द्वादशो ह निषण्णमासे त्रियक्षे वा त्रिमासि
 वा एकाशौपि वा मासि मंगलस्यायुषस्थितौ कात्यायनगोभिलौ यदहं वा हृदि
 रायद्यते तच्च हृदि नेष्टेति वाचस्पतिः तत्र प्रातहृदि निमित्तकमिति नियमात् सपि
 ण्डनस्य चापराह्णकालीनत्वेन पूर्वत्वात् वाचस्पतेः हृदि दिने तत्पूर्वदिने वेति श्रीद
 त्तः स्मार्त्तगोडस्तु तद्विपूर्ववर्षात्प्रक्षणाः सपिंडनस्य प्रेतत्वेनाशे सकारिते

नयेद्युर्विष्टाहृद्यभावेपितत्कर्तव्यता निश्चयसहितमेव कालांतरक्रियमाणसिद्धि
पूर्वकारसहकृतं प्रेतत्वेनाशकमित्याह तत्र प्रकालेकतस्य फलाजनकत्वा
न एतेन निमित्तनिश्चयवत एवाधिकाराहृद्यभावेपिनक्षतिरिति मिश्रशक्तिः परा
त्ताः हृदि पूर्वदिनस्य वर्षांतस्य च कालस्यांगत्वेन निमित्तत्वाभावात् तेन पुनः का
लमित्यने मदनरत्ने पुलस्त्यः निरग्निकः सपिंडत्वेपितुमात्तमधर्मतः पूर्णसंव
त्सरे कुर्याद्वा द्विवायदहर्भवेत् चतुर्विंशतिमते सपिंडीकरणं चाके संवत्सरे भ्युद
यपिवा द्वादशाहेतुके वा चित्तमंतं चेकादशे तथा षष्ठीचंद्रोदये वा धार्यनः अ
यसपिंडीकरणं त्रयोदशे वा तृतीये वा मासि षष्ठे चैकादशे वा द्वादशाहे चैका
दशाहे वेति एतेन क्रमे विष्टः मासिकार्धद्वादशाहं श्राद्धं कृत्वा त्रयोदशे द्विवा कुर्या
त्संवत्सरे किमुद्रणं द्वादशाहं संवत्सराभ्यंतरे यद्यधमासे भवेत् तदा मासकार्थं दिन
मेकं च वधार्येदिति श्राद्धोचोत्तरं द्वादशाहं स्वहः समासिकानि तेनैवाष्टमष्टद्वादशा
दिने कृत्वा मासिकादीनि कृत्वा त्रयोदशे द्विवा कुर्यात् सपिंडं न कुर्यात् अधिक मासे तु चतुर्दशे
द्वि कुर्यात् अत्र त्रयोदशे द्वादशे द्विवा कुर्यात् सपिंडं न कुर्यात् तदित्यपरत्वादिति षष्ठीचंद्रः
पैठिनसि संवत्सरांते संसर्जनं नवमे मासीत्येके अत्र सांतेरनगने वा कालाभावे
त्रिषादि संवत्सरांता अनुकल्याणेयाः कल्प्यन्तस्तेन हृदि निश्चय एव सर्वो
पकर्षप्रकार इत्याह तत्र यदहर्वेति स्वान्तं अश्रुतेः यद्यपि हृदि निमित्तोपकर्षो

५८५ ननत्रापकवर्षेतिश्राद्धकौमद्यादयः तत्र ऋतुज्ञातांतुयोभार्यामितिनिवेधाच्च ८५

374A

निरगरेरेवोक्तस्तथा साग्रापित्रेयः उक्तकालासंभवे वर्षांतादिगोणकाल
बत तद्वेदरयिप्राप्तेः वक्ष्यमाणगोभिलवचनात् अथात्तयामंमरांतनेभवेत्
नरस्यत्वितिदोषश्रुत्यविशेषाच्च अपरार्केयष्टीचंद्रास्वरसोप्येवं - - तत्र
द्विपदं चूडापनयनविवाहमात्रपरं सीमंतादौतुल्यद्विष्ट्राद्धलोपएवेत्याचार्य
चूडामणिः पुंसवनाद्यत्रप्राशनातेष्टावश्यकेष्टपक - - इतिश्राद्धविवेकः
स्मृतिसोमरेपितृहस्यतिः प्रत्यवायोभवेष्टस्मिन्नक्तनेहद्विकर्मणि तन्नि
मित्तं सपाकृष्यापित्रोः कुर्यात्सपिंडं गर्भाधनस्यतुरुत्त्वयिसंभवात् ग्राम्य
श्राद्धपरान्नचगंधमाल्यचमैद्युनमितिदेवलेनप्रथमाव्यमैद्युननिवेधाच्च
ब्रह्मचर्यचपर्वणापाद्याश्च त्रस्रवर्ज्येदिनिमैद्युनेदोषाभावाच्चापितामहम
रुणेणोत्रस्यसकौनायकवर्षः तस्यमहागुरुत्वाभावात् तत्रतदूर्ध्वभ्योहृदिमि
तिश्राद्धचंद्रका तत्र भ्रातावेत्यादौतदभावेप्यपकवर्षोक्तेः तेननिर्देशोऽप्युप
लक्षणं माघः श्रान्त्यातकुलधर्माणामुसांचैवायुषःक्षयात् अस्थितेस्वशा
रीरस्यद्वादशाहः प्रशस्यते एतदशौचांतोतृतीयदिनोपलक्षणं सर्वेषामेव
वर्णानामशौचांतेसपिंडनमितिनिर्णयामतेकात्यायनोक्तेः सर्वेषामितित्रै
वर्णिकपरं श्राद्धाणांशौचमध्येमंत्रवर्जिह्रिष्टद्राणंद्वादशोह्रनिकीर्ति

तमितिचिह्नकैः एतदृशं प्रादाधिकारिषु द्विविषयमित्यपराकैकल्पतरोच वृद्धम
 नुः द्वादशोहतिविप्राणामाशौचांतेतुभृभुजां वैश्यानांतुजिपक्षादावयवास्यात
 सपिंडं निर्णयामतेतेभिलः द्वादशाहदिकालेषु प्रमादीदनुष्ठेत् सपिंडीकर
 णं कुर्यात्कालेकतरभाविषु इदं सागेन तत्काला संभवे गोणकाल विधायमिति
 मदनपारिजातः मदनरत्नेष्वेव ऋष्यश्रंगः सपिंडीकरणं प्रादुमुक्तकालेन च
 तत्कृतं रौद्रेहस्तेचरोहिरण्यामैत्रमेवासमाचरेत् कालादरीषि एकादशोद्वाद
 शोद्दित्रिपक्षे वा त्रिमासि वा षष्ठे चैकादशो वा के संपूर्णं वा शुभागमे सपिंडीकरणं
 मध्येषु अष्टौ काला प्रकीर्तिताः सागेनोक्तं दुर्भावाद्योपेते सागेनोत्तरीयकः मुन
 नेस्तद्वितीयायाः सप्तकाला मुनीरेता रौहिर्योद्वादस्तेषु मैत्रमेवापितचरेत्
 नारदसंहितायांतु सपिंडीकरणं कार्यं चत्सरे वार्धचत्सरे त्रिमासे वा त्रिपक्षे वा
 मासि वा द्वादशोहति इत्युक्तं वत्सरे तीते ज्ञेयं ततः सपिंडीकरणं चत्सरात् परतः
 स्थितमिति भविष्योक्तेः पितुः सपिंडीकरणं वत्सरादूर्ध्वतः स्थितमिति नारद
 रंभोक्तेः पितुः सपिंडीकरणं वार्धिके मृतवासरे इत्युक्तं सोक्तेः संपूर्णं संवत्स
 रे पितुः षोडशः परिकीर्तितः तेनैव च सपिंडं त्वं तेनैवाधिकं मिष्यते इति हेमाद्रौ
 वचनाच्च मृशानाकरोक्तिस्तिरेवाक्तिरेव यत्तु पूर्णसंवत्सरे कुर्यात्सपिंडीकरणं
 सतः एकोदिकं वत्सरे च मृताहनि समापयेदिति धवलनिबंधे जावह्युक्तेः पु

त्रः सपिंडं न कृत्वा कुर्यात्स्नानं सचैलकं एकोद्विंशततः कुर्यात्कुतयेचाविवारयेदि
 नित्यल्यमात्स्योक्तेः षोडशत्वं च सपिंडं न स्य षोडशश्राद्धांतरभावपक्षे स्मृत्यर्थ
 सारे तु वर्षात्पदिने संवत्सरविमोक्षश्राद्धं सपिंडं न च कृत्वा परेष्टुमिता देवमर्थिकं
 कार्यमित्युक्ते गोडाश्रयेवमाहुः तत्पूर्वविरोधाच्चित्यं तच्च पुत्रे सति नान्यः कुर्यात् श्राद्धानि
 षोडशादन्तान्त कुर्यात्सपिंडं प्रोक्षितावसिते पुत्रः कालादतिचिरादपीति कथं वीयोक्तैः
 षोडशश्राद्धानां वर्षादूर्ध्वं कालाभावेपि तान्यदन्तान्त कुर्यात् किंतु धत्तेव तानियदिकनि
 ष्मश्राद्धादेना कृतानि तदा सपिंडं न मेव कुर्यादित्यपराकः सपिंडं न तु कनिष्ठानां नैवाधि
 कार इत्यर्थः तत्रैव ज्ञातानां दण्डवामोक्षान्न कृता चेत्सपिंडं तत्रापि विधिवत् कार्याका
 लादतिचिरादपि ते सुपिज्येष्ठस्यैवाधिकारः ज्येष्ठजातमात्रेण पुत्री भवति मानव
 इति मन्त्रैः अपराकै प्रचेतापि एकादशाद्याः क्रमशो ज्येष्ठस्तु विधिवत् क्रियाः
 कुर्यान्नैके कशः श्राद्धमादिकं तु पृथक् पृथक् मरीचिः सर्वेषां तमंतं कृत्वा ज्येष्ठे
 नैव तय कृतं द्व्येणां राविभक्तेन सर्वैरेव कृतं भवेत् यत्तु वाचस्पतिश्रुत्यापि भा
 मुक्तं इत्यदन्तानुमत्यभावे कनिष्ठेः पृथक् कार्यमिति तन्न एव कारस्य तदभावे पृ
 थक् करणाभावाद्यत्वात् अंधादेरिव ज्येष्ठे सति कनिष्ठानां मनेधिकाराच्च अ
 तस्तेषां प्रत्येवायमात्रं अहिताग्निः कनिष्ठस्तु कुर्यादेव अन्यथा पितृयज्ञासिद्धेः
 एवमावश्यकं ह्येवावपि कनिष्ठोऽप्यः सपिंडो वा कुर्यात् भ्रातावाभ्रातृपुत्रो वा स

पिंडः शिष्या एव च सह पिंडं क्रियां कृत्वा कुर्यादभ्युदयं ततः तथैव काम्यं यत्कर्मैव
 तस्य मादत्ते इति मदनरत्ने लघुहारीतवचनात् तद्वन्नंतरं प्रथमाद्येविकाम्यं म
 ध्ये कुर्यात् हृद्यभावे तु प्रथमाद्या इहमेवेत्यर्थः काम्योक्तं रनावरणकेष्टाय तौ
 दोनाय कर्षः एतत्प्राज्ञात् पुत्रादिसंस्कारे प्राप्ताधिकारस्य नां दीप्राद्धाधिकारा
 र्थं अभ्युदयमदं च नां दीप्राद्धनिमित्तकर्ममात्रपरमिति हेमाद्रिः तेन ज्येष्ठे प्रदेशं
 तरस्येकनिष्ठः सपिंडं न विनैव तद्विं कृत्वा पुत्रसंस्कारं कुर्यादिति श्रीदत्तोक्तिः य
 रास्ताभ्यां शिष्याद्युक्ते नां दीप्राद्धे ज्येष्ठदेवतामात्रपरोय कर्ष इत्यापस्तंब अस्पृज
 ममात्रपरत्वाद् द्विकर्तृव सपिंडं न कुर्यादिति न नियम इति गोशः अतएव कन्याया
 मातृमरणे भ्रात्रा सपिंडं न कृते पितृदोनाधिकारः श्रुत्या पाणिस्तु महापुरोषे त भर्ते ह
 द्विकर्मन युज्यते इति निषेधात् मृतस्य भ्रात्रादिः सपिंडं न कृत्वा तत्पुत्रकन्यादेरभ्यु
 दयं कुर्यान्न तु सपुत्रसंस्कार्यपितुः सपिंडं न विना तद्विं देवतात्वात्मादित्याह तत्र
 देवताप्रयुक्ता एव कर्षस्य निरस्तत्वात् तद्विं चिना कनिष्ठे न कृते तु विदेशस्येन ज्ये
 ष्ठेन पुनः कार्यं प्रवीयसा कृते कर्मप्रेतशब्दं विहाय तु जज्यापिसा यकर्तृव्य सपिं
 दीकराणां पुनरिति स्मृते ज्येष्ठेन वा कनिष्ठेन सपिंडीकरणे कृते आद्यपादे मातापित्रोः
 कनिष्ठेनेति वाठः देशान्तरगतानां च पुत्राणां तु कथं भवेत् कृत्वा तु वयनं कार्यं
 दशाहं तेति लोदकं ततः सपिंडीकरणं कुर्यादेकादशे हनिद्वा दशाहेन कर्तव्यमि

376A

निशातानयोब्रवीदिति वचनाच्चेति भट्टाः । सिंगारभट्टीयेष्वेवं पूर्ववचनेन
 मूलचिंत्यं सत्यस्य सारे तु विभक्तं कृदिकामाश्रयः यद्यक सपिंडीकर
 णं कुर्युरित्युक्तं अत्र दत्तकस्य तत्पुत्रादीनां च विरोधः प्रागुक्तः केचित्तु तद्धि
 विनापिकनिष्ठस्य सपिंडनमाहुः मातापित्रोर्मते काले ज्येष्ठे देशांतरस्थिते
 कनिष्ठेन प्रकर्तव्यं सपिंडीकरणं तदेति कार्त्तमात्रेति स्मृतेः गते वा सेधत्ते ।
 ज्येष्ठे पित्रा वा प्रोक्षिते सति वणमासान निवर्त्तेत तदा कार्यं कनीयसां सर्वत्र पुनः
 सपिंडीकरणं प्राहुः पार्वणवचरेत् अर्घसंयोजनं नैव पिंडसंयोजनं चेति तेव
 च सां निर्मूलत्वात् प्रेयिता वसिता पुत्रः इत्यादिविरोधाच्चोपेक्ष्याः अकृममृत्तो
 तद्देमादौ ब्राह्मे मृते पितरि यस्या यविधचपिता मरुः तेन देया सुयः पिंडाः प्र
 पिता मरु पूर्वकाः तेभ्यश्च येन कः पिंडो नियोक्तव्यस्तु पूर्ववत् मातये यम
 तायां च विधत्ते चापिता मही पूर्वास्तु कार्यस्तत्रा ययं विधिः एवं प्रपिताम
 हचमेतं नृपित्रादिभिर्ज्ञेयं तदाह सुमंतः जयाणामपि पिंडानां मेकेनापि
 सपिंडने पितृत्वमश्रुते प्रेत इति धर्मा व्यवस्थितः यत्तु व्यक्तमात्रं प्रमीता
 नावेव कार्या सपिंडीते तन्मात्रा पितृभर्त्ता भिन्नविषयं व्यक्तमेव ताना
 न सपिंडीकृतं रिष्यते यदि माता यदि पिता भर्त्ता नैव विधिः स्मृत इति मा

धर्मीयेरुक्तोक्तैः मदनरत्नादौ चैवं अत्र प्रपितामहादिभिः पितुः सपिं
 उने कृते पितामहे मृते तत्तत् सपिं उने सति पुनस्तेन सह पितुः सपिं उने कृ
 दमिति हेमाद्रिमतमाह अन्येनेतन्मन्येतेतत्तत्तु पितुः सपिं उने पितृत्वमश्रुतेमेतत्
 धर्मो व्यवस्थित इति विष्णुधर्मोक्तैः पितामहे प्रपितामहे वा पुजांतरैः परसंस्कृतेष्वसं
 स्कृताभ्यामेवापितुः सपिं उने कुर्यात् असंस्कृतौ न संस्कार्यौ पूर्वौ पौत्रपुपौ जकैः पि
 तरं तत्र संस्कार्यौ दितिकात्यायनो ब्रवीदिति छंदोगपरिशिष्टात् असंस्कृतौ च दा
 दाद्यैरितिकेचित् असपिं उने कृताविति तत्तत् अत्रावोक्तं तत्रैव पापिष्ठमपिष्ठुः
 केन मुहुं पापकृतापि वा पितामहेन पितरं संस्कुर्वीदिति निश्चयः पापिष्ठमकृतस
 पिं उने न तु पतितादि अभिशस्तयतितभ्राणघ्नः सुयश्नातिचारिणी न संसृजेदिति चै
 जयायोक्तैः पापकर्मिणो न संसृजेरत्रिति गौतमोक्तैः श्रुत्युक्तं निर्णयामृते पूर्वयोः पु
 त्राभावेन पौत्रः कुर्यादेव पितामहः पितुः यश्चात्पंचत्वं यदि गच्छति पौत्रेणोक्तादशाहा
 दिकर्तव्यं प्रादुर्भावेन तत्पौत्रेण कर्तव्यं पुत्रं वा श्रेष्ठं पितामहः पितुः सपिं उने कृ
 त्वा कुर्यात् न मासानुमासिकमिति कात्यायनोक्तैः अपराक्तं अलपारणौ चैवं तेन सपिं
 उने स्यान्नित्यत्वादकृतसपिं उने योरेव पार्वणानुप्रचेतशान्तिमर्यादोक्तैः परस्तादृशे
 सपिं उने करणे प्रेतः पार्वणभावेन वेदितुं हारीति विरोधाच्च केचित्पुत्रांतराभावे पिताम
 हे वार्षिकमप्याहुः तत्र प्रादुर्भावेन नियमात् इत्याभचत्येव पितामहस्य चैव

377A

देकोदिष्टं न पार्वणमिति वाचस्यति धृतगोर्गोक्तेः त्रयाणां यौगयधेतु प्राधान्यात्पि
तः सपिंडं न कृत्वा पूर्वयोः कुर्यात्पितामहस्य ते दशाहंतः पितृमृतो पितुः संस्कारं
कृत्वा पितामहस्य पुनः सर्वमावर्तयेत् तत्रेदं दशाहं नैवं अशक्त्या पित्रा नृत्तानेन पौ
त्रेण पितामहस्य प्रजाते पित्रमृतौ तदा शौचं वदने वपौत्रः पितामहकर्मकु
पीत्प्रजांतत्वादिभिर्ज्ञातमदनपारजातपृथ्वीचंद्रौ यत्तु उत्तराजितयारौ दूरोद्दिष्टौ
याम्यसर्धपितृभेद्युच्चारितभेषमशुकर्मसकल्पचवर्धयेत्तत्कार्यमिति बुद्धिः
माननरः इति सपिंडं न प्रकरणं यागान्मुखकले निधिद्वर्त्तयितुं सपिंडनाकर्षः सर्व
कालेन तद्वत्त्वेन हजान्येव पूर्वोक्तब्राह्मणानिष्ठाऽश्राद्धानि कार्याणीति वाच
स्यति मिश्राः तत्र अस्पृशपरिभाषात्त्वेन वाक्यात्साचकाशकर्मपरत्वात् अस्पृशे
तमात्रदेवत्यभावाच्च अश्रुसौख्यं च ते हेमाद्रौ हहेमाद्रौ तदस्यतिः भर्तृगोत्रेण
नामाचमातुः कुर्यात्सपिंडं यत्तु भविष्ये पितृगोत्रं समुत्सृज्य न कुर्याद्रतः
गोत्रत इति तदासुरादिविवाहोदापरं आसुरादिविवाहेषु पितृगोत्रेण धर्मवि
दिति वद्विशात्तातयोक्तेः तच्चानेकवचनेषु पितामहमातुः कुर्यात्सपिंडं पु
त्रीतपितृकः पित्रा नृत्तपित्रा पुत्रका सतः तत्पित्रा मातुः पित्रालौर्गर्भिपिताम
हादिभिः सार्द्धमातरं न सपिंडयेत् पितृरधिपमातेन तेनैवोपरते सान्ति शाखः
मातुः सपिंडीकरणं कर्तव्यं भवेत्तु तः पितामहादिभिः सार्धं सपिंडीकर

नि.सिं.

३६८

३७८

रणां स्पृते येन केनापि मातुः सापिंडो यजान्वाद्यवा दौ मातुः प्रादं पृथगुक्तं तत्र
यिता मद्यासह कार्यनां दीनुरेव वकाश्यादे गद्या योचमने हनि यिता मद्यादिः सार्धं
मातुः प्रादं समाचरेत् इति शातातयोक्तेः अयुजायां नृपै हीनसिः अपुजायां नृपतिः
कुर्व्यात्सपिंडं स्वस्त्रादिभिः सहैवास्याः सपिंडीकरणं भवेत् यत्र लघुहारीतः पुत्रो
वत्सकनैव सपिंडीकरणं स्त्रियाः पुरुषस्य पुनस्तत्प्रेभ्रातृपुत्रादयोपि च यच्च मार्कंडेय
पुराणे सपिंडीकरणं स्त्रीणां पुत्रभावेन विधत्ते तत्पुत्रपत्यभावे ज्ञेयं अत्र सपत्नीपुत्रो
पि ज्ञेयः वहीनामेकपत्नीनामेकाचेतपुत्राणि भवेत् सर्वास्तास्तनपुत्राणां प्रादपुत्रव
तीर्मुनः इति मन्त्रेरेतस्य त्परत्वात् यत्र शातातयः मतेपितरि मातुस्तन्नाकार्यास
हपिंडता पितुरेव सपिंडतेतस्या अपि कृतं भवेत् इति तदशक्तपरं केषां विद्वामतमिति
हेमादिः अन्वारो ह्येतु भर्तृवसापिंडं मत्तायानुगतानां यं सातेन सदपिंडतां अहंति
स्वर्गवासे च यावदाभूतसंस्तवामिति शातातयोक्तेः यस्याचैकेन कनैव सपिंडीकर
णं स्त्रियाः समत्तापि हितेनैक्यं गतामं वाहुति ज्ञेयैरिति यमोक्तेः अत्रैकशब्दः यिता
मद्यादिपक्षनिवृत्त्यर्थः यतिपदं वर्गपरं सपिंडनस्यापि विशेषोक्तो दृष्टरूपत्वादिनिमा
धवः कल्पतरुमदनरत्नादयोपि अन्ये न भर्तृचैकेनाहुः स्वेन भर्ता सहैवास्याः सपिं
डीकरणं भवेदित्येवकारप्रवणान् पृथ्वीचंद्रोदयोपिविकल्पउक्तः इदं तु तत्त्वं य
दाहहेमाद्रादिमते द्वयोरेकः पिंडः तदा वर्गेण सहा यदाह हेमाद्रिपि मते माध

मत्तायां ३

राम
३६८

378A

वपुष्ठीचंद्रादिमतेष्टयकपिंडस्तदेकेनपत्येवावचनाच्चैकेनापि अतोमातृ पिंडम
सपिंडीकृतेतेनैवपतिपिंडेनसंयोज्येकीकृतपिंडद्वयंतात्त्रिजादिभिः संयोजयेत्
अथपुत्रपक्षेयुक्तः स्मृत्यर्थसारतुम्बाराहणेनैकदिनमरणेस्त्रियाःष्टयकसपिंडेना
स्ति भर्तुः कृतेस्त्रियाः अष्टयकृतं भवतीत्युक्तं तन्मांतरमस्तु इदं ब्राह्मणादि विवाहेषु ज्ञेयं आ
सुरादिषु तृणातातयः तन्माजातपितामस्वाभ्यां वा सपिंडे आसुरादि विवाहेषु वि
जानां योषिनां भवेत् मातामहमातुः पितामहान्तरपितामहाचेत्यर्थः समंतु पिता
पितामहयो ज्यः पूर्णसंवत्सरे सुतैः मातामामहेतद्वदित्याह भगवान् शिवः इदमासुरादि
परंपुत्रिकापुत्रपरंचौक्तं प्राक् हेमाद्रिस्तु ब्राह्मणादिष्वपि सर्वत्र देशमधादिविकल्पमाह
अतएवमर्धरेषु को किल मत्तानुसारिणो मातृमातामहप्रमातामहा इति प्राद्वंशगः स प्र
पिंडं न च दूषयते हेमाद्रावायस्तवोपि के किलस्य यथापुत्रा अन्यसंचयजीविनः पुष्टा
स्ते स्वकुलं याति एवं नारी मत्ता सती यद्यपि विज्ञाने श्वरोमातामहेन मातुः सापिंडे
पिष्टेपितृप्राद्वन्मातृप्राद्वं नित्यं पित्राहयच्च हर्द्धिप्राद्वंधं दोगपरिशिष्टं यज्ञं पि
तृभ्याः स्तदनुप्राद्वदानमुपक्रमेदिति तदेतद्विषयमेव मातुः ष्टयकप्राद्वभावात्
अतएव हेमाद्रौ भविष्ये मातुः सपिंडं न प्रक्रम्य उदते अनुदिते चैव होमभेदो यथा
भवति यथा कुलक्रमपातमाचारं च चरेदुधश्लुक्तं अस्य हृद्वाक्पवादमाह
तत्रैव व्याप्य पातं कुर्यात्मातामहप्राद्व सर्वदा मातृ पूर्वकं विधितो विधि

नि.सि.
३७६

३७९

मास्यायसहोमातामहादितत केचिदेतत्पुत्रिकापुत्रपरमाहुः पत्न्यः सापिंज्यमाह
लोमाक्षिः सदाभावे स्वयंपत्यः स्वभर्तृणां ममंत्रकं सपिंडीकरणं कुर्यान्नतः पावण
मेव चेति यत्र वचनं अपुत्रस्य परेतस्य नैव कुर्यात्सपिंडतामिति यच्चापसंबः अपु
त्राये मृता केचित् पुरुषा वास्त्रियोपि वा तेषां सपिंडनाभावादेको दिष्टं न पावणमि
ति तत्पुत्रोत्पादनविधिप्रशंसार्थमिति माधवः सपिंडीकरणादूर्ध्वमेको दिष्टं विधी
यते अपुत्राणां च सर्वेषामपत्नीनां नथेव चेति हेमाद्रौ प्रचेतसे तन्न च अन्ये द्विविधः
वाक्यदरीनाद्विकल्पमाहुः सस्यत्यर्थसमरे पित्रस्तचारिणामनयत्याना च सपिंड
नतास्ति तेषां सदेको दिष्टमेव व्यक्तममृतानां सापिंज्यकार्येन च केचित्सर्वत्र सपिं
डने माहुरिति अपुत्रेषु पुत्रममृतं विरोधोरेणुकारिकायां भ्रातावाभात्पुत्रो वा
सापिंज्यः शिष्या एव वा सपिंडीकरणं कुर्यात्पुत्रहीने मृते सति सर्वबंधुविहीनस्य
पत्नी कुर्यात्सपिंडतां अतृजंकारयेद्वापि पुरोहितमथापि वा वसुरुद्रादिति सु
ते कार्यं तेषां सपिंडनं व्यक्तममृतप्रमीतायेतद्दिना प्रेतता ध्रुवं पुनः सपिंडनं तेषां कु
र्यात्प्रेतेपितामदेति अत्र मूल्यं मृत्यं यतीनां सापिंननास्ति किंचिद्वा दरो द्विपावण
कार्यतादपि त्रिदंडिनः एकदंष्ट्रादीनां तदधिनेत्युक्तं प्राक् दंडग्रहणात् पूर्वमृते तु
दाहदिसपिंडनां न सर्वकार्यमिति भट्टचरणः सपिंडनविधिमाह वैजयोपः समाप्ते
संवत्सरे चत्वार्युदकपात्राणि प्रपुनत्तेयं कं प्रेताय क्रीणि पितृभ्यः प्रेतपात्रं पितृ

३४

राम
३७६

पात्रे स्थासिंचति जे समाना इति द्वाभ्यामेवं येंडोया भिम शत्ये षवो नुगतः प्रेतः पितरस्तं
 ददाति वः शिवं भवतु शेषाणां जायतां विरजी चिरः समानी वः संगच्छन् संवदध्वमि
 ति यद्यपि तच्चापि देवरहितमे कार्यं कथंचित् कं नैवाग्नौ करणं तत्र तच्चासु न वर्जि
 तमिति मार्कंडेयेनाक्तं तथापि सपिंडीकरणं श्राद्धं देवपूर्व नियोजयेदित्यादिविरो
 धादिकल्पः प्रेतो शेषा ज्ञेयं अत्र काम कालौ वैश्वदेवाचित्युक्तं प्राक् मैत्रायणीयारे
 सिद्धे पितृभ्यः प्रकृतो मः साम्नेरपि भवेदिह यत्तु गोभिलः अनुक्त काले च पितृभ्युक्तं
 मेण श्रुता वपि श्रामेन वापि सापिंडं हेमन्वावापि प्रकल्पयेदिति तदा यदस्मात्तापि
 तृभिन्नपरं आपन्नो नपि कुर्वीत श्राद्धमासेन कर्हि विदिते नैवाक्तेः श्रुति तत्त्वे ।
 कामधेनौ सपिंडीकरणं यावत्तु प्रेत श्राद्धं तु बोडशं च दद्यात्तैव कर्त्तव्यं सामि वेण द्वि
 ज्ञातिभिः विष्णुप्रकारेण प्रेतः सपिंडना इह ध्वं पितृलोके तु गच्छति कुर्यात्तस्य तु पापेयं
 द्वितीये द्विसपिंडनात् स्मृत्यर्थं सारेष्वेवं ततो ह्यर्द्धश्राद्धं कुर्यात् एतत्सालमासेपि
 कार्यं अधिष्ठासेन कर्त्तव्यं श्राद्धमाभ्युदयं तथा तथैव काम्यं यत्कर्म वत्सरात्प्रथमा
 हते ॥ ॥ इति श्रीकमलाकर भट्टकृते निर्णयसिंधौ सपिंडीकरणं तथा प्रथमा
 द्वे निविधानि हेमाद्रौ स्नानं चैव महादानं स्वाध्यायं च अग्नि तर्पणं प्रथमेन्देन कु
 र्वीत महागुरुनिपातेने अग्नि तर्पणं लक्ष्मोमादिनत्वाधानं तत्तु प्रथमादे
 भवत्येव तच्चाह हेमाद्रौ स शानाः पितृः सपिंडीकरणं वार्षिके मृतवासरे अ

नि.सिं.

३८०

380

भानाद्युपसंप्राप्ताच्चैतत्प्रागपि वत्सरात् ^अप्रत्यक्षमिति शुद्धितत्वे पाठः
आदिपदं हृदि निमित्तमित्यकर्मपरं दिवोदासीये महातीर्थस्य गमनमुप
वासं व्रतानि च संवत्सरं न कुर्वीत महागुरुनिपतने इदं श्राद्धकोमुद्योदे
वीपुराणस्य मुक्तमास्थे गौडनिबंधे जावालिः सपिंडीकरणादूर्ध्वप्रेतः
पार्वणाभुगमवेत् हृदीष्टापूर्वयोग्यस्रगृहस्थस्य सदा भवेत् वर्षात्सपि
नाभावेनाधिकारीत्यर्थः गृहस्थः सपिंडोपि इत्यर्थः अतएव प्रेतकर्माण्य
निवर्त्य चरेन्नाभ्युदयक्रियां प्राचतुर्यं ततः पुंसि पंचमेश्च भवं भवेदिति ज्योतिषे
उक्तं माधवीये देवलः प्रमौतौ पितरौ यस्य देहस्तस्याश्चिर्भवेत् न देवं नापि
वापि संयावत्सृष्टौ न वत्सरः पित्रं सपिंडं इदं वर्षांत सपिंडं न परंत येव कार
त्यं यत्कर्म वत्सरात् प्रथमादत्ते इति लघुहारीताद्येकवाक्यत्वात् हृदि निमित्त
यकर्वेत्तु काम्यादिभवत्येवेति गौडः अतएव लौगाक्षिः अन्येषां प्रेतका
र्याणि महागुरुनिपातने कुर्यात्संवत्सरादवोक्तश्राद्धमेकं तु वर्जयेत् या
हाद्वैकादेशाहंतकाप्येतत् श्राद्धाचारस्याप्रतिबंधकत्वात् अथ
श्राद्धमशुद्धीकुर्यादेकादशे हनी तुक्तेश्च एवं सपिंडं पत्न्या दोत्यवा दमाह
अथ अगः यस्यापुत्रस्य तत्पुत्रभात्रोस्तत्तनयस्य चोसुषास्रस्रापित्रोऽस्रं
घातमरणं यदि अवागवान्भ्रातृपितृपूर्वं सपिंडमाचरेत् लौगाक्षिः यत्नीपुत्र

राम
३८०

स्तथाप्यौत्रोभातातत्पुत्रकाश्रपि पितरोचयेदेकस्मिन्म्रियेरन्वासरेतदा आद्य
 मेकादशेकुर्यात्त्रियक्षेतत्सपिंडनं धवलनिबन्धे महागुरुनिपातेतुप्रेतकार्यं य
 याविधिः कुर्यात्संवत्सरादवर्गोकोदिष्टंनपार्वणं भगुः माताचैवतथाभाताभार्य
 पुत्रस्तथासुया एवांमृतौचरेच्छाद्रमन्यस्यनयतः पितुः एतदपिसपिंडनपरं पितु
 मृतावन्यस्यप्राङ्गचरेदित्यर्थः शुद्धितत्वेप्राङ्कौमुद्यादेवलः अन्यप्राङ्परा
 न्नचगंधमाल्यचमैषुनेवर्जयेद्गुरुपातेतुपावत्पूणीनवत्सरः पारस्करभाष्येह
 स्यतिः पितर्युपरतेपुजोमातुःप्राङ्गान्निवर्त्तते मातर्यपिचतृतायांपितृप्राङ्गादुते
 समां समंपितरंविनान्यप्राङ्गनेत्यर्थः शुद्धितत्वेदेवलः महागुरुनिपातेतुकाभ्यं
 किंचिन्नचावेदेत् आर्त्तिज्यं व्रतचर्यं चप्राङ्गदेवक्रियांतथा एतत्सपिंडनात्प्राग्नि
 तिकेचित्तत्तदुत्तरमपीत्यन्ये प्राङ्कौमुद्याकालिकापुराणेष्वेवाग्रे विशेषतः शिवा
 पूजाप्रमीतपितृकीनरः पावद्दत्तरपर्यंतंमनसापिनचाचरे केचित्तु पित्रारकम
 शौचंस्यात्वा एमासंमातरेवच जैमासिकं तभार्यायास्तदर्थं भ्रातृपुत्रयोरिति
 स्मृते सपत्नमातरव्दार्धमाहुः प्राङ्कौमुदीकारस्तु द्वयोरेवमहागुर्वारकमे
 कमशौचकं नान्येषामधिकशौचं स्वजातिविहितान् किलेत्रिसमूलजा
 त्कर्त्तव्यविरोधान्निर्मलमाह हेमाद्रौभविष्ये गायाप्राङ्गमृतानांतुपूरेत्त्वदेप्रश
 स्यते त्रिस्थलीसेतौगासुडे तीर्थप्राङ्गं गायाप्राङ्गं प्राङ्गमन्यच्चपैतकं अथमध्ये

नि.सि.
३८१

381

नकुर्वीतमहागुरुविद्यनिष्ठु इदं ह्यर्थस्यपिंडताभावे ह्येसपिंडनायकैर्ब
मध्येपिदर्शकार्यमेव पितुः सपिंडनं कृत्वा कुर्यात्प्रासानुमामिकमिति धंदो
गपरिशिष्टान् सपिंडीकरणहर्ध्वप्रेतः पार्वणभुग्भावेदिति मात्स्यान् ततः प्र
भृतिवैप्रेतः पितृसामान्यमश्रुते विदते पितृलोके च ततः आहुं प्रवर्तते इति सा
रीताच्चेति श्रुत्वा पाणिः यत्तु कानीयं सपिंडीकरणहर्ध्वनदघात प्रतिमासिकं
एकोदियविधानेन दद्यादित्याह शौनक तत्रैकोदिये विधिनानदघादित्यान्वयः तु
यथा देन पार्वणविकल्प उक्तः अत्रेदंतत्वं हर्ध्वं विना वागपि सपिंडनायकैर्ब पित
त्वप्राप्तिर्वैर्वातएव कृते सपिंडीकरणपितुः संवत्सरात्परं प्रेतदेहं परित्यज्य भोग
देहं प्रपद्यत इति विष्णुधर्मोक्तेः अर्वाकू संवत्सराद्यस्य सपिंडीकरणं भवेत् प्रेतत्वं
मपितस्यापि त्रेयं संवत्सरं न्यपेत्य मिथुराणाच्च तेन तत्संवेपि वृद्धिरेव पित्रे क्वन
धिकारः हर्द्धि इति निमित्ते त्वनंतरमेव अर्वाकू संवत्सराहर्द्धौ संपूर्णं संवत्
सरेयिवा ये सपिंडीकृता प्रेतान ते वां तु प्रथक् क्रियेति शातानयोक्तेः तथैव
काम्यमिति हेमाद्रिधृत सारीतादिवशाच्चैवेति तथा दर्शप्राहुं गयाप्राहुं आहुं
वायरयक्षकं प्रथमे वेदिकुर्वीत यादे स्यान्नक्तिमान् उतः मासारं आहुं तदा
निति मदनपारजातादयः अन्ये यथा श्रुत्वा माहुः तत्वं तु यदीदं समुलं तदा हर्द्धिं
विनायकैर्ब सर्वहर्द्ध्यैरुपरमिति योज्यात् पतिना नांगयायां विशेषो ब्राह्मे

राम
३८१

क्रियते पत्नितानां च गते संवत्सरे क्वचित् देशधर्मप्रमाणत्वाद्वा कया प्राक्ते स्वबंध
 मिः अथ विधानानि तत्र पंचकर्मते मदनरत्ने गारुडे आदौ कृत्वा धनिष्ठा धर्मते
 न सत्रपंचके रेवत्यंते सदा दृश्य मम भेदाह कर्मणि शवस्य तु समीये तु क्षेप्रव्यापुत्त
 लास्तदा दर्भमयास्तु चत्वारः अक्षमंत्राभिर्मंत्रिताः ततो दाहः प्रकर्त्तव्यस्तैश्च पु
 न्नलकैः सह सत्तकांते ततः पुत्रैः कार्यं शांतिर्कौषिकं पंचकेषु मृतो यो वै ना
 तिलभते नरः तिलाश्च चक्षुराण्य च तमुद्दिश्य घृते ददेत् क्रियानिवंधे भाजनो
 पानहो घृत्रं हेममुद्रां च वाससी दाक्षिणा दीयते विप्रैः सर्वपातकमोचनी मदन
 रत्ने गार्ग्यः यदि भद्रातिथीनां स्याद्भानुभोमशनेश्चरैः त्रियाहस्यैश्च संयोगो ह
 यो र्योगो द्विपुष्करः द्वित्रिपुष्करयोगो नृमृतिर्ह्यंत्यंतरावहा दहने मरणो चैव त्रि
 गुणं स्यात्त्रिपुष्करे खनने व्येवमेव स्यादेतद्दोषो यशांतये तिलपिष्टे यवे वा
 पिरारीरंकारयेत्ततः सूर्यनिधायालं कृत्य दाहयेत्तत्कोपरितद्दोहं मंत्रमाह
 वौधायनः अस्मात्त्वामिति मंत्रेण तिलपिष्टं प्रदाहयेत् द्वित्रिपुष्करयोर्दोष
 स्त्रिभिस्तद्द्वययो हति वा सवे मरणं चेत्स्याद्दोषो वापि पुनर्मृतिः सुवर्णादाक्षिणां द
 घात कृत्वा वसुमथापि वा वाससंधनिष्ठा ब्राह्मे कुंभमीनास्थिते चंद्रे मरणं य
 स्य जायते न तस्योर्ध्वगतिर्दृष्टा संततो न मम भवेत् न तस्य दाहः कर्त्तव्यो वि
 नारात्स्वेषु जंतुषु अथ वा तदिने कार्या दाहस्तु विधिपूर्वकं धनिष्ठा पंचके

नि.सिं.
३८२

382

नीवोम तोयदिकथंचन त्रिपुष्करेयाम्यभेवाकुलजानमारयेक्ष्वं तत्रा
निष्ठविनाशायविधानं समुदीर्यते दर्भणाप्रतिमांकार्याः पंचोक्तसूत्रवेष्टि
नाः यद्यपिष्टेनानुलिप्तास्तभिः सहस्रवन्दहेतु प्रेतवारः प्रेतसरवः प्रेतयः प्रेतभ
मियः प्रेतहृत्पंचमस्तु नामान्येतानि चक्रमात्र सूत्रप्रतिमाः गंधपुष्पैः पूज
यित्वा प्रथमां शिरसि द्वितीयां ते त्रयोः तृतीयां वामकुक्षौ चतुर्थीनाभौ पंचमीया
दयोर्मध्यस्थतदुपरि नामभिर्धृतं कुत्वा यमायसोमं शंखकमिति मंजाभ्यां प्रत्येकं
तास्याज्यं कुतेदिति भट्टाः सूतकांतेततः पुत्रः कुर्यात्प्रातिक्रियाधिकं कांस्या
अस्थितं तैलं वीक्ष्य दद्यात् द्विजन्मने ब्रह्मविष्णुमहेशं दुर्वरुणप्रीतयेततः माघ
सुक्लपक्षे त्रीहिरियं गवादिप्रयधति स्वर्णदानं रुद्रजलक्षहोमो द्विर्जीचने गोभृदा
नं षडंगेन कुर्याद्दोषोपशान्तये अथ राके धनिष्ठा पंचकमृते पंचरत्नानितन्मु
रेव प्रास्याद्भुतित्रयं तयं तज्जुते द्रुहवयामिति ततो निर्हरणं कुर्याद्दोषसागेर्वि
धिः स्मृतः इतरं निरवनने च जले वा प्रतिपादयेत् त्रियादक्षमृतेन द्विद्विराण्यश
कलं मुखे तस्यापिष्टमयं कुर्यात्सकुंभप्रतिपाद्यवनिर्पाजसाग्निकं कुक्ष्या
द्रुमगौवान्यमुस्तजेत् तत्रैव कनकं हारकं नीलकं पद्मरागं च मोक्तुकं
पंचरत्नमिदं प्रोक्तं ऋषिभिः पूर्वदर्शभिः रत्नानां चाप्यभावे तु स्वर्णं कर्षार्धमेव
वा स्वर्णं स्थाप्य भावेत आज्यं तेषां विचक्षणैः मदनरत्नेष्वेवं तथा एकाशी
४४ कुर्यात्पुरुषतनयंततः होमं प्रतिमुखं कुर्यात्तथा ब्रह्मवयामिति कार्त्तयसंचकार्या राम ३८२

न फलं कास्य तदर्थं वा तदर्थं कं तत्र षट्त्रिंशलं चापि दद्यात् विप्राय शक्तिः तथा
 न्यत्र स्वर्गहोक्ता विधानेन कृत्वा गौः स्यात्पुनः ततः श्रुत्वा धानं निर्दयस्त्वा देवता
 नां तथा कृतिः यमाय धर्मराजाय मन्त्रवे चान्ताय च वैवस्वताय कालाय सर्वभू-
 तक्षयाय च ओं वराय दध्याय नीलाय परमेष्ठिने हवो दराय चित्राय चित्रगुप्ताय वे-
 मात विधिना श्रयणं कृत्वा एकैकामाहुतिं हुतेत् कृष्णां गां कृष्णवस्त्रां च ह्ये निष्-
 समचितं दद्यात् विप्राय शान्ताय प्रोतो भवतु मे यमः त्रियाक्षो ज्योत देव श्रुपराक्षे पुन-
 र्वस्त्रराखां दाहन्ति कोत्र रफालुनियुर्वभाद्र विहारवाच जेय मे तत्रिपादा भंमय
 रचित्रे गार्ग्यः मृतः श्मशानं यो नीत उपजीवति मानवः गृहे यस्य प्रविष्टो सौति
 छेदय कदाचन अचिरात् तन्मुमायाति हतदारय रिग्रहः तत्र शान्तिं प्रवक्ष्यामि धर्मरा-
 जमते यथा सक्षीराणां घृता कृतानां मग्ने कृत्वा मुखे बुधः ओं वराणां विधिवत्ततः
 शान्तिः कृता भवेत् सा विप्रश्च स हस्त्रिणाक्षीर शान्तिं च कारयेत् कपिलान्ति लकां
 स्यात् च कृत्वा ते भरिदक्षिणेति अथ ब्रह्मचारि मत्तौ रौनकः ब्रह्मचारि मत्तौ रौनिक
 थयामि समासतः तत्रा कीर्ण दोषस्य प्रायश्चित्तं प्रशान्तये द्वादशाक्षं वऽक्षं वा श्रु-
 तं शान्त्याथवा चरेत् स्मार्त्तको ब्रह्मचारी च न धनं प्राप्नुयावद्यदि संयोज्य चार्क
 विधिना संयोज्यो तौ तन्नन्यर देशकालौ स्मृत्वा मुकगोत्रा मुकनाम्नो मृतस्य

नि.सिं.

३८३

383

ब्रह्मचारिणो व्रतलिसर्गकरिष्येत्सुततस्मान्नादीश्राद्धं कृत्वाग्निं प्रतिष्ठाप्या धा
रांते च तस्य भिक्षा इति भिरग्नये व्रतपतये व्रतानुष्ठानफलसंपादानाय विश्वेभ्यो दे
वैवाभ्यश्नाज्यं कृत्वा स्विष्टकृदात्तादिसमाप्य पुनर्दशकालौ स्मृत्वा कर्कविवाहं करि
ष्येत्सुततस्मान्नादीश्राद्धं कृत्वा कर्करावा रावे च हरिद्रया लिखापीतस्रज्जगवस्र
पुगेन वा वेष्मन्ति प्रतिष्ठाप्या श्रांते ग्नये हस्तस्य न च विवाहविधियोजका यच
यस्यैव कामकामायेति कामाय व्या इति भिक्षा ज्यं कृत्वा स्विष्टकदादिसमाप्य कर्करा
वा रावे च दहेत् विधानमालायां येषां कुले ब्रह्मचारी निधनं प्राप्नुयाद्यदि तत्कुलं
क्षयमाप्नोति सोऽपि दुर्गतिमाप्नुयात् स तस्य प्रियमाणस्य षड्वं व्रतमादिशेत् त्रिंश
त्तु ब्रह्मचारीभ्यो दद्यात् कोपीनकात्रवान् हस्तमात्रा कर्कमात्रा दयात्कृत्वाग्निं
नानि च यावद्दुकाद्वत्रमाल्यानि गोपीचंदनमेव च मणिप्रवालमालाश्च भू
षणादिसमर्पयेत् एवं कृते विधाने च विष्णुः कोपिन जायते अत्र मूलमृग्यं पु
ष्टिमृतौ तु यमः स तस्य कृष्टिनो देहं निखने दोषभूमिषु वा सरजितयं पश्चादु
त्पान्य जने दहेत् न गंगा प्रवनं कार्यं निक्षेपे विधिरुच्यते षड्वं व्रतपरीतविधिक्र
तंचरेत् ततोऽपि संचयं तस्य गंगायां पुक्षियेत् सुधीः मासि मासिततः कुर्यात्मासि
श्राद्धानि पार्वर्णिन इत्येतत् कृष्टिमरणे कथितं शास्त्रकोषिदेः शुद्धितत्त्वमविष्ये

राम
३८३

मण्डककृष्णगणविप्रउत्तरोत्तरतो गुरुं विचचिकायडश्रुमाचर्चरीयस्तृतीयकः
 विकर्चुव्रणतागेनोचकृष्णमेतेतयावकमित्युक्ता मतेचप्राययेतीर्यमथवारु
 मूलकं नयिंउंनोदकं कार्यनचदानक्रियाचरेत् घाणमासीयेजिसासीयेमृतः क
 र्कदाचन यदिसेहस्ररेदहंयतिचाद्रायणचरेत् अकृतप्रायश्चित्तकृष्णादिदा
 हेइदंप्रायश्चित्तं अतएवकुनख्यादिचकुष्ठिनोपिद्वादशारात्रंमृत्तिपाणिनोक्ते
 अतएवान्यदीयंकुष्ठिनोमरणान्तमरौचयुक्तंकोर्मक्रियाहीनस्यमरुच्यस्यम
 हारोगाणावच यथेष्टाचरणस्याहुमरणान्तमरौचकं महारोगास्तवातया
 ध्यस्मरीकुष्ठमेहोदरभगदरोऽंशिसगदहणित्येष्टमहारोगाः प्रकीर्तिताइतिर
 जस्वलायास्तुद्विशान्तियः रजस्वलायाः प्रेतायाः संस्कारादीनिनाचरेत् ऊर्ध्व
 गिरात्रस्त्रातानांरावधर्मणदाहयेत् अतः प्रक्षाल्यकाष्ठवदग्धज्यहोर्ध्वदहेत् सं
 कटेनमदनरत्नेमृत्युंतरे उदक्यास्तिकवामतास्याद्यदितानदा आशौचे
 त्वनतिजानेदाहयेदंतरायदि उधतेननुतोयेनस्त्राययित्वातुमंत्रतः आपोहि
 ष्ठेतिस्मिभिर्हिरण्यवर्णाश्रुतस्मभिः यवमानानुवाकेनमेदंतीतिचसप्तभिः
 ततोयज्ञपवित्रेसागोमूत्रेणाथचक्षिगाः स्त्राययित्वादिसनेनाद्याशवध
 र्मतः साहादिकंततः कुर्यात्प्रजायतिवचोवंपथा यज्ञपवित्रमायोअस्यानि
 निमिताक्षराया पंचभिः स्त्राययित्वातुगव्यैः प्रेतारजस्वलां वसुंतराहतां स्त

नि.सिं.
३८४

384

त्वादाहयेद्विधिपूर्वकं गत्यकारिकायां अंतरिक्षमृतायेचवद्भावसुप्रमा
दनः उदक्यासकानारीचरेष्टेद्रायणत्रयं ततोयवयिषेनानुलियाष्टोत्तरशतसूर्योदकैः
संस्त्राय्यात्रवसेधतेदहेदितिभट्टः अत्रप्रायश्चित्तमाहवौधायनः उदक्यासकानारी
चानौचरेष्टेद्रायणत्रयमिति स्तिकायास्तुमिताक्षरायां स्तिकायांमृतायांनुर
कयंकुर्वेतिप्राप्तिकाः कुंभेसलिलमादायपंचगव्यंक्षिपेन्नतः पुण्याभिर्मिमं
मयोवाचाशुद्धिलभेन्नतः तेनेवासाययित्वातुदाहंकुर्याद्यथाविधिः अक्षिगा
भिर्मित्रिसाभिर्वाग्देव्याभिरेवच अन्येष्ववास्तौर्मैत्रैः संस्त्राय्याविधिनादहेतु ग
त्यकारिकायां स्तिकाभरणेप्राप्तेसर्वौषधानुलेपनं असुरतकीतुसंसृष्टः स्त
याणांनरातेक्षियेत प्रायश्चित्तेविरोधस्तत्रैव स्तिकातुयदासाध्वीविस्त्राताम
रणंगता त्रिवर्गदण्ययंतंशुध्येकधृणसर्वदा इदंवाद्यमहोस्तिकातुयदा
नारीरजसातुपरिजुता म्रियतेचेत्तुसानारीद्विवर्षेकधृमाचरेत् इदं द्वितीयमहो
स्तिकातुयदासाध्वीविस्त्रातामरणंगता त्रिषण्णवदिनादवाग्मेकाकेनविष्णु
ध्यति ऊर्ध्वं त स्तिकातुयदानारीप्राणंश्रैवपरित्यजेत् मासमेकाव्यवाधिं
पावचिभिः कधैर्विष्णुध्यति गर्भिणीतुमृतौतुमदनरत्नेशोनकः गर्भिरपुदक्यं
संस्कारंशिश्रुसंस्कारमेवच प्रवक्ष्यामिसमासेनशोनकोदं द्विजन्मनां गर्भिणी
मरणेप्राप्तेगोमृत्रेराजलेः सह आयोद्विष्टादिभिर्मैत्रैः प्राक्ष्यभक्ष्यासमास्थितः

राम
३८४

पुत्रं समशाने नीचा योस्त्रिरस्यस्योदंरततः पुत्रमादाय जीवं श्रेष्ठं नंदत्वा स
 नायत् यस्तेस्तनः राशयेत्यवाग्रा मे निधाय च उदरं चात्रां कुर्यात्पश्चाद
 ज्येन पूर्वयमद्भस्मकुरागो मूत्रे रापो हिष्ठादिभिस्त्रिभिः स्नाय्य वा छाद्य
 वासाभिः शवधर्मिणा दाहयेत् तत्रैव वधशीतमते गच्छानि गर्भिण्या मृताया
 दक्षिणागसिरसं निधाय तस्या नाभिरंध्रात्सव्यमुदरं च त्ररगुलं हिरण्यगर्भः स
 मवर्ततेति चित्वा गर्भं श्रेष्ठं प्राणस्तं प्रक्षाल्य निरवने तस्य यदि जीवन् जीवत्वं मम
 पुत्रकेत्युक्ताक्षेत्रियेति च भिः स्नाय्य पित्वा हिरण्यमंतर्धाय भूमौ निधाय
 ब्राह्मणेभिरभिर्मंत्रयस्तेस्तनराय इति स्तनराय इति स्तनं यय पित्वा शिशुं ग्रामं
 प्राययेद्गर्भं द्वेदस्थले शतायुधायेति च कुतो हत्वा प्राणाय रचा हास्ये स्वादे
 त्यनुवाकाभ्यां ब्राह्म्याचा ज्यं हत्वा भिन्नमुदरं सूत्राण संग्रह्य धृतं नातुलि
 प्य ब्राह्मणाय तिलनां भूमिं सुवागं दद्यादयययोक्तेन कल्पेन दहेत् वैधाय
 नेन नृशतायुधायेति च होमानेतरं पूयासायायासायविषासायसंयासा
 योद्यासावचयासाश्च शकायतपतेन यत्पैत्रस्मृत्याये सर्वस्मै इति ।
 स्वाहंते राहुतयोप्यधिका उक्ताः गृह्यकारिकायां यदा गर्भवती नारी स
 शल्यां संस्थिता भवेत् कुक्षिं भित्वा ततः शल्यं निहरेद्यदि जीवति प्रसीतं नि
 स्वनेतं नृप्रायश्चित्तमतः परं सा त्रियस्त्रिंशं शताक्षैः शुध्यते शल्यदोषतः

नि.सिं.

३८५

385

सगर्भदहनेतस्यावर्गजेवधपातकं प्रायश्चित्तं च विधातुं शुभं तया यत्ना
विष्णुः दग्धात्तगर्भसंयुक्तामवक्तुं समाचरेत् अथान्वासो ह्यं अथान्वा
रो ह्यं स्त्रीणां नो भर्तुरेव च सर्वपापक्षयकरं निरयोक्षारणाय च अ
नेकस्वर्गफलदं मुक्तिदं च तथैव च जन्मांतरे च सौभाग्यधनपुत्रादिवृद्धि
दं देशकालौ स्मृत्वा संधत्ते समाचारत्वरस्वर्गलोकमहीयमानतमनुष्यलोम
समसंख्यादावधिन्नस्वर्गवासभर्तुसमहितचतुर्दशे द्वावधिन्नकालिके जी
मानत्वा मानयित्वा शशुरकलत्रयपूतत्वरस्वर्गमित्रघ्नयति पूतत्वरयत्नवि
योगात्तामाभर्तुत्वा ध्वजोत्तरोत्तरं करिष्ये अनुगमने तु फलमुत्तिरन्त्यान्वा
रो ह्यं करिष्ये शतं तदा हरिश्चाकं कमां जनादिपुत्रप्रदाने सुखासनीभ्यो दद्या
त् लक्ष्मीनारायणो देवो वलसत्त्वगुणप्रयः गाढं सत्त्वं चैव देया द्वायणेः परि
तो व्रतः संप्रसादात् स्यात् स्यात् स्यात् वा यणे संयुतानि च लक्ष्मीनारायणप्रीत्यै
तत्त्वकामादाम्यहं अग्नेः समीपमागत्य पंचरत्नानि यत्नवे नीत्वा जनेन तथा च
ध्वामुरेव मुक्ताफलं न्यसेत् ततो ग्निं प्रार्थनं कृत्वा मंत्रेणानेन निश्चितं स्वाहा
संक्षेपनिर्विघ्नसर्वतोत्रदूतारानः सत्त्वमार्गप्रदानेन तयमां यत्पुंरितिकं ततो
ग्नावज्येना नयेते जोधिषतये विघ्नमेव सत्त्वाधिपतये कालाय धर्माधिपतये
पृथिव्यै लोकधाधिपतये अक्षोरसाधिपतये वायवे वलाधिपतये आकाश

मंत्रस्त

राम
३८५

यसर्वाधिपतयेका लापयमाधिष्ठाजेद्राः सर्वसाक्षिणीभ्यः ब्रह्मणेवेदा
 धिपतयेरुद्रायश्मशानाधिपतयेदुत्वारिनेचपुदक्षिणीकृत्यदृष्टसुय
 लोचसंयज्यायुष्यांजलिगृहीत्वाग्निं प्रार्थयेत् त्वमग्नेसर्वभूतानामे
 तन्मरसिसाक्षिवत् त्वमेवदेवजीनीषेविदुर्यानिमानुषाः अनुगच्छामिभ
 त्तरवेधेधमभ्यपीडता सत्त्वमार्गप्रदानेनयमोभर्तुरंतिकं मंत्रमुच्चा
 येशानकैः प्रविरोच्यद्रुताशनं गोडास्त इमानारीर विधवा इति उद्गमा वि
 पतिव्रता पुण्याः स्त्रियोपायाः सुरोभनाः सहभर्तृशरीरेणसंविशंतु
 विभावसं इति चे विप्रः पठेत्पादु कातरांतुप्रेतोत्रेसुप्तांदेवदेः शिव्या
 चारुदीर्घैर्लुदाभ्यामृत्याययेत् एतन्माहिमामिताक्षरांदौतेयः पृथ्वी
 चंद्रोदयेस्कंदे अनुव्रतंतीभर्तारंगृहात्पितृवनंमुदा पदेपदेश्वमेधस्यप
 लंप्राप्तोत्यनुत्तमं सत्त्वमिराः यास्त्रीजास्तृणमानीयामृतं पतिमनुव्रजे
 त् सास्वर्गमात्मपातेननात्मानं नयति नयेदितियच्चुव्याघ्रयात्र नमि
 येतसमंभर्ता ब्राह्मणैराककर्षिता न ब्रह्मगतिमाप्नोति मरणादात्म
 ध्यातिनी अहारेण चेतिदृतेतुश्चाहं प्राप्नोति शास्त्रवत् इमानारीर विधवा
 इति ऋग्वेदवाक्यः अहारेण च मन्वादाहृण परमिति स्मार्तः निषेध

वाक्यानि प्रायश्चित्तार्थमन्तेन वा स ह मरण निषेध पराणीत्यप्या
 नः अस्थिदाहे पलाशदाहे चानप्यथ कृत्रिदोषः अंगत्वेन स्थाना यस्यावा
 शरीरतुल्यत्वात् यत्तु ब्रह्मघ्नो वा मित्रघ्नो वा भवेत्यभिः पुनात्यविधवा
 नारी तमादाय मृता तु येति हारीतीयेतदाहोदि निषेधेन सह गमस्य दूराया
 स्तत्वादर्थवादमात्रमिति यच्चीचंद्रः जन्मान्तरीयपाययतः सह मरणो नो
 दार इति स्माह गोडः सुद्धितत्वे भासः दिने क गम्य देशस्या साध्वी चेत्कृत
 निश्चया नदहन्त्यामिनं तस्यायावदागमनं भवेत् तत्रैव भवितव्यं न नी
 येत् किंचिदक्याय मते भर्तृरिवैद्विजाः तस्यानुमरणार्थाय स्यापयेदेकरा
 त्रकं एकं चिनां समासाद्य भर्तारं यानुगच्छति तद्गर्ह्यः क्रिया कर्त्तव्यं सत
 स्यात् क्रियां चरेत् एतदशाहंते यश्चाग्निदाजा प्रेतस्य पिंडं दद्यात्स एव
 हिति वायवीयाकैः आपस्तंबः चितिभ्रष्टानुयानादी मोहाद्विचलिता भवे
 त् प्राजापत्येन शुद्धे तस्मादेयाय कर्मणः तथा अन्वारोहेः तु नारी
 णोपत्युश्चैवोदकक्रिया पिंडदानक्रिया तदेतश्चाहं प्रत्यादिकं तेषां अ
 न्वारोहेः कृतं पत्याः पृथक् पिंडांस्तिलांजलीनं पृथक् शिलेन कुर्वीत दद्या
 देकरिलोतथा अगत्यागुक्तं इदं गर्भिणी बालायास्त्यास्तित्कारजस्य
 ला व्याभिचारिणी भिर्नकार्यं स्वरिणी नो गर्भिणीनां पतितानां च योषि

386A

तां नास्तिपत्याग्निशंवेशः यत्तितोहितया उभाविति मदनरत्नेस्मृतिसं
ग्रहेनैः मदनरत्नेष्वहस्पतिः बालसंवर्धनं पुत्कागलापत्यानगच्छति ब्र
तापवासनियतारक्षेर्भवेच्चगर्भिणी तृतीयपादे रजस्वला स्मृतिकाचेति
एषु चिद्वैगोरीयश्चिद्विचयाठः तत्रैव हस्वत्वारदीयेषु बालागत्याश्च
गर्भिणीयाश्च हस्वत्वारदीयेषु रजस्वला रजसुतेनारी हंति चित्तान्तता इति
मृजापतिव्रतासासंदीप्तं प्रविवेश कृताशनमिति भावता दृग्देवबादा
त्साधीरुपतिव्रासाच्यपतिव्रतानामेवाधिकारो न दुर्ज्ञानां यत्तु मृ
बमन्यचयाः पूर्वपतिदुष्टेन चेतसा वर्तते याश्च सततं भर्तृणां भूतिः
कूलतः तत्रानुमरणं कालेया पूर्वतितथाविधाः कामक्रोधाद्रयानुमादा
त्सर्वाः एताभवंत्युतेति भारतं तावैः सति कन्यायेन स्तावकमिति पृथ्वी
चंद्रः ब्राह्मण्याः एकवित्तिरेव नष्टकमितिः क्षजादीनां यथगेकाचेति क
ल्पतस्तरत्नाकरमदनपारजातादयः अक्षिचिन्तामणौ चैवं तत्रान्वारोहणे भ
तैशो चतुल्यमाशौ चपिंडयनं च अन्वितायाः प्रदीतव्यादशपिंडास्महेता
तु स्वाम्यशौचे यतीनेतु तस्याश्चाहं प्रदीयते इति अक्षितत्वे मूलपाशौ च
पेडीनसि सृष्टिः संस्थितं यत्तिमा लिंगप्रविशेया दुताशनं तस्यापिंडादि

कदेयंक्रमशः यतिपिंडवदिति जिकनश्रु लपाणिश्रुदितत्त्वधृतव्यासोक्तैः
 अन्यत्रागुक्तं यदात्तरजस्वलापियत्रीमृते यत्पौ देशकालवसाने देवानुगच्छ
 ति नश्रुद्विप्रतोक्षनेतत्रविधिः देवयाज्ञिकनिबंधे यदासुयामुदक्यायायतिः
 प्राणासमुत्सृजेत् द्रोणमेकं तंडुलानामवहन्याद्विश्रुद्धये मुसलाधातेस्तद
 सकेस्रवर्तेयोनिमंडलोत्तर विरजस्कामन्यमानास्त्रिचिन्नेतदस्रकक्षयं दृष्ट्वा
 शौचं प्रकुर्वी संपंचरति कयायथक् त्रिंशद्विंशतिर्दशचगवांस्तत्त्वात्तदः क्र
 मात् विप्राणां वचनाच्छुद्धासमारोहे दुताशनं नारीणां सरजस्कानां मिथं
 श्रुद्विरुदाहता अत्रश्राद्धादौ निर्णयः अग्निप्रवेशाशक्तौ त्रविष्णुः मृते भर्तृ
 रिब्रह्मचर्यं तदन्वसेत्संवेति ब्रह्मचर्यं मत्सुगमनं शस्त्रवेधव्याघ्रपालन
 यत्तत्रैव कलौ नान्यागतिस्तुरीयां सदानुमेना दत्तेति तस्मिन् चर्याशक्यत्वं
 परं तथा च मनुः ब्रह्मचर्यं चरक्षयिप्रविशेद्वा दुताशनं काशीं वडपि यत्पौम
 तेपियायोपि द्वेधायं पालयेत्कचिन् सा पुनः प्राप्य भर्तारं स्वर्गलोकांसम
 श्रुते अनुयाति तमर्तारं यदि देवात्कथंचन तत्रापि शीलं संरक्षेच्छीलं भ
 नात्पतत्यधः तदैव गत्यादपि स्वर्गात्पतिः पतति रात्र्या तस्याः पि
 ता च माता च भ्रातृवर्गस्तथैव च अथ विधावाधर्माः मदनरत्नेस्कंदे
 विधवा कवरीबंधो भर्तृबंधा यजायने रिसौवपनं तस्मात्कार्यविधव

387A

यासदा एकासारः सदाकायो न द्वितीयः कदाचन मासोपवासं वा कुर्याद्यो
 शयणमप्यायिवा पर्यंकशायिनीनारीविधवायातयेत्यति नैवांगोदत्तन
 कायेस्त्रियाविधवाप्रचिन्त गंधद्रव्यस्य संभोगो नैव कार्यस्तथा पुनः
 तर्पणप्रत्यहं कार्यं भोजनं तिलकुशोदकैः तत्पितृस्तत्पितृभ्रात्रिणामगो
 आदिपूर्वकं इदमपुत्राभ्यामिति मदनपारजातः नाधिरोहेदनद्वाहं प्राणैः
 कंठगतैरपि कंचुकं नयरीदध्यादा सो न विहृतं वसेत् वैशारैव कर्तृके माघे
 विशेषनियमं चरेत् प्रचेताः तां ब्रूलाभ्यं जनं चैव कांसपात्रे च भोजनं यति
 अन्नसंचारे च विधवा च विवर्जयेत् अथः शयीत एमासानिति मोक्ष
 भाषितमिति तदसवर्णिपरमित्यपरार्कः अथ संन्यासः पात्रवल्क्यः वना
 द्वादहा कृत्वेष्टिं सार्ववेदसदक्षिणा प्राजापत्यातदंतेतानगनीतारो य्यचात्मा
 नि अधीतवेदो जयत्कृत्युत्रवान् अत्रदो ग्निमान् शक्यात्तु यज्ञकृत्मे दोम
 नः कुर्यान्नान्यथा एतदाश्रमसमुच्चयपक्षो जावालाम्कृतौ त्वन्येऽपि पक्षाः
 उक्ताः यदि वेतरथा व्रतचर्या देवप्रव्रजेद्वादहा अथ पुनरव्रती वास्नातको
 वास्नातको वोत्सनाग्निरनग्निको वायदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेदिति
 अंगिराः प्रव्रजेद्दस्य चर्या द्वा प्रव्रजेच्च गृहादपि वनाद्वा प्रव्रजेद्विद्वानात्

रोवायदुःखितः आत्मानं सर्वः दुःखि नमो रम्याद्यादिभीत भारते आत्मा
 राणाचसंन्यासेन विधिर्नैव क्रिया प्रथमात्रं समुच्चार्य संन्यासस्तत्र यः
 जयेत् जीवालश्रुतावपि यद्यातुरः स्यान्नमनसावाचावासंन्यसेदिति
 अत्र विप्रस्येकाधिकारः ब्रह्मणः प्रव्रजेतीति जालालश्रुतेः आत्मन्यगीन
 समारोप्य ब्रह्मणः इव जेहू हादिति मन्त्रकैश्चेति विज्ञाने प्रवादयः तद्धि
 जातवल्केति चत्वारो ब्रह्मणः स्योक्तो अप्रमाः श्रुतिनोदिताः क्षयि
 स्यत्रयः प्रोक्ता द्वावेको वैश्यश्च इयोरिति माधवस्तु ब्रह्मणः क्षत्रियो वा
 यवैश्यावा प्रव्रजेहू हादिति कौमीयुक्ते र्वात्रयस्याप्यविकारः सर्व वा
 कं तु काव्याय दंशदिनियेधार्थं मुखजामयंधर्मेयद्विष्णोर्लिंगधारण
 राजन्यवैश्ययोर्नैतिदत्ता जयमुनेर्वच इति बोधायने कौटिलियश्चांतरमा
 ह तत्तुल्यवकादिपरमेतदिति योयिसंन्यासं पलयेत्कमिति कलौ
 नियेधः सोपि त्रिदंशदिपर इत्युक्तं प्राक् सच संन्यासश्चातुर्थेत्याह हारी
 तः कुटीचको वसूदको हंसश्चैव तृतीयकः चतुर्थः परमो हंसो योयः
 यश्चात्स उत्तमः आश्वः पुत्रादिना कुंठीकारि पितृत्वात् तत्र गृहे वा वसन्
 काव्याय वा साशिवीत त्रिदंशवान् बंधुषु स्वगृहे वा भुजान् आ
 त्मज्ञो भवेत् एतदप्येतत्तत्परं दिनीयस्तवं धर्तुं हित्वा ससम्भारः

तिभैश्चरन्पूर्वोक्तवेद्यः स्यात् हंसस्तत्पूर्वोक्तवेद्योप्येकदंडः ए
 कदंडोऽथैवावदंडधारयेन्नित्यमादरादिनिस्कंदान् विष्णुरपि यत्तो
 पचीतदंडे च वस्त्रजंतुनिवारणं जावान्यरिगृहः प्रोक्तः नाभ्योऽप्यपरिगृ
 हः चतुर्थोऽपि स्कादेपरिहंसखिदंडचरजुंगारवालनिर्मिता शिरवाय
 तापवीतंचनित्यकर्मणित्यजेत अप्रमयेकदंडाव येतुशिरवायवा
 तादित्यागनिषेधास्तैकटीचकादिपराः यत्तुमेधानितिः यावन्नस्युस्त्र
 योदंडास्मावदेकेनवर्तयेदिति तदपितत्परमिव यच्चात्रिः चतुर्थोभिभ
 वः प्रोक्तोः सर्वेष्वपि दंडिन इति तद्वागदंडादिपरं न यच्छिपरं वागदंडोऽथ
 मनादंडः कर्मदंडस्तथैव च यस्मै तेन नियतादंडः सत्रिदंडीति चोच्यते
 इति मनस्कैः तस्मात्परमहंसस्यैकदंड एव सोऽप्यविडुषः विडुधस्त
 सोऽपि नास्ति नदंडं शिरवानाद्यादन्वरतिपरमहंस इति महोपनि
 षद्भुक्तैः ज्ञानमेवास्यदंड इति वाक्यशेषाच्च यत्तु षष्ठः काष्ठदंडोऽथ
 तोयेन सर्वाशीतानवर्जितः स्यात्तिनरकानुघोरानुमहारोरवसं
 क्षितानिति तद्द्वाराय विना जीवनाय सत्यासपर एकदंडस्तस्मात्ति
 त्मजीवति वद्वानराः नरकेश्वरेद्योरेकमेत्यागात्यततिवै इति

निसिं

३८५

389

इति स्मृतेः यच्चाप्तिमेधके एकदेशी त्रिदंती वा हि। रवीं मुठिता एव वा का
सायमात्रसारापि यतिः ए ज्येष्ठपिष्ठरेति न स्यापि पूर्वोक्ता व्यवस्था ज्ञेयाः
अथ न हि धिर्वोधा यनः कृत्वा प्राधानि सर्वाणि पित्रादिभ्योऽष्टकः पृथ
क वापयित्वा च केरादान् मार्जयेत्मात्रका इमाः सर्वाणीति स्वस्य न वप्रा
द्वयोऽशप्राधादिकृत्वाऽप्यर्थः स्मृत्यर्थस्यैपि एकोदिष्टविधानेन कुर्या
प्राधानि बोद्धा अर्धनमान्पार्वणेनेव विधितानिर्वयेत्स्वयं इति क्रात्याय
नः कृष्टास्तु चतुरः कृत्वा पावनार्थमनाश्रमी आश्रमी चेन्न सक्तं छुते तासौ
योग्यतां प्रजेत् वोधा यनः सदैव मार्गकं दिव्यं पित्र्यं मातृकमानुषे भौ
तकं चात्मनः प्राप्ते अष्टोत्प्राणिनिर्वयेत् अत्र क्रममाह हेमाद्रौ शौनकः
देवप्राद्वेजसविष्णुमहेश्वरा देवताः आर्षदेव विक्षत्रयः देव विक्षत्र
विमनुष्यमयो वामरीत्यादि ऋषय इति संत्यासपद्धतौ न चिंत्य दिव्ये
वसकृद्रादिभ्यः मानुषेसनवसनेदनसमातनाः भरतप्राद्वेयपिभ्या
दिभूतानि च सुरादिकारणा विचतुर्विधो भरतग्रामश्रेविति सः
पित्र्ये पित्रादित्रयो मातामहाश्रमातृके मात्रादयस्ति सः आत्मप्रादे
आत्मपितृपितामहा देवताः आत्मप्राद्वेयमात्मदेवत्यमिति सं

राम
३८५

आसपदितो सर्वत्रचनादीमुखत्वंविशेषांतेयं सर्वत्रपिंडदानंयुग्मावि
 शः दक्षकृतसत्यवत्सवाविश्वेदेवोअन्यनादीश्राद्धवदितिहेमाद्रिः स्मृत्यर्थ
 सारे केशरमश्रुलोमनखंवायपित्तोपकल्पयेत् दंडजलपवित्रचशिवं
 पात्रेकमंडलं आसनंकोपीनमाघादनकथायाडुके इतिदशपंचवा एतच्च
 पूर्वधुनीदीमुखंस्तत्परेधुःप्रायाहवाचनंस्तत्वाकार्यमितिरोनकः
 बाधायनः त्रीनदंडानंगुलस्यान्वैणवानमूर्धसंमितान एकादशनवद्वि त्रि
 त्तः सप्तान्यपर्वकानवैष्टितानस्तधमगावालरज्वालरंगुलान एकावातादृशा
 दंडोमोदालसदृशाभवेत् अनग्निरग्निमुत्पाद्यनित्येनविधिनाततः पृष्टो
 दिवविधानेत्यर्थः स्वाग्नावेचाग्निमान्कुर्यादयवर्गाहमदितः आज्यंययो
 दधीत्येतत्रिवद्वाजलमेव वा ऊंभूरित्यादिनाप्राशयरात्रिनोपवसेत्ततः आ
 यादित्यस्यास्तमयात्सर्वमग्नीनविहृत्यसः आज्यमग्नेनागारूपेत्यसंस्कृत्य
 तेनैवस्त्रिवा प्राणियाहचनीयेत्तुजुह्यात्प्राणवेनतत्त ब्रह्मन्वाधानमेत
 त्स्यादग्निहोत्रेहुतेततः संतीर्थगारूपेत्यस्यगर्भानुत्तरतोत्रतयात्राया
 साद्यदर्भेषुत्रस्मायतनएवत जागृयाद्रात्रिमेतांतुयावत्त्रास्रोमुहूर्त
 कः आग्निहोत्रंस्वकलेत्तुहुत्वाप्रातस्तनंततः इष्टिवैश्वानरीकुर्यात्प्रा

नि.सिं.
३५.

390

जायत्यामथापिवा जावालश्रुतो तद्वै के प्राजापत्यामेचेष्टिं कुर्वन्ति
तदुत्तथानकुर्यात्प्राज्ञेधावीयामेव कुर्यादित्युक्तं तेनात्र विकल्पः
अत्राहुः त्रेताग्रेः प्रजापत्यां तद्वाक्यशेखरीनिति बहुलश्रुतेः एकाग्ने
स्तार्त्तयेत्येति अनास्तिताग्नेरिष्टिनेवैश्वानर आग्नेयोवाचसुरिति माधवः
कात्यायनः आत्मन्यग्नीत्समारोप्यवेदिसमभ्यस्थितो हरिं ध्यात्वा इदि
त्तनुजातो गुरुणा प्रेषमीरयेत् कथितः विधिवत्प्रेषमुक्ताथ त्रिरु
पांशु त्रिपांशु त्रिस्तु कैः अभयं सर्वभूतेभ्यो मतः स्वाहेत्ययो भुवि नि
नीय दंडं शिवया स्मृतं स्तीत्या यवस्त्रिजैत् तौ धायनः सर्वमेत्यादिना
दंडयेन देवाय वित्रकं यदस्य पारे शिव्यं तया त्रया हतिभिस्तथा युवा
सुवासा कोष्ठी न गृहीत्वा बांधवांस्त्यजेत् अथ क्रमः तत्र संन्यासेधि
कारसिद्धार्थस्तस्य नवप्राद्वोऽष्टाश्रुद्ध सप्तिनानि साग्निः पार्वणा
न्यनारिस्तत्वेकोदिष्ट विधिना कृत्वा नाश्रुमीचेत्तद्धुचतुष्टयमन्यस्तु
तप्तकृद्धकृत्वा दगयने एकादशपांदा दशपांदा वा साग्निरमावास्यायां यो
र्हमास्यां चतुर्दशपांदा यथापर्वणि प्राजापत्या स्यात् तत्रादेशकालो
स्तत्वापरमहंसादि संन्यासगृहणं करिष्ये इति संवत्स्य गणेशं संसृज्य

राम
३५.

प्युणाहं वाचयित्वा मातृका एजं हृदि श्राद्धं च कृत्वा स्तमयात्प्रागो
 पासनं समिध्या हि तार्निस्तु गार्हपत्यं विरेधुरे गिहोत्री तु त्रिको
 डमंडनोक्तं दिशः कुशयत्पासहपवमाने सतं पूर्यं कुतंते वाधान क
 र्यंत ब्रह्मचारी चैह्यो किके विधुरश्चेह्यो हतिभिः प्रणवेन चार्निमा
 दाया न्वग्निरूप्यस्यामित्यानीय पृथोदितीति निधाय ते नैव समिधयत
 त्सवितुः तां सवितुर्विश्वा निन इति तिस्रः समिधेभ्या दध्यात् एवमग्नौ
 सिद्धे कक्षोपस्थवर्जं वपनं कृत्वा पयो दधि पुन माज्यमयो वि ॐ भूः
 सावित्री प्रविशामि तत्सवितुर्वरेण्यमिति प्राश्ना च म्य पुन रादाय ॐ भुवः
 सावित्री प्रविशामि भर्गो देवस्य धीमहि ति द्वितीयं ॐ स्वः सावित्री प्रवि
 शामि धियो नः प्रचोदयादिति तृतीयं समस्तथाचातुर्यं ॐ भूर्भुवः स्वः
 सावित्री प्रविशामि तत्सवितुर्वरेण्यं रतिसंन्यास पद्धितौ तु त्रिदसीति
 प्रथमं प्रहदसीति द्वितीयां चिह्नदसीति तृतीयां प्राश्नायः पुनं चिति जल
 प्राश्ना सावित्री प्रवेश उक्तः तत आवाहनीयं विहृत्य ब्रह्मण मुपवेश्यामि
 संस्कृत्य चतुर्दश वा गृहीत्वा समित्पूर्वामोखा परमात्मने इति मि

निरुत्तोषवसेत् ततः साम होमं वैश्वदेवं च कृत्वा गेह रुदकं कृत्वा शान्तीर्यदं
 जदी निदशपंचवासा घ्नन्नासाने कृत्वा जिहोपविष्टो राजा जागरं कृत्वा प्रा
 न्नर होमानंतरं प्राजायत्या वैश्वानरां वा कृत्वा क्षत्विग्भ्यः सर्वस्त्वं त्रस एव
 मधुसर्गं नैजसया जंदत्वा दारुपात्राण्यहवनीये मम मन्मथानि च जले क्षि
 पेत् कृत्वा जिहो नत्वाददीत अनादिताग्निं कृत्वा वैश्वानरमाग्नेयं च कृत्वा पा
 त्राण्येतो दिक्वा भूर्भुवः स्वरित्ययः स्थुष्टांतरत्समं दीत्समं दीति जप्त्वा विप्रा
 न्संभोज्य पुण्याहं वाचयित्वाऽत्र वाचमनं कृत्वा हेमरूप्यं कृत्वा जलेः स्वात्मा
 पुरुषाय च सं च जुहुयात् अत्र चिरजा होमं कैचिद्गुरुः यथोक्तं शिवगी
 तासु जुहुयाद्विरजामं त्रैः प्राणायानादिभिस्ततः अनुवाकं तमेकाग्रः स
 मिदाज्यं चरुं न्यय कृत्वा आत्मन्यग्निं समारोप्य याते अग्नेति मंत्रतः ॥ भस्मा
 दायाग्निरित्याधौ विमज्यागानि संस्पृशेत् पापैर्विमुच्यते सत्यं मुच्यते
 च न संशयः यथा प्राणायान आनोदान समाना मे मुच्यन्तां ज्योतिराहं वि
 रजा विपाप्मा भूयात्सं हस्वाहा सर्वत्र लिङ्गोक्तं देवताभ्यस्त्यागः वाक्
 मनस्त्वक् च भुञ्जेत् त्रिधा प्राणैरेतौ बुध्या कृत्ति संकल्प्या मे मुच्यन्तां
 ज्योतिः त्वक् चर्म मांस रुधिर भेदो मज्जा स्नायु वो स्थीनि मे मुच्यन्तां ज्यो

तिः त्वक्चर्ममांसरुधिरमेदोमज्जास्त्रासुवोस्थिरनिमेऽशुध्यतां ज्योतिः
 शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरुदरजंघशिश्नापस्थयायुवोमेऽशुध्यतां ज्यो
 तिः शब्दस्पर्शरसस्पर्शगंधमेऽशुध्यतां ज्योतिः मनोवाक्कायकर्मणिमे
 षुध्यतां ज्योतिः अव्यक्तभावैरङ्कारैर्ज्योतिः आत्मा मेऽशुध्यतां ज्योतिः
 अंतरात्मा मेऽशुध्यतां ज्योतिः परमात्मा मेऽशुध्यतां ज्योतिः अन्नमयप्रा
 णमयमनोमयविज्ञानमयप्राणंदमयरमात्मा मेऽशुध्यतां ज्योतिः सुधे
 स्वाहा सुतिपासाय स्वाहा ऋग्विधानाय स्वाहा कपोल्काय स्वाहा
 सुतिपासामला ज्येष्ठा मलक्ष्मीर्नारायण्यहं अभूतिसमष्टिं च सर्वा
 निरुदमेयामानः स्वाहेति ततः स्विष्टकदादि कृत्वा ब्रह्मणे हिरण्यमास्य
 पात्रं धेनुं च दत्त्वा समासिंचत्तित्युपनिषेत् अत्र केचिदनग्नौ सावित्री
 प्रवेशं यर्णाहुतिं चाहुः ततो ज्ञातेऽग्ने नयति पातनूरिति त्रिसिरेकैकं
 जिप्रन्नात्तन्यग्नीम्यमारोप्यगुरवे सर्वस्वं दत्त्वा ब्राह्मणं विदधाति य
 वै यो वै वेदांश्च प्रहिरोगति तस्मै नरुदेवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शर
 णमहं प्रपद्येऽनु स्यादक्षिणं याव्ययादायुषसंग्रहाधीति भगवात्र

नि.सिं.
३२२

392

येति वदेत् ततो गुरुरात्मानं ब्रह्मरूपं ध्यात्वा शंखं द्वादशप्रणवेरभिमं
अनेन शिष्यमभिषिच्य शान्तेमित्र इति रांतिं पठित्वा तच्चिरसि हस्तं दत्वा
पुरुषसूक्तं जपित्वा मम ब्रते हृदयं ते ददामीति च जपत्प्रादङ्मुखः प्रणवा
धर्ममनुसंदधन्नदक्षिणे कर्णे प्रणवमुवाचे यत्तदर्थं च पंचीकरणं यवो
धम्यमयमात्मा ब्रह्म तत्त्वमसि प्रज्ञानं ब्रह्मेत्याहुः पादौ शतं तदर्थं च वदेतात
तो नाम दद्यात् ततः शिष्यस्तेनोपदिष्टो हरिं स्मरन् नार्धं वा दुरितं नृदे
वास्त्राक्षिणः कृत्वा ओं ह्रूं चः स्वः सव्यस्ते मयेति त्रिरुपांशु त्रिरुधौ त्रि
रत्युधौ श्रोत्रात्काजलं स प्रीयंगत्वास्त्रात्वा अभयं सर्वं भूतेभ्यो मतः स्वा
देति त्रिरंजलिं क्षिप्त्वा युवा स वासा इति का वायं कौपीनं वा सः अपरिधा
य सरवामा गोपायेति मुखं वै एवंपालशं नै त्वमौ दुंवरं चादंडं गृहीया
त् अत्र पुत्रकामो गृहस्थः शंखेन पुरुषसूक्तेन दंडमाभिषिच्य दद्यादि
त्प्राचारः ततः शिरवामुत्पाद्य ओं ह्रूं स्वः स्वादेत्यंगेनो जले वा दत्त्वा नयैवोप
वीनं दत्त्वा येन देवाः पवित्रेणेति जलपवित्रं यदस्य पार इति शिष्यं सा
विष्णो कर्मंडलं सप्तव्याहृतिभिर्मन्त्रैर्भोजनपात्रमिदं विष्णुरित्यास

राम
३२२

392A

नं च सीचा गृहीत्वा ॐ भूः सूर्ययामीति अस्तसमस्ताभिर्महर्नम इति त्र
 पयित्वा ॐ भूः स्वधो भूभुवः स्वर्गमहर्नमः स्वधोति पितृ रत्तर्पायित्वा दुत्यं
 चित्रं तच्च हंसः शुचि वन्नमो मित्रस्येति स्मृत्वा सूरभिर्मतीभिस्तयो
 दिष्टेति हिरण्यवर्णाभिः पावमानीभिर्वा हृतिभिश्च मर्जयित्वा ऋतुर
 शानमघमर्षां प्राणायामांश्च कृत्वा ॐ भूभुवः स्वरीति पठित्वा नमः स
 वित्रे इति सूर्यमुपस्थाप्य पुनः स्मृत्वा जंघेक्षालयित्वा ॐ मित्रस्यो मि
 त्रीदं सर्वमामिति ब्रह्मवाप्यज्योतिर्यथा वेदो यथा यतपतिवेद्यमेवेत
 यथा यवेदो यदचनमस्तीति जयित्वा ऋसहस्रं गायत्री जयेदिति अथ यति
 धर्मोः प्रातरुष्यायन्नस्नानस्यते इति जयित्वा दंडादीनि मृदंच निधाय सूत्र
 पुरीषयोगं हस्य चतुर्गुणं शौचं कृत्वा च मय्यवर्षद्वादशी वंशं प्राणवेन दंतधा
 वनं कृत्वा तेनैव मृदा च हिः कटिप्रक्षाल्य जलतर्पणं वर्ज्यं स्मृत्वा पुनर्जंघे
 प्रक्षाल्य वस्त्रादीनि गृहीत्वा मर्जनात् तत्तत्वा केशवादिनमो ननामभिस्त
 र्पयित्वा ॐ भूः सूर्ययामीत्यादि अस्तसमस्ताभ्यां हृतिभिर्महर्नमस्तर्पयामी
 तितर्पयेत् ॐ भूः स्वाहेति स्वाहा शब्दांते श्रेभिरेव पुनस्तर्पयेदिति केचि
 त्ततज्ज्राचम्यां जलिना प्राणवेन जलमादाय त्याहृतिभिरुधत्पगाय

शब्दांतैः स्व
 धा २

आत्रिः सिद्धागायत्री जयेत् उदिते सूर्ये प्राणवेन जलमादाय व्याहृतिभि
 वाध्यं त्रिदं त्वामित्रस्य वर्धयन्तीत्याद्यैः पूर्वोक्तशैरीभिरिदं विष्णुस्त्रिदं चो
 ब्रह्मजज्ञानमिति ज्योपस्थाप्य सर्वभूतेभ्यो नम इति प्रदाक्षिण्यमाचरेत्ते
 ततो नत्वा आदित्याय विष्णवे सस्त्राभाय धीमहि तन्नः सूर्यः प्रचोदया
 दिति त्रिर्जयेत् एवं त्रिकालं विष्णुसृजां ब्रह्मसृजं च कुर्यात् मृगभिक्षा
 विभ्रमे सन्नमस लेखंगारे भुक्तवर्जने काले पराङ्मुहयिष्ये नित्यं भिक्षा
 यतिश्ररेदिस्त्रिंशे काले उदयमिति चतसृभिरादित्यमुपस्थाप्य तेनैकं
 ध्यात्वा कृष्णेनेति प्रदक्षिणं कृत्वा येते यथान इति जप्त्वा योसौ विष्टचा
 रये आदित्ये पुरुषो न हृदि स्थितः सोऽहं नारायणो देव इति ध्यात्वा प्राण
 म्यजेत् त्रिदं उदक्षिणं त्वंगेन तः संधय वाङ्मना पात्रं वामकरे क्षिप्वा मूषये
 दक्षिणे नात्विनिवो धाय नोक्तदिशा त्रीज्यं च सप्रचाग्रहान् गत्वा भवत्सर्वी
 भिक्षायाचित्वा परमसिद्धिं मे व भूया इत्यागत्य शुचिरत्र प्रोक्ष्य ओम्भूः
 स्वधानप्रदत्तादिव्यस्तसमस्तव्यक्तनिभिः सूर्यादिदेवेभ्यो भूतेभ्यश्च भू
 मोक्षिता भुक्ता प्राणवेन योऽशप्रायमान कुर्यादिति संक्षेपः गौतमव्या
 ख्यायां भृगुः यानि हस्ते जलं दत्वा भैक्षं दद्यात्पुनर्जलं भैक्षं यवतमात्रं

राम
३९३

स्यात्तज्जलंसागरोद्यमं अत्र सर्वत्र मूलं माधवाय राक् मदनरत्नस्य त्व
 र्यसागरोद्यमं कएव एकरात्रं वसेगामेन गरेपंचरात्रकं वर्षाभ्योन्यत्र
 वर्षसमासांस्तु चतुरो वसेत् जावालकृतौ प्रन्यागारदेवगृहं तृणकु
 टीकं वक्षकुलालशागिहोत्रगृहं नदीपुलिनगारकुहरनिर्जरस्य इति
 शुनिकेतन इति मात्स्ये अष्टौ मासा विहारः स्याद्यतीनां संयतात्मनां ए
 कत्र चतुरो मासान् वार्षिकान्निवसेत्पुनः अविमुक्ते प्रविष्टानां विहार
 क्तनविद्यते अत्रिः भिक्षाटनं जपं स्नानं ध्यानं शौचं सरार्चनं कर्त्तव्यानि
 योऽतानि सर्वथानपदं इव त मंचकं शुक्लवस्त्रं च स्त्रीकथां लोल्यमेव च दि
 वस्त्रायं च कंशुक्लवस्त्रं च स्त्रीकथां लोल्यमेव च दिवा स्वयं च यानं च य
 तीनां पतनानि यद् आसनं लोभश्च संचयः शिष्या संग्रहः दिवा स्वापो ह्य
 पाजल्यो यतेर्वचकराणि यद् दक्षः नाध्येत व्यंनवक्तव्यं न श्रोतव्यं कथं च
 न याज्ञवल्क्यः यतिपत्राणि यद् देहदायं लावुमयानि च मदनरत्ने त्रिः
 पित्रर्थं कल्पितं सर्वमन्त्रं देवादि कारणात् वर्जयेत्तादृशी भिक्षा परवा
 धाकरोतया वृहस्पतिः नतीर्थवासो नित्यं स्यान्नोपवासयरो यतिः न
 चाध्यपनशीलः स्यान्नव्याख्यानपरा भवेत् एतद्वदर्थं भिन्नपरं अत्रिः स्ना
 नं सरार्चनं ध्यानं प्राणायामावलिः स्तुतिः भिक्षाटनं जपः संध्याभ्यासः

न रिं
३६४

394

कर्मफलस्य च एते यतिधर्मा इति मुख्यः ॥ मन्त्रे विमाधवादिमि
ताक्षरादौ ज्ञेयाः यतिधर्मसमुच्चयेन तत्रानमाचरो द्विद्वः पुत्रादिनि
धने श्रुते चित्तक्षयं श्रुत्वा स्त्रात्वा शुध्यति संवरः ॥ प्रथमयति संस्का
रः स्मृत्यर्थसारे सर्वसंगतिवृत्तस्य ध्यानयोगारतस्य च न तस्य द
नं कार्ये नारोचने नोदकक्रिया तथा कुटीचकं लप्रदेहं स्वरं च वदू
दकं हं सो जले तु निक्षिप्यः परस्मै प्रपश्येत् पलाशमूले न द
त्तरे त्वत्र वागंधपुष्पा लं कृतं शवं वा घघावेण नीत्वा दंडमात्रं व्या
हृतिभिः स्त्रात्वा सप्त व्याहृतिभिः स्त्रिंशोदयदभोनास्तीर्ष्य नवघटे प
चरत्नोदकोक्षिप्या नारायणः परब्रह्मेत्यभि मंत्रं तेनैव संस्त्राय्या व्या
क्षरेण वसुगंधपुष्पा धूपदोषानुदत्त्वा विमोक्ष्य रक्षस्वेति शवं गतिं नि
धाय दं विष्णुरिति दक्षिणहस्तं दंडपदस्य पात्रे इति सव्ये शिखं येन दे
वाः पवित्रेणेति मुरे वज्रं लपवित्रं सा विमोदरे पात्रं भूमिं भूति
गुह्ये कर्म उल्लेनि धाय चितिः संगतिं दराहोत्राभि मंत्रं येदिति वि
श्वादर्शं टीकायां स्मृत्यर्थसारे च हस्त्यो न कस्तं पार्ते पुरुषस्त
त्तेन रात्रायि स्वापायेत्या चटततः प्रणवेन नमस्त्वं चारं प्रोक्षयेत्

य्य

राम
३६४
३६४

अथ सर्वतः विष्णोः स्वरक्षस्वेति युज्यमाणेन च गर्त्रे
 व्यचेदं विष्णुविचक्रमेति मंत्रेण दंडं दद्यादक्षिणं हस्तकोमलधा-
 वः स्वश्रुतिं कृत्वा शरवेन भेदयेत् गर्त्रे पुरुषस्तत्तेन लवणेन प्रसरयेत्
 गालादिरक्षार्थं सम्यग्गात्रं प्रसरयेदिति कुरीत्वकस्थतदाहः कार्य-
 या सर्वेषां गवत्कृत्वाग्निं प्रज्वाल्य साग्नेर्दक्षिणकरे उपावरो हेत्यवरो-
 निर्मथ्य वा गर्त्रे विनिंशुत्वाग्निनाग्निः समिध्यत इत्यग्निं दत्वा सावित्र्या पु-
 णवेन वा दहेत् ततोऽष्टरातं प्रणवेनारायणः परं ब्रह्मेति च जप्त्वा सशिरः
 प्रणवव्याहृत्या गायत्र्याः तद्भस्मास्थिनीये दित्वा स्नानाच्छुचिः नास्यान्य-
 दोर्ध्वं दक्षिणं त्रिदंडं दद्यात् देवप्रेतत्वं नैव ज्ञायत इति उरान् स्मृतेः एका-
 दशोऽपि पार्वणं तदपि त्रिदंडिनः हंसपरमहंसादीनां पार्वणादिभिर्म-
 यिनकार्यमिति श्रुतिपाणिः आहुतिं नाम एतदज्ञाजेयः एकोऽद्विज-
 लंपिडमादौ च प्रेतसंक्रियां न कुर्याद्वर्षिकादन्यद्ब्रह्मीभूता यमिक्षवे
 प्रजाक्रिययेकोऽद्विजविषेधे सिद्धे पुनस्तद्गुरुण मादिके परं तेन तत्पार्व-
 णमेवात्रिंशं द्वादशेनारायणवलिः तद्दिधिरन्यश्च विशेषः प्रागुक्तः
 इति लवकुना एवं निरूपितमिदं गहनं तद्धर्मनत्वं विचार्यैव च नैश्चन

त्रैलोक्यस्य कृत्तुः तद्दोषं च मया विवेचनीयं विद्वद्भिरित्यविरंतप्रणतो २
 स्मिन्नेषु मया सदा सदा दिदृशं तं मंदमतिना किमेतच्छब्दं वाध्यवसि
 त्तुमपि स्वल्पमतिना तदेवं यत्किंचित् गादितमिहा विरम्या तमदिमाप्रतापोयं
 सर्वो विकसति नृपि त्रैलोक्ये यो भादत्तं गवना र्णवकर्णधारः सा खो
 तरेषु निरिवलेषु यि मर्मभेदा यो त्रैलोक्यः किल कृतः कमलाकरेण प्रीतो
 ५ मुना कुरु कृती बुधतमकथाः ३ श्रीभद्रामेश्वरस्वरिस्तु श्रीनृनाराय
 णस्वरिस्तु नोः श्रीरामकृष्णस्य सुतः कृती मन्वधानि वंधं कमलाकरारभ्यः
 ४ नाना निगित्य चत्वारि निगित्य सिंधु प्रोच्यतां विबुधाः निर्णयसरोजज्वानि
 गीय कमलाकरो यारक्त वसं जलं भूतिगते देव नरयति विक्रमतो यया मि
 रोद्रे तपसि शिवो यो समापितो यं रज्जुयति पादसरोरुहे पितृ ६ जगति
 सकलविद्यासिंधुमुद्धिधयानां परमणिपरीक्षा युज्यते स ज्ञानानां
 दिप्तममनिबंधे इष्टां ता यदि भवति विदग्धैस्तु वश्यं विमृश्य ७ इ
 श्रीमन्मदवाक्च प्रमाणपारदारपाशीण श्रीमद्रामेश्वरभद्रस्वरिस्तु
 यणभद्रस्तु ततिज्ञानमुकुटदारां कुर श्रीरामकृष्णभद्रात्मज वि
 भद्रां नृज कमलाकरभद्रस्तु ते निर्णयसिंधौ तृतीयः परिच्छेद